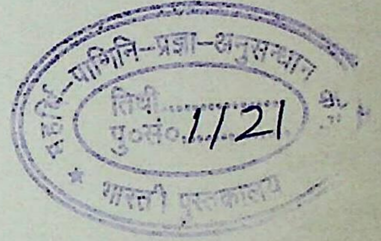
बड़े
रचना
हुई,
लकने
ग्रन्थ-
और
गये
हैं।
चार्य
लित


महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी
पु०सं० 1121/6
भारती पुस्तकालय


तिथी
पु०सं० 1721
भारती पुस्तकालय

वाङ्मयार्णवः

VĀṄMAYĀRṆAVAḤ



by

MAHĀMAHOPĀDHYĀYA PĀṆḌEYA RĀMĀVATĀR ŚARMĀ

VARANASI (India)
JNANAMANDAL LIMITED

ज्ञानमण्डल ग्रन्थमालाका १०३वाँ ग्रन्थ

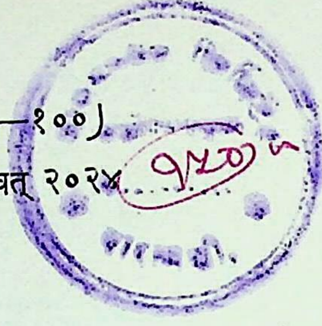
श्रीविश्वविद्यापराभिधः

वाङ्मयार्णवः



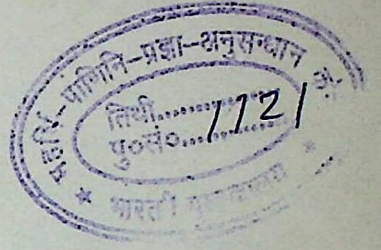
महामहोपाध्यायपाण्डेयश्रीरामावतारशर्मविरचितः

वाराणसी
ज्ञानमण्डल लिमिटेड



मूल्यं रूप्यकशतकम्—१००)
प्रथमं संस्करणम् संवत् २०२४

प्रकाशक : ज्ञानमण्डल लिमिटेड, कबीरचौरा, वाराणसी
मुद्रक : ओम्प्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी—६३५२-२१



प्रकाशकीय वक्तव्य

सन् १९५९ में ज्ञानमण्डल लिमिटेडके प्रबन्धकारी संचालक श्री सत्येन्द्रकुमारजी गुप्तने मुझसे कहा कि 'सुना है कि महामहोपाध्याय पाण्डेय रामावतार शर्माका बनाया हुआ कोई संस्कृत कोश अभीतक अप्रकाशित पड़ा है, यदि वह मिले तो आप उसे अपने यहाँसे प्रकाशित कराइये।' कुछ दिनोंके बाद पटनामें मैं महामहोपाध्यायजीके सुपुत्र हिन्दी जगत्के लब्धप्रतिष्ठ आलोचक और निबन्धकार विद्वद्वर आचार्य नलिनविलोचन शर्मासे मिला और उक्त ग्रन्थ प्रकाशित करनेकी इच्छा प्रकट की। आचार्य नलिनजी मेरे अभिन्न मित्र थे। उन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार करते हुए कहा कि 'यदि ज्ञानमण्डलसे यह ग्रन्थ प्रकाशित हो तो मुझे अपार हर्ष होगा। क्योंकि पिताजीने एक बार मुझसे कहा था कि यह संस्कृतका 'वाङमयार्णव' नामक विश्वकोश स्वनामधन्य स्वर्गीय श्री शिवप्रसादजी गुप्त (ज्ञानमण्डल लिमिटेडके संस्थापक) के आग्रहसे तैयार किया गया है। बिहार सरकारने इसे प्रकाशित करनेका निश्चय किया है और इसके प्रकाशनका भार 'मिथिला संस्कृत प्रतिष्ठान' दरभंगाको सौंपा गया है। किन्तु कई वर्ष बीत गये, अभी उक्त ग्रन्थमें हाथ नहीं लगाया गया। मैं तो अब निराश हो गया हूँ।'

सन् १९६० में जब मैं फिर पटना गया तो श्री नलिनजीने जिल्द बँधी हुई पाण्डुलिपि दिखलायी और कहा कि 'इसमें इतना अधिक गिचपिच लिखा गया है कि इससे कम्पोज कराना असम्भव है। मैं अपनी देख-रेखमें इसकी सुपाठ्य प्रतिलिपि कराकर और उसका संशोधन करके आपके पास भेज दूँगा। इस काममें एक वर्ष अवश्य लगेगा।'

मैं सन्तुष्ट होकर काशी वापस आया। श्री नलिनजीने अपने वचनके अनुसार अपने विश्वासी शिष्य श्री रंजनजीसे प्रतिलिपि कराना शुरू करा दिया। किन्तु उसके कुछ ही दिन बाद श्री नलिनजीका १२ सितम्बर १९६१ ई० में निधन हो गया। उनके निधनका समाचार पाकर मुझे बहुत दुःख हुआ और मनमें निराशा हुई कि अब उक्त पाण्डुलिपि प्रकाशनार्थ शायद ही मिले। किन्तु पटनेमें जब मैं श्री नलिनजीकी विदुषी धर्मपत्नी श्रीमती कुमुद शर्मासे मिला तो उन्होंने कहा कि आप श्री रंजनजीसे मिलकर प्रतिलिपिके साथ मूल प्रति ले लें और उसे प्रकाशित करानेका प्रबन्ध करें। यह सुनकर मुझे सन्तोष हुआ। श्री रंजनजीने अस्वस्थ रहनेपर भी आठनौ महीनेमें प्रतिलिपि तैयार करके मुझे सौंप दी।

मूल पाण्डुलिपि सहित प्रतिलिपि तो मुझे प्राप्त हो गयी, किन्तु श्री नलिनजीके न रहनेसे मैं विषम स्थितिमें पड़ गया। यह प्रतिलिपि किससे शुद्ध करायी जाय, यह एक भारी समस्या उपस्थित हो गयी। क्योंकि पाण्डुलिपि ऐसी है जिसे पढ़नेमें यत्रतत्र भूल होनेकी पूरी सम्भावना है। दूसरे नलिनजीने यह कहा था कि पाण्डुलिपिके अनुसार ही ग्रन्थ छपना चाहिये। बहुत सोच-

समझकर यह कार्य डॉ० रामचन्द्र पाण्डेय (प्रधानाचार्य संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय) को सौंपा गया। श्री पाण्डेयजीने बड़े परिश्रमसे लगभग एक वर्षमें प्रतिलिपिका संशोधन मूल पाण्डुलिपिसे मिलाकर किया; किन्तु बहुतसे स्थलोंपर सन्दिग्धात्मक चिह्न लगाकर छोड़ दिया। इसके बाद पण्डित राधारमण पाण्डेय आदि तीन-चार अधिकारी विद्वानोंको दिखलाया। इससे बहुतसे सन्दि॰धात्मक पाठ तो मूल प्रतिके अनुसार ही ठीक सिद्ध हुए, फिर भी कुछ स्थल शेष रह गये। इसी प्रकार ग्रन्थके प्रूफ शोधनमें भी बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा। किसी शब्दको कुछ विद्वान् तो कहते थे कि अशुद्ध है किन्तु उसे अन्य विद्वान् शुद्ध सिद्ध कर देते थे। इस ग्रन्थके प्रूफ रीडर पोष्टाचार्य पं० गोमतीप्रसाद मिश्रसे काशीके मानिन्द विद्वान् स्वामी महेश्वरानन्दजी (पूर्वनाम श्री महादेव शास्त्री) ने कहा था कि 'यह ग्रन्थ बहुत बड़े विद्वान्का लिखा हुआ है, तुम कहीं भी अपना पाण्डित्य न दिखलाना नहीं तो अर्थका अनर्थ हो जायगा।' अस्तु; इस प्रकार किसी-किसी फ़ार्मका प्रूफ १०-१२ दिन विद्वानोंके ही पास घूमता रह जाता था उसके बाद निष्कर्ष-पर पहुँचनेकी नौबत आती थी। यही कारण है कि प्रस्तुत ग्रन्थ प्रकाशित करनेमें कल्पनातीत व्यय और समय लगा। हर्ष है कि ग्रन्थ तैयार होकर विद्वज्जनोंके समक्ष हम उपस्थित कर रहे हैं।

पाण्डुलिपिमें ग्रीक, लैटिन, जर्मन तथा फ्रेंचके बहुतसे शब्द हैं जो नहीं दिये जा सके। बहुत प्रयत्न करनेपर भी उक्त भाषाओंके ज्ञाता हमें नहीं मिले। ऐसी दशामें उन्हें छोड़ देना ही उत्तम समझा गया। क्योंकि 'एन' की जगह 'यू' और 'यू' के स्थानपर 'एन' पढ़े जानेपर भारी अनर्थ हो जाता। अशुद्ध छापनेकी अपेक्षा उसे न छापना ही श्रेयस्कर प्रतीत हुआ। इसी प्रकार ग्रन्थकारने आरम्भमें चित्र देनेका उल्लेख किया है और वे चित्र पाण्डुलिपिमें बने भी हैं किन्तु कई अनिवार्य कारणोंसे वे चित्र नहीं दिये जा सके। जो हो, ग्रन्थ प्रकाशित हो गया, इतनेसे ही हमें परम सन्तोष है। विद्वानोंका मत है कि यह ग्रन्थ संस्कृत वाङमयका एक अमूल्य रत्न है। इसमें बहुतसे शब्द और शब्दार्थ ऐसे हैं जो अन्य किसी भी कोशमें नहीं मिलते। भारतके प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद इस महाग्रन्थको प्रकाशित करानेके लिए बहुत चिन्तित रहा करते थे। उन्हें भय था कि कहीं इस ग्रन्थकी पाण्डुलिपि इसी तरह नष्ट न हो जाय। खेद है कि वह इसका प्रकाशित रूप नहीं देख सके। हमें हर्ष है कि उनके सामने इस ग्रन्थका प्रकाशन प्रारम्भ हो गया था और इसकी सूचना उन्हें दे दी गयी थी।

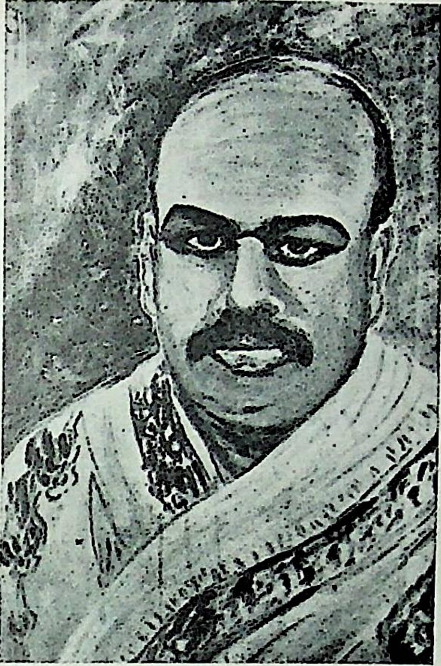
अन्तमें हम डॉ० रामचन्द्र पाण्डेयके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं जिन्होंने आद्योपान्त प्रतिलिपिका संशोधन किया। पं० गोमतीप्रसाद मिश्र, पं० राधारमण पाण्डेय तथा श्रीकृष्ण पन्तने प्रूफ संशोधन तथा अनुक्रमणिका बनानेका कार्य सम्पन्न किया है, एतदर्थ हम उक्त तीनों विद्वानोंके अनुगृहीत हैं। काशीके मानिन्द विद्वान् स्वामी महेश्वरानन्दजी (पूर्वनाम पं० महादेव शास्त्री) ने ग्रन्थके थोड़ेसे अंशका शुद्धिपत्र तैयार करनेकी कृपा की है। स्वामीजीने कहा कि शर्माजी तो मेरे गुरु थे। अतः मैं इस ग्रन्थका संशोधन यथावकाश कर दूँगा किन्तु वह द्वितीय संस्करणमें काम आ सकेगा। क्योंकि इस कार्यमें पर्याप्त समय लगेगा। ग्रन्थके एक-एक शब्दपर गम्भीर विचार करना पड़ता है। स्वामीजीकी इस महती कृपाके लिए हम किन शब्दोंमें उनके प्रति आभार प्रदर्शित करें, समझमें नहीं आता। शुद्धि-पत्रसे पाठकोंको मालूम हो जायगा कि इस ग्रन्थमें किस तरहकी



त्रुटियाँ अधिक रह गयी हैं। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदीके भी हम चिर ऋणी हैं जिन्होंने अपने व्यस्त जीवनमें महीनों परिश्रम करके सारगर्भित भूमिका लिखी है।

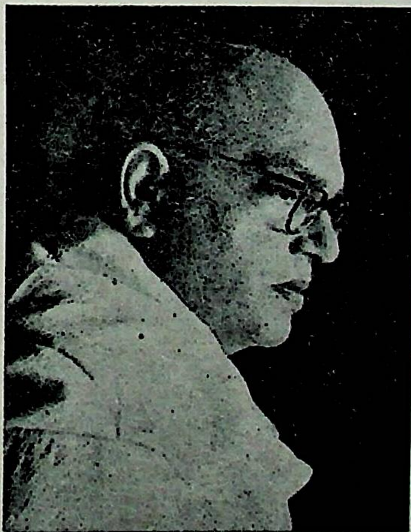
हम ग्रंथकारकी पुत्रवधू (आचार्य नलिनविलोचन शर्माकी धर्मपत्नी) श्रीमती कुमुद शर्माको भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिन्होंने बड़ी श्रद्धा-भक्तिसे प्रेरित होकर परिश्रम और लगनके साथ ग्रन्थकारकी जीवनी लिखनेके लिए प्रामाणिक सामग्री जुटाकर दी। उन्हींकी दी हुई सामग्रीके आधारपर मैं शर्माजीकी तथा उनके सुपुत्र (श्रीमती कुमुद शर्माके पति) आचार्य नलिनविलोचन शर्माजीकी जीवनी लिखकर इस ग्रन्थमें दे सका हूँ।

देवनारायण द्विवेदी
व्यवस्थापक
(प्रकाशन विभाग)



महामहोपाध्यायः पाण्डेय
श्रीरामावतारशर्मा

तदात्मज



आचार्यनलिन-
विलोचनशर्मा

ग्रन्थकारका परिचय

महामहोपाध्याय पाण्डेय रामावतार शर्मा संसारके उन नर-रत्नोंमें हैं जिनकी प्रतिभा और अलौकिक ज्योतिसे सम्पूर्ण भूमण्डल आलोकित होता आ रहा है। उनके निधनके बाद किसी लेखकने लिखा था "आप साहित्यमें पण्डितराज जगन्नाथके समान, व्याकरणमें बालशास्त्रीके समान, न्यायमें गदाधरके समान, वेदान्तमें शंकराचार्यके समान, धर्मशास्त्रमें हारीतके समान, ज्योतिषमें भृगुमुनिके समान,पुरातत्त्वान्वेषणमें भण्डारकरके समान, गद्य-लेखन-शैलीमें बाणभट्ट-के समान, वाद-विवादकी तर्क-पद्धतिमें डाक्टर जॉनसनके समान, सूक्ति-कथनमें शुकदेवके समान, स्मरणशक्तिकी प्रबलतामें मेकॉलेके समान, विज्ञान-महत्ता-प्रतिपादनमें बेकनके समान, कवितामें कालिदासके समान, वेदार्थ-तत्त्व-विवेचनमें यास्क और सायणाचार्यके समान, जात्यभिमानमें लोकमान्य तिलकके समान, सामाजिक क्रान्तिमें लूथरके समान, विधवा-विवाह-समर्थनमें विद्या-सागर और महात्मा गांधीके समान, पुनर्जन्म-खण्डनमें चार्वाकके समान, मनस्वितामें शिवाजीके समान और दयालुतामें गोखलेके समान थे।" इस उद्धरणसे यह बात सहज ही जानी जा सकती है कि शर्माजीकी सर्वतोमुखी प्रतिभा थी और अनेकानेक विषयोंमें अद्भुत जानकारी थी। जिन लोगोंको उनके घनिष्ठ सम्पर्कमें रहनेका सुयोग मिला था, वे जानते हैं कि संसारका शायद ही कोई ऐसा विषय होगा जिसका ज्ञान उन्हें नहीं था। डाक्टर काशीप्रसाद जायसवालने कहा था कि शर्माजीके साथ रहनेपर जान पड़ता है कि, सचमुच महर्षि कपिल-कणादके साथ हैं।

प्रकाण्ड विद्वान् होते हुए भी शर्माजीमें देहाती किसानकी-सी सादगी थी। शर्माजी साधारण धोती और मोटे कपड़ेका कुर्ता पहनते थे। प्रायः नंगे पाँव गंगास्नान करने जाते थे। आपका जन्म ६ मार्च सन् १८७७ ई० में सरयूपारीण ब्राह्मण परिवारमें हुआ था। इनके पिताका नाम पं० देवनारायण शर्मा था। वे छपराके निवासी थे। प्रारम्भिक शिक्षा आपने घरपर ही अपने पिता तथा पण्डित रामद्वार ओझासे पायी। वहींसे आपने सन् १८८९ ई० में संस्कृतकी प्रथमा परीक्षा दी और प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण हुए। उस समय शर्माजी केवल बारह वर्षके थे। बाँकीपुर, पटनासे आपको छात्रवृत्ति भी मिली। उसके बाद आप काशी आये और क्वीन्स कालेजमें नाम लिखाया। १८९० ई० में आपने प्रथम श्रेणीमें मध्यमा की। आपको क्वीन्स कालेज वाराणसीसे छात्रवृत्ति भी मिली। सन् १८९१ में बाँकीपुर, पटनासे मध्यमाकी परीक्षा दी और पदक तथा छात्रवृत्तिके साथ प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण हुए। सन् १८९३ में आपने कलकत्ता संस्कृत कालेजसे प्रथम श्रेणीमें काव्यतीर्थ किया। इसमें इन्हें अर्थराशि पुरस्कार भी मिला। सन् १८९५ में आपने कलकत्ता विश्वविद्यालयसे एन्ट्रेन्स द्वितीय श्रेणीमें पास किया। उन्होंने पुनः उसी साल इलाहाबाद विद्यालयसे एंट्रेन्स प्रथम श्रेणीमें पास किया। इससे उन्हें छात्रवृत्ति भी मिली। १८९७ में आपने

काशीसे साहित्याचार्य किया और उसके बाद व्याकरणाचार्यके प्रथम खण्डकी भी परीक्षा दी। साहित्याचार्यमें आप सर्वप्रथम आये। १८९८ में आपने पंजाब युनिवर्सिटीसे एफ.ए., पास किया। संस्कृतमें सर्वप्रथम आनेके कारण इन्हें पुरस्कार भी मिला। १९०० में कलकत्ता विश्वविद्यालय-से प्रथम श्रेणीमें बी. ए., किया। इस परीक्षामें उन्होंने संस्कृत 'सम्मान'के साथ छात्रवृत्ति तथा आर० के० स्वर्ण-पदक प्राप्त किया। १९०१ में एम. ए., किया। इसमें वह सर्वप्रथम रहे और कलकत्ता विश्वविद्यालय-स्वर्ण-पदक तथा अनेक पारितोषिक उन्हें प्राप्त हुए।

१९०१ में आप सेन्ट्रल हिन्दू कालेज, वाराणसीमें संस्कृतके अध्यापक नियुक्त हुए। १९०५ तक आप उस पदपर रहे और काशीके प्रमुख विद्वानोंमें सर्वप्रमुख सभा पण्डित माने गये। १९०६ में आप पटना कालेजके प्रोफेसर नियुक्त हुए और अपने जीवनके अन्ततक (१९२९ ई० तक) उस पदपर बने रहे। बीचमें दो बार छुट्टी लेकर आप बाहर भी रहे। एक बार १९०७ से १९०९ तक कलकत्ता विश्वविद्यालयमें वसु-मल्लिक व्याख्याता होकर और दूसरी बार महामना पण्डित मदनमोहन मालवीयके विशेष अनुरोधसे १९१९ से १९२२ तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमें ओरियण्टल कालेजके प्रिन्सिपल होकर। आप पी०एच०डी०के सर्वमान्य परीक्षक समझे जाते थे। अनेक विश्वविद्यालयोंके परीक्षक भी थे। सन् १९१६ में जबलपुरमें आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनके सप्तम वार्षिक अधिवेशनमें सभापति थे। १९११ में प्रयागमें आयोजित सम्मेलनके द्वितीय वार्षिक अधिवेशनमें हिन्दीके अपूर्ण अंगोंकी पूर्त्तिके विषयमें एक निबन्ध प्रस्तुत किया था। जिसमें लेखकोंके पथ-प्रदर्शनके अभिप्रायसे एक सौ विषयों-की एक सूची सम्मिलित की गयी थी।

शर्माजीको सन् १९१९में महामहोपाध्यायकी उपाधि मिली थी। इस उपाधिके अतिरिक्त 'जंगम विश्वकोश', 'सप्तम दर्शन—संस्थापक', 'स्वतन्त्र-बुद्धि विद्वान् प्रतिपक्षिभयंकर' आदि भी कहा जाता था। आप अनेक भाषाओंके ज्ञाता थे, जैसे संस्कृत, पालि, हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी, जर्मन, लैटिन, फ्रेंच, ग्रीक आदि। इनमें अधिकांश भाषाओंमें उनकी रचनाएँ पायी जाती हैं। दर्शन, काव्य, साहित्य, व्याकरण, इतिहास, पुराण, पुरातत्त्व, नृशास्त्र, शिक्षा, धर्म, सभ्यता, संस्कृति, भाषा-विज्ञान, भूगोल, खगोल, ज्योतिर्विद्या, गणित आदि बहुतसे विषयोंका आपको अच्छा ज्ञान था। आपने बहुतसे विदेशी शब्दोंका संस्कृतीकरण किया था। जैसे—नवजीवन भूमि (न्यूजीलैण्ड), औष्ट्रालय द्वीप (आस्ट्रेलिया), कम्बोज (कम्बोडिया), आरण्य (अरेबिया), अजपुत्र (इजिप्ट), भव्यलूनपुर (वेबिलोनिया), अलीकचन्द्र (अलेक्जेंडर), उक्षप्रतर (औक्षफोर्ड) नन्दन (लन्दन), कांत (कांट) साक्रतीज (सौक्रेटीज), शल्यक (सैल्युकस), दीनकुत्सित (डौन क्विक्सौट) आदि। शर्माजीके सम्बन्धमें किंचित् परिवर्त्तनके साथ ही दो श्लोक कहे गये हैं—

भारतस्य न भा भाति विहारोहारर्पजितः।
रामावतारे स्वयति मूर्च्छितैव सरस्वती ॥

पलायध्वं पलायध्वं भो भो तार्किकदिग्गजाः।
रामावतार आयाति सिद्धान्तवनकेसरी ॥

यों तो आपकी अगणित रचनाएँ हैं किन्तु जिन ग्रन्थोंके नाम प्राप्त हो सके हैं वे रचनाकालके अनुसार क्रमशः नीचे दिये जा रहे हैं—

(क) संस्कृत—

१. विविध गद्य-पद्य रचनाएँ—रचनाकाल १९०३–६ ई०। काशीकी 'मित्रगोष्ठी' एवं 'सुक्तिसूधा' नामक मासिक पत्रिकाओंमें प्रकाशित।

२. सदुक्तिकर्णामृत—रचनाकाल १९०३–१०। एशियाटिक सोसाइटी आव् बंगालके लिए। प्राचीन पाण्डुलिपिके आधारपर सम्पादित।

३. प्रियदर्शिप्रशस्तयः—१९१० ई०। मूल पालि लेखका संस्कृतानुवाद; अंग्रेजी अनुवाद भी। कलकत्ता विश्वविद्यालयके लिए।

४. परमार्थदर्शनम्—१९११–१३ ई० में काशीसे प्रकाशित। सूत्रवद्ध दर्शन ग्रन्थ पद्यमय वार्तिक सहित, भाष्यका प्रथम अध्याय 'संस्कृत संजीवन' नामक संस्कृत मासिक पत्रमें १९४३ ई० में प्रकाशित। (सप्तम दर्शनके रूपमें स्वीकृत)

५. वाङ्मयार्णव—श्लोकवद्ध संस्कृत विश्वकोश। रचनाकाल १९११ से जीवन पर्यन्त।

६. मुद्गरदूतम् —(व्यंग्यकाव्य) कालिदासके मेघदूतकी व्याकृति (पैरोडी), 'शारदा' पत्रिकामें प्रकाशित। पुनः पुस्तक रूपमें प्रकाशित।

७. भारतीयमितिवृत्तम्—संस्कृतमें भारतवर्षका इतिहास।

८. सरस्वत्यष्टकम्, उद्बोधनम्, संस्कृत-शिक्षा कथयुपयुक्ता भवेत्? इत्यादि संस्कृत गद्यपद्यात्मक रचनाएँ १९२३ से १९२५ में सुप्रभातम् संस्कृत पत्रिकामें प्रकाशित।

९. प्रकीर्ण–प्रबन्धाः—निधनान्तर १९५६ में प्रकाशित।

(ख) हिन्दी—

१. यूरोपीय दर्शन, १९०५ ई०, प्रथमतः काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभासे प्रकाशित, द्वितीयतः १९५२ ई० में बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटनासे प्रकाशित।

२. हिन्दी-भाषा-तत्त्व (व्याख्यान-रूपमें) १९०५ ई०, काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभासे प्रकाशित।

३. हिन्दी-व्याकरण, १९०७ ई०, कलकत्ताके 'देवनागर' नामक मासिकपत्रमें प्रकाशित।

४. हिन्दी-व्याकरण और रचनाकी शिक्षण-पद्धति, १९१० ई०, बंगालके शिक्षा-विभागके लिए प्रस्तुत।

५. मुद्गरानन्दचरितावली, १९१२-१३ ई०, 'नागरी-प्रचारिणी-पत्रिका, काशी।'

६. भारतवर्षका इतिहास, दिसम्बर १९१२, जनवरी १९१३, 'नागरी हितैषिणी पत्रिका', आरा।

७. पौरस्त्य और पाश्चात्य दर्शन, १९१५ ई०, 'पाटलिपुत्र'के विशेषाङ्कमें प्रकाशित।

८. शिक्षाविषयक भारतीयोंका सद्यः कर्त्तव्य, शिक्षाका सम्मेलनाङ्क खण्ड २७, सं० १।

९. साहसाङ्क-चरित-चर्चा; १९१३, 'प्रभा'।

१०. भारतोत्कर्ष (कविता), मारवाड़ी अग्रवाल, आषाढ़ संवत् १९७९।

११. पद्यमय महाभारत ।

१२. कालिदासके समयका निरूपण, १९०९ ई०, 'सरस्वती' में प्रकाशित ।

१३. श्रीरामावतार शर्मा निबन्धावली—
(निधनान्तर प्रकाशन), १९५४ ई० बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् । इस ग्रन्थमें सङ्कलित निबन्ध हैं—

१. ज्योतिर्विद्या । २. भूगोलविद्या । ३. भूगर्भ-विद्या । ४. हिन्दीकी वर्त्तमान दशा । ५. हिन्दीमें विश्वकोषकी अपेक्षा । ६. हिन्दीमें उच्च शिक्षा । ७. हिन्दीकी उन्नति और प्रचार । ८. हिन्दी-भाषा-विज्ञान । ९. सभ्यताका विकास । १०. शाश्वत धर्म-प्रश्नोत्तरावली । ११. उपोद्घात । १२. हिन्दी-व्याकरणसार । १३. पीलु-विजय । १४. हमारा संस्कार । १५. पुराण-तत्त्व । १६. अथ श्रीसत्यदेवकथा । १७. मुद्गरानन्दचरितावली । १८. काना-वर्करीयम् । १९. धर्म और शिक्षा । २०. पौरस्त्य और पाश्चात्य दर्शन । २१. खुली चिट्ठी । २२. परमार्थ-सिद्धान्त । २३. भारतवर्षका इतिहास । २४. शिक्षा-विषयक भारतीयोंका सद्यः कर्त्तव्य । २५. शाश्वत धर्म-प्रश्नोत्तरावली । २६. साहसाङ्क-चरित-चर्चा । २७. शतश्लोकीयं धर्मशास्त्रम् (हिन्दी-अनुवाद-सहित) । २८. भारतोत्कर्ष । २९. जगत्में विज्ञानका विकास । ३०. भूगर्भ विद्या । ३१. नरशास्त्र । ३२. सरस्वत्यष्टकम् । ३३. सरस्वत्यष्टकम् : हिन्दी । ३४. उद्बोधनम् : संस्कृत । ३५. उद्बोधन : हिन्दी । ३६. संस्कृत-शिक्षा कथमुपयुक्ता भवेत् : संस्कृत । ३७. संस्कृत भाषा कैसे उपयुक्त हो सकती है ? हिन्दी । ३८. परिशिष्ट ।

१४. वैज्ञानिक निबन्ध, सरस्वतीमें समय-समयपर जीवन-कालमें ही प्रकाशित ।

(ग) अंग्रेजी—

१. Philosophy of the Puranas (पुराणदर्शन), १९०२ ई०, Buch Metaphysics Prize द्वारा पुरस्कृत ।

२. Chapters from Indian Psychology (भारतीय मनोविज्ञानके कुछ अध्याय) १९०४ ई०, Buch Metaphysics Prize द्वारा पुरस्कृत ।

३. Gopal Vasu Mallick Lectures on Vedantism (वेदान्तपर व्याख्यान), १९०८ ई०, कलकत्ता विश्वविद्यालयसे प्रकाशित ।

४. A thesis on the age of Kalidasa (कालिदासके समयका निरूपण), १९०९ ई०, Hindusthan Review में प्रकाशित ।

५. Elementary Text Book of Eternal Law (परमार्थ-दर्शनकी अंग्रेजी भूमिका) ।

उपयुक्त कृतियोंके अतिरिक्त शर्माजीकी वहुत-सी रचनाएँ ऐसी हैं जिनमें अधिकांश अप्रकाशित हैं । शर्माजीने 'कामन्दकीय नीतिसार' का अंग्रेजीमें और 'रघुवंश' का लैटिनमें अनुवाद किया था ।

शर्माजी ३ अप्रैल १९२९ ई० में केवल ५२ वर्षकी अवस्थामें स्वर्गवासी हुए ।

आचार्य नलिनविलोचन शर्मा

प्रस्तुत महाग्रन्थमें आचार्य नलिनविलोचन शर्माका संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक प्रतीत हो रहा है क्योंकि उन्हींकी महती कृपासे यह ग्रन्थ प्रकाशित करनेका अधिकार मिला था। आचार्य नलिनजी महामहोपाध्यायके सुपुत्र थे। इनका जन्म १८ फरवरी १९१६ में बहरघाट, पटना शहरमें हुआ था। इन्हें आरम्भिक शिक्षा पितासे प्राप्त हुई। १९३१में पटना कालेजिएटसे मैट्रिक, १९३८ में पटना विश्वविद्यालयसे संस्कृत एम० ए० पास किया। १९४२ में हिन्दीसे एम० ए० किया। श्री अनन्तप्रसाद बनर्जीके निर्देशनमें 'कौटिल्यके अर्थशास्त्रमें दण्ड-विधान' पर शोध-कार्य किया।

आचार्य नलिनजीने जैन कालेज आरामें प्राध्यापनके समय 'रंगमंच तथा नाटक' पर शोध-कार्य किया। १९४२ में सबसे पहले हरप्रसाद जैन कालेज आरामें संस्कृत विभागमें प्राध्यापकके रूपमें आपकी नियुक्ति हुई। सितम्बर सन् १९४६ तक ये वहीं रहे। उसके बाद आप पटना कालेजमें नियुक्त हुए। १९४७ में आपका राँची कालेजमें स्थानान्तरण हुआ। १९४८ में आप फिर पटना कालेजमें आ गये। १९५९ में पटना विश्वविद्यालयमें हिन्दी विभागाध्यक्ष हुए और अन्ततक उसी पदपर कार्य करते रहे। इनके लिखे हुए मौलिक ग्रन्थ ये हैं—

१. दृष्टिकोण (साहित्य-कला-मनोविज्ञान-सम्बन्धी आलोचना) प्रकाशन १९४७ ई०।
२. विषके दाँत (कहानी संग्रह) प्रकाशन १९५१ ई०।
३. सत्रह असंग्रहीपूर्ण छोटी कहानियाँ। प्रका० १९६० ई०।
४. जगजीवनराम (जीवनी, अंग्रेजीमें) प्रका० १९५४ ई०।
५. नकेनके प्रपद्य (प्रपद्य संग्रह) प्रका० १९५६ ई०।
६. साहित्यका इतिहास-दर्शन (साहित्येतिहासका दर्शनालोचन) प्रका० १९६० ई०।
७. मानदण्ड (निबन्ध-संग्रह)

सम्पादित ग्रन्थ—

१. लोक-कथा-कोश, प्र० १९५९ ई०।
२. लोक-साहित्य : आकर-साहित्य-सूची, प्र० १९५९ ई०।
३. लोक-गाथा-परिचय, प्र० १९५९ ई०।
४. प्राचीन हस्तलिखित पोथियोंका विवरण, प्र० १९५९ ई०।
५. सदल मिश्र ग्रन्थावली, प्र० १९६० ई०।
६. लालचदास-कृत हरिचरित्र, अपूर्ण (साहित्य और परिषद् पत्रिकामें प्रकाशित)।
७. गोस्वामी तुलसीदास, प्र० १९६१ ई०।
८. भारतकी प्रतिनिधि कहानियाँ—

९. हिन्दीकी उत्तम कहानियाँ ।
१०. उपन्यास-कथाकुञ्ज
११. निबन्ध-मानस ।

सह-सम्पादित ग्रन्थ––

१. सन्त-परम्परा और साहित्य (धर्मेन्द्र अभिनन्दन-ग्रन्थ), प्र० १९६० ई० ।
२. आयोध्याप्रसाद खत्री-स्मारक-ग्रन्थ, प्र० १९६० ई० ।
३. हिन्दीके प्रतिनिधि कथाकार ।
४. पढ़ो और सीखो ।
५. रूपक-कथाकुञ्ज ।
६. भारतके महापुरुष, प्र० १९५८ ई० ।
७. राष्ट्रभाषा साहित्य-संग्रह, प्र० १९५६ ई० ।
८. राष्ट्रभाषा-साहित्य-सरिता, प्र० १९५६ ई० ।
९. पद्माभरण, प्र० १९५९ ई० ।
१०. स्वर्ण-मञ्जूषा, प्र० १९५५ ई० ।
११. हिन्दी रचना-कोश, प्र० १९५९ ई० ।
१२. दि वर्किंग मैन, प्र० १९५४ ई० ।
१३. भारतीय साहित्य : परिशीलन तथा अन्वेषण, प्र० १९६० ई० ।
१४. हिन्दी-साहित्य : परिशीलन तथा अन्वेषण ।

सम्पादित पत्रिकाएँ––

१. साहित्य, त्रैमासिक, पटना ।
२. दृष्टिकोण, ,, ,, ।
३. कविता ,, ,, ।
४. पटना कालेज पत्रिका, वार्षिक, पटना ।
५. परिषद् पत्रिका, त्रैमासिक, पटना ।

संस्था-सम्बद्धता––

प्राचार्य––बदरीनाथ सर्वभाषा-महाविद्यालय, पटना ।
प्रधान मंत्री––बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, पटना ।
निर्देशक–शोध-विभाग, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ।
सदस्य––भारतीय हिन्दी-परिषद् ।
निर्णायक––मंगलाप्रसाद-पारितोषिक ।
संस्थापक–सदस्य––अखिल भारतीय हिन्दी-शोध-मण्डल ।
सभापति––सारन जिला हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ।
अध्यक्ष––रेलवे स्टॉल बुक सेलेक्शन बोर्ड ।

अध्यक्ष——शोध-गोष्ठी, वल्लभविद्यानगर, आनन्द (भारतीय हिन्दी-परिषद्के अष्टादश वार्षिक अधिवेशन)।

अध्यक्ष——हिन्दी-विभाग, पटना कालेज।

अध्यक्ष——हिन्दी-विभाग, पटना-विश्वविद्यालय।

अध्यक्ष——हिन्दी साहित्य परिषद्, पटना कालेज।

सदस्य——कार्यसमिति, पटना जिला-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन।

विशेष——

१. हिन्दीमें "वेश्म-नाट्य" (Chamber drama) के प्रथम प्रयोक्ता तथा भाष्यकार।

२. हिन्दीकी विशिष्ट पद्यविद्या "प्रपद्यवाद" के प्रवर्त्तक तथा प्रयोक्ता।

३. लक्ष्यैकचक्षुष्कताके आधारपर मनोग्रन्थिमूलक छोटी कहानियोंके लेखक।

४. सूत्र-समीक्षा-पद्धतिके प्रयोक्ता।

आपका निधन १२ सितम्बर १९६१ ई० में पटनामें हुआ। शर्माजी हिन्दी-जगत्के लब्ध-प्रतिष्ठ आलोचक और निबन्धकार थे। आपके निधनसे बिहार प्रान्तको बहुत बड़ी क्षति पहुँची जिसकी पूर्त्ति नहीं हो सकी।

भूमिका

स्वर्गीय महामहोपाध्याय पं० रामावतार शर्मा विलक्षण प्रतिभाशाली विद्वान् थे। उनका ज्ञान-भाण्डार बहुत विस्तीर्ण और समृद्ध था। उनकी स्मरण-शक्ति अद्भुत थी, उनके समान मनीषी विद्वान् क्वचित्-कदाचित् ही संसारमें आते हैं। वे स्वतन्त्र विचारक थे और विभिन्न शास्त्रोंपर उनका व्यापक अधिकार था। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, लैटिन, ग्रीक आदि कई भाषाओंके ज्ञाता थे और भारतवर्षकी विभिन्न भारतीय भाषाओंसे भी परिचित थे। यद्यपि उन्हें केवल ५२ वर्षकी आयु मिली थी किन्तु फिर भी उनकी कीर्ति देश-देशान्तरमें फैल गयी थी। संस्कृत भाषापर उनका विलक्षण अधिकार था। संस्कृत भाषाके माध्यमसे उन्होंने आधुनिक ज्ञान-विज्ञानको संस्कृतज्ञोंतक पहुँचाना चाहा था। 'वाङ्मयार्णव' नामक प्रस्तुत कोश-ग्रन्थ उनके दीर्घकालीन अध्ययन, मनन और चिन्तनका फल है। दुर्भाग्यवश उनके जीवनकालमें यह प्रकाशित नहीं हो पाया। अब 'ज्ञानमण्डल' ने इस ग्रन्थका प्रकाशन किया है। वे जिस रूपमें इसे प्रकाशित करना चाहते थे उस रूपमें इसका प्रकाशन तभी हो सकता था जब वे स्वयं इसके प्रकाशनको देखते। फिर भी 'ज्ञानमण्डल' ने यथासाध्य प्रयत्न किया है कि पुस्तक अधिकसे अधिक निर्दोष और उपयोगी होकर प्रकाशित हो।

शर्माजीने इस कोशको 'विश्वविद्या' (इंसाइक्लोपीडिया) कहा है। इसके लिए उन्होंने वैदिक और लौकिक संस्कृत-साहित्यका तथा आधुनिक कालकी व्याख्याओं और आलोचनाओंका मन्थन किया था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ये कोश अबतकके संस्कृत कोशोंकी तुलनामें सर्वाधिक वैज्ञानिक और उपयोगी है। 'कोश'के उपक्रममें उन्होंने बताया है कि इस कोशका निर्माण उन्हें क्यों आवश्यक जान पड़ा। संस्कृतके अनेकानेक महत्त्वपूर्ण कोश-ग्रन्थ क्या पहलेसे ही विद्यमान नहीं हैं? और फिर आजकलके विद्वानोंने क्या महत्त्वपूर्ण शब्दकोशोंका निर्माण नहीं किया है? शर्माजीने इन नये और पुराने कोशोंका गम्भीर अध्ययन किया था। परन्तु उन्हें दोनों प्रकारके कोशोंमें कुछ त्रुटियाँ दिखी थीं। पुराने कोश पद्य-बद्ध हैं परन्तु उनमें न तो प्रयोग और उदाहरण ही दिये गये हैं और न आधुनिक ढंगकी 'वर्ण-क्रम पद्धति' को ही अपनाया गया है। वर्ण-क्रमकी नयी पद्धतिसे शब्दोंके खोजनेमें आसानी होती है। पुराने कोशोंमें यह पद्धति नहीं अपनायी गयी। जहाँ अपनायी भी गयी है वहाँ वह केवल आद्य-वर्णके निर्देशतक सीमित है। शर्माजीने देखा था कि पुराने कोशोंकी इस कमीके कारण जिज्ञासुके लिए अपरिचित शब्दोंका खोजना कठिन हो जाता है। फिर आधुनिक युगके निरन्तर स्फीयमान वाङ्मयके शब्द भी उनमें नहीं मिलते। नये कोशोंमें उदाहरण और सन्दर्भ देनेकी जो प्रथा है, वह तो उनमें है ही नहीं। इसलिए उन कोशोसे आधुनिक कालके जिज्ञासुका काम नहीं चलता। इधर नये कोशोंमें शब्द वर्णानुक्रमसे सजाये जाते हैं और विभिन्न शास्त्रोंमें उनके विलक्षण प्रयोगको सन्दर्भ-निर्देशके साथ बता दिया जाता है। ये

कोश शर्माजीके अभिमत थे। उन्होंने ग्रन्थके पन्द्रहवें श्लोकमें जिन कोशोंको कोश-रचनाके लिए अत्यन्त आवश्यक बताया है उनमें 'शर्मण्य संग्रहों' की चर्चा है। इस शब्दसे वे प्रसिद्ध संस्कृत-जर्मन कोश 'सेंट पिट्र्सवर्ग डिक्शनरी' जैसे संग्रहोंकी बात करते जान पड़ते हैं। परन्तु इन कोशोंमें भी उन्हें दो बातें खटकीं। एक तो वे बहुत विस्तीर्ण हैं, फिर उनके दाम इतने अधिक होते हैं कि संस्कृतके विद्यार्थीकी पहुँचके बाहर होते हैं। फिर, पद्य-बद्ध होनेके कारण पुराने कोशोंको जिस प्रकार कंठस्थ कर लिया जा सकता है उस प्रकार इन्हें नहीं किया जा सकता। इस प्रकार उन्होंने वर्णानुक्रमके अनुसार पद्य-बद्ध कोशकी आवश्यकता अनुभव की। इस प्रयोजनके लिए उन्होंने वैदिक तथा लौकिक साहित्य, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष, नव्य-विज्ञान आदि विभिन्न शास्त्रोंके शब्द भी समेटे। उन्हें पद्य-बद्ध किया, परिशिष्टमें उनके प्रयोगोंके उदाहरण दिये तथा संस्कृतकी सजातीय प्राचीन भाषाओंके समानरूप शब्दोंके साथ तुलना भी की और इस 'विश्वविद्या' को पूर्णाङ्ग बनाया।

आधुनिक कालमें संस्कृत-साहित्यका अध्ययन केवल भारतवर्षतक ही सीमित नहीं है। अन्यान्य सभ्य देशोंमें भी इसका पठन-पाठन हो रहा है और वैदिक-साहित्यके अनेक शब्दोंकी नयी व्याख्याएँ सुझायी जा रही हैं। नये विद्वानोंके सुझावके आधार कई प्रकारके हैं--(१) ग्रीक, लैटिन, अवेस्ता आदिके शब्दोंके साथ तुलना, (२) वेद-परवर्ती किन्तु नवोद्धारित बौद्धादि शास्त्रोंमें या परवर्ती कालके स्मृति-पुराण आदिमें प्राप्त प्रयोगोंके साथ तुलना, (३) प्राचीन शिलालेखोंमें पाये जानेवाले शब्दोंके साथ साम्य (४) पार्श्ववर्ती और समकालीन आर्येतर भाषाओंसे शब्दोंके ग्रहण किये जानेकी सम्भावना और (५) भाषा शास्त्रीय नियमोंकी छान-बीनसे परिकल्पित शब्दोंके साथ सम्बन्ध इत्यादि। इनमें बहुतसे सुझाव तो अटकलसे अधिक महत्वके अधिकारी नहीं हैं। परन्तु कुछ ग्रहणीय भी हैं। शर्माजी जैसा अधिकारी विद्वान् ही यह निर्णय कर सकता है कि कौन-सा सुझाव ग्राह्य है और कौन-सा अटकलपच्चू कल्पनामात्र। इसीलिए 'कोश'के प्रारम्भमें ही उन्होंने अतन्द्रित भावसे व्याख्या-सहित समाम्नायके मनोयोगपूर्वक अध्ययनपर जोर दिया है। वे ठीक ही कहते हैं कि जो ऐसा नहीं कर सकता वह कोश-रचनाका अधिकारी भी नहीं है।

मूल वैदिक-संहिताओं, ब्राह्मण और उपनिषद् ग्रन्थोंके विशाल शब्द-भाण्डारके अतिरिक्त परवर्ती संस्कृत साहित्यका और भी विपुल शब्द-भाण्डार है। फिर शैव, शाक्त, वैष्णव, बौद्ध आदि आगमोंकी शब्द-राशि है जो शोध-कार्यमें लगे हुए विद्वानोंके प्रयत्नोंसे लगातार बढ़ती जा रही है। बौद्ध, जैन आदि अवैदिक सम्प्रदायोंके साहित्य हैं और पुराणों, दर्शनों, व्याकरण, ज्योतिष, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र, आयुर्वेद आदि शास्त्रोंमें प्रयुक्त होनेवाली विशाल शब्दावली है। कभी-कभी पालि, प्राकृत, अपभ्रंश और लोक-भाषाओंमें बचे हुए ऐसे अनेक शब्द मिल जाते हैं जो मूल संस्कृत शब्दोंकी याद दिलाते हैं। इस प्रकार संस्कृत कोशका निर्माण बहुत ही श्रम-साध्य दुस्तर कार्य है। ग्रन्थके आरम्भमें शर्माजीने सामान्य रूपसे शब्द-चयनके इन विभिन्न स्त्रोतोंकी चर्चा कर दी है।

इस देशमें कोशोंकी परम्परा बहुत पुरानी है। विद्वानोंने इनका आरम्भ यास्कके 'निरुक्त'में पायी जानेवाली निघण्टु शब्दावलीसे माना है। वैदिक शब्दोंके अर्थ-बोधके लिए इनका बहुत

महत्त्व है। परन्तु परवर्ती कालके कोशोंका उद्देश्य इनसे भिन्न था। वे काव्योंके अध्ययनके लिए भी उपयोगी बनाये जाते थे और कवियोंको श्लेष-युक्त काव्य-रचनामें सहायता पहुँचानेके लिए भी। साधारणतः वे श्लोक (अनुष्टुप्)–बद्ध होते थे, पर कभी-कभी 'आर्या' छन्दमें भी लिखे जाते थे। पुराने कोशोंको दो वर्गोंमें विभाजित किया जा सकता है—(१) समानार्थक, (२) नानार्थक। प्रायः प्रसिद्ध समानार्थक कोशोंमें एक अध्याय नानार्थका भी जोड़ दिया जाता था। विषय विभाजन सर्वत्र एक ही सिद्धान्तपर आधारित नहीं हुआ करता था। कई कोशोंमें शब्दोंको वाच्यार्थके अनुरूप सामान्य वर्गोंके अनुरूप सजाया जाता था। जैसे देव वर्ग, मनुष्य वर्ग, नदी वर्ग आदि। कुछ कोशोंमें यह वर्गीकरण अक्षर-संख्याके अनुसार भी किया गया है। कभी आद्य-वर्णके अनुसार और कभी अन्त्य वर्णके अनुसार उन्हें सजा दिया जाता था। परन्तु पूर्ण रूपसे वे आधुनिक वर्ण-क्रमके अनुसार नहीं होते थे। निघण्टुओंमें नाम और धातु दोनों दिये जाते थे परन्तु परवर्ती कोशोंमें केवल नाम और अव्ययका ही समावेश होता था। शर्माजीने अपने 'कोश' में विशुद्ध आधुनिक पद्धतिके वर्णानुक्रमको अपनाया है। शब्दोंके विभिन्न अर्थ एक ही स्थानपर मिल जाते हैं। इसीलिए उन्होंने कहा है कि यह कोश 'सपर्याय' भी है और 'नानार्थघटित' भी। उन्होंने पुराने कोशोंकी अर्थ-निर्देश पद्धतिको अपनाया है अर्थात् जिन शब्दोंका अर्थ बताना है वह प्रथमा विभक्तिमें दिये हुए हैं और उनके अर्थ सप्तमी विभक्तिमें। यथा-प्रसङ्ग लिङ्ग-निर्देश भी पुराने कोशोंके ढंगपर ही दे दिया है। इस प्रकार उन्होंने नयी और पुरानी पद्धतिका सामञ्जस्य किया है।

यद्यपि इस देशमें कोश-निर्माणकी परम्परा बहुत प्राचीन है किन्तु दुर्भाग्यवश सभी कोश उपलब्ध नहीं होते 'नाममाला' (कात्यायन), 'शब्दार्णव' (वाचस्पति), 'संसारावर्त' (विक्रमादित्य), 'उत्पलिनी' (व्यडि) आदि कोशोंका विभिन्न गन्थों या टीकाओंमें उल्लेख तो मिल जाता है पर वे अब लुप्त ही हो गये हैं। काशगरसे प्राप्त बेबरके हस्तलेख-संग्रहमें एक कोशका त्रुटित अंश भी प्राप्त हुआ है पर यह निश्चित नहीं हो पाया कि वह किसका लिखा है और पूरे कोशका नाम क्या था। अमर सिंहका प्रसिद्ध कोश 'नाम लिङ्गानुशासन', जो 'अमरकोश' नामसे अधिक प्रसिद्ध है, कदाचित् सबसे पुराना उपलब्ध कोश है। अमरसिंह बौद्ध थे, इस विषयमें किसीको बहुत सन्देह नहीं है। पर उनके आविर्भाव कालके सम्बन्धमें पण्डितोंमें मतभेद है। यह कोश तीन 'काण्डों' में विभाजित है। जिन्हें हमने ऊपर 'समानार्थक कोश' कहा है, यह उसी श्रेणीका है। इसपर अनेक टीकाएँ लिखी गयी थीं, जिनमें क्षीरस्वामी (११ वीं शताब्दी), वन्दघ घटीय सर्वानन्द (११५९) और राय मुकुटमणि (१४३१) की टीकाएँ प्रसिद्ध हैं। पुरुषोत्तमदेवने इसके परिशिष्ट रूपमें 'त्रिकाण्ड शेष' की रचना की थी जिसमें 'अमरकोश' में न आये हुए शब्द दिये गये हैं। शाश्वतका 'अनेकार्थ समुच्चय' भी काफी पुराना है। यह 'नानार्थक वर्ग' का कोश है। इसकी विभाजन पद्धति निराली है। पहले उन शब्दोंको लिया गया है जो पूरे श्लोकमें अटते हैं। फिर आधे श्लोकवाले और फिर एक चरणवाले। यह कोश भी पुरानी टीकाओंमें बहुत उद्धृत किया जाता है। 'हलायुध (९५० ई०) की 'अभिधान रत्नमाला' भी काफी लोकप्रिय रही है। शर्माजीके समकालीन पण्डित-समाजमें मुख्य रूपसे 'अमरकोश'का प्रचलन रह गया था। शाश्वत,

हलायुध, मेदिनी आदिकी भी थोड़ी बहुत पूछ थी। ऐसा जान पड़ता है कि शर्माजीके मनमें कुछ क्षोभ-सा था कि जो लोग कोश-निर्माणका कार्य करते हैं वे बहुत थोड़ेसे सन्तुष्ट हैं। जब वे कुछ विशेष ग्रन्थोंका नाम लेते हैं तो उनका तात्पर्य यही जान पड़ता है कि जो लोग उनके समयमें कोश-रचनाका दावा करते थे, वे प्रचलित ग्रन्थोंसे ही सन्तोष कर लेते थे। उन्हें उन महान् कोशोंकी जानकारी नहीं थी जो अनेक नये शब्दों और उनके अर्थोंको देनेमें समर्थ हैं। अत्यधिक परिचित और प्रचलित 'कोशों' का नाम देना आवश्यक नहीं था। जो कोश उन्हे आवश्यक जान पड़े उनमें 'वैजयन्ती' का नाम उन्होंने पहले लिया है। यादवप्रकाशके इस वृहदाकार ग्रन्थका सम्पादन जी० आपर्टने किया था। उसका प्रकाशन सन् १८९३ में मद्राससे हो चुका है। इसमें शब्दोंको प्रारम्भिक वर्णोंके अनुसार सजाया गया है। इसकी रचना ११ वीं शताब्दीमें हुई थी। इसके बाद उन्होंने 'मंख' का नाम लिया है। ये १२ वीं शताब्दीके कोशकार हैं। इनका 'अनेकार्थ कोश' १८९७ ई० में वियनासे प्रकाशित हुआ। इसपर इनकी स्वयंकी वहुत अच्छी टीका (अनेकार्थ कैरवाकरकौमुदी) है। 'मंख' ने अपने पूर्ववर्ती कोशाकारोंसे सामग्री संग्रह की है।

केशव स्वामीका 'नानार्थाणव संक्षेप' १२वीं शताब्दीका ग्रन्थ है। शर्माजीने इसका भी विशेष रूपसे उल्लेख किया है। परन्तु कदाचित् उन दिनोंके लिखे गये कोशोंमें हेमचन्द्रका 'अभिधान चिन्तामणि' सर्वोत्कृष्ट है। इसकी टीका भी स्वयं उन्हींकी लिखी है। यह छ: काण्डोंमें लिखा गया समानार्थक वर्गका कोश है। इसके परिशिष्ट रूपमें 'निघण्टु शेष' लिखा गया है, जिसमें वनौषधियोंके नाम हैं।

ऐसा जान पड़ता है कि शर्माजी जब ऐसा लिख रहे थे तो उनके सामने संस्कृतके दो प्रसिद्ध कोशोंकी बात थी—शब्दकल्पद्रुम और वाचस्पत्य। सर राजा राधाकान्तदेव बहादुरके विख्यात कोश 'शब्दकल्पद्रुम'में जिन २९ कोश-ग्रन्थोंसे शब्द संग्रह किये गये थे, उनमें 'वैजयन्ती' (यादव-प्रकाश), 'अनेकार्थ कोश' (मंख), 'अनेकार्थकैरवाकर कौमुदी' (मंख), 'नानार्थार्णव संक्षेप' (केशव स्वामी) के नाम नहीं हैं। 'अभिधान चिन्तामणि' (हेमचन्द्र) का नाम अवश्य है। तारानाथ तर्कवाचस्पतिके 'वाचस्पत्य कोश' में विलसनकी 'संस्कृत-इंगलिश-डिक्शनरी' और राजा राधाकान्तदेवके 'शब्दकल्पद्रुम' से सहायता ली गयी थी, पर उन्होंने अन्य शास्त्रीय शब्दोंका संग्रह किया था जो इन दोनों कोशोंमें नहीं हैं। उनका अधिक बल पाणिनि-सम्मत व्युत्पत्तिपर था। उन्होंने उन प्राचीन कोशोंके नाम नहीं गिनाये जिनसे अतिरिक्त शब्द संग्रह किये गये थे। विषय-सूची उन्होंने अवश्य दी है। उस सूचीमें बौद्ध-जैन शास्त्रोंके नाम नहीं हैं। यद्यपि इन कोशोंमें 'अलङ्कारशास्त्र' और 'नाट्यशास्त्र' की चर्चा है पर मूल काव्य-ग्रन्थोंका उल्लेख नहीं है। 'प्रारम्भ' में शर्माजीने इन कोशकारोंकी इस प्रकारकी त्रुटियोंका परिगणन कर दिया है।

"शर्मण्य-संग्रहा:" कहकर शर्माजीने जर्मन विद्वानों, और कदाचित् विलसन, मोनियर विलियम्स आदि विद्वानोंके प्रति आदर प्रकट करना चाहा है। दो महान् जर्मन विद्वान् ओटो-बोर्तलिक (Otto bohtlingk) और रुडोल्फ रॉथ (Rudolf Roth)ने अन्य अनेक जर्मन विद्वानोंके सहयोगसे, जिनमें सुप्रसिद्ध संस्कृत-विद्वान् ए० वेबर (A. webber) भी थे, एक महान् संस्कृत-जर्मन-शब्दकोशका निर्माण किया था जो सात जिल्दोंमें छपा था। प्रसिद्ध अंग्रेज कोशकार मोनियर विलियम्सके शब्दकोशकी योजना इस कोशसे भिन्न थी, फिर भी

उन्होंने उक्त महान् कोशसे सहायता ली थी। मोनियर विलियम्सकी 'संस्कृत-इंगलिश-डिक्शनरी' का दूसरा परिवर्द्धित संस्करण १८९९ ई० में प्रकाशित हुआ था। यूरोपियन पण्डितोंके ये कोश बड़े ही परिश्रमसे लिखे गये हैं। शर्माजीने अत्यन्त गौरवके साथ इनका स्मरण किया है जो उचित ही है। परन्तु इन कोशोंके प्रणयनके समय बहुत-सा साहित्य और कोश-ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हो सके थे। इन विद्वानोंको बहुत बार हस्तलिखित ग्रन्थोंकी भी सहायता लेनी पड़ी थी। शर्माजीने उसके बादके प्रकाशित कोशों और बौद्धादि शास्त्रोंसे अनेक नये शब्दोंका भी चयन किया है।

इन कोशोंके अतिरिक्त शर्माजीने चार ग्रन्थकारोंका विशेष रूपसे उल्लेख किया है। ये हैं—रत्नाकर, मल्ल, सोमदेव और भारवि। इनमें रत्नाकर सम्भवतः 'हरविजय' काव्यके रचियता हैं। इनका समय नवम शताब्दीका मध्य-भाग है। इन्हें 'राजानक वागीश्वर रत्नाकर' कहते थे। 'हरविजय' पचास सर्गोंका महाकाव्य है। कवित्वकी दृष्टि से तो यह बहुत उच्च कोटिका ग्रन्थ नहीं कहा जा सकता, पर अनेक विरल शब्दोंके प्रयोगके कारण कोशकारके लिए यह बहुत उपयोगी है। इस काव्यपर माघ और बाणका प्रचुर प्रभाव है। मल्लसे आशय 'वात्स्यायन नागमल्ल' का जान पड़ता है। निस्सन्देह इनके 'कामसूत्र' में अनेक विरल-प्रयोग-शब्दोंका सन्धान मिलता है। सोमदेव, 'कथासरित्सागर' नामक प्रसिद्ध कथा-ग्रन्थके लेखक हैं। यह ग्रन्थ गुणाढ्यकी 'बृहत्कथा' पर आधारित ग्रन्थोंपर आधारित होना चाहिये। सोमदेवने जालन्धरकी रानी सूर्यमतीके शोकाकुल चित्तको बहलानेके लिए ११वीं शताब्दीके अन्तिम चरणमें इस ग्रन्थकी रचना की थी। कोशकारके लिए यह ग्रन्थ भी एक निधि ही है। भारवि तो कालिदासके बाद संस्कृतके सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि हैं। इनका 'किरातार्जुनीय' काव्य भी प्रसिद्ध ही है।

जहाँतक शब्दोंके संग्रह और उनके अर्थ लिखनेका प्रश्न है, कोई भी कोशकार एकदम मौलिकताका दावा नहीं कर सकता। अधिक-से-अधिक कुछ अधिक शब्द और कुछ नवीन प्रयोग और सन्दर्भ-प्राप्त अर्थ देनेका ही दावा कर सकता है। पर, फिर भी कोश-निर्माण एक विशिष्ट कला है और प्रत्येक उल्लेख-योग्य कोशकार कुछ मौलिकताका परिचय दे सकता है, क्योंकि, जैसा कि मोनियर विलियम्स ने लिखा है, शब्दोंके अर्थ बतानेकी पद्धति और उनके क्रम-विन्यास और सजावटसे कोशकारकी वास्तविक मौलिकताका पता चल सकता है। शर्माजीने नये शब्दोंके सङ्कलन, उनके क्रम-विन्यास,सन्दर्भ-प्राप्त-अर्थ और व्युत्पत्ति आदिमें विशिष्ट मौलिकताका परिचय दिया है। फिर शब्दों और अर्थोंको प्राचीन-पद्धतिसे श्लोकबद्ध करके और सन्दर्भ आदिका पृथक् विचार करके एक बिलकुल नयी पद्धतिका प्रवर्तन किया है। जिसमें प्राचीनता और नवीनताके उत्तम-पक्ष समा गये हैं।

इस प्रकार प्रचुर अध्ययन-मननके पश्चात् यह अपूर्व 'कोश' लिखा गया है। इसके प्रकाशनमें बहुत बिलम्ब हो गया था। 'ज्ञानमण्डल' के अधिकारियोंने इसके प्रकाशनका निश्चय करके बहुत उत्तम कार्य किया है। वे संस्कृत-साहित्यके अध्येताओंके अशेष धन्यवादके पात्र हैं।

चण्डीगढ़

११-१२-६६

हजारीप्रसाद द्विवेदी

अथ

वाङ्मयार्णवः

उपक्रमः

सूर्याचन्द्रावतंसा जलधरमलिना कालिकाविश्रुता या
निस्तन्द्रां विष्णुमूर्त्तिं शरदि निजगदुर्यां शशाङ्कार्कनेत्राम् ।
रौद्री यस्याश्च मूर्त्तिः शिशिरकरकलामात्रविश्रान्तताया
वैराजी सत्समष्टिर्जयति भवमयी सा शिवा च स्वभूश्च ॥१॥
या शिल्पशास्त्रादिपयोमहार्हं सन्दुह्यते योजितबुद्धिवत्सैः ।
वैज्ञानिकैर्विश्वहिताय भूयः सा भारती कामदुघा ममास्तु ॥२॥
गोविन्ददेवीश्रीदेवनारायणसमाख्ययोः ।
पित्रोः स्मरन्गुरोश्चैव श्रीगङ्गाधरशास्त्रिणः ॥३॥
आ ऋषेरा च विपुलाल्लोकात्साम्प्रतिकादपि ।
निर्मथ्य वाङ्मयाब्धिं श्रीविश्वविद्यां समारभे ॥४॥
नानार्था अर्थपर्याया ये दृष्टा लोकवेदयोः ।
वर्णक्रमेण ते सर्वे पद्यैर्बद्धा न कुत्रचित् ॥५॥
उपयुक्तोदाहरणैः पद्यकोषा न भूषिताः ।
विस्तीर्णा अतिमूल्याश्च नव्यकोषा न सुस्मराः ॥६॥
वर्णानुक्रमविन्यस्तैर्लोकवेदोभयोद्धृतैः ।
पद्यबद्धैः सपर्यायैर्नानार्थैर्घटितो महान् ॥७॥
विशेषशास्त्रायुर्वेदप्रभृतीनां पदैर्युतः ।
सोपयुक्तोदाहृतिभिष्टिप्पणैः समलङ्कृतः ॥८॥
सचित्रः प्रचुरार्वाच्यवैज्ञानिकपदोच्चयः ।
परिशिष्टैश्च बहुभिः कोष एष परिष्कृतः ॥९॥

प्रारम्भः

मनसा न समाम्नायो यैः सव्याख्योऽनुशीलितः ।
श्रुतिभ्यः शब्दमणयो नोच्चिता यैरतन्द्रितैः ॥१०॥
स्मृतौ तन्त्रे पुराणेषु दर्शने व्याकृतावपि ।
ज्योतिषे प्राकृते बौद्धजैनसाहित्यकानने ॥११॥
पदप्रसूनाञ्जलयो नाऽटद्भिर्यैरुरीकृताः ।
वैजयन्ती न दृष्टा यैर्नैव मङ्खोऽवलोकितः ॥१२॥
नेक्षिता यैरनेकार्थकैरवाकरकौमुदी ।
नानार्थार्णवसंक्षेपो नैवाभ्यस्तः परिश्रमात् ॥१३॥
सव्याख्यो नैवाऽभिधानचिन्तामणिरपीक्षितः ।
न च राजनिघण्टूनां विहितं चावगाहनम् ॥१४॥
नैव केशवकल्पद्रुः कल्पितो हृदये मुहुः ।
शर्मण्यसङ्ग्रहा[1] नैव कृता ग्रहणगोचराः ॥१५॥
रत्नाकरस्य मल्लस्य सोमदेवस्य भारवेः ।
नेक्षिताः कृतयो यैश्च कोशं किं कुर्युरीदृशाः ॥१६॥

---

१. जर्मनीदेशीय संग्रहाः ।

अ

अंशुः सूत्रादिसूक्ष्मांशेऽप्येकदेशे लतादिनः ।
चन्द्रे सूर्ये पुमान्द्वे तु मयूखे च द्युतावपि ॥१॥
अंशुकं श्लक्ष्णवस्त्रे स्याद्वस्त्रमात्रोत्तरीययोः ।
अंशुमांस्तु पुमान्सूर्ये चन्द्रे चाद्यमहीपतौ ॥२॥
दिलीपाख्यस्य नृपतेस्तातेऽथांशुमती स्त्रियाम् ।
पृश्निपर्णीशालपर्ण्योरंशुयुक्ते तु भेद्यवत् ॥३॥
अः स्यादभावे स्वल्पाऽर्थे निषेधे च नञर्थकम् ।
अव्ययं चानुकम्पायामिदमर्थे त्वनव्ययम् ॥४॥
अः स्याद्विष्णौ विरिञ्चे च प्रथमे च स्वरे (तथा) पुमान् ।
अकः पापे च दुःखे च तथैव प्रत्ययान्तरे ॥५॥
अकनिष्ठा बौद्धदेवविशेषेषु नृभूमनि ।
केषांचित्पुंसि बुद्धेऽपि वाच्यवत्त्वकनिष्ठके ॥६॥
अकल्कः कल्कहीने त्रिरकल्का कौमुदी स्त्रियाम् ।
अकुलं स्याज्जले पोते कुलहीने तु वाच्यवत् ॥७॥
अकुलः पुंसि शम्भौ स्यात्स्त्री गौर्यामकुला मता ।
अकूपारः पुमान्सर्पे कूर्मराजेऽ (म्बुधावथ) ब्धिकूर्मयोः ॥८॥
त्रिर्गम्भीरेऽप्यपारेऽथाकूपाराङ्गिरसः स्त्रियाम् ।
अकूवारः कूवरे नाऽकूवारा स्यात्स्त्रियां भुवि ॥९॥
अकृतं त्रिष्वजनिते क्लीबं त्वकृतमित्यदः ।
यवव्रीह्यादि सतुषहविष्ये परिकीर्त्तितम् ॥१०॥
अक्तः प्रेते द्वयोरक्ता निशि त्रिर्म्रक्षितादिषु ।
अक्तुर्ना केशवे शक्ते प्रकाशे स्त्री तु दिङ्निशाः ॥११॥
अक्षः पुमानामलके द्यूतभेदे वराटके ।
आधारे व्यवहारे च शकटे च विभीतके ॥१२॥
रथादिचक्रे कर्षाख्यमानद्यूतशलाकयोः ।
चतुःशताङ्गुले मानभेदे चैव रथादिनः ॥१३॥

चक्रधारकदण्डे च रुद्राक्षेन्द्राक्षयोरहौ ।
अक्षं नपुंसकं तुत्थे स्यात्सौवर्चल इन्द्रिये ॥१४॥
नित्येऽपि कैश्चिदुक्तोऽयं तत्र स्यादभिधेयवत् ।
अक्षजस्तु पुमान्वज्रे विष्णौ च परिकीर्त्तितः ॥१५॥
अक्षतं तण्डुले धान्ये लाजेषु क्लीबयोषितोः ।
अहिंसिते त्रि पण्डे तु न द्वयोर्ना यवे स्मृतः ॥१६॥
स्त्रीत्वे त्वक्षतयोन्यां सा कन्यायामक्षता मता ।
अक्षमाला च सूत्रेऽरुन्धत्यां वत्सस्य मातरि ॥१७॥
अक्षयो विष्णुवासे वा क्षयहीने त्रिलिङ्गकः ।
अक्षया तिथिभेदेऽपि स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥१८॥
स्यादक्षयगुणः पुंसि शिवे योगे तु वाच्यवत् ।
अक्षरस्तु शिवे विष्णौ खड्गे वेधस्यथाक्षरा ॥१९॥
वाच्यना क्ली विधौ धर्मे वर्णेऽम्बुतपसोः क्रतौ ।
अक्षराख्ये सामभेदे खे मोक्षे मूलकारणे ॥२०॥
परमाणौ ब्रह्मणि च प्रणवे तु नृशण्डयोः ।
त्रिर्निःक्षरे चाविनाशिन्यपि चापरिणामिनि ॥२१॥
स्त्रियामक्षरपङ्क्तिः स्याच्छन्दोभेदे त्रियौगिके ।
स्त्री स्यादक्षवती द्यूतक्रीडायां त्रि तु यौगिके ॥२२॥
अक्षि नेत्रे तथेक्ष्वादेः काण्डस्यावयवान्तरे ।
इन्द्रियोपनिषद्भेदद्विसंख्यासु नपुंसकम् ॥२३॥
अक्षितं क्षितभिन्ने त्रि क्ली लक्षप्रयुते जले ।
अक्षीबं वशिरे शिग्रौ ना त्रिलिङ्गस्तु निर्मदे ॥२४॥
अक्षुः पुमान्समुद्रे च वप्रे च परिकीर्त्तितः ।
अक्ष्णं नेत्रेऽक्ष्णा तु रज्जौ रोगेऽक्ष्णस्त्रित्वखण्डिते ॥२५॥
अखातं देवखाते स्यात्त्रि तु खातेतरे मतम् ।
अखिलं वाच्यवत्कृत्स्ने गर्ह्येऽपि परिकीर्त्तितम् ॥२६॥
अगः सूर्याद्रिकुम्भाऽहिपादपेषु पुमान्मतः ।
तथैव सप्तसंख्यायां त्रि तु स्यादगतिक्षमे ॥२७॥

अगमो ना गिरौ वृक्षे गतिहीने तु भेद्यवत् ।
अगस्त्यः कुम्भजे वङ्गसेनद्रौ तारकान्तरे ॥२८॥
प्रसवे त्वस्य वृक्षस्यागस्त्य गस्त्यं नपुंसकम् ।
अगस्तिवद्वङ्गसेनफलादौ तु नपुंसकम् ॥२९॥
अगाढोऽनवगाढे चाप्यभृशे[1] चाभिधेयवत् ।
अगाधं विवरे क्लीबं त्रिस्तलस्पर्शवर्जिते ॥३०॥
अग्निभेदे त्वगाधोऽयं पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
अगुरु क्ली शिंशपायां जोङ्गके पुंनपुंसकम् ॥३१॥
त्रिलिङ्गं तु लघुन्यत्रागुर्वी चैवागुरुः स्त्रियाम् ।
अगौकाः शरभे द्वे स्यात्पक्षिपश्वास्ययोरपि ॥३२॥
अग्नायी स्त्री भवेत्स्वाहादेव्यां त्रेतायुगेऽपि च ।
अग्निर्वैश्वानरेऽपि स्याच्चित्रकाख्यौषधौ पुमान् ॥३३॥
अग्निगन्धो वह्निगन्धे कणजीरणनाम्नि च ।
सूक्ष्मजीरकभेदे ना त्रिस्त्वग्निसमगन्धके ॥३४॥
अग्निज्वाला धातकीद्रौ वह्निज्वाले तु सा द्वयोः ।
अग्निमन्थो मन्थनेऽग्नेर्ना श्रीपर्णतरावपि ॥३५॥
भल्लातकेऽग्निमुख्युक्ताऽग्निमुखो देवविप्रयोः ।
क्लीबमग्निशिखं प्रोक्तं कुसुम्भे कुङ्कुमेपि च ॥३६॥
विशल्यालाङ्गलिक्यग्निज्वालास्वग्निशिखा स्त्रियाम् ।
अग्निष्ठः पुंस्युपस्थायसंज्ञयूपद्वयान्तरे ॥३७॥
स्थितयूपे वाच्यवत्तु पावकावस्थिते भवेत् ।
अग्निहोत्रन्त्वाहिताग्नेर्नित्यहोमे नपुंसकम् ॥३८॥
अग्निहोत्री होमधेनावग्निहोत्राऽग्निहव्ययोः ।
अग्नौ हुतेत्वग्निहोत्रं वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ॥३९॥
अग्रं पुरस्तादुपरि पलमानेषु संहतौ ।
आलम्बनाधिक्यश्रैष्ठ्यप्रान्तेषु स्यान्नपुंसकम् ॥४०॥

---

[1] १. दृढेऽपि

अधिके तु प्रधाने च प्रथमे चाभिधेयवत् ।
अग्रजन्मा विरिञ्चे ना द्वयोस्त्वग्रजविप्रयोः ॥४१॥
अग्रतः प्रथमे चाग्रे लिङ्गहीनमुदाहृतम् ।
स्त्री त्वग्रेदिधिषू रूढाऽनूढा स्याज्ज्यायसी यदि ॥४२॥
नात्वग्रेदिधिषूरग्रेदिधिषुश्चानुजो मतः ।
यो ज्यायसः प्रमीतस्य परिगृह्णाति योषितम् ॥४३॥
स च द्विजः पुनर्भ्वाख्या द्विर्यूढा यत्कुटुम्बिनी ।
अघं तु व्यसने दुःखे दुरिते च नपुंसकम् ॥४४॥
अघपानोऽस्त्रियां बाहौ ऋषिभेदे पुमान्स्मृतः ।
अङ्को रूपकभेदाङ्कचिह्नरेखाजिभूषणे ॥४५॥
रूपकांशान्तिकोत्सङ्गापराधस्थानवक्षसि[1] ।
अङ्कतिर्नाऽनिले ब्रह्मण्युक्तो बह्न्यादिषु स्त्रियाम् ॥४६॥
अङ्कपालिः परीरम्भे धात्रीवैदिकयोः स्त्रियाम् ।
अङ्को नपुंसकं सान्तं संयुगे स्वाङ्गभिद्यपि ॥४७॥
अङ्कुरस्त्वस्त्रियां बीजप्ररोहे किं च शाखिनाम् ।
प्रतानभेदे क्लीबं तु रुधिरे रोम्णि वारिणि ॥४८॥
अङ्कुरी तु वसन्ते ना वृक्षे च त्रि तु साङ्कुरे ।
अङ्क्यः स्यादङ्कनीये त्रिस्स्यान्मृदङ्गान्तरे पुमान् ॥४९॥
अङ्गं शरीरावयवे शरीरोपाययोर्गुणे ।
वैयाकरणसंज्ञायां प्रदेशे च नपुंसकम् ॥५०॥
नीवृद्भेदे च पुंभूम्नि तद्राजे तु पुमानयम् ।
अन्तिकेऽङ्गवति त्रि स्यादथाऽङ्गेत्यव्ययं मतम् ॥५१॥
सम्बोधने च हर्षे च सम्भ्रमासूययोरपि ।
अङ्गजं रुधिरेऽथाङ्गजः केशे कामरोगयोः ॥५२॥
स्यात्त्रिलिङ्गोऽङ्गसञ्जाते द्वे अपत्येऽङ्गजोङ्गजा ।
अङ्गतिर्ना हरौ ब्रह्मण्यग्निहोत्रिणि पावके ॥५३॥

१. चित्रयुद्धेऽपि

अङ्गदो बालिपुत्रे स्यात्केयूरेऽङ्गदमिष्यते ।
अङ्गदा वामनेभस्य[1] पत्न्यां चन्द्रकलान्तरे ॥५४॥
अङ्गनं प्राङ्गणे याने कल्याण्यामङ्गना स्त्रियाम् ।
स्यादङ्गनाप्रियोऽशोकाम्रयोस्त्रिषु तु यौगिके ॥५५॥
अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपे नृत्यतोऽङ्गहृतौ तथा ।
अङ्गारस्तु पुमान्भौमे स्यादुष्णगुण एव च ॥५६॥
त्रिस्तु तद्वति निर्वाणज्वाले त्वग्नौ नृशण्डयोः ।
अङ्गारोऽङ्गारमित्येतन्निर्वाणाग्नावपीन्धने ॥५७॥
अङ्गारकः कुरण्टे चोल्मुकांशे ना खगे द्वयोः ।
तथा करञ्जभेदेऽङ्गारवल्लरिरुदीरिता ॥५८॥
अङ्गारवल्ली भार्ङ्गीति प्रसिद्धे भेषजान्तरे ।
भवेदङ्गारिका त्विक्षुकाण्डे किंशुककोरके ॥५९॥
अङ्गारिणी हसन्त्यां च भास्करव्यक्तदिश्यपि ।
अङ्गारितं तु दग्धे च पलाशकलिकोद्गमे ॥६०॥
वासन्त्यां तु लतामात्रेऽङ्गारिताप्यापगान्तरे ।
शरीरिशेषिणोरङ्गी वाच्यवच्याङ्गवत्यपि ॥६१॥
अङ्गिरा ऋषिभेदे ना सकारान्तो बृहस्पतौ ।
तद्वंश्येषु तु पुंभूम्नि स्युरङ्गिरस इत्यमी ॥६२॥
अङ्गुर्द्वयोः पक्षिणि स्याद्धिंसार्थे तु पुमानयम् ।
अङ्गुलोऽस्त्री तिर्यगष्टयवमाने पुमांस्तु सः ॥६३॥
पक्षिलस्वामिनि तथाऽङ्गुष्ठेऽश्वत्थद्रुमेऽङ्गुलौ ।
कात्यायने च चाणक्ये केचित्पुंस्यङ्गलं जगुः ॥६४॥
अङ्गुलिः स्यादङ्गुलीवच्छाखासु करपादयोः ।
कराग्रे कर्णिकाख्येऽपि करिणः स्त्रीत्वमिष्यते ॥६५॥
अङ्गुलीयं तूर्मिकायां त्रिषु त्वङ्गुलियोगिनि ।
अङ्गुषस्तु पुमान्हस्ते पक्षिभेदेऽङ्गुषी द्वयोः ॥६६॥

---

१. सार्वभौमस्य

अङ्घ्रिर्ना पादतुर्यांशतरूमूलेषु नाऽङ्घ्रिवत् ।
अचलो विष्णुकीलाद्रिष्वथ भुव्यचला स्त्रियाम् ॥६७॥
देव्यां च काञ्चिकस्थानस्थितायां त्रिस्तु निश्चले ।
अच्छः स्यात्स्फटिके पुंसि द्वे भल्लूके त्रि निर्मले ॥६८॥
अच्छाव्ययं चाभिमुख्येऽच्छा दीर्घे संहिताकृते ।
अच्युतस्तु पुमान्विष्णौ स्यात्स्थिरे त्वभिधेयवत् ॥६९॥
अजो हरीन्द्रब्रह्मेशकामे समपितामहे ।
अजन्यं क्लीबमुत्पाते त्र्यनुत्पाद्यविजन्ययोः ॥७०॥
अजपस्त्रिपुरध्येतर्यजपाले च निर्जपे ।
अजपा तु स्त्रियामेषा हंसमन्त्रे प्रकीर्त्तिता ॥७१॥
अजमोदा यवान्यां स्यान्निर्यासे शाल्मलेरपि ।
अजा स्त्रियां स्यात्प्रकृतौ छागे द्वे त्रि त्वजन्मनि ॥७२॥
अजितस्तु पुमान्विष्णौ दूर्वायामजिता स्त्रियाम् ।
अजिनं जिनहीने त्रिः क्लीबे पापेऽपि चर्मणि ॥७३॥
अजिरः पवनेऽथ क्ली शरीरविषयाङ्गणे ।
शैघ्र्ये पुरेऽजिरा तु स्त्री पार्वत्यां च सरित्यपि ॥७४॥
त्रिलिङ्गोऽजर्जरे शीघ्रे द्वे मृगान्तरभेकयोः ।
अजिष्णुस्तु पुमानग्नावुदके तु नपुंसकम् ॥७५॥
अजिह्मगः शरे पुंसि त्रि तु स्यादृजुगामिनि ।
अज्ञो जडे च मूर्खे चाप्यभिधेयवदिष्यते ॥७६॥
अञ्चतिर्नाऽनिलेऽग्नौ च स्त्रियां बह्वादिषु स्मृतः ।
अञ्चनं त्वर्चने तद्वद्गतावपि नपुंसकम् ॥७७॥
अञ्जनं कज्जले चाक्तौ सौवीरे च रसाञ्जने ।
क्ली स्त्रियोस्त्वञ्जयत्यर्थे त्रिषु त्वञ्जनसाधने ॥७८॥
पुंसि ज्येष्ठादिग्गजयोरञ्जना तु हनूमतः ।
जनन्यामपि जन्तौ च हालाहलसमाह्वये ॥७९॥
ईदन्तस्त्वञ्जनीशब्दो लेप्यनार्यां भवेत्स्त्रियाम् ।
अञ्जलिस्तु पुमान् हस्तसंपुटे कुडवेऽपि च ॥८०॥

अञ्जलेः कर्तरि प्रोक्ता त्रिलिङ्गाऽञ्जलिकारिका ।
क्षुद्रजन्तुविशेषे तु गजायुर्वेदभाषिते ॥८१॥
नमस्कारीसमाख्ये च क्षुद्रवल्ल्यन्तरे स्त्रियाम् ।
अञ्जसेत्यव्ययं प्रोक्तं तत्त्वतूर्णार्थयोरपि ॥८२॥
अञ्जिः 'शेफे पुमान्नागकेसराह्वयपादपे' ।
त्रिस्त्वृजौ व्यञ्जके शुक्ले पेषण्यां तु स्त्रियामियम् ॥८३॥
अट्टो नातिशये घाते क्षौमसंज्ञगृहान्तरे ।
शुष्कस्फुटितभूभागे त्रिषु पक्वौदने तु नप् ॥८४॥
अड्डनं त्वतियोगे स्याच्छस्त्राणां च निवारणे ।
वेत्रादिरचिते खेटभेदे तत् क्लीबलिङ्गकम् ॥८५॥
अणिरक्षाग्रकीले द्वे सीम्न्यथ क्ल्यश्रिरूप्ययोः ।
'वर्द्धमानतिथिप्रायपक्षेप्याणिवदेवना ।' ॥८६॥
'चिक्रोडाख्ये प्राणिभेदे पुंस्त्रियोरणिरुच्यते ।'
अणीचिस्तु पुमान्विष्णौ त्रिषु शाकटिके मतः ॥८७॥
अणुः पुमान्धान्यभेदे परमाणौ समीरणे ।
क्लीबं त्वम्भोधिलवणे स्यात्सूक्ष्मे त्वभिधेयवत् ॥८८॥
तत्र स्त्र्यर्थेऽणुरण्वी वा रश्मौ त्वण्व्यङ्गुलौ तथा ।
अणुको निपुणे चाल्पे त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥८९॥
अण्डमण्डो विहङ्गादेः पेशीकोशे च मुष्कके ।
अण्डजोऽहौ द्वयोर्मत्स्ये सरटे विहगे तथा ॥९०॥
अण्डजा मृगनाभौ स्यादण्डाज्जातेऽण्डजस्त्रिषु ।
अण्डीरमण्डीराण्डीरस्त्रिषु शक्तिमति स्मृतम् ॥९१॥
अण्डीरः पुरुषे पुंसि सज्जने मुष्कवत्पशौ ।
अण्डुकः पुंसि मुष्केऽथ द्वयोष्टिट्टिभभेकयोः ॥९२॥
अततिस्तु पथि स्त्री स्यादतधातौ पुमान्मतः ।
अतसो ना वनस्पत्यन्तरे स्यादतसी स्त्रियाम् ॥९३॥
उमाख्ये धान्यभेदे क्ली त्वतसं वनमुच्यते ।
अत्यव्ययं प्रशंसायां प्रकर्षे लङ्घनेऽपि च ॥९४॥

नितान्तासंप्रतिक्षेपवाच्यप्येतत्प्रयुज्यते ।
अतिगण्डो योगभेदे बृहद्गण्डे तु वाच्यवत् ॥९५॥
अतिथिः कुशपुत्रे स्यात्तथैव गृहमागते ।
अबन्धौ भोक्तुकामे च योगार्थे तु यथायथम् ॥९६॥
प्रबलेऽतिबलः प्रोक्तोऽतिबला भेषजान्तरे ।
त्रिर्निःसङ्गेऽतिमुक्तोऽथ वासन्त्यां तिमिशे च ना ॥९७॥
अतिवेलो भृशे वेलामतिक्रान्तेऽपि वाच्यवत् ।
अतिसर्जनमुक्तं क्ली दानेपि च वधेपि च[1] ॥९८॥
अत्ता श्वश्र्व्यां मातरि च स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।
नाट्योक्त्या वृद्धवेश्यायां ज्येष्ठायां च स्वसर्यपि ॥९९॥
अत्नुर्वायावात्मनि च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
अत्ययोऽतिक्रमे दण्डे विनाशे दोषकृच्छ्रयोः ॥१००॥
अत्याकारस्त्वधिक्षेपेऽवज्ञायां च पुमान्मतः ।
अत्याकृतिमतित्वेष भेद्यवत्परिकीर्त्तितः ॥१०१॥
अत्यारूढं समारूढेऽभ्यधिकेऽपि च वाच्यवत् ।
अत्याहितं महाभीत्यां प्राणानाकाङ्क्षकर्मणि ॥१०२॥
अत्यूहो गजमेढ्रे ना त्रि त्वत्यर्थोहनादिषु ।
अत्यूहा नीलिकायां स्त्री नीलकण्ठखगे द्वयोः ॥१०३॥
अत्वरस्तु त्वराहीने त्रि द्वे तु महिषे स्मृतः ।
अथाथो संशये स्यातामधिकारे च मङ्गले ॥१०४॥
विकल्पानन्तरप्रश्नकात्स्न्यारम्भसमुच्चये ।
अथर्वणिर्नाऽथर्वज्ञब्राह्मणे च पुरोधसि ॥१०५॥
अथर्वा त्वृषिभेदे स्याद्वेदभेदे तथा पुमान् ।
अथर्वभेदमन्त्रेषु तदध्येतर्यपि स्मृतः ॥१०६॥
अदः शब्दं त्रिषु प्राहुरत्र तत्र परत्र च ।
अदितिः स्त्री भवान्यां स्यात्पृथिव्यां देवमातरि ॥१०७॥

१. अतीकाशः द्वारम् (दिक्ष्वतीकाशान् करोति—साय Intro. to ऋ.)

सुरभौ वाचि होमार्थं समिद्रक्षणकर्मणि ।
द्यावापृथिव्योरदिती इत्यथ त्रिषु निर्दितौ ॥१०८॥
अदृष्टं वह्नितोयादि दैवभीतौ महीभुजाम् ।
धर्माधर्मावदृष्टं स्यात्त्रित्वदृष्टमवीक्षिते ॥१०९॥
असौम्येक्षण्यदृष्टिः स्त्री दृष्टिहीने तु भेद्यवत् ।
अद्धाऽव्ययं स्यात्प्रत्यक्षे सत्येपि च तथामतम् ॥११०॥
अद्भुतो वैश्वदेवाग्नौ त्रित्वाश्चर्ये महत्यपि ।
अद्भुताख्ये रसे त्वेष पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥१११॥
अद्मनिस्तु पुमानग्नौ जयहस्तिन्यथ स्त्रियाम् ।
पशूनां भक्षणे द्रोण्यां तथा तालुनि कीर्त्तिता ॥११२॥
अद्रिः पुमान्स्मृतः शैले रवावम्बुधरे द्रुमे ।
अद्रिजा तु भवान्यां स्त्री क्ली शिलाजतुनि स्मृतम् ॥११३॥
अधमो गर्हणीये स्यान्नीचे चाप्यभिधेयवत् ।
ओष्ठेऽधरो नाऽनूर्ध्वे तु त्रिर्हीने दीनवादिनि ॥११४॥
अधि स्यादधिकारे चापीश्वरेप्यधिकेपि च ।
अथाधिकरणं द्रव्य आधारेऽधिकृतौ च नप् ॥११५॥
अधिके कुरणे न स्त्री बहुव्रीहौ तु भेद्यवत् ।
अधिकाङ्गं सारसनसंज्ञे कवचधारिभिः ॥११६॥
मध्यबद्धेऽधिके चाङ्गे क्ली त्रि त्वन्यपदार्थकम् ।
अध्यक्षेऽधिकृतस्त्रिश्च स्वरितेनानुवर्त्तिते ॥११७॥
अधिक्षिप्तं प्रणिहिते कुत्सिते भर्त्सिते त्रिषु ।
त्रिर्नाथेऽधिपतिः पुंसि मूर्धस्थावर्त्तविप्रयोः ॥११८॥
अधिरोहणमारोहे निःश्रेण्यां त्वधिरोहणी ।
अधिवासो निवासेऽपि गन्धधूपादिसंस्कृतौ ॥११९॥
क्लीबेऽधिश्रयणं पक्तुं स्थाल्यादेः परिकीर्त्तितम् ।
स्त्री त्वधिश्रयणी चुल्ल्यां चुल्ल्यामारोपणे पुनः ॥१२०॥
अधिष्ठानं तु नगरे रथचक्रप्रभावयोः ।
अध्यासने च काश्मीरप्रसिद्धनगरान्तरे ॥१२१॥

कश्चिचत्त्वारोपणेप्याह व्यवस्थापन एव च ।
अधीरो वाच्यवद्भीरौ चञ्चलेपि प्रकीर्त्तितः ॥१२२॥
अधृष्या तटिनीभेदे प्रगल्भेप्यभिधेयवत् ।
अध्यक्षोऽधिकृते चैव प्रत्यक्षे चाभिधेयवत् ॥१२३॥
अध्यण्डा त्वात्मगुप्तायामामलक्यामपि स्त्रियाम् ।
पुमानध्यवसायः स्यादुत्साहे निश्चयेपि च ॥१२४॥
अध्यायोऽध्ययनेपि स्याद्ग्रन्थावच्छेदभिद्यपि ।
अध्यातरि तथा ध्यायहीने वाच्यवदिष्यते ॥१२५॥
अध्यारूढं समारूढेऽभ्यधिके चाभिधेयवत् ।
अध्यूढा कृतसापत्न्यनार्यामध्यूढ ईश्वरे । ।१२६॥
अध्वा ना पथि संस्थाने स्यादवस्कन्दकालयोः ।
अध्वरस्त्रिः सावधाने वसुभिद्यज्ञयोस्तु ना ॥१२७॥
आकाशे त्वध्वरमिति नपुंसकमुदीरितम् ।
अनघो निर्मलापापमनोज्ञेष्वभिधेयवत् ॥१२८॥
अनघो नाशिवे साध्य गन्धर्व मनुजान्तरे ।
अनङ्गो मदनेऽनङ्गमाकाशमनसोरपि ॥१२९॥
अङ्गहीने त्वनङ्गस्त्रिरङ्गभिन्ने नपुंसकम् ।
अनञ्जनं तु क्ली व्योम्नि त्रि तु स्याद्विगताञ्जने ॥१३०॥
अनड्वान्नावृषेऽन्यायामनड्वाह्यनडुह्यपि ।
अनन्तः केशवे शेषे बलदेवे च वासुकौ ॥१३१॥
विश्वेदेवान्तरे सिन्दुवारेऽर्हन्नृपभेदयोः ।
क्ली त्वभ्रके खेऽनन्ता तु पौर्णमास्यां महद्दिशि ॥१३२॥
भूगुडूच्योर्विशल्यायां शारिवादूर्वयोरपि ।
कणादुरालभापथ्यापार्वत्यामलकीषु च ॥१३३॥
लाङ्गल्यामग्निमन्थे च तारादेव्यामपि स्त्रियाम् ।
जनमेजयपत्न्यां चाथान्तेनरहिते त्रिषु ॥१३४॥
अनपालिस्तु धात्र्यां स्त्री तथा पाल्यां गदद्रुहि ।
अनयो व्यसनानीतिदैवाशुभविपत्सु च ॥१३५॥

अनलश्चित्रके वह्नौ पुमान्वस्वन्तरेपि च ।
अनोऽन्ने शकटे सान्तं क्लीबमम्बुनि चौदने ॥१३६॥
भवेदनिमिषो देवे मत्स्ये चाप्यनिमेषवत् ।
द्वयं तु तत्त्रिलिङ्गं स्यान्निमिषेण विवर्जिते ॥१३७॥
अनिरुद्धः पुमान्पत्यावुषायास्त्रित्ववारिते ।
अनिलः पुंसि पवने स्मृतो वस्वन्तरेपि च ॥१३८॥
अनीकोऽस्त्री रणे सैन्ये वृन्दे बाणाङ्गभिद्यपि ।
अनीकस्थो रणगते हस्तिशिक्षा विचक्षणे ॥१३९॥
राजरक्षिणि चिह्ने च वीरमर्दनकेपि च ।
अनीकिनी सैन्यमात्रेऽक्षौहिण्या दशमेंशके ॥१४०॥
अनु हीने सहार्थे च पश्चात्सादृश्ययोरपि ।
लक्षणेत्थंभूतभाषाभागवीप्सास्वनुक्रमे ॥१४१॥
आयामे च समीपे च समुदाहृतमव्ययम् ।
अनुः प्राणे पुमानुक्तो मनुष्ये तु द्वयोर्मतः ॥१४२॥
अनुकर्षो रथाधःस्थदारुण्यप्यनुकर्षणे ।
अनुक्रोशः कृपायां ना स्यादनुक्रोशनेपि च ॥१४३॥
सामान्तरे त्वनुक्रोशं नपुंसकमुदाहृतम् ।
अनुगो वाच्यवत्प्रोक्तोऽनुगामिनि च सेवके ॥१४४॥
भवेदनुचरो वाच्यलिङ्गोऽनुगसहाययोः ।
अनुजीवी सहाये च सेवके चाभिधेयवत् ॥१४५॥
अनुतर्षस्तु चषके मद्ये तृष्णाऽभिलाषयोः ।
उपर्युदीच्यश्रेष्ठानां विपरीते त्र्यनुत्तरः ॥१४६॥
श्रेष्ठे च विपरीते तु प्रतिवाचो नपुंसकम् ।
बहुव्रीहावीदृशानां प्रयोगस्त्रिषु संमतः ॥१४७॥
अनुदात्तो निघाताख्यस्वरे तद्वति तु त्रिषु ।
भिन्नेप्युदात्तादेतस्य प्रयोगस्त्रिषु संमतः ॥१४८॥
अनुद्वेषो द्वेषमात्रे दीर्घद्वेषानुबन्धयोः ।
पश्चात्तापे तथा देशभेदेपि च पुमान्मतः ॥१४९॥

याच्ञोपतापैश्वर्याशीःष्वनुनाथनमिष्यते ।
भवेदनुपमा सुप्रतीकिन्यां त्रिषु तूत्तमे ॥१५०॥
अनुबन्धस्तु बन्धे स्याद्दोषोत्पादे विनश्वरे ।
मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानिवर्त्तने ॥१५१॥
अनुबन्धी तु हिक्कायां तृष्णायामपि योषिति ।
अनुभावः प्रभावे स्यान्निश्चये भावबोधके ॥१५२॥
अथानुमतिराम्ले स्यादनुज्ञायामपि स्त्रियाम् ।
पूर्णिमायां कलाहीनचन्द्रायामपि सोच्यते ॥१५३॥
अनुरूपस्तु सदृशे भेद्यवत्परिकीर्त्तितः ।
स्याद्बहिष्यवमानस्य द्वितीये सतृचे पुमान् ॥१५४॥
अनुवत्सर इत्युक्तो वत्सरे वत्सरान्तरे ।
अथानुवासनं स्नेहबस्तिधूपनयोर्मतम् ॥१५५॥
भवेदनुशयो द्वेषे पश्चात्तापानुबन्धयोः ।
अनुषङ्गस्तु कारुण्ये प्रकृतस्यानुवर्त्तने ॥१५६॥
अनुष्टुप् छन्दसि द्वात्रिंशद्वर्णे वाचि च स्त्रियाम् ।
अनूकं तु कुले शीले कण्ठाभ्यर्णाङ्गभिद्यपि ॥१५७॥
अनूकस्तु गते जन्मन्येष पुंसि प्रकीर्त्तितः ।
अनूचानो विनीते च साङ्गवेदपटौ त्रिषु ॥१५८॥
अनूपो महिषे द्वे स्यात्त्रिस्त्वम्बुप्रायदेशके ।
अनृतं तु कृषौ क्लीबमसत्ये च त्रिषु त्वदः ॥१५९॥
असत्ययुक्तेऽप्यनृतेऽप्यपुंसत्वेऽप्यनृता स्त्रियाम् ।
अनेडमूकः स्यादन्धे वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते ॥१६०॥
त्रिलिङ्ग एष कथितः शठे च श्रुतिवर्जिते ।
अनेधास्तु पुमानग्नौ वाते च त्रिस्त्वनिन्धने ॥१६१॥
अनेहा काल इन्द्रे च पुमान्सान्तादनेहसः ।
अन्तोऽवसाने मरणे स्वरूपे निश्चयेऽन्तिके ॥१६२॥
धर्मे प्रधाने च पुमान्केषांचित्पुंनपुंसकम् ।
कोटेरारभ्य दशमे स्थाने दशगुणोत्तरे ॥१६३॥

संख्याभेदे समुद्राख्यसंख्यायां त्वपरे विदुः ।
सा च संख्याष्टमं स्थानं कोटेरारभ्य कीर्त्तिता ॥१६४॥
एतयोः पूर्वसंख्यायां विकल्पेनाभ्यधुस्त्रिषु ।
छान्दोग्योपनिषद्युक्तं सर्वेष्वन्तेष्वितीदृशम् ॥१६५॥
तत्रार्थश्चिन्तनीयोऽन्यः पदार्थो मन्वते परे ।
अन्ता तु नृस्त्रियोर्बन्धे घञ्याकारेपि चान्ततेः ॥१६६॥
अन्तनायां तु पुँल्लिङ्गो भेद्यवत्तु पचाद्यचि ।
अन्तरव्ययमेतच्च स्वीकारे मध्य उच्यते ॥१६७॥
अन्तरं तु मतं प्रत्यासत्तौ मध्यावकाशयोः ।
तादर्थ्येऽवसरे कालभेदे मन्वन्तराह्वये ॥१६८॥
विशेषविवरान्तर्धिष्ववसानविनार्थयोः ।
अवधौ च त्रिषु पुनस्तुल्येऽल्पपरिधानयोः ॥१६९॥
बाह्ये स्वीये प्रतिभुवि नृनपोस्त्वन्तरात्मनि ।
अन्तरिक्षं तु गगने क्ली साम्नोरुभयोरपि ॥१७०॥
वैरूपाष्टकवर्गस्य ये साम्नी उपरिस्थिते ।
वास्तुदेवविशेषे तु पुंसि स्यात्सर्वदक्षिणे ॥१७१॥
कोष्ठे यो वर्त्तते प्राच्य कोष्ठपङ्क्तेर्हि वास्तुनः ।
अन्तरीपं भवेद्द्वीपे तथान्तर्वारिणस्तटे ॥१७२॥
अन्तरेणाव्ययं विद्याद्विनामध्यार्थयोरपि ।
अन्तर्गतं विस्मृतेऽन्तः प्रविष्टेऽपि च वाच्यवत् ॥१७३॥
अन्तशय्या मृतौ भूमिशय्यायां पितृकानने ।
अन्तरस्था तु स्त्रियां प्रोक्ता यरयोर्लवयुक्तयोः ॥१७४॥
तथाच्छन्दो विचित्यां च द्व्यक्षरप्रभृतिष्वपि ।
षड्विंशतौ च छन्दःसु चतुर्वृद्धेषु दृश्यते ॥१७५॥
प्रयोगे ब्राह्मणोपस्थानीयाजीयके तथा ।
त्रिष्वन्तावस्थिते चापि तथैवान्तरवस्थिते ॥१७६॥
अन्तावसायिन्यन्तावसायी द्वे नापिते तथा ।
चाण्डालेपि चाण्डालान्निषादी भुवि संकरे ॥१७७॥

मुनिभेदे तु पुँल्लिङ्गोऽन्तावसायी प्रकीर्त्तितः ।
अन्तिकं निकटे त्रिष्वन्तिका स्त्री शीतलौषधौ ॥१७८॥
चुल्यां ज्येष्ठभगिन्यां तु नाट्योक्त्या कथ्यतेऽन्तिका ।
अन्तेवासी त्रि शिष्ये चण्डालेऽन्तेवासिनी द्वयोः ॥१७९॥
अन्त्यस्तु पुंसि मुस्तायां त्र्यन्तोद्भूतेऽधमेऽपि च ।
अन्दूः पद्भूषणभिदि करिणो निगडे स्त्रियाम् ॥१८०॥
अन्धं स्यात्तिमिरे क्लीबं चक्षुर्हीने तु मेद्यवत् ।
अन्धको दैत्यभेदे ना नृभूम्नि क्षत्रभिद्यपि ॥१८१॥
अन्धकीति स्त्रियां रूपं नैर्ऋत्यां प्रोच्यते दिशि ।
अन्धिका द्यूतभेदे स्त्री रजन्यामपि कीर्त्तिता ॥१८२॥
अन्धुरूधसि कूपेपि व्रणेपि च पुमान्मतः ।
अन्ध्रस्त्र्यनन्यपूर्वायां निषाद्यां जनिते द्वयोः ॥१८३॥
वैदेहनाथे पुंभूम्नि नीवृद्भेदेथ तन्नृपे ।
ना तद्देशनिवासे तु जनेन्ध्रोऽन्ध्री भवेद्द्वयोः ॥१८४॥
अन्नं भोज्ये जले भक्ते भुक्ते त्वन्नं त्रिषु स्मृतम् ।
अन्नादो ना व्रतान्ताग्नावन्नस्यात्तरि तु त्रिषु ॥१८५॥
मनुष्ये तु द्वयोरन्नादाऽन्नादीति प्रकीर्त्तितम् ।
अन्यस्त्वसदृशे भिन्नेऽन्यान्यच्च त्रिषु स्मृतम् ॥१८६॥
अन्यथा वितथेपि स्यात्परार्थेप्यव्ययं मतम् !
अन्वयस्त्वन्ववाये स्यात्सम्बन्धेऽनुगमे तथा ॥१८७॥
अन्वासनं स्नेहबस्तावुपास्तावनुशोचने ।
अन्वाहार्यममावास्याश्राद्धमिष्टेश्च दक्षिणा ॥१८८॥
अथ स्त्रियां बहुष्वापः सलिलेच्छन्दसोरपि ।
शताक्षरेऽष्टनवति स्वरे ह्रीबेर एव च ॥१८९॥
भूमेरधस्ताल्लोकेषु मुस्ते व्योमनि च क्वचित् ।
अप स्यादपकृष्टार्थे वर्जनार्थवियोगयोः ॥१९०॥
विपर्यये च विकृतौ चौर्ये निर्देशहर्षयोः ।
अपकारोऽन्यपीडायां तथा स्यादन्यतः कृतौ ॥१९१॥

अपकृष्टोऽधमेपि स्यात्त्रिषु चैव पृथक्कृते ।
अपक्रमः कुक्रमे त्रिर्नाऽपगत्यां पलायने ॥१९२॥
स्त्रियामपचितिः पूजानिष्कृत्योश्च व्यये क्षये ।
एकाहयज्ञयोरप्यपचितिः संप्रयुज्यते ॥१९३॥
अपटी स्त्री काण्डपटे निष्पटे त्वपटा त्रिषु ।
अपत्यं तु भवेत्तोके सामगानां च विश्रुते ॥१९४॥
आरण्यके सामभेदे''उच्चतेजेत्यृचि ।
अपदानं[1] कर्मणि स्यादितिवृत्तेऽवखण्डने ॥१९५॥
अपदेशः पुमांल्लक्ष्ये निमित्तव्याजयोरपि ।
अपध्वस्तं धिक्कृते चाप्युज्झितेप्यवचूर्णिते ॥१९६॥
निन्दिते कैश्चिदेतच्च वाच्यलिङ्गं प्रकीर्त्तितम् ।
अपभ्रंशस्तु पतने भाषाभेदापशब्दयोः ॥१९७॥
अपरं गजपश्चार्द्धे सिद्धान्तेऽथापरा स्त्रियाम् ।
जरायामितरस्मिंस्तु त्रिः पूर्वप्रतियोगिनि ॥१९८॥
अथापराजितः पुंसि हरे विष्णौ स्त्रियां पुनः ।
छान्दोग्यकीर्त्तितब्रह्मपुरि योक्ताऽपराजिता ॥१९९॥
तथैवासनपर्ण्याख्यक्षुद्रवृक्षे जये द्वयोः ।
गिरिकर्णी लतायां चाप्यैशान्यां दिशि च त्रि तु ॥२००॥
अजिते राजितं यस्मादपेतं तत्र यस्य च ।
गर्हितं राजितं तत्र राजिते गर्हितेऽप्यथ ॥२०१॥
गर्हिते राजने क्लीबमपराजितमुच्यते ।
अपर्णा गिरिजायां स्यात्पर्णहीने तु भेद्यवत् ॥२०२॥
अपलापः प्रेमणि स्यात्तथैवायमपह्नवे ।
अपवर्गः क्रियासाध्यफलाप्तौ त्यागमोक्षयोः ॥२०३॥
अपवर्जनमित्युक्तं क्ली दानत्यागमुक्तिषु ।
अपवादस्तु निन्दायामाज्ञाविस्रम्भयोरपि ॥२०४॥

---

१. [अवदानं अवदानकल्पलता उदीच्यानाम्—अपदानं दाक्षिणात्यानाम्]

उत्सर्गस्य निषेधेऽपि पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
ननाऽपवारणाऽन्तर्धौ त्रिषु निर्वारणे मता ॥२०५॥
त्रिषु त्वपशदो नीचेऽथ स्यादपशदो द्वयोः ।
वर्णानामानुलोम्येन षट्सु जातासु जातिषु ॥२०६॥
अपष्ठो नाङ्कुशाग्रे स्यात्पष्ठहीने तु वाच्यवत् ।
अपष्ठुः पुंसि कालेऽथ वामे स्यादन्यलिङ्गकः ॥२०७॥
अपसर्जनमाख्यातं परिवर्जनदानयोः ।
अपसर्पश्चारभेदे कीर्त्तितोऽप्यपसर्पणः ॥२०८॥
अपेतसर्पके त्वेष वाच्यलिङ्गः प्रकीर्त्तितः ।
अपसव्यः सूतकाग्नौ पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥२०९॥
प्रतिकूले दक्षिणे च तनोरेष त्रिलिङ्गकः ।
अपस्नानं मृतस्नाने तथा तत्स्नानवारिणि ॥२१०॥
अपह्नवस्तु पुँल्लिङ्गः स्मृतः स्नेहापलापयोः ।
अपागर्भस्तु पुँल्लिङ्गो वह्नौ वाते च कीर्त्तितः ॥२११॥
अपाङ्गस्त्र्यङ्गहीनेऽथ नेत्रान्ते तिलके च ना ।
अपादानं तु विश्लेषावधावपहृतौ तथा ॥२१२॥
अपानं तु गुदे क्लीबं वृषणेपि पुमान्पुनः ।
आरण्यके सामभेदे शारीरपवनान्तरे ॥२१३॥
अपायस्त्रिर्गताभे ना विश्लेषे विद्रवे व्यये ।
अपारस्तु समुद्रे ना त्रिषु पारविवर्जिते ॥२१४॥
अपावृतस्तु पिहिते स्वतन्त्रेपि च वाच्यवत् ।
अपाश्रयस्तु ना मत्तवारणेऽपाश्रितावपि ॥२१५॥
अपेताश्रयके त्वेष त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
अपासनं निरसने वधे क्ली त्रिर्गतासने ॥२१६॥
अपिः संभावनाप्रश्नशङ्कागर्हासमुच्चये ।
तथायुक्तपदार्थेऽपि कामचारकृतावपि ॥२१७॥
अपुषः स्यात्पुमानग्नौ ना सा रुज्यपुषा त्रिषु ।
अपूपः पिष्टकभिदि मधुच्छत्रे तथा पुमान् ॥२१८॥

अपोगण्डस्तु बलिभे विकलाङ्गे शिशावपि ।
अप्नः सान्तं क्ली क्रियायां रूपेऽपत्ये च कीर्त्तितम् ॥२१९॥
अप्नुः पुमान्याचके च कालेऽपि परिकीर्त्तितः ।
अप्पतिर्वरुणे चैव समुद्रे च प्रकीर्त्तितः ॥२२०॥
त्रिष्वप्रतिरथो योगे ऋषिभेदे तु पुंस्ययम् ।
आशुःशिशान इत्यादि सूक्तेऽप्रतिरथं मतम् ॥२२१॥
अप्रहृष्टस्तु काके द्वे त्रित्वप्रमुदिते भवेत् ।
अप्वा नद्यां भये रोगे स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ॥२२२॥
अबद्धं बन्धनाभावे नपुंसकमुदीरितम् ।
अनन्यबन्धे तु भवेत्त्रिर्निरर्थकवाचि च ॥२२३॥
अबलो बलहीने त्रिर्ना तु भार्याग्रजन्मनि ।
स्त्री तु चर्विततामबूलरसे योषिति चाबला ॥२२४॥
अबलोर्णं तु चूर्णे क्ली ताम्बूलस्यापि चर्विते ।
अबलोर्णः पुमान्वाच्यस्फुटायां परिकीर्त्तितः ॥२२५॥
अबालो वाच्यवत्प्रौढे नालिकेरद्रुमे पुमान् ।
अब्जं क्ली लवणे पद्मे ना तु शङ्खशशाङ्कयोः ॥२२६॥
धन्वन्तरौ च निचुले त्रिस्त्वब्जो जलसम्भवे ।
अब्जः सान्तं भवेत्क्लीबं रूपे चैव सरोरुहे ॥२२७॥
अब्दः पुमान्वारिदे स्याद्वत्सरे मुस्तके तथा ।
ऋषिभेदे पुरोडाशभेदे चावयवे तरोः ॥२२८॥
अब्धः कूपे पुमानब्धा स्त्रियां सरिति कीर्त्तिता ।
अब्धिः समुद्रेपि पुमांस्तथा सरसि कीर्त्तितः ॥२२९॥
कोटेस्तथाष्टमे स्थाने संख्या स्यादब्धिनामिका ।
अब्धिजा तु स्त्रियां लक्ष्म्यां भेद्यवत्तु समुद्रजे ॥२३०॥
अब्धिमण्डूक्यब्धिजायां शुक्तौ द्वे त्वब्धिदर्दुरे ।
अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ ब्रह्मण्यात्त्वितरे त्रिषु ॥२३१॥
अभक्तो भक्तहीनेपि निर्विभागेपि वाच्यवत् ।
अभक्तस्त्र्यविभक्तासंबद्धभक्तोज्झितेष्वपि ॥२३२॥

अभक्ष्यं तु कुभोज्येप्यशक्यभक्ष्येपि वाच्यवत् ।
अभङ्गुरत्वविषमभङ्गशीलान्ययोस्त्रिषु ॥२३३॥
अभया तु हरीतक्यां पार्वत्यां च शिवेऽभयः ।
धर्मपुत्रे बिम्बिसारे पारस्त्रैणेयकेपि च ॥२३४॥
उशीरे त्वभयं क्लीबं भयहीने तु वाच्यवत् ।
स्यादभावस्त्वसत्तायां विष्णोर्भावे तथामृतौ ॥२३५॥
अभीत्थम्भूतकथने चाभिमुख्याभिलाषयोः[1] ।
अभिक्रमोऽभिक्रमणे पुमानारोहणेपि च ॥२३६॥
शताक्षरच्छन्दसि चाभिकारे भिद्यतिः स्त्रियाम् ।
अभिक्रमोऽभिगमनास्कन्दारम्भेषु कीर्त्तितः ॥२३७॥
अभिक्रोशोभिशापेपि विलोपेपि प्रकीर्त्तितः ।
अभिक्षेपः स्यादभिप्रेरणेऽप्यभिभवेपि च ॥२३८॥
अभिख्याकीर्त्तिविख्यातिप्रज्ञासंज्ञाद्युतिष्वियम् ।
ज्ञानेप्यभिगमो ग्राम्यधर्मपैशुन्ययोरपि । ॥२३९॥
गोमयेनोपलेपाख्योपासनाङ्गाभियानयोः ।
अथाभिगमनं देवमूर्त्त्युपासनवर्त्मनि ॥२४०॥
ऋत्विक् प्रोत्साहनायां तत्कर्त्तर्यभिगरः[2] पुमान् ।
अभिगानं तु गानेभिलक्ष्यः स्यान्मोहनेपि च ॥२४१॥
अभिग्रहोऽभिग्रहणेऽभियोगेऽपि च गौरवे ।
अधिकारेऽपि शपथे घर्षणास्कन्दलुण्ठने ॥२४२॥
घर्षणेऽपि तथा प्रेताद्यावेशेष्वभिघर्षणम् ।
अभिघातः प्रतिहतौ ताडनेपि क्षतावपि ॥२४३॥
अभिगृह्योच्चारणे च क्ली घादेः कादिभिर्युतौ[3] ।
अभिघाती तु शत्रौ नाऽभिहन्तरि तु वाच्यवत् ॥२४४॥

---

१. (वीप्सायामपि) ।

२. [मैत्रास० लाख्या of अयगर] [enchanting]

३. (अभिघातं स्यात्पूर्वं वेद द्वित्र्यब्धिवर्णाश्चेत् । नानावर्गाणां परतो धरणीचन्द्रद्विरामाद्याः) ॥ (केर०) (Combination of 4th with 1st or 3rd, 2nd with 1st., 3rd with 2nd of the same class.)

अभिघारो घृतेपि स्यात्सेकेपि च घृतादिभिः ।
अभिचक्षणमाक्रोश आह्वानेप्यवलोकने ॥२४५॥
सानुग्रहावलोकेथ शकुनेक्षाभिचक्षणम् ।
अथाभिचरणं द्रोहे चापल्ये मोहने गमे ॥२४६॥
ख्यातावभिजनो जन्मभूकुलध्वजयोः कुले ।
कुलजे पूर्वजे कीर्त्तौ कुलीनेपि प्रकीर्त्तितः ॥२४७॥
अथाभिधेयवच्चैष प्रवीणाभिजनो मतः ।
अभिजातः कुलीने स्यान्न्याय्यपण्डितयोस्त्रिषु ॥२४८॥
जन्मलब्धेऽथाऽभिजातमभिरूपे [तु वाच्यवत्] ।
अभिजित्क्रतुभेदे च स्यान्मुहूर्त्तान्तरे पुमान् ॥२४९॥
नक्षत्रभेदे तद्युक्तकालमात्रे च कीर्त्तितः ।
अभिजिन्नक्षत्रजाते त्वभिजिद्वाच्यवद्भवेत् ॥२५०॥
अभिज्ञा तु स्त्रियां स्मृत्यां निपुणे त्वभिधेयवत् ।
अभिज्ञा तु भवेज्ज्ञानेऽङ्गीकारे स्मरणेपि च ॥२५१॥
पञ्चात्मके बुद्धगुणे यत्र स्यात्कामरूपता ।
सर्वशब्दश्रुतिः सर्वदृष्टिरन्यमनोग्रहः ॥२५२॥
भूतभव्यजनुर्ज्ञानपञ्चभिर्घटिता च सा ।
अभितः शीघ्रसाकल्यसंमुखोभयतोऽन्तिके ॥२५३॥
अभितापस्तु तापेपि ज्वरेप्यश्वस्य कीर्त्तितः ।
अभिधा तु भवेदुक्तौ संज्ञायामपि च स्त्रियाम् ॥२५४॥
अभिधानं नामवचोबन्धनेषु नपुंसकम् ।
अभिधानी तु रज्जौ स्त्री पशूनां परिकीर्त्तिता ॥२५५॥
व्यञ्जकोभिनयो यस्तु सूच्यार्थाभिनयः स च ।
वर्णमात्रे विसर्गे चाभिनिष्टानः प्रकीर्त्तितः ॥२५६॥
अभिनीतं त्रिषु न्याय्ये संस्कृतामर्षिणोरपि ।
अभिपन्नोपराद्धेभिग्रस्ते चापद्गते त्रिषु ॥२५७॥
अभिप्लवस्त्वनुचरे त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
पुमांस्त्वभिमुखप्लुत्यक्रतोश्चाहर्गणान्तरे ॥२५८॥

भवेदभिमरो युद्धे वधे स्वबलसाध्वसे ।
अभिमर्दस्तु पुंसि स्यात्संपरायेऽवमर्दने ॥२५९॥
अभिमानो भवेद्दर्पाज्ञानप्रणयहिंसने ।
अभियुक्तः परिचिते चाप्ते रुद्धे परैरपि ॥२६०॥
व्यवहारप्रवृत्तानां तथैवोत्तरवादिनि ।
अभियोक्ता विवादेषु पूर्ववादिन्यपि द्विषः ॥२६१॥
परिक्षेप्तरि सैन्यैश्च संप्रयुक्तोभिधेयवत् ।
अभियोगः पृतनया यानेप्यन्यायधर्षितैः ॥२६२॥
वेदने प्राड्विवाकाय पुमान्परिचयेपि च ।
अभिरूपो बुधे तद्वद्रमणीयेभिधेयवत् ॥२६३॥
अभिशस्तोऽभिशप्ते त्रिर्विवाद्युत्तरवादिनि ।
अभिशस्तिः प्रार्थनायामभिशापे च दूषणे ॥२६४॥
अभिषङ्गः पुमान् दुःखे शापे सङ्गे पराभवे ।
आक्रोशेपि तथैवाभि···वणेपि प्रयुज्यते ॥२६५॥
स्नानेऽभिषवो मद्यसंधाने सवने पुमान् ।
अभिषिक्तो द्वयोर्विप्रक्षत्रियाव्यभिचारजे ॥२६६॥
कृताभिषेके शब्दोयं वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ।
काञ्जिकेऽभिषवे चाभिषुतं त्रित्वस्य कर्मणि ॥२६७॥
अभिष्यन्दोऽतिवृद्धौ स्यादास्रावेऽक्षिगदेपि च ।
अभिसंधानमुदितमभिसंधिशराख्ययोः ॥२६८॥
अभिसारक इत्येष स्यात्त्रिलिङ्गोभिगन्तरि ।
कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं साऽभिसारिका ॥२६९॥
देवरे च नियुक्तायां यात्यन्यं साऽभिसारिका ।
अभिहारः संनहने चौर्ये वैराभियोगयोः ॥२७०॥
गजशायनकालेपि पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
पुमांस्तु ऋषिभेदे स्यात्सामगेपि कवौ तथा ॥२७१॥
अभीक्ष्णस्तु भृशे नित्यतद्युक्तक्रिययोस्त्रिषु ।
अभीक्ष्णं मुहुरश्रान्ते प्रकर्षे त्वरितेऽव्ययम् ॥२७२

अभीतोऽभिगतेपि स्यान्निर्भयेप्यभिधेयवत् ।
अभीसुः प्रग्रहे रश्मौ बाहौ नाऽथाऽङ्गुलौ स्त्रियाम् ॥२७३॥
अभ्यग्रोऽभिमुखे नव्ये समीपेऽप्यभिधेयवत् ।
सामीप्ये पुनरभ्यग्रं नपुंसकमुदीरितम् ॥२७४॥
अभ्यागमो विरोधाभिघाताभ्युद्गमनान्तिके ।
अभ्याधानमभिन्यासे वह्न्यर्थं चेध्मसंग्रहे ॥२७५॥
स्यादभ्यारूढमारूढे सातिरेके च संपदा ।
अभ्याशो व्यसने पुंसि सामीप्येप्यन्तिकेपि च ॥२७६॥
अभ्यासो गुणने घातो द्वित्रे पूर्वत्र च स्मृतः ।
पुंस्यभ्युपगमः स्वीकारेऽन्तिकोपगमेपि च ॥२७७॥
लाजेषु क्लीबमभ्योषं नाऽऽज्याम्भः पेयसक्तुषु ।
अभ्रं मुस्ताम्बुदव्योमकाञ्चनाभ्रकधातुषु ॥२७८॥
अभ्रिः स्त्री काष्ठकुद्दाले स्यात्कूपे तु पुमानयम् ।
ग्रावाणो ये च सुत्यार्थमभयस्ते प्रकीर्त्तिताः ॥२७९॥
अभ्वा तु गमने चैव सलिले च स्त्रियां मता ।
अमतः पुंसि मृत्यौ स्याद् द्वे मर्त्ये त्रिर्मतेतरे ॥२८०॥
अमतिस्त्वभिघाते ना द्वयोश्छागे च चातके ।
अज्ञानलिङ्गरूपे च प्रावृषि त्रिस्तु निर्मतौ ॥२८१॥
अमतिः पुंस्त्रियोरग्नौ रोगे च परिकीर्त्तितः ।
अमनिः पशुवक्ष्ण्यां जलपात्रे च दारवे ॥२८२॥
अमरस्त्वस्थिसंहारकुलिशद्रुमयोः पुमान् ।
देवानां कवचे मेकलाद्रौ चामरकण्टकः[1] ॥२८३॥
अमरा स्त्र्यमरावत्यां स्थूणादूर्वाजरायुषु ।
गुडूच्यां चामरी तु स्त्रीपुंसयोर्देव इष्यते ॥२८४॥
अमलं त्वभ्रके लक्ष्म्यां त्वमला त्रिस्तु निर्मले ।
अमाऽव्ययं सहार्थे च समीपार्थे च कीर्त्तितम् ॥२८५॥

---

१ अमरकण्टकः संप्रति मेकल उच्यते ।—ले०

अमात्यः स्याद्धि सचिवे राज्ञोऽथ त्रिष्वमाभवे ।
अमावास्या स्त्रियां दर्शे जाते त्वत्र त्रिषु स्मृता ॥२८६॥
अमृतं व्योम्नि देवान्ने यज्ञशेषे रसायने ।
अयाचिते जले जग्धौ मोक्षे हेम्नि च गोरसे ॥२८७॥
धारोष्णदुग्धेप्यमृतौ दुग्धमात्रे नपुंसकम् ।
अमृतस्तु द्वयोर्देवे पुंसि धन्वन्तरौ स्मृतः ॥२८८॥
अमृता मागधी पथ्या गुडूच्यामलकीषु च ।
स्यात्सुरामिक्षयोः सूर्यरश्मिभित्स्वमृताः स्मृताः ॥२८९॥
आनन्दनाश्च मेध्याश्च नूतनाः पूतना इति ।
शते शतं वृष्टिवहा आख्याता याश्चिरन्तनैः ॥२९०॥
अमृतोद्भवमेतत् क्ली लशुने त्रिः सुधोद्भवे ।
अमोघः सफले वाच्यलिङ्गः स्यात्स्त्री तु पाटलौ ॥२९१॥
पथ्याविडङ्गयोश्चैवाऽमोघा ग्राहे त्वयं द्वयोः ।
अम्बकं नयने क्लीबमम्बिका मातरि स्मृता ॥२९२॥
पार्वत्यां मातुलान्यां च कनिष्ठायां स्वसर्यपि ।
अम्बरं वाससि व्योम्नि सुगन्धिद्रव्यकान्तरे ॥२९३॥
अम्बरीषोनुतापेऽश्वसाधके निरयान्तरे ।
आम्रातके तैलपर्ण्यां सूर्ये राजान्तरे पुमान् ॥२९४॥
क्ली रणे तृणभेदे च वर्षे रोधसि वाससि ।
चुल्ल्यां भ्राष्टमहाभ्राष्टे कुले द्वे तु किशोरके ॥२९५॥
अम्बष्ठो देशभेदे नाम्बष्ठयम्बष्ठा द्वयोर्भवेत् ।
विप्रोढवैश्याजे किं वा विप्रोढक्षत्रियाभवे ॥२९६॥
सवर्णनाम्नि महिष्याख्ये वैश्याजे च हस्तिपे ।[१]
अम्बष्ठा शार्ङ्गष्ठिकायां पाठायूथिकयोर्भवेत् ॥२९७॥
चाङ्गेरी चुक्रिकाकाकीमयूरविदलासु च ।
अम्बा मातरि चाप्युक्ता ज्येष्ठस्वसरि च स्त्रियाम् ॥२९८॥

१. अम्बष्ठः हस्तिपे; अपश्यत्कुवलयापीडं कृष्णोम्बष्ठप्रणोदितम् । …उवाच हस्तिपं वाचा—इत्यादि । भाग० स्कं० १०; पू०,४३।२-६ ।

वाचां मध्यमिकानां च सप्तानामेकवाचि च।
अम्बुच्छन्दोविशेषे क्ली नवत्यक्षरलक्षिते ॥२९९॥
लग्नाच्चतुर्थराशौ च ह्रीबेरे सलिलेपि च।
अम्बुकः काकनासायामेरण्डेपि पुमान्मतः ॥३००॥
अम्बुजं कमले क्लीबे कोटेर्दशगुणोत्तरे।
संख्याभेदे सप्तमेऽथ पुमान्निचुलशङ्खयोः ॥३०१॥
स्यादम्बुजोम्बुजा तु स्त्री कमलायां प्रकीर्त्तिता।
अम्बुप्रियो वेतसेना त्रिलिङ्गः सलिलप्रिये ॥३०२॥
अम्भः सान्तं भवेत् क्लीवं ह्रीबेरे सलिलेपि च।
द्व्यशीतिस्वरकेच्छन्दस्यष्टाशीत्यक्षरेपि च ॥३०३॥
अम्भसी इति तु द्यावा पृथिव्योर्द्विवचोन्तकम्।
अम्ली स्त्री चुक्रिकायां त्रिः साम्लेऽम्लो ना रसान्तरे ॥३०४॥
अम्लानोऽम्लानिमत्येष भेद्यवत्परिकीर्त्तितः।
महासहायां त्वम्लानोऽम्लानं तु प्रसवेस्य च ॥३०५॥
अम्लिका तिन्तिडीकाम्लोद्गारचाङ्गेरिकासु च।
अयः शुभावहे दैवे द्यूतेऽक्षपतने गतौ ॥३०६॥[1]
पुमान्गन्तरि तु प्रोक्तोऽयशब्दोऽयं त्रिलिङ्गकः।
अयतेरप्ययेरेतेरीयतेश्च पचाद्यचि ॥३०७॥
अयतिस्तु पुमानुक्तश्चन्द्रे काले तथैव च।
अयनं निलये मार्गे सूर्योदग्दक्षिणागतौ ॥३०८॥
स्यात्सांवत्सरिकाद्येषु सत्याख्यक्रतुकर्मसु।
एषां प्रयोगभेदे च गतिमात्रे च दृश्यते ॥३०९॥
अयोऽगरुणि लोहे च पर्पटे मरिचे च नप्।
अयि प्रश्नानुनययोस्तथा संबोधनेपि च ॥३१०॥

---

१ अम्लिष्टकोमलपदावलिमञ्जुलेन प्रत्यक्षरक्षरद मन्दसुधारसेन।
सख्यः समस्तजनकर्णरसायनेन नाहारि कस्य हृदयं हरिभाषितेन ॥
(अम्लिष्टं स्पष्टोच्चारितं जीवगो.) (भक्तिरसा० दक्षि १.३४)
क्षुब्धास्वान्तध्वान्त लग्नम्लिष्टविरिब्धफाण्ट वाढानिमन्थमनस्तमः
सक्ताविस्पष्टस्वरानायासमृशेषु पा०.

अयुतं दशसाहस्रे क्लीबं त्रिषु युतेतरे ।
अये क्रोधे विषादे च संभ्रमे स्मरणेपि च ॥३११॥
अयोगो ना वियोगे त्रिर्विधुराश्लिष्टलोहगे ।
अयोमयस्त्वयस्कान्ते रत्ने तन्नाम्नि पुंस्त्रियोः ॥३१२॥
अरं तु त्वरिते मेघवदसत्त्वेऽत्र नप्स्मृतम् ।
चक्रनमेस्तु विष्कम्भकाष्ठेऽरः पुंसि कीर्त्तितः ॥३१३॥
अरणिर्वह्निमन्थेपि ना मुहुर्लपनेपि च ।
यज्ञाग्निमन्थकाष्ठे तु पुंस्त्रियोररणिर्मतः ॥३१४॥
अथाविवाह्यकन्यायां निस्पृहायां स्वतः स्त्रियाम् ।
अरतिस्तु स्त्रियां क्रोधे चाऽसुखे त्रिस्तु नीरतौ ॥३१५॥
अरत्निः पुंस्त्रियोर्हस्ते सप्रकोष्ठतताङ्गुलौ ।
चतुर्विंशत्यङ्गुले च माने कीले च कूर्परे ॥३१६॥
अररः सोमसंज्ञे स्याद्यज्ञाङ्गेऽग्नौ रणे पुनः ।
पुँल्लिङ्गक्लीबयोस्तद्वल्लोहलोहशलाकयोः ॥३१७॥
अथारर्यररं चेति कवाटे स्त्रीनपुंसके ।
आरायामररास्त्र्येव शीघ्रे स्याद्धे द्यलिङ्गकम् ॥३१८॥
अररुस्त्वसुरे द्वे च मन्थनेऽथायुधे नपि ।
अरविन्दं जले प्रोक्तमम्बुजेपि नपुंसकम् ॥३१९॥
अरालो यक्षधूपाख्यनिर्यासे पुंस्ययं तथा ।
नटानां हस्तविन्यासभेदे भुग्ने तु भेद्यवत् ॥३२०॥
अतिप्रमाणकाये तु गजभेदे द्वयोरयम् ।
अरिर्ना खदिरे शत्रौ द्वे मर्त्येऽथ त्रिरीश्वरे ॥३२१॥
अरिष्टस्तु पुमान्निम्बे फेनिलाख्ये महीरुहे ।
लशुने दैत्यभेदे च कृष्णेन विनिपातिते ॥३२२॥
स्याद्देशबन्धने चाथ क्लीबं मरणलाञ्छने ।
अप्यारण्यकयोः साम्नोः पवित्रे तक्रगुत्थयोः ॥३२३॥
अशुभे च शुभे वर्णविकारेऽञ्जनसंनिभे ।
वर्णे निकारे मद्ये च सूतिगेहे स्त्रियां पुनः ॥३२४॥

अरिष्टनेमिर्विष्णौ ना बहुव्रीहौ तु वाच्यवत् ।
अरिष्टा कटुकानागबलयोरस्त्रियां त्विदम् ॥३२५॥
तक्रौषधद्रवभिदोर्द्धे तु काके त्रिषु त्वयम् ।
अरुणा स्त्री विषायां च मञ्जिष्ठात्रिवृतोरपि ॥३२६॥
क्ली तु ताम्रे पुमांस्तु स्यात्सूर्ये सूर्यस्य सारथौ ।
शशिजे चाप्युषसि च काण्डर्षिष्वपि केषुचित् ॥३२७॥
अव्यक्तरागवर्णे च संध्यारागे च लोहिते ।
कपिले चाथोक्तवर्णवत्सु त्रिष्वपि नीरवे ॥३२८॥
अरुन्धद्वाच्यवदरोधके स्यात्स्त्री त्वरुन्धती ।
वचायां च वसिष्ठस्य भार्यायामपि कीर्त्तिता ॥३२९॥
अरुलं सलिलेपि स्यात्पोतेपि च नपुंसकम् ।
अरुषस्तु पुमान्सूर्ये वर्णेपि त्रिस्तु निष्क्रुधि ॥३३०॥
रूपवत्यप्यथाश्वे द्वे अरुषीत्युषसि स्त्रियाम् ।
अरुष्करः पुमान्भल्लातके त्रिर्व्रणकारिणि ॥३३१॥
अरूषस्तु यवे त्रिस्तु रूढभिन्नेप्यरोहणे ।
अरेऽव्ययमसूयायां तथैवापाकृतावपि ॥३३२॥
अरोचकस्त्रिष्वरोचि तदिनात्यरुचौ मतः ।
अर्कः सूर्ये च ताम्रे च चन्द्रे चेन्द्रे च पावके ॥३३३॥
ज्येष्ठे भ्रातरि वज्रेऽन्ने स्फटिके स्तुतिमन्त्रयोः ।
अध्वर्युक्रमभेदेर्कपर्णसंज्ञे च गुल्मके ॥३३४॥
वसिष्ठजमदग्न्यादिसामभेदेषु केषुचित् ।
नपुंसके त्वर्कपर्णगुल्मस्य फलपुष्पयोः ॥३३५॥
अर्कपुष्पं त्वर्कपुष्पे न स्त्री साम्नोर्द्वयोरपि ।
अर्गला चार्गलं द्वारकवाटद्वयबन्धने ॥३३६॥
क्लीबं तु द्वारपटले विदण्डे तु त्रिलिङ्गिका ।
अर्घः पुमान्भवेन्मूल्ये तथा पूजाविधावपि ॥३३७॥
अर्घ्यं त्रिषु जलेऽर्घार्थेऽर्घार्हे च बहुमूल्यके ।
क्लीबमापाण्डुतिक्ते स्यान्मद्येऽर्घ्या तु स्त्रियां गवि ॥३३८॥

अर्चा तु प्रतिमायां स्त्री पूजायामपि कीर्त्तिता ।
अर्चिर्न ना भासि शस्त्रे ज्वालायामपि कीर्त्तिता ।।३३९।।
अर्जकस्त्र्यर्जयितरि पुमान्सितकठिञ्जरे ।
अर्जुनस्तु पुमान्कार्त्तवीर्ये मध्यमपाण्डवे ।।३४०।।
मातुरेकसुते शौक्ल्ये यमेपि ककुभद्रुमे ।
क्ली त्वर्जुनं तृणे रूपे हेम्नि दृष्टिरुजान्तरे ।।३४१।।
अर्जुनी बाहुदा नद्यां कुट्टिन्यां सुरभावपि ।
रात्रावुषस्यथ स्यात्त्रिष्व्यग्रे शुक्लेपि चार्जुनः ।।३४२।।
मयूरे त्वर्जुनः स्त्रीपुंसयोरेष प्रयुज्यते ।
अर्णश्छन्दस्यष्टसप्ततिस्वरे क्ली जलेपि च ।।३४३।।
अर्णवोऽब्धौ षण्णवतिस्वरेच्छन्दोत्तरेपि च ।
अर्त्तिर्ना ऋच्छतौ धातौ स्त्री धनुष्कोटिपीडयोः ।।३४४।।
अर्थः फले धने शास्त्रे वस्तुमात्रे प्रयोजने ।
हृदये साधने मोक्षे कार्यैश्वर्यनिवृत्तिषु ।।३४५।।
वाच्ये हेतावभिप्राये याचने विषये तथा ।
अर्थवादः परार्थोक्तौ वेदांशे च विधीतरे ।।३४६।।
अर्थी ना याचके दासे व्यवहाराभियोक्तरि ।
अर्थ्यस्त्रिष्वनपेतेऽर्थाद्विद्वदात्मवतोरपि ।।३४७।।
न्याय्ये कृकणाख्ये तुर्यक्षभेदे द्वयोरयम् ।
शिलाजतुनि तु क्लीबमर्थ्यमित्येतदिष्यते ।।३४८।।
अर्दो गतौ याचनेऽथ वैराग्येर्दं नपुंसकम् ।
अर्दनं तु गतौ क्लीबं याचनाहिंसयोर्न ना ।।३४९।।
अर्दितं याचने गत्यां हिंसने वातजामये ।
त्रिलिङ्गं तु गते चैव हिंसिते याचिते तथा ।।३५०।।
अर्दितिः स्यात्पुमानग्नौ शस्त्रभेदे च याचने ।
अर्धः पुमान्स्यात्शकले समांशे तु नपुंसकम् ।।३५१।।
रूपकार्धेप्यर्धमेतत्क्लीबं रूढित उच्यते ।
अर्धचन्द्रः क्षुरप्रेषौ गलहस्तेर्धचन्द्रके ।।३५२।।

अर्धचन्द्रा लताभेदे मसूरविदलाह्वये।
अर्धजाह्नव्यर्धगङ्गाकावेर्योः परिकीर्त्तिता ॥३५३॥
अर्धपारावतश्चित्रकण्ठे तित्तिरिपक्षिणि।
अर्धसूचीति सूच्यर्धे चासने यत्र संहतौ ॥३५४॥
मुखात्पाणितलावूर्ध्वक्षौ प्रदेशान्तरस्थितौ।
अर्धहस्ता पञ्चहस्तमानेनार्धकरे नृणम् ॥३५५॥
अर्धेन्दुः स्यादतिप्रौढस्त्रीयोन्यङ्गुलियोजने।
अर्पिषं बालवत्साया दुग्धे स्यादग्रमांसके ॥३५६॥
अर्पिषश्चार्पिषी चेति प्राहुर्दन्तावले द्वयोः।
अर्बुदो स्त्री मांसकीलरोगे चाक्षिरुजान्तरे ॥३५७॥
ना शैलभेदे क्लीकोटौ कोटीनां दशकेपि वा।
अर्भोऽल्पके बालके च वाच्यवत् संप्रयुज्यते ॥३५८॥
अर्भमस्त्रीस्थले ग्रामे नेत्रे रोगान्तरेपि च।
अर्भकः कथितो बाले मूर्खेपि च कृशेपि च ॥३५९॥
अर्यो महाशास्तरि ना द्वयोर्वैश्ये यदा त्वयम्।
वैश्यजातिस्त्रियामर्या स्यादर्याणी च सा तदा ॥३६०॥
यदा तु वृत्तिः पुंयोगात्तदार्यी त्रिषु तु प्रभौ।
अर्वती कुम्भदास्यां च वडवायामपि स्त्रियाम् ॥३६१॥
अर्वा नान्तः कुत्सितो त्रिः पुंसि वज्रे मुनावपि।
अर्शो दुर्नाम्नि च व्याधिमात्रे सान्तं नपुंसकम् ॥३६२॥
अर्शसान्यर्शसानो द्वे विप्रेऽग्निमनसोः पुमान्।
अर्शोघ्नः सूरणे पुंसि तक्रे तु स्यान्नपुंसकम् ॥३६३॥
अर्शोघ्नी मुसलीस्तम्बे स्त्र्यथ त्रिर्घातकेऽर्शसः।
अर्हो योग्ये त्रिरर्हा तु नृ स्त्रियोरर्हणे मता ॥३६४॥
अर्हस्तु क्षपणे बुद्धे पुंसि मान्योऽन्यलिङ्गकः।
अर्हन्तः सुगते पुंसि क्षपणेऽपि प्रयुज्यते ॥३६५॥
अलं वृश्चिकपुच्छस्थकण्टके हरितालके।
अलका पूः कुबेरस्यालकाः स्युश्चूर्णकुन्तलाः ॥३६६॥

अलङ्कारस्तु हारादावुपमादावलङ्कृतौ ।
अलंभूषणपर्याप्तिवारणेष्वव्ययं स्मृतम् ॥३६७॥
तथा निरर्थकत्वेपि प्रभुत्वेपि प्रयुज्यते ।
अलम्बुसः प्रहस्ते च छर्दने राक्षसान्तरे ॥३६८॥
अलंबुसा तु मुण्डीर्यां स्वर्गवाराङ्गनान्तरे ।
अलर्को गौथनृपतौ रोमारो च सितार्कके ॥३६९॥
अलर्कं प्रसवे त्वस्य शाकभेदेपि कीर्त्तितम् ।
द्वयोरलर्कोऽलर्कीति प्रयुक्तं रोहिते शुनि ॥३७०॥
अलसो ज्वर उष्ट्रस्याङ्घ्रिरुग्भेदे द्रुभेदयोः ।
असाध्यजिह्वा रुग्भेदेऽथालस्यवति वाच्यवत् ॥३७१॥
अलसा तु स्त्रियां हंसपाद्यामेषा प्रयुज्यते ।
अलातमुल्मुके क्लीबमनान्ते त्वभिधेयवत् ॥३७२॥
अलिः सुरापुष्पलिहोः पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
अलिङ्गं क्ली प्रधाने स्यात्संख्यानां त्रिर्विलिङ्गके ॥३७३॥
अलिन्यली वृश्चिकेऽलौ ना राशौ मेषतोष्टमे ।
अलिन्दो भोजनस्थाने गृहाङ्गे प्रघणाह्वये ॥३७४॥
द्वयोरलिपको भृङ्गे कोकिले चापि हस्तिनि ।
अलिप्रियः पुमांश्चूते काकजम्बूकदम्बयोः ॥३७५॥
अलिनस्तु प्रियायां स्त्री त्रिः प्रियालिन्यलौ प्रिये ।
द्वयोरलिमको भेके पिकेपि भ्रमरेपि च ॥३७६॥
क्लीबं तु पद्मकिञ्जल्के मधूकेलिमकः पुमान् ।
अलीकं त्वनृतेऽपि स्याल्ललाटेप्यप्रियेपि नप् ॥३७७॥
अलुमोऽग्नौ नापिते च तथा पुंसि प्रसाधने ।
भवेदवकरः पुंस्यवकीर्णित्वेवचूर्णिते ॥३७८॥
संमार्जनीनिरस्तस्य तृणपांस्वादिवस्तुनः ।
राशावुल्ककटाभिख्ये कीर्त्तितोऽवकरो बुधैः ॥३७९॥
अवकाऽम्बुतृणे चिश्चोटिकाख्ये शैवले तथा ।
वैवाहिकप्रतिसरग्रन्थौ च परिकीर्त्तिता ॥३८०॥

अवकीर्णमवज्ञानेप्यवाकीर्णेपि वाच्यवत् ।
भवेदवक्रयो मूल्ये सूत्रनिर्दिष्टविक्रये ॥३८१॥
क्रयभेदेप्यदत्तार्धाधिकमूल्ये च हाटके ।
स्त्री त्ववक्षेपणी घोटकुशायां क्ली तु भर्त्सने ॥३८२॥
अवखातस्तु खाते त्रिर्ना शूर्पाख्यजलाशये ।
अवगाथोऽवगथवद्रथयाने तथा पथि ॥३८३॥
स्यात्प्रातः सवनेप्यक्षसंघातेपि नृलिङ्गकः ।
अवगाहो जलद्रोण्यां तैलाम्ब्वाद्यवगाहने ॥३८४॥
निर्वादे क्ल्यवगीतं त्रिर्मुहुर्दृष्टे च गर्हिते ।
अवग्रहो वृष्टिरोधे प्रतिबन्धे गजालिके ॥३८५॥
अवग्रहणमित्येतत्प्रतिरोधेप्यनादरे ।
अवज्ञाऽनादरेपि स्यात्तथैवापह्नवे मता ॥३८६॥
अवटः स्यात्खिले गर्त्ते कूपे कुहकजीविनि ।
पक्षिपोते चतुर्विंशत्यङ्गुलेऽपि च मानके ॥३८७॥
कृकाटिकायामवटुः पिण्डारीति प्रकीर्त्तिता ।
अवतंसो स्त्रियामुक्तः कर्णपूरे च शेखरे ॥३८८॥
अथावतरणं भूतादिग्रहे वसनाञ्चले ।
प्रयुज्यतेऽवतीर्णौ च शब्द एष नपुंसके ॥३८९॥
अवतारोवतरणे तीर्थे भूतादिके ग्रहे ।
भूतादिग्रहवस्त्राञ्चलार्चनेष्ववतारणम् ॥३९०॥
निवेशने गायिकानां न पुमानवतारणम् ।
अवदातः सिते पीते शुद्धे मुख्ये च वाच्यवत् ॥३९१॥
अवदातः सिते वर्णे पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
अवदानं कर्मणि स्यादितिवृत्तेऽवखण्डने ॥३९२॥
अप्रधानेऽद्भुते कर्मण्यपि स्यादपदानवत् ।
ननाऽवदारणाभेदे क्ली खनित्रेऽवदारणम् ॥३९३॥
अवदाहस्तु दहनेऽथोशीरे स्यान्नपुंसकम् ।
अवद्यमपशब्दे च गर्ह्ये चाप्यभिधेयवत् ॥३९४॥

अवधिस्त्ववधाने स्यात् नीलिकाले विले पुमान् ।
अवध्यमवधार्हे स्यादनर्थकवचस्यपि ॥३९५॥

अवध्वंसः परित्यागे निन्दने चावचूर्णने ।
अवध्वस्तः परित्यक्ते निन्दिते चूर्णिते त्रिषु ॥३९६॥

अवनं रक्षणे तृप्तौ प्रीतौ याञ्चादिषु स्मृतम् ।
अवनिस्त्ववनीवत्स्यात्प्रियङ्ग्वाञ्च क्षितावपि ॥३९७॥

अवन्तिर्ना राजभेदे नीवृद्भेदे तु भूम्नि च ।
स्त्रियां त्ववन्तिराजस्य स्यादवन्तीस्त्र्यपत्यके ॥३९८॥

नगरेष्वुज्जयिन्याख्ये ज्येष्ठस्वसरि चेष्यते ।
अवपातस्तु हस्त्यर्थे गर्त्ते छन्ने तृणादिना ॥३९९॥

गर्त्तमात्रे विपतने प्रपातेपि गिरेः पुमान् ।
अथाऽवयव इत्येष एकदेशाऽप्रधानयोः ॥४००॥

पृथग्भावे पृथग्भूते तथा पुंसि प्रयुज्यते ।
अवरं त्र्यप्रशस्तेऽन्त्ये जङ्घान्ते तु गजस्य नप् ॥४०१॥

अवरोधस्तिरोधाने राजदारेषु तद्गृहे ।
तथैव स्वीकृतावेष पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥४०२॥

अवरोहोऽवतरणे पादपस्य लतोद्गमे ।
मूलादग्रे गतायां च लतायां किं च शाखिनाम् ॥४०३॥

शाखाजातशिफायां च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
अवलग्नोऽस्त्रियां मध्ये त्रिषु स्याल्लग्नमात्रके ॥४०४॥

अवलेपो भूषणे च लेपे गर्वे तिरस्कृतौ ।
निरीक्षिते त्रिलिङ्गो ना लोकनाथेऽवलोकितः ॥४०५॥

अवश्यमव्ययं नित्ये प्रधाने च प्रकीर्त्तितम् ।
अवश्यायस्तु नीहारेप्यभिमानेपि पुंस्ययम् ॥४०६॥

अवष्टब्धस्त्रिर्विदूरेप्याक्रान्ते चावलम्बिते ।
अवष्टम्भः समालम्बे स्तम्भे स्तब्धौ च हेमनि ॥४०७॥

पुमांस्तथैव प्रारम्भे स्तम्भादौ षस्तु नोचितः[1]।
अवसं क्ली भवेच्चापे ना पाथेवाशनीयके ॥४०८॥
भवेदवसरः पुंसि प्रस्तावे वर्षणे क्षणे।
उपलादौ मन्त्रभेदेप्ययं शब्दः प्रयुज्यते ॥४०९॥
अवसा तु वसाहीने वाच्यवत्परिकीर्त्तिता।
अवसानस्तु शेषेपि समाप्तौ निश्चयेपि च ॥४१०॥
ऋद्धे ज्ञाते समाप्ते चावसितं वाच्यवत्स्मृतम्।
निश्चिते स्यादवसितं समाप्त उषितेपि च ॥४११॥
अवस्कन्दो नगर्यादेरपहारे च सौप्तिके।
विशेषवाचि भाषायामङ्गीकृत्य च कीर्त्तितः ॥४१२॥
अवस्करस्तु विष्ठायां तथा गुह्यरहस्ययोः।
मलप्रक्षेपणस्थानेप्ययं पुँल्लिङ्ग इष्यते ॥४१३॥
अवस्कारः पुमान्गुह्ये वर्चस्केपि प्रकीर्त्तितः।
अवघातेऽवहननं मुसले हृदयेपि च ॥४१४॥
अवहारः पुमांश्चौर्ये द्यूतयुद्धादिविश्रमे।
निमन्त्रणोपनेतव्यद्रव्ये ग्राहाख्ययादसि ॥४१५॥
अवाच्यं त्रिरगर्ह्ये नाऽवाच्यमप्यकथ्यके।
अविः पुंस्यवतौ सूर्ये शैलमूषिककम्बले ॥४१६॥
प्राकाराद्रिमरुद्धाःसु स्त्री तु पुष्पवतीभुवोः।
अविद्धकर्णी पाठायां त्रित्वविद्धश्रुतौ भवेत् ॥४१७॥
अविनः पावकेऽध्वर्जौ विधाने त्वविनं मतम्।
गुप्तौ चाप्स्वथ भासाख्यविहगे च मृगे द्वयोः ॥४१८॥
अविनीतस्तूद्धते त्रिरविनीताभिसारिका।
अविलम्बितमुच्चण्डे शीघ्रे च परिकीर्त्तितम् ॥४१९॥
अविषो नाऽम्बुधौ शैले द्वे तु दिव्यविषो विषा।
अविषा निर्विषे त्रिः स्यात्स्त्रीभूमावविषी मता ॥४२०॥

---

१. अवष्टम्भस्तु सौष्ठवम्, वै.

अविष्ठसे द्वयोरश्वे पुँल्लिङ्गस्त्वपहोतरि ।
अवीरा पतिपुत्रायां स्त्रीसत्त्वरहिते त्रिषु ॥४२१॥
अवेलः पुंस्यपलापे स्त्र्यवेलापूगचूर्णके ।
अन्यत्र चैव वेलाया वेलाहीने तू भेद्यवत् ॥४२२॥
अव्यः स्यात्पङ्कजे पुंसि तथा रम्ये च नाविके ।
अव्यक्तस्तु पुमान्विष्णौ परमात्मनि शङ्करे ॥४२३॥
क्ली तु प्रधाने सांख्यानां त्रिस्त्वस्पष्टे च बालिशे ।
अव्यथः स्याद्द्वयोः सर्पे निर्व्यथे त्वभिधेयवत् ॥४२४॥
पुमान्कुरवके स्त्री तु चारटी पथ्ययोर्भवेत् ।
सुखाब्ध्यर्का अव्यथिषा अव्यथिष्यौ निशाक्षिणी ॥४२५॥
अव्ययोऽस्त्री स्वराद्यर्थेष्वीश्वरे च दशस्वपि ।
ज्ञानं वैराग्यमैश्वर्यं तपः सत्यं धृतिः क्षमा ॥४२६॥
स्रष्टृत्वमात्मसम्बन्धो ह्यधिष्ठातृत्वमित्यपि ।
एतेषु त्रि तु यस्यास्ति नाव्ययस्तत्र वस्तुनि ॥४२७॥
अशनं भोजनेपि स्यादोदनेपि नपुंसकम् ।
अशित्रोऽग्नौ पुमानुक्तः क्लीरश्मिहविषोर्भवेत् ॥४२८॥
अशिरोऽग्नौ पुमानुक्तो राक्षसे भास्करेपि च ।
अशोकः पुंसि कङ्केलितरौ मौर्यनृपान्तरे ॥४२९॥
अशोका कटुरोहिण्यामशोकं पारदे मतम् ।
वीतशोकेत्यशोकोयं भेद्यवत्परिकीर्त्तितः ॥४३०॥
अश्नोऽभ्रे भूधरे चैव पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
अश्मजं त्वश्मजाते त्रिः क्ली शिलाजतुनि स्मृतम् ॥४३१॥
ना सोमाभिषवग्राव्णि पाषाणेश्माऽम्बुदेपि च ।
अश्मन्तमशुभे चुल्यां क्षेत्रेप्यनवधौ मृतौ ॥४३२॥
स्यादश्मन्तकमुद्धाने मल्लिकाच्छादनेपि च ।
अश्रिस्तु स्त्री मता कोट्यां धारायामपि कीर्त्तिता ॥४३३॥
अश्वो विष्ण्ववतारे ना पुंजातावश्वकन्दके ।
तुरङ्गे च द्वयोरश्वस्तथाऽश्वा चेति कीर्त्यते ॥४३४॥

भवेदश्वतरो वेसरके नागान्तरेपि च ।
अश्वत्थः पिप्पलेऽश्विन्यां स्यान्मुहूर्त्तान्तरेपि च ॥४३५॥
पौर्णमास्यां त्वाश्वयुज्यामश्वत्था स्यात्स्त्रियामियम् ।
अश्वयुक् त्वश्विनी ऋक्षजाते स्यादभिधेयवत् ॥४३६॥
अश्वारोहाऽश्वगन्धाभ्यां त्रिष्वश्ववाहके तथा ॥
अश्वी त्वश्ववति स्त्री स्याद्धनू राशौ तु पुंस्ययम् ॥४३७॥
दस्रयोश्चाश्विनी तु स्त्री नक्षत्रेऽश्वयुगाह्वये ।
अश्वीयमश्ववृन्दे स्यात्त्रिस्त्वश्वस्य हिते भवेत् ॥४३८॥
अश्वीया तु स्त्रियामश्वलाञ्छने परिकीर्त्तिता ।
अषाढाऽब्दैवते तद्भनक्षत्रे वैश्वदेवके ॥४३९॥
तद्युक्ते कालसामान्ये ताभ्यां यज्ञद्विजन्मनाम् ।
अग्नित्येष्टकाभेदप्यथ स्याद्भेद्यलिङ्गकम् ॥४४०॥
असोढरि तथाषाढा युक्तकालजवस्तुनि ।
अष्टका स्त्री मार्गशीर्ष्याः कृष्णाष्टम्याः परत्र याः ॥४४१॥
तिस्रस्तासु च कर्त्तव्ये चासुश्राद्धेप्यसूत्रके ।
अष्टावयवके क्लीबमथाष्टावयवस्य च ॥४४२॥
सङ्घस्याध्येतरि त्र्यष्टावृत्तिकाध्ययनस्य च ।
अष्टमङ्गलशब्दो द्वे घोटभेदेऽस्य लक्षणम् ॥४४३॥
पुच्छोरःखुरकेशास्यैः सितैर्घोटोष्टमङ्गलः ।
क्लीबं नक्ष्मगमख्याते पूर्णकुम्भादिके भवेत् ॥४४४॥
द्विगौ तु प्राप्तलिङ्गं स्यात्समास इति निर्णयः ।
अष्टमी तु तिथौ रुद्रस्याष्टानां पूरणे त्रिषु ॥४४५॥
अष्टापदोऽस्त्रीकनके शारीफलकेपि च ।
अष्टापदी चन्द्रमल्ल्यां द्वयोस्तु शरभे कपौ ॥४४६॥
स्त्री त्वष्ठी स्यात्फलस्यास्थ्नि जानुकूर्परकास्थ्नि च ।
असत्सांख्यप्रधाने क्ली त्रिस्तु सत्तातियोगिनि ॥४४७॥
पुंश्चल्यां त्वसतीत्येषा स्त्रीलिङ्गे संप्रयुज्यते ।
असनो ना पीतसालवृक्षे क्ली त्वसनं मतम् ॥४४८॥

क्षेपणेऽपि गतौ दीप्तौ तथैव ग्रहणेपि च ।
असंपृक्तस्तु रहसि श्लिष्टभिन्ने पुनस्त्रिषु ॥४४९॥
असिक्न्यतःपुरप्रेष्या नदीभिद्रात्रिषु स्त्रियाम् ।
असितः कृष्णपक्षे स्यादैक्ष्वाके च नृपान्तरे ॥४५०॥
मध्वासवे शनौ कृष्णेऽथ त्रि तद्वत्यसंयते ।
असुः पुमान्स्यात्प्रज्ञायामसवो भूम्नि जीविते ॥४५१॥
असुरस्तु पुमान्मेघे वास्तुदेवान्तरे च यः ।
कोष्ठपङ्क्तौ पश्चिमायां कोष्ठे षष्ठे हि दक्षिणात् ॥४५२॥
विडाख्यलवणे चैव कृत्रिमाद्यपराभिधे ।
द्वे तु दैत्ये गजे च क्ली पुनः कांस्याख्यलोहके ॥४५३॥
असुरा रजनीराश्यौ स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।
असृक् स्याद्योगभेदे ना रक्ते तु स्यान्नपुंसकम् ॥४५४॥
अस्तं त्र्यवसिते क्षिप्रेऽप्यस्ताद्रौ ना ग्रहे तु नप् ।
अस्तु स्यादभ्यनुज्ञानेऽप्यसूयापीडयोरपि ॥४५५॥
प्रतिक्षेपे प्रशंसायां प्रकर्षे लक्षणेऽपि च ।
असंप्रत्यर्थ एतच्चाव्ययं संपरिकीर्त्तितम् ॥४५६॥
अस्त्रं प्रहरणे चापे करवाले नपुंसकम् ।
अस्थानं तु त्रिषु प्रोक्तं स्थानहीने जलाश्रये ॥४५७॥
अगाधे शून्यमूले तु सैन्ये स्थानात्परे च नप् ।
अस्थिमांस्त्र्यस्थिसंयुक्ते नाऽस्थिसंघातवीरुधि ॥४५८॥
अस्थिसंहननं क्ल्यस्थिसंनाहे ना लतान्तरे ।
अस्रोऽङ्कुशे कचे कोणे पुंसि क्ली रुधिरेऽश्रुणि ॥४५९॥
अस्रपा तु जलौकायां डाकिन्यां राक्षसे तु ना ।
अह प्रशंसाक्षिपयोर्नियोगे च विनिग्रहे ॥४६०॥
अहतं वाच्यवदहिंसिते चाभिनवे पटौ ।
अहिंसायां पुनः क्लीबमहतं संप्रकीर्त्तितम् ॥४६१॥
अहतिर्मांसदानव्याधिषु स्त्री नाऽहिधातुके ।
अहल्या तु सरोभेदे भार्यायां गौतमस्य च ॥४६२॥

न हन्यत इति व्युत्पत्त्याऽहल्या स्यादुषस्यपि ।
अहहेत्यद्भुते खेदे परिक्लेशप्रकर्षयोः ॥४६३॥
तथा संबोधनार्थेपि प्रयुक्तमिदमव्ययम् ।
अहार्यः पुंसि शैले स्यादहर्त्तव्ये पुनस्त्रिषु ॥४६४॥
अहिजिन्ना हरौ शक्रे त्रिलिङ्गस्त्वहिजेतरि ।
अहितो ना भवेच्छत्रावपथ्ये त्वभिधेयवत् ॥४६५॥
अहिद्विड् गरुडे पुंसि शक्रे च नकुले पुनः ।
द्वे मयूरे त्रिषु पुनरहेर्द्वेषस्य कारिणि ॥४६६॥
भवेदहिभयं भीतौ स्वपक्षजभयेपि नप् ।
अहिभुग्गरुडेऽथ द्वे मयूरे ऽर्यहिभोर्जनि ॥४६७॥
यज्ञेष्वहीनः पुँल्लिङ्गः प्राक् त्रयोदशरात्रतः ।
द्विरात्रादिष्वथ त्रिः स्यादन्यूनेऽहीश्वरे तथा ॥४६८॥
अहूला स्यादस्खलने भल्लातक्यामपि स्त्रियाम् ।
अहो प्रश्ने वितर्के च परिकीर्त्तितमव्ययम् ॥४६९॥
अहो बतानुकम्पायां खेदे संबोधने तथा ॥४६९½॥

आ

आः शिवे स्यात्पुमानातु स्त्रियां लक्ष्म्यां प्रकीर्त्तिता ॥४७०॥
आ प्रगृह्यं स्मृतौ वाक्येऽनुकम्पायां समुच्चये ।
आकरः श्रेष्ठनिवहोत्पत्तिस्थानेषु कथ्यते ॥४७१॥
आकर्षः शारिफलके द्यूते च द्यूतपाशके ।
आकृष्टाविन्द्रिये पार्श्वे कोदण्डाभ्यासवस्तुनि ॥४७२॥
ये सप्तभागाः करिण ऊर्ध्वदेशे वराङ्गुलेः ।
द्वितीयेप्याद्यतस्तेषामाकर्षेऽपि नृपान्तरे ॥४७३॥
आकर्षकस्त्रिष्वाकर्षकुशले चुम्बके तु ना ।
बृहत्कथाप्रसिद्धे त्वाकर्षिका नगरान्तरे ॥४७४॥
अनाप्याकलना बन्धे संख्यानज्ञानयोरपि ।
शब्दने तु समूहे च क्लीबमाकलनं मतम् ॥४७५॥

आकल्पः कल्पने पुंसि वेषे च परिकीर्त्तितः ।
आकल्पकस्तमोमोहग्रन्थावुत्कलिकामुदोः ॥४७६॥
स्यादाकल्पनमाकाङ्क्षा परिसंख्यानबन्धने ।
आकाङ्क्षा त्वभिलाषेऽपि स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥४७७॥
प्रतीतिपर्यवसिते विरहेपि तथेष्यते ।
आकार इङ्गिताकृत्योराह्वानात्मविकारयोः ॥४७८॥
आवर्णेपि पुमानेष आकारः परिकीर्त्तितः ।
आकालिकी स्त्रियामेषा विद्युदर्थे मताऽथ च ॥४७९॥
अह्नो वा रजनेर्वापि भागमारभ्य कंचन ।
आ तस्मात्परतो भागाद्भवेऽकालभवे त्रिषु[1] ॥४८०॥
आकृतिस्त्री शरीरे स्यादाकारव्यक्तिजातिषु ।
अष्टाशीत्यक्षरछन्दोभेदे च पुरुषान्तरे ॥४८१॥
आक्रन्दो रुदिताह्वानारावेषु नृपतौ प्रभौ ।
मित्रे दारुणयुद्धे च त्रातर्यपि पुमान्मतः ॥४८२॥
आक्रीडः क्रीडने पुंसि कुरुत्थामसुतेपि च ।
अस्त्रियां त्वयमाक्रीडः क्रीडोद्याने प्रकीर्त्तितः ॥४८३॥
आक्षारितस्त्रिलिङ्गोऽयमनिशस्ते प्रकीर्त्तितः ।
विवादेष्वभियुक्तेऽपि तथैवास्नावितेपि च ॥४८४॥
आक्षिकः स्यात्पुमान्व्याधौ त्रिलिङ्गस्त्वक्षदेविनि ।
आक्षेपो भर्त्सना निन्दा तथा कृषिरुगन्तरे ॥४८५॥
काव्यालङ्कारभेदेऽध्याहारे वर्णगुणान्तरे ।
आक्षेपकोऽनिलव्याधौ व्याधौ निन्दाकरेपि च ॥४८६॥
द्वयोस्त्वाखनिकश्चौरसूकराम्बुखगाखुषु ।
तटाककारे तु त्रिष्वाखनिकी परिकीर्त्तिता ॥४८७॥
आखुर्मूषिकमात्रेपि सूकरेपि द्वयोर्मतः ।
तथा मूषिकजातेश्च भेदेपि क्रमसंज्ञके ॥४८८॥

---

१. आकालिकेप्सा (आकालिके विप्रकृष्टकालभवं स्वर्गादि साय Int.)

आख्यातं वाच्यवत्प्रोक्तेऽथ तिङन्ते नपुंसकम् ।
आख्यानं तु कथायां च वचनेऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥४८९॥
आख्यानं क्ली वृत्तभेदे क्लीवं तु स्यात्कथानके ।
आगोऽपराधे पापेऽपि रहस्येऽपि नपुंसकम् ॥४९०॥
पुंस्याग्निमारुतोऽगस्त्यमुनौ त्र्यग्नामरुद्युजि ।
आग्नीध्र ऋत्विग्भेदे स्यादग्निधिष्ण्यन्तरेपि नप् ॥४९१॥
अग्निकार्ये तथाग्नीध्री स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
आग्नेयः पुंस्त्यगस्त्यर्षौ द्वापराख्ययुगेपि च ॥४९२॥
संवत्सरे च क्लीबं तु रुधिरेऽप्युत्तरायणे ।
दशाहकार्यश्राद्धे च त्रेतायां च युगे स्त्रियाम् ॥४९३॥
आग्नेयी भेद्यवत्त्वग्नियोगिन्येषा प्रकीर्त्तिता ।
आघाटः सीम्नियानेऽपामार्गे वाद्यान्तरे घटे ॥४९४॥
आघातस्ताडने घाते वधस्थाने पुमान्मतः ।
आघारणः स्रुवे पुंसि न तु ना क्षारणे मतः ॥४९५॥
आघ्रातं शिङ्कते क्रान्ते क्लीभावे त्रि तु कर्मणि ।
आङ् सीमायामभिव्याप्तौ क्रियायोगेषदर्थयोः ॥४९६॥
आचाम ओदनस्य स्यान्निःस्रावे मासराह्वये ।
तथाचान्तिक्रियायां च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥४९७॥
आचारः पुंसि चारित्रेऽथाचारा स्त्रीहरेर्भवेत् ।
नव याः शक्तयस्तासामेकस्यामिति सूरयः ॥४९८॥
आचार्य उपनीत्यादिमन्द्व्याख्याकृतोः पुमान् ।
व्याख्यात्र्यां स्वयमाचार्या चार्यान्याचार्ययोषिति ॥४९९॥
आचितः शकटोन्मेये पलानामयुते द्वये ।
वाच्यवन्निश्चितेच्छन्ने संगृहीतेऽथ नप्स्मृतम् ॥५००॥
तुलाविंशतिरूपाणां भाराणां दशके बुधैः ।
आच्छादनं संपिधाने वस्त्रेपवृतिमात्रके ॥५०१॥
स्यादाच्छुरितकं हासनखराघातभेदयोः ।
आजिः स्त्रियां क्वचित्पुंसि युद्धे सममहीतले ॥५०२॥

आजीवस्तु क्षपणके जीविकायां च कीर्त्तितः ।
आज्यं श्रीवेष्टनिर्यासे घृते युद्धे नपुंसकम् ॥५०३॥
पलाख्योन्मानभेदेऽपि स्तोत्रेषु च चतुर्ष्वपि ।
स्थुर्बर्हिष्पवमानाद्यान्यूर्ध्वान्यध्वरकर्मणाम् ॥५०४॥
आज्ञा तु स्त्री महापादेः शासने लग्नराशितः ।
राशौ च दशमे वेश्याविशेषेपि महीपतेः ॥५०५॥
यस्याज्ञागणिकेत्याख्याऽऽज्ञी तु स्यात्त्र्यज्ञयोगिनि ।
त्र्याञ्जनमञ्जनसम्बन्धिन्यरत्नौ त्वञ्जने पुमान् ॥५०६॥
तथा सप्तदशारत्ने यूपस्याद्याच्चतुर्थके ।
आडम्बरोऽस्त्री संरम्भे गजगर्जिततूर्ययोः ॥५०७॥
युद्धवादिमनिर्घोष आभोगक्रोधयोः पुमान् ।
[1]आढकोऽस्त्री चतुष्प्रस्थे तुवर्यामाढकी मता ॥५०८॥
आणिः स्त्रीपुंसयोर्युद्ध रथाद्यक्षाग्रकीलके ।
जङ्घामर्मणि निःश्रेण्यां निःश्रेणिद्वारि चोच्यते ॥५०९॥
आतङ्को रोगसन्तापशङ्कासु मुरजध्वनौ ।
आतञ्चनं प्रतीवापजवनाप्यायनेषु नप् ॥५१०॥
आततिः स्यादन्धकारे विस्तारे पथि च स्मृता ।
आतर्पणं प्रीणने स्यान्मङ्गलाऽऽलेपनेपि च ॥५११॥
आतिथ्यो नाऽतिथावुक्तो तिथ्यर्थे तु त्रिलिङ्गकः ।
आत्मजः पुंसि कामेऽथात्मजमुक्तं मनोसृजोः ॥५१२॥
द्वे त्वपत्ये त्रिषु त्वेष स्वस्माज्जाते प्रकीर्त्तितः ।
आत्मार्कचन्द्रवाताग्निजीवेषु परमात्मनि ॥५१३॥
देहे यत्ने धृतौ कीर्त्तौ बुद्धौ मनसि च श्रुते ।
धर्मे स्वभावे पुत्रेऽर्थे परस्य प्रतियोगिनि ॥५१४॥
आत्मनीनः सुते स्याले द्वयोस्त्रिष्वात्मनो हिते ।
विदूषके प्राणधारे केशवस्त्वाहदूषके ॥५१५॥

---

१. आढकोऽस्त्री चतुष्प्रस्थपरिमाणे प्रयुज्यते ।
आढकी तुवरीसंज्ञधान्ये स्त्री परिकीर्त्तिता ॥

आत्मभूर्मन्मथे चैव विरिञ्चेपि पुमान्मतः ।
आत्मयोनिः पुमान्कामे शिवे ब्रह्मणि मारुते ।।५१६।।
आत्मवीरः प्राणवति श्यालकेत्र विदूषके ।
आत्माश्यात्माशिनी मत्स्ये त्रि तु स्यादात्मभक्षिणि ।।५१७।।
आत्मीयस्तु निजेऽपि स्यान्मित्रे चाप्यभिधेयवत् ।
आत्रेयी ऋतुमत्यां च नदीभेदे च कीर्त्तिता ।।५१८।।
क्ली तु सामविशेषे स्याद्द्वयोस्त्वत्रेरपत्यके ।
अबहुष्वेव बहुषु त्वत्रयोऽपत्यवाचिनः ।।५१९।।
आथर्वणस्समूहेऽथर्वणामाम्नायधर्मयोः ।
तेषां शान्तिगृहेऽपि स्यात्सामभेदेप्यथर्वणाम् ।।५२०।।
शंनो देवीरिति ह्यस्यामृचि दृष्टे नपुंसकम् ।
वाच्यलिङ्गे तु सम्बन्धिमात्रेऽपि स्यादथर्वणः ।।५२१।।
आदर्शो दर्पणे टीकाप्रतिपुस्तकयोरपि ।
आदानमश्वालंकारे ग्रहणे चोत्तरायणे ।।५२२।।
आदित्योऽर्केप्युपेन्द्रेऽथ द्वयोर्देवेऽपि चादितेः ।
अपत्यआदित्यस्य त्रि त्वादित्याऽऽदित्ययोगिनि ।।५२३।।
आदिष्टमादेशिते त्रिराज्ञप्तोच्छिष्टयोस्तु नप् ।
आदीनवः पुमान्दोषे परिक्लेशदुरन्तयोः ।।५२४।।
आदृतः सादरेऽपि स्यादर्चितेप्यभिधेयवत् ।
आदेष्टाऽदेशके त्रि स्यान्नाऽध्वरव्रतिनि स्मृतः ।।५२५।।
आद्या स्त्रियां शक्तिदेव्यां त्र्याद्यं पूर्वप्रधानयोः ।
अदनीये च पुँल्लिङ्गस्त्याद्यो वेधसि कीर्त्तितः ।।५२६।।
आधानं तु विधाने स्यात्त्रेताग्न्याधान एव च ।
आधार आलवालेऽम्बुबन्धेऽधिकरणेपि च ।।५२७।।
आधिर्मानसपीडायां व्यसने बन्धकेपि च ।
प्रत्याशायामधिष्ठाने पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।।५२८।।
आधेयमग्न्याधाने त्रिस्त्वाधारस्यनिधेययोः ।
आध्मातः शब्दिते दग्धे त्रिषु वातरुगन्तरे ।।५२९।।

आध्यात्मिको ध्यानयोगे त्रिस्त्वध्यात्मभवे मतः ।
आनकः पटहे भेर्यां मृदङ्गे ध्वनदेऽम्बुदे ॥५३०॥
वासुदेवे तु संप्रोक्तः पुमानानकदुन्दुभिः ।
क्लीबं तु स्यात्समाहार आनकस्य च दुन्दुभेः ॥५३१॥
आनद्धं मुरजादौ क्ली स्याद्बद्धे त्वभिधेयवत् ।
स्यादानन्दी तु गोस्तन्यां स्त्र्यानन्दस्तु सुखे पुमान् ॥५३२॥
आनर्त्तो देशभेदे स्यान्नृत्तस्थाने जले रणे ।
आनाहोऽधांवृद्धिरोगे बन्धनेप्युदरस्य च ॥५३३॥
आनील ईषन्नीले त्रिरानीली श्यामघोटके ।
द्वयोः स्त्रियां तु वङ्गेऽसावानीली परिकीर्त्तिता ॥५३४॥
स्यात्त्रिष्वापणिकः पारे वणिजि व्यवहारके ।
स्यात्त्रिष्वापतिकः पादोष्णके चैव वणिज्यपि ॥५३५॥
द्वे तु श्येने मयूरेऽथ पुंसि काले प्रयुज्यते ।
आपत्तिरापदि स्त्री स्यात्प्रापणेपि प्रकीर्त्तिता ॥५३६॥
स्यात्त्रिष्वापदिकश्चैवापतिकोऽपि वणिज्ययम् ।
पुँल्लिङ्गौ तु भवेतां द्वाविन्द्रनीलेन्द्रकोलयोः ॥५३७॥
आपन्नः सविपत्तौ च प्राप्ते चाप्यभिधेयवत् ।
आपन्नसत्त्वा तु स्त्रीत्वे गर्भिण्यामथ वाच्यवत् ॥५३८॥
प्राप्तसत्त्वे विपन्नं च सत्त्वं यस्यास्ति तत्र च ।
आपातः स्यादापतने तदात्वे पतने तथा ॥५३९॥
आपानं तु सुरापानगोष्ठ्यामारुष्यपानके ।
आपीडः शेखरे जातिच्छन्दोभेदेपि कीर्त्तितः ॥५४०॥
आप्तः प्रत्ययिते प्रोक्तस्तथा लब्धेऽपि वाच्यवत् ।
आप्तिः प्रत्ययितत्वे स्याल्लाभसम्बन्धयोरपि ॥५४१॥
आप्यं तु प्रापणीये स्यादम्मयेपि त्रिलिङ्गकम् ।
आप्रीतस्तु द्वयोर्विप्रादुग्रस्त्रीसम्भवे सुते ॥५४२॥
अथाभिनवमृत्पात्रे प्रसन्नेऽप्यभिधेयवत् ।
आप्लुतः स्यात्समावृत्ते स्नाते चाप्यभिधेयवत् ॥५४३॥

आबद्धो दृढबन्धे स्यात्प्रेमालंकारयोक्त्रयोः ।
आबन्धस्तु पुमान्योक्त्रे बन्धने च प्रकीर्त्तितः ॥५४४॥
आभीलं कष्टरजसोस्त्रि तु तद्वति भीषणे ।
आभोगो वारुणच्छत्रे परिपूर्णत्वयत्नयोः ॥५४५॥
आभ्यन्तरं तु त्रिष्वभ्यन्तरजादावथो नपि ।
रसभावाङ्गहाराद्यैर्नर्त्तने रूपकाश्रये ॥५४६॥
आमव्ययं मतं ज्ञाने निश्चये स्मरणे तथा ।
आमो रुक्तद्भिदोः पुंसि स्यादपक्वेन्यलिङ्गकः ॥५४७॥
आमन्त्रणामन्त्रणं चाह्वानेऽनुज्ञापनेऽपि च ।
कामचाराभ्यनुज्ञानेऽपीदं द्वयमुदीरितम् ॥५४८॥
आमन्त्रितस्त्वनुज्ञाते त्रिरनुज्ञापितेऽपि च ।
सम्बोधनविभक्तौ तु भवेदामन्त्रिता न ना ॥५४९॥
आमन्त्रितं पुनः क्लीबं स्यादामन्त्रणकर्मणि ।
आमिषं त्वस्त्रियां मांसे संभोगे भोग्यवस्तुनि ॥५५०॥
उत्कोचेऽथ स्त्रियां मांस्याऽऽख्ये गन्धद्रव्य आमिषी ।
आमोदस्तु पुमान्हर्षेऽतिनिर्हारिणि चोच्यते ॥५५१॥
विमर्दोत्थे परिमले गन्धे जनमनोहरे ।
आम्नाय उपदेशेऽपि संप्रदायेपि कीर्त्तितः ॥५५२॥
पाठाभ्यासे च वेदे च पुँल्लिङ्गः संप्रयुज्यते ।
आयः पुंसि धनोत्पत्तौ स्वामिभागे तथागतौ ॥५५३॥
आगतौ च तथा राशौ लग्नादेकादशे मतः ।
अयसम्बन्धिनी त्वायी त्रिलिङ्गा परिकीर्त्तिता ॥५५४॥
त्रिरायतः स्यादाकृष्टे दीर्घवस्तुन्यथायतौ ।
क्लीबमाकर्णकर्षाच्च शराकर्षेङ्गुलाधिके ॥५५५॥
आयतस्तु पुमान्कश्चित्त्वाचष्टे ब्राह्मणे द्वयोः ।
भवेदायतनं देवालये गेहे च तोरणे ॥५५६॥
शल्ये स्थानमात्रे च लिङ्गं चास्य नपुंसकम् ।
आयतिर्दीर्घतायां स्त्री प्रभावागामिकालयोः ॥५५७॥

आयत्तिस्तु स्त्रियां स्नेहे वशित्वे वासवे बले ।
आयसं त्वयसि क्लीबमयःसम्बन्धिनि त्रिषु ॥५५८॥
त्र्यायस्तः कुपिते क्षिप्ते क्लेशिते तेजिते हते ।
आयानं त्वश्वभूषायामागतौ च प्रकीर्त्तितम् ॥५५९॥
आयाम इति शब्दोऽयं पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
दैर्घ्ये रज्जुपटादीनामभितश्च विकर्षणे ॥५६०॥
आयासस्तु प्रयत्नेऽपि क्लेशेऽपि परिकीर्त्तितः ।
आयुशब्दो मनुष्ये द्वे शकटे तु पुमानयम् ॥५६१॥
स्यात्पुरुरवउर्वश्योः पुराणप्रथिते सुते ।
आयुधं वारिणि क्लीबं शस्त्रे त्वायुधमस्त्रियाम् ॥५६२॥
आयुर्नपुंसकं सान्तं धने वत्सरनीरयोः ।
जीविते विश्वतो दावन्नित्यारण्यकसामनि ॥५६३ ॥
तथा जीवितकालेऽपि क्रतुभेदेऽपि पुंनपोः ।
आयुष्मान्योगभेदे ना वाच्यवच्चिरजीविनि ॥५६४॥
आयोगो व्यापृतौ बोधे गन्धमाल्याद्युपाहृतौ ।
आयोगवो द्वे वैश्यायां शूद्राज्जाते निषादतः ॥५६५॥
शूद्रायामपि जातेऽथ त्रिष्वयोमयपत्त्रिणः ।
सम्बन्धिन्यायोगवश्चायोगव्यायोगवं तथा ॥५६६॥
आयोधनं वधे युद्धे नपुंसकमुदाहृतम् ।
आरस्त्वङ्गारके गत्यामागतौ च शनैश्चरे ॥५६७॥
आरा चर्मप्रभेदिन्यामथारं पित्तले नृ नप् ।
अरसम्बन्धिनि त्वारमारश्चारी च वाच्यवत् ॥५६८॥
आरक्षो गजकुम्भाधःप्रदेशे चापि रक्षिणि ।
आरट्टा देशभेदे पुं भूम्न्यारट्टस्तु तद्भवे ॥५६९॥
आरट्टी च द्वयोरुक्तौ विशेषात्तज्जघोटके ।
आरम्भस्तु त्वरायामप्युद्यमे वधदर्पयोः ॥५७०॥
उपक्रमे च निर्माणे पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
आराग्रं स्यादिषोरग्रेऽप्यारायाश्चाग्रभागके ॥५७१॥

आराद्दूरे समीपे चाप्यव्ययं परिकीर्त्तितम् ।
आराधनाऽऽराधनं च प्राप्तिसंसिद्धितृप्तिषु ।।५७२।।
संतोषणायामपि च द्वयमेतत्प्रकीर्त्तितम् ।
आरामः स्यादुपवने विरामेऽपि पुमानयम् ।।५७३।।
आरुः पुंसि तरोर्भेदे द्वयोः कर्कटदंष्ट्रिणोः ।
आरोहो हस्तिवाहेऽवरोहाख्येऽङ्गे तरोरपि ।।५७४।।
दैर्घ्ये समुच्छ्रये चापि श्रोण्यामारोहणे तथा ।
वरारोहाकटिस्थानेप्येष पुँल्लिङ्ग उच्यते ।।५७५।।
आरोहणो रथे पुंसि क्लीत्वारोहस्य साधने ।
आर्त्तवं रजसि स्त्रीणां कुसुमे च नपुंसकम् ।।५७६।।
वाच्यवदृतुजातेऽपि आप्तर्त्तावपि कीर्त्यते ।
आर्त्तिः पीडाधनुष्कोट्योः प्राप्ते लब्धस्वसत्रयोः ।।५७७।।
आर्द्रोऽस्त्रियां शृङ्गवेरेऽथार्द्रा क्लिन्ने त्रिलिङ्गिका ।
आर्द्रकं शृङ्गिवेरे त्रि त्वार्द्रानक्षत्रसंभवे ।।५७८।।
आर्द्रा स्त्री रुद्रनक्षत्रे तद्युक्ते कालमात्रके ।
आर्या मृडान्यां स्त्रीजातिच्छन्दोभेदे च ना पुनः ।।५७९।।
सौविदल्ले सज्जने तु तद्वदेवार्ययोगिनि ।
आगन्तव्ये च गम्ये च वाच्यवत्संप्रयुज्यते ।।५८०।।
आर्यपुत्रो द्वयोरार्याऽपत्ये पुंसि तु भर्त्तरि ।
नाट्योक्तिविषये चैव देवरेपि प्रकीर्त्तितः ।।५८१।।
आर्षणं सामभेदे क्ली त्रिषु त्वृषभयोगिनि ।
आलप्तिः स्यादालपने स्त्रियां गीतेरुपक्रमे ।।५८२।।
आलम्बो नाऽऽलम्बने स्यात्क्ली तु स्यान्मत्तवारणे ।
आलस्यमलसत्वे स्यादलसे त्वभिधेयवत् ।।५८३।।
आलानमस्त्रियां बन्धस्तम्भे रज्जौ च दन्तिनाम् ।
तथैव स्तम्भमात्रेऽपि ग्रहणे तु नपुंसकम् ।।५८४।।
आलिः पङ्क्तिसखीसेतुषु स्त्री त्रिविंशदाशये ।
आलिङ्गो वाद्यभेदाश्लेषयोस्त्रित्वेप्यलिङ्ग तः ।।५८५।।

आलिङ्ग्यः पटहे मध्यमे स्त्रिस्त्वालिङ्गनीयके ।
आलीढं स्थितिभेदे स्वन्विनां स्यात्स्थीयते यदा ।।५८६।।
वाममाकुञ्च्य चरणं दक्षिणे प्रततेऽग्रतः ।
क्लीबमास्वादने चैतत्त्रिषु त्वास्वादिते भवेत् ।।५८७।।
आलुः श्लेष्मान्तक श्लेष्मण्यपि पुंसि प्रयुज्यते ।
नपुंसकं भेलके च मूले चाप्यथ नप्स्त्रियोः ।।५८८।।
चक्रोष्ट-संज्ञके कन्दे कर्कर्यां तु स्त्रियामियम् ।
आलूः स्त्रीटिट्टिभे योनिव्याधावपि वनस्पतौ ।।५८९।।
आलेपः पुनरालिप्तावनुलेपनवस्तुनि ।
आलोकस्तु नृलिङ्गः स्यादुद्योते दर्शने तथा ।।५९०।।
आवन्त्योऽवन्तिराट्पुत्रे मर्त्यजात्यन्तरे पुनः ।
विप्रपूर्वकविप्रस्त्रीजाते व्रात्यादृद्वयोर्भवेत् ।।५९१।।
[1]आवर्त्तोऽम्भोभ्रमे रोमप्रभृतेर्वलिते चये ।
आवर्त्तनायामावृत्तौ चिन्तने च पुमान्मतः ।।५९२।।
अथावर्त्तनमावृत्तौ नपुंसकमुदाहृतम् ।
आवर्त्तना स्यादभ्यासे सूत्रस्य वलने स्त्रियाम् ।।५९३।।
आवसथ्यस्त्वावसथेऽप्यग्नौ चाहवनीयतः ।।
प्राग्देशस्थे प्रयुक्तोऽसौ पुँल्लिङ्गे शब्दवेदिभिः ।।५९४।।
आवाप आलवाले च प्रक्षेपे न्यसने तथा ।।
परिक्षेपे च वपने भाण्डे चापि पुमान्मतः ।।५९५।।
आवापकः पारिहार्ये स्यादावप्तरि तु त्रिषु ।
आविकं त्र्यवियुक्ते क्लीत्वविरोमजकम्बले ।।५९६।।
आविद्धं कुटिले क्षिप्ते वाच्यवच्च पराहते ।
आविलं कलुषेऽपि स्याद्वाच्यवच्चाप्यनुज्ज्वले ।।५९७।।
आवृत्स्त्रियामावृ...तथा यागादिकर्मणाम् ।
कल्पे च परिपाट्यां च साम्नो गायत्रसंज्ञिनः ।।५९८।।

---

१. आवर्तकालकौ पुंसि तालूरश्च जलभ्रमः । हरविजये, अभिधाचि० ।

द्वितीयपादगीत्यां च तृतीयार्चिकपर्वणोः ।
आवेशनं शिल्पिशाले भूतावेशप्रवेशयोः ॥५९९॥
आवेष्टको वेष्टके त्रिर्वाटे पुँल्लिङ्ग उच्यते ।
समीपेऽप्यथ भुक्तौ च व्याप्तावाशः पुमान्मतः ॥६००॥
आशङ्का तु भये सम्भावनायामपि च स्त्रियाम् ।
आशयस्तु पुमान्स्थानेऽभिप्रायाधारयोरपि ॥६०१॥
कोष्ठागारे जलस्थाने वासनायां च चेतसि ।
विभवे पनसे संघेऽथ त्रिः कृपणजीर्णयोः ॥६०२॥
आशरो राक्षसे द्वे ना त्वग्नौ त्र्यशरयोगिनि ।
आशा स्त्री दीर्घतृष्णायां दिश्यवान्तरदिश्यपि ॥६०३॥
आशाबन्धः समाश्वासे तथा मर्कटजालके ।
त्रिराशिनं भवस्तत्र करणे नौदनादिना ॥६०४॥
येनाशितो भवेद्भावे त्वाशितस्यास्त्रियां मतः ।
आशिरस्तु पुमान्वह्नौ विष्णौ सूर्ये च भोजने ॥६०५॥
तथा क्षीरविकारे स्यादथ बह्वाशिनि त्रिषु ।
आशीरिच्छा हिताशंसा सर्पदंष्ट्रास्वपि स्त्रियाम् ॥६०६॥
आशुः पाटलसंज्ञे ना व्रीहिभेदे दिवाकरे ।
अलंकारसुवर्णे तु क्ली श्रृङ्गीकनकाह्वये ॥६०७॥
असत्त्वगामिचेच्छीघ्रेऽव्ययं सत्त्वे पुनस्त्रिषु ।
आशुराख्वीति चाप्यश्वे पुंस्त्रियोः परिकीर्त्तितम् ॥६०८॥
आशुशुक्षणिराख्यातः पुमान्वह्नौ रवावपि ।
आशौचनिः पुमानग्नौ चन्द्रेऽपि परिकीर्त्तितः ॥६०९॥
आश्रमोऽस्त्री मुनिवने ब्रह्मचर्यादिके मठे ।
आश्रयाशः पुमान्वह्नौ त्रिषु चाश्रयनाशके ॥६१०॥
आश्रवोऽङ्गीकृतौ क्लेशे [पुंसि] त्रि तु स्याद्वचनस्थिते ।
आश्राणा स्त्री यवाग्वां स्यात्पक्वे त्वन्यत्र भेद्यवत् ॥६११॥
क्षीराच हविषश्चाथाश्रृतं क्षीरे हविष्यपि ।
आश्लेषासर्पभे स्त्री स्यादाश्लेषस्तु पुमानयम् ॥६१२॥

रसाख्यधातौ शारीरे स्त्रीणां चालिङ्गने मतः ।
स्त्रियामाश्वयुजी पौर्णमासी भेदेऽश्वयुग्युते ।।६१३।।
ना तु मास्याश्विने त्रिस्तु जातेऽश्विन्याख्यकालके ।
आश्वास आख्यायिकांश आशुक्षेपे च विश्रमे ।।६१४।।
आश्विनो मास्याश्वयुजे क्ली तु शास्त्रान्तरे क्रतौ ।
सम्बन्धिनि त्वश्विनोश्चाश्विन्याश्च त्रिषु कीर्त्यते ।।६१५।।
आश्विनी स्त्रीष्टकासु स्यादग्निचित्यगतासु च ।
अश्विनीनक्षत्रयुक्ते तथा स्यात्पूर्णिमान्तरे ।।६१६।।
आषाढः शुचिमासेऽपि व्रतिदण्डे नगान्तरे ।
प्रलये पूर्णिमायां त्वाषाढाऽऽषाढर्क्षभाज्यसौ ।।६१७।।
आष्ट्रं नपुंसके प्रोक्तमाकाशे किरणेऽपि च ।
आस्स्मृतौ कोपसन्तापावाकृतिष्वपि चाव्ययम् ।।६१८।।
आसः स्यात्क्षेपणे चापे चेक्षुपक्षिभिदोः पुमान् ।
कैवर्तीमुस्तकाख्ये तु स्यादासं मुस्तकान्तरे ।।६१९।।
आसक्तमन्धकारे क्ली त्रि त्वासज्जनकर्मणि ।
आसत्तिस्तु स्त्रियां लाभे सांनिध्ये संगमेपि च ।।६२०।।
आसनं गात्रविन्यासभेदे पद्मासनादिके ।
यात्रानिवृत्तौ पीठे च गजस्कन्धे नपुंसकम् ।।६२१।।
आसना चासनं चेति क्रियायामास्तितो न ना ।
आसनी विपणौ स्त्री स्यादासनः पुंसि जीरके ।।६२२।।
आसन्दस्तु पुमान्विष्णावासन्दी वेत्रनिर्मिते ।
स्त्रियां स्यादासने कैश्चिदुक्तैषाऽऽसनमात्रके ।।६२३।।
आसवो मद्यभेदेऽप्यपक्वेक्षुरससाधिते ।
आसुत्याख्ये तथा मद्यसन्धाने पूगपादपे ।।६२४।।
आसारी स्त्री स्थले सार्थे त्वासारश्चण्डवर्षणे ।
गङ्गां सुहृद्बले सैन्यप्रसरे प्रसृतावपि ।।६२५।।
त्रिरासुतीबलः कल्या[1] पाले ना सोमयाजिनि ।
आस्कन्दनं तिरस्कारे रणे संशोषणेपि च ।।६२६।।

१. कन्या पा० भे० ।

स्यादास्तरणमास्तीर्य्यें कुशे चास्तीर्णवस्तुनि ।
आस्था त्वालम्बनास्थानयत्नापेक्षास्वियं स्त्रियाम् ॥६२७॥
प्रतिज्ञायां च तात्पर्ये गोष्ठ्यां चापि प्रयुज्यते ।
आस्थान्यना प्रतिज्ञायां सदस्याक्रमणे तु नप् ॥६२८॥
आस्पदं तु भवेत्कृत्ये स्थाने चापि नपुंसकम् ।
आस्फोटनी वेधन्यां स्त्र्यास्फोटे त्वास्फोटना न ना ॥६२९॥
आस्फोतो नाऽर्कपर्णेऽपि पलाशे कोविदारके ।
आस्फोता गिरिकर्ण्यां च वनमल्ल्यामपि स्त्रियाम् ॥६३०॥
आस्या स्यादासनायां स्त्री मुखे त्वास्यं विलेऽस्य च ।
त्रि तु तद्भवतत्साधुतद्धितक्षेप्यवस्तुषु ॥६३१॥
आस्यप्रिया निष्पावाख्यधान्ये त्रि तु मुखप्रिये ।
आस्रं क्ली रुधिरे वाष्पे कचे ना त्र्यस्रयोगिनि ॥६३२॥
आह क्षेपेऽतियोगे च परिकीर्त्तितमव्ययम् ।
आहतस्त्वानके क्ली तु वस्त्रयोः प्रत्ननूत्नयोः ॥६३३॥
मृषार्थवाक्ये तु हते गुणिते ताडिते त्रिषु ।
[1]आहतिस्स्त्री हतौ यज्वस्तुगासादनकर्मणि ॥६३४॥
आहार ओदनेपि स्यादानीतौ भोजनेऽपि च ।
आहार्यमाहर्तव्ये त्र्यभिनेये भूषणादिभिः ॥६३५॥
आहो धिगर्थे शोके च करुणार्थविषादयोः ।
संबोधने प्रशंसायां विस्मये पादपूरणे ॥६३६॥
अस्त्रियामाह्निको ग्रन्थाऽवच्छेदे भेद्यवत्पुनः ।
अह्ननिर्वर्तनीयादौ क्लीबं स्यान्नैत्यकेऽशने ॥६३७॥
आह्वा स्त्री नाम्नि कण्ठे च कथायामपि कीर्त्तिता ॥६३७ई॥

---

१. आहतं प्रत्नवस्त्रे क्ली नववस्त्रेपि ताडने ।
गुणनेप्यथ पुँल्लिङ्ग आनके परिकीर्त्तितः ॥

इ

इ खेदे परुषोक्तौ चापाकृतावनुकम्पने ॥६३८॥
इः पुमांस्तु मतः कामे·········।
इक्षुकाण्डोऽस्त्रियां मुञ्जे काशे चेक्ष्वन्तरेऽपि च ॥६३९॥
इक्षुगन्धा स्त्रियामुक्ता कोकिलाक्ष इति श्रुते।
आनूपे कण्टकिस्तम्बे विदारीकाशगोक्षुरे ॥६४०॥
इक्षुरः कोकिलाक्षे च काशे गोक्षुरकेऽपि च।
पुमानिक्षुरसः काशे योगाऽर्थे च प्रकीर्त्तितः ॥६४१॥
इक्ष्वाकुर्मदनद्रौ ना वैवस्वतमनोः सुते।
तिक्तालाब्वां पुनरियमिक्ष्वाकुः स्त्री प्रकीर्त्तिता ॥६४२॥
इङ्गोऽद्भुते जङ्गमे च ना ज्ञानेङ्गितयोर्मतः।
इङ्गुदी तापसतराविङ्गुदोऽपि द्वयोर्मतः ॥६४३॥
ज्योतिष्मत्यां स्त्रियामेवेङ्गुदीयं परिकीर्त्तिता।
इज्या दाने च यज्ञे च पूजायां सङ्गमे स्त्रियाम् ॥६४४॥
जनन्यां गवि कुट्टिन्यां श्रेष्ठे तु त्रिर्गुरौ तु ना।
इडीट् च त्रिषु नाथे स्याद्वसुधायां स्त्रियामिमे ॥६४५॥
बुधपत्न्यामिडेलावन्नाडीभेदे च कीर्त्तिता।
जनन्यां देवताभेदे भा भूगोस्वर्गवाक्ष्वपि ॥६४६॥
इतं स्मृते गतेप्येतद्वाच्यवत्परिकीर्त्तितम्।
इतरः पामरेऽन्यस्मिन्वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ॥६४७॥
इति हेतौ प्रकारे स्यात्परकृत्यनुकर्षयोः।
निदर्शने प्रकरणे समाप्तौ च प्रकाशने ॥६४८॥
भवेदितिकथाऽपार्थवाच्यश्रद्धेयनष्टयोः।
इत्या स्त्रियां गतौ चैव शिविकायां च कीर्त्तिता ॥६४९॥
इत्वर्यसत्यां स्त्री त्रिस्तु गत्वरे क्रूरनीचयोः।
इदानीं वाक्यभूषायां सम्प्रत्यर्थेऽपि दृश्यते ॥६५०॥
इद्धं स्यादातपे क्लीबं दीपिते त्वभिधेयवत्।
इध्मवाहो दृढच्युन्नाम्न्यृषौ त्रि त्विध्मवाहके ॥६५१॥

इनो नृपात्मसूर्येषु त्रि तु स्वाम्याढ्ययोर्मतः ।
इन्दीवरा शतावर्यां स्त्री क्ली कुवलये भवेत् ॥६५२॥
इन्दुर्ना यज्ञशशिनोः स्त्रीकर्पूरेऽप्सु च स्मृतम् ।
स्त्रियामिन्दुकलाशब्दः कविभिः परिकीर्त्तितः ॥६५३॥
गुडूचीसोमलतयोर्यवानांचन्द्रलेखयोः ।
इन्दुकान्तश्चन्द्रकान्तेऽथेन्दुकान्ता निशि स्त्रियाम् ॥६५४॥
इन्दुजा नर्मदानद्यामिन्दुजः स्याद्बुधग्रहे ।
राकाभोजस्वसृनदीभेदेष्विन्दुमती मता ॥६५५॥
इन्दुलेखा स्मृता सोमलताशशिकलासु च ।
इन्द्रः पुरन्दरे सूर्ये सूर्येषु द्वादशस्वपि ॥६५६॥
स्याद्विशेषत एकस्मिन्योगभेदेऽन्तरात्मनि ।
विषभेदेऽश्मन्तके च पत्यौ स्यान्नामपूर्वकः ॥६५७॥
इन्द्रकोशो गृहस्याङ्गे स्यात्तमङ्गकनामनि ।
इन्द्रस्य कोशेऽपि स्पष्टं पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥६५८॥
स्यादिन्द्रमह इन्द्रस्योत्सवे ना द्वे पुनः शुनि ।
इन्द्रवृक्षस्तु ककुभे कुटजे देवदारुके ॥६५९॥
इन्द्रवृद्धिस्तु निर्मुष्कहये ना स्त्रीन्द्रसम्पदि ।
इन्द्रा तु कविभिः प्रोक्ता स्त्री फणिज्झकभेषजे ॥६६०॥
इन्द्राणी रतबन्धे स्त्री पौलोमी सिन्धुवारयोः ।
सूक्ष्मैलायां तथा स्थूलैलायामेषा क्वचिन्मता ॥६६१॥
क्लीबमिन्द्रायुधं शक्रचापइन्द्रायुधा पुनः ।
अचिकित्स्यविषायां स्यात्सविषाणां जलौकसाम् ॥६६२॥
षण्णामेकजलूकायां स्त्रियामश्वान्तरे पुनः ।
कृष्णनेत्रसमायुक्ते द्वयोरिन्द्रायुधो मतः ॥६६३॥
इन्द्रियं चेतसि धने हृषीके रेतसि स्मृतम् ।
अथाभिधेयवच्चैतदिन्द्रसम्बन्धिनि स्मृतम् ॥६६४॥
इन्धनं त्वग्न्यर्थकाष्ठे दीपनेऽपि नपुंसकम् ।
इभ्य आढ्ये त्रिष्वथेभ्या हस्तिवातिङ्गने भवेत् ॥६६५॥

तथा करेणुशल्लक्योस्स्त्रियामेव प्रयुज्यते ।
इरा दिवि च दैत्यान्ने तथा भूवाक्सुराम्बुषु ॥६६६॥
इरावा निरयायुक्ते वाच्यवत्स्त्री त्विरावती ।
नदीमात्रेऽपि बाह्लीकब्रह्मादितटिनीषु च ॥६६७॥
इरिणं त्रिषु शून्ये स्यादूषरे सिकतावति ।
क्लीबं त्विरिणमेतत्स्याद्दुर्गे तद्वद्वनेऽपि च ॥६६८॥
बुधपत्न्यामिलेडावन्नाडीभेदे च कीर्त्तिता ।
जनन्यां देवताभेदे भाभूगोस्वर्गवाक्ष्वपि ॥६६९॥
इल्वकं सामभेदे क्ली व्यापके त्वभिधेयवत् ।
इल्वका मृगशीर्षर्क्षे स्त्रियां काले च तद्युते ॥६७०॥
इल्वलः पुंसि यूपे द्वे त्विल्वलो मत्स्यरक्षसोः ।
मृगशीर्षशिरस्तारास्त्विल्वलाः कीर्त्तिताः स्त्रियः ॥६७१॥
इषिराग्नाविषौ साम्नश्चैषिराख्यस्य द्रष्टरि ।
नपुंसकं तु यवस इषिरे परिकीर्त्तितम् ॥६७२॥
इषीकास्तु नृभूम्नि स्युर्दक्षिणापथवर्त्तिनि ।
नीवृद्भेदे तृणस्तम्बे तूलिकायां त्वियं स्त्रियाम् ॥६७३॥
इषुः स्त्रीपुंसयोर्बाणे क्रतुभेदे तु पुंस्ययम् ।
विष्कुत्योस्तूभयोः स्त्रीत्व इषुरेषा प्रकीर्त्तिता ॥६७४॥
इष्टं त्रिष्वाशंसितेऽपि पूजितेऽपि प्रियेऽपि च ।
यागक्रियाकर्मभूते पर्याप्तेऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥६७५॥
अथेच्छायां च यजने यज्ञदाने नपुंसकम् ।
इष्टगन्धः सुगन्धौ स्यात्त्रिषु क्लीबं तु बालके ॥६७६॥
इष्टिर्मताऽभिलाषे स्त्री संग्रहश्लोकयोगयोः ।
कलत्रे त्वपरेऽथेष्वः पुंस्याऽऽचार्याभिलाषयोः ॥६७७॥
इष्वा स्त्री पुत्रसन्तत्यां कुटुम्बे चेति केचन ।
इष्वासस्त्वस्त्रियां चापे क्ली त्विषोरासने भवेत् ॥६७८॥
इषोः क्षेप्तर्य्ययं शब्दो वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ॥६७८½॥

ई

ई विषादेऽनुकम्पायां लक्ष्म्यां पुनरनव्ययम् ॥६७९॥
ईक्षणं नयने क्लीबं दृग्व्यापारेऽपि कीर्त्तितम् ।
ईडो ना देवताभेदे स्तुतौ त्वड्डी स्त्रियां क्षितौ ॥६८०॥
ईतिर्डिम्बे प्रवासे षट्स्वतिवृष्ट्यादिषु स्त्रियाम् ।
ईरिणं स्यादिरिणवत्त्रिषु शून्ये तथोषरे ॥६८१॥
सिकतावत्यपि क्लीबं तु स्याद्दुर्गे वनेऽपि च ।
ईशः शिवे प्रभौ च स्यात् समर्थे चापि वाच्यवत् ॥६८२॥
ईशानं ज्योतिषि क्लीबमीशानस्तु शिवे पुमान् ।
ईशाना स्वयमीशित्र्यामीशानी पुंयुजि स्त्रियाम् ॥६८३॥
ईश्वरस्त्रि प्रभौ चाढ्ये ना शण्डे शिवकामयोः ।
ईश्वरा स्वयमीशित्र्यां पुंयोगे त्वीश्वरी मता ॥६८४॥
ईश्वरप्रिय एष द्वे तित्तिरौ त्रीशवल्लभे ।
ईषको गन्तृहिंसितृद्रष्टृषूक्तोऽभिधेयवत् ॥६८५॥
ईषा स्त्री रथसीरादिदण्डके परिकीर्त्तिता ।
उक्ता प्रमाणभेदेऽपि चाष्टाशीतिशताङ्गुले ॥६८६॥
ईषिका हस्तिनो नेत्रकूटे स्त्री परिकीर्त्तिता ।
ईष्मो वायौ वसन्ते च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥६८७॥
ईस् दुःखभावने कोपे चाव्ययं परिकीर्त्तितम् ।
ईहा स्त्रियामुद्यमे च वाञ्छायामपि कीर्त्तिता ॥६८८॥
ईहामृगो वृके द्वे स्यात्पुंसि स्याद्रूपकान्तरे ॥६८८३॥

उ

उ सम्बोधनरोषोक्त्योरनुकम्पानियोगयोः ।
पदस्य पूरणे पादपूरणे चाव्ययं स्मृतम् ॥६८९॥
उः पुमानुच्यते विष्णौ शिल्प्योष्ठ्यस्वरे तथा ।
उक्ता स्त्र्येकाक्षरच्छन्दस्युक्तं स्याद्भाषिते त्रिषु ॥६९०॥

उक्थं नपुंसकं प्रोक्तं सामस्तोत्रेषु च त्रिषु ।
परेष्वग्निष्टोमसाम्न औक्थिक्ये सामलक्षणे ॥६९१॥
शस्त्राख्ययागमन्त्रेषु सामवेदे च साम्नि च ।
उक्षा पुंसि बलीवर्दे त्रिषूक्ष्णी महति स्मृता ॥६९२॥
उखः पुंसि स्फिचि परे कर्णपार्श्वेऽप्यधीयते ।
ओखीयान्तं च शाखायामृषिभेदे प्रवक्तरि ॥६९३॥
स्त्री तु स्थाल्यामुखा यज्ञविदा मुख्याऽग्निसंभृते ।
साधने चतुरस्रे च मृत्पात्रेऽग्निचयोचिते ॥६९४॥
उग्रः शिवे ना द्वे स्वोढशूद्रायां क्षत्रियात्सुते ।
विप्रात्सुपे च स्वोढायां शूद्रायामप्यथ स्त्रियाम् ॥६९५॥
उग्रं नपुंसके प्रोक्तं घटिकालवणे तथा ।
कालशेये च रौद्रे तु त्रिलिङ्गं परिकीर्त्तितम् ॥६९६॥
उग्रगन्धाऽजमोदायां वचायां छिल्लिकौषधौ ।
ना सिते लशुने चीर्णावृन्ताख्यफलवीरुधि ॥६९७॥
उग्रा वचा खराश्वाख्याजमोदाभेदयोर्मता ।
उचितन्तु स्वभावे क्ली निश्चिताभ्यस्तयोः पुनः ॥६९८॥
योग्ये चिरानुयाते च त्रिर्युक्तेऽनुमतेपि च ।
उच्चयो वस्त्रनीव्यां स्याद्धस्तादाने च चौर्यतः ॥६९९॥
अधःस्थितस्य पुष्पादेरुच्चयः परिकीर्त्तितः ।
उच्चलं त्र्युच्चलितरि क्ली चापान्तरचेतसोः ॥७००॥
उच्चिङ्गटस्तृणगडमत्स्ये द्वे कोपने त्रिषु ।
उच्चैःश्रवास्तु नेन्द्राश्वे घोटमात्रे तु स द्वयोः ॥७०१॥
उच्चकर्णे तु लिङ्गादिप्रयोज्यमभिधेयवत् ।
उच्छीतष्टिट्टिभे द्वे स्यात्स्वप्ने पुंसि प्रकीर्त्तितः ॥७०२॥
उच्छीर्षमुपबर्हे क्ली त्रिषु तूच्छिरसि स्मृतः ।
उच्छुनः पुंसि वैशाखे त्रि तूद्गतशुनादिके ॥७०३॥
उच्छ्रितं त्रिषु संजातप्रवृद्धोत्थापितोन्मते ।
उच्छ्वास आख्यायिकांशे प्राणनेऽपि पुमानयम् ॥७०४॥

उज्जटः शून्यदेशे त्रिस्तूर्ध्वीभूतजटादिषु ।
उज्जृम्भितं त्रिषूत्फुल्ले चेष्टायां तु नपुंसकम् ॥७०५॥
उज्ज्वलो दीप्तविशदविकाशिष्वभिधेयवत् ।
शृङ्गारे तु रसे प्रोक्तो नित्यं पुँल्लिङ्ग उज्ज्वलः ॥७०६॥
उज्झकः स्नेहशून्ये स्यादुज्झितर्यपि वाच्यवत् ।
उटजोऽस्त्री पर्णगृहे गृहमात्रेऽपि कीर्त्तितः ॥७०७॥
उडुर्विप्रे द्वयोरुक्तो नक्षत्रे नपूस्त्रियोर्भवेत् ।
उडुपोऽस्त्री प्लवे प्रोक्तश्चन्द्रे पुंसि प्रकीर्त्तितः ॥७०८॥
उड्डीशो ग्रन्थभेदे स्यात्पुंसि चण्डीपतावपि ।
उतप्रश्ने च वितर्के चाप्यव्ययं परिकीर्त्तितम् ॥७०९॥
उताऽत्यर्थे विकल्पे च तर्के प्रश्ने समुच्चये ।
उताहो इति संप्रोक्तं परिप्रश्नविचारयोः ॥७१०॥
उत्कटस्तूद्भटे मत्ते तीव्रेऽपि त्रिषु कीर्त्तितः ।
उत्कटं तु भवेत्क्लीबं योगिनामासनान्तरे ॥७११॥
उद्भटक्षीबयोस्त्वेतदुत्कटं त्रिषु कीर्त्तितम् ।
क्लीबमुत्कलिकं[1] चित्ते भवेदुत्कम्पिते[2] त्रिषु ॥७१२॥
कथितोत्कलिकोत्कण्ठाहेलासलिलवीचिषु ।
उत्कीर्णः स्यादुल्लिखिते ना पुर्याख्ये जलाशये ॥७१३॥
उत्कृष्टस्तु प्रकृष्टे स्यादूर्ध्वं नीते च वाच्यवत् ।
उत्क्षेपणं तूत्थिप्ते स्याद्व्यंजने धान्यमर्दने ॥७१४॥
उत्तंसः कर्णपूरेऽपि शेखरेऽपि च न स्त्रियाम् ।
उत्तप्तं शुष्कमांसे क्ली त्रिष्वेतत्तु प्रदीप्तयोः ॥७१५॥
उत्तमस्तिङ्विभक्तीनामन्तिमत्रितये त्रि तु ।
उत्कृष्टे दुग्धिकायां तु स्त्रियामेवोत्तमा मता ॥७१६॥
उत्तरं प्रतिवाक्ये क्ली ना विराटसुते तथा ।
निम्नादुत्तारणेऽथ स्त्री स्नुषायामर्जुनस्य च ॥७१७॥

---

१. उत्कलितम् इति पा० भे० । २. उत्कण्ठिते ।

उदीच्ये तूत्तमे चोर्ध्वे पुरे चैवोत्तरस्त्रिषु ।
स्यादुत्तराङ्गं द्वारस्य तिर्यङ्न्यस्तोर्ध्वदारुणि ।।७१८।।
यौगिकेऽर्थेऽस्य लिङ्गादि परिज्ञेयं प्रयोगतः ।
उत्तानं त्रिष्वनिम्ने स्यादूर्ध्वीकृतपुरोंऽशके ।।७१९।।
उत्ताल तु त्रिषूत्तान उन्नताचण्डयोरपि ।
उत्त्रासस्तु भये सप्तदशारत्नेररत्निके ।।७२०।।
यूपस्य मूलादारभ्य द्वितीयेऽपि पुमान्मतः ।
उत्थानमुद्गमे वास्तौ तन्त्रेहापौरुषेषु च ।।७२१।।
रणेऽङ्गणे च हर्षे च मलरोगे च मुस्तके ।
उत्थितं प्रोद्यते जाते वृद्धिमत्यपि वाच्यवत् ।।७२२।।
स्यादुत्पतनमुत्पत्तौ तथोर्ध्वगमनेऽपि च ।
उत्पलोऽस्त्री कुवलये क्लीबं कुष्ठाख्यभेषजे ।।७२३।।
उत्पली तुषचर्पट्यां स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
उत्पातः पुंस्यजन्ये स्यात्तथोत्पतनकर्मणि ।।७२४।।
उत्पिबो द्वे चकोराख्यपक्षिण्युत्पातरि त्रिषु ।
उत्प्रेक्षाऽनवधानेपि काव्यालङ्करणान्तरे ।।७२५।।
उत्फुल्लं करणे स्त्रीणां त्रिषूत्ताने विकस्वरे ।
उत्सो व्योम्न्यम्बुधौ कूपे जलाधारान्तरे पुमान् ।।७२६।।
उत्सङ्गोऽङ्के वाराणस्य पूर्वाग्रेर्यन्नखात्परम् ।
पिण्डिकान्तं विभक्तस्य सप्तधास्य चतुर्थके ।।७२७।।
अधः प्रारभ्य भागे चाग्न्याधानेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
उत्सर्गः पुंसि सामान्यन्याये च त्यागदानयोः ।।७२८।।
उत्सर्जनं तु दाने च परित्यागेऽपि कीर्त्तितम् ।
उत्सवो मह उत्सेकामर्षेच्छाप्रसरेषु च ।।७२९।।
उत्सादना नत्रोच्छेदोन्नत्योरुद्वर्त्तनेऽपि च ।
उत्साहोऽध्यवसाये ना सूत्रे च परिकीर्त्तितः ।।७३०।।
उत्साहनाऽङ्कार्थवाद्यघोषे प्रोत्साहने न ना ।
उत्साहा तु स्त्रियामारकूटलोहे प्रकीर्त्तिता ।।७३१।।

उत्सृष्टं त्रिषु दत्ते च त्यक्तेऽथो देवमारिषे ।
मारिषाख्यस्य शाकस्य भेदेप्युत्सृष्ट एष ना ॥७३२॥
उत्सेधो मकरच्छत्रध्वजोष्णीषतनूषु च ।
असोमदेववर्गस्य चतुर्थे साम्नि चोन्नतौ ॥७३३॥
उद्विभागे प्रकाशे च प्राबल्यास्वास्थ्यशक्तिषु ।
प्राधान्ये बन्धने भावे मोक्षे लाभोर्ध्वकर्मणोः ॥७३४॥
उदक् त्रिषूत्तरे दिग्देशकालविषये मतम् ।
उदङ्मुखेऽप्युदीच्ये स्त्री तूदीची यक्षराड्दिशि ॥७३५॥
प्रथमा पञ्चमी सप्तम्यर्थकं त्वेषु वाऽव्ययम् ।
उदकं तु भवेत्तोये ह्रीबेरेऽपि नपुंसकम् ॥७३६॥
छन्दोभेदेऽपि तत्प्रोक्तं तथैव द्विशतस्वरे ।
उदक्या ऋतुमत्यां स्त्री त्रि स्यादुदकसाधुनि ॥७३७॥
उदकार्हे प्रियाचारशूद्रे तु स्याद्द्वयोरयम् ।
उदञ्चस्तु पुमान्वाद्यदण्डे परभृते द्वयोः ॥७३८॥
उदञ्चनं क्ली स्थाल्यादिपिधाने स्यात्तथोद्गमे ।
स्त्रीनपुंसकयोस्तूर्ध्वं गमने स्यादुदञ्चना ॥७३९॥
उदन्तः पुंसि साधौ स्याद्वार्त्तायामप्युदीरितः ।
उदयस्तूदयाद्रौ स्याद्धनोत्पत्तौ तथोद्गमे ॥७४०॥
उन्नतावुपरिस्थेऽपि पूर्वराजान्तरेपि च ।
क्ली तूद्गतावुदयनं वत्सेशागस्त्ययोस्तु ना ॥७४१॥
क्लीबं तूदयनीयं यत् यज्ञकर्मान्तरे स्मृतम् ।
तद्योगादाहरादिष्वप्ययं शब्दः प्रकीर्त्तितः ॥७४२॥
उदरं तु न ना ज्ञेयं जठरे क्ली तु संयुगे ।
भवेदुदरथिः पुंसि समुद्रे च रवावपि ॥७४३॥
उदर्क एष्यत्कालीनफले मदनकण्टके ।
अन्तिमेऽवयवे चापि पुमानेष प्रकीर्त्तितः ॥७४४॥
उदर्चिरग्नौ त्रिपुनरुद्गतार्चिषि कीर्त्तितः ।
उदात्तो वागलंकारभेदे चोच्चैःस्वरे पुमान् ॥७४५॥

त्रिस्तूच्चैःस्वरयुक्ते स्याद्दयात्यागादिमत्यपि ।
उदानस्तूदरावर्त्ते वायुभेदे भुजङ्गमे ७४६॥
उदारो दातृमहतोस्त्रिषु दक्षे च विश्रुते ।
उदार एष कङ्गौ ना त्रिष्वग्राम्यमहात्मनोः ॥७४७॥
दानशौण्डे तथैतेषु स्त्र्यर्थे वृत्तिर्यदा तदा ।
उदारा चाप्युदारी चैतद्रूपद्वयं भवेत् ॥७४८॥
उदास्थितः पुमान्भिक्षुवेषधारिचरे मतः ।
शूरान्तरेऽपि द्वाःस्थे तु त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥७४९॥
उदितं कथितेऽपि स्यादुद्गतेप्यभिधेयवत् ।
उदीच्यं त्रिरुदग्जादौ ह्रीबेरे तु नपुंसकम् ॥७५०॥
उदुम्बरो जन्तुफले देहल्यां कुष्ठभिद्यपि ।
पण्डके तु पुमानेषोऽथ नृभूमन्युदुम्बराः ॥७५१॥
नीवृतः सालसंज्ञस्यावयवे क्षुद्रनीवृति ।
उदुम्बरं तु हेमाक्षे क्लीबं ताम्रे च कीर्त्तितम् ॥७५२॥
उदूखलं गुग्गुलौ स्यात्तथा क्लीबमुलूखले ।
उदूढं विपुले स्थूल ऊढे चाप्यभिधेयवत् ॥७५३॥
उद्गता विषमे वृत्तविशेषे स्त्री त्रि तूदिते ।
भावे क्तप्रत्यये त्वेतदुद्गमे स्यान्नपुंसकम् ॥७५४॥
उद्गातोच्चैर्गातरि त्रि पुमान्स्यादृत्विगन्तरे ।
उद्गीथ ऊर्ध्वास्यशुनां विरावे सामजातके ॥७५५॥
द्वितीयभक्तौ साम्नश्च पञ्चधा स्यात्कृतस्य सः ।
उद्ग्राहितमुपन्यस्ते त्रिर्बद्धे ग्राहितेपि च ॥७५६॥
उद्धः शस्ते देहपुटे देहवायावगौ तथा ।
उद्घनो यत्र निःक्षिप्य काष्ठे काष्ठस्य तत्क्षणम् ॥७५७॥
तत्रोद्गतघनादौ तु त्रिलिङ्गोऽयं प्रकीर्त्तितः ।
उद्घातो मुद्गरेऽपि स्यात्कुडङ्गे समुपक्रमे ॥७५८॥
चरणस्खलने चापि तथोद्घननकर्मणि ।
गजस्यमू कर्णलाच्च चूलिकासंज्ञकात्परे ॥७५९॥

प्रदेशे मानभेदे च प्राणायामस्य कालतः ।
यस्य लक्षणमित्युक्तं योगशास्त्रविशारदैः ॥७६०॥
चोटिकान्त्रिः परामृश्य जानुस्फोटक्रियाऽथ ताः ।
षट्त्रिंशन्मन्द उद्घातो द्विगुणत्रिगुणैः पुनः ॥७६१॥
मध्यमश्चोत्तमश्चैव प्रथमो द्वादशैव वा ।
उद्दण्डपालो न क्ली स्यात्सर्पमत्स्यप्रभेदयोः ॥७६२॥
उद्दन्तुरस्त्रिषूत्तुङ्गे करालोत्कटदन्तयोः ।
उद्दामो वरुणेनाऽथ त्रिरबद्धे विशृङ्खले ॥७६३॥
उद्दालस्तु भवेद्वृक्षे श्लेष्मातक इति श्रुते ।
उन्नते मुकुलाकारे मत्स्यग्रहणसाधने ॥७६४॥
स्यादुद्धननमुत्खातौ क्लीवं स्त्रीशण्डयोः पुनः ।
स्फ्यनामधेये कुद्दाले भवेदुद्धननीत्यसौ ॥७६५॥
स्यादुद्धरणमुद्धारे वान्ताऽन्नेप्यशितोज्झिते ।
उत्पाटनक्रियायां च नपुंसकमिदं मतम् ॥७६६॥
उद्धर्षस्तु महे पुंसि त्रिषु तूत्कटहर्षके ।
उद्धानमुद्गते त्रि स्यात् क्ली चुल्ल्यामुद्गमेपि च ॥७६७॥
उद्धार उद्धतावुक्त ऋणे चावृद्धिके पुमान् ।
उद्धृतं स्यात्त्रिषूत्क्षिप्ते परिभुक्तोज्झितेपि च ॥७६८॥
उद्बन्धः खनकाज्जाते क्षत्रियायां द्वयोर्मतः ।
उद्लम्बने ना तर्वादेर्विशेषाद्बन्धकारणे ॥७६९॥
उद्बुद्धस्तु भवेत्फुल्ले प्रबुद्धेऽप्यभिधेयवत् ।
उद्भित्तु सामभेदे क्ली स्यादुद्भिज्जे तु स त्रिषु ॥७७०॥
एकाहक्रतुभेदे तु पुमानुद्भित्प्रकार्त्तितः ।
उद्भिदं कूप्यलवणे क्लीवं ना तु जलोद्गमे ॥७७१॥
कूपादेस्त्रिषु तूद्भिज्जे तरुगुल्मादिवस्तुनि ।
उद्यानं संग्रहोद्गत्योर्वनभेदे प्रयोजने ॥७७२॥
तथा निस्सरणेत्येतन्नपुंसकमुदीरितम् ।
उद्र उद्री जले तौ द्वे ऋषिभेदे तु पुंस्ययम् ॥७७३॥

उद्वर्त्तनं न नाऽङ्गस्य मलोन्मर्दनकर्मणि ।
उद्वृत्तिहेतुव्यापारे क्लीबे तद्वृत्तिवाचकम् ॥७७४॥
उद्वान्तो निर्मदगजे पुमानुच्छर्दिते त्रिषु ।
उद्वासना वधेऽन्यत्र न्यासेऽन्यत्र स्थितस्य च ॥७७५॥
आवाहितस्य देवादेरुत्सर्जनविधावपि ।
उद्वाह ऊर्ध्ववहने विवाहे तनये पुमान् ॥७७६॥
उद्वाहनं प्रणीते स्याद्रज्ज्वामुद्वाहनी मता ।
उद्वेगं क्ली पूगफले पुमानुद्वेजने भवेत् ॥७७७॥
त्रिषु तूद्गतवेगादावुद्वेगः परिकीर्त्तितः ।
उन्नं स्यात्सुरते क्लीबं त्रिषु क्लिन्ने प्रकीर्त्तितम् ॥७७८॥
उन्निद्रस्तु भवेत्फुल्ले निद्राहीने च वाच्यवत् ।
उन्नेतो हितरि त्र्युन्नायेना ··· त्विगन्तरे ॥७७९॥
उन्मत्तः पुंसि धत्तूरमुचुकुन्दाख्यवृक्षयोः ।
फले तु क्लीबमनयोस्त्रि तून्मादवति स्मृतः ॥७८०॥
उन्मदस्तु पुमाञ्छूर्पे कच्छपे तु द्वयोरयम् ।
उन्माथः पुंसि हिंसायां कूटयन्त्रे च कीर्त्तितः ॥७८१॥
उन्मार्गे च ध्रुवे चायं त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
स्यादुन्मिषितमुन्मेषे त्रिस्तु सोन्मेषफुल्लयोः ॥७८२॥
उन्मीलनं स्यादुन्मेषे विकासे कुसुमस्य च ।
उन्मीलितं त्रि सोन्मेषे फुल्ले चोन्मीलने तु नप् ॥७८३॥
उप स्यादधिकाऽर्थे च हीनार्थासन्नयोरपि ।
उपकण्ठन्तु सामीप्यगुणे चास्कन्दिताभिधे ॥७८४॥
अश्वस्य गतिभेदेऽथ त्रि तद्वति समीपगे ।
उपकारस्तूपकृतौ विकीर्णकुसुमादिषु ॥७८५॥
त्रिषूपकारकः प्रोक्तः उपकारस्य कर्त्तरि ।
स्त्री तूपकारिका राजाऽऽवासे पिष्टान्तरेपि च ॥७८६॥
उपकार्या राजसद्मन्युपकारोचितेऽन्यवत् ।
स्मृतोपकुञ्चिका सूक्ष्मैलायां कृष्णे च जीरके ॥७८७॥

ना तूपकुर्वाणो ब्रह्मचारिभेदे त्रि यौगिके।
उपक्रमश्चिकित्सायामुपधारम्भयोरपि ॥७८८॥
उपायपूर्वेऽप्यारम्भे शरेपि परिकीर्त्तितः।
अङ्गीकृतावुपगमः समीपगमनेपि च ॥७८९॥
उपग्रहः पुमान्वन्द्यां ग्रहणेऽप्यनुकूलने।
स्यात्परस्मैपदेऽप्येष आत्मनेपद एव च ॥७९०॥
उपग्राह्यमुपादेये त्रि क्लीबं प्राभृते मतम्।
उपचर्या चिकित्सायां पूजायां च स्त्रियां मता ॥७९१॥
उपचार उपास्तौ च प्राभृतेऽपि पुमान्मतः।
विसर्जनीयस्य स्थाने सकारो यश्च तत्र च ॥७९२॥
भवेदुपचितं दग्धे समृद्धेऽपि तथा त्रिषु।
उपचित्रा पृश्निपर्ण्यां न्यग्रोधीसंज्ञगुल्मके ॥७९३॥
स्त्रीलिङ्गे नागदन्त्यां च योगार्थे त्वभिधेयवत्।
स्मृतोपजिह्विका वम्र्यां जिह्वारोगान्तरेऽपि च ॥७९४॥
उपतापो रोगतापत्वरासु परिकीर्त्तितः।
उपदंशो विदंशे च मेढ्ररोगान्तरेपि च ॥७९५॥
उपद्रवश्चतुर्थ्यां सामभक्तावप्युद्रुतौ।
मुख्यरोगानुगे रोगे उत्पाते च त्रिषु त्वयम् ॥७९६॥
उपयाते द्रवं क्ली तु द्रवस्य स्यात्समीपगे।
उपधाऽन्त्यादलः पूर्ववर्णे च सुपरीक्षणे ॥७९७॥
उपधानक्रियायां च छन्दनायामपि स्त्रियाम्।
उपधानमुपष्टम्भ उपष्टम्भनसाधने ॥७९८॥
उच्छीर्षकाख्यगण्डौ च प्रणये च विषे तथा।
उपधिः स्याद्रथस्याङ्ग औषधेयाभिधे पुमान् ॥७९९॥
उपधानक्रियायां च व्याजे चाऽयं प्रकीर्त्तितः।
उपधूपित आसन्नमरणे त्रि च धूपिते ॥८००॥
उपनाहस्तु वैरानुबन्धे वीणानिबन्धने।
पक्ष्मलोचनसन्धिस्थरोगभेदे च कीर्त्तितः ॥८०१॥

व्रणादेर्भेषजे बीजेऽप्ययं पुंसि प्रकीर्त्तितः ।
पुमानुपनिधिर्न्यासे धने च त्रि तु यौगिके ॥८०२॥
पूये तनौ तथा साम्नोर्यद्गानं यज्ञकर्मणि ।
तत्र चोपनिमन्त्रेऽपि नप् स्त्री चोपनिबन्धना ॥८०३॥
रहस्यार्थे तूपनिषद्धर्मवेदान्तयोः स्त्रियाम् ।
रहसीत्यपरे प्राहुः प्रथमर्त्तौ च योषिताम् ॥८०४॥
उपप्लवो विप्लवे चोपरागोत्पातराहुषु ।
अथोपमानमौपम्ये सादृश्यविषयिण्यपि ॥८०५॥
अथोपयमनं प्रोक्तं विवाहे स्वीकृतावपि ।
उपरः पुंसि मेघ्ये स्यादुपरा तु दिशि स्त्रियाम् ॥८०६॥
यूपस्य त्वक्षते मूल उपरं स्यान्नपुंसकम् ।
उपरक्तो भवेत्पुंसि राहुग्रस्ते तु सूर्ययोः ॥८०७॥
त्रि पुनर्व्यसनार्त्ते च जपापुष्पादिवस्तुनः ।
प्रभोपरञ्जिते द्रव्ये स्फटिकादौ च कीर्त्तितः ॥८०८॥
उपरागस्तु राहौ च सक्त्याख्यव्यसनेऽपि च ।
सूर्यचन्द्रग्रहेऽपि स्यादुपरक्ते च कीर्त्तितः ॥८०९॥
उपलो नाऽम्बुदे रत्नाश्मनोः स्यादुपलं नपि ।
उपलब्धिर्मतौ प्राप्तौ विज्ञानेऽपि स्त्रियां मता ॥८१०॥
उपला शर्करायां स्त्री दृषत्पुत्र्यां तथा दिशि ।
उपलिङ्गं तु उमरे त्रिस्तु लिङ्गोपगादिषु ॥८११॥
उपवर्त्तनमित्येतद्राष्ट्रेऽश्वलुठनेपि च ।
अथोपवसथः पुंसि मतो ग्रामोपवासयोः ॥८१२॥
भवेदुपशयः स्थाने यत्रावस्थाय लुब्धकाः ।
गूढात्मानो मृगा घ्नन्ति तत्र यूपे च याज्ञिकाः ॥८१३॥
एकादशकपक्षे यः शेते दक्षिणतो भुवि ।
दशानामपि यूपानां तत्रायुर्वेदिनः पुनः ॥८१४॥
औषधान्नविहाराणामुपयोगे सुखावहे ।
व्याधेः सात्म्यमितीदं च तत्पर्यायमधीयते ॥८१५॥

समीपशयने चापि विदन्ति विदितागमाः ।
उपसंग्रहणं पादग्राहणे नाऽभिवादने ॥८१६॥
उपेत्यसंग्रहे चापि नपुंसकमुदाहृतम् ।
उपसत्तिः सङ्गमात्रे सेवनेऽपि स्त्रियां मता ॥८१७॥
वाच्यवत्तूपसंपन्नं प्रमीतप्राप्तयोस्तथा ।
सुसंस्कृतौदनाद्ये च पर्याप्ते च प्रकीर्त्तितम् ॥८१८॥
उपसर्गः क्रियायुक्तप्रादौ संसर्ग एव च ।
उत्पाने रोगभेदे च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥८१९॥
उपसर्जनमित्येतद्यत्स्यात्प्रथमयोदितम् ।
उपसृष्टौ तथाद्याह निदाने च शिवस्तवे ॥८२०॥
समासशास्त्रे तत्र स्यादप्रधानेपि तत्तथा ।
उपसर्या तु सामान्यजनसेवन इष्यते ॥८२१॥
प्रजनप्राप्तकालायां गवि चैव प्रकीर्त्तिता ।
उपस्थोऽस्त्री भवेन्मेदे क्रोडे मदनमन्दिरे ॥८२२॥
उपस्पर्शस्तु संस्पर्शे स्नानाचमनयोरपि ।
स्यादुपस्पर्शनं स्पर्शे स्नानाचमनयोरपि ॥८२३॥
उपह्वरोऽस्त्री रहसि समीपेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
उपाकृतोऽध्वरहतपशौ नोपद्रुते त्रिषु ॥८२४॥
उपधिर्धर्मचिन्तायां कुटुम्बे व्यापृतेऽपि च ।
कार्यान्वयव्यवच्छेत्तर्यपि साध्येन या भवेत् ॥८२५॥
ससाधनाव्यापकत्वासमव्याप्तिकताऽत्र च ।
उपाध्यायोऽध्यापकेऽस्य पत्न्यां रूपद्वयम्भवेत् ॥८२६॥
उपाध्यायान्युपाध्यायी या त्वध्यापयति स्वयम् ।
उपाध्यायाऽप्युपाध्यायी द्विधा सा परिकीर्त्तिता ॥८२७॥
उपायः पर्वभेदे स्यात्पूर्वस्मिन्सामपर्वणाम् ।
निधनात्कर्मणां सिद्धेर्लघुमार्गणसाधने ॥८२८॥
राज्ञां च सामदानादौ विशेषाच्चोपसर्पणे ।
उपांशुर्जपभेदे स्यादुपांशु विजनेऽव्ययम् ॥८२९॥

उपासना न ना सेवाशराभ्यासान्तिकासने ।
उपाहितो नलोत्पाते पुमानारोपिते त्रिषु ॥८३०॥
उपेन्द्रः पुंसि विष्णौ स्यात्त्रिष्विन्द्रोपगते मतः ।
उपोढ ऊढे निकटे वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ॥८३१॥
उपोदका स्त्रियां शाकवल्लीभेदे सुताह्वये ।
अभिधेयवदेतच्च भवेदुपगतोदके ॥८३२॥
उभ्रस्त्रिः पेलवे चोद्र्ध्वस्थिते पुंसि तु वारिदे ।
उम् रोषेऽङ्गीकृतौ चापि प्रश्नेऽप्यव्ययमुच्यते ॥८३३॥
उमा शिवाऽतसीलक्ष्मीहरिद्राकीर्त्तिकान्तिषु ।
उरो वक्षसि मुख्ये च भवेत्सान्तं नपुंसकम् ॥८३४॥
उरस्यो ना स्तने द्वे त्वौरसापत्ये त्रिषु त्वयम् ।
उरोभवादावुरसा चैकदिक्के प्रकीर्त्तितः ॥८३५॥
उर्यूर्युररयूरुर्यूररयङ्गीकारे च विस्तृते ।
उरु त्रिषु स्यान्महति स्त्रियामुर्वीति तत्र वा ॥८३६॥
उर्वी पृथिव्यां नद्यां च स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
उरुक्रमः पुमान्विष्णौ त्रिलिङ्गस्तु महाक्रमे ॥८३७॥
उरुगायः पुमान्विष्णौ बहुगीते त्रिलिङ्गकः ।
उर्वरा तूर्वरीवत्सर्वसस्याढ्यक्षितौ क्षितौ ॥८३८॥
उर्वारुश्चिद्भटे ना स्त्री कर्कट्यां क्ली तयोः फले ।
उलपोऽस्त्र्यादिसर्गस्थभूतानामन्नभिद्ययम् ॥८३९॥
गुल्मिन्यां सलिले काष्ठेऽप्यूद्र्ध्वमूलाह्वये पुनः ।
स्तम्बभेदे कलापाख्यमुनेः शिष्यान्तरे च ना ॥८४०॥
उलूको द्वे काकशत्राविन्द्रेभरतयोधिनि ।
उलूखलं तु संधौ क्ली कक्षायां वङ्क्षणस्य च ॥८४१॥
उलूखला स्त्री त्वश्वस्य दन्तच्छिद्र उलूखली ।
पुमांस्तु व्रतिनो दण्ड उदुम्बरतरूद्भवे ॥८४२॥
उल्वो गर्भाशये न स्त्री शुल्वे तूल्बं नपुंसकम् ।
भूभेदे रजते सामभेदे यज्ञे तु पुंस्ययम् ॥८४३॥

संख्याज्ञाने विरहिते भवेदेष त्रिलिङ्गकः।
उल्मुकं स्यादलाते स्त्री पूर्वराजान्तरे तु ना ॥८४४॥
उल्लाघस्तु शुचौ कृष्णे दक्षनीरोगयोस्त्रिषु।
त्रिरुल्लिखितमुत्कीर्णेऽनुषक्ते च तनूकृते ॥८४५॥
उल्लेखनीयं कतकद्रावुल्लेख्ये तु वाच्यवत्।
उल्लोलः पुंसि कल्लोले भृशलोले तु भेद्यवत् ॥८४६॥
उशिक् पुमान्गौतमर्षौ पावकेऽपि पुमान्मतः।
उशिक् स्त्रियामुशीरेऽथ स्यान्मेधाविन्युशिक् त्रिषु ॥८४७॥
उषः प्रस्थचतुर्भागे कल्पे कामिनि गुग्गुलौ।
स्यात् क्षारमृत्तिकायां चन्दनाद्रौ श्रवाबिले ॥८४८॥
रन्ध्रमात्रे स्त्रियां तूषाऽनिरुद्धस्य भवेत्स्त्रियाम्।
सौरभेय्यां निशायां च निशान्तेऽव्ययमप्युषा ॥८४९॥
उषवस्तु मतो दाहे रवावपि तथा पुमान्।
उषो नपुंसकं सान्तं स्त्री च संध्याप्रभातयोः ॥८५०॥
उषितं न्युषिते दग्धे वाच्यवत्परिकीर्त्तितम्।
उष्ट्रिका मृत्तिकाभाण्डभेदेऽपि करभा स्त्रियाम् ॥८५१॥
उष्ट्री स्त्रियां स्यात्कर्कर्यामुष्ट्रः स्यात्करभे द्वयोः।
उष्णः पुंसि हुताशे स्याद्ग्रीष्मे शिग्रुमहीरुहे ॥८५२॥
क्ली तु वह्निगुणे त्रिस्तु तद्युक्ते चतुरेऽपि च।
उष्णवीर्यो जलकपौ द्वे योगार्थे तु लोकवत् ॥८५३॥
उष्णिका स्त्री यवाग्वां स्याद्दक्षे त्रिर्मत उष्णकः।
उष्णीषोऽस्त्री शिरोवेष्टे किरीटे लक्षणान्तरे ॥८५४॥
उष्मको ना निदाघे स्यात्त्र्यातुरे क्षिप्रकारिणि।
उस्रो वृषे च किरणेप्युस्राऽर्जुन्युपचित्रयोः ॥८५५॥

ऊ

ऊ वाक्यारम्भरक्षानुकम्पास्वव्ययमुच्यते।
ऊः स्त्रियां रक्षणे तृप्तौ प्रीतावनगतौ गतौ ॥८५६॥

वृद्धाववाप्तौ तृप्तौ च प्रवेशे श्रवणेच्छयोः ।
स्वाम्यसामर्थ्ययाच्ञासु क्रियायां भावहिंसयोः ॥८५७॥
आलिङ्गने च दहनेऽप्यर्थेष्वेकान्तविंशतौ ।
ऊकः किलिञ्जके राशौ राशिस्थाने पुमानयम् ॥८५८॥
ऊक ऊकीतिमिथुनं कीर्त्तितं पक्षिवाचकम् ।
ऊका तु जन्तौ प्रोक्ता स्त्री स्वेदजेऽस्थिविवर्जिते ॥८५९॥
ऊधः क्ली सान्तमापीने निशायां च प्रकीर्त्तितम् ।
पादभेदे च सामाख्यसाम्न ऊध उदाहृतम् ॥८६०॥
ऊधस्यं तु नपि क्षीरे त्रिषु तूधोभवादिके ।
ऊम् रुषोक्तौ च पृच्छायामव्ययं परिकीर्त्तितम् ॥८६१॥
ऊमोऽस्त्रियां पुरव्योम्नोः प्राणिन्येष त्रिलिङ्गकः ।
ऊरव्यश्चोरुजे वैश्ये द्वयोरूरुभवे त्रिषु ॥८६२॥
ऊर्गन्नान्नरसोत्साहबलेषु स्याच्चतुर्ष्वपि ।
ऊर्जस्तु कार्त्तिकोत्साहबलेषु प्राणनेपि च ॥८६३॥
ऊर्जस्वती स्त्री नद्यां स्यात्त्रिषु तूर्जस्वले भवेत् ।
ऊर्णा स्त्रियां कदल्यादेस्तन्तौ मेषादिलोम्नि च ॥८६४॥
प्रशस्तरोमावर्त्ते च भ्रूमध्यस्थेऽथ हिंसिते ।
ऊर्णस्त्रि हिंसने तूर्णं क्लीबलिङ्गं प्रकीर्त्तितम् ॥८६५॥
ऊर्णायुः स्याद्द्वयोर्मेषलूतयोर्ना तु कम्बले ।
मेषलोमकृते तद्वद्गन्धर्वे श्रुतिवर्णिते ॥८६६॥
ऊर्दरं स्यादावपने मेद्यलिङ्गं तु दुर्बले ।
ऊर्ध्वस्त्रितुङ्गोपर्यर्थोत्थितेष्वृष्यन्तरे तु ना ॥८६७॥
ऊर्ध्वमूलस्तम्बभेद उल्लूकाख्ये पुमान्मतः ।
ऊर्ध्वाङ्घ्रिवृक्षादौ त्वेष वाच्यवत्संप्रयुज्यते ॥८६८॥
ऊर्ध्वरूपक इत्येष हरिमन्थाख्यमुद्गके ।
प्रयोगमनुसृत्यास्य लिङ्गाद्यर्थे च यौगिके ॥८६९॥
ऊर्मिर्द्वयोस्तरङ्गेऽपि वेगवीचिप्रभासु च ।
वस्त्रसंकोचरेखायां वेदनोत्पीडयोरपि ॥८७०॥

क्षुत्पिपासाशोकमोहजरामृत्युषु चोच्यते ।
ऊर्मिका त्वङ्गुलीये स्याद्वस्त्रभङ्गतरङ्गयोः । ८७१॥
ऊवध्यं गुदवाते क्ली वृक्षादेश्च गदान्तरे ।
ऊषणो ना कटुरसे विज्ञेयस्त्रिषु तद्वति ॥८७२॥
क्लीबं तु मरिचे शुण्ठावृषणाख्ये च कर्मणि ।
ऊषणा तु स्त्रियामेषा पिप्पल्यां परिकीर्त्तिता ॥८७३॥
ऊषा रुजि स्त्रियामूषं लवणे क्लीबमौषरे ।
ऊषस्तु क्षारमृद्येष पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥८७४॥
ऊष्मा त्वौष्ण्यगुणे ग्रीष्मे वाष्पे शषसहेषु ना ।
ऊहा न क्ली विचारे स्यात्सामग्रन्थान्तरे तु ना ॥८७५॥

ऋ

ऋशब्दः स्त्र्यादितौ स्वर्गेऽथाव्ययं वाक्यगर्हयोः ।
ऋक् स्त्रियां पद्यमात्रेऽपि भारत्यामपि कीर्त्तिता ॥८७६॥
ऋक्षो द्वयोरच्छभल्ले ना गुडद्रौ च शोणके ।
इन्द्रिये तु मतं क्लीबं नक्षत्रे पुंनपुंसकम् ॥८७७॥
निर्लोम्नि तु त्रिॠक्षः स्यात्तथैव कृतवेधने ।
ऋक्षगन्धा तु शुक्लायां विदार्यां वृद्धदारके ॥८७८॥
ऋक्षरः कण्टकेऽपि स्याज्जलस्थाने तथर्त्विजि ।
ऋक्षरं वारिधारायां नपुंसकमुदाहृतम् ॥८७९॥
ऋच्छरा त्वङ्गुलौ ज्ञेया वेश्यायामपि च स्त्रियाम् ।
ऋजीकं क्ली भवेद्वज्रे ऋजीकऋषिभे पुमान् ॥८८०॥
ऋजीषं पिष्टपचनसाधनेऽग्नौ च वैद्युते[1] ।
ऋजुस्त्रिरव्युत्पन्ने त्रिगुणे वक्रेतरे बुधे ॥८८१॥
अंशौ ऋजुः पुमानेष कैश्चिदेव प्रयुज्यते ।
ऋज्जसानः श्मशाने च वारिवाहमहेन्द्रयोः ॥८८२॥

---

१. ऋजीषमेतद्वाचो यः संस्कारहीनः शब्दः—पुञ्जराज. वाक्य० १।१२

Aee उज्ज्वल उणा० ।

ऋतं नपुंसकं तोये शिलोञ्छे प्राप्तियज्ञयोः ।
गतौ सत्ये तद्वति तु त्रिषु प्राप्ते तथा ऋषौ ॥८८३॥
ऋतुर्वसन्तादिषट्के पुमान्मासि च कीर्त्तितः ।
गर्भग्रहणयोग्ये च काले स्त्रीणां रजस्यपि ॥८८४॥
ऋद्धमावसिते धान्ये समृद्धे क्ली समर्धने ।
ऋद्धिः स्वनाम्नि वृद्ध्याख्ये चौषधे स्त्री च संपदि ॥८८५॥
ऋभुर्द्वयोः सुरेऽथैष विदुषि स्यात्त्रिलिङ्गकः ।
पुमांस्तु ब्रह्मपुत्राणां सनकादिकयोगिनाम् ॥८८६॥
ज्येष्ठे नारायणे चैव किरणे जलदेऽपि च ।
ऋश्यः पुंस्यृषिभेदे स्यान्मृगजात्यन्तरे द्वयोः ॥८८७॥
ऋश्यजिह्वं तु कुष्ठाख्यव्याधिभेदे नपुंसकम् ।
समासे त्वस्य लिङ्गादि समुन्नेयं प्रयोगतः ॥८८८॥
ऋषभो वृषभे कर्णरन्ध्रे षड्जादिमध्यगे ।
संगीतस्वरभेदे च मत्तेभे च जिनान्तरे ॥८८९॥
एकाहक्रतुभेदे च सामभेदेषु केषुचित् ।
सूकरस्य च नक्रस्य पुच्छे शृङ्गाख्यभेषजे ॥८९०॥
ऋषभध्वज एष स्याच्छङ्करे चार्हदन्तरे ।
श्रेष्ठे च ऋषभा तु स्त्री स्यान्नराकारयोषिति ॥८९१॥
शूकशिम्ब्या शिरालायां विधवायां तथा मता ।
ऋषिर्वेदे वसिष्ठादौ चक्षुरादीन्द्रियेषु च ॥८९२॥
ज्ञानवृद्धे क्षपणके दीधितौ च पुमानयम् ।
ऋषिसृष्टा ऋद्धिनाम्नि भेषजे त्रि तु यौगिके ॥८९३॥
ऋष्यप्रोक्ता शतावर्यामृद्धिसंज्ञे च भेषजे ।
आत्मगुप्तातिबलयोरोषध्योश्च स्त्रियामियम् ॥८९४॥
ऋष्वो महति हिंस्रे च त्रिररातौ तु पुंस्ययम् ॥८९४½॥

ॠ

ॠ वाक्योपक्रमत्राणे वक्षःस्मृत्योस्त्वनव्ययम् ॥८९५॥

ऌ

ऌकारो देवताम्बायां भुवि कुध्रे च कीर्त्तितः ॥८९५½॥

ॡ

ॡकारो देवनार्यां स्यादात्मन्यपि च मातरि ॥८९६॥
देवाम्बायां दनौ चापि भैरवे दनुजे गतौ ॥८९६½॥

ए

ए स्मृतावप्यसूयानुकम्पामन्त्रणहूतिषु ॥८९७॥
एकं त्रि मुख्यप्रथमसमानान्याऽल्पके बले ।
नित्यैकवचनस्त्वाद्यसंख्यासंख्येययोरयम् ॥८९८॥
पुंस्येककुण्डलः प्रोक्तो बलभद्रे धनाधिपे ।
प्रयोगमनुसृत्यास्य लिङ्गयोगार्थ इष्यते ॥८९९॥
एकदृङ् ना यमे काके तु द्वयोस्त्रिस्तु काणके ।
एकदेशस्त्ववयवे यौगिके तु स लोकवत् ॥९००॥
स्त्रियामेकपदी मार्गे यौगिकाऽर्थे तु लोकवत् ।
एदन्तं त्वव्ययं सद्योऽर्थे स्यादेकपदे इति ॥९०१॥
एकाक्षो वाच्यवत्काणे वायसे तु द्वयोर्मतः ।
एकाक्षीला तु पाठायां शिवमल्ल्यां तु पुंस्ययम् ॥९०२॥
एकाग्रमेकताने ना कुले स्वार्थे च वाच्यवत् ।
एकाङ्ग एकावयवे त्रि पुंसि तु बुधग्रहे ॥९०३॥
एकादशः पूरणे त्र्येकादशी तु हरेस्तिथौ ।
तथैकादशतन्त्रीके वीणाभेदेऽपि कीर्त्तिता ॥९०४॥
एकायनं त्रिष्वेकाग्रेऽथ स्यादेतन्नपुंसकम् ।
शास्त्रे भागवतानां यत्कर्म्मारेष्वेव विश्रुतम् ॥९०५॥
एकायनगतस्तु स्यादेकाग्रेऽप्येकमार्गके ।
एकाहमेकदिवसे क्लीबं पुंस्यध्वरेऽव्ययम् ॥९०६॥

ज्योतिष्टोमादिकेष्वेकदिनसाध्येषु कीर्त्तितः ।
त्रिः कुत्सितादिवधिरे स्यान्मेषे त्वेडकाद्वयोः ॥९०७॥
एडमूकोऽन्यलिङ्गः स्याच्छठे वाक्श्रुतिवर्जिते ।
एणीकृतो वर्णदोषे पुंसि तद्वति तु त्रिषु ॥९०८॥
आपादितैणभावे च क्ली त्वेणीकरणे स्मृतम् ।
एतः स्यात्कर्बुरे पुंसि त्रि त्वेनी तद्वति स्मृता ॥९०९॥
आगते तु त्रिलिङ्गैता क्लीबं स्यादेतमागते ।
एतशः पुंसि चन्द्रेन्द्रर्त्विक्षु द्वे तु तुरङ्गमे ॥९१०॥
एतशास्त्वश्मनि द्वे ना त्वग्नौ ब्रह्मणि होतरि ।
एधतुस्तु स्त्रियां लक्ष्म्यां ना त्वग्नौ पुरुषेऽपि च ॥९११॥
एधितो ना गिरिसरिद्वाहे क्लीबं वने भवेत् ।
एधितुः पावके शैले सागरेऽपि पुमान्मतः ॥९१२॥
एनः पापेऽपराधे च सान्तं क्लीबमुदाहृतम् ।
एलकस्त्र्येलितर्युक्तः पुमान्नारङ्गपादपे ॥९१३॥
एवौपम्ये नियोगे चावधारे वाक्यपूरणे ।
भवेदव्ययमाचारनियोगे च विनिग्रहे ॥९१४॥
एवंप्रकारे निर्लिङ्गमङ्गीकारेऽवधारणे ।
अनुप्रश्ने परकृतावुपमापृच्छयोरपि ॥९१५॥
एषणः पुंसि नाराचे नाराच्यां त्वेषणी स्त्रियाम् ।
व्रणमार्गानुसारिण्यां विशेषात्परिकीर्त्तिता ॥९१६॥
कुस्तुम्बुर्यामेषणाऽथैषणमप्येषणेच्छतेः ।
ण्यन्तादेकं त्वेषणं तदिच्छायां परिकीर्त्तितम् ॥९१७॥

ऐ

ऐशब्दो दृश्यते हूतौ स्मृत्यामन्त्रणयोरपि ।
ऐन्द्रिरिन्द्रसुते कृष्णकाकेऽपि कथितो द्वयोः ॥९१८॥
ऐन्द्री पूर्वदिशि स्त्री स्याद्विशालानाम्नि भूरुहि ।
त्रि त्विन्द्रयोगिनि पुमान्सर्वयज्ञ क्रतुष्वयम् ॥९१९॥

ऐमः पुमान्हस्तिकर्कोटकवल्ल्यां प्रकीर्त्तितः ।
तत्फले क्लीबमैनी तु त्रिषु स्यादिभयोगिनि ॥९२०॥
ऐरावतोऽभ्रमातङ्गे नारङ्गे लकुचद्रुमे ।
नागभेदे च पुंसि स्यात्क्लीनारङ्गफलेऽपि च ॥९२१॥
लकुचस्य फले तद्वदृजुदीर्घेन्द्रकार्मुके ।
अश्विन्याद्यृक्षनवकक्लृप्तवीथीत्रयात्मनः ॥९२२॥
देवयानाध्वनः खस्थे स्थानेऽथैरावती स्त्रियाम् ।
वीथ्यां पुनर्वस्वाद्यैश्च क्लृप्तायामुडुभिस्त्रिभिः ॥९२३॥
विद्युत्तद्भेदयोश्चापि योगार्थे त्वभिधेयवत् ।
ऐश्वरं क्ली चतुर्हस्तप्रमाणे त्रीश्वराश्रिते ॥९२४॥

ओ

ओ संबोधन आह्वाने सारणे चानुकम्पने ।
ओकः सान्तं जलौकायां क्लीबं मन्दिर आश्रमे ॥९२५॥
ओघः परम्परायां स्याज्जलस्रोतसि संचये ।
महाजलसमूहे च वाद्यादिद्रुतवर्त्तने ॥९२६॥
ओजो दीप्ताववष्टम्भे प्रकाशबलयोरपि ।
जले नपुंसकं सान्तं काव्यस्य च गुणान्तरे ॥९२७॥
अदन्तमपि सान्तं वा राश्यादौ विषमे त्रिषु ।
ओड्रस्तु तरुभेदे ना प्रसवेऽस्य नपुंसकम् ॥९२८॥
ओड्रा औड्राश्च पुंभूम्नि भवेयुर्नीवृदन्तरे ।
ओतुर्द्वयोः स्यान्मार्जारे क्लीबं सामान्तरे स्मृतम् ॥९२९॥
ओदनोऽस्त्री भवेदन्ने क्ली मेघे काञ्जिके पुमान् ।
ओदनीति स्त्रियामेषा बलायां परिकीर्त्तिता ॥९३०॥
ओम्मङ्गले च प्रणवेऽपाकृतावप्युपक्रमे ।
तथाभ्युपगमे चैतदव्ययं चेशवाचकम् ॥९३१॥
ओलकस्तु पुमाञ्छाके काणमारिषसंज्ञके ।
सितोपलाविशेषे च करकायां च कीर्त्तितः ॥९३२॥

ओलिका धान्यभेदे स्यादियं नीवारसंज्ञके ।
ओल्लस्तु सूरणे पुंसि स्यादार्द्रे वाच्यलिङ्गकः ॥९३३॥
ओषो दाहे भवेत्पुंसि क्षिप्रे तु त्रिषु कीर्त्तितः ।
ओष्ठी रक्तफलावल्ल्यामोष्ठो दन्तच्छदे पुमान् ॥९३४॥

औ

औ त्वेतत्कथितं हूतौ तथा संबोधनेऽव्ययम् ।
स्त्री तु विश्वम्भरायां स्यान्निःस्वने पुंसि कीर्त्तितः ॥९३५॥
औचित्यमुचितत्वे स्यात्सत्यंऽपि च नपुंसकम् ।
औजसं काञ्चने क्लीबमोजःसम्बन्धिनि त्रिषु ॥९३६॥
औदुम्बरं कुष्ठरोगभेदे ताम्रेऽपि नप्यथ ।
यमे च वानप्रस्थे ना तस्मिन्यस्तुर्यकालभुक् ॥९३७॥
षण्माससंग्रही चाऽपि योगाऽर्थे त्वभिधेयवत् ।
औदुम्बरायणऋषिभित्कृतोद्वाहविप्रयोः ॥९३८॥
औपरिष्टकमित्येतत्कामशास्त्रक्रियान्तरे ।
ऊर्ध्वजे तु त्रिलिङ्गोऽयं शब्दः संपरिकीर्त्तितः ॥९३९॥
औग्भ्रो मेषसंबद्धे त्रि पुमान्मेषकम्बले ।
औरसो द्वे निजे पुत्रे पुँल्लिङ्गः सूक्ष्मनीरके ॥९४०॥
उरःसम्बन्धिनि त्वौरसी लिङ्गत्रितये मता ।
और्वो ना वडवाग्नौ स्यादूर्वसम्बन्धिनि त्रिषु ॥९४१॥
और्वशेयोऽगस्त्यमुनौ द्वयोस्तूर्वश्यपत्यके ।
औशीरं चामरे शय्यासने दण्डेऽप्युशीरजे ॥९४२॥

क

को ब्रह्मणि समीरात्मयमदक्षेषु भास्करे ।
किं सर्वनाम्नः क इति रूपं प्रश्नादिवाचकम् ॥९४३॥
पतत्रिपार्थिवे पुंसि कामग्रन्थौ च चक्रिणि ।
मयूरेग्नौ नगे देहे शब्दबुद्धिमनःस्वपि ॥९४४॥

कं तु क्लीबं सुखशिरः सलिलेषु प्रकीर्त्तितम् ।
ककुदं कल्युन्नते श्रेष्ठे राजलक्ष्मवृषांसयोः ॥९४५॥
स्त्री तु दक्षस्य पुत्र्यां स्याद्भार्या धर्मस्य याऽभवत् ।
ककुदो स्त्री बलीवर्दस्कन्धयोर्मध्य उन्नते ॥९४६॥
प्रधाने राजचिह्ने च हस्तिमेद्रेऽश्वभान्तरे ।
ककुदी तु पुमान्षण्डे ककुदेन युते त्रिषु ॥९४७॥
ककुद्मान्वृषभे पण्डे पर्वते ऋषभौषधे ।
ककुद्मती स्त्रीश्रोण्यां च छन्दोभेदे च कीर्त्तिता ॥९४८॥
ककुद्मी वृषभे षण्डे गुरौ विष्णौ नृपान्तरे ।
ककुद्वान्वृषभे प्रद्युम्नपत्न्यां तु ककुद्वती ॥९४९॥
ककुबुष्णिग्दिशोषे स्त्री भूभृतः शिखरे दिशि ।
तथा प्रवेण्यां शोभायां भारत्यां चम्पकस्रजि ॥९५०॥
स्यादथैकान्नपञ्चाशद्रात्रे सत्रे च भूमनि ।
शास्त्रे च रागिणीभेदे दक्षस्य दुहितर्यपि ॥९५१॥
ककुभोऽर्जुनवृक्षेऽपि रागभेदे प्रसेवके ।
कक्खटी खटिकायां स्त्री कक्खटः कठिने त्रिषु ॥९५२॥
कक्षः स्पर्धापदे बाहुमूले दुर्गे तृणे वने ।
कच्छे वीरुधि कक्षा तु स्त्र्यन्तरीयपराञ्चले ॥९५३॥
केचित्तु बाहुमूलेऽपि कक्षां स्त्रियमधीयते ।
कक्ष्या बृहतिकायां स्यात्काञ्च्यां मध्येभबन्धने ॥९५४॥
अविशेषाद्वरत्रायां साम्ये गेहप्रकोष्ठके ।
पार्श्वाद्यङ्गसमुद्भूतरोगभेदेऽङ्गुलावपि ॥९५५॥
कक्ष्यापालस्त्वौपरिके शूरपाले भवेत्त्रिषु ।
कक्ष्यावेक्ष्यक इत्येष शुद्धान्तोद्यानपालयोः ॥९५६॥
रङ्गाजीवे कवौ षिङ्गे द्वाःस्थे चैव प्रकीर्त्तितः ।
कङ्को यमे छद्मविप्रे ना द्वयोर्लोहपृष्ठके ॥९५७॥
कङ्कटः पुंसि कवचे चाऽङ्कुशेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
कङ्कणं करभूषायां सूत्रे भूषणमात्रके ॥९५८॥

कङ्कणी तु स्त्रियां क्षुद्रघण्टिकायां प्रकीर्त्तिता ।
कङ्कणीका प्रतिसरे घण्टाजाले तु पुंस्ययम् ॥९५९॥
कङ्कती तु त्रिलिङ्गेऽयं केशमार्जनके भवेत् ।
द्वे त्वेकस्यां तासां याश्चतस्रः काकजातयः ॥९६०॥
कङ्कपत्रो वाणभेदे यौगिके लिङ्गमर्थतः ।
ना संदंशे कङ्कमुखो यौगिके लिङ्गमर्थतः ॥९६१॥
नियुतानां शते तक्रे कङ्करं त्रि तु कुत्सिते ।
कङ्गुः प्रियङ्गुके कङ्गुधान्ये ना कंससोदरे ॥९६२॥
कचः केशे गुरोः पुत्रे बन्धे शुष्कव्रणेऽपि ना ।
नृजातिभेदे शतकीक्षत्रियप्रभवे द्वयोः ॥९६३॥
कचपोता तिले पत्रे तथा शाकपलालयोः ।
कचा करिण्यां शोभायां स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥९६४॥
कचाकुस्तु दुराधर्षे दुःशीले च बिलेशये ।
कचरं कुत्सिते वाच्यलिङ्गं तक्रे नपुंसकम् ॥९६५॥
कच्चित्प्रश्ने मङ्गले च हर्षे कामप्रवेदने ।
कच्छोऽनूपे तुन्नकद्रौ पार्श्वे गुह्याम्बरे तथा ॥९६६॥
नान्दीवृक्षे च नौकाङ्गे कूर्माङ्घ्रौ स्थावरान्तरे ।
स्त्री वाराहीचीरिकयोर्नीवृद्भेदे नृभूमनि ॥९६७॥
कच्छपो द्वे भवेत्कूर्मे मल्लबन्धान्तरे निधौ ।
स्त्री कच्छपी सरस्वत्या वीणायां क्षुद्ररुग्भिदि ॥९६८॥
कच्छघ्नी तु पटोले स्त्री तथैव हपुषान्तरे ।
कच्छरा स्त्री यवासे च तथा शाद्यात्मगुप्तयोः ॥९६९॥
पामाभिस्तु युते तद्वत्पुंश्चले कच्छुरस्त्रिषु ।
कजं नपुंसकं पद्मे पीयूषे च प्रकीर्त्तितम् ॥९७०॥
कज्जलं त्वञ्जने कंसोत्पलाख्ये च वनोत्पले ।
कज्जलः स्यात्पुमान्मेघे कज्जली तु पराञ्जने ॥९७१॥
गन्धके मिश्रितरसे तथा स्त्री परिकीर्त्तिता ।
कज्जला कज्जलीत्येतद्द्वयं मीनान्तरे मतम् ॥९७२॥

कञ्चुकोऽस्त्री वारवाणे निर्मोके करभेऽपि च ।
वर्धापकगृहीताङ्गस्थितवस्त्रे च चोलके ॥९७३॥
स्त्रियामोषधिभेदे च क्षीरीशद्रौ च कञ्चुकी ।
कञ्चुकी तु द्वयोः सर्पे त्रिस्तु कञ्चुकसंयुते ॥९७४॥
ना विटेऽन्तःपुराध्यक्षे जोङ्गके चणकेपि च ।
कञ्जः केशे विरिञ्चे ना कञ्जं त्वमृतपद्मयोः ॥९७५॥
कञ्जनः कामदेवे ना द्वयोर्मदनपक्षिणि ।
कञ्जरो जठरे सूर्ये विरिञ्चे वारणे मुनौ ॥९७६॥
कञ्जारस्तु गृहे गूढे मणौ ना त्रिस्त्वशोभने ।
कटो ग्रामादिपर्यन्ते किलिञ्जगजगण्डयोः ॥९७७॥
शवे शवरथे श्रोणिफलके कालकूटके ।
वलये समये नाऽथ लवणेऽब्धिभवे नपि ॥९७८॥
स्त्री कटी श्रोणिपिप्पल्योश्चापाग्रेऽथ भृशे त्रिषु ।
कटकोऽस्त्री नितम्बेद्रेर्दन्तिनां दन्तमण्डने ॥९७९॥
सामुद्रलवणे राजधान्यां बलयसैन्ययोः ।
हस्तमुष्टौ तु पुंसि स्यात्स्त्रियां तु कटिका कृते ॥९८०॥
सूत्रस्यूतशलाकाभिरायुधस्य निवारणे ।
परिमण्डलसंस्थानद्रव्ये संपरिकीर्त्तिता ॥९८१॥
कटखादक इत्येष बलिपुष्टे च जम्बुके ।
खादके काचकलशे पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥९८२॥
कटप्रूर्ना शिवे विद्याधरराक्षसभेदयोः ।
तथाक्षदेवने स्त्री तु भवेत्खेलगतावियम् ॥९८३॥
कटभङ्गस्तु सस्यानां हस्तच्छेदे नृपात्यये ।
कटभी वृक्षभेदेऽपि ज्योतिष्मत्यामपि स्त्रियाम् ॥९८४॥
कटम्बो वाद्यभेदेऽपि शरेऽपि च पुमानयम् ।
कटम्भरः स्यात्श्योनाके कटभ्यामपि चेष्यते ॥९८५॥
कटम्भरा प्रसारण्यां रोहिण्यां गजयोषिति ।
कलविङ्क्यां च गोलायां वर्षाभूमूर्वयोरपि ॥९८६॥

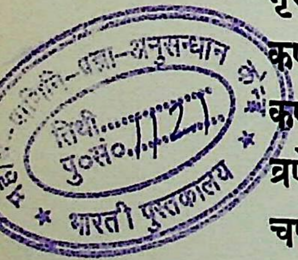
कटहः कर्णव्रति ना कालायसविनिर्मिते ।
जलपात्रे तथैवाऽयं पर्जन्येऽपि प्रकीर्त्तितः ॥९८७॥
कटाहो द्वीपभेदेऽपि तैलादेः पाकभाजने ।
तिर्यच्छृङ्गे च महिषी तर्णके कर्मकर्परे ॥९८८॥
कटिः श्रोणौ कटी च स्त्री पिप्पल्यां चोच्यते कटी ।
कटित्रं रशनायां च दन्तमूले च दन्तिनाम् ॥९८९॥
कटुः स्त्री कटुरोहिण्यां लताराजिकयोरपि ।
कटुस्तु गुग्गुलौ पुंसि लशुने टङ्कने तथा ॥९९०॥
ऊषणाख्ये रसे चापि गन्धे सौरभ्यनामनि ।
त्रिस्तूक्तगन्धरसयोरेकयुक्ते समत्सरे ॥९९१॥
तीक्ष्णकार्यप्रियेषु क्ली शुण्ठौ च मरिचेपि च ।
कटुका कटुरोहिण्यां व्योषे तु कटुकं मतम् ॥९९२॥
कटुकन्दः पुमान् शिग्रौ शृङ्गवेररसोनयोः ।
कटुग्रन्थिर्भवेच्छृङ्गबेरपिप्पलिमूलयोः ॥९९३॥
कटुतिक्तस्तु भूनिम्बे शोणेऽपि च पुमान्मतः ।
कटुतुम्ब्यां स्त्रियामेषा कीर्त्तिता कटुतिक्तिका ॥९९४॥
कटूत्कटं तु क्ली व्योषेऽप्यार्द्रके त्रि तु यौगिके ।
कट्वङ्गः पक्षिभेदे द्वे ना टुण्टुद्रुदिलीपयोः ॥९९५॥
कठो मुनौ तदाख्यातवेदाध्येतृकयोः स्वरे ।
कठारस्तु भवेत् पिङ्गे शिल्पिन्यपि च पुंस्त्रियोः ॥९९६॥
कठिनं निष्ठुरे स्तब्धे त्रिषु स्थाल्यां तु नप् स्मृतम् ।
कठिनी खटिकायां स्त्री कठिना गुडशर्करा ॥९९७॥
कठिल्लकं कारवेल्लफले ना तु कठिञ्जरे ।
पुनर्नवायां रक्तायां कारवेल्ले कठिल्लकः ॥९९८॥
कडत्रवत्तु क्लीबे स्यात्कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ।
कडत्रन्तु नृपादीनां दुर्गस्थानेऽपि कीर्त्तितम् ॥९९९॥
कडम्बो व्यञ्जनीभूतशाकनाले द्रुमान्तरे ।
कदम्बे तु मतं क्लीबं प्रसवे तस्य शाखिनः ॥१०००॥

कडारं तु जले क्लीबं रूक्षताशूलयोस्तु ना।
तथा कपिलवर्णे च तद्युक्ते त्वभिधेयवत् ॥१००१॥
विषमीभूतदशने निःसारे द्वे तु दासके।
कणोऽतिसूक्ष्मे बाणे च तण्डुलावयवे च ना ॥१००२॥
अपसक्तुषु पुंभूम्नि तदेकावयवेऽन्यथा।
कणा जीरककुम्भीरमक्षिकापिप्पलीषु च ॥१००३॥
सूक्ष्मे च जीरके द्वे तु निषादाद्द्रमिडीसुते।
कणपः शरभेदे च क्रतुभेदे पुमान्मतः ॥१००४॥
कणिका तिलमण्डे च गोधूमे तस्य चूर्णके।
कणे चैवाऽग्निमन्थे च स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ॥१००५॥
कणिकः पटवासे ना कणिका स्त्री वनस्पतेः।
बीजेऽथ सा भवेद्भिन्नतण्डुलावयवे द्वयोः ॥१००६॥
कणीचिः स्त्री लतायां च मनस्यश्वे तु सद्वयोः।
कणीची पुष्पितलतागुञ्जयोः शकटे स्त्रियाम् ॥१००७॥
कणे रेभ्यां च वेश्यायां कणेरः कर्णिकारके।
कणेरुः कर्णिकारे च करिणीवेश्ययोः स्त्रियाम् ॥१००८॥
कण्टकोऽस्त्री वृक्षसूचौ रोमाञ्चे क्षुद्रविद्विषि।
नैयोगिकादिदोषोक्तौ वेणौ मत्स्यादिकीकसे ॥१००९॥
कण्टकद्रुम इत्येष शाल्मलौ कण्टकिद्रुमे।
कण्टका कण्टकमुखे स्त्रियां कीटान्तरे मता ॥१०१०॥
कण्टकिन् तु त्रिलिङ्गोऽयं कीर्त्तितः कण्टकान्विते।
स्यात्कण्टकिफलः पुंसि पनसे गोक्षुरेपि च ॥१०११॥
कण्टकी नारिमेदाख्ये मदनाख्ये च पादपे।
कण्टिका त्वनुवाकाख्ये ग्रन्थस्यांशे स्त्रियां मता ॥१०१२॥
कण्ठो गलेऽन्तिके पुंसि ध्वनौ मदनपादपे।
कण्ठाला तु द्वयोर्द्रोणाप्रभेदे ना क्रमेलके ॥१०१३॥
कण्डारं रक्तपद्मे क्ली नावर्णे सितकाचरे।
त्रिस्तु तद्वति वर्णश्च काचरः कृष्णधूमलः ॥१०१४॥

कण्डुरः कुन्दरकणे कारवेल्ले च सूरणे ।
कण्डुराऽत्यम्लपर्ण्यां चात्मगुप्तायामपि स्त्रियाम् ॥१०१५॥
कण्डूघ्न आरग्वधेऽपि तथा स्याद्गौरसर्षपे ।
कण्डूलः सूरणे पुंसि त्रि तु कण्डूप्रयोजके ॥१०१६॥
कण्वं पर्वणि भूषायां पापे मुन्यन्तरे तु ना ।
बधिरे तु त्रिलिङ्गोऽयं मेधाविनि च कीर्त्तितः ॥१०१७॥
कतस्तु कतके ऋष्यन्तरे चाथ कतं जले ।
कत्तृणं तृणभित्पृश्न्योः कुब्यां चैव नपुंसकम् ॥१०१८॥
कथं कथाप्रकारार्थे हर्षे प्रश्ने च संभ्रमे ।
संभावनायां गर्हायां चाऽव्ययं परिकीर्त्तितम् ॥१०१९॥
कथाऽऽख्याने च कथनेऽव्ययं तु कथमर्थकम् ।
कथाप्रसङ्गो वार्त्तायां पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥१०२०॥
कथाप्रसङ्गस्तु भवेद् वैद्यवातूलयोस्त्रिषु ।
कथेरः शकुनौ द्वे त्रिः कथके कुहकेपि च ॥१०२१॥
कदनं मर्दने पापे क्लीबं स्यान्मारणे रणे ।
कदम्बः सर्षपे नीपे माक्षिके देवताडके ॥१०२२॥
क्ली तु वृन्दे देवदालीलतायां तु कदम्ब्यपि ।
कदम्बकं समूहे क्ली ना सर्षपकदम्बयोः ॥१०२३॥
कदरः श्वेतखदिरे क्रकचे ना रुजान्तरे ।
कदला कदलश्चेति पृश्न्यां स्त्रीपुंसयोर्मतम् ॥१०२४॥
कदला डिम्बिकायां स्त्री शाल्मली भूरुहेपि च ।
कदलः कदलीत्येतद्रम्भायां पुंस्त्रियोर्भवेत् ॥१०२५॥
कदली करिकेतौ स्त्री चर्मयोनिमृगान्तरे ।
कदली तु बिले शेते मृदुरूक्षोचकर्बुरैः ॥१०२६॥
नीलाग्रै रोमभिर्युक्ता सा विंशत्यङ्गुलायता ।
कद्रुर्नागजनन्यां च भूमौ च स्त्री प्रकीर्त्तिता ॥१०२७॥
पुमांस्तु पिङ्गले वर्णे स्यात्तद्वति तु भेदवत् ।
कद्वरं तु दधिस्नेहे तक्रे चापि नपुंसकम् ॥१०२८॥

कनकः काञ्चनारे च धुर्धूरे नागकेसरे।
किंशुके चम्पके चैव कालीये च बृहस्पतौ ॥१०२९॥
कनकं प्रसवे प्रोक्तन्द्रुमाणां हेम्नि च स्मृतम्।
कनका सप्तजिह्वानामग्नेर्यैकात्र कीर्त्तिता ॥१०३०॥
छन्दोभेदे महाज्योतिष्मत्यां च कनकप्रभा।
कनिष्ठोऽवरजेऽप्यल्पतमे युवतमे त्रिषु ॥१०३१॥
कनिष्ठं कूप्यलवणे कनिष्ठाऽल्पतमाङ्गुलौ।
अवरोढानतिमभार्ययोश्च स्त्रियां मता ॥१०३२॥
कनिष्ठकः कनिष्ठे त्रि क्लीबं शूकतृणे मतम्।
कनिष्ठिका स्त्रियामल्पतमायामङ्गुलौ स्मृता ॥१०३३॥
कनीनस्तु त्रिलिङ्गोऽयं तरुणे परिकीर्त्तितः।
कनीनको बालके स्यात्कन्यायां तु कनीनका ॥१०३४॥
अक्ष्णस्तु तारकायां स्यात्पुँल्लिङ्गेऽपि कनीनकः।
स्त्रियां कनीनकाऽप्येषा तथैव स्यात्कनीनिका ॥१०३५॥
कनीनिका कनिष्ठायामप्यङ्गुल्यां स्त्रियां मता।
कनीयानतिपूति स्यादत्यल्पेऽवरजे त्रिषु ॥१०३६॥
कनीयसं क्ली ताम्रेऽथ स्यात्कनीयसि वाच्यवत्।
कन्तुः पुंसि कुसूलेऽपि कन्दर्पे च प्रकीर्त्तितः ॥१०३७॥
कशब्दार्थवति त्वेष वाच्यलिङ्गः प्रकीर्त्तितः।
कन्था ग्रामे च मृद्भित्तौ बहुचीरकृताम्बरे ॥१०३८॥
कन्थारी भेषजे स्थानभेदेपि परिकीर्त्तिता।
कन्दोऽस्त्री सूरणे मूलसस्यमात्रेऽम्बुदे तु ना ॥१०३९॥
कन्दरा त्रिर्गिरे रन्ध्रे स्त्र्युचजानुमृगान्तरे।
अङ्कुशे कन्दरस्त्वेष पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥१०४०॥
कन्दरालोऽक्षोटगर्दभाण्डप्लक्षद्रूमेषु ना।
कन्दलस्त्रिकपाले चाप्युपरागे नवाङ्कुरे ॥१०४१॥
कलध्वनौ गुल्मभेदे जिनयोनिमृगे स्त्रियाम्।
कन्दली सा श्यामवर्णा हस्तायामा महोदरी ॥१०४२॥

कन्दूः स्यान्नृस्त्रियोः पाकस्थाने क्रीडनकेऽपि च ।
स्यूत्रिते स्वेदनीनाम्नि तथा स्यात्पाकसाधने ॥१०४३॥
कन्दुकोऽस्त्र्युपधाने च स्यात्क्रीडागुडकेऽपि च ।
कन्दोटोऽस्त्री श्वेतपद्मे नीलपद्मे च कीर्त्तितः ॥१०४४॥
कन्धरो मारिषे मेघे सा ग्रीवासिरयोः स्त्रियाम् ।
कन्धिः पुंसि समुद्रे स्यात्सा ग्रीवायां स्त्रियां मता ॥१०४५॥
कन्या मेषात्षष्ठराशौ प्रियङ्ग्वाख्यमहीरुहे ।
कुमार्यां शारिवायां च तरणीसंज्ञगुल्मके ॥१०४६॥
कपटः कितवे द्वे ना वर्णभेदे त्रि तद्वति ।
कपटी तु छलैर्युक्ते वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ॥१०४७॥
अथ स्त्रियां कपटिनी गन्धद्रव्यान्तरे मता ।
कपट्यञ्जलिमानेऽपि वृक्षभेदे स्त्रियां मता ॥१०४८॥
कपर्दो ना शिवजटाजूटे द्वे तु वराटके ।
पुमाञ्जटाजूटमात्रे कपर्दः परिकीर्त्तितः ॥१०४९॥
कुशद्वीपस्य वर्षेऽद्रिनागदानवभित्स्वथ ।
नृभूम्नि शाल्मलिद्वीपविप्रेष्वपि जनान्तरे ॥१०५०॥
कपर्दी सजटे त्रिर्ना शिवे रुद्रान्तरेऽपि च ।
कपालोऽस्त्री क्वचित्स्त्री च कपालीति शिरोऽस्थनि ॥१०५१॥
व्रणे घटादिशकले तथा शकलमात्रके ।
चषकेच्छादने शल्के कुष्ठभेदे पदास्थनि ॥१०५२॥
कपालसंधिसंज्ञे तु संधौ पुंसि समानयोः ।
कर्णसंकरभेदे तु कपालोऽयं द्वयोर्मतः ॥१०५३॥
कपालिका दन्तमले कपालार्थे कपालकः ।
कपाली त्रिषु योगार्थे द्वे ब्राह्मण्यां च धीवरात् ॥१०५४॥
जातेपि शैवभेदे च ना तु रुद्रान्तरे शिवे ।
कपालिनी तु दुर्गायां तस्याश्चानुचरी भिदि ॥१०५५॥
कपिर्ना ऋषिभेदेऽर्के सिल्हके मधुसूदने ।
वानरे तु गजे चैव कपिः स्त्रीपुंसयोर्मतः ॥१०५६॥



स्त्रीत्वे कपिः कपी चात्र बभ्रुवर्णे तु वाच्यवत् ।
कपिञ्जलो द्वे चटके तथा पक्ष्यन्तरेऽप्यथ ॥१०५७॥
ना पुण्डरीकमित्रेऽथ सरिद्भेदे कपिञ्जला ।
कपित्थस्तु दधित्थेऽपि तथा मुद्रान्तरेऽपि च ॥१०५८॥
सूर्यावर्त्ते द्रुमे रक्तापामार्गे कपिपिप्पली ।
केचित्तु करिपिप्पल्यामप्याहुः कपिपिप्पलीम् ॥१०५९॥
कपिप्रियः कपित्थाम्रातकयोः प्रसवे तु नप् ।
तयोः कपिप्रिया तिन्त्रिणीके योगे तु लोकवत् ॥१०६०॥
पुमान्कपिरथो रामेऽप्यर्जुनेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
कपिलो मुनिभेदेऽग्नौ वासुदेवे कडारके ॥१०६१॥
कडारवर्णयुक्ते तु त्रि स्त्री तु कपिला द्रुमे ।
स्याद्गङ्गायां च कपिलधारा तीर्थान्तरेऽपि च ॥१०६२॥
वर्णे तुरुष्कनिर्यासे बभ्रुवर्णे ककुद्मति ।
शिंशपासंज्ञके बभ्रुवर्णायां सुरभावपि ॥१०६३॥
हरेण्डभेषजे विद्युत्यग्निदिग्वासिहस्तिनः ।
करिण्यां पुण्डरीकस्य ब्रह्मरीत्याख्यलोहके ॥१०६४॥
जातिभेदे तथैकस्मिन्द्वादशानां जलौकसाम् ॥
मनःशिला रञ्जिताभ्यां पार्श्वाभ्यामिव लक्षिता ॥१०६५॥
पृष्ठे स्निग्धा दुग्धवर्णेत्येवं यल्लक्षणं विदुः ॥
द्वयोस्तु कुक्कुरोऽकप्यन्तरे मूषिकभेदयोः ॥१०६६॥
कपिलाक्षस्त्रियोगे स्त्री कीर्त्तिता शिंशपान्तरे ।
कपिशः श्याववर्णे ना सिल्हकेऽर्के तथा शिवे ॥१०६७॥
कपिशा कपिशीत्येतन्माधव्यां द्वितयं मतम् ।
मध्यासवे तु कपिशं कपिशा तु नदीभिदि ॥१०६८॥
जनन्यां च पिशाचानां स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।
कपिशीर्षं कपेर्मूर्ध्नि प्राकारशिखरेऽपि नप् ॥१०६९॥
कपीतनो गर्दभाण्डप्लक्षे चाम्रातके तथा ।
शिरीषाश्वत्थयोः पुंसि क्लीबे तत्प्रसवे स्मृतम् ॥१०७०॥

कपीज्यस्तु कपिश्रेष्ठे क्षीरिकापादपेऽपि च ।
कपीन्द्रो जाम्बवद्विष्णुसुग्रीवहनुमत्सु च ॥१०७१॥
कपीवानृषिभेदे नद्यन्तरे तु कपीवती ।
कपीष्टः स्यात्कपित्थेऽपि पुमान्राजादनेपि च ॥१०७२॥
सुवाग्रे काकपक्षेपि कपुच्छल कपुत्सले ।
कपृत्तु पुंसि मेढ्रेऽपि रूप्येन्द्रेप्यृक्षु दृश्यते ॥१०७३॥
कपोतः पक्षिमात्रेऽपि द्वयोः पारावते तथा ।
कुड्यालङ्कृतिभेदे तु करमुद्रान्तरे पुमान् ॥१०७४॥
कपोतसदृशे वर्णे स्यात्सौवीराञ्जनेपि च ।
कपोतकः कपोताऽर्थे पारावत्यां कपोतिका ॥१०७५॥
कपोतकी स्त्री श्यामायां क्ली कपोताञ्जने मतम् ।
कपोतपाको योगार्थे नृभूत्वद्रिनृजातिषु ॥१०७६॥
कपोतवर्णी सूक्ष्मैलायां योगे तु यथायथम् ।
कपोताङ्घ्रिः स्त्रियां विद्रुमवल्ल्यां यौगिके तु ना ॥१०७७॥
कपोलः पुंसि गण्डे स्त्री कपोली सक्थिचक्रके ।
कफघ्नी हपुषाभेदे योगे तु स्याद्यथायथम् ॥१०७८॥
पिण्डी तगरवृक्षेपि योगार्थे कफवर्धनः ।
मरिचे स्यात्कफविरोधि पिप्पल्याश्च तथा नपि ॥१०७९॥
कुलत्थेस्त्री कफहरिः श्लेमघ्ने तु त्रिषु स्मृतः ।
कफी द्वयोर्गजे स्त्रीत्वे कफिनी स्यान्नदीभिदि ॥१०८०॥
कफेलूः श्लेष्मातके नाच्छादिषेय तृणे स्त्रियाम् ।
कबन्धोऽस्त्र्यप्सु काये च क्रियायुक्तेऽपमूर्धके ॥१०८१॥
उदरेऽप्यथ ना राहौ तथा रक्षोन्तरे मतः ।
सांध्यमेघोदरकुतू राहुरक्षोन्तरेष्वपि ॥१०८२॥
केतूनां या षण्णवतिर्वराहोक्ताऽत्र च क्वचित् ।
ना तु गन्धर्वभेदेऽप्याथर्वणेऽपि क्वचिन्मतः ॥१०८३॥
कबन्धी कात्यायने स्यान्मरुतस्तु कबन्धिनः ।
कबर्युमायां तुङ्ग्यां च पृथ्व्यां स्त्रीवाप्पिकौषधौ ॥१०८४॥

केशविन्यासभेदेऽथाम्ले चित्रे लवणे च ना ।
कबरस्तु त्रिलिङ्गः स्यादुक्तवर्णरसान्वितौ ॥१०८५॥
कम् सुखार्थेऽपि सुष्ठ्वर्थे कुत्साभोज्यशिरोम्बुषु ।
वागलंकरणे चापि प्रयुक्तं मान्तमव्ययम् ॥१०८६॥
कमठः कच्छपे शल्ये द्वयोस्त्रिषु तु वामने ।
अस्त्री भिक्षाभाजनेऽथ ना वेणौ कूर्मकर्परे ॥१०८७॥
कमण्डलुः स्यात्करके न स्त्री ना प्लक्षपादपे ।
चतुष्पाज्जातिभेदे तु द्वयोरेषा कमण्डलूः ॥१०८८॥
कमनो ना स्मरब्रह्माऽशोके त्रीरम्यकामिनोः ।
कमनीयश्चम्पकद्रौ त्रिस्तु कामयितव्यके ॥१०८९॥
कमरः कामुके चैव तथा मूर्खेऽभिधेयवत् ।
कमलं पद्मताम्राम्बुस्थौणेये रक्तपङ्कजे ॥१०९०॥
क्लोम्नि चर्मणि हेमाद्यैश्चित्रिते छुरिकादिनः ।
नक्षत्रसंख्याऽन्तरयोर्भेषजेऽपि नपुंसकम् ॥१०९१॥
अथ द्वयोः सारसे च कमलः स्यान्मृगान्तरे ।
नागरङ्गे तु कमला लक्ष्म्याञ्चैव वरस्त्रियाम् ॥१०९२॥
पुमांस्तु ब्रह्मणि तथा संगीतध्रुवकान्तरे ।
न तु ना कमली छन्दोभेदेऽपि कमले तथा ॥१०९३॥
विरिञ्चौ पुंसि कमलगर्भो योगे यथायथम् ।
नाऽम्भोजपत्रे कमलच्छदो द्वे कङ्कपक्षिणि ॥१०९४॥
पद्मासने स्यात्कमलासनं ब्रह्मणि पुंस्ययम् ।
कम्पनं तद्द्वयोः कम्पे कम्प्रे स्यादभिधेयवत् ॥१०९५॥
कम्बलस्तूत्तरासङ्गे गोसास्नायां तथा क्वचित् ।
पार्वताभक्तभिन्नागभेदयोः क्लीबमम्बुनि ॥१०९६॥
कम्बली करिणः सज्जनायां स्यात्त्रिस्तु रल्लके ।
कम्बिरंशे च वंशस्य खजाकायामपि स्त्रियाम् ॥१०९७॥
क्लीबं स्यात्पण्डके न स्त्री वाच्यलिङ्गस्त्वविक्रमे ।
कम्बुर्गजे द्वे त्रिषु तु शङ्खे संख्यान्तरेऽपि च ॥१०९८॥

वलये तण्डुलकणे शम्बूके च प्रकीर्त्तितः ।
कम्बूः स्त्री कुरुविन्दे स्याद्भूषणे च त्सरावपि ॥१०९९॥
कम्बाजास्तु नृभून्नि स्युर्देशे ना त्वस्य राजनि ।
शङ्खेऽपत्ये त्वस्य राज्ञो द्वयोस्तद्वद्रजान्तरे ॥११००॥
कम्रा कशायां कम्रस्तु रम्ये त्रिः कमितर्यपि ।
करो वर्षोपले रश्मौ पाणावंशे च शासितुः ॥११०१॥
मुद्राविक्षेपहिंसेभशुण्डाधवलशालिषु ।
प्रत्यायेऽथ करं क्लीबं मेघकार्मुक इष्यते ॥११०२॥
करकस्तु कमण्डल्वां कर्कर्यां चास्त्रियां मतः ।
करङ्के तु पुमांश्चाम्रे दाडिमेऽप्यथ तत्फले ॥११०३॥
क्लीबं द्वयोस्तु करका पक्षिभेदेऽम्बुदोपले ।
करङ्को मस्तकेशस्य नारिकेलफलास्थनि ॥११०४॥
पुँल्लिङ्गो मांसरहिते ताम्बूलादेश्च भाजने ।
करच्छदा तु सिन्दूरपुष्प्यां शाखोटके तु ना ॥११०५॥
करजो ना नखे चैव करञ्जाख्यतरावपि ।
करजं क्ली तत्प्रसवे तथा व्याघ्रनखौषधौ ॥११०६॥
करञ्जो वृक्षभेदेऽपि दैत्यभेदेऽपि कीर्त्तितः ।
करञ्जिका करञ्जे द्वे भृङ्गराजे करञ्जकः ॥११०७॥
करटो गजगण्डे ना विल्वे श्राद्धे च नूतने ।
वाद्यभेदेऽथ करटं कुङ्कुमे क्लीबमुच्यते ॥११०८॥
द्वयोस्तु काके त्रिर्दुर्दुरूटे कुत्सितजीवने ।
करटा तु स्त्रियां दुःखदोह्यायां स्मर्यते गवि ॥११०९॥
करणं कारणे काये साधने कर्मणीन्द्रिये ।
क्षेत्रेऽपि साधकतमे नाट्यगीतिप्रभेदयोः ॥१११०॥
रतबन्धे तथा ज्योतिःशास्त्रज्ञानाश्च कुत्रचित् ।
ग्रहवारर्क्षयोगेषु तथा पद्मासनादिषु ॥११११॥
स्पृष्टाद्युच्चारणभिदि द्वे तु शूद्रविशोः सुते ।
करण्डो मधुककोशासिसमुद्गेषु दलाढके ॥१११२॥

स्त्री करण्डी पुटीसंज्ञपात्रे द्वे विहगान्तरे ।
करपत्रं क्ली क्रकचे करपात्रेऽपि कीर्त्तितम् ॥१११३॥
करपर्णो भवेद्रक्तैरण्डे भिण्डाद्रुमेऽपि च ।
करपल्लव उक्तो ना बाहावस्त्री मृदौ करे ॥१११४॥
करपालो मतः खड्गे करस्य त्रिषु पालके ।
करपाली स्त्रियामीलीसंज्ञे शस्त्रे पुमान्पुनः ॥१११५॥
करभो मणिवन्धादिकनिष्ठान्ते करस्य ना ।
आतपे धान्यपवने द्वे बालोष्ट्रे च गर्दभे ॥१११६॥
कपित्थे पीलुवृक्षे च भवेत्करभवल्लभः ।
करभी स्यादुष्ट्रपत्न्यां वृश्चिकाल्यामपि स्त्रियाम् ॥१११७॥
करमर्दः कृष्णपाकवृक्षे तत्प्रसवे तु नप् ।
करमर्दी स्त्रियां कृष्णपाकजात्यन्तरेऽल्पके ॥१११८॥
करम्बः सेकमिश्रान्ने ना त्रि मिश्रे सुमे तु नप् ।
करम्भी पात्रभेदे स्यात्करम्भो दधिसक्तुषु ॥१११९॥
करवीरः कृपाणे ना दैत्यभेदाश्वमारयोः ।
करवीर्यदितिश्रेष्ठगवी पुत्रवतीषु च ॥११२०॥
मनः शिलायां तु भवेत्करवीरा स्त्रियां तथा ।
आढकीसंज्ञधान्येऽश्वमारद्रुप्रसवे तु नप् ॥११२१॥
करहाटः पद्मशिफाकन्दे च मदनद्रुमे ।
पुष्पजातौ देशभेदे नृभूम्नि प्रसवे तु नप् ॥११२२॥
करालो दन्तुरे तुङ्गे विशाले विकृतेऽपि च ।
कडारवर्णयुक्ते च भीषणे चाभिधेयवत् ॥११२३॥
ससर्जरसतैले तु कालमाले गुणे च ना ।
कडाराख्येऽथ तत्क्लीबं मतं कृष्णकुठेरके ॥११२४॥
चर्मकोशे कराली तु दंष्ट्राभेदे च भोगिनः ।
अग्निजिह्वाविशेषे च पार्वत्यां च स्त्रियां भवेत् ॥११२५॥
करालिको द्रुभेदेऽसौ दुर्गायां तु करालिका ।
करी गजे मनुष्ये च द्वयोः कर्त्तरि तु त्रिषु ॥११२६॥

करीरः कुक्कुराख्ये ना वृक्षे वंशाङ्कुरे घटे ।
करीरी चीरिकायां स्त्री दन्तमूले च दन्तिनः ॥११२७॥
प्रेरके तु गजस्यैष करीरो वाच्यवन्मतः ।
करुणा क्लेशवल्लोकालोकजे तु भवे मुनेः ॥११२८॥
करुणो रसभेदे च छागवृक्षे पुमान्मतः ।
दैन्यं तु करुणं क्लीबं करुणाविषये त्रिषु ॥११२९॥
करूशस्तण्डुलकणे कुसूले क्षत्रियान्तरे ।
नीवृद्भेदे तु पुंभूम्नि करूशा इति कीर्त्तिताः ॥११३०॥
करूषको मनोर्वैवस्वतस्य तनयान्तरे ।
करूषकं क्लीबलिङ्गं फलभेदे प्रकीर्त्तितम् ॥११३१॥
करेणुः कर्णिकारद्रौ गजेऽपि च पुमान्मतः ।
करेणुरिभ्यां स्त्री प्रोक्ता तथैव स्याल्लतान्तरे ॥११३२॥
करोटं वस्त्रकोशेऽथ द्वयोर्भृत्ये प्रयुज्यते ।
करोटं च करोटी च कपाले शिरसो भवेत् ॥११३३॥
करोटी स्त्री घनाम्लायाञ्चाङ्गुल्यां परिकीर्त्तिता ।
कर्कः कर्के राशिभेदे शुक्लाऽश्वे दर्पणे घटे ॥११३४॥
कर्को नाऽग्नौ सितेऽश्वस्य वर्णे द्वे तु सिते हये ।
कर्कटो द्वे कुलीरे स्यात्कङ्कसंज्ञे च पक्षिणि ॥११३५॥
कर्कटी देवदाल्यां स्त्री वालूक्यां शाल्मलीफले ।
राशौ तु मेषतस्तुर्ये पुँल्लिङ्गः कर्कटो मतः ॥११३६॥
आरोह्वायास्तुलायाश्च तथैवावयवान्तरे ।
कर्कटाह्वा कर्कटभृङ्ग्यां बिल्वे तु पुमानयम् ॥११३७॥
कर्कन्धूः पुंस्त्रियोः क्रोष्टुकदर्याम्परिकीर्त्तिता ।
व्रणे बदर्यां विष्टम्भे रथादीनां युगे तथा ॥११३८॥
स्त्री तु मध्वाज्यसंसिक्तयवलाजजतर्पणे ।
कर्करो भाण्डभेदेऽस्थि पाषाणे दर्पणेऽपि ना ॥११३९॥
दृढे तु भेद्यलिङ्गोऽथ कर्करी करके स्त्रियाम् ।
कूष्माण्डकालिङ्गयोर्ना कर्करुस्तत्फले तु नप् ॥११४०॥

कर्कशः काशमर्दासिकाम्पिल्येक्षुपटोलके ।
कर्कशी बदरीभेदे नरकोलीति विश्रुते ॥११४१॥
त्रि तु क्रूरे खरस्पर्शे दये साहसिके दृढे ।
पटोले कर्कशफलो दग्धावृक्षे स्त्रियामसौ ॥११४२॥
कर्कोटो नवनीते ना मिश्रे नवविलोलिते ।
तक्रे महीरुहे चैव पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥११४३॥
कर्कोटो नागभेदेऽपि सविषौषधभिद्यपि ।
कर्कोटकः स्यान्मालूरकाद्रवेयप्रभेदयोः ॥११४४॥
कर्कोटकी पीतघोषा तथा कटुफला स्मृता ।
कर्णः क्षेत्रान्तरे श्रोत्रे क्षुद्रे निःश्रोत्रके पशौ ॥११४५॥
नौकापृष्ठस्थिताऽरित्रे राधेये कनकावलौ ।
कर्णपूरं तु कथितं क्ली सौगन्धिक उत्पले ॥११४६॥
शिरीषतिलकाशोककर्णालंकरणेषु ना ।
कर्णपूरणमुक्तं क्ली मुस्ते च श्रोत्रपूरणे ॥११४७॥
अर्थे पूरयतेः कर्णपूरणा क्लीस्त्रियोर्मता ।
कर्णान्धूरुत्क्षिप्तिकाख्ये कर्णालङ्करणान्तरे ॥११४८॥
तथैव कर्णपाल्यामप्येषा स्त्रीलिङ्ग इष्यते ।
कर्णिका मध्यमाङ्गुल्यां कर्णालङ्करणेऽपि च ॥११४९॥
करिहस्ताङ्गुलौ वप्रबीजकोश्यामपि स्त्रियाम् ।
क्रमुकादिच्छटांशे स्त्री रोगभेदेऽपि कीर्त्तिता ॥११५०॥
कर्णिकारः पुमानारग्वधद्रौ च द्रुमोत्पले ।
कर्णी तु पशुबन्धार्था रज्जुभेदे स्त्रियां मता ॥११५१॥
कर्त्तनं छेदनेऽश्वस्य लुठने सूत्रनिर्मितौ ।
नापितस्योपकरणे कर्त्तनी कर्भिकाभिधे ॥११५२॥
स्यात्क्रियायां कर्त्तयतेः कर्त्तनं कर्त्तनेति च ।
कर्त्तरी स्त्री कृपाण्यां च बाणपुङ्खे च कीर्त्तिता ॥११५३॥
कर्त्ता ब्रह्मणि भव्यद्रौ ना स्वतन्त्रेऽपि कारके ।
कारके तु त्रिषु प्रोक्तः कर्त्तृ भव्यफले नपि ॥११५४॥

कर्दटः करहाटे स्यात्पङ्कपङ्कारयोरपि ।
कर्दनी चैत्रपूर्णायां कर्दनं कुत्सिते रवे ॥११५५॥
कर्दमोऽस्त्री मनःपङ्के पङ्कारेऽप्ययमिष्यते ।
कर्परो ना घटादीनां शकले च शिरोऽस्थनि ॥११५६॥
कपालाख्ये कटाहे च द्रुमाङ्गे चायुधान्तरे ।
रजाञ्जने कर्परीति स्त्रियामेषा प्रयुज्यते ॥११५७॥
कर्बुदारः काञ्चनारे नीलझिण्ट्यां तथा पुमान् ।
कर्बुरं क्ली जले हेम्नि ना तु चित्रे हरित्सिते ॥११५८॥
पापे रक्षसि शट्यां च त्रि तु तद्वर्णयोगिनि ।
तथा तद्वर्णसुरभौ पुनः स्त्री कर्बुरा तथा ॥११५९॥
जलौकाजातिभेदे च सविषे यस्य लक्षणम् ।
या छिन्नोन्नतकुक्षिः स्याद्वर्मिमत्स्यवदायता ॥११६०॥
सविषा कर्बुरा नाम जलौका सा प्रकीर्त्तिता ।
अथ कर्मकरो भृत्ये वेतनाजीविनि त्रिषु ॥११६१॥
ना कीनाशेऽथ मूर्वायां बिम्बिकायामपि स्त्रियाम् ।
कर्मण्या स्त्री भृतौ कर्मसाधुसंपादिनोस्त्रिषु ॥११६२॥
कर्मास्त्र्यर्थप्रयोगे च क्रियायां तनये मखे ।
शिल्पे पापे च पुण्ये च कर्त्रेप्सिततमादिके ॥११६३॥
कारके भव्यवृक्षे च फले त्वस्य नपुंसकम् ।
अथ कर्मफलं कर्मरङ्गकर्मविपाकयोः ॥११६४॥
कर्मारो ना कर्मरङ्गे तथा वेणावयस्कृति ।
कर्मी हाटकपुत्र्यां स्त्री तथा शालपलालयोः ॥११६५॥
कर्वः कामे पुमानुक्तो निष्पत्रिक्षेत्र एव च ।
कर्वटोऽस्त्री भवेत्क्षुद्रग्रामे द्रोणमुखाभिधे ॥११६६॥
कर्वरी स्त्री शिवाभूम्योः कर्वरः शबले त्रिषु ।
द्वे व्याघ्ररक्षसोर्ना तु देशे पापेऽञ्जलावपि ॥११६७॥
कर्शनो नाशने त्रि स्यादग्नौ पुंसि प्रकीर्त्तितः ।
कर्षोऽस्त्री पलतुर्येऽथ कर्षणे ना बिभीतके ॥११६८॥

कर्षकोऽङ्गारके ना त्रिः कृष्टर्यपि कृषीवले ।
बिभीतके कर्षफलोऽथामलक्यां स्त्रियामियम् ॥११६९॥
कर्षी त्रिः कर्षके चैव हारिण्यपि च वाच्यवत् ।
कृषके द्वे कर्षिणौ तु क्षीरिण्यां कर्षणी तथा ११७०॥
कर्षूः पुमान्करीषाग्नौ स्त्रियां कुल्येष्टिखातयोः ।
कलस्त्वङ्गुष्ठसंस्पर्शे वीणातन्त्रीषु सौरभे ॥११७१॥
पुष्पस्थे तिलकस्याथ त्र्यव्यक्तमधुरध्वनौ ।
मूकेऽप्यजीर्णे शुक्रे तु कलं क्लीबमुदीरितम् ॥११७२॥
कलकण्ठः पिके हंसे कपोते द्वे त्रियौगिके ।
कोलाहले कलकलः सालनिर्यासके शिवे ॥११७३॥
कलक्वाणस्तु दात्यूहे भ्रमरे द्वे त्रि यौगिके ।
कलङ्कषः स्यात्सिंहेऽपि करताल्यां तथा पुमान् ॥११७४॥
कलङ्को ना तमाखौ च दिग्धबाणाहते पशौ ।
कलत्रं दुर्गदेशे भूपादेश्च श्रोणिभार्ययोः ॥११७५॥
कलधौतं सुवर्णे च रजते च नपुंसकम् ।
कलध्वनिः पुमान्पारावते पिकमयूरयोः ॥११७६॥
कलभः करिपोते च करभेऽपि द्वयोर्मतः ।
स्त्रियां तु कलभी प्रोक्ता धुस्तूरे चञ्चुभेषजे ॥११७७॥
कलमः शालिभिच्चौराङ्कुरलेखनिकासु ना ।
कलम्बः शाकनाले च बाणे चाऽपि पुमान्मतः ॥११७८॥
कलम्बी शाकभेदे त्र्यस्त्रीस्तम्बे शतपर्वणि ।
पिके कलरवः पारावते च द्वे त्रियौगिके ॥११७९॥
कललं चर्मकोशेऽस्थि क्लीबमस्त्री त्वयोमले ।
उल्बे ताम्रघटे किट्टे गर्भावस्थान्तरेऽपि च ॥११८०॥
कलविङ्को द्वे चटके तद्भेदे पीतमुण्डके ।
कलशः कलशी कुम्भे द्वे ना द्रोणाख्यमानके ॥११८१॥
स्थाल्यां तु दधिमन्थन्यां कलशी परिकीर्त्तिता ।
कलशिर्भेषजस्तम्बे पृश्निपर्णीति विश्रुते ॥११८२॥

दधिमन्थनगर्गर्यामपि स्यात्कलशि स्त्रियाम् ।
कलशोदक इत्येष पुमानम्लानसंज्ञिनः ॥११८३॥
स्तम्बस्य भेदे स्याच्छोणपुष्पे झाटाकृतावथ ।
कलशस्य जले क्लीबं कलशोदकमिष्यते ॥११८४॥
कलहंसस्तु कादम्बे राजहंसेऽपि च द्वयोः ।
कलहंसस्तु पुँल्लिङ्गश्छन्दोभिद्राजहंसयोः ॥११८५॥
कलहो युधि च द्वन्द्वे खङ्गकोषे च भण्डने ।
कलहप्रिय इत्येष नारदः स्त्री तु सारिका ॥११८६॥
कलेन्दोः षोडशांशे चाप्यंशेऽवयवमात्रके ।
वैशिके कलनायां च देहधात्वन्तरे तनौ ॥११८७॥
त्रिंशत्काष्ठाप्रमाणे च काले वृद्धावृणस्य च ।
कूब्यच्छादिः संधिमनःशिलयोर्गीतिशिल्पयोः ॥११८८॥
कलाङ्कुरस्तु कंसेऽपि पक्षिभेदेऽपि कीर्त्तितः ।
कलाचिकः पुमान्दर्व्यां प्रकोष्ठे स्त्री कलाचिका ॥११८९॥
कलाधरः शशाङ्केऽपि शिवेऽपि परिकीर्त्तितः ।
कलाऽनुनादी रोलम्बे कलविङ्के कपिञ्जले ॥११९०॥
कलापः संहतौ बर्हे काञ्च्यां भूषणतूणयोः ।
चन्द्रे विदग्धे प्रत्नाङ्गिरसे व्याकरणान्तरे ॥११९१॥
कलापको ना कलमशालौ क्ली विश्वभेषजे ।
कलापकं चतुर्णां च पद्यानां सार्द्धमन्वये ॥॥११९२॥
कलापी द्वे मयूरेऽथ ना पर्कट्यां शिवेऽपि च ।
कलापिनी स्त्री पार्वत्यां कलापवति तु त्रिषु ॥११९३॥
कलापी कणिशे स्त्री स्यात्तथाकणिशपूलके ।
कलापूर्णस्त्रिकलया तुल्ये चन्द्रे तु पुंस्ययम् ॥११९४॥
कलाया गण्डदूर्वायां कलायः कालपुष्पके ।
कलालापो द्वयोरुक्तो भ्रमरे त्रि तु यौगिके ॥११९५॥
कलिर्नेषौ रणेऽनर्थे कलधातौ बिभीतके ।
तत्फलेऽन्त्ययुगाऽलक्ष्म्योर्विवादे स्त्री तु कोरके ॥११९६॥

कलिकारस्तु धूम्याटे करञ्जे पीतमस्तके ।
नारदे कलिकारी तु लाङ्गल्यां परिकीर्त्तिता ॥११९७॥
कलिङ्गः पूतिकरजे नृपभेदे च पुंस्ययम् ।
अपत्येषु बहुष्वस्य भूम्नि चैषां च नीवृति ॥११९८॥
द्वे तु धूम्याटविहगे स्यात्कलिङ्गा तु नप्स्त्रियोः ।
फले कुटजवृक्षस्य महिलायां तु योषिति ॥११९९॥
कलितं स्याप्तविहितसंख्यातज्ञातसंयते ।
कलिन्दोऽक्षद्रुमे सूर्ये चाऽद्रिभेदे पुमान्मतः ॥१२००॥
कलिन्दी तु स्त्रियामेषा यमुनायां प्रकीर्त्तिता ।
कलिप्रियो नारदे ना वानरे तु द्वयोर्मतः ॥१२०१॥
कलिलं गहने त्रिर्ना समूहे कायपापयोः ।
गाम्भीर्ये संगतेऽप्यात्माऽधिष्ठिते शुक्रशोणिते ॥१२०२॥
कलुषं स्यादघे क्लीबं कलुषो महिषे द्वयोः ।
सूक्ष्मैलायां तु कलुषी स्त्री त्रिषु त्वाविले भवेत् ॥१२०३॥
कृष्णे तु वर्णे कलुषः पुंसि तद्वति भेद्यवत् ।
कलेवरं तु कायेऽपि शवेऽपि च नपुंसकम् ॥१२०४॥
नवानां शम्भुशक्तीनामेकस्यां स्यात्कलेवरा ।
कल्कोऽस्त्री घृततैलादिशेषे दम्भे बिभीतके ॥१२०५॥
पापे चौषधपिष्टे च तथा स्यात्किट्टविष्ठयोः ।
कल्कस्तुरुष्कनिर्यासे ना त्रि पापाशये मतः ॥१२०६॥
कल्पो देवद्रुमे न्याये संवर्त्तब्रह्मणो दिने ।
बिभीतके विकल्पे च सामर्थ्ये वर्णने विधौ ॥१२०७॥
कारणौपम्याऽधिवासच्छेदशास्त्राऽन्तरेषु च ।
चिकित्साक्रमभेदे च क्वचिज्जन्मान्तरेऽपि च ॥१२०८॥
कल्पनं तु मतं क्लीबं क्लृप्तौ च छेदनेऽपि च ।
कल्पना सज्जनायां स्त्री कारिणः परिकीर्त्तिता ॥१२०९॥
कल्पना तु क्रियायां सा न ना कल्पयतेर्भवेत् ।
कल्मषं किल्विषं क्लीबं पुंसि स्यान्नरकान्तरे ॥१२१०॥

कल्माषो यातुधाने च वर्णे स्यात्कृष्णपाण्डुरे ।
कृष्णे च शबले वर्णे तद्वति त्वभिधेयवत् ॥१२११॥
क्लीबं त्वारण्यके साम्नि कयानश्चित्र इत्यृचि ।
सर्पसामाह्वये गीते कल्माषं परिकीर्त्तितम् ॥१२१२॥
कल्यस्तु नीरुजि त्रि स्याद्दक्षे कल्याणवाचि च ।
सज्जे च क्ली त्वतीतेऽह्नि लग्ने चाहर्मुखेऽपि च ॥१२१३॥
स्त्री सुरायां क्वचित्त्वेष त्रिषु वाक्छ्रुतिवर्जिते ।
कल्याणं तूत्सवे क्लीबमक्षयस्वर्गरुक्मयोः ॥१२१४॥
मङ्गले स्वर्णपत्रे च श्रुतौ च परिकीर्त्तितम् ।
कल्याणी क्ष्मागिरिजयोर्वाच्यवत्त्वक्षये शुभे ॥१२१५॥
कल्याणा चापि कल्याणी स्त्रीत्वेऽन्त्यार्थद्वये भवेत् ।
कल्याणकं शुभं कल्याणिका तु स्यान्मनःशिला ॥१२१६॥
कल्याणिनो बलायां स्त्री कल्याणी त्रिः शुभान्विते ।
कल्लोलः पुंसि हर्षे स्यान्महोर्मौ च रिपावपि ॥१२१७॥
कवचः पटहे चैव नान्दीवृक्षे तथा पुमान् ।
पुंनपुंसकयोस्त्वेतत्संनाहे कवचं मतम् ॥१२१८॥
कवटः कवटी च द्वे पुल्कसी शूद्रसम्भवे ।
कवटं क्लीबमुच्छिष्टे भक्ताख्येऽन्ने च कीर्त्तितम् ॥१२१९॥
कवारः पक्षिभेदे स्यात्कवारं कमले मतम् ।
कविः शुक्रे च वाल्मीकौ कृतकोटिमुनौ च ना ॥१२२०॥
स्त्र्यङ्गुलित्रे खलीने च विद्वत्काव्यकृतोस्त्रिषु ।
स्यात्कव्यवाहनोऽग्नौ ना विशेषात्पितृपावके ॥१२२१॥
कशा स्त्री वाजिताडन्यां द्वे तु लोमशपुच्छके ।
नकुलस्य प्रभेदेऽपि डिण्डिकीवैश्यजे सुते ॥१२२२॥
कशिपुः शयने वस्त्रेऽन्ने चाऽस्त्री तद्द्वये कुथे ।
कशेरुः स्त्रीनपोः पृष्ठस्यास्थनि क्लीबकं पुनः ॥१२२३॥
स्तम्बप्रभेदे सजले पङ्करूढे कशेर्वथ ।
वशावेश्याकर्णिकारे कशेरूः परिकीर्त्तिता ॥१२२४॥

कश्मलं मलिने त्रि स्यात्क्लीबं मोहपुरीषयोः ।
कश्मीरजं कुङ्कुमे स्यात्त्रि तु कश्मीरसम्भवे ।१२२५॥
कश्यं त्रिषु कशाऽर्हे स्यात्क्लीबं मद्याऽश्वबध्ययोः ।
कश्यपो मुनिभेदे ना द्वे कूर्मे त्रिस्तु मद्यपे ॥१२२६॥
कषाङ्कुरग्नौ सूर्ये च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
कषायस्तु वराभिख्यरसे क्वाथरसे तथा ॥१२२७॥
निर्यासे सौरभे च स्यादनुगङ्गरागयोः ।
रागद्रव्ये रक्तवर्णे रक्तपीतद्वयात्मके ॥१२२८॥
मिश्रवर्णे तथा क्रोधलाभादौ भेद्यवत्पुनः ।
रक्तवर्णयुते रक्तपीतवर्णद्वयान्विते ॥१२२९॥
सुरभौ तु वराख्येन रसेन च समन्विते ।
कषायी शालखर्जूरी लकुचे ना त्रियोगिके ॥१२३०॥
कषिर्निकषपाषाणे धातौ स्यात्कषतावपि ।
अश्वकर्णाख्यवृक्षे च काष्ठेऽपि च तथा पुमान् ॥१२३१॥
कषीका मक्षिकायां स्त्री कषीकं क्ली खनित्रके ।
कषुस्तु ना करीषाग्नौ स्त्री कुल्यातुषकोष्ठयोः ॥१२३२॥
कष्टं तु गहने कृच्छ्रे त्रिष्वसत्त्वे नपुंसकम् ।
कंसो ना पूर्वभूपालभेदे कृष्णस्य मातुले ॥१२३३॥
पानपात्राऽन्तरे त्वस्त्री लोहे घोषाख्य आढके ।
हंसे स्त्रीपुंसयोरेष कंसः संपरिकीर्त्तितः ॥१२३४॥
कस्वरं तु धने क्लीवं त्रिः स्यात्कसनशीलके ।
कांस्योऽस्त्री वाद्यभित्पानपात्रघोषाख्यतैजसे ॥१२३५॥
काको द्वे वायसे ना तु वृक्षभित्पाठसर्पिणोः ।
शिरोऽवक्षालने लौल्ये मानभिद्द्वीपभेदयोः ॥१२३६॥
काकं क्ली रतबन्धाऽन्तरेऽपि स्यात्काकसंहतौ ।
काकजङ्घा षडस्रेतिप्रसिद्धस्थावरान्तरे ॥१२३७॥
गुडासमाख्यवल्ल्यां स्त्री जङ्घायां करटस्य च ।
[1]काकणी मानदण्डस्य माषस्य च पणस्य च ॥१२३८॥

---

१. काकिणी; काकिनी वा ।

तुर्येंऽशे पादुकायां च कपर्दानां च विंशतौ ।
एकस्मिंश्च कपर्दे स्यात्कृष्णलेऽपि स्त्रियामियम् ॥१२३९॥
काकतुण्डी तु तापिच्छे काकतुण्डोऽगुरौ पुमान् ।
काकनासा पुष्पगुल्मे वसुभट्टाभिधे स्त्रियाम् ॥१२४०॥
काकाङ्गवल्ल्यां काकस्य नासिकायां च कीर्त्तिता ।
काकपीलुस्तु काकेन्दौ ना गुञ्जायां स्त्रियामियम् ॥१२४१॥
त्रिलिङ्ग एष कथितः काकपीलुः स्वरान्तरे ।
काकभाण्डी काकतुण्ड्यां तथा हस्तिकरञ्जके ॥१२४२॥
भवेत्काकरुको भीरावुलूकेऽस्त्री जिनेऽपि च ।
नग्ने दम्भे तथा निम्बपादपेऽपि पुमानयम् ॥१२४३॥
काकली तु कले सूक्ष्मे शब्दे स्त्री काकलं पुनः ।
ग्रीवाया उन्नते देशे क्ली कण्ठमणिसंज्ञके ॥१२४४॥
काकशीर्षस्तु ना पुष्पस्तम्बभेदे शिवप्रिये ।
वसुभट्ट इति ख्याते क्ली तु काकस्य मूर्धनि ॥१२४५॥
काकाण्डं वायसाण्डे क्ली कृष्णशिम्बौ तु पुंस्ययम् ।
काकी स्त्री काकनासायां काकोलीकाकजङ्घयोः ॥१२४६॥
रक्तिकामलपूकाकमाचीतुवरिकासु च ।
काकोदरस्तु द्वे सर्पमात्रे सर्पान्तरे तथा ॥१२४७॥
षड्विंशतेरन्यतमे दर्वीकरफणाभृताम् ।
काकोलो द्वे कुलाले च द्रोणकाके प्रकीर्त्तितः ॥१२४८॥
काकोलोऽस्त्री विषभिदि कालोलं नरकान्तरे ।
काकोली तु पयस्याख्यवल्लीजातौ स्त्रियां मता ॥१२४९॥
काक्षी तुवरिकायां च स्त्रियां सौराष्ट्रमृद्यपि ।
काचः शिक्येऽक्षिरुग्भेदे मृद्भेदे च शिलान्तरे ॥१२५०॥
स्त्री काचमालिका मद्ये काचस्रजि च कीर्त्तिता ।
काचिकस्तु पुमाञ्ज्ञेयः कमुण्डे द्वेतु मूषिके ॥१२५१॥
काचिघः काञ्चनेऽपि स्याच्छेमण्डे मूषिकेऽपि च ।
काचूकः कृकवाकौ स्यात्पीतमस्तककोकयोः ॥१२५२॥

काञ्चनः काञ्चनारे स्याच्चम्पके नागकेसरे।
उदुम्बरे च धुर्धूरे हरिद्रायां तु काञ्चनी ॥१२५३॥
क्ली त्वब्जकेसरे हेम्नि ब्रह्मरीतौ तु न स्त्रियाम्।
काञ्ची स्त्री मेखलादाम्नि दाक्षिणात्यपुरान्तरे ॥१२५४॥
काठः पुमान्स्यात्पाषाणे कठसम्बन्धिनि त्रिषु।
काणः काके द्वयोस्त्रिर्विकृतेऽक्ष्णि विकृताक्षके ॥१२५५॥
काणकस्त्रिषु हिंस्रे स्यात्काणकं त्वक्षिजे मले।
काणूकः कुक्कुटे हंसभिदि पक्ष्यन्तरे द्वयोः ॥१२५६॥
अस्त्री काण्डो जले बाणे दण्डे नाले च कुत्सिते।
शक्तिसंज्ञबलेऽध्याये स्तम्बेऽवसरवर्गयोः ॥१२५७॥
इक्ष्वादेर्ग्रन्थिभेदे च द्रुमस्कन्धे रहस्यपि।
काण्डकारो बाणकारे गुवाके तु नपुसंकम् ॥१२५८॥
काण्डी रोगजपिप्पल्यां त्रिस्तु काण्डवति स्मृतः।
काण्डी तु हस्तिपिप्पल्यां स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥१२५९॥
कातरः पण्डके पुंसि भीरौ त्रिर्द्वे झषान्तरे।
कात्यायनो वररुचौ तथा मुन्यन्तरे पुमान् ॥१२६०॥
काषायवस्त्राविधवार्द्धजरत्युभयोः स्त्रियाम्।
कादम्बः कलहंसे द्वे बाणे ना त्रि तु यौगिके ॥१२६१॥
कादम्बरो ना दध्यग्रे क्ली तु मद्यान्तरे मतम्।
स्त्रीवारुणीपरभृताभारतीशारिकासु च ॥१२६२॥
कादम्बिनी स्त्रियां मेघमालायां च नवाम्बुदे।
कानकं कलकोऽपूते तथा स्याद्बीजरेचके ॥१२६३॥
काननं विपिने गेहे परमेष्ठिमुखेऽपि च।
कानीनः पुंसि कर्णे च व्यासे त्रिषु तु लोभिनि ॥१२६४॥
पितृगेहेऽप्यनूढाजे कानीनं त्वञ्जने स्मृतम्।
कान्ता प्रियङ्गौ रामायां स्त्री कान्तस्तु धवे पुमान् ॥१२६५॥
नान्दीवृक्षे चम्पकद्रौ क्ली तु तत्प्रसवे भवेत्।
तथा दमनके त्रिस्तु कान्तः प्रियमनोज्ञयोः ॥१२६६॥

चन्द्रायः सूर्यपर्यायपरः पुंसि शिलायसोः ।
कान्तारोऽस्त्री महारण्ये दुर्गमार्गे च कीर्त्तितः ॥१२६७॥
वनमात्रे च कान्तारस्त्विक्षुभेदे पुमानयम् ।
कान्तारकस्त्विक्षुभेदे जनभेदे तु भूम्नि ना ॥१२६८॥
कान्तारिका तु कथिता स्त्रियां सा मक्षिकान्तरे ।
कान्तिः स्त्रियां स्यादिच्छायां शोभायां च प्रयुज्यते ॥१२६९॥
कान्तिदा वाकुची प्रोक्ता कान्तिदं पित्तमुच्यते ।
कान्तिदायकमुक्तं त्रिर्यागे कालीयके तु नप् ॥१२७०॥
पुमान्कापटिकश्छात्रवेषधारे स्पशान्तरे ।
संस्थाचराणां पञ्चानामेकस्मिंस्त्रिस्तु दाम्भिके ॥१२७१॥
कापथः कुत्सितपथेऽप्युशीरे क्लीबमिष्यते ।
कापोतो रुचके क्ली तु कपोतौघेऽञ्जनान्तरे ॥१२७२॥
कामः काम्यस्मरेच्छासु गुग्गुलावपि रेतसि ।
क्लीबं निकामे कामं स्यात्तत्स्यादनुमतेऽव्ययम् ॥१२७३॥
कामकूटस्तु वेश्यायाः प्रियविभ्रमयोः पुमान् ।
पुमान्कामगुणो रागे विषयाभोगयोरपि ॥१२७४॥
कामचारः स्वतन्त्रे त्रिः स्वेच्छायां तु पुमान्मतः ।
कामचारी ना गरुडे कलविङ्के द्वयोर्मतः ॥१२७५॥
वाच्यवत्कामचार्युक्तः स्वच्छन्दे कार्मुकेपि च ।
कामदा कामधेनौ स्त्री कामदातरि वाच्यवत् ॥१२७६॥
कामध्वजो ना वादित्रनिर्घोषे च स्मरोत्सवे ।
कामस्य तु ध्वजे ज्ञेयः पुंनपुंकसयोरयम् ॥१२७७॥
क्लीबं कामपदं योनौ कामस्य च पदे तथा ।
कामपालः शिवे चैव बलदेवे पुमान्मतः ॥१२७८॥
कामप्रः कामपूर्त्तौ स्यात्कामप्रः कामपूरके ।
कामप्रदः कामदे त्रीरतबन्धान्तरे तु ना ॥१२७९॥
कामं प्रकामासूयानुगमनानुमतिष्वपि ।
कामरूपास्तु पुंभूम्नि स्युः प्राग्ज्योतिषनीवृति ॥१२८०॥

योगार्थे त्वर्थवशतो लिङ्गाद्यं तस्य तर्क्यताम् ।
कामरूपी द्वयोर्नानावर्णे च कृकलासके ॥१२८१॥
बिम्बाख्ये यौगिके त्वर्थवशतो लिङ्गमुन्नयेत् ।
कामला द्वे रुजाभेदे कामुके कामलस्त्रिषु ॥१२८२॥
कामलस्तु पुमानेष मतो मरुवसन्तयोः ।
कामवान्कामिनि मतस्तस्य लिङ्गादि वाच्यवत् ॥१२८३॥
कामवत्युदितादारुहरिद्रायां स्त्रियामियम् ।
कामवृद्धिर्लताभेदे योगार्थेऽपि स्त्रियां मता ॥१२८४॥
भवेत्कामशरः कामबाणे चाम्रतरावपि ।
अथ कामसखश्चैत्रवसन्ताम्रतरुष्वपि ॥१२८५॥
कामाङ्कुशो नखे चैव मेहनेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
कामाङ्गश्चूतवृक्षे ना कामाङ्गं तु स्मराङ्गके ॥१२८६॥
कामान्धा स्त्री मृगमदे कामान्धः कोकिले द्वयोः ।
कामायुधो महाराजचूते मेढ्रे तु नप्स्मृतम् ॥१२८७॥
कामिर्ना कामुके रत्यां स्त्री कामिः परिकीर्त्तिता ।
कामिकान्तं तु माध्वीकमद्ये क्ली त्रि तु यौगिके ॥१२८८॥
कामी द्वे सारसे चक्रवाके पारावतेऽपि च ।
वाच्यवत्कामुके स्त्री तु कामिनी भीरुवन्दयोः ॥१२८९॥
पुष्पवृक्षविशेषेऽपि कामिनी कीर्त्तिता स्त्रियाम् ।
कामुकः कमनेऽशोकपादपे चातिमुक्तके ॥१२९०॥
कामोत्सवः पुमान्कामहर्षे चापि स्मरोत्सवे ।
काम्पिल्या देशभेदे च पुमान्वृक्षान्तरेऽपि च ॥१२९१॥
काम्बोजः श्वेतखदिरे पुमान्पुन्नागपादपे ।
काम्बोजी माषपर्ण्यां स्त्री द्वे तु कम्बोजवाजिनि ॥१२९२॥
काम्यं ताम्रे त्रिस्तु कामसाधुकामयितव्ययोः ।
कायः शरव्ये निवहे स्वभावे च तनौ च ना ॥१२९३॥
कायं प्राजापत्यतीर्थे क्लीबं त्रिस्तु कदैवते ।
कायस्थो लेखकाख्ये स्यान्नरजात्यन्तरे द्वयोः ॥१२९४॥

स्त्री कायस्था हरीतक्यां चित्रगुप्तात्मनोस्तु ना ।
कायिका प्रत्यहं देहे ऋणे वृद्ध्यन्तरे स्मृता ॥१२९५॥
कायेन तु कृते चैतत्कायिकं स्यात्त्रिलिङ्गकम् ।
कारः पुंसि क्रियायां च नृपभागेऽप्यथ स्त्रियाम् ॥१२९६॥
कारकः कर्त्तरि तथा हिंसकेप्यभिधेयवत् ।
क्रियानिर्वर्त्तके तु क्ली कर्मादौ कारकं मतम् ॥१२९७॥
कारणं करणे हेतौ स्त्रीनपोस्त्वपि कारणा ।
क्रियायां स्यात्कारयतेर्घाते च परिकीर्त्तिता ॥१२९८॥
कारणा तु स्त्रियां तीव्रवेदनायां प्रकीर्त्तिता ।
कारन्धमी कांस्यकारे धातुवादरतेऽपि ना ॥१२९९॥
कारवी वाष्पिकासंज्ञभेषजे कृष्णजीरके ।
खराश्वाख्याजमोदायां शतपुष्प्यौषधावपि ॥१३००॥
कारवी कीर्त्तिता क्षुद्रकारवेल्ल्यामपि स्त्रियाम् ।
कारस्करो द्वयो राजवृक्षे क्ली नगरान्तरे ॥१३०१॥
पुमांस्तु गिरिभेदेऽथ नृभूम्नि स्युर्जनान्तरे ।
कारा प्रसेविकायां च तथा वन्धनवेश्मनि ॥१३०२॥
अक्ली तु बन्धने कारा कारी त्रिः करयोगिनि ।
कारालिको वृक्षमात्रे पुँल्लिङ्गः खङ्गिखङ्गयोः ॥१३०३॥
कारिः क्रियायां स्त्री कारिः स्याच्छिल्पिन्यभिधेयवत् ।
कारिका नटभार्यायां शिल्पयातनयोरपि ॥१३०४॥
कृतौ विवरणश्लोकेऽग्निविष्ठायां च कीर्त्तिता ।
कारिता स्यात्स्वयं दृष्टे ऋणवृद्ध्यन्तरे स्त्रियाम् ॥१३०५॥
कारित्वेऽप्यथ निर्मापितेऽसौ स्यात्कारितस्त्रिषु ।
कारुरिन्द्रे विश्वकर्मण्यपि पुंसि प्रकीर्त्तितः ॥१३०६॥
द्वयोरपूर्वपुंयोगवैश्यायां व्रात्यतः सुते ।
शिल्पिकारकयोस्त्वेष कारुः स्यादभिधेयवत् ॥१३०७॥
कारुजः कलभे फेने वल्मीके नागकेसरे ।
गैरिके शिल्पिनां चित्रे स्वयञ्जाततृणेऽपि ना ॥१३०८॥

कारुजः कारुतो जाते त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
कारोत्तरः सुरामण्डे कूपे चापि पुमान्मतः ॥१३०९॥
सुरास्रावणपात्रेऽपि वैदले चर्मवेष्टिते ।
कार्त्तिकी कृत्तिकायुक्तपौर्णमास्यां स्त्रियां मता ॥१३१०॥
तत्पौर्णमासीयुक्ते तु मासे ना कार्त्तिको मतः ।
कार्पटस्तु पुमानेष कीर्त्तितो जतुकार्षिणोः ॥१३११॥
कार्मणं मूलकर्माख्ये क्लीबं मन्त्रादियोजने ।
कार्मणस्तु त्रिलिङ्गोऽयं कथितः कर्मकारिणि ॥१३१२॥
कार्मिकस्तु भवेद्राज्ञां शुल्केष्वधिकृते त्रिषु ।
कर्मणां तु समूहे क्ली कार्मिकं परिकीर्त्तितम् ॥१३१३॥
कार्मुकं चापमात्रेऽपि चापभेदे नपुंसकम् ।
ना वेणौ त्रिः प्रभवति कर्मणे कार्मुको मतः ॥१३१४॥
कार्यं प्रयोजने क्लीबं कर्त्तव्ये त्रिषु कीर्त्तितम् ।
स्यात्कार्यपुट उन्मत्तकृपणाऽनर्थकारिषु ॥१३१५॥
कार्षापणोऽस्त्रीपणषोडशके कार्षिकेऽपि च ।
कार्ष्णमिध्मप्रोक्षणे क्ली कृष्णसम्बन्धिनि त्रिषु ॥१३१६॥
क्ली तु कालायसे कालं कालस्तु समये यमे ।
मृत्यौ चापि महादेवे कार्ष्ण्ये त्रिषु तु तद्वति ॥१३१७॥
कालकस्तु पुमान्कायविकारेपि प्लुसंज्ञके ।
रक्ते तु कालद्रव्येण पटादौ भेद्यलिङ्गकः ॥१३१८॥
कोपादिना च काले स्यान्मुखादौ कलतिर्यपि ।
तथैव कालपितरि कालको वाच्यवन्मतः ॥१३१९॥
कालकण्ठस्तु दात्यूहे कलविङ्के च खञ्जने ।
मयूरे पीतशाले च द्वयोः स्यात्तु शिवे पुमान् ॥१३२०॥
कालकाऽङ्गारकाख्यस्य शकुनेर्योषिति स्त्रियाम् ।
कालकुण्ड[1]स्तु ना विष्णौ यमे चापि द्वयोः पुनः ॥१३२१॥
मनुष्यजातिभेदे च क्षत्रियायां निषादजे ।
कालकूटो वोलविषयमनीवृज्जनान्तरे ॥१३२२॥

---

१. कालकुण्ठो वा ।

कालञ्जरो योगिचक्रमेलके भैरवे गिरौ ।
कालञ्जरी तु दुर्गायान्तथा कालञ्जरा भवेत् ॥१३२३॥
कालधर्मस्तु कालस्य धर्मेऽपि मरणेऽपि च ।
कालपुच्छस्तु चमरमृगे द्वे यौगिके त्रिषु ॥१३२४॥
कालपृष्ठं कर्णचापे पुंसि कङ्कविहङ्गमे ।
कालमेघः कृष्णमेघे तथा भेषजभिद्यपि ॥१३२५॥
स्त्रियां तु कालमेषी स्यान्मसूरविदलाह्वये ।
लताजात्यन्तरे सोमराजिमञ्जिष्ठयोरपि ॥१३२६॥
द्राक्षायां च द्वयोस्त्वेषा काले मेषे प्रकीर्त्तिता ।
कालशेयं गोरसे क्लीं कलशीसम्भवे त्रिषु ॥१३२७॥
कालसारः कृष्णसारे तथा स्यात्पीतचन्दने ।
कालस्कन्धस्तमाले च तिन्दुके जीवकद्रुमे ॥१३२८॥
तथा स्याच्छ्यामखदिरे यौगिके लिङ्गमर्थतः ।
काला मनःशिला मञ्जिष्ठा कृष्णत्रिवृतासु च ॥१३२९॥
कालानुसार्यं शैलेये जावकाख्ये विलेपने ।
कालिका त्विति सौराष्ट्रीसंज्ञके भेषजे भवेत् ॥१३३०॥
प्रशान्ताग्नौ दग्धकाष्ठे मृगभेदेऽस्य लक्षणम् ।
कालिका त्वसिता यद्वा कपोता पिङ्गबिन्दुका ॥१३३१॥
इत्येवमविवाह्यानां कन्यानां कन्यकान्तरे ।
अस्योक्तं लक्षणं कुब्जा दुर्दर्शा कालिका च सा ॥१३३२॥
अश्वस्य दन्तरेखायां सूक्ष्मजीरक एव च ।
मनोविकारप्रभवकायवैवर्ण्य एव च ॥१३३३॥
मेघजाले च चिक्रोडसंज्ञप्राण्यन्तरेऽपि च ।
क्रयदेये वस्तुमूल्ये काञ्चीवृश्चिकपत्रयोः ॥१३३४॥
धूसर्यां चणिकाभेदे योगिनीभिन्नवाब्दयोः ।
पटोलशाखारोमालीमांसीकाकाशिवासु च ॥१३३५॥
कालिकी तु स्त्रियां मासि मासिदेयेऽधमर्णकैः ।
ऋणवृद्धिविशेषेऽथ प्राप्तकाले त्रि कालिकी ॥१३३६॥

कालिङ्गो भूमिककर्कारौ दन्तावलभूजङ्गयोः ।
कालिन्दी यमुनानद्यां कृष्णभार्यान्तरेऽपि च ॥१३३७॥
काली मृडान्यामेकस्यां शम्भोर्नवसु शक्तिषु ।
असहाख्यबृहत्यां भ्रूकुटौ कृष्णनवाम्बुदे ॥१३३८॥
सप्तानामग्निहेतीनामेकस्यामेकमातरि ।
सप्तानामपि मातॄणां याश्च शासनदेवताः ॥१३३९॥
अर्हत्तीर्थकराणां तास्वेकस्यां क्षीरकीटके ।
पिप्पलीवृश्चिकाल्योश्च नील्यां कृष्णे तु जीरके ॥१३४०॥
कालेयं कालखण्डे स्यात्कलीनां च कदम्बके ।
कलिना साम्नि दृष्टे च रागद्रव्ये च जापके ॥१३४१॥
कालेयो दैत्यभेदे ना दार्व्यां च परिकीर्त्तितः ।
कालेयस्तु त्रिलिङ्गोऽयं कालसम्बन्धिनि स्मृतः ॥१३४२॥
काव्रूकः कुकवाकौ द्वे पीतमस्तककोकयोः ।
कावेरी स्यात्सरिद्भेदे पुण्यनारीहरिद्रयोः ॥१३४३॥
काव्यः शुक्रे क्ली रसवद्वाक्ये स्त्री पूतनाधियोः ।
काशो नस्त्रीक्षुगन्धायां काशा स्त्रीपुंसयोस्त्विषि ॥१३४४॥
काशिर्ना काशतौ धानौ मुष्टौ काशाह्वये तृणे ।
भूम्नि नीवृद्विशेषेऽथ काशी वाराणसी स्त्रियाम् ॥१३४५॥
काश्मीरङ्कुङ्कुमेऽपि स्याट्टङ्कपुष्करमूलयोः ।
काश्मीरी कृष्णवर्णायां वचायां स्यात्स्त्रियामियम् ॥१३४६॥
काश्यपो मुनिभेदे च चन्द्रे चेक्ष्वाकुवंशजे ।
द्वितीयनृपतौ पुत्रे मरीचेरपि पुंस्ययम् ॥१३४७॥
कश्यपस्य तु पुत्रे च मृगभेदेऽपि च द्वयोः ।
काश्यपी तु स्त्रियां भूमौ मांसे तु नपि काश्यपम् ॥१३४८॥
काष्ठा स्त्री कालभेदे स्यादष्टादशनिमेषके ।
स्थितौ दारुहरिद्रायां दिशि चाप्युपदिश्यपि ॥१३४९॥
दक्षिणोत्तरयोरन्यतरस्मिन्नयने रवेः ।
आदित्ये परमावस्थोत्कर्षयोराजिसंज्ञिनः ॥१३५०॥

समप्रदेशस्यान्नेऽप्सु भूम्नि क्ली तु दारुणि ।
कासिका छेदनद्रव्ये स्त्री वनस्पतिभिद्यपि ॥१३५१॥
त्रिस्तु कासयितर्येष कासकः कासितर्यपि ।
कास्वर्वाग्विकले त्रि स्त्री व्याधौ शक्त्यायुधे धियाम् ॥१३५२॥
काहली स्त्री वाद्यभेदे सुषिरे परिकीर्त्तिता ।
रथ्यावादे नपि त्रि स्याद्वाक्ये निष्ठुर आकुले ॥१३५३॥
किंशारुर्ना शस्यशूके विशिखे कङ्कपक्षिणि ।
किंशुकस्तु पलाशे स्यादिङ्गुदे तत्फले तु नप् ॥१३५४॥
किकीदिविस्तु ना वर्णे द्वे तु चाषाह्वये खगे ।
किखिरल्पक्रोष्टुजातौ कालगोत्रान्तरे स्त्रियाम् ॥१३५५॥
किङ्करो ना रथांऽशेऽथ द्वे दासे राक्षसे जने ।
किङ्किणी घण्टिकायां स्त्री विकङ्कततरावपि ॥१३५६॥
किङ्किरोऽश्वे पिके भृङ्गे द्वे स्मरे तु पुमान्मतः ।
किङ्किरातः स्मरे पुंसि द्वे शुके कोकिलेऽपि च ॥१३५७॥
ना कुरण्टान्तरेऽशोके क्लीबं तु प्रसवे तयोः ।
किञ्जाः पुंभूम्न्यूदीच्ये स्यान्नीवृद्भेदे त्रि किम्भवे ॥१३५८॥
किञ्जल्कः केसरे क्ली तु स्यादाकाशे च लाञ्छने ।
किट्टालो वा लोहगूथे स्यात्ताम्रकलशेपि च ॥१३५९॥
किणो रूढव्रणस्थाने पुमान्स्याच्चासनान्तरे ।
किणिही स्यादपामार्गे गिरिकर्ण्यामपि स्त्रियाम् ॥१३६०॥
किण्वं स्यान्नग्नहूनाम्नि शीधुबीजे नपुंसकम् ।
तथैव पापे पिण्याके षण्ढेऽन्यवदविक्रमे ॥१३६१॥
कितवो मत्तधुर्धूरवञ्चकद्यूतकृत्सु ना ।
फले धुर्धूरवृक्षस्य क्लीबं कितवमुच्यते ॥१३६२॥
किन्नर्यस्वमुखी चण्डालवीणापिङ्गलासु च ।
किम्प्रश्नाक्षेपकुत्सासु तर्के कार्त्स्न्येऽथ निश्चये ॥१३६३॥
किमु संभावनायां स्याद्वितर्के चापि दृश्यते ।
किम्पाकः स्यान्महाकालफले चाऽज्ञे तथा पुमान् ॥१३६४॥

अथ किम्पुरुषो द्वे स्यात्किन्नरे क्ली तु भारतात् ।
उत्तरेऽनन्तरे वर्षे हेमकूटापराह्वये ॥१३६५॥
किरणस्त्वरुवरश्मौ च रश्मौ चापि पुमान्मतः ।
किराटो म्लेच्छभेदेऽपि द्वयोर्वणिजि च स्मृतः ॥१३६६॥
किरातः स्वल्पकाये त्रिर्भूनिम्बे तु पुमानयम् ।
स्त्रियां चामरवाहिन्यां कुट्टिनीदुर्गयोरपि ॥१३६७॥
मर्त्यजात्यन्तरे तस्मिन्म्लेच्छभेदेऽपि च द्वयोः ।
किरिर्द्वे सूकरे ना तु किरतावप्यनेहसि ॥१३६८॥
किरीटी नाऽर्जुने त्रिस्तु किरीटवति कीर्त्तितः ।
किर्मी पलाशे शालायां हेमपुत्र्यां च योषिति ॥१३६९॥
किर्मीरो नागरङ्गे च कर्बुरे राक्षसान्तरे ।
त्रि तु तद्वर्णवति निष्ठायान्तु नपुंसकम् ॥१३७०॥
किलाऽव्ययं स्यादैतिह्ये संभाव्यानुनयार्थयोः ।
शिवे किलकिलो हर्षध्वनौ किलकिला मता ॥१३७१॥
किलासी तु पृषत्यां स्त्री किलासः पुंसि सिध्मनि ।
किल्विषी वारनार्यां किल्विषं पापरुगागसोः ॥१३७२॥
किशोरस्तरुणाऽवस्थे त्रिषु द्वे त्वश्वशावके ।
सूर्ये तु तैलपर्ण्यां च किशोरः पुंसि कीर्त्तितः ॥१३७३॥
किष्किन्धः शैलभेदे ना किष्किन्धा त्वस्य कन्दरे ।
किष्कुः प्रमाणभेदे स्याद्द्वादशाङ्गुलसम्मिते ॥१३७४॥
वितस्त्याख्ये चतुर्विंशत्यङ्गुले हस्तनाम्नि च ।
मानद्रव्ये ना तपे च कुठारादित्सरौ द्वयोः ॥१३७५॥
किष्कुपर्वा पुमानिक्षौ वेणौ पोटगलेपि च ।
कीकटस्तु द्वयोरश्वे भेद्यवत्तु मितम्पचे ॥१३७६॥
नीवृद्भेदे त्वनार्याणां निवासे पुंसि भूमनि ।
कीकसं त्वस्थनि क्लीबं कृमिषु त्वणुषु द्वयोः ॥१३७७॥
कीचको नाऽनिलरणद्वेणौ स्याले च भूपतेः ।
विराटस्याऽथ पूर्वोक्तवेणोः क्ली प्रसवे मतम् ॥१३७८॥

कीटकः कृमिजातौ द्वे निष्ठुरे पुनरन्यवत् ।
कीनाशोऽग्नौ यमे पीतहरिते मिश्रवर्णके ॥१३७९॥
पीतप्रधाने पुंसि स्याद्राक्षसे तु द्वयोस्त्रिषु ।
कदर्याऽनार्यभृतककृतघ्नेषु कृषीवले ॥१३८०॥
पूर्वोक्तवर्णवद्द्रव्येऽप्याममांसाशकेऽपि च ।
कीराः पुंभूम्नि कश्मीरेष्वथ द्वे तज्जने शुके ॥१३८१॥
कीरकः प्रापणे वृक्षभेदे क्षपणके पुमान् ।
कीरेष्टः स्याच्चूतजलमधूकाखोटशाखिषु ॥१३८२॥
कीर्णश्चुरीनाम्न्यपस्थाने त्रि दत्तक्षिप्तहिंसिते ।
कीर्त्तिः प्रसादयशसोः स्त्रियां कीर्त्तयतौ तु ना ॥१३८३॥
द्वे कीलोऽर्चिर्दोःकफोणिशङ्कुस्तम्भे शिवे तु ना ।
कीलालमप्सु पक्वान्ननिष्यन्देऽन्नेऽमृतेऽसृजि ॥१३८४॥
कीशो दिगम्बरे पुंसि कपौ त्वेष द्वयोर्मतः ।
कु पापे चेषदर्थे च कुत्सायां च निवारणे ॥१३८५॥
कुकुन्दरः कुक्कुरद्रौ नितम्बस्य च कूपके ।
कुकूलं शङ्कुभिः कर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले ॥१३८६॥
कुक्कुट्यनृतचर्य्यायां द्वयोस्तु चरणायुधे ।
भासेऽपि कुक्कुभे शूद्रान्निषादीतनयेऽपि च ॥१३८७॥
शूद्रायां मागधापत्ये निषादीवैश्ययोः सुते ।
सुनिषण्णाख्यशाके तु तृणोल्कायां च कुक्कुटः ॥१३८८॥
कुक्कुटाक्षोऽल्पतुम्ब्यां ना यौगिकाऽर्थे त्वयं त्रिषु ।
कुक्कुरो द्वे सारमेये ग्रन्थिपर्णे नपुंसकम् ॥१३८९॥
कुक्षिः पार्श्वेऽन्तरुदरे तुन्दे चेक्ष्वाकुसम्भवे ।
कुचन्दनोऽस्त्रियां पीतचन्दने रक्तचन्दने ॥१३९०॥
कुचरस्तु कुवादे स्याद्भूचरे चाऽभिधेयवत् ।
कुचेलं कुत्सिते वस्त्रे तद्वति त्वभिधेयवत् ॥१३९१॥
अविद्धकर्णीपाठाद्याख्ये कुचेला लतान्तरे ।
कुजो नाऽङ्गारके वृक्षे तथैव नरकासुरे ॥१३९२॥

कुजा कात्यायनीदेव्यां भूमिजे तु कुजस्त्रिषु ।
कुञ्चिका त्वङ्कुराख्ये स्यात्कपाटोद्घाटयन्त्रके ॥१३९३॥
तूलीसूचिकयोर्भीरुभीषणे साधनेऽप्यथ ।
कीर्त्तितः कुञ्चकश्चैव कुञ्चितर्यभिधेयवत् ॥१३९४॥
कुञ्चितं तगरे क्लीवं कुटिले त्वभिधेयवत् ।
कुञ्जोऽस्त्री गह्वरे दन्ते हनावपि लतागृहे ॥१३९५॥
ऋषिभेदे तु पुँल्लिङ्गः कुञ्ज एष प्रकीर्त्तितः ।
कुञ्जरा पाटलाधातक्योर्ना केशे द्वयोर्गजे ॥१३९६॥
कुञ्जरारातिरुक्तो ना सिंहे च शरभेऽपि च ।
कुञ्जिका कुञ्जवल्लर्यां तथा स्यात्कृष्णजीरके ॥१३९७॥
कुटस्तु पुंसि कलशे गृहे तु द्वे कुटी कुटः ।
कुटजो वृक्षभेदे स्यादगस्त्यद्रोणयोरपि ॥१३९८॥
क्लीबलिङ्गं तु वृक्षस्य प्रसवे तस्य कीर्त्तितम् ।
कुटन्नटस्तु ना गुण्डुसंज्ञवृक्षे नपि त्वदः ॥१३९९॥
गोनर्दसंज्ञके मुस्ताभेदे प्रोक्तं कुटन्नटम् ।
कुटपो ना मुनौ मानभेदे कुडवसंज्ञके ॥१४००॥
निष्कुटे चाथ कुटपं कमले क्लीबमुच्यते ।
कुटरो मृगभेदे च वर्धकौ ना द्वयोः खगे ॥१४०१॥
कुटलं स्यादाभरणे कुटलो गात्रकृत्यृषौ ।
कुटिर्गृहेऽतिकुटिले नृस्त्रियोः परिकीर्त्तिता ॥१४०२॥
कुटिलं कुञ्चिते त्रि स्यात्क्लीवं तु तगरे स्मृतम् ।
अथ स्त्रियां च तगरपाद्यां स्यात्कुटिला स्त्रियाम् ॥१४०३॥
स्त्रियां कुटिलिकाऽङ्गारापकर्षण्यां च शिल्पिनाम् ।
कर्मारनाम्नां धान्यं च कर्षकाणां प्रमृद्रताम् ॥१४०४॥
पूलोत्क्षेपणवेणौ स्यात्परिव्राजां च भूतले ।
निधानस्य निषिद्धत्वाद्दण्डानां धारणाय यत् ॥१४०५॥
स्यात्कम्बिग्रहणन्तत्र तथा चोरजनस्य च ।
यष्टयग्रप्रतिबद्धेऽन्यनिलयारोहणाय यः ॥१४०६॥

लोहकर्कटकस्तत्रापीयं कुटिलिका मता ।
कुटी तु कुम्भदास्यां स्त्री मुरायां चित्रगुच्छके ॥१४०७॥
पल्ल्याख्ये क्षुद्रगेहे च द्वयोस्तु क्षत्रियात्सुते ।
कुक्कुटीसंज्ञभार्यायामश्मकुट्टनवृत्तिके ॥१४०८॥
कुटीरस्तु पुमान्क्षुद्रागारे द्वे तु सकर्कटे ।
कुटुम्बं नामनि तथा बान्धवे सन्ततावपि ॥१४०९॥
ज्ञातौ च पोष्यवर्गे च पुंनपुंसकयोर्मतम् ।
कुट्टिः कुट्टयतौ पुंसि स्त्रियां कुट्टिः स्मृताऽयसि ॥१४१०॥
शम्भल्यां कुट्टनीच्छेदकुत्सयोः कुट्टना मता ।
कुट्टिमोऽस्त्री निबद्धायां भूमावपि कुटीरके ॥१४११॥
कुठारुः पुंसि वृक्षे स्याद्वानरे तु द्वयोर्मतः ।
कुठिः पुमान्भवे वृक्षे पापे च वृषलालये ॥१४१२॥
कुठे रोगे तमारे त्रिर्ना तु स्तम्बे कठिञ्जरे ।
कुडस्तु ना वैश्रवणे क्ली घटे लाङ्गले कुडम् ॥१४१३॥
द्वयोः कुडी कुडकृति शिशावपि च संकरे ॥
पलितीसंज्ञयोषायामुद्भूते शूद्रपूरुषात् ॥१४१४॥
कुडङ्गोऽस्त्री निकुञ्जे च तथैव स्याच्छदिष्यपि ।
कुडवः पक्षिनीडेऽपि परिमाणान्तरे पुमान् ॥१४१५॥
कुडुम्बी सकुटुम्बे त्रिर्द्वयोस्तु स्यात्कृषीवले ।
कुड्मलोऽस्त्री स्यान्मुकुले कुड्मलन्नरकान्तरे ॥१४१६॥
विद्यादासनभेदे च लक्षणं यस्य कीर्त्तितम् ।
नागदन्तकमूर्ध्वज्ञोर्जानुस्थौ प्रसृतौ भुजौ ॥१४१७॥
सूचीमुखमिदं पाणितलौ चेत्संहतौ मिथः ।
अर्धसूची तु तौ द्वौ चेत्प्रादेशान्तरितौ मुखात् १४१८॥
कुड्मलं मुकुलीभूतौ तौ चेदूर्ध्वमुखौ स्थितौ ।
कुड्यं विलेपने भित्तौ क्लीबं कौतूहलेऽपि च ॥१४१९॥
कुणपोऽस्त्री शवे द्वे तु कृमौ त्रिषु तु कुत्सिते ।
विट्सारिकायां कुणपी क्ली पूये दोहदाम्बुनि ॥१४२०॥

कुणालः कृतमाले ना पुत्रे चाशोकभूभुजः ।
अथ क्लीबं पुरभिदि कुणालमिति कीर्त्तितम् ॥१४२१॥
कुणिस्तु नान्दीवृक्षे च विकले च करे पुमान् ।
त्रिलिङ्गस्तु कुणिस्तस्मिन्यस्यास्ति विकलः करः ॥१४२२॥
कुण्ठो मूर्खेऽथ कर्मण्ये चाऽतीक्ष्णेपि त्रिषु स्मृतः ।
कुण्डं नपुंसकं स्थाल्यां काञ्जिके वह्निगर्त्तके ॥१४२३॥
जलाशये च देवादेः कुम्भे मानान्तरेऽपि च ।
कुण्डी कमण्डलौ स्त्री स्यात्कुण्डा तु जनिते मता ॥१४२४॥
जारेण पतिवत्न्यां द्वे अविवाह्यासुतेपि च ।
कुण्डकीटस्तु चार्वाकवचनाऽभिज्ञपूरुषे ॥१४२५॥
पतितब्राह्मणीपुत्रदासीकामुकयोरपि ।
कुण्डली चित्रलमृगे मयूरे भुजगे द्वयोः ।१४२६॥
पुमांस्तु वरुणे प्रोक्तस्त्रि तु कुण्डलवत्यसौ ।
कुण्डली स्त्री गुलूच्यां च काञ्चनद्रौ भवेदथ ॥१४२७॥
पाशके वलये क्लीबं कर्णवेष्टे त्रिकुण्डलम् ।
कुण्डी त्वरुवे द्वयोस्त्रिस्तु कुण्डवत्ययमिष्यते ॥१४२८॥
कुतनुस्तु कुबेरे ना त्रि तु स्यात्कुत्सिताङ्गके ।
कुतपः सूर्यवह्न्योर्ना वृषभेऽप्यतिथावपि ॥१४२९॥
भागिनेयेऽथ विप्रे द्वे पुन्नपुंसकयोः पुनः ।
दर्भेऽप्यह्नोऽष्टमे भागे तिलेच्छागजकम्बले ॥१४३०॥
वाद्यवादकसामग्र्यां नाट्यस्यास्तरणेऽपि च ।
सायमास्तरणे वाद्यविन्यासे देहलावपि ॥१४३१॥
कुतली शाकभेदे स्त्री कुतलोऽस्त्री भुवस्तले ।
कुतूहलं कौतुके स्यात्प्रशस्तेऽपि च दृश्यते ॥१४३२॥
कुत्राणं तु भवे कुण्डे शिक्ये चैव नपुंसकम् ।
कुत्सा स्त्रियां स्यान्निन्दायां पुंस्यरत्न्यभिधानके ॥१४३३॥
प्रमाणेऽपि च वज्रेऽपि तथा ऋष्यन्तरेऽप्यथ ।
तदपत्येषु बहुषु गोत्राख्येषु द्वयोरयम् ॥१४३४॥

स्यात्कुत्सितं पर्युषिते निन्दिते चाऽभिधेयवत् ।
नपुंसकं त्वृणे कुष्ठभेषजेऽपि च कुत्सितम् ॥१४३५॥
कुथः पुमान्कुशे वर्णकम्बले तु कुथा त्रिषु ।
कुद्दालोऽस्त्री मतो गोदारणाख्ये खानसाधने ॥१४३६॥
पुमांस्तु कोविदारद्रौ क्लीबं तत्प्रसवे मतम् ।
कुध्रः पुमान्समुद्रे च पर्वते च प्रकीर्त्तितः ॥१४३७॥
मनःशिलायां कुनटी नैपाल्यां द्वे तु दुर्नटे ।
कुनालिका पक्षिशाले दुर्नाल्यां च स्त्रियां मता ॥१४३८॥
कुन्तो गवेधुकायां स्यात्तथा प्रासायुधे पुमान् ।
कुन्ती तु स्त्री पृथायां स्यात्शाल्लक्यामपि गुग्गुलौ ॥१४३९॥
कुन्तलश्चषके काले यवे केशे पुमान्मतः ।
कुन्तला तु नृभूम्नि स्युर्दक्षिणापथवर्त्तिनि ॥१४४०॥
नीवृद्भेदे तथा मध्यदेशस्थे कुन्तलस्तु ना ।
तद्राजे तदपत्येषु कुन्तलाः स्युर्नृभूमनि ॥१४४१॥
बहुष्वथ स्त्र्यपत्ये तु कुन्तली स्त्री प्रकीर्त्तिता ।
कुन्तिर्ना नृपभेदे तन्नीवृद्भेदे नृभूमनि ॥१४४२॥
राज्ञस्त्वस्य स्त्र्यपत्ये स्त्री कुन्ती कुन्तिरिति द्वयम् ।
कुनूसंज्ञे स्नेहपात्र एलायां च प्रकीर्त्तिता ॥१४४३॥
कुन्दः पुमान्मुकुन्दे स्यान्निधिभेदे भ्रमाभिधे ।
शस्त्रमार्जकयन्त्रे च शुक्लपुष्पाख्यपादपे ॥१४४४॥
माध्यान्यनाम्नि पुष्पे तु फले चास्य नपुंसकम् ।
कुन्दरस्तु भवेद्विष्णौ ना तृणे कण्डुराभिधे ॥१४४५॥
कुन्थुः पालङ्क्याख्यशाके पुंस्यथो मूषिके द्वयोः ।
कुन्दुमस्तु पुमान्मुञ्जे मार्जारे तु द्वयोर्मतः ॥१४४६॥
[1]कुफाकुर्द्दे कपौ नाम्नि ख्योस्त्रि परतापिनि ।
कुबेरः पुंसि यक्षेशे नान्दीवृक्षे च कीर्त्तितः ॥१४४७॥
कुब्जो निखर्वे गडुले त्रिर्ना वृक्षान्तरे गडौ ।
[2]कुब्रं गृहे कर्मणि क्ली कुब्रः कुब्री गजे द्वयोः ॥१४४८॥

---

१. कुपा । २. कुवं ।

फल्गुसङ्कटयोः कुब्रस्त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
कुमारो युवराजेऽश्वचारके वरुणद्रुमे ॥१४४९॥
कुत्सितायां मृतौ चाथ द्वयोर्बाले शुकेऽपि च ।
जम्बूद्वीपेऽथ तत्क्लीबं कुमारं जात्यकाञ्चने ॥१४५०॥
कुमारी शैलतनया नवमाल्योर्नदीभिदि ।
सहापराजिताकुस्तुम्बुरीकन्यासु च स्त्रियाम् ॥१४५१॥
हिमाभे मृगभेदे च नीवृत्तन्नृपभेदयोः ।
मारस्तु कुत्सितो यस्य कुमारस्तत्र वाच्यवत् ॥१४५२॥
कुमुखः कुत्सिताऽस्ये त्रिः सूकरे तु द्वयोर्मतः ।
कुमुद् क्ली कैरवे स्त्री तु कुमोदे कृपणे त्रिषु ॥१४५३॥
कुमुदोऽस्त्री रक्तपद्मे कैरवे च प्रकीर्त्तितः ।
ना दिग्गजान्तरे नागान्तरेऽपि कपिभिद्यथ ॥१४५४॥
कुमुदा कट्फले स्त्री स्याद्गम्भार्यां कुम्भिकौषधौ ।
कुमुद्वान्कुमुदप्राये देशे स्यादभिधेयवत् ॥१४५५॥
कुशपत्न्यां तु कुमुदस्तम्बेऽपि स्त्री कुमुद्वती ।
कुमुलं पुष्पहेम्नोः क्ली कान्ते त्रिषु शिशौ द्वयोः ॥१४५६॥
कुम्बा तु गहनायां स्त्री वृतौ स्याद्विदले तु नप् ।
कुम्भः पुंसि घटे हस्तिमूर्धपिण्डे महत्तरे ॥१४५७॥
वेश्यापतौ सोमदत्ते राशौ च शनिदैवते ।
रक्षोभित्काभिलव्याध्योर्द्रोणाख्यपरिमाणके ॥१४५८॥
तस्य द्वये विंशतौ च खारीणं पञ्चविंशतौ ।
स्त्री तु स्थाल्यन्तरे कुम्भी वारिपर्ण्यां च कट्फले ॥१४५९॥
दधिमन्थनगर्गर्यां पृश्निकायां च पाटलौ ।
कुम्भा तु स्त्री त्रिवृद्वल्लौ कुम्भं तु नपि गुग्गुलौ ॥१४६०॥
कट्फलादेश्च मूलेऽपि प्रसवे च नपुंसकम् ।
कुलत्थिकौषधौ कुम्भकारी द्वे तु कुलालके ॥१४६१॥
कुम्भयोनिरगस्त्ये स्याद्वसिष्ठद्रोणयोः पुमान् ।
कुम्भिकः शालमीने च चौरश्लोकार्थचौरयोः ॥१४६२॥

कुम्भी तु कुम्भवत्येष वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ।
कुम्भिनी वसुधायां स्त्री द्वयोस्तु गजनक्रयोः ॥१४६३॥
कुम्भीकः पुंसि पुन्नागवृक्षे तत्प्रसवे पुनः ।
प्रसवे कुमुदस्यापि कुम्भीकं स्यान्नपुंसकम् ॥१४६४॥
कुम्भीनसः सर्पमात्रे द्वयोर्दर्वीकरान्तरे ।
कुम्भीनसी स्त्रियामेषा लवणासुरमातरि ॥१४६५॥
कुम्भीरस्तु द्वयोर्मत्स्ये चौरे तु त्रिषु कीर्त्तितः ।
कुम्भीलस्त्रिषु चौरे च श्लोकच्छायादिहारिणि ॥१४६६॥
पुमांस्त्वयं स्यात्कुम्भीलो मत्स्ये स्यालाभिधानके ।
कुरङ्गो वानरेऽपि स्याद्द्वे महाहरिणेऽपि च ॥१४६७॥
कुरङ्गको द्वे हरिणे मुद्गपर्ण्यां कुरङ्गिका ।
कुरङ्गी तु स्त्रियां भोजतनयायाम्प्रकीर्त्तिता ॥१४६८॥
कुरण्टकः पीतपुष्पाम्लानझिण्टोकयोर्मतः ।
कुरण्डो मुष्टिवृद्ध्याख्ये रोगभेदे पुमान्मतः ॥१४६९॥
स्तम्बे च किङ्किराताख्ये मत्स्ये त्वेष द्वयोर्मतः ।
कुररी स्त्री भवेन्मेष्यामुत्क्रोशे कुररो द्वयोः ॥१४७०॥
गोजिह्वायां तु कुरसा स्त्रियां स्याद्विरसे त्रिषु ।
कुरीरस्तु पुमान्मालाविशेषे कम्बलेऽप्यथ ॥१४७१॥
कुरीरं मैथुने पद्मे जालेऽपि स्यान्नपुंसकम् ।
कुरुस्तु प्रोच्यते पुंसि ऋत्विग्राजर्षिभेदयोः ॥१४७२॥
नीवृद्भेदे तु पुंभूम्नि वर्षे चाप्युत्तराभिधे ।
कुरुण्टो दाहपुत्र्याख्या झिण्टीम्लानप्रभेदयोः ॥१४७३॥
भवेत्कुरुबकः[1] शोणम्लाने कुरवकेऽपि च ।
भिण्ट्योश्च पीतारुणयोः क्ली त्वेषा प्रसवे भवेत् ॥१४७४॥
कुरुपस्तु द्वयोः कारौ भाजने तु पुमानयम् ।
कुरुली धन्विनां लक्ष्यवेधे स्यात्कुरुलोलके ॥१४७५॥
कुरुविन्दो रत्नभेदे मुस्तके हिङ्गुलेऽपि च ।
अरण्यक्षुद्रधान्यानां सप्तानामेकधान्यके ॥१४७६॥

१. वकः ।

कुरूस्तु कुरुराजस्य स्त्र्यपत्ये स्त्री प्रकीर्त्तिता ।
कुर्वाणस्त्रिषु भृत्येऽपि कारकेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥१४७७॥
कुली स्याद्बृहतीकण्टकार्योर्ज्येष्ठस्वसर्यपि ।
भार्यायां स्त्रीकुलं त्वेतद्दषीणाञ्जलतर्पणे ॥१४७८॥
निकेतने सजातीयगणे जनपदेऽन्वये ।
शैवसङ्घान्तरे द्वे तु मार्जारे स्यात्कुला कुली ॥१४७९॥
कुलको ना कुरवके वल्मीके काकतिन्दुके ।
सर्पभेदे कुलाग्रयेऽथ पश्वादिरुलोकसंहतौ ॥१४८०॥
पटोलवल्ल्यां कुलकं संयुक्ते तु त्रिषु स्मृतम् ।
कुलक्षया शूकशिम्ब्यां कुलनाशे कुलक्षयः ॥१४८१॥
कुलत्थिका कुलाल्याख्ये भेषजे नृस्त्रियोः पुनः ।
कुलत्थधान्ये द्वे तु स्यादेष दर्वीकरान्तरे ॥१४८२॥
कुलायः पक्षिनीडे च गृहे चापि पुमान्मतः ।
एकाहक्रतुभेदेऽथ त्रिः कुलस्यायके भवेत् ॥१४८३॥
कुलालः कुम्भकारेऽपि कुक्कुमेपि द्वयोर्मतः ।
चक्षुष्याख्यौषधौ तु स्त्री कुलाली परिकीर्त्तिता ॥१४८४॥
कुलिको नागभेदे स्याद्द्रुमेदे कुलसत्तमे ।
कुलिशन्त्वस्त्रियां वज्रे मत्स्यभेदे तु स द्वयोः ॥१४८५॥
कुल्माषं काञ्चिके क्लीबं कुरुविन्दमणौ पुमान् ।
व्रीह्यन्तरे सूपभक्ते विदले च यवान्तरे ॥१४८६॥
यवपिष्टे यावकाख्ये पक्वमुद्गादिपिण्डके ।
वर्णे च शबले कुल्माषस्त्वेष त्रिषु तद्वति ॥१४८७॥
कुल्यं स्यात्कीकसेऽप्यष्टद्रोणीशूर्पामिषेषु च ।
रसे तु ना कटोरुचापि कषायस्य च मिश्रणात् ॥१४८८॥
गाढे तद्वति तु त्रि स्यात्कुलीने च नृभूम्नि तु ।
नीवृद्भेदेषु मध्योदग्दाक्षिणात्येषु कीर्त्तितः ॥१४८९॥
कुल्या स्त्रियां स्यात्सरिति कृत्रिमाऽल्पसरित्यपि ।
जीवन्तिकाकण्टकारीकुलस्त्र्यम्बुप्रणालिषु ॥१४९०॥

कुवं स्यादुत्पले क्लीबं कुवः स्त्रीपुंसयोः पशौ ।
अथोत्पले कुवलयं यौगिकेऽर्थे तु लोकवत् ॥१४९१॥
कुवली स्त्री बदर्यां स्यात्तत्फलोत्पलयोस्तु नप् ।
कुवेलमुत्पले क्लीबं त्रिस्तु कुत्सितवेलके ॥१४९२॥
कुशं ह्रीवेरजलयोः क्ली दर्भे तु कुशोऽस्त्रियाम् ।
कुशस्तु रामपुत्रेऽपि योक्त्रे द्वीपान्तरे च ना ॥१४९३॥
कुशा विष्टुतिकाष्ठे स्त्री वल्गारज्जौ च वाजिनः ।
अयोविकारे तु कुशी फालाख्ये च हलाग्रके ॥१४९४॥
पापिष्ठमत्तयोस्त्वेष कुशो वाच्यवदिष्यते ।
कुशलं त्रि क्षमे क्षमे निपुणे मङ्गलान्विते ॥१४९५॥
दीक्षितेऽप्यथ तत् क्लीबं पर्णपर्याप्तिमङ्गले ।
कुशस्थलं कान्यकुब्जमन्त्रवेदी कुशस्थली ॥१४९६॥
कुशिको ना मुनौ सर्पे द्वयोस्तु क्रोष्टुघूकयोः ।
कुशीलवो द्वे वैदेहाल्लङ्घनप्लवनादिना ॥१४९७॥
वर्त्तमाने सुतेऽम्बष्ठ्या नटानामपि विश्रुते ।
चारणे च कुशीसंज्ञाऽयोविकारलवे तु ना ॥१४९८॥
वाल्मीकौ च द्विवचने तूक्तौ रामस्य पुत्रयोः ।
कुशेशयन्तु कमले विष्णौ तु स्यात्कुशेशयः ॥१४९९॥
कुषा[1] कुः कपिवल्ल्यर्के ना परोत्तापिनि त्रिषु ।
कुषितं क्ली भवेत्पापे निष्कृष्टे त्वभिधेयवत् ॥१५००॥
कुष्ठोऽस्त्री परिभाव्याख्यगन्धद्रव्यौषधान्तरे ।
व्याधिभेदेऽप्यभूमिष्ठे कुष्ठः स्यादभिधेयवत् ॥१५०१॥
कुसीदमृणवृद्धौ क्ली ऋणवृद्ध्या च जीवने ।
भेद्यवत्त्वलसे वृद्धिजीविन्यपि च कीर्त्तितः ॥१५०२॥
पुंयोगाच्च स्त्रियां वृत्तौ कुसीदायी प्रकीर्त्तिता ।
कुसुमोऽस्त्री फले नेत्ररोगे स्त्रीपुष्पपुष्पयोः ॥१५०३॥
कुसुम्भं कुङ्कुमे हेम्नि क्ली महारजनेऽपि च ।
स्त्रियां कुसुम्भी तत्स्तम्बे वरधान्ये कमण्डलौ ॥१५०४॥

१. कुफा ।

कुसृतिस्तु कुमार्गे स्यात्कुगतौ शाठ्य एव च ।
कुहनः पुंसि वल्मीके त्रिरीर्ष्यालौ च मायिनि ॥१५०५॥
कुहना स्त्री दम्भचर्यादम्भशीलत्वयोर्मता ।
मायायां त्विन्द्रजाले च कुहनं द्वे तु मूषिके ॥१५०६॥
कूच्युदश्विद्विकारे स्त्री नार्यां कूचस्त्विमे द्वयोः ।
कूचिका सूचिकायां च तूलिकायां च कुड्मले ॥१५०७॥
कपाटाङ्कुरके क्षीरविकृतावपि योषिति ।
कूटोऽस्त्री पुञ्जमायाद्येष्वद्रिशृङ्गे शरान्तरे ॥१५०८॥
अयः शलाकाख्ये तुच्छे सीराङ्गे फालसंज्ञके ।
अयोधने नृते दम्भे व्योम्नि निश्चलयन्त्रयोः ॥१५०९॥
कूपो भूषितकन्यायां ना तु गर्त्तोदपानयोः ।
गुणवृक्षेऽल्पकूपे तु स्त्रियां कूपी प्रयुज्यते ॥१५१०॥
कूप्यं क्ली पांशुलवणे कूपसाधौ तु भेद्यवत् ।
कूबरस्त्वस्त्रियां गन्त्रीसमाख्ये स्याद्रथान्तरे ॥१५११॥
त्रिषु चारौ द्वयोः कुब्जे नृलिङ्गः स्याद्युगन्धरे ।
कूर्चः पशौ भग्नशृङ्गे त्रिरस्त्रीश्मश्रुपीठयोः ॥१५१२॥
भ्रूमध्ये कत्थने दर्भे तन्तुवायपरिच्छदे ।
तथा यतिपवित्रे च पादाङ्गुष्ठान्तरेऽपि च ॥१५१३॥
स्त्री तु चित्रकराणां स्यात्कूर्ची लेखनसाधने ।
कूर्चिका मस्तुपिण्डे च सूचितूलिकयोरपि ॥१५१४॥
कवाटस्याङ्कुरे चापि स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
कूर्परस्तु कफोणौ च जानुन्यपि पुमान्मतः ॥१५१५॥
कूर्मः कूर्मी कच्छपे स्त्रीपुंसयोः परिकीर्त्यते ।
गजाङ्घ्रिदेशे तु नखात्परे कूर्मः पुमान्मतः ॥१५१६॥
कूलन्तीरे चमूकव्यां तटाके स्तूप एव च ।
कूलकं न स्त्रियां स्तूपे पुंसि स्यात्कृमिपर्वते ॥१५१७॥
कूलङ्कषा स्त्रियां नद्यां त्रि तु कूलस्य काषके ।
कूष्माण्डस्तु पुमान्विघ्नराजस्य प्रियभृत्यके ॥१५१८॥

गणभेदे शालिजातिभेदे भ्रूष्वान्तरेऽप्यथ ।
फलवल्ल्यन्तरे तु द्वे कूष्माण्डी क्ली तु तत्फले ॥१५१९॥
अवतेहेड इत्यादिष्वृग्विशेषेषु नप्स्त्रियोः ।
कूष्मा तु पुंसि शल्ये च वाताभावे च कीर्त्तितः ॥१५२०॥
कृकस्तु मृगभेदे स्याद्द्वयोरङ्घ्रौ त्वयं पुमान् ।
कृकरस्तु पुमांश्चव्ये वाते च परिकीर्त्तितः ॥१५२१॥
कृकवाकुर्द्वे सरटकेकिकुक्कुटखञ्जने ।
कृच्छ्रं कष्टेऽप्यधर्मे क्ली तद्वति त्रिष्वथाऽस्त्रियाम् ॥१५२२॥
तपोमात्रे तथा प्राजापत्यसान्तपनादिषु ।
कृणकोऽयं कृणयितर्यभिधेयवदिष्यते ॥१५२३॥
वीणावंशशलाकायां कृणिका स्यात्स्त्रियामियम् ।
कृतं हते निर्मिते त्रिर्भक्ताऽवस्थितकिङ्करे ॥१५२४॥
क्लीबं त्वादियुगेऽन्नादि पक्वहव्येऽक्षदेविनाम् ।
अक्षवातप्रभेदे च स्तोमच्छन्दःप्रभेदयोः ॥१५२५॥
अलमर्थे क्रियायाश्च कृतमेतत्प्रयुज्यते ।
कृतज्ञः कुक्कुरे द्वे स्यादुपकारविदि त्रिषु ॥१५२६॥
कृतमालः पुमान्गन्धद्रव्ये तक्कोलनाम्नि च ।
आरग्वधेऽथ द्वे कृष्णमृगभिद्धूकभेदयोः ॥१५२७॥
कृतवेधन इत्येष कोशातक्यन्तरे पुमान् ।
भवेत्पृथुफले स्वल्पफले जात्यन्तरेऽस्य च ॥१५२८॥
कृतान्तो यमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्मसु ।
कृतिः स्त्रियां स्यात्करणे हिंसनेऽपि कृतेऽपि च ॥१५२९॥
चतुरक्षरकच्छन्दोभेदेऽशीत्यक्षरेऽप्यथ ।
धात्वोः कृणति कृन्तत्योः पुँल्लिङ्गः कृतिरीरितः ॥१५३०॥
कृती स्यात्पण्डिते योग्ये कुशले चाभिधेयवत् ।
कृत्तं तु वेष्टिते छिन्नेऽप्यभिधेयवदिष्यते ॥१५३१॥
कृत्यन्तु भेद्यवत्क्रुद्धे लुब्धे भीतेऽवमानिते ।
विद्विष्टेपि च संरब्धे कर्त्तव्यप्रश्चितव्ययोः ॥१५३२॥

कृर्त्तनीये कृतिकृतकृत्यसाधौ च कीर्त्तितम् ।
प्रयोजने तु क्ली कृत्यं स्यात्कृत्या त्वभिचारजे ।।१५३३।।
दैवते च क्रियायां च स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
कृत्रिमं कृतिनिर्वृत्ते त्रिः क्ली कांस्याख्यलोहके ।।१५३४।।
कृत्रिमो वृक्षधूपाख्यनिर्यासे पुंसि कीर्त्तितः ।
तुरुष्काख्ये च निर्यासे लवणे च विडाह्वये ।।१५३५।।
कृत्स्नं स्यात्क्लीबमुदके निखिले तु त्रिलिङ्गकम् ।
कृदरस्त्रिषु हिंस्रे स्यात्पुमांस्तु खदिरे सिते ।।१५३६।।
कृन्तत्रो नाऽन्तरिक्षे च लाङ्गलाऽग्रे च लाङ्गले ।
द्वे तु स्वर्णाभिघातार्थसाधने मशकेऽपि च ।।१५३७।।
कृन्तरो वृक्षभेदे ना मक्षिके कार्य एव च ।
आलोचने तु त्रिष्वेष कृन्तरः परिकीर्त्तितः ।।१५३८।।
कृपस्तु पुंसि द्रोणस्य स्यालके परिकीर्त्तितः ।
कृपणस्तु कृमौ द्वे स्यान्मन्दकुत्सितयोस्त्रिषु ।।१५३९।।
कृपा दयायां पत्न्यां तु कृपी द्रोणस्य कीर्त्तिता ।
कृपाणी छुरिकायां स्त्री कर्त्तन्यां सैनिकस्य च ।।१५४०।।
अथ खड्गे कृपाणोऽसौ पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
कृपीटमुदरेऽपि स्यात्तोयेऽपि च नपुंसकम् ।।१५४१।।
कृपीटपाल उद्दिष्टः केनिपातसमुद्रयोः ।
कृमिर्ना कृमिवत्कीटे लाक्षायां कृमिले खरे ।।१५४२।।
कृविः पुमांस्तन्तुवायद्रव्ये रूपे द्वयोस्त्वसौ ।
कुविन्दे कर्त्तिकाख्ये तु स्त्रियां नापितभाण्डके ।।१५४३।।
कृशस्तनौ वाच्यवत्स्यात्पुमान्केतुग्रहेष्वियम् ।
कृषको लाङ्गलाख्ये ना कूटाख्ये त्रिः कृषिवले ।।१५४४।।
कृषिः स्त्री कृषिभूमौ च कर्षणे च प्रकीर्त्तिता ।
धातौ तु कृषतावुक्तः कर्षणे च पुमान्कृषिः ।।१५४५।।
कृषिकस्तृणजातौ ना कृषिकं लाङ्गले मतम् ।
कृष्टं त्रि सामगानस्य रीत्यान्यतमयान्विते ।।१५४६।।

प्राप्ते च कृष्टिक्रियया कर्षणे तु नपुंसकम् ।
कृष्टिः पुमान्बुधे स्त्री तु कर्षणे च जनेऽपि च ॥१५४७॥
कृष्णन्नपुंसकं सीसे मरिचे दुरितेऽयसि ।
करमर्दफले चाथ पुमान्विष्णौ च पावके ॥१५४८॥
ध्वान्तपक्षे व्रीहिभेदे व्यासे शुक्रे तथाऽर्जुने ।
मेघे कलियुगे चापि करमर्दद्रुमेऽपि च ॥१५४९॥
नीलवर्णेऽप्यथो नैल्ययुक्ते चकितचेतसि ।
वाच्यलिङ्गो द्वयोस्तु स्याच्छूद्रे वन्ये मृगेऽप्यरौ ॥१५५०॥
काककोकिलयोराखुजातिभेदेऽप्यथ स्त्रियाम् ।
कृष्णा स्याद्राजिकाधान्यपिप्पलीद्रौपदीषु च ॥१५५१॥
जलूकाजातिभेदेषु द्वादशस्वपि षट् स्मृताः ।
सविषास्तेषु चैकस्मिन्द्राक्षातिविषयोरपि ॥१५५२॥
हिरण्याद्याश्च याः प्रोक्ताः सप्तजिह्वाः शिवागमे ।
अग्नेस्तास्वपि चैकस्यां या दक्षिणदिशि स्थिता ॥१५५३॥
कृष्णवर्णस्तु संवर्त्ते वातुलेऽपि चलेऽपि ना ।
कृष्णवर्त्मा दुराचारे त्रिर्ना चन्द्रे च पावके ॥१५५४॥
कृष्णवृन्ता तु पाटल्यां माषपर्णाह्वयौषधौ ।
कार्ष्मर्ये च स्त्रियां ना तु कृष्णवृन्तः कुलत्थके ॥१५५५॥
कृष्णसर्पस्तु कृष्णेऽहौ द्वयोर्दर्वीकरान्तरे ।
कृष्णसारा शिंशपायां ना स्नुह्यां द्वे मृगान्तरे ॥१५५६॥
कृसरस्त्विङ्गुदितरौ मिश्रवर्णान्तरे पुमान् ।
त्रिस्तद्वति कशेर्वाख्ये तु क्लीबं वारिगुल्मके ॥१५५७॥
सिततण्डुलमाषैस्तु यवाग्वां कृसरा त्रिषु ।
केतः पुमान्स्यादिच्छायां तथा चिह्ननिवासयोः ॥१५५८॥
केतनन्तु ध्वजे गेहे चापे चोपनिमन्त्रणे ।
अकार्यकृत्यदेहेषु संकेतस्थान एव च ॥१५५९॥
केतुर्ध्वजे च चिह्ने च ना प्रज्ञोत्पातरश्मिषु ।
केतुमान्केतुयुक्ते त्रिश्छन्दोभेदे स्त्रियां मता ॥१५६०॥

केतुमत्युदिताच्छन्दोन्तरे त्रिस्तु सकेतुके ।
केतुमाला नृभूदेशभेदे तीर्थान्तरे स्त्रियाम् ॥१५६१॥
पुमानाग्नीध्रतनये क्लीबं वर्षान्तरे भवेत् ।
केद्रो वृक्षभेदेऽथ त्रिषु स्यादेषके करे ॥१५६२॥
केदारो ना शिवेऽथाऽस्त्री शालिक्षेत्रालवालयोः ।
पुण्यस्थानविशेषे च क्षेत्रे भूम्यन्तरेऽपि च ॥१५६३॥
केनारः कुम्भिनरके शिरःकापालसंधिषु ।
केरलास्तु नृभूम्नि स्युर्दक्षिणापथवर्त्तिनि ॥१५६४॥
नीवृद्भेदेऽथ तद्देशसम्भूतेषु नृषु द्वयोः ।
तद्राजे तु पुमाञ्ज्ञेयः केरलः स्त्री तु केरली ॥१५६५॥
तद्राजन्यस्त्र्यपत्ये स्यात्तथा स्याद्भेषजान्तरे ।
त्रिषु केलिकिलः क्रीडाशीले ना तु विदूषके ॥१५६६॥
कूष्माण्डाख्ये शिवगणे हेरम्बस्य प्रियङ्करे ।
केवलस्तु त्रिरेकाकिकृत्स्नयोरवधारिते ॥१५६७॥
ज्ञाने तु पूर्णे क्लीबं स्यान्निर्णये चाऽवधारणे ।
केवलस्तु पुमानेष कुहने परिकीर्त्तितः ॥१५६८॥
केशः स्यात्पुंसि वरुणे ह्रीबेरे कुन्तलेऽपि च ।
केशपाशी तु चूडार्थे स्त्री ना केशकलापके ॥१५६९॥
केशरस्तु हरौ पुंसि द्वे छागे त्रिषु तूत्कटे ।
केशवः केशिनि त्रि स्याद्विष्णुपुन्नागयोः पुमान् ॥१५७०॥
त्रिः केशवप्रियो योगे पुंसि वेङ्कटपर्वते ।
स्त्री केशवानुजा दुर्गादेव्यां योगे यथायथम् ॥१५७१॥
क्ली केशवायुधं विष्ण्वायुधे च रथचक्रके ।
केशी केशवति त्रि स्यात्पुँल्लिङ्गो दानवान्तरे ॥१५७२॥
केशिनी तु भवेच्चोरपुष्पीस्तम्बे स्त्रियामियम् ।
केशी स्त्रियां स्याच्चूडायां केशः पुंसि शिरोरुहे ॥१५७३॥
किरणे च भगे चैव ह्रीबेरे च नपुंसकम् ।
केसरस्त्वस्त्रियां पुष्पकिञ्जल्केऽप्यश्वसिंहयोः ॥१५७४॥

सटे च मातुलुङ्गाख्यफलस्यान्तर्द्रवास्पदे ।
सूक्ष्मकेशे रामठेऽथ वकुले नागकेसरे ॥१५७५॥
पुन्नागे वेङ्कटाख्ये ना पर्वते केसरा पुनः ।
कार्पास्यां स्यात्स्त्रियां क्ली तु प्रसवेऽत्रोक्तभूरुहाम् ॥१५७६॥
केसरी तु पुमान्सिंहे मातुलुङ्गे तुरङ्गमे ।
पुन्नागे चाप्यथो भेद्यलिङ्गः केसरवत्यसौ ॥१५७७॥
कैटभोऽसुरभेदे स्याद्दुर्गादेव्यां तु कैटभी ।
कैडर्यस्तु पुमान्निम्बे कट्फलाख्ये च पादपे ॥१५७८॥
मदनाख्ये द्रुमेऽथैषान्तरूणाम्प्रसवे नपि ।
कैतवं कपटे द्यूते नपुंसकमुदीरितम् ॥१५७९॥
कैरवः कितवे शत्रौ तथा पुँल्लिङ्ग इष्यते ।
कैरवं कुमुदे क्लीवं चन्द्रिकायां तु कैरवी ॥१५८०॥
किरातसम्बन्धिनि तु कैरातं त्रिषु कीर्त्तितम् ।
कैराती तु स्त्रियामूर्ध्वाऽधोगतौ क्षिप्रपत्रिणः ॥१५८१॥
कैवल्यं केवलत्वे च मोक्षे चाऽपि नपुंसकम् ।
कैशिकी नाट्यवृत्त्यन्तरे स्त्री क्ली केशवृन्दके ॥१५८२॥
कोकश्चक्रे वृके ज्येष्ठ्यां खर्जूरीद्रुमभेकयोः ।
कोकः कोकीवृके भेके चक्रवाकेऽपि च द्वयोः ॥१५८३॥
पुमांस्तु कोक आदाने ज्येष्ठ्यां खेर्जूरिकातरौ ।
क्लीवं कोकनदं रक्ताऽब्जे रक्तकुमुदेऽपि च ॥१५८४॥
कोकिलः पक्षिभेदे द्वे ना तु तूले प्रकीर्त्तितः ।
कोटकः कुट्टितर्येष त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥१५८५॥
कोटिः स्त्री चापमात्रेऽश्रौ प्रकर्षे शकलेऽपि च ।
चापाग्रे च तथा संख्याभेदे लक्षशतात्मनि ॥१५८६॥
स्त्री कोटिका भवेत्कृष्णे मण्डूके श्वेतवक्त्रके ।
कोटिरः पुंसि नकुले शक्रगोपकशक्रयोः ॥१५८७॥
कोटिवर्यम्पुरे देवीकोटनाम्नि नपुंसकम् ।
स्त्री कोटिवर्षा स्पृक्कायां योगार्थे तु यथायथम् ॥१५८८॥

कोट्टङ्गः स्याद्द्वयोः क्षुद्रे मृगे जन्तुधराऽभिधे।
इन्द्रकोशाख्याऽवयवे पुंस्ययं वेश्मनो मतः ॥१५८९॥
कोट्टारो नरके कूपे पुष्करिण्याश्च पाटके।
कोणो वाद्यप्रभेदे स्यादेकदेशे गृहादिनः ॥१५९०॥
शनैश्चरे चौलगुडे शब्दे कोणा तु नप्स्त्रियोः।
नाट्यवादनभेदे द्वे कोणः कोणीति सैरिभे ॥१५९१॥
कोणिका तु स्त्रियां नीडे कोणितर्येष भेद्यवत्।
कोथो ना नेत्ररोगस्य भेदेऽथ शठिते त्रिषु ॥१५९२॥
कोदण्डं वेणुचापे च चापे चतुररत्निके।
धनुर्मात्रेऽपि च क्लीवं पुंसि स्यान्नोवृदन्तरे ॥१५९३॥
कोमलं क्ली जले स्वर्गे ना मृदुन्येष वाच्यवत्।
कोरो वृक्षाङ्कुरे बालकुसुमे च पुमान्मतः ॥१५९४॥
कोरकोऽस्त्री कुड्मले स्यात्कक्कोलकमृणालयोः।
अथाभिधेयवत्प्रोक्तः शब्दकारिणि कोरकः ॥१५९५॥
कोलं व्योषेऽर्धकर्षे च तक्कोले बदरीफले।
शुण्ठ्यां चव्ये तु कोला पिप्पल्यां शस्त्रे पुरान्तरे ॥१५९६॥
कोलः प्लवेशनोशित्रेऽङ्कपालौ भेलकौषधे।
द्वे त्वाखौ सूकरे चाथ खञ्जे कोलस्त्रिषु स्मृतः ॥१५९७॥
कोलकम्मरिचे क्लीवं कक्कोले चाथ कोलिका।
द्रुतद्रुमारोहशीले जन्तौ मूषिकसन्निभे ॥१५९८॥
निर्विषाहिप्रभेदे च स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता।
कोशोऽस्त्री कुड्मले पात्रे दिव्ये खड्गपिधानके ॥१५९९॥
जातिकोशेऽर्थसङ्घाते पेश्यां शब्दादिसंग्रहे।
पुस्तके वेष्टकद्रव्ये शस्त्रे प्रजननेऽपि च ॥१६००॥
वृषणे कृमिनीडे च कौशेयप्रकृतावपि।
कृताकृते हेमरूप्ये पद्यव्रज्यावलावपि ॥१६०१॥
अरन्ध्रे चापिरन्ध्रे च स्त्री तु कोश्यल्पकोशके।
वारिवाहे तु न पुमानेष कोशः प्रकीर्त्तितः ॥१६०२॥

कोशकस्तु पुमानेष कीर्त्तितः पर्वतान्तरे ।
क्ली तु कोशफलं जातिफले तक्कोलकेऽपि च ॥१६०३॥
स्त्री तु कोशफला राजकोशातक्यां प्रकीर्त्तिता ।
कोशातक्यान्तथा तिक्तकोशातक्यामपीष्यते ॥१६०४॥
कोशिका तु स्त्रियां दीपाधारे स्यान्मल्लिकाभिधे ।
कोष्ठो न स्त्री कुसूलेऽन्तःकुक्षावन्तर्गृहेऽपि च ॥१६०५॥
कोसला मध्यदेशस्थे नीवृद्भेदे नृभूमनि ।
मुनौ ना कोसलः श्यामपाण्डरे त्रि तु तद्वति ॥१६०६॥
कोहली तु स्त्रियां ज्ञेया कूष्माण्डाख्यलतान्तरे ।
भृशं मुखरकन्यायां कूष्माण्डप्रसवे तु नप् ॥१६०७॥
आवेशभाजि तु गृहशुनके कोहलो द्वयोः ।
मर्त्त्यजात्यन्तरेऽम्बष्ठ्यां वैश्याज्जाते तथा मतः ॥१६०८॥
कोहलो वाद्यभेदे ना नाट्यशास्त्रप्रवक्तरि ।
कोकिलोऽक्ली विधिभिदि त्रिस्तु कोकिलयोगिनि ॥१६०९॥
कौकूटिको दाम्भिके त्रि स्याच्चादूरेरितेक्षणे ।
कौकृत्यमनुतापे स्यादयुक्तकरणेऽपि च ॥१६१०॥
कौक्कुटं क्लीबमायासे त्रि तु कुक्कुटयोगिनि ।
कौणपो नरके ना द्वे राक्षसे त्रि तु यौगिके ॥१६११॥
कौतुकम्मङ्गले क्लीबं हर्षनर्मोत्सवेषु च ।
विवाहसूत्रे विषयभोगे कामे कुतूहले ॥१६१२॥
कौन्ती हरेणौ स्त्री कुन्तसम्बन्धिनि तु भेद्यवत् ।
कौपीनं क्ली गुह्यकीराकार्यकक्षापुटेष्वपि ॥१६१३॥
कौमुदः कार्मुके ना स्यात्पूर्णिमायाश्च कौमुदी ।
स्त्रीलिङ्गे चन्द्रिकायां चाथ त्रिः कुमुदयोगिनि ॥१६१४॥
कौम्भः कुम्भाश्रिते त्रि स्यात्कौम्भन्त्वाज्ये दशाब्दिके ।
कौलटेयः कौलटेरो नृस्त्रियोर्बन्धकीसुते ॥१६१५॥
सुतस्तु सत्या भिक्षुक्या अटन्त्याः स्यात्कुलानि यः ।
तस्मिन्कौलटिनेयाख्ये कुलटायास्सुतेऽपि च ॥१६१६॥

कौलीनं लोकवादे च युद्धे पश्वहिपक्षिणाम् ।
अपवादे कुलीनत्वे गुह्यजन्मकुकर्मसु ॥१६१७॥
कौलेयकः शुनि द्वे स्यात्कुलीने तु त्रिषु स्मृतः ।
कौशं कुशस्थलपुरे वाच्यवत्तु कुशाश्रिते ॥१६१८॥
कौशिको गुग्गुलौ चेन्द्रे ना द्वे तु कुशिकात्मजे ।
व्यालग्राहिण्युलूके च नकुले च प्रकीर्त्तितः ॥१६१९॥
कौशिकं क्ली मज्जधातौ कौशिकी तु स्त्रियामियम् ।
पार्वत्यां लिच्छविस्थे च कीर्त्तिता सरिदन्तरे ॥१६२०॥
कौसला स्यादयोध्यायां त्रिस्तु कोसलयोगिनि ।
कौसुम्भन्तु कुसुम्भाञ्जने कुसुम्भेऽप्यरण्यजे ॥१६२१॥
क्रकचः करपत्रेऽस्त्री ग्रन्थिलाख्यतरौ पुमान् ।
क्रकरस्तु करीरद्रौ दीनक्रकचयोश्च ना ॥१६२२॥
द्वयोस्तु पक्षिभेदेऽसौ क्रकरः परिकीर्त्तितः ।
क्रतुर्मुन्यन्तरे यज्ञधीसंकल्पक्रियासु ना ॥१६२३॥
क्रन्दनं क्ली क्रन्दितवद्रोदनाह्वानयोर्मतम् ।
क्रमोऽङ्घ्रौ परिपाट्यां च वेदपाठान्तरे विधौ ॥१६२४॥
क्रान्तौ स्थानकभेदे च द्वे त्वाख्वाह्वयमूषिके ।
क्रमणश्चरणे क्रान्ते क्रमणो द्वे तुरङ्गके ॥१६२५॥
क्रमुकः पट्टिकालोध्रे ब्रह्मदारुद्रुमेऽपि च ।
पूगद्रुमे भद्रमुस्ते क्रमुकं तु नपुंसकम् ॥१६२६॥
प्रसवेऽप्युक्तवृक्षाणान्तथा कार्पासिकाफले ।
क्रमेलको द्वयोरुष्ट्रे निष्ठ्यादुग्रीसुतेऽपि च ॥१६२७॥
क्रव्यादः प्रेतदाहाग्नौ त्रिर्मांसादे द्वि राक्षसे ।
क्रिमिर्ना भूचरे क्षुद्रजन्तुभेदे च लाक्षिके ॥१६२८॥
द्वे तूर्णनाभे करणीवैदेहकसुतेऽपि च ।
क्रिमिघ्नो ना विडङ्गे त्रिः क्रिमिहन्तर्यमानुषे ॥१६२९॥
क्रिमिजं स्यादलक्तेप्यगुरौ क्ली त्रिस्तु यौगिके ।
क्रिमिरो ना भवेद्वर्णे सितलोहितमिश्रिते ॥१६३०॥

त्रि तद्वति स्त्री क्रिमिरा मृगभेदे बिलेशये ।
क्रिया स्त्री निष्कृतौ शिक्षाचिकित्सोपायकर्मसु ॥१६३१॥
करणारम्भपूजासु चेष्टायां सम्प्रधारणे ।
प्रतिष्ठायां च राशौ तु मेषाख्ये ना क्रियो मतः ॥१६३२॥
क्रियाकारः संविदि च क्रियायाः करणे पुमान् ।
क्रीडा नर्मणि लीलायामज्ञानेऽपि मता स्त्रियाम् ॥१६३३॥
क्रुखा द्वे क्रोष्टुबकयोः शिवायां क्रुश्वरी स्त्रियाम् ।
क्रुष्टः सामस्वराणां स्यात्सप्तानामादिमे पुमान् ॥१६३४॥
रुदिते क्ली त्रि तु क्रुष्टिक्रियायाः कर्मतां गते ।
क्रूरोऽभिधेयवत्क्रुद्धे दरिद्रे कठिनोष्णयोः ॥१६३५॥
घोरेऽपि च नृशंसे च गुणमात्रे तु पुंस्ययम् ।
क्रूरा स्त्री बदरीकण्टकार्योः क्रूरं तु कीकसे ॥१६३६॥
क्रूरदृक् पिशुने वाच्यलिङ्गः पुंसि शनैश्चरे ।
क्रेणिः स्त्री विक्रये काले क्रियन्तश्चिच्च तन्वते ॥१६३७॥
क्षेत्रादेः फलभोगाय दत्त्वा किञ्चित्परिग्रहे ।
क्रोडं कर्षे तथोत्सङ्गे क्रोडः क्रोडी च सूकरे ॥१६३८॥
क्रोडः क्रोडा चोरसि स्यात्क्रोडो ना शनिरक्षसोः ।
क्रोधनो द्वे शुनि त्रिस्तु कोपे शीले नपि क्रुधि ॥१६३९॥
क्रोशं सामान्तरे क्रोशो योजनार्धे च क्रोशने ।
क्रोष्टा क्रोष्ट्री शृगाले द्वे क्रोष्ट्री तु स्यात्स्त्रियामियम् ॥१६४०॥
लाङ्गल्याख्यौषधे क्षीरविदार्याख्ये च भेषजे ।
क्रौञ्चो द्वीपे तृतीयेऽस्य जम्बूद्वीपस्य ना गिरौ ॥१६४१॥
तन्नाम्न्यथ क्ली स्यात्सामान्तरेऽथ क्रुङ् खगे द्वयोः ।
सम्बन्धिमात्रे तु क्रुञ्चः क्रौञ्चः स्याद्वाच्यलिङ्गकः ॥१६४२॥
क्रौञ्चादनं तु पिप्पल्यां चिञ्चाटकमृणालयोः ।
क्लीतकं क्ली करञ्जस्यैकबीजे मधुरौषधे ॥१६४३॥
क्लीतकी तु स्त्रियामेषा नीलिसंज्ञौषधे स्मृता ।
क्लीबोऽस्त्रियां मतः षण्ढे त्रिर्निर्वीर्ये च निर्बले ॥१६४४॥

क्लेदो मुखप्रसेके च स्यात्पुंस्योषधिचन्द्रयोः ।
क्लेदुः क्षेत्रे शरीरे च भङ्गे चन्द्रे पुमान्मतः ॥१६४५॥
क्लेशो दुःखेऽपि कोपेऽपि व्यवसायेऽपि दृश्यते ।
क्लेशकस्तु यमे नाऽथ क्लेष्टरि क्लेशितर्यपि ॥१६४६॥
तथा क्लेशयितर्येनं भेद्यलिङ्गं प्रचक्षते ।
क्वथः स्यादतिदुःखेऽपि निष्पाकेऽपि द्रवस्य च ॥१६४७॥
क्षः संवर्त्ते राक्षसे च नरसिंहे च विद्युति ।
क्षेत्रे नाशे क्षेत्रपाले पुमानेष प्रकीर्त्तितः ॥१६४८॥
क्षणस्त्ववसरे मध्ये पारतन्त्र्ये तथोत्सवे ।
मुहूर्त्ते षष्ठभागे च नाड्याः कालेऽतिसूक्ष्मके ॥१६४९॥
निर्व्यापारस्थितौ पुंसि व्यापारे चाऽपि पर्वणि ।
क्षणदो गणके रात्रौ क्षणदा क्षणदञ्जले ॥१६५०॥
क्षणिकः क्षणमात्रस्थायिनि त्रिः क्षणवत्यपि ।
क्षणिका तु स्त्रियामेषा सौदामन्यामुदीरिता ॥१६५१॥
क्षतं व्रणे क्ली क्षणने लग्नात्षष्ठे च राशिके ।
त्रिलिङ्गं पुनरेतत्स्यात्खण्डिते च हते तथा ॥१६५२॥
क्षत्ता ना सारथौ द्वाःस्थे दूते मुसलरुद्रयोः ।
वेधस्यथ क्षत्रियायां पारधैनुकसंज्ञकः ॥१६५३॥
शूद्राज्जातो योऽत्र केचिदन्ये त्वायोगवाह्वये ।
वैश्यायां जनिते शूद्रादन्ये पारशवाह्वये ॥१६५४॥
ब्राह्मणादूढशूद्रायां जाते प्रेष्यासुते द्वयोः ।
वाच्यवत्तु[1] निवृत्तेप्यविनीतेऽपि मृते तथा ॥१६५५॥
क्षत्रन्तु स्याद्धने तोये क्षत्रिये च नपुंसकम् ।
द्वे क्षत्रियः स्याद्राजन्ये क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि ॥१६५६॥
जातौ स्त्रीत्वेऽथ पुंयोगे क्षत्रियीति स्त्रियां भवेत् ।
क्षपा स्त्रियां भवेद्रात्रौ धान्यस्तम्बे तु ना क्षपः ॥१६५७॥
गोऽजाऽविमहिषाणाञ्चात्यार्द्रच्छगणके जले ।
क्षमा क्षान्तिपृथिव्योः स्त्री त्रिषु योग्यसमर्थयोः ॥१६५८॥

---

१. नियुक्ते वा ।

नार्य्ये हिते च क्लीबे तु क्षमं युक्तार्थकम्मतम् ।
क्षयस्त्वपचये कुक्षौ कल्पान्ते राजयक्ष्मणि ॥१६५९॥
मन्दिरे च निवासे च हिंसायां गमनेऽपि च ।
क्षरो धाराधरे पुंसि सलिले तु नपुंसकम् ॥१६६०॥
ऋतौ प्रावृट्समाख्ये स्त्री क्षरी क्षरितरि त्रिषु ।
क्षवः क्षुते राजिकायां कासे चापि पुमान्मतः ॥१६६१॥
क्षवथुस्तु क्षुते कासे पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
क्षामस्तृणाग्नौ ना क्षीणे त्रिषु क्षामा स्त्रियाम्भुवि ॥१६६२॥
क्षारः स्यात्स्वर्जिकाक्षारे गुडे काचाख्यमृद्यपि ।
क्षरणे भस्मनि तथा धूर्त्ते च लवणे पुमान् ॥१६६३॥
संजाते मिश्रणात्त्रिस्तु तद्वत्येष प्रकीर्त्तितः ।
रसे च तिक्तलवणयोगोत्थे त्रि तु तद्वति ॥१६६४॥
क्षारकः पक्षिमत्स्यादिपिटके पुष्पजालके ।
क्षरितृक्षारयित्रोस्तु भेद्यवत्क्षारको मतः ॥१६६५॥
क्षारितः स्राविते क्षारे चाऽभिशस्तेऽपि च त्रिषु ।
क्षालनोऽरत्निके षष्ठे यस्य यूपस्य सप्त च ॥१६६६॥
दश चारत्नयोर्मानं तस्य स्त्रीक्लीबयोः पुनः ।
क्षालनं क्षालना चेति कृतौ क्षालयतेर्भवेत् ॥१६६७॥
क्षितिर्जने निवासे स्त्री कालभे च क्षये भुवि ।
क्षित्वा ना केशवे वायौ क्षित्वरी स्त्री सरिन्निशोः ॥१६६८॥
क्षिपण्युस्तु पुमान्देहे सुरभौ वाच्यलिङ्गकः ।
क्षिपण्युस्तडिति स्त्री ना वसन्तार्थायुधेऽनिले ॥१६६९॥
क्षिप्रं तु पादाङ्गुष्ठस्य तर्जन्याश्चान्तरे न पुम् ।
असत्त्वेऽपि च शीघ्रार्थे त्रि तु स्यात्सत्त्वगामि चेत् ॥१६७०॥
क्षियाक्षये तथाचाराऽतिक्रमे च स्त्रियां मता ।
क्षीरं क्ली सलिले दुग्धेऽन्येर्धर्चादिष्वधीयते ॥१६७१॥
क्षीरशुक्ला विदार्यां स्त्री ना तु शृङ्गाटकाह्वये ।
कन्दार्थजलजस्तम्बे यौगिके लिङ्गमर्थतः ॥१६७२॥

क्षीराब्धिजन्तु सामुद्रलवणे मौक्तिकेऽपि च ।
पुमांस्तुषारकिरणे कमलायां तु योषिति ॥१६७३॥
क्षीराशस्तु द्वयोर्हंसे क्षीरस्य त्वाशके त्रिषु ।
क्षीरिको राजिलाहौ द्वे क्षीरिका तु स्त्रियामियम् ॥१६७४॥
दुग्धिकासंज्ञकस्तम्बे फलेऽप्यक्षाख्यपादपे ।
क्षुणस्त्रिषु स्यादुन्मत्ते क्षोभक्रोधरुजासु ना ॥१६७५॥
क्षुद्रो दरिद्रे कृपणे त्रि क्रूरेऽल्पनिकृष्टयोः ।
क्षुद्र इत्येष पुँल्लिङ्ग उत्सवे परिकीर्त्तितः ॥१६७६॥
क्षुद्रकम्फाणिताख्यायां गुडस्य विकृतौ मतम् ।
तथैव कूप्यलवणे द्वयोस्तु क्षत्रियान्तरे ॥१६७७॥
क्षुद्रा व्यङ्गानटीकण्टकारिकासरघासु च ।
चाङ्गेरीवैश्ययोर्हिंस्रामक्षिकामात्रयोरपि ॥१६७८॥
क्षुप्रं कण्टकिगुल्मे च तुहिने च नपुंसकम् ।
क्षुमाऽतसीनीलिकयोः स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ॥१६७९॥
क्षुरो नापितशस्त्रे ना कोकिलाक्षे च गोक्षुरे ।
क्षुरकः कोकिलाक्षे च गोक्षुरे तिलकद्रुमे ॥१६८०॥
क्षुरप्रो नाऽर्धचन्द्राख्यशस्त्रेऽथाश्वान्तरे द्वयोः ।
क्षुल्लकोऽल्पे च नीचे च दरिद्रेचाभिधेयवत् ॥१६८१॥
क्षेत्रन्तीर्थे क्षितौ व्योम्नि शरीरे योनिवृन्दयोः ।
केदारदारागारेषु नक्षत्रे पुरि राशिषु ॥१६८२॥
क्षेत्रज्ञ आत्मन्यथ स दक्षक्षेत्रविदोस्त्रिषु ।
क्षेत्रिको ना तुरुष्काख्यनिर्यासे क्षेत्रिणि त्रिषु ॥१६८३॥
क्षेत्रिया क्षुद्रधान्ये स्याद् गवीधुरिति विश्रुते ।
त्रिस्त्वयं दुष्प्रतीकारव्याधादौ धान्यवप्रजे ॥१६८४॥
निराकार्यतृणे पारिदारिके यत्पुनर्विषम् ।
देहान्तरे संक्रमय्य चिकित्स्यं तत्र चोच्यते ॥१६८५॥
क्षेत्र्यं त्रि क्षत्रसाधौ स्याल्लवणे क्ल्यूषरोद्भवे ।
क्षेपो विलम्बावहेलानिन्दाप्रेरणलेपने ॥१६८६॥

क्षेपणी जालभिन्नौकादण्डयोः प्रेरणे तु नप् ।
पादाङ्गुष्ठाङ्गुलीमध्ये क्षेपणम्पुन्नपुंसकम् ॥१६८७॥
क्षेपणीयो भिण्डिपाले ना क्षेप्तव्ये त्वयं त्रिषु ।
क्षेमश्चण्डौषधौ क्षेमा चण्ड्यां क्षेमं त्रि निर्भये ॥१६८८॥
अस्त्री क्षेमं शुभे मुक्तौ तथा प्राप्तस्य रक्षणे ।
क्षोणी तु मेखलायां स्त्री मौर्व्यां भुवि च कीर्त्तिता ॥१६८९॥
द्यावापृथिव्योस्तु क्षोणी इति द्वित्वे प्रयुज्यते ।
क्षोदो जले चूर्णने च रजस्यपि पुमान्मतः ॥१६९०॥
क्षोभ्यन्नपुंसके वङ्गे क्षोभणीये तु भेद्यवत् ।
क्षौद्रम्मधुनि पानीये क्षुद्रयोगिनि तु त्रिषु ॥१६९१॥
क्षौममस्त्री दुकूलेऽट्टे क्षौमन्तु स्यान्नपुंसकम् ।
अतसीजे च शणजे तथा वल्कलजेंऽशुके ॥१६९२॥
क्ष्माशब्दो भुवि नद्यां च स्त्रीलिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
क्ष्वेडः कर्णामये राजकोशातक्यां ध्वनौ विषे ॥१६९३॥
क्ष्वेडं रक्तार्कपर्णस्य फले घोषसुमेऽप्यथ ।
दुरासदे च कुटिले क्ष्वेडः स्यादभिधेयवत् ॥१६९४॥
क्ष्वेडा वंशशलाकायां योधसिंहध्वनावपि ॥१६९४२ ॥

ख

खमिन्द्रिये पुरे क्षेत्रे शून्ये बिन्दौ विहायसि ।
संवेदने देवलोके नक्षत्रे छिद्रगेहयोः ॥१६९५॥
अभ्रके ब्रह्मणि क्ली स्यात्खा तु कूपे भवेत् स्त्रियाम् ।
खकणीनी तु दुर्गायां चिल्लपक्षिस्त्रियामपि ॥१६९६॥
खगः पुंसि रवौ वायौ ग्रहे देवे शरे रणे ।
चातके पक्षिमात्रे च द्वे त्रिर्व्योमादिगामिनि ॥१६९७॥
खगवक्त्रस्तु लकुचे खगाऽस्ये तु यथायथम् ।
खगासनस्तु विष्णौ च तथा स्यादुदयाचले ॥१६९८॥

खगेन्द्रो गरुडे गृध्रे तथा राजान्तरे मतः ।
खचरो ना रवौ मेघे वायौ स्याद्रूपकान्तरे ॥१६९९॥
द्वे तु विद्याधरे रक्षःपक्षिणोर्वेसरेऽपि च ।
खचितं तु मणौ लोहविद्धे स्यादभिधेयवत् ॥१७००॥
तथा स्यादुद्धृतस्नेहे घृतहीने च दध्नि नप् ।
खजस्तु मन्थने क्षोभे दर्वीमन्थानयोः पुनः ॥१७०१॥
खजस्तु पुंसि मन्थाने त्रिषु व्योमादि खाऽर्थजे ।
खजकः स्याद्घृते चापि मन्थानेऽपि पुमानयम् ॥१७०२॥
खजकः खजिका[1] चेति द्वयोस्स्याद्रसपाचके ।
खजा द्वे मरणे तु स्त्री करे च प्रसृताङ्गुलौ ॥१७०३॥
खजाको ना मन्थदण्डे द्वे खगे क्ली विहायसि ।
शरीरे च खजाका तु स्त्री दर्व्यामसतीस्त्रियाम् ॥१७०४॥
खञ्जा छन्दःप्रभेदे स्त्री खञ्जः खञ्जी च विप्रतः ।
अपत्येऽन्तावसायिन्याः खोडे त्रि लशुने तु ना ॥१७०५॥
खञ्जनम्पङ्गुगमने खञ्जरीटे पुनर्द्वयोः ।
खञ्जनी खञ्जरीटे द्वे स्त्री सर्पप्याङ्गतौ तु नप् ॥१७०६॥
खञ्जरीटी गतिभिदि स्त्री द्वे खञ्जनपक्षिणि ।
खटोऽन्धकूपककफयोः प्रहारान्तरटङ्कयोः ॥१७०७॥
हले छदिस्तृणे चापि स्यात्सुगन्धितृणान्तरे ।
खटको घटके स्त्रा तु कठिन्यां खटिका मता ॥१७०८॥
तृणभित्कर्णशष्कुल्योः खटिकाऽ(र्ध)मुद्रिते करे ।
करे मुद्राविशेषे च द्वयोः स्यात्कगनिर्मिते ॥१७०९॥
खटखादक एष द्वे काकजम्बुकजन्तुषु ।
काचपात्रे पुमानेष घस्मरे तु मतस्त्रिषु ॥१७१०॥
खटी तु खटिकाधातौ स्त्रियामेव प्रकीर्त्तिता ।
खट्टिकः सैनिके द्वे ना महिषी क्षीरफेनके ॥१७११॥
खट्वा पर्यङ्क आचार्यासने दोलौषधीभिदोः ।
आयुर्वेदप्रसिद्धे च व्रणबन्धनयन्त्रके ॥१७१२॥

---

१. खजकी वा ।

खट्वाङ्गोऽस्त्री वृक्षभेदे पृष्ठास्थनि चितेन्धने ।
दिलीपनृपतौ पुंसि खट्वाङ्गी तु लतान्तरे ॥१७१३॥
खडस्तु खण्डने तक्रशाकेऽथाऽस्त्री तृणान्तरे ।
खडकन्त्वर्गले क्लीबं कठिन्यां खडिका मता ॥१७१४॥
स्त्रियान्तु कठिनीधातौ खडीति परिकीर्त्तिता ।
खडूस्त्री मृतखट्वायां तथा स्याद्भूषणान्तरे ॥१७१५॥
खड्गो गण्डकश्रृङ्गासिबुद्धभेदशरेषु ना ।
द्वे गण्डकमृगे यादोभेदे च मकराभिधे ॥१७१६॥
खड्गकोशः पिधानेऽसेः खड्गाधारोऽपि कथ्यते ।
खड्गधेनुः स्त्रियामुक्ता छुरिका गण्डकस्त्रियोः ॥१७१७॥
खड्गारीटस्तु फलकाऽसिधाराव्रतधारिणोः ।
खड्गारीटः खड्गफले तथा स्यात्खड्गनर्त्तके ॥१७१८॥
खड्गिको महिषीक्षीरफेनासिधरसैनिके ।
खड्गी द्वे गण्डके मञ्जुघोषेऽथाऽसिधरे त्रिषु ॥१७१९॥
खण्डोऽस्त्री शकले नेक्षुविकारमणिदोषयोः ।
स्वादुपानान्तरे भेदे क्लीबन्तु लवणेऽब्धिजे ॥१७२०॥
खण्डन्तु खण्डिते भेद्यलिङ्गमेतत्प्रकीर्त्तितम् ।
अर्धे गुडविकारे च कश्चित्स्वादुद्रवेऽभ्यधात् १७२१॥
खण्डको लास्यभेदे ना नखहीननरे द्वयोः ।
खण्डधारा नृत्यभेदे कर्त्तर्याञ्च प्रकीर्त्तिता ॥१७२२॥
खण्डना कन्यकायां स्त्री स्फुटवैधव्यलक्ष्मणि ।
शास्त्रोक्तेरविग्राह्यायामपुम् खण्डयतेः कृतौ ॥१७२३॥
विसर्गे वञ्चने राजद्रोहादावपि सा मता ।
ना खण्डपरशुः खण्डे परशौ च महेश्वरे ॥१७२४॥
खण्डपर्शुः पर्शुरामे शङ्करे चूर्णलेपिनि ।
खण्डामलकराह्वोश्च भग्नदन्तगजे च ना ॥१७२५॥
अस्त्री तु खण्डलं खण्डे चीरवस्त्रे च कीर्त्तितम् ।
खण्डाभ्रमभ्रलेशे स्यात्तथा दन्तक्षतान्तरे ॥१७२६॥

खण्डिकस्तु हरेण्वाख्ये कलायाख्ये च धान्यके ।
भुजकक्षे गुडकृतिखण्डाध्येतर्यपीष्यते ॥१७२७॥
खण्डिका काष्ठखण्डे स्त्री कण्डिकायामपीष्यते ।
खण्डिता तु स्त्रियां प्राप्तृड्रात्रौ शकलिते पुनः ॥१७२८॥
वाच्यलिङ्गो विरहिते तस्य वाक्ये च खण्डितः ।
खण्डी खण्डवति त्रि स्याद्वनमुद्गे तु पुंस्ययम् ॥१७२९॥
तथा खण्डनकारे श्रीहर्षे भूमौ तु खण्डिनी ।
खतमालो भवेत्पुंसि धूमे चापि बलाहके ॥१७३०॥
खदतिर्भक्षणे स्थैर्ये हिंसायां च प्रकीर्त्तितः ।
खदिरस्त्वृषिभेदे च गायत्रीतरुशक्रयोः ॥१७३१॥
द्वे तु वृश्चिकभेदेऽयन्दुश्चिकित्स्यविषे मतः ।
स्त्रियां खदिरका लाक्षा गिरिभेदे पुमानयम् ॥१७३२॥
खदिरी स्त्री नमस्कारीसंज्ञे वल्ल्यन्तरेऽल्पके ।
खदिरी[1] शाकभेदे स्त्री ना चन्द्रे दन्तधावने ॥१७३३॥
शमीफला समाख्ये च जलशाकलतान्तरे ।
खद्योतोऽर्केऽग्निकीटे तु खद्योताऽक्ष्ण्यदक्षिणे ॥१७३४॥
खनको मूषिके द्वे स्यान्मर्त्त्यजात्यन्तरे तथा ।
राज्ञीमागधसम्भूते त्रि तु स्यादवदारके ॥१७३५॥
भूमिसंचितवित्तज्ञे सन्धिचौरे तथैव च ।
खनिः खनति धातौ ना स्त्री गर्त्ते चाऽऽकरे निधौ ॥१७३६॥
क्लीबं खनित्रं कुद्दाले खनित्री तु तपस्विनाम् ।
स्त्रियां विशाखिकासंज्ञे दण्डभेदे प्रकीर्त्तिता ॥१७३७॥
खपरस्तस्करे धूर्त्ते भिक्षाभाण्डकपालयोः ।
खपुरो ना पूगवृक्षे पूगपट्टे घटे तरोः ॥१७३८॥
निर्यासे भद्रमुस्तेऽथ बालाख्ये गन्धवस्तुनि ।
पुंनपुंमकयोरेतत्क्ली तु पूगफले स्मृतम् ॥१७३९॥
खरः शराख्यस्तम्बे ना ककुभाह्वयपादपे ।
रक्षोभेदे दशास्यस्य प्रवीरे दण्डनायके ॥१७४०॥

१. खदिरा वा ।

हविर्धानाख्यदेशस्य पुरस्ताद्दक्षिणस्य या ।
वितर्दिर्यज्ञभूमिष्ठा तस्यामुष्णगुणेऽपि च ॥१७४१॥
कठिनत्वे च कार्कश्ये रसभेदे च मिश्रणात् ।
जाते रसानां तिक्ताम्लकषायलवणात्मनाम् ॥१७४२॥
त्रिस्त्वेषामुष्णतादीनां गुणानान्द्रव्य आश्रये ।
एकैकस्य रसान्तानाञ्चतुर्णामपि मन्वते ॥१७४३॥
बार्हस्पत्ये पञ्चविंशे वर्षे स्याद्रासभे द्वयोः ।
वेसरे कुररे दैत्ये बके काके खरः खरी ॥१७४४॥
शुष्कपूगफले तु क्ली देवताडे स्त्रियां खरा ।
खरकुट्यपि शालायां वपनस्यापि यौगिके ॥१७४५॥
भवेत् खरगृहं रासभागारपटवेश्मनोः ।
खरच्छदो यौगिके त्रिर्नोर्ध्वमूलाह्वये तृणे ॥१७४६॥
खरच्छदो भूमिसहे कुन्दरेऽपि कटे पुमान् ।
स्त्रियां तु क्षुद्रघोल्याख्यलतायां स्यात् खरच्छदा ॥१७४७॥
द्वित्वे रक्षोभिदोरैक्ये धत्तूरे खरदूषणः ।
खरपत्रो मरुवके वेणुभेदे कुशान्तरे ॥१७४८॥
खरपत्रा तुलस्याञ्च शाखोटे शाकपादपे ।
क्लीबं खरमुखं भृङ्गवाद्ये त्रिषु तु यौगिके ॥१७४९॥
खराङ्गस्तु द्वयोर्भेके कर्कशाङ्गे तु भेद्यवत् ।
ग्रामणीभण्डिनाराचेऽप्युपधाने खरालिकः ॥१७५०॥
खरुर्हये स्मरे दर्पे नीतिभेदे रदे हरे ।
द्वयोर्मनुष्ये दृप्ते तु श्वेते मूर्खे खरे त्रिषु ॥१७५१॥
कार्मुकेऽपि खरुस्तु स्त्री कन्यायां या पतिंवरा ।
खर्जतिर्व्यथने चैव पूजने मार्जनेऽपि च ॥१७५२॥
खर्जनी यज्वनां कृष्णविषाणायां स्त्रियां मता ।
खर्जनन्तु नपि ज्ञेयं क्रियायां खर्जतेरिदम् ॥१७५३॥
खर्जुः कण्ड्वाञ्च खर्जूरीद्रुमे कीटान्तरे स्त्रियाम् ।
खर्जुरं रजते क्लीबं खर्जूरद्रौ तु खर्जुरः ॥१७५४॥

खर्जूर्विद्युति कण्ड्वां च स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
खर्जूघ्नोऽर्कद्रुमे चक्रमर्दधत्तूरयोरपि ॥१७५५॥
खर्जूरो ना परूषद्रौ खर्जूर्यस्यात्पभेदके ।
क्ली तु तत्प्रसवे चापि रजते हरितालके ॥१७५६।
खर्जूरन्नारिकेलास्थिगर्भसारेऽपि कीर्त्तितम् ।
द्वयोस्तु वृश्चिके प्रोक्तो भेद्यवत्तु खले मतः ॥१७५७॥
खर्परस्तु कपालांशे कपाले धूर्त्तचौरयोः ।
भिक्षापात्रे तथा छत्रे धातुभेदे तु खर्परी ॥१७५८॥
खर्बरः स्यात्कपालेऽपि भिक्षापात्रे करे पुमान् ।
खर्मन्तु पौरुषे क्लीवं तथा स्यात्कोषजांशुके ॥१७५९॥
खर्वं संख्यान्तरे नप् ना निधौ त्रि लघुनीचयोः ।
खर्विका पूर्णकल्पेन्दुपूर्णिमायाम्परे त्रिषु ॥१७६०॥
खलम्भूस्थानयोस्तक्रविशेषे क्वथिते च नप् ।
निष्पीडितरसे कल्के पिण्याकादावथ त्रिषु ॥१७६१॥
नीचे क्रूरे दुर्जने च पुंश्चल्यान्तु स्त्रियां खला ।
फलग्रहणदेशे तु क्षेत्रस्यास्त्री रणे तु ना ॥१७६२॥
धत्तूरेऽपि तमालेऽपि तयोस्तु प्रसवे नपि ।
कुलत्थे ना खलकुलः खलस्य तु कुले नपि ॥१७६३॥
खलतिस्त्रिषु खल्वाटे खल्लिटे चैन्द्रलिप्तिके ।
सूर्ये खलतिकश्चाद्रिभेदे त्रिषु तु चन्द्रिले ॥१७६४॥
खलिर्घनद्रवे द्रव्यभेदे च जलपाचिते ।
स्त्रियां खलीवत् पिण्याके तथोक्तः पिष्टतण्डुले ॥१७६५॥
खलिनी खलवृन्दे स्यात्तालपर्ण्यामपि स्त्रियाम् ।
खलीनोऽस्त्री तुरङ्गाणां मुखसंयमने तथा ॥१७६६॥
छिद्राकाशादिलीने तु खलीनं वाच्यवन्मतम् ।
खलु वाक्यविभूषायां जिज्ञासायाञ्च सान्त्वने ॥१७६७॥
वीप्सामाननिषेधेषु पूरणे पदवाक्ययोः ।
खल्या तु खलवृन्दे स्त्री खलाय तु हिते त्रिषु ॥१७६८॥

खल्लश्चर्मादिभस्त्रा स्यात्तथैवौषधिपेषणी ।
वस्त्रान्तरे चर्मचर्मपात्रगर्त्तेऽथ चातके ॥१७६९॥
द्वयोः खल्लोऽथ खल्ली स्त्री रुग्भेदे परिकीर्त्तिता ।
खल्लिका स्त्री ऋजीषे स्यात्खल्वाटे खल्लकस्त्रिषु ॥१७७०॥
खल्ली वस्त्रप्रभेदे स्याद्गर्त्ते चर्मणि चातके ।
खल्ली तु हस्तपादावमर्दनाख्यरुजि स्त्रियाम् ॥१७७१॥
खल्वो भेषजपेषण्यां धान्यभेदे तथा पुमान् ।
खशयस्तु द्वयोर्भेके त्रिस्तु खे शयितर्यसौ ॥१७७२॥
खषः खषी व्रात्यसुतशूद्रौढक्षत्रियाभवे ।
डोम्ब्यां चाण्डालतश्चापि जाते द्वे संकरान्तरे ॥१७७३॥
खष्पः कोपे बलात्कारे ना दुर्मेधसि तु त्रिषु ।
खसस्तु खर्ज्वाम्पुम्भूम्नि तु नृजात्यन्तरे खसाः ॥१७७४॥
तेषां जनपदेऽथ स्त्री गन्धद्रव्यान्तरे खसा ।
अथ खस्फटिकः सूर्यकान्तचन्द्राश्मनोर्मतः ॥१७७५॥
खाटिस्त्वसद्ग्रहेऽपि स्यात्किणे शवरथे स्त्रियाम् ।
खाण्डवः पिप्पलीशुण्ठी मुद्गयूषे रसे तथा ॥१७७६॥
मधुराम्लकयोगोत्थे कुरुक्षेत्रवनान्तरे ।
मधुराम्लकयोगोत्थरसभाजि तु वाच्यवत् ॥१७७७॥
खाण्डिकः स्याद्गुडवणिज्यपिच्छात्रे तथा पुमान् ।
खाण्डिकन्तु समूहे स्यात्खण्डिकानां नपुंसकम् ॥१७७८॥
खातं क्ली खनने पुष्करिण्यान्त्रिस्त्ववदारिते ।
क्वचित्खाता तडागेऽपि स्त्रियामेषा प्रयुज्यते ॥१७७९॥
खातकं खातिकचिति परिखाया न ना भवेत् ।
खात्रश्चोरकृते रन्ध्रे सरःकुद्दालतन्तुषु ॥१७८०॥
महाभयेऽप्यरण्येऽपि नपुंसकमुदाहृतम् ।
खादस्तु भक्षणे भोज्येऽथोत्तरस्थस्त्रिभक्षके ॥१७८१॥
खादको भक्षकेऽपि स्यादधमर्णे तथा त्रिषु ।
खादनस्तु पुमान्दन्ते क्लीबं भक्षणभोज्ययोः ॥१७८२॥

खाद्यस्तु खदिरे पुंसि भक्षणीये तु वाच्यवत् ।
खानं क्वचिद्भक्षणे स्यात्तुरुष्कनृपतौ तु ना ॥१७८३॥
खानकस्तु पुमांश्चौरे परिखायान्तु खानिका ।
खारिकस्तु त्रिषु क्रीते खार्या क्ली तु फलान्तरे ॥१७८४॥
खारिका तु स्त्रियां खारीपरिमाणे प्रकीर्त्तिता ।
खिङ्गारस्तु द्वयोः क्रोष्टौ ना खट्वाङ्गे किखीरके ॥१७८५॥
खिङ्गिरो ना वारिवाहे खट्वाङ्गे च द्वयोः पुनः ।
शिवाभेदे खिङ्गिरा तु बलभृत्ये च खिङ्गिरः ॥१७८६॥
खिदिरस्तापसे दीने त्रिर्भये नेन्द्रचन्द्रयोः ।
खिद्रः शशाङ्के खिद्रन्तु भवेद्विघ्नोपतापसोः ॥१७८७॥
खिद्रस्तु दीने व्याधौ च खिद्रं स्याद्भेदयन्त्रके ।
खिलोऽस्त्र्यप्रहते स्थाने परिशिष्टे खिलम्मतम् ॥१७८८॥
पुरणीयावकाशेऽपि दुरूहगणितेऽपि च ।
दुराग्रहे वेधसि च वाच्यवत्तु सदोषके ॥१७८९॥
खिल्यः पुञ्जे खिलक्षेत्राश्मनोस्त्रिस्तु खिलोद्भवे ।
खुण्डको ना ह्रस्वनालिकेरे ह्रस्वाल्पयोस्त्रिषु ॥१७९०॥
खुरः शफे शुक्तिसंज्ञभेषजेऽपि पुमान्मतः ।
खट्वाङ्गाऽवयवे बह्वादिपाठात्स्त्रियष्यते खुरी ॥१७९१॥
खुरको वङ्गभेदेऽपि नृत्यभेदे तिलेऽपि च ।
खुरप्रस्तु क्षुरप्रेऽपि बाणभेदे प्रकीर्त्तितः ॥१७९२॥
खुल्लस्त्रि क्षुल्लवत्क्षुद्रे ना तु स्याच्छुक्तिभेषजे ।
खेचरो द्वे दुश्चिकित्सविषे स्याद्वृश्चिकान्तरे ॥१७९३॥
विद्याधरे च त्रिषु तु वियच्चरसपक्षयोः ।
राक्षसे खेचरः प्रोक्तो ग्रहपारदयोस्तु ना ॥१७९४॥
तथैव नवसंख्यायां खेचरा मूर्च्छनान्तरे ।
खेचरी सिद्धिभेदेऽङ्गुलिमुद्रादुर्गयोरपि ॥१७९५॥
तथैव कर्णवलये स्यात्तुल्यार्थे तु खेचरम् ।
खेटोऽस्त्र्यल्पपुरे चर्मण्यद्रिनद्यन्तरस्थिते ॥१७९६॥

९–क

पुरेऽथ ग्रामभेदे ना ग्रामधानाह्वये कफे ।
मृगव्येऽप्यथ खेटः स्यात्कुत्सिते वाच्यलिङ्गकः ॥१७९७॥
बलरामगदायाङ्क्ली ना ग्रहे शस्त्रिणि तृणे ।
खेटकोऽस्त्री मतः खेटे खेटकं वसुनन्दके ॥१७९८॥
खेटकम्फलके ग्रामधानेऽथोत्त्रासके त्रिषु ।
खेटी तु नागरे चैव कामिन्यपि पुमान्मतः ॥१७९९।
खेदः पीडास्मरालस्ये खेदा वेधन्युदीरिता ।
खेदिस्तुरङ्गरश्मौ च किरणेऽपि पुमान्मतः ॥१८००॥
खेयन्तु परिखायां क्ली खनितव्ये त्रिषु स्मृतम् ।
खेलो वेणौ पुमान्खेला लीलायां स्त्री प्रकीर्त्तिता ॥१८०१॥
खेलनं खेलना क्रीडा शार्यां स्त्री खेलनी मता ।
खेलिरकेषुगीते ना स्त्री खेले द्वे मृगे खगे ॥१८०२॥
खोटस्त्रिपङ्गौ खोटी तु सल्लक्यां स्त्रीत्व इष्यते ।
खोडस्त्रिपुटके ना कुलाये खञ्जे त्वयन्त्रिषु ॥१८०३॥
खोलस्त्रिपङ्गौ खोलन्तु शिरस्त्रच्छत्रयोर्मतम् ।
खोलको ना पाकभेदे पूगकोशशिरस्त्रयोः ॥१८०४॥
वल्मीके चाथ काञ्च्यां स्त्री गीतसत्यां च खोलिका ।
खोल्कस्तु धूमकेतौ च ग्रहेऽपि च पुमान्मतः ॥१८०५॥
ख्यातिः ख्यारूपयोर्धात्वोर्नाऽथ कीर्त्तिधियोः स्त्रियाम् ।
सम्मतौ नाम्नि च क्रौञ्चद्वीपस्थसरिदन्तरे ॥१८०६॥

ग

गः पुंसि गरुडे नस्त्री गान्धारगुरुवर्णयोः ।
त्र्युत्तरस्थो गन्तृमात्रे न ना गतिप्रभेदके ॥१८०७॥
गगनं क्लीबमाकाशे सपर्यायं तथाभ्रके ।
गङ्गापुत्रस्तु भीष्मे ना स्यात्काशीघट्टपूजके ॥१८०८॥
द्वयोः संकरभेदेऽपि शवनिर्हारिणि स्मृतः ।
गच्छो वृक्षे कुटुम्बेऽपि श्रेढीसंख्यान्तरेऽपि च ॥१८०९॥

गजो द्वे वारणेऽथाऽष्टस्वपि हस्तयुगायतौ ।
वास्तुस्थानान्तरे पुंसि पार्श्वयोः प्रवणे गजः ॥१८१०॥
सूर्यानुगासुरभिदोर्गर्ते गजपुटाभिधे ।
तालभेदेऽप्यथ गजा गजी वीथ्याम्प्रकीर्त्तिता ॥१८११॥
रोहिण्यादित्रिकात्मा या पुनर्वस्वादिकाऽपि वा ।
गजच्छाया स्त्रियां सूर्यग्रहे योगान्तरे तथा ॥१८१२॥
कृष्णत्रयोदशीहस्तस्थिते सूर्ये मघायुते ।
इति लक्षणके चेभच्छाये तु क्लीस्त्रियोर्भवेत् ॥१८१३॥
गजता तु गजत्वेऽपि समूहे चाऽपि हस्तिनाम् ।
गजदन्तो हस्तिरदे गणेशे नागदन्तके ॥१८१४॥
करमुद्राविशेषेऽपि पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
गजप्रिया तरौ रम्भाभेदेऽपि गजवल्लभा ॥१८१५॥
गजस्कन्धो हस्तिसैन्ये चक्रमर्दे तथा पुमान् ।
गजारिस्तु पुमान्सिंहे शिवे वृक्षान्तरेऽपि च ॥१८१६॥
गजाशनोऽश्वत्थवृक्षे स्त्रियान्तु स्याद्गजाशना ।
सल्लक्याम्पद्मकन्देऽपि केचिदेताम्प्रचक्षते ॥१८१७॥
गजाह्वा गजपिप्पल्यां गजाह्वं हस्तिनापुरे ।
गजाह्वयं हास्तिनपुर्यथ नृभ्वस्य वासिषु ॥१८१८॥
गञ्जो खनौ सुरागेहे कोशे चाप्याकरेऽपि च ।
गञ्जः स्यात्पुंसि रीढायाम्भाण्डागारे तु न स्त्रियाम् ॥१८१९॥
ना पल्ल्यापणयोः क्वापि गञ्जाकिन्याम्पुनः स्त्रियाम् ।
गडो मीनेऽन्तराये च वृतौ खाते नृलिङ्गकः ॥१८२०॥
गडुः स्यात्पृष्ठगग्रन्थौ वैश्योरस्स्थकिणे तथा ।
घाटामस्तकयोर्मध्ये मांसपिण्डेऽप्ययम्पुमान् ॥१८२१॥
कुब्जे तु गडुपृष्ठान्यनाम्नि स्याद्वाच्यवद्गडुः ।
गडेरस्तु प्रस्रवणशीले स्यादभिधेयवत् ॥१८२२॥
अथ पुंसि प्रस्रवणभूमावेष प्रकीर्त्तितः ।
गणो बहुत्वे गणने धूनौ च प्रमथे व्रजे ॥१८२३॥

गुल्मतस्त्रिगुणे सैन्ये चण्डायामृषिभिद्यपि ।
गणकः पुंसि दैवज्ञे गणनाकर्त्तरि त्रिषु ॥१८२४॥
स्याद्गणाधिपतिः पुंसि शङ्करे च गजानने ।
गणिका यूथिकावैश्यातर्कारीभीषु कीर्त्तिता ॥१८२५॥
गणेरुः कर्णिकारद्रौ करिणीवेश्ययोः स्त्रियाम् ।
गण्डः कपोले गर्वे च वीथ्यङ्गे पिटकेऽपि च ॥१८२६॥
चिह्ने वीरे बुद्बुदे च हयकण्ठविभूषणे ।
ज्योतिःशास्त्रेषु ये योगाः सप्तविंशतिरीरिताः ॥१८२७॥
विष्कम्भप्रीतिरित्याद्यास्तेषामन्यतमेऽप्यसौ ।
चतुष्टये कपर्दानान्द्वे तु खड्गाह्वये मृगे ॥१८२८॥
गण्डकस्तु द्वयोः खड्गमृगे ना शिशुभूषणे ।
अवच्छेदेऽन्तराये च संख्याविद्याप्रभेदयोः ॥१८२९॥
अस्त्रियां तूपधानेऽथ गण्डकी सरिदन्तरे ।
गण्डशैलो ललाटे स्याच्च्युतस्थूलोपले गिरेः ॥१८३०॥
गण्डीरस्तु पुमान्कन्दजातिभेदे समष्ठिला ।
इति संज्ञान्तरं यस्य बहुभेषजसाधिते ॥१८३१॥
उपयोग्यद्रवद्रव्ये क्ली तु स्यात्तण्डुलीयके ।
चव्ये च स्त्री तु गण्डीरी विपन्नायां स्नुहि स्मृता ॥१८३२॥
गण्डूषा द्वे वक्त्रपूर्त्तौ तथोक्ता करिपुष्करे ।
आस्यरोध्रद्रवे तद्वत्प्रसृतोन्मितवस्तुनि ॥१८३३॥
गण्डोलस्तु पुमान्पिण्डे गजस्य मुखपार्श्वयोः ।
ऊर्ध्वप्रदेशयोश्चापि क्रिमिभेदे तु स द्वयोः ॥१८३४॥
गतन्तु क्ली गतौ ना तु प्रकारेऽथ च ढौकिते ।
ग्रामादौ ढौकितवति तथाऽतीतेऽपि वाच्यवत् ॥१८३५॥
गीतिप्रकृतिशब्देषु ये तालव्याः स्थिता अचः ।
तेषामपीति शब्दोऽयं विकारो यत्र गीयते ॥१८३६॥
गीतिकाले स शब्दोऽयञ्छन्दोगैरुच्यते गतः ।
गतिर्नाडीव्रणे मार्गेऽपि शब्दे सामगीतिगे ॥१८३७॥

उपायदर्शयोर्ज्ञाने प्रस्थाने शरणेऽपि च ।
गन्तव्ये पुण्यपापाभ्यां प्रागूर्ध्वादिक्रिया गतिः ॥१८३८॥
गदः कृष्णाऽनुजे रोगे गदा स्यादायुधान्तरे ।
गदयित्नुः स्मरे मेघे ना त्रिर्जल्पककामिनोः ॥१८३९॥
गद्गदस्वर इत्येष कीर्त्तितो महिषे द्वयोः ।
गद्यन्त्वपादे ग्रन्थेऽथ गदितव्ये त्रिलिङ्गकम् ॥१८४०॥
गन्तुः स्याददतिथौ चापि पथिके चाभिधेयवत् ।
गन्ता तु गन्तरि त्रि स्याद्गन्त्री स्त्री शकटान्तरे ॥१८४१॥
गन्धः पुमांश्चन्दनादौ लेशे सम्बन्धगर्वयोः ।
गन्धके घ्राणविषये भूगुणे प्रतिवेशिनि ॥१८४२॥
गन्धनं गन्धनाऽन्यस्योत्साहनेऽपि प्रयुज्यते ।
न ना प्रकाशने चापि हिंसायै सूचनेऽपि च ॥१८४३॥
अथ गन्धफली पृथ्व्याञ्चम्पकस्य च कोरके ।
प्रियङ्गौ गिरिकर्ण्याश्च विशेषात्सिततद्भिदि ॥१८४४॥
द्वे गन्धमादनो भृङ्गे गन्धके तु कपौ च ना ।
स्त्री सुरायां शैलभेदे न स्त्रियां गन्धमादनः ॥१८४५॥
गन्धर्वस्तु द्वयोर्गोलपुसनाम्नि मृगान्तरे ।
अन्तरार्णवसत्त्वेऽश्वे गायने दिव्यगायने ॥१८४६॥
पुमांस्तु पुंस्कोकिलके वासुदेवान्तरेऽपि च ।
कोष्ठपंक्तौ दक्षिणस्याम्प्रोक्तः षष्ठपदस्थिते ॥१८४७॥
गन्धवांस्त्रिगन्धयुते स्त्रियां गन्धवती मता ।
भुवि योजनगन्धायां सुरायां च पुरान्तरे ॥१८४८॥
स्त्री तु गन्धवहा घ्राणे ना तु वायौ मृगे द्वयोः ।
गन्धवाहस्तु ना वायौ योगार्थे तु त्रिषु स्मृतः ॥१८४९॥
गन्धाली तु स्त्रियां भद्राशब्योरेषा प्रकीर्त्तिता ।
गभस्तिरंशौ द्वे स्त्री तु स्वाहायां ना रवौ भुजे ॥१८५०॥
गभीरं त्रिषु निम्नेऽथ गभीरा वाच्यसौ स्त्रियाम् ।
गभीरन्तु जले क्लीबं गभीरे इति रोदसी ॥१८५१॥

गमो नाऽक्षविवर्त्ते स्यादपर्यालोचनेऽध्वनि ।
गमथस्तु पथि ज्ञेयो जलधाने तथा पुमान् ॥१८५२॥
गम्भीरो नाऽर्णवे कामे जम्बीरे च तमस्यपि ।
क्लीबन्तु जम्बीरफले गम्भीरं सलिलेऽपि च ॥१८५३॥
द्यावापृथिव्योर्गम्भीरे गम्भीरा वाच्यसौ स्त्रियाम् ।
निम्ने दुरवगाहे च गम्भीरमभिधेयवत् ॥१८५४॥
गयः स्यात्पशुराजर्ष्योर्भेदे दैत्यान्तरेऽपि च ।
गया तीर्थान्तरे द्वे त्वपत्ये ना सुगृहे धने ॥१८५५॥
गरो निगरणे चर्षिभेदे क्ल्युपविषेविषे ।
गरन्तु क्ली जले देवताडवल्ल्यां गरी गरा ॥१८५६॥
गरी करणभेदेऽपि स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
गरलन्तृणपूले च विषे माने नपुंसकम् ॥१८५७॥
मदनद्रौ तु गरलः पुंसि तत्प्रसवे तु नप् ।
गरुडः क्ष्वेडमन्त्रे ना वैनतेये हरिन्मणौ ॥१८५८॥
द्वे तु पक्ष्यन्तरे स्त्री तु जटायां गरुडा मता ।
गरुत् तेजसि संघाते पक्षिपक्षे जत्रे पुमान् ॥१८५९॥
गरुत्मांस्तु पुमान्वैनतेये तु पक्षिणि द्वयोः ।
गर्गरी दधिमन्थन्यां क्षेत्रपल्ल्यामपि स्त्रियाम् ॥१८६०॥
द्वे तु मीनान्तरे चोग्रीवैदेहजनरान्तरे ।
गर्जो द्वयोर्गजेगर्जा त्वक्ली गर्जनवाचिनी ॥१८६१॥
गर्जनो ना गृञ्जनाख्यपलाण्डुभिदि कीर्त्तितः ।
गर्जनं गर्जना चेति न ना गर्जित उच्यते ॥१८६२॥
गर्जितं स्तनिते क्लीबं गर्जितो मत्तकुञ्जरे ।
गर्त्तस्तु स्यात्सभास्थाणौ मन्दिरेऽप्यवटेऽपि च ॥१८६३॥
त्रिगर्त्तभेदेऽपि पुमांस्तथैव स्यात्कुकुन्दरे ।
गर्दोऽस्त्री द्रवधारायान्धमनीषु च वाचि ना ॥१८६४॥
गर्दभः पशुभेदे द्वे रासभाख्येऽथ गर्दभम् ।
कुमुदे श्वेतमुकुदे रूप्ये च स्यान्नपुंसकम् ॥१८६५॥

गर्दभस्तु पुमान्गन्धभेदेऽयम्परिकीर्त्तितः ।
गर्दभी स्त्री क्षुद्ररोगे कीटभेदे च कीर्त्तिता ॥१८६६॥
गर्भोऽपवरकागारेऽन्नेऽग्नौ पनसकण्टके ।
शिशावपत्ये शुक्रे च समूहे सारबीजयोः ॥१८६७॥
कुक्षौ कुक्षिस्थजन्तौ च सन्धौ चापि पुमान्मतः ।
गरुत्मांस्तु गरुडे सूर्ये तेजस्यपि पुमानथ ॥१८६८॥
द्वयोः स्यान्मक्षिकाभेदे पक्षिमात्रेऽप्यथ स्त्रियाम् ।
तृणधान्यविशेषेऽथ काञ्चने स्यान्नृशण्डयोः ॥१८६९॥
गर्मुदी गर्मुदाख्ये स्त्री तृणधान्यान्तरे मता ।
श्वपाक्यान्तु निषादेन जनिते गर्मुदो द्वयोः ॥१८७०॥
गर्वः पुंस्यभिमाने चाऽवलेपे च प्रकीर्त्तितः ।
गर्वरः पुंस्यहङ्कारे महिषे तु द्वयोर्मतः ॥१८७१॥
गर्वरी तु स्त्रियामेषा सन्ध्यायां परिकीर्त्तिता ।
गलः सर्जरसे तद्वत्कण्ठे चापि पुमान्मतः ॥१८७२॥
कर्कर्यां स्त्री गलन्ती त्रि भुञ्जानच्यवमानयोः ।
गलस्तनी तु छाग्यां स्याद्योगे लिङ्गादि चार्थतः ॥१८७३॥
गवलं माहिषे शृङ्गेऽथारण्यमहिषे द्वयोः ।
गवाक्षो जालके पुंसि सुग्रीवसचिवेऽप्यथ ॥१८७४॥
गवाक्षी गिरिकर्णीन्द्रवारुणीमल्लिकासु च ।
गवादनी स्त्री गिरिकर्ण्यभिधानलतान्तरे ॥१८७५॥
यौगिके त्वर्थवशतो लिङ्गादिकमिहोन्नयेत् ।
गवीधुका तु स्त्री क्षुद्रधान्यभेदे पुरे तु नप् ॥१८७६॥
गव्यं रागद्रव्यभेदे मौर्व्यां गव्या तु गोगणे ।
गव्यूत्याख्याऽध्वमानेऽथ त्रि दुग्धादौ च गोहिते ॥१८७७॥
गहनं क्ली जलेऽरण्ये दुःखगह्वरयोर्मतम् ।
दुष्प्रवेशे तु गहना वाच्यवत्सम्प्रयुज्यते ॥१८७८॥
गह्वरं तु गुहादम्भरहोवारिषु नप् स्मृतम् ।
त्रिर्दुष्प्रवेशे भीष्मे च निकुञ्जे तु पुमानयम् ॥१८७९॥

गाधातुर्गमने गाने त्र्युत्तरस्थः सगन्तरि ।
गाङ्गस्तु गङ्गासम्भूते त्रि भीष्मे तु गुहे च ना ॥१८८०॥
गाङ्गेयस्तु पुमान्स्कन्दे भीष्मे चाथाभिधेयवत् ।
अपत्यमात्रे गङ्गायाः क्ली तु हेमकशेरुणोः ॥१८८१॥
गाढमुष्टिः कृपाणे ना कृपणेत्वभिधेयवत् ।
गाण्डीवो गाण्डिवश्चाऽस्त्री कार्मुकेऽर्जुनकार्मुके ॥१८८२॥
गातुर्द्वे कोकिले भृङ्गे गन्धर्वे त्रिषु रोषणे ।
पुमांस्तु गातुरन्ने स्याद्वसुधायामपि स्त्रियाम् ॥१८८३॥
गात्रं गजाग्रजङ्घादिभागेऽङ्गे च कलेवरे ।
द्वयोस्तु गात्रसङ्कोची जाहकाख्येषु जन्तुषु ॥१८८४॥
गाथा तु वाण्यामार्यायाम्पिङ्गलानुक्तनामसु ।
वृत्तेष्वनुष्टुबाद्येषु यानि वृत्तानि पञ्चसु ॥१८८५॥
पादैश्चतुर्भिः षड्भिर्वा तेष्वप्यृषिकृतेष्वसौ ।
गानं गीतौ च शब्देऽथ गानी भाद्रस्य पूर्णिमा ॥१८८६॥
गान्धर्वस्तु द्वयोरेष गन्धर्वे खे तु नप्यदः ।
गीतभेदेऽथ वाचि स्त्री गान्धर्वी परिकीर्त्तिता ॥१८८७॥
गान्धारन्नपि सिन्दूरे राजदेशभिदोस्तु ना ।
गान्धिको लेखके त्रिश्च सुगन्धिव्यवहारिणि ॥१८८८॥
गायत्री त्रिपदा देव्यां स्त्री तथा खदिरद्रुमे ।
स्त्रीनपोस्तु चतुर्विंशत्यक्षरप्रभृतिष्वसौ ॥१८८९॥
छन्दस्स्वार्षादिष्वथ ना गायत्री ब्रह्मचारिणि ।
उपकुर्वाणनाम्न्येवं प्रगाथेषु च तेष्वपि ॥१८९०॥
गायत्रीसंज्ञकच्छन्दो येषामादेर्ऋचो भवेत् ।
गारित्रस्तु पुमानुक्त आचार्ये गहने तु नप् ॥१८९१॥
गारुडं स्यान्मरकतनाम्नि रत्ने च हेम्नि च ।
विषशास्त्रप्रभेदे चाऽथ त्रिर्गरुडयोगिनि ॥१८९२॥
गार्भिणं गर्भिणीनां सम्बन्धिनि त्रिर्व्रजे तु नप् ।
सीमन्तोन्नयनाख्ये च स्त्रीणां संस्कारकर्मणि ॥१८९३॥

गार्हपत्यः पश्चिमाग्नौ नप्तु स्याद्भावकर्मणोः ।
गालो मदनवृक्षे स्याद्गालनेऽपि पुमानयम् ॥१८९४॥
गालं मदनवृक्षस्य फलेऽपि वडिशेऽपि च ।
गालवो मुनिभेदे च पुंसि लोध्रतरावपि ॥१८९५॥
गिर् शब्दः स्त्री सरस्वत्याम्भाषायामपि कीर्त्तितः ।
गिरिर्गिरीयकक्रीडागुडके कन्दुके नगे ॥१८९६॥
गोरुग्भेदेऽम्बुदे प्लक्षे गृणातौ गिरतावपि ।
नेत्ररोगे तथा गीर्णौ त्रि तु पूज्ये गिरिर्मतः ॥१८९७॥
गिरिजस्त्वभ्रके लोहे शिलाजतुनि चापि नप् ।
गिरिजा तु नदीगौरीमातुलुङ्गीष्वियं स्त्रियाम् ॥१८९८॥
गिरिणो जलदे ग्रामे तथा चार्ये पुमान्मतः ।
गिरिप्रिया स्त्रियां क्षुद्रफलवातिङ्गनान्तरे ॥१८९९॥
सन्धानीसंज्ञकेऽर्थात्तु लिङ्गाद्यं यौगिके मतम् ।
गिरिसारः पुमांल्लोहे वङ्गे मलयपर्वते ॥१९००॥
गिरीशोऽद्रिपतौ वाचस्पतिशङ्करयोः पुमान् ।
गिरेरीशे त्रिलिङ्गोऽयं गिरीशः परिकीर्त्तितः ॥१९०१॥
गीतन्नपुंसकं गाने त्रि तु गानस्य कर्मणि ।
गीता कृष्णादिगीतासु योगपट्टेऽपि च स्त्रियाम् ॥१९०२॥
गीतिश्छन्दोविशेषे च गाने चापि स्त्रियाम्मता ।
स्याद्गुच्छस्तबके धान्यस्तम्बे वीरुत्सु सप्तसु ॥१९०३॥
एकस्यां हारभेदे च द्वात्रिंशद्यष्टिके पुमान् ।
गुच्छा स्त्री माषधान्ये च गवीथौ च प्रकीर्त्तिता ॥१९०४॥
गुञ्जोऽक्ली गुन्जने गुन्जा कृष्णलावाद्यभेदयोः ।
गुड इक्षुविकारे च वकुले पिण्डगोलयोः ॥१९०५॥
पुमांस्तु हस्तिनादेऽथ स्नुहीगुलिकयोर्गुडा ।
गुडूची स्त्र्यमृतानाम्न्यां वल्ल्यां कुस्तुम्बुरुण्यपि ॥१९०६॥
गुणो मौर्व्यामप्रधाने वृत्यामपि पुमान्मतः ।
उपकारे सूपकारे तन्तुरज्ज्वन्द्रियेषु च ॥१९०७॥

सत्त्वादौ भाग आवृत्तौ सन्ध्यादौ द्रव्यमाश्रिते ।
महाभूतेषु शौर्यादौ दोषस्य प्रतियोगिनि ॥१९०८॥
स्त्रियां गुणनिका नृत्यशून्याङ्के पाठनिश्चितौ ।
प्रधानतत्त्वे सांख्यानां गुणसामान्यमिष्यते ॥१९०९॥
गुण्डको मलिने धूलौ कलोक्तिस्नेहपात्रयोः ।
गुन्द्रा फलिन्यां स्त्री भद्रमुस्तके क्षुद्रधान्यके ॥१९१०॥
गवेधुसंज्ञे ना त्वेष स्तम्बभेदे शराह्वये ।
गुप्तन्तु रक्षितेऽपि स्यान्निगूढेऽप्यभिधेयवत् ॥१९११॥
गुप्तिः स्त्र्यवकरस्थाने कारागारे च रक्षणे ।
गुम्फो ना गुम्फने बाहोरलङ्कारे च कीर्त्तितः ॥१९१२॥
गुरुर्बृहस्पतौ बुद्धमुनौ पित्रादिके तथा ।
पुरोहिते च गोधूमेऽप्युपनीत्यादिकारिणि ॥१९१३॥
स्त्री तु मातृप्रभृतिषु गुर्वी दध्नि तु तन्नपि ।
लग्नान्नवमराशौ च प्राहुः सांवत्सरा इदम् ॥१९१४॥
नीलिकासंज्ञलोहे च त्रिषु तु स्याच्चतुर्ष्वपि ।
दुर्जरे बृहति ख्याते लघुनः प्रतियोगिनि ॥१९१५॥
एष्वर्थेषु यदास्त्र्यर्थस्तदा गुर्वीति वा गुरुः ।
गुलः स्यादैक्षवे पुंसि स्नुह्यां तु स्त्री गुला स्मृता ॥१९१६॥
गुली तु गुटिकायाश्च रोगभिद्यपि कीर्त्तिता ।
गुल्मोऽस्त्रियां हृद्ग्रन्थ्याख्यव्याधौ सभ्येऽपि वीरुधि ॥१९१७॥
रक्षिस्थाने सैन्यभेदे घट्टेऽपि बलसञ्जने ।
गुल्केऽथ गुल्म्यामलक्येलावतीवस्त्रवेश्मसु ॥१९१८॥
गुहः स्कन्दे निषादे च शृङ्गिवेरपुरेश्वरे ।
गुहा तु पृश्निपर्ण्याञ्च गर्त्ते गिर्यादिगह्वरे ॥१९१९॥
गुहाशयो द्वे ऋक्षाखुसिंहकूर्मे त्रियोगिके ।
गुह्यं त्रिगोप्यरहसोः क्ल्युपस्थे कमठे द्वयोः ॥१९२०॥
गूर्मले पुंसि गूरेषा गुदे स्त्री परिकीर्त्तिता ।
गूढं रहसि गुह्ये च न द्वयोः संवृते त्रिषु ॥१९२१॥

गृञ्जनो मधुशिग्र्वाख्ये शिग्रुभेदेऽथ न स्त्रियाम् ।
भेदे पलाण्डुजातीनान्देशानामपि कुत्रचित् ॥१९२२॥
विषदिग्धपशोस्त्वेतन्मांसे क्ली गृञ्जनम्मतम् ।
गृत्सो द्वे कुक्कुरे विप्रे त्रिस्तु मेधाविनि स्मृतः ॥१९२३॥
गृधुर्द्वयोः पशौ पुंसि त्वभिलाषे प्रकीर्त्तितः ।
गृध्रः खगान्तरे पुंसि वाच्यलिङ्गस्तु लोभिनि ॥१९२४॥
गृष्टिः सकृत्प्रसूतायां गवि काष्मर्यपादपे ।
विष्वक्सेनप्रियासंज्ञस्थावरे बदरे स्त्रियाम् ॥१९२५॥
गृहं गृहाश्च पुंभूम्नि कलत्रेऽपि च सद्मनि ।
पुमान्गृहपतिर्गार्हपत्याग्नावपि मन्त्रिणि ॥१९२६॥
कृषीवले छद्मवेषस्पशे स्यात्सत्रयाजिनाम् ।
प्रधाने यजमाने च गृहस्य त्वधिपे त्रिषु ॥१९२७॥
गृहपूर्वस्तु बलिभुग्वायसे चटकेऽपि ना ।
पुमान्गृहमणिर्दीपे न तु क्ली गेहभूषणे ॥१९२८॥
गृहस्थो ना द्वितीयाश्रमस्थे त्रिषु गृहस्थिते ।
मेषादौ तु क्लीबमेव लग्नात्तुर्ये विशेषतः ॥१९२९॥
भवेद्गृहे च शैलेयेऽप्यौपासनहुताशने ।
गृहिणी गृहकार्याख्ये कीटभेदे द्वयोस्तथा ॥१९३०॥
गृहस्थेऽथ गृहपतौ गृही स्यादभिधेयवत् ।
गृहोदकं काञ्जिकेऽपि गृहसम्बन्धिवारिणि ॥१९३१॥
गृह्यं स्मार्त्तग्रन्थभेदे गुदे त्रिस्तु स्वतन्त्रके ।
पक्ष्ये च गृहसक्तेषु मृगपक्षिषु वाऽथवा ॥१९३२॥
औपासनाग्नौ गृह्या तु शाखानगरबाह्ययोः ।
गेयं गाने क्लीबमथ गातव्ये गातरि त्रिषु ॥१९३३॥
गेष्णः पुमान्साममात्रे चोभयोरङ्गयोस्तनोः ।
रङ्गोपजीविनि पुनर्गेष्णः स्यादभिधेयवत् ॥१९३४॥
गेष्णुः पुमान्गायनेऽपि नटेऽपि परिकीर्त्तितः ।
गैरिकन्तु भवेत्क्लीबम्पीतधातौ च हेम्नि च ॥१९३५॥

शिलाजतुनि गैरेयन्ना तु पूगेऽद्रिसम्भवे ।
गौर्नाऽऽदित्ये बलीवर्दे क्रतुभेदर्षिभेदयोः ॥१९३६॥
स्त्री तु स्याद्दिशि भारत्याम्भूमौ च सुरभावपि ।
नृस्त्रियोः स्वर्गवज्राम्बुरश्मिदृग्बाणलोमसु ॥१९३७॥
मौर्व्यां रवेः सुषुम्णाख्यरश्मौ च प्रग्रहेऽर्वतः ।
द्वयोस्त्वश्वे त्रिषु स्तोत्रे दुग्धस्याऽभिषवेऽपि च ॥१९३८॥
अथ श्लेष्माख्यविकृतौ चर्मणो गौर्नरस्त्रियोः ।
गोकण्टको गोक्षुरके स्थपुटे च गवां खुरे ॥१९३९॥
गोकर्णोऽश्वतरे सर्पे मृगभेदे तथा द्वयोः ।
गोकर्ण इति विख्याते पुँल्लिङ्गस्तु गणान्तरे ॥१९४०॥
शिवतीर्थविशेषे चाऽनामिकाङ्गुष्ठविस्तृतेः ।
माने चाप्यथ गोकर्णी मूषिकौषधिदूर्वयोः ॥१९४१॥
गोकीलकस्तु वलिरे वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ।
उपेक्षमाणे पङ्कस्थां गां च गोकीलकस्त्रिषु ॥१९४२॥
गोग्रन्थिर्ना करीषे स्याद्गोष्ठे गोजिह्विकौषधौ ।
गोजिह्वा रसनायां गोः स्थावरे दार्विकाऽभिधे ॥१९४३॥
मनःशिलायामपि च गवीधुक्षुद्रधान्यके ।
गोडुम्बः शीर्णवृन्ते ना गवादिन्यां तु योषिति ॥१९४४॥
गोण्डः पामरभेदे त्रि भारवाहककर्मणि ।
गोण्डो नाभौ पुमानेष त्रि तु तद्वति कीर्त्तितः ॥१९४५॥
गोतमञ्चापभेदे क्ली जडे तु ऽयथ गोतमी ।
रोचनीदुर्गयोर्ना तु शाक्यसिंहर्षिभेदयोः ॥१९४६॥
गोत्रा भूगव्ययोर्गोत्रः पुनः शैले वलाहके ।
गोत्रं कुले बले नाम्नि काननच्छत्रवर्त्मसु ॥१९४७॥
सम्भावनीयबोधे च लोके याने च कुत्सिते ।
अथ गोत्रो गवां त्रातर्यभिधेयवदुच्यते ॥१९४८॥
गोदा गोदावरीनद्यां गोदो गोदातरि त्रिषु ।
ना क्रीडायां ह्रदौ गौदाग्रामौ चापि तदन्तिके ॥१९४९॥

गोदारणं लाङ्गलेऽपि कुद्दालेऽपि नपुंसकम् ।
गोधुक् पुंसि सुमेरौ त्रि गोपाले गोश्च दोग्धरि ॥१९५०॥
गोधा जन्तौ धन्विनाञ्च हस्ते ज्याघातवारणे ।
गोधूमो नागरङ्गे स्यादोषधिव्रीहिभेदयोः ॥१९५१॥
गोनर्दः अक्षिणि मतः सारसाख्ये द्वयोरयम् ।
गोनर्दं क्ली वा[न] मुस्ते कैवर्तीमुस्तकेऽपि च ॥१९५२॥
गोनासस्तु तिलित्सारसर्पजातौ द्वयोर्मतः ।
गोर्नासिकायां गोनासा स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ॥१९५३॥
गोपो गोष्ठाधिपे गुप्तौ बहुग्रामाधिकारिणि ।
भूपेऽथ त्रिषु गोपाले मनुष्ये तु द्वयोर्मतः ॥१९५४॥
गोपी तू स्त्री सारिवाख्यभेषजे समुदाहृता ।
गोपतिर्ना रवौ षण्डे शिवे भूतपतावपि ॥१९५५॥
गोपालस्तु पुमान्राज्ञि गोःपातर्यभिधेयवत् ।
गोपीथो गोनिपाने च तीर्थे कालान्तरेऽपि च ॥१९५६॥
गोपुच्छो हारभेदे च यष्टिके पुंसि कीर्त्तितः ।
पुंनपुंसकयोस्त्वेतद्गोलाङ्गूले च कीर्त्तितम् ॥१९५७॥
गोपुरन्द्वारि पूर्द्वारि कैवर्त्तीमुस्तकेऽपि च ।
गोमत् गोस्वामिनि त्रि स्यान्नदीभेदे तु गोमती ॥१९५८॥
गोमतन्तु परिज्ञेयं गव्यूतिरिति विश्रुते ।
क्रोशद्वयात्मके मार्गपरिमाणे नपुंसकम् ॥१९५९॥
गोमुखं कुटिलागारे त्रि तु वाच्यवदिष्यते ।
ना तु मातलिपुत्रेशगणयोर्नक्रके द्वयोः ॥१९६०॥
गोमेदकम्पीतमणौ काकोले पत्रकेऽपि च ।
गोरक्षो नागरङ्गे ना गवान्तु त्रातरि त्रिषु ॥१९६१॥
गोरक्षजम्बू गोधूमधान्ये नागबलाह्वये ।
गोरक्षा तण्डुलान्याख्ये भेषजे तु स्त्रियाम्मता ॥१९६२॥
गोरङ्कुः स्यात्पुमान्पक्षिभेदे नग्नकवन्दिनोः ।
गोरसः कालशेयेपि तथा दध्नि पुमानयम् ॥१९६३॥

गोरुतन्तु भवेत्क्लीबं गव्यूतौ च गवां रुते ।
गोलको जारसम्भूते वैधवेयेऽपि कम्बले ॥१९६४॥
पिण्डे गुडे च गोले च मणिके स्त्री तु गोलिका ।
वेष्टनद्रव्यके प्राणिभेदेऽपि परिकीर्त्तिता ॥१९६५॥
गोला गोदावरीसख्योः कुनटीदुर्गयोः स्त्रियाम् ।
पत्राञ्जनेऽलिञ्जरे च बालक्रीडनके तथा ॥१९६६॥
क्लीबन्तु काञ्जिके गोलं पिण्डगोलः पुमान्मतः ।
गोलाङ्गूलस्तु गोपुच्छे वानरे च पुमान्मतः ॥१९६७॥
गोलोमी सितदूर्वायां स्याद्वचा भूतकेशयोः ।
गोवन्दनी फलिन्यां स्त्री योगे गोवन्दना मता ॥१९६८॥
गोविन्दो गोरधिपतौ त्रिर्ना कृष्णे बृहस्पतौ ।
गोशीर्षं चन्दनं ताम्रसारे मूर्ध्नि गवामपि ॥१९६९॥
गोष्ठमस्त्री गवां स्थाने गोष्ठस्सामान्तरे पुमान् ।
गोष्ठी तु स्त्री सभायाञ्च संलापे च प्रकीर्त्तिता ॥१९७०॥
गोष्पदं गोखुरे श्वभ्रे गवाश्व गतिगोचरे ।
गोसो बालेऽपि पुँल्लिङ्गस्तथैवोषसि कीर्त्तितः ॥१९७१॥
संख्यायामथ गोयुद्धे गोसंख्यम्पुन्नपुंसकम् ।
गोसर्गः स्यात्प्रभातेऽपि पुँल्लिङ्गः सर्जने गवाम् ॥१९७२॥
गोस्तनो ना चतुर्यष्टिहारभेदे स्तने गवाम् ।
गोस्तनी तु स्त्रियान्द्राक्षाभेद एषा प्रयुज्यते ॥१९७३॥
गोस्वामी राजपुत्रे स्यान्नाढ्योक्तौ त्रि तु गोमति ।
गौतमो ना शाक्यमुनावृषिभेदे च कीर्त्तितः ॥१९७४॥
स्त्रियान्तु दुर्गारोचन्योर्गोदावर्याश्च गौतमी ।
मेदोजे गौतमं क्ली च कुक्कुरे तु द्वयोरयम् ॥१९७५॥
गौरो धवेऽसने शुक्लसर्षपे ब्रह्मचन्द्रयोः ।
श्वेतपीतारुणगुणेष्वेतद्युक्तेषु तु त्रिषु ॥१९७६॥
शुद्धे च प्रसवे तु क्ली धवासनमहीरुहोः ।
उशीरे चाब्जकिञ्जल्के द्वयोस्तु स्यान्मृगान्तरे ॥१९७७॥

गौरी शिवासरस्वत्योः प्रियायां वरुणस्य च ।
असञ्जातरजःकन्या गौरी च सरिदन्तरे ॥१९७८॥
रोचनीरजनीपिङ्गाप्रियङ्गुवसुधासु च ।
बुद्धस्य शक्तौ रागिण्यान्तीक्ष्णार्जकहरिद्रयोः ॥१९७९॥
ग्रथितं गुम्फिते क्रान्ते हिंसिते चाभिधेयवत् ।
ग्रन्थः शास्त्रे धने चैव ग्रन्थनायान्तथा पुमान् ॥१९८०॥
द्वात्रिंशद्वर्णवृन्दे च वचस्यप्ययमिष्यते ।
ग्रन्थिः स्यादिक्षुवेण्वादिकाण्डसन्धौ रुगन्तरे ॥१९८१॥
ग्रन्थिवर्णे रज्जुवस्त्रादिग्रन्थनपदे पुमान् ।
ग्रन्थिकं पिप्पलीमूले गुग्गुलुग्रन्थिवर्णयोः ॥१९८२॥
वाच्यवत्तु ग्रन्थिनि ना सहदेवाख्यपाण्डवे ।
ग्रन्थिलस्तु पुमाञ्ज्ञेयः करीरद्रौ विकङ्कते ॥१९८३॥
अथ ग्रन्थिलमेतत्स्याद्ग्रन्थिमत्यभिधेयवत् ।
ग्रस्तं त्रिवेष्टिते भुक्ते लुप्तवर्णपदोदिते ॥१९८४॥
ग्रह आदान निर्बन्धोपरागाऽनुग्रहेषु च ।
रणोद्यमे च कथितो राहौ चापि बुधादिषु ॥१९८५॥
उलूखलनिभे सोमपात्रभेदे तथा पुमान् ।
द्वयोस्त्वेष पिशाचादौ ग्रहशब्दः प्रकीर्त्तितः ॥१९८६॥
ग्रहणम्प्रत्यये क्लीबलिङ्गं स्याच्चन्द्रसूर्ययोः ।
उपरागे चोपलब्धौ बन्धादानादरेषु च ॥१९८७॥
ग्रहणी तूदरव्याधिविशेषे मृत्युमेढ्रयोः ।
ग्रहराजस्तु विज्ञेयो भास्करे चन्द्रमस्यपि ॥१९८८॥
ग्रामः संवसथे वृन्दे तथा गीतिस्वरान्तरे ।
ग्रामणीर्नापिते पुंसि तथैवाधिकृते मतः ॥१९८९॥
नायकोत्तमयोस्त्वेष ग्रामणीर्वाच्यवन्मतः ।
ग्रामणीकुलमित्येतत्क्षुद्राणां भारताम्बुधेः ॥१९९०॥
प्राग्दक्षिणस्थद्वीपानामेकस्मिन्परिकीर्त्तितम् ।
ग्राममद्गुरिका ग्रामयुद्धे श्रृङ्गिझषे स्त्रियाम् ॥१९९१॥

ग्रामीणा नीलिकायां स्त्री ग्रामोद्भूतेऽभिधेयवत् ।
अथ काके च शुनके द्वयोर्ग्रामीण इष्यते ॥१९९२॥
ग्राम्यं स्त्रीकरणे क्लीबं त्रिरश्लीलेऽपि कीर्त्तितम् ।
ग्रामीणेऽथ स्त्रियां ग्राम्या चाषसंज्ञे लतान्तरे ॥१९९३॥
ग्रावा शैलशिलाभ्रेषु नान्तः पुंसि प्रकीर्त्तितः ।
ग्राहो द्वे अवहारे स्यान्निर्बन्धे नु पुमान्मतः ॥१९९४॥
ग्राहकस्तु त्रिषु ज्ञेयो ग्रहीतर्यथ पक्षिणि ।
पुंसि स्याद्येन गृह्यन्ते पक्षिणोऽन्ये च लुब्धकैः ॥१९९५॥
ग्राहिः पुमान्कपित्थे स्याद्वाच्यवत्तु ग्रहीतरि ॥१९९५½॥

घ

घस्तन्मात्रे निश्चयेऽपि परमार्थविशेषयोः ॥१९९६॥
घाव्ययं निश्चये तावत्यमृषार्थविशेषयोः ।
घ उत्तरस्थस्त्रिर्हन्तर्यथ घा ताडने तथा ॥१९९७॥
किङ्किण्यां घस्तु घण्टायां तथा स्याद्घर्घरारवे ।
घटः समाधिभेदे ना शिरःकटकुटेषु च ॥१९९८॥
स्तम्भभागे तथा प्रासादाकारान्तरसीमयोः ।
कुम्भराशौ तथा प्रोक्तो माने द्रोणाह्वये पुमान् ॥१९९९॥
घटकस्त्रि घटयितर्यपि चावयवे स्मृतः ।
वंशवेदिनि चोद्वाहसाधकेऽथ वनस्पतौ ॥२०००॥
पुमान्द्वयोस्तु वार्यादिकुम्भे स्याद्घटिकाऽथ सा ।
स्त्रियां मुहूर्त्ते घण्टाख्यवाद्ये गुल्फे च कीर्त्तिता ॥२००१॥
घटजन्मा पुमान्द्रोणे वसिष्ठागस्त्ययोरपि ।
घटना घटनश्चापि निर्मित्यायोजनादिके ॥२००२॥
स्त्रियां तु घटनेत्येषा गजादिव्यूह इष्यते ।
घटा घटनसंघातगोष्ठीभघटनासु च ॥२००३॥
अपि स्यात्स्वादुजम्बीरे तथैव पणवान्तरे ।
घटिकं क्ली नितम्बे स्याद्घटेन तरति त्रिषु ॥२००४॥

घटी तु दोहपात्रे च काले नाडीद्वयात्मके।
घण्टावादनभाण्डे च स्यात्तथैवोत्सवान्तरे ॥२००५॥
घटी पुमाञ्शिवे कुम्भराशौ घटवति त्रिषु।
अरघट्टे घटीयन्त्रं यन्त्रे समयसूचके ॥२००६॥
घटोत्कचो दैत्यभेदे सुते भीमहिडिम्बयोः।
तथा समुद्रगुप्तस्य नृपतेः स्यात्पितामहे ॥२००७॥
घट्टजीवी द्वयोर्वैश्यानिर्णेजकसुतेऽथ च।
घट्टेन जीवति पुनर्घट्टजीवी त्रिषु स्मृतः ॥२००८॥
घट्टनं तु हिमे क्लीबं द्वे तुरङ्गोपजीविनि।
अनासंवरणे चापि चलने चापि घट्टना ॥२००९॥
घट्टिता पणवाघातभेदे त्रिषु तु यौगिके।
घण्टः शिवे लेह्यभेदे वाद्यभेदे पुनस्त्रियाम् ॥२०१०॥
कांस्यतालान्तरे चैव बलायां पाटलावपि।
घण्टकः पाटलौ पुंसि घण्टाकोऽपि प्रयुज्यते ॥२०११॥
घण्टाताडस्तु योगार्थे तथा स्यात्संकरान्तरे।
घण्टारवस्तु घण्टायाः शब्दे रागान्तरेऽपि च ॥२०१२॥
घण्टारवा तु शणपर्ण्योषधौ यौगिकेऽर्थवत्।
घण्टाली कर्कटीभेदे घण्टापङ्क्तावपि स्त्रियाम् ।२०१३॥
घण्टास्वनन्तु क्ली लौहे यौगिके लिङ्गमर्थवत्।
घण्टिका क्षुद्रघण्टायामवटौ च स्त्रियाम्मता ॥२०१४॥
अपामार्गे विघण्टी तु क्षुद्रघण्टार्थिका मता।
घण्टुरूष्मणि कण्ठस्थघण्टायां करिणोऽपि ना ॥२०१५॥
घनो ना मुस्तके मेघे संघाते लोहमुद्गरे।
मुद्गरेऽपि च काठिन्ये कफे गन्धेऽभ्रके तथा ॥२०१६॥
भिक्षायाः परिमाणे च हस्तकाण्डद्वयात्मके।
विस्तारे कठिने तु त्रिर्विपुले मूर्त्तसान्द्रयोः ॥२०१७॥
कायस्थगन्धयुक्ते च कांस्यतालादिके तु नप्।
मुखे मध्यमनृत्यादौ लोहे मरकताह्वये ॥२०१८॥

भवेद्धनरसः सान्द्रनिर्यासे मोरटाम्बुनि ।
कर्पूरे पीलुपर्ण्याश्च सम्यक्सिद्धरसेऽपि च ॥२०१९॥
शक्रे धातुकमत्तेभे वर्षुकाऽभ्रे घनाघनः ।
घर्घरो ना चलद्वारिध्वाने घूके नदान्तरे ॥२०२०॥
स्यादस्त्री पुनरट्टादेरधोद्वारकवाटके ।
अथ स्त्री घर्घरी क्षुद्रघण्ट्यां वीणान्तरेऽपि च ॥२०२१॥
स्वरान्तरे तथा वाद्यलगुडे घर्घरा पुनः ।
सरय्वंशान्तरे द्वे तु रन्ध्रीवैश्यात्मसम्भवे ॥२०२२॥
अथ घर्घरिका वाद्यभेदे वादित्रकोणके ।
घर्मः स्वेदजले ग्रीष्म उष्णे दिवस आतपे ॥२०२३॥
यज्ञे हविर्विशेषे च महावीरमतेऽश्विनोः ।
घस्रस्तु दिवसे पुंसि हिंस्रे स्यादभिधेयवत् ॥२०२४॥
घातः काले प्रहरणे पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
घासिर्नाऽग्नौ रणे गर्त्ताऽग्नौ बह्वाशिनि त्रिषु ॥२०२५॥
घुटिकोऽश्वगजादीनां पादादीनाञ्च बन्धके ।
शङ्कावपि च गुल्फे च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥२०२६॥
घृणा स्त्रियां जुगुप्सायां दयायां च प्रकीर्त्तिता ।
घृणिरस्त्री निदाघेऽह्नि ज्वालादीधितिवीचिषु ॥२०२७॥
घृतमाज्याम्बुनोर्न स्त्री प्रदीप्ते त्वभिधेयवत् ।
घृतवद्घृतयुक्ते त्रि घृतवत्यौ तु रोदसी ॥२०२८॥
घृताची त्वप्सरोभेदे निशायाञ्च प्रकीर्त्तिता ।
घृष्टिः स्त्री वर्षणस्पर्द्धाविष्णुकान्तासु ना किरौ ॥२०२९॥
घोणः पुमान्घूनने स्यादित्वरे त्वभिधेयवत् ।
घोणा तूक्ता हयप्रोथे नासिकायामपि स्त्रियाम् ॥२०३०॥
कुम्भीरमक्षिकाख्ये च कीटेऽम्बूपरिसर्पिणि ।
घोण्टा तु बदरीपूगवृक्षयोः कीर्त्तिता स्त्रियाम् ॥२०३१॥
घोरः पुमाञ्शिवे त्रिस्तु कष्टे च स्याद्भयात्मके ।
घोरो द्वयोः सृगाले स्याद्घोरं क्ली कुङ्कुमे मतम् ॥२०३२॥

घोलः पुंसि कपालेऽथ क्ली दण्डाहतके भवेत् ।
द्वयोस्तु घर्घरीवैश्यसम्भूते स्यान्नरान्तरे ॥२०३३॥
घोष आभीरपल्लीं[1] ना शब्दे वाचि स्वरेऽपि च ।
ब्रह्मबालुकसंज्ञे च विषभेदे लतान्तरे ॥२०३४॥
कोशातक्याह्वये शब्दवर्णधर्मेऽम्बुदेषु च ।
कंसाख्यलोहे त्वस्त्री स्त्री घोषा मधुरिकौषधौ ॥२०३५॥
घोषयित्नुस्तु विप्रे च कोकिलेऽपि पुमान्मतः ।
घोषवांस्त्रिर्घोषयुक्ते वीणायां घोषवत्यसौ ॥२०३६॥
घ्राणघ्राणे च नासायां त्रिर्घ्राते घ्रातिवाचिनि ॥२०३६ई॥

ङ

ङः पुमान्विषये ख्यातः स्पृहायां विषयस्य च ॥२०३७॥

च

चश्चण्डीशे पुमानुक्तः कच्छपे चन्द्रचौरयोः ।
चक्रो ना सर्पसत्रस्य सर्पभेदेऽपि यष्टरि ॥२०३८॥
तर्पणे चिक्कणे तु स्यात्क्लीवं पूगतराः फले ।
चकोरस्तु द्वयोः पक्षिभेदे गिर्यन्तरे तु ना ॥२०३९॥
चक्रमस्त्री रथाङ्गे च संसारे सैन्यराष्ट्रयोः ।
जलावर्त्ते चये वृन्ते मण्डले घनलोहयोः ॥२०४०॥
काव्यालङ्कारभेदे च विषमे माक्षिकेऽपि च ।
दद्रुसंज्ञव्याधिभेदे व्यूहदम्भप्रभेदयोः ॥२०४१॥
धर्मचक्रादिके कुम्भकारोपकरणान्तरे ।
अस्त्रान्तरे द्वे तु चक्रश्चक्रवाकखगे मतः ॥२०४२॥
हरौ चक्रधरो नाऽहौ द्वे त्रिषु ग्रामजालिनि ।
चक्रपादो द्वयोर्हस्तिन्यथ पुंसि रथे मतः ॥२०४३॥
चक्रवर्त्ती पुमान्सार्वभौमे स्त्री चक्रवर्त्तिनी ।
स्थावरे जन्तुतत्संज्ञे योगे त्वर्थवदिष्यते ॥२०४४॥

---

१. आभीपल्याय वा ।

चक्रवाटः क्रियारोहे पर्यन्ते च शिखातरौ ।
चक्रवाडम्मण्डले क्ली लोकालोकगिरौ पुमान् ॥२०४५॥
चक्राङ्कीकर्कटश्रृङ्ग्याञ्चक्राङ्कः शार्ङ्गधन्विनि ।
चक्राङ्गी कटुरोहिण्यां चक्राङ्गो हंसपक्षिणि ॥२०४६॥
चक्राटो विषवैद्ये द्वे ना दीनारे त्रि धूर्त्तके ।
चक्री जालिककोकाऽजकुलालगृहिषु द्वयोः ॥२०४७॥
विष्णौ तु ना त्रिषु त्वेष चक्रवच्चक्रयायिनोः ।
चक्षुष्यः सुभगे त्रि स्यात्तथा स्याच्चक्षुषो हिते ॥२०४८॥
ना पुनः पीतमुद्रे च पुण्डरीकतरावपि ।
कतकद्रौ सक्तुषु च चक्षुष्या तु भवेत्स्त्रियाम् ॥२०४९॥
कुलालीभेषजे चापि द्रोणपुष्पाख्यझाटके ।
चङ्कुरस्तु द्वयोर्दैत्ये ना रथे च भगाङ्कुरे ॥२०५०॥
चङ्क्रमः सङ्क्रमे नाऽथ चङ्क्रमश्चङ्क्रमोऽपि च ।
भवेच्चङ्क्रमणे तच्चाप्यल्पेऽध्वनि गतागतम् ॥२०५१॥
चङ्गस्तु शोभने दक्षे त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
चञ्चत्कः स्यान्मणौ नातिभास्वरे त्वभिधेयवत् ॥२०५२॥
भवेद्द्वयोस्तु चञ्चत्कः खद्योते दर्दुरेऽपि च ।
चञ्चला स्त्री तडिल्लक्ष्म्योश्चञ्चलः पवने पुमान् ॥२०५३॥
वाच्यवत्कर्मवति च लेखने तु द्वयोर्मतः ।
चञ्चा तु नलनिर्माणे तृणनिर्मितपूरुषे ॥२०५४॥
चतुरः कीर्त्तितो दक्षे बुद्धिमत्यभिधेयवत् ।
चतुरा हस्तिशालायां तथाल्पभ्रुकुटावपि ॥२०५५॥
मृगभेदे तु चतुरा स्त्री तस्या लक्षणं विदुः ।
चतुरा स्याद्घनास्निग्धरोमा श्यामा सबिन्दुका ॥२०५६॥
चतुरङ्गुल इत्येष पुमानारग्वधद्रुमे ।
मानान्तरे शराख्ये च योगे त्वर्थवदिष्यते ॥२०५७॥
चतुर्थन्तु चतुर्णां त्रिः पूरणेऽथ चतुर्थ्यसौ ।
तुरीयायां विभक्तौ स्त्री विनायकतिथावपि ॥२०५८॥

चतुर्दशी स्त्री वीणायां यस्यास्तन्त्र्यश्चतुर्दश ।
तथा शिवतिथौ त्रिस्तु पूरणे स्याच्चतुर्दश ॥२०५९॥
चतुर्वर्गः पुमानर्थधर्मकामविमुक्तिषु ।
चतुष्कं स्याच्चतुःसङ्ख्ये भवने यष्टिकान्तरे ॥२०६०॥
अक्षे तु ना चतुष्की तु स्त्रियां यवनिकान्तरे ।
मशकहारिण्याख्ये पुष्करिण्यन्तरेपि च ॥२०६१॥
चतुष्पथं क्ली शृङ्गाटे ब्राह्मणे ना चतुष्पथः ।
चतुष्पदी स्त्री पद्ये ना पशौ क्ली करणान्तरे ॥२०६२॥
चतुष्पाद्रावणे पुंसि चतुरङ्घ्रौ तु वाच्यवत् ।
चतुष्षष्टिः कलासंख्यादेवीभित्सु ऋचि स्त्रियाम् ॥२०६३॥
चतुस्समं यौगिकेऽपि क्लीबं तु परिभाषितम् ।
चन्दनागुरुकर्पूरकुङ्कुमैः कर्दमे कृते ॥२०६४॥
चत्वरन्त्वङ्गणे स्थण्डिले क्ली ना चतुष्पथे ।
स्त्री तु स्याद्देवताभेदे रथ्यायामपि चत्वरी ॥२०६५॥
चत्वालो हेमकुण्डे च पुंसि दर्भेऽपि दृश्यते ।
चन्दना चन्दनी च स्त्री नदीभेदे प्रयुज्यते ॥२०६६॥
चन्दनोऽस्त्री मलयजे भद्रकाल्यान्नपुंसकम् ।
चन्दिरं क्ली जले ना तु चन्द्रे हस्तिनि तु द्वयोः ॥२०६७॥
चन्दिलः पुंसि वास्तूकशाके स्यान्नापिते भगे ।
चन्द्रो वारिणि कर्पूरे शशाङ्के बर्हिमेचके ॥२०६८॥
कम्पिल्लवृक्षेऽपि पुमान्सुन्दरे तु त्रिषु स्मृतः ।
क्ली त्वारण्यकसाम्नि स्यात्त्रि त्वाह्लादक इष्यते ॥२०६९॥
कुमुदे रजतेऽपि स्यात्कनके तु नृशण्डयोः ।
अर्घ्यायान्तु स्त्रियां चन्द्रा नतु स्त्री सूर्यरश्मिषु ॥२०७०॥
शतत्रयं सहस्रे ये हिमोत्सर्गाय कीर्त्तिताः ।
चन्द्रको बर्हिपक्षाग्रेऽप्सुतैलप्रसरेऽपि ना ॥२०७१॥
चन्द्रकान्तस्तु पुंसि स्यान्मणिभेदे च कैतवे ।
चन्द्रकी ना मयूरे स्यादथ व्याघ्रे द्वयोर्भवेत् ॥२०७२॥

चन्द्रभागस्तु ना शैलान्तरे काश्मीरसंस्थिते ।
स्त्रियां तु देवताभेदे चन्द्रभागा प्रकीर्त्तिता ॥२०७३॥
चन्द्रभागा चन्द्रभागी नदीभेदे द्वयं मतम् ।
चन्द्रहासः खड्गमात्रे विशेषाद्रावणस्य च ॥२०७४॥
चन्द्रहासोऽर्धचन्द्राऽग्रे खड्गमात्रेऽपि कीर्त्तितः ।
चन्द्रिका चन्द्रभागाख्यनद्याञ्चन्द्रातपेऽपि च ॥२०७५॥
चन्द्रिप्रिय इत्येष चकोराख्ये खगे द्वयोः ।
चन्द्रोदयः स्यादुल्लोचे शशाङ्कस्योदयेपि च ॥२०७६॥
चपलश्चञ्चले शीघ्रे दुर्विनीतेऽनवस्थिते ।
अतले चैव चौरे च वाच्यवत्पारदे तु ना ॥२०७७॥
तुरुष्काख्ये च निर्यासे द्वे तु वानरमत्स्ययोः ।
चपला करिपिप्पल्यां पिप्पल्यामपि विद्युति ॥२०७८॥
पुंश्चल्याञ्च सुरायाश्च तथा लक्ष्म्यामपीष्यते ।
चप्पटस्तु चपेटे च पर्परे च पुमान्मतः ॥२०७९॥
चप्पटं स्फारविपुले वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ।
चमकं यजुरध्यायभेदे ह्रीबेरकेऽपि च ॥२०८०॥
चमरं चामरे स्त्री तु मञ्जर्यां द्वे मृगान्तरे ।
चमसो यज्ञपात्रे चाऽस्त्रीकर्णावयवान्तरे ॥२०८१॥
मेघे तु चमसः पुंसि चमसी तु स्त्रियामियम् ।
मुद्गादीनां कृते पिष्टे व्यञ्जने परिकीर्त्तिता ॥२०८२॥
चमूः सेनाविशेषे च सेनामात्रेऽपि च स्त्रियाम् ।
चम्पस्तु तरुभेदे ना चम्पा स्त्री नगरीभिदि ॥२०८३॥
चयः समूहे प्राकारमूलबन्धे समाहृतौ ।
चरोऽक्षद्यूतभेदे च भौमे वारे च पुंस्ययम् ॥२०८४॥
वाच्यवत्तु स्पसे चापि चलेऽथ युवतौ चरी ।
चरितं क्लीबमाचारे गते वृत्ते च भक्षणे ॥२०८५॥
गते तु भक्षिते चैव चरितो वाच्यवन्मतः ।
चरुः स्थाल्यां हव्यपाके तथा मेघे पुमान्मतः ॥२०८६॥

चर्चरी चर्भटिरितिप्रसिद्धे हास्यवाक्यके ।
उक्ता कार्पटिकानाञ्च गीतभेदे स्त्रियामियम् ॥२०८७॥
चर्चरीको महाकाले केशविन्यासशाकयोः ।
चर्चा मार्जारकण्यां स्त्री मार्ष्टौ चर्चिक्यचिन्तयोः ॥२०८८॥
पुंश्चल्यां तिलके गौर्याञ्चर्चो वेदविदि त्रिषु ।
चर्मकारः पादुकृतिमतः स्त्रीपुंसयोरयम् ॥२०८९॥
स्त्री तु चर्मकारीति मता चर्मकषौषधौ ।
चर्मण्वती स्त्री कदली द्रुमेऽपि सरिदन्तरे ॥२०९०॥
चर्म क्लीवं त्वचि तथा फलकाख्येऽस्त्रवारणे ।
चर्मी भूर्जद्रुमे पुंसि तथा भृङ्गरिटावपि ॥२०९१॥
अथो फलकपाणौ च चर्मवत्यपि वाच्यवत् ।
चर्वणञ्चर्वणाऽऽस्वादे चर्वणा नीलमक्षिका ॥२०९२॥
चर्वणिर्नाऽनले स्त्री तु व्यवसायेतरे धियाम् ।
चलश्चलाचले त्रि स्त्री पुंश्चलीविद्युतोः श्रियाम् ॥२०९३॥
अथ कम्पे तुरुष्काख्यनिर्यासे चानिले पुमान् ।
चलनम्भ्रमणे कम्पे भूषणे वस्त्रघर्घरे ॥२०९४॥
पादे तु चलनः पुंसि पुंश्चल्यां चलना स्त्रियाम् ।
चलनी वस्त्रघर्घर्यां वारिभेदेऽपि च क्वचित् ॥२०९५॥
चव्या स्त्रियां वचायां स्याच्चविके चव्यमिष्यते ।
चषकोऽस्त्री सुरापात्रे पाने मद्यान्तरेऽपि च ॥२०९६॥
चाक्रिको घाण्टिके चापि तैलिकेऽपि द्वयोर्मतः ।
चाटो ना चटने चार्थोपजीविभिदि च स्मृतः ॥२०९७॥
चौरे वर्णे कृष्णहरित्सिते च त्रि तु तद्वति ।
चाटुः पशुपिचण्डे ना प्रियवाक्ये तु ना च नप् ॥२०९८॥
नृपादिस्तुतिवाक्ये तु चाटु स्यात्स्त्री नपुंसकम् ।
चाटुकारस्तु ना हारभेदे हेमगुडैः कृते ॥२०९९॥
यष्टिमात्रेऽपि च त्रिस्तु विज्ञेयोऽयं प्रियंवदे ।
चातुरः शकटे चक्रगण्डौ दाक्ष्ये तु चातुरी ॥२१००॥

चाटुकारिनियन्त्रोस्तु दृष्टेरपि च गोचरे ।
तथा चतुरसम्बन्धिन्याशुकारिणि च त्रिषु ॥२१०१॥
अथ चातुरकश्चक्रगण्डौ पुस्यभिधेयवत् ।
गोचरे लोचनस्यापि चाटुकारे नियन्तरि ॥२१०२॥
चान्द्रभागस्तु ना शैलविशेषभिदि शीतगोः ।
चान्द्रभागा चान्द्रभागी नदीभेदे द्वयं मतम् ॥२१०३॥
चन्द्रभागस्य सम्बन्धिन्येतत्स्यादभिधेयवत् ।
चान्द्री स्त्री पूर्णिमायां स्याच्चन्द्रसम्बन्धिनि त्रिषु ॥२१०४॥
चामरन्तु भवेत्क्लीबं ह्रीबेरे च प्रकीर्णके ।
अथो चमरसम्बन्धिन्यर्थवच्चामरम्मतम् ॥२१०५॥
पुमांश्चामरपुष्पः स्यात्पूगकाशाम्रकेतके ।
चामीकरन्तु कनके चामरेऽपि नपुंसकम् ॥२१०६॥
चाम्पेयो हेम्नि किञ्जल्के तथा चम्पकपादपे ।
नागकेशरवृक्षे च ना क्ली तु प्रसवेऽनयोः ॥२१०७॥
चारः प्रियालवृक्षे ना बन्धे चैव स्पशे गतौ ।
चारन्तु स्यात्प्रियालस्य प्रसवे चाङ्गणेऽपि नप् ॥२१०८॥
चारकः पालकेऽश्वादेः स्यात्संचालकबन्धयोः ।
चारणं चारणाद्यर्थे न ना चारयतेर्द्वयम् ॥२१०९॥
देवजात्यन्तरे तु द्वे चारणोऽपि कुशीलवे ।
चारिः पशुमुखव्याधौ लक्षणीयेऽपि च स्त्रियाम् ॥२११०॥
चारी तु स्त्री नाट्यनान्द्यागतावन्नस्य सेवने ।
चारुर्बृहस्पतौ पुंसि शोभने त्वभिधेयवत् ॥२१११॥
चित्राखुपर्णीमोडुम्ब्रा सुभद्राऽवन्तिकासु तु ।
मायायां सर्वनक्षत्रनदीभेदेषु च स्त्रियाम् ॥२११२॥
चारुनालं रक्तपद्मे योगे त्वर्थवदिष्यतं ।
चालनी चालनं च स्त्री पुंसोस्तितउनि स्मृतम् ॥२११३॥
अथ चालयतेरर्थे चालनं चालना नना ।
चिकुरः पादपे केशे पुंसि स्यात्पादपान्तरे ॥२११४॥

द्वयोस्तु गृहबभ्रौ स्याद्विहगे च सरीसृपे।
चञ्चले तु त्रिषु ज्ञेयं युवतीनां च लोचने ॥२११५॥
ईषन्निमीलिते च क्ली चिकुरं परिकीर्त्तितम् ।
चिक्कणः कथितो धान्ये मसृणे तु त्रिषु स्मृतम् ॥२११६॥
चितिस्त्रियामुच्यते ज्ञाने ज्ञातरि त्वेष भेद्यवत् ।
चितं छन्ने त्रिषु चिता स्त्रियां सा चितिचित्ययोः ॥२११७॥
चित्यायां स्त्री चिता क्ली तु चये त्रिश्चितिकर्मणि ।
चितिस्तु स्त्री समूहे स्याच्चितायां चयनेऽपि च ॥२११८॥
ज्ञाने च चेततौ त्वेष धातौ पुँल्लिङ्ग इष्यते ।
चित्तन्नपुंसकं बुद्धौ हृदयेऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥२११९॥
चित्यं मृतकचैत्ये स्याच्चित्या मृतचितौ स्त्रियाम् ।
चित्रं नपुंसकं पुण्ड्रे स्यादालेख्येप्यथ त्रिषु ॥२१२०॥
आश्चर्ये कर्बुराभिख्यवर्णयुक्तेप्यथो पुमान् ।
देवतानुक्रमे प्रोक्त आखुराजे चिरन्तने ॥२१२१॥
कर्बुराख्यगुणेऽथ स्त्री चित्रा हेमन्तरा त्रिषु ।
पशुकामेष्टिभेदे न्यग्रोध्यां कृष्णत्रिवृत्यपि ॥२१२२॥
गोदुम्बाख्यलताजातौ सुभद्राधुनिभेदयोः ।
वेदशालिमुखे चापि नक्षत्रे चन्द्रदैवते ॥२१२३॥
तद्युक्ते कालमात्रे च तत्कालोत्पन्नयोषिति ।
द्वयोस्तु चित्रः पाठीननाम्नि मत्स्यान्तरे मतः ॥२१२४॥
चित्रकस्तु पुमान्वह्निसंज्ञायाम्भेषजौषधौ ।
तन्मूले च तथैरण्डे द्वे तु राजिलभोगिनाम् ॥२१२५॥
त्रयोदशानां भेदानामेकस्मिन्व्याघ्र एव च ।
अथ क्लीबं चित्रकन्तत्तिलके सम्प्रपुज्यते ॥२१२६॥
चित्रगुप्तस्तु पुंसि स्याद्यमे तस्य च लेखके ।
चित्रपक्षः पक्षिभेदे द्वे कपिञ्जलसंज्ञके ॥२१२७॥
चित्रपर्णी पृश्निपर्णीलतायां त्रि तु यौगिके ।
चित्रभानुः पुमान्सूर्ये पावकेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥२१२८॥

अथ चित्ररथः सूर्ये चन्द्रे गन्धर्वभिद्यपि ।
चित्रलः कालिङ्गवल्ल्यां छाग्यां स्त्री चित्रला मता ॥२१२९॥
चित्राङ्गो द्वे व्याघ्रभेदे पिण्डारकसमाह्वये ।
अथ चित्रशरीरे च चित्राङ्गो वाच्यवन्मतः ॥२१३०॥
चिपिटः पृथुके पुंसि त्रि तु पिच्छितविस्तृते ।
चिरजीवी द्वयोः काके पुमांस्तु ब्रह्मणि स्मृतः ॥२१३१॥
चिरण्टी त्ववमन्तव्या सा द्वितीयवयस्स्त्रियाम् ।
सुवासिनीति प्रथिते स्त्रीविशेषेऽपि कोविदैः ॥२१३२॥
चिरमेही गर्दभे द्वे यौगिके त्वर्थवन्मतः ।
ग्रीवाभेदेऽतसीविद्युत्खद्योते चिलमीलिका ॥२१३३॥
मत्स्यभेदे चिलिचिमो द्वयोर्हैमवते तु ना ।
वृक्षभेदे च तस्यैव प्रसवे क्लीबमिष्यते ॥२१३४॥
चिल्लः क्लिन्नेऽक्ष्णि ना त्रिस्तु क्लिन्नाक्षे द्वे खगान्तरे ।
आतापिसंज्ञे चिल्ली तु भ्रुवि शाके च मारिषे ॥२१३५॥
चिह्नन्नपुंसकं प्रोक्तम्पताकायां च लक्ष्मणि ।
चीबो ना पीतमुद्गे च तन्तावप्यंशुकान्तरे ॥२१३६॥
काकुकङ्गौ च मदनद्रुमे चोदीच्यनीवृति ।
भूम्नि तद्देशराजेषु तु द्वयोर्मृगयोरपि ॥२१३७॥
व्यवस्थया तु मृगयोर्लक्षणं चैवमुच्यते ।
ताम्रवर्णो मृगो यः स हरिणः स्यात्स एव च ॥२१३८॥
सितक्रोडः स चोनः स्यादित्येकः प्रोक्तलक्षणः ।
अन्यः कपोतवर्णो यस्त्रिंशदङ्गुलमानकः ॥२१३९॥
इत्युक्तः क्लो तु मदनफले चीनमयस्यपि ।
चीरं क्ली छिन्नवस्त्रे च रेखालिखनभेदयोः ॥२१४०॥
गोस्तने वल्कले चाऽथ चीरी झिल्लाख्यकीटके ।
चीर्णपर्णस्तु निम्बेऽपि खर्जूरद्रौ तथा पुमान् ॥२१४१॥
चुक्रोऽम्लवेतसे बीजपूरे चाऽऽम्लरसे पुमान् ।
विमन्त्रणे गुञ्जिकायां सुन्दरे तु द्वयोर्मतः ॥२१४२॥

चुक्रन्तु यच्छुचौ भाण्डे सक्षौद्रगुडकाञ्जिके।
त्रिरात्रं धान्यराशिस्थं भवेन्मस्त्वादि तत्स्मृतम् ॥२१४३॥
स्त्री चुक्राथ चाङ्गेर्यां चुक्री त्र्यम्लरसान्विते।
चुम्बकश्चुम्बनपरे धूर्त्तेऽयस्कान्तयोरपि ॥२१४४॥
बहुग्रन्थैकदेशज्ञे घटस्योर्ध्वावलम्बने।
चुम्रस्तु स्यात्पुमान्नाशे नाशवत्यभिधेयवत् ॥२१४५॥
चुलुकी शिशुमारे स्यात्कुण्डीभेदे कुलान्तरे।
चुलुको भाण्डभेदे ना द्वीपाख्ये व्याघ्रके द्वयोः ॥२१४६॥
नृस्त्रियोस्तु द्रवाधारप्रसृते परिकीर्त्तितः।
चुलुम्पो गमने प्रोक्तश्चुलुम्पा छागयोषिति ॥२१४७॥
चुल्लः क्लिन्नाक्षजन्तौ च क्लिन्ने चाक्षणि वाच्यवत्।
चुल्ली चितायामुद्धानेऽपि स्त्रियाम्परिकीर्त्तिता ॥२१४८॥
चूचुर्द्वयोः किरात्याञ्च शम्बरादपि पुल्कसात्।
वैदेहाद्वापि सम्भूतः संकरस्तत्र कीर्त्तितः ॥२१४९॥
चूडा शिखावलभ्योः स्त्री मूर्ध्नि बाहुविभूषणे।
चूडामणिः स्त्री गुञ्जायां पुंस्त्रियोस्तु शिरोमणौ ॥२१५०॥
चूडारभा तूच्चटायां स्त्री चूडावति पुनस्त्रिषु।
चूतकः कूपके पुंसि तथाम्रे परिकीर्त्तितः ॥२१५१॥
चूर्णमस्त्री वासयोगे धूलौ क्षारान्तरेऽप्यथ।
कपर्दके तु चूर्णी स्त्री चूर्णी दग्धेऽभिधेयवत् ॥२१५२॥
चूर्णिश्चूर्णयतौ ना स्त्री ग्रन्थभेदकपर्दयोः।
चूलिस्तु पिष्टकेऽपि स्याच्चापस्याप्यटतौ स्त्रियाम् ॥२१५३॥
चूलिकस्तु तिले ना स्याच्चूलिकी कुक्कुटे द्वयोः।
चूलिका तु स्त्रियां जातिश्छन्दोभेदे गजस्य च ॥२१५४॥
कर्णमूले तथा नाटकाङ्गेऽपि परिकीर्त्तिता।
चूषा गजवरत्रायां स्त्री चूषं चूषणे न ना ॥२१५५॥
चेत् कुत्सितेऽथ साकल्ये स्तुतौ पक्षान्तरेऽव्ययम्।
चेतना संविदि स्त्री स्याच्चेतनः प्राणिनि त्रिषु ॥२१५६॥

चेलोऽधमे भेद्यवत्स्याच्चेलं वस्त्रे नपुंसकम् ।
चेष्टितन्तु गतौ क्लीबं चेष्टायां च तथेष्यते ॥२१५७॥
चैत्यं चिताऽङ्के बुद्धाऽण्डे याज्ञिकाज्याधिवासने ।
देवालये च क्लीबं स्यादस्त्री तूद्देशपादपे ॥२१५८॥
चैत्रः पुंसि वसन्तस्य प्रथमे मास्यथ स्त्रियाम् ।
चैत्रं मृते देवकुले ना भूभृन्मांसभेदयोः ॥२१५९॥
तत्स्थायां पौर्णमास्यां स्याच्चैत्री भेत्ता तु चित्रया ।
नक्षत्रेण युते कालभेदे चित्राह्वये पुनः ॥२१६०॥
काले जाते स यदि स्यादस्त्र्यर्थश्च ततश्च सः ।
पारिशेष्याद्यथायोग्यं विज्ञेयो नपि पुंसि वा ॥२१६१॥
क्लीबं चैत्ररथं यक्षराजोद्याने प्रकीर्त्तितम् ।
अहीनक्रतुभेदे तु द्विरात्रे मन्मथे च ना ॥२१६२॥
चैद्याश्चेदिषु पुंभूम्नि द्वे तु चेदीशपुत्रयोः ।
चोक्षो गीतान्तरे नाऽथ त्रिर्दक्षशुचिचारुषु ॥२१६३॥
चोचन्तरुत्वचि तथा भृङ्गाख्ये गन्धवस्तुनि ।
चोडः प्रावरणे पुंसि देशभेदे नृभूमनि ॥२१६४॥
चोदना वेदवाक्ये स्त्री कर्कट्यां चोदनी मता ।
प्रेषणे तु विरोधोक्तावपि स्याच्चोदना नना ॥२१६५॥
चोद्यं स्यादद्भुते प्रश्ने चोदनीये तु वाच्यवत् ।
आश्चर्यविषये चैव प्रश्नस्य विषयेऽपि च ॥२१६६॥
चोलस्तु पुंसि कूर्पासे करमर्द्दद्रुमेऽप्यथ ।
तत्फले क्ली दाक्षिणात्यनीवृद्भेदे तु भूम्नि ना ॥२१६७॥
तद्राजे तु पुमानस्य सन्ताने तु द्वयोरयम् ।
गृहच्छदिःषु त्वस्त्री स्याच्चोलो जानपदेष्वयम् ॥२१६८॥
चोलकी तु त्रिषु ज्ञेयश्चोलकेन समन्विते ।
पुमांस्तु नागरङ्गे च करीरे किष्कुपर्वणि ॥२१६९॥
चौरिको ना पुराऽध्यक्षे द्यूतकारे तु स द्वयोः ।
चौरिका तु स्त्रियामेव स्तेये सम्परिकीर्त्तिता ॥२१७०॥

चौलन्तु चूडाकरणे त्रि तु स्याच्चोलयोगिनि।
च्यवनो मुनिभेदे स्याच्च्यवनं प्रच्युतौ मतम् ॥२१७१॥
च्युतादानं कन्दुकादानदण्डेऽपि च्युतग्रहे।
च्युतिः स्त्री च्यवने योनौ वायौ च च्योततौ तु ना ॥२१७२॥
च्यूपः पुमान् रवौ वाते युद्धेऽपि च पुमान्मतः ॥२१७२½॥

छ

छो निर्मलेऽन्यवच्छा तु स्त्रियां छादन इष्यते॥२१७३॥
छगणं पशुविष्ठायां नपुंसकमुदीरितम्।
छगनुस्तु पुमानुक्तो जन्तौ वैश्वानरेऽपि च ॥२१७४॥
छगलं नीलवस्त्रे क्ली छगली वृद्धदारके।
द्वयोस्त्वजे स्याच्छगलो मुनिभेदे तु ना मतः ॥२१७५॥
छत्रो द्वेऽसावतिच्छत्रे कुस्तुम्बुरु शिलीन्ध्रयोः।
आतपत्रे त्वयं छत्रः पुंनपुंसकयोर्मतः ॥२१७६॥
छत्रभङ्गस्तु वैधव्ये स्वातन्त्र्यनृपनाशयोः।
छत्राकं स्यादहिच्छत्रं रास्ना छत्राक्युदीरिता ॥२१७७॥
छत्वरो ना निकुञ्जेऽथ क्लीवं निष्कुड्यमन्दिरे।
शय्योत्तरच्छदे चाऽथ कुत्सके भर्त्सके त्रिषु ॥२१७८॥
छदः स्यात्पक्षिपक्षेऽपि वृक्षपत्रेऽपवारणे।
ग्रन्थिपर्णे तमालेऽपि पुमानेष प्रकीर्त्तितः ॥२१७९॥
छदनं तरुपत्रेऽपि पिधाने पक्षिपक्षके।
छदिस्तु पटले गेहे सान्तं क्लीबं प्रकीर्त्तितम् ॥२१८०॥
छद्म (न) प्रोक्तं कैतवे च सद्मन्यपि नपुंसकम्।
छन्दो वशेऽप्यभिप्राये वाञ्छायामपि पुंस्ययम् ॥२१८१॥
छन्दः श्रुतीच्छापद्येषु सामगानां विशेषतः।
अनूहसामग्रन्थे च स्वैराचारे नपुंसकम् ॥२१८२॥
छन्नं तु रहसि क्लीबं छादिते वाच्यलिङ्गकम्।
छर्दनो मदनद्रौ ना निम्बवृक्षेप्यलम्बुषे ॥२१८३॥

शुनामपि ज्वरेऽथ स्याच्छर्दनी त्रपुसे स्त्रियाम् ।
छर्दनं तु छर्दना च ननोद्वान्तौ पदद्वयम् ॥२१८४॥
छलं स्यात्स्खलिते चैव छद्मन्यपि नपुंसकम् ।
छल्ली वीरुधि सन्ताने वल्कले कुसुमान्तरे ॥२१८५॥
छविश्चर्मणि शोभायां दीप्तौ यज्वद्विजन्मनाम् ।
वेद्यामास्तरणे तद्वच्चित्रप्रतिकृतौ स्त्रियाम् ॥२१८६॥
छागो ना करुणाभिख्यपादपे छगले द्वयोः ।
छागणो ना करीषाग्नौ त्रि तु छगणयोगिनि ॥२१८७॥
छात्रः शिष्ये पुमांश्छात्रं मधुभेदे नपुंसकम् ।
छान्दसः श्रोत्रिये पुंसि छन्दःसम्बन्धिनि त्रिषु ॥२१८८॥
छाया प्रोक्ताऽऽतपाभावे प्रतिबिम्बार्कयोषितोः ।
पालनोत्कोचयोर्दीप्तिसच्छोभागेहपङ्क्तिषु ॥२१८९॥
छायाकरश्छत्रधारे योगार्थे त्वर्थवन्मतः ।
छिगुरस्तु द्वयोः···गृहबभ्रौ च कीर्त्तितः ॥२१९०॥
छिदुक्ता छेदने स्त्रीत्वे छेत्तरि त्वभिधेयवत् ।
छित्वरः स्याच्छरे पुंसि शठे तु त्रिषु कीर्त्तितः ॥२१९१॥
छिदिरस्त्र्यायुधे ना तु रज्ज्वग्न्योर्मूषिके द्वयोः ।
छिदुरश्छेदके धूर्त्ते भङ्गुरे वैरिणि त्रिषु ॥२१९२॥
छिद्रं त्रिच्छिद्रिणि क्ली तु रन्ध्रे दोषे तथाऽऽगसि ।
छिन्ना गुलूच्यां वृश्ये तु त्रि क्ली दधनि निःशरे ॥२१९३॥
छुपः क्षुपे स्पर्शने च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
छुरितं सोत्प्रासहासे त्रि तु छिन्ने प्रयुज्यते ॥२१९४॥
छेको गृहाश्रितमृगपक्षिणोस्त्रि तु नागरे ।
छेदनं व्रश्चने क्लीबं कनकस्य फलेऽपि च ॥२१९५॥
साधने तु त्रिषु छित्ते रथच्छेदयतेः कृतौ ।
छेदनं छेदना चेति क्लीबेऽपि स्यात्स्त्रियां तथा ॥२१९६॥

१. छिदिरस्तु पुमानग्नौ छत्रे क्ली मूषिके द्वयोः ।
अस्त्री त्वायुधसामान्ये वज्रशब्दः प्रयोगवान् ॥
छेदनं छेदना चेति क्ली स्त्रियोः सम्प्रयुज्यते ।

ज

जो ना मृत्युञ्जये ताते जन्मन्यपि जनार्दने ।
जवे भोगे विषे दीप्तौ पिशाचे देवरे स्त्रियाम् ॥२१९७॥
अपि मध्यगुरौ जा तु जातो त्रिस्तूत्तरस्थितः ।
जाते जेतरि भुक्ते च रंहस्विनि तथा मतः ॥२१९८॥
जकुटो मलये पुंसि शुनके तु द्वयोर्मतः ।
जगच्च जगती चेति लोके स्त्रीक्लीबयोर्मतम् ॥२१९९॥
छन्दःसु स्त्री जगत्यष्टाचत्वारिंशत्स्वरादिषु ।
सुरभौ च पृथिव्यां च जने त्वेतद्द्वयोर्भवेत् ॥२२००॥
वायौ तु ना त्रिषु त्वेष त्रसे च स्याच्चराचरे ।
जगलम्मेदके पिष्टमद्येथ कितवे त्रिषु ॥२२०१॥
जघनं स्त्रीकटेः पूर्वभागेऽपि कटिमात्रके ।
कस्यापि वस्तुनः पश्चाद्भागेऽपि च नपुंसकम् ॥२२०२॥
पनसे ना स्त्रियां काकोदुम्बर्यांञ्जघनेफला ।
जघन्यं गर्ह्यगहनजघनस्थाऽन्तिमे त्रिषु ॥२२०३॥
नपुंसकं तु विज्ञेयं जघन्यं रक्तचन्दने ।
जघन्यजो द्वयोः शूद्रे त्रि तु नीचेऽनुजेऽपि च ॥२२०४॥
जङ्गलं त्वस्त्रियां मांसेऽथ स्थाने निर्जने त्रिषु ।
जङ्घनन्तु स्त्रियाः श्रोणिपुरोभागे कटावपि ॥२२०५॥
जटा स्त्रीकेशसंदर्भभेदे मांसाख्यभेषजे ।
तरोः शिफायां च जटी त्वेषा प्लक्षे स्त्रियां तथा ॥२२०६॥
द्रोणाख्यपरिमाणस्य चत्वारिंशत्यथ त्रिषु ।
जटी जटावति भवेत्संहतेऽपि तथा मतः ॥२२०७॥
जटायुः पुंसि सम्पातेः कनीयसि च गुग्गुलौ ।
जटिला तु वचा मांसी पिप्पलीषु स्त्रियां मता ॥२२०८॥
ह्रीबेरे जटिलं क्लीबं जटावति तु वाच्यवत् ।
जठरः कठिने जीर्णे त्रिषु कुक्षौ तु न स्त्रियाम् ॥२२०९॥

जडस्तु स्तब्धनिर्बुद्ध्योः शीतेऽनालोच्यकारिणि ।
जडा स्त्रियां शूकशिम्ब्यां पङ्कगन्धिजले जडम् ॥२२१०॥
जडस्त्वेष गुणे शीते पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
जतुका जिनपत्रायां तथैव स्थावरान्तरे ॥२२११॥
चक्रवर्त्तिन्याख्यकेऽथ जतुकं हिङ्गुलाक्षयोः ।
गवथौ स्याज्जतुफला पुंसि तूदुम्बरद्रुमे ॥२२१२॥
जत्र्वंससन्धाववसाने क्ली ना धर्ममेधयोः ।
जनः स्याज्जनतायां च जनने मनुजेऽपि च ॥२२१३॥
राजन्यबन्धावप्राज्ञे प्रतिवेशविवाहयोः ।
महर्लोकात्परे लोकेऽथ स्याद्गमनके जनम् ॥२२१४॥
जनको जन्मदे त्रिर्ना ताते सीतापितर्यपि ।
जनक्षयस्तु संग्रामे जनस्यापि क्षये पुमान् ॥२२१५॥
जननी करुणामात्रोर्जननं वंशजन्मनोः ।
भवेज्जनपदो जानपदोऽपि जनदेशयोः ॥२२१६॥
जनयित्री जनयिता पित्रोर्द्वे जन्मदे त्रिषु ।
जनिर्ना जायतौ स्त्री तु पत्न्यां जन्मवरस्त्रियोः ॥२२१७॥
जनित्रं सामभेदेऽथ जनित्री मातरि स्त्रियाम् ।
जनित्वं तु कुले द्यावापृथिव्योरोदसोरपि ॥२२१८॥
जनिमा पुंसि पित्रोः स्यादुत्पत्तौ तनयेऽपि च ।
प्राणिद्यूतेप्यथ जनी स्नुषातिबलयोरपि ॥२२१९॥
उत्पत्तौ जतुकृद्वल्ल्यां सीमन्तिन्यां च कीर्त्तिता ।
जन्तुर्नरे पुमान्प्राणिमात्रेऽपि परिकीर्त्तितः ॥२२२०॥
अथ जन्तुरथः क्षुद्रमृगे कोद्रङ्गनामके ।
योगे तु तस्य लिङ्गादि तर्कणीयं यथायथम् ॥२२२१॥
जन्मोत्पत्तौ च तोये च नान्तं क्लीबमुदीरितम् ।
जन्योऽपवादे न स्त्री स्यात्क्ली युद्धजनितव्ययोः ॥२२२२॥
हट्टे चाथोत्पादनीये जनितर्यपि वाच्यवत् ।
तथा वरस्य स्निग्धेषु नवोढाज्ञातिभृत्ययोः ॥२२२३॥

त्रिगीतेऽपि द्वयोस्त्वेष मातृवाहककीटके ।
जन्या मातृवयस्यायां जन्यस्तु जनके पुमान् ॥२२२४॥
जन्युर्द्वयोरपत्ये च जन्तौ चाऽथ पुमानयम् ।
जन्युरग्नौ च पितरि प्रादुर्भावे प्रजापतौ ॥२२२५॥
रक्तपुष्पे जपा-शब्द उपांशूच्चारणे जपः ।
जपापुष्पं कुङ्कुमे स्याज्जपायाः कुसुमेऽपि च ॥२२२६॥
जम्रः स्त्रीपुंसयोर्भेके विप्रे च परिकीर्त्तितः ।
जम्बालः शैवले पङ्के न स्त्रियामयमिष्यते ॥२२२७॥
जम्बीरो जम्भलद्रौ च स्तम्बे मरुत्रकाऽभिधे ।
जम्बुर्द्रुमद्वीपभिदोः स्त्रियां मरुसरित्यपि ॥२२२८॥
जम्बुको वरुणे ना त्रिर्नीचे द्वे तु सृगालके ।
जम्बूर्जम्बूटवृक्षे स्त्री तत्फले जम्बु नप्स्त्रियोः ॥२२२९॥
चतुष्पाज्जातिभेदे तु जम्बूः स्त्रीपुंसियोर्मता ।
जम्बूकः फेरवे नीचे पश्चिमाशापतावपि ॥२२३०॥
जम्बूलस्तु पुमाञ्जम्बूविटपे क्रकचच्छदे ।
जम्भस्तु दंष्ट्रापार्श्वस्थदन्ते ना शुक्तिपादयोः ॥२२३१॥
दैत्यभेदे च जम्बीरतरौ क्लीबन्तु तत्फले ।
विदारणे तु वक्त्रस्य जम्भा स्त्री परिकीर्त्तिता ॥२२३२॥
जम्भलो यक्ष्मभेदे च बुद्धदेवान्तरेऽपि ना ।
तथा जम्बीरवृक्षेऽपि क्ली तु तत्प्रसवे मतम् ॥२२३३॥
जयस्तु पीतमुद्गे ना नान्दीवृक्षे पुरन्दरे ।
जयन्ते भारते जित्यां होमभेदे युधिष्ठिरे ॥२२३४॥
जयनं विजयेऽश्वादिसंनाहेऽप्यश्वचर्मणि ।
जयन्तो जेतरि त्रिर्ना भीमे शक्रसुते शिवे ॥२२३५॥
जयन्ती तिथिभिद्गौरीतर्कारीन्द्रसुतासु च ।
जया तु गौरीतत्सख्योः स्त्रियां देव्यन्तरेष्वपि ॥२२३६॥
अर्हच्छासनदेवीनामेकस्यां च प्रकीर्त्तिता ।
जयस्य हेतुभूतायां विद्यायामपि कुत्रचित् ॥२२३७॥

तृतीयायान्तथाष्टम्यान्त्रयोदश्यान्तिथिष्वपि ।
शमीद्रुमे हरीतक्यामग्निमन्थाख्यपादपे ॥२२३८॥
वचायां जीरके चापि तर्कार्याञ्च जया मता ।
जरठः कर्कशे पाण्डौ कठिनेऽप्यभिधेयवत् ॥२२३९॥
जरन्तो महिषे द्वे स्यात्स्थविरे त्वभिधेयवत् ।
जरायुश्चारण्यके सामभेदे गर्भाशये तु ना ॥२२४०॥
जरूथोऽग्नौ शरीरे च मासे संवत्सरेऽपि ना ।
जर्जरस्त्वस्त्रियां शक्रध्वजे वाद्यन्तरे तु ना ॥२२४१॥
दण्डिकासंज्ञके चैव शैवले द्वे तु कोकिले ।
अथ जीर्णे च भिन्ने च जर्जरं वाच्यवन्मतम् ॥२२४२॥
जर्जरीकं बहुच्छिद्रे जराग्रस्तेऽपि वाच्यवत् ।
जर्णो नेन्दौ द्रुमे कर्वे खगे तु द्वे त्रि जीर्णके ॥२२४३॥
जण्डश्चन्द्रे च वृक्षे च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
जर्त्तः प्रजननाख्येऽङ्गे चाभीरे योनिरोम्णि च ॥२२४४॥
जर्त्तिलो मुनिभेदे चाप्यरण्यजतिले पुमान् ।
जलं गोकलने नीरे ह्रीवेरेऽथान्यवज्जडे ॥२२४५॥
अथो जलकरङ्कोऽब्जे नारिकेलफलेऽपि च ।
शङ्खे जललतायाश्च वारिवाहे च कीर्त्तितः ॥२२४६॥
जलकूपी कूपगर्त्ते पुष्करिण्यान्तथा स्त्रियाम् ।
जलगुल्मो जलावर्त्ते कच्छपे जलचत्वरे ॥२२४७॥
जलजं कमले ना तु शङ्खे द्वे मत्स्यकूर्मयोः ।
जलतापिक इल्लीसे काके चीऋषयोश्च ना ॥२२४८॥
जलदो मुस्तके मेघे जलदा विद्युति स्त्रियाम् ।
जलप्रियो वराहे स्याद्योगार्थे त्वर्थवन्मतः ॥२२४९॥
जलबिल्वः कर्कटे स्यात्पश्वाङ्गे जलचत्वरे ।
जलरुण्डो जलावर्त्तपयोरेणौ भुजङ्गमे ॥२२५०॥
जलसूचिः कङ्कत्रोटिमत्स्ये शृङ्गाटकेपि च ।
शिशुमारे च पुँल्लिङ्गो जलौकायां तु योषिति ॥२२५१॥

जलाञ्जलं स्वतो वारिनिर्गमे शैवलेऽपि च ।
जलाटनो लोहपृष्ठे जलौकायां जलाटनी ॥२२५२॥
जलात्मा महिषे द्वे स्याद्वाच्यवत्तु जडात्मनि ।
जलाशयमुशीरे क्ली जलाधारे तु पुंस्ययम् ॥२२५३॥
जडाऽभिप्रायके त्वेतदभिधेयवदिष्यते ।
जलेशः पुंसि वरुणे जम्भले च महोदधौ ॥२२५४॥
जवा स्याद्दोड्रपुष्पेऽथ जवो वेगे त्रि तद्वति ।
जवनो वेगयुक्ते त्रिर्गतौ तु जवनम्मतम् ॥२२५५॥
गतिहेतौ च वेगेऽपि वायौ तु जवनः पुमान् ।
जवी वेगवति त्रि स्याद्द्वे तु वातप्रमीमृगे ॥२२५६॥
जसुरिस्त्वरणौ पत्रे वह्नावपि पुमान्मतः ।
जहकः पुंसि कालेऽथ स्यात्क्षुद्रत्यागिनोस्त्रिषु ॥२२५७॥
जह्नुस्तु पुंसि राजर्षिभेदे विष्णावपि स्मृतः ।
जागृविर्नृपतावग्नावपि पुँल्लिङ्ग उच्यते ॥२२५८॥
जाघनी तु स्त्रियां जङ्घायां त्रिर्जघनयोगिनि ।
जाङ्गलं क्लीबमगुरौ त्रि तु जङ्गलयोगिनि ॥२२५९॥
द्वयोः कपिञ्जले स्त्री तु शूकशिम्ब्यां हि जाङ्गली ।
जाङ्गली विषविद्यायां जाङ्गलं जालिनीफले ॥२२६०॥
जातं कदम्बके न स्त्री त्रिषूत्पन्ने जनौ तु नप् ।
जातरूपं सुवर्णे च रूप्ये चापि नपुंसकम् ॥२२६१॥
जातिः समूहे मालत्यां सामान्ये गोत्रजन्मनोः ।
अश्मन्तिकामलक्योश्च तथा जातीफले स्त्रियाम् ॥२२६२॥
ब्राह्मणादिषु वर्णेषु वेदार्थे सर्वजन्तुषु ।
स्वभावे प्रभवे छन्दोभेदेष्वार्यादिकेष्वपि ॥ २२६३॥
कदाचिदर्थे जातु स्यादव्ययं गर्हणेपि च ।
जात्यो मुख्ये कुलीने च सुन्दरेऽप्यभिधेयवत् ॥२२६४॥
जानुः स्यादस्त्रियामुरूजङ्घासन्धौ तथैव च ।
द्वात्रिंशदङ्गुले मानभेदे जानुः प्रकीर्त्तितः ॥२२६५॥

जापकं त्रिर्जपकृति क्ली तु कालेयके स्मृतम् ।
जाबालो द्वे अजाजीवे जबालापत्यके त्रिषु ॥२२६६॥
जामाता दुहितुः पत्यौ तथा श्वेततिले धवे ।
तथैव सूर्यावर्त्तेऽपि पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥२२६७॥
जामिः कुलस्त्रियां स्त्री स्यात्तृणे स्वसरि चाङ्गुलौ ।
नीवृद्भेदे जले त्वेतज्जामि क्लीबमुदाहृतम् ॥२२६८॥
आलस्ये चेतसोभ्यासात्समानगुणवस्तुनः ।
जाम्बवानृक्षराजेऽस्य सुतायां जाम्बवत्यपि ॥२२६९॥
जायानुजीवी पुंसि स्यान्नटे च बकपक्षिणि ।
जायुः पित्ते भेषजेऽपि पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥२२७०॥
जारः पुमानुपपतौ भास्करे च प्रयुज्यते ।
अविवाह्यासु कन्यासु या स्यात्कन्या प्रसूतिजा ॥२२७१॥
कन्या तस्यां स्त्रियां जारी पार्वत्यामपि चेष्यते ।
ओषधीभिदि जारं तु क्ली रक्तकुमुदे मतम् ॥२२७२॥
जारद्गवं तु स्त्रीयोगियानमार्गस्य दक्षिणा ।
या वीथिस्तत्र मार्गस्य पुनस्तस्यान्तरिक्षगे ॥२२७३॥
स्थाने जारद्गवं क्लीबं त्रिर्जरद्गवयोगिनि ।
जालं गवाक्षे दन्ते क्ली पुष्पक्षारकवृन्दयोः ॥२२७४॥
आनाये कपटे चापि भारताद्दक्षिणे क्वचित् ।
वर्षात्स्यादन्तरे द्वीपे विप्रावैदेहजे पुनः ॥२२७५॥
द्वयोरथ पटोल्यां स्त्री जाली नीपद्रुमे तु ना ।
जालकं क्षारके दम्भे कलायां नाययोरपि ॥२२७६॥
गवाक्षभेदेऽथ तिले नाभौ च कफले न ना ।
जालिका त्वधवायां च वदना वृतिवाससि ॥२२७७॥
गिरिसारजलौकायोमयकङ्कटके स्त्रियाम् ।
द्वे तु कीटे मर्कटाख्ये जालकः परिकीर्त्तितः ॥२२७८॥
जालपादो द्वयोर्हंसे राजहंसेऽम्बुकुक्कुटे ।
कुक्कुटेऽपि त्रिषु त्वेष जालाकारपदे मतः ॥२२७९॥

जालिको वाच्यवद्ग्रामे जालिजालोपजीविनोः ।
धूर्त्ते च द्वे तु लूताख्यक्षुद्रजन्त्वन्तरे मतः ॥२२८०॥
जाली जालवति त्रि स्याद्द्वयोर्दाशे प्रकीर्त्तितः ।
जालिनी चित्रशालायां पिप्पल्यां च स्त्रियां मता ॥२२८१॥
जाल्मो नीचे त्रि निर्बुद्धौ स्तब्धेऽनालोच्यकारिणि ।
जाहको घोङ्कमार्जारखट्वाकारुण्डिकासु च ॥२२८२॥
जाह्ववं तु भवेज्जन्तुवाचकं तन्नपुंसकम् ।
गङ्गायां जाह्नवी जह्नुयोगिनि त्रिषु जाह्नवम् ॥२२८३॥
जिर्वाच्यवत्स्याज्जयिनि पिशाचे तु पुमान्मतः ।
जिगत्नुस्तु पुमान्प्राणे शीघ्रगे वाच्यवन्मतः ॥२२८४॥
जिगीषा जेतुमिच्छायां व्यवसायप्रकर्षयोः ।
जिघांसुर्हन्तुमिच्छौ त्रिर्ना तु शत्रौ प्रयुज्यते ॥२२८५॥
जिङ्गी स्त्रियामियं प्रोक्ता मञ्जिष्ठासंज्ञभेषजे ।
तथा दीर्घफलायां च कोशातक्यां प्रयुज्यते ॥२२८६॥
जितस्त्रिषु स्वीकृते च युद्धभग्नाभिभूतयोः ।
जये तु जितमित्येतन्नपुंसकमुदीरितम् ॥२२८७॥
जितिः स्त्रियां स्याद्विजये सामभेदे तथा मता ।
जित्यो हलौ पुमाञ्जित्या विजये स्त्रीत्व इष्यते ॥२२८८॥
जित्वति जयशीले त्रिः काश्यां स्त्री जित्वरी मता ।
जिनोऽर्हति च बुद्धे च विष्णौ स्याज्जित्वरे त्रिषु ॥२२८९॥
जिप्री द्वे शकुनौ जिप्रः पुंसि स्यात्क्रोधकालयोः ।
जिष्णुरग्न्यर्जुनेन्द्रेषु विष्णौ ना त्रि तु जित्वरे ॥२२९०॥
जिह्मं त्वगरवृक्षे च तथा पापे नपुंसकम् ।
जिह्मः सर्पे द्वयोरेष त्रिलिङ्गः कुटिलेऽलसे ॥२२९१॥
जिह्मगस्तु द्वयोः सर्पे मन्दगामिनि वाच्यवत् ।
जिह्वा तु वाचि ज्वालायां रसने च स्त्रियां मता ॥२२९२॥
जिह्वापस्तु द्वयोरुक्तो मार्जारे च तथा शुनि ।
जिह्वालो द्वे सारमेये तथैव पृषदंशके ॥२२९३॥

जीमूतोऽद्रौ भृतिकरे देवताडे पयोधरे ।
जीरोऽन्ने पावके खड्गेऽजाज्यान्त्वेष नृशण्डयोः ॥२२९४॥
जीरो द्वयोर्भवेदश्वे जीरः क्षिप्रेऽभिधेयवत् ।
जीविर्द्रव्ये पुमांष्टङ्के गुल्मे च शकटेऽप्यथ ॥२२९५॥
द्वयोः पशौ च मद्गौ च चटके च प्रयुज्यते ॥
जीलं तु करपत्र्यां स्यात्कोशे चर्मपुटे दृतौ ॥२२९६॥
जीवो ना गीष्पतौ जन्तौ क्षेत्रज्ञे वृक्षभिद्यपि ।
जीवा मौर्व्यां वचाभूम्योर्जीवन्त्यां शिञ्जितेऽपि च ॥२२९७॥
जीवं द्विषष्टिस्वरके छन्दोभेदे नपुंसकम् ।
जीवकः स्यात्क्षपणके तथैवासनपादपे ॥२२९८॥
कूर्मशीर्षे च पुँल्लिङ्गस्तथा स्यादहितुण्डिके ।
त्रि तु श्रेष्ठे प्राणितरि वृद्धयाजीविनि सेवके ॥२२९९॥
कृपणे च स्त्रियां त्वेषा जीवन्त्याख्यलतान्तरे ।
आजीवे जीवने चापि जीविका परिकीर्त्तिता ॥२३००॥
अथ च प्राणवत्येष जीवत् स्यादभिधेयवत् ।
जीवथो द्वे मयूरे च कूर्मे च परिकीर्त्तितः ॥२३०१॥
जीवदस्तु पुमाञ्छत्रौ वैद्ये चापि प्रयुज्यते ।
भेद्यवत्त्वेष जीवस्य छेत्तर्यपि च दातरि ॥२३०२॥
जीवनं जीविकायाश्च प्राणनेऽन्ने च वारिणि ।
विष्णुशक्त्यन्तरे तु स्त्री जीवन्त्यामपि जीवनी ॥२३०३॥
स्याज्जीवना स्त्री मेदायामनाजीवतयेः क्रतौ ।
जीवनीया तु जीवन्तीशाकसंज्ञलतान्तरे ॥२३०४॥
काकाङ्गीसंज्ञके च स्त्री जीयितव्याऽम्बुनोस्तु नप् ।
जीवन्त ऋषिभेदे ना स तु स्याज्जीवतादिति ॥२३०५॥
आशिषो विषये चैव जीवितर्यपि वाच्यवत् ।
जीवन्ती तु स्त्रियां जीवासंज्ञशाकलतान्तरे ॥२३०६॥
ज्योतिष्मतीगुडूच्योश्च सा शमीवन्दयोरपि ।
पुनर्नवौषधौ जीवबोधनी कथिता स्त्रियाम् ॥२३०७॥

जीवबोधन इत्यस्य योगे लिङ्गादि तर्क्यताम् ।
जीवला स्त्री वचायां स्यान्मुनिभेदे तु जीवलः ॥२३०८॥
जीवातुरस्त्री जीवे च द्रव्येऽन्ने सलिले तथा ।
औषधेऽपि विशेषेण कीर्त्तितो जीवनौषधे ॥२३०९॥
जीवितं प्राणने क्लीबं प्राणेषु च तथा मतम् ।
त्रि तु प्राणिनवत्येवं जीवेर्ण्यन्तस्य कर्मणि ॥२३१०॥
जीवितेशः प्राणनाथे दयिते द्रविणागमे ।
जुगुप्सा तु घृणायां च निन्दायां च स्त्रियां मता ॥२३११॥
जुङ्गितस्तु द्वयोर्हीनवर्णे पूर्वैः प्रकीर्त्तितः ।
वर्जिते जुङ्गितं त्रि स्याद्वर्जने तु नपुंसकम् ॥२३१२॥
जूर्जवे स्त्री गतौ रान्ता ह्रस्वादी राक्षसे द्वयोः ।
जुष्टं तु क्लीबमुच्छिष्टे सेविते त्वभिधेयवत् ॥२३१३॥
जुहुराणस्तु ना वह्नावध्वर्यावनड्ह्यपि ।
अथ द्वयोर्हये त्रिस्तु कुटिले परिकीर्त्तितः ॥२३१४॥
जुहूः स्त्रियां पुरोडाशे स्रुग्विशेषे च कीर्त्तिता ।
जूस्त्वरागमने प्रोक्ता सामान्यगमने स्त्रियाम् ॥२३१५॥
जूराकाशसरस्वत्यां पिशाच्यां जवने स्त्रियाम् ।
जूटो ना निकुरम्बे स्यात्केशविन्यासभिद्यपि ॥२३१६॥
जूर्णः पुमान् यावनाले तथा वज्रे प्रकीर्त्तितः ।
वृद्धे तु भेद्यवज्जूर्णे जूर्णा स्त्री बल्बजेष्वियम् ॥२३१७॥
जूर्णिः स्त्रियां ज्वरे क्रोधे शरीरे च प्रकीर्त्तिता ।
जूर्णिर्नाग्नौ रवौ वायौ ब्रह्मणि त्रिस्तु सत्वरे ॥२३१८॥
जृम्भितं करणे स्त्रीणां जृम्भणे च विचेष्टिते ।
उत्फुल्ले तु विवृद्धे च जृम्भितं वाच्यवन्मतम् ॥२३१९॥
जैत्रं क्ली जयने द्यूते जयशीले तु भेद्यवत् ।
जैत्र्यां स्फोताख्यवल्ल्यां स्त्री विष्णुक्रान्तान्यनामनि ॥२३२०॥
जैवातृको ना परिघे परिखाचन्द्रयोरपि ।
शुके तु द्वे धने त्वेतत्क्लीबे जैवातृकं मतम् ॥२३२१॥

त्रिस्तु स्याद्भिषगायुष्मत्कृषीवलकृशेष्वयम् ।
जोन्तालः पुंसि वर्णे स्यान्नीललोहितमिश्रके ॥२३२२॥
त्रि तद्वत्यथ जोन्ताला यावनालाख्यधानके ।
जोषः प्रीतौ च सेवायामपि पुंसि प्रकीर्त्तितः ॥२३२३॥
जोषं सुखे प्रशंसायां मौने स्याल्लङ्घनेऽव्ययम् ।
ज्ञो ज्ञातरि त्रिष्वथ नात्मनि चान्द्रमसावनौ ॥२३२४॥
ज्ञातिस्ताते सगोत्रे चैक्ष्वाकराजान्तरे पुमान् ।
ज्ञानी स्यात्पुंसि दैवज्ञे ज्ञानयुक्तेऽन्यलिङ्गकः ॥२३२५॥
ज्याशब्दस्तु स्त्रियां भूमौ मौर्व्यां मातरि चोच्यते ।
ज्यानिस्तु हानौ बुद्धौ च जीर्णत्वे च सरिद्भुजोः ॥२३२६॥
ज्यायान्वृद्धतरे चातिप्रशस्ते पूर्वजे त्रिषु ।
ज्येष्ठस्तु पूर्वजे वृद्धतमे शस्ततमे त्रिषु ॥२३२७॥
त्रपुहीबेरयोस्तु क्ली नीलिकाख्ये च लोहके ।
द्वयोस्तु हंसेऽपि ज्येष्ठो ज्येष्ठा स्त्री शम्भुशक्तिषु ॥२३२८॥
नवस्वेकत्र चालक्ष्मीगृहगोधिकयोरपि ।
इन्द्रदैवतनक्षत्रेऽपि ज्येष्ठा स्त्रीत्व इष्यते ॥२३२९॥
ज्यैष्ठः पुमाञ्छुक्रमासे ज्येष्ठसम्बन्धिनि त्रिषु ।
ज्यैष्ठी ज्येष्ठायुतायां च पौर्णमास्यां स्त्रियां मता ॥२३३०॥
ज्योतिरात्मनि सूर्ये च हविर्होमार्चिर्दीप्तिषु ।
ग्रहनक्षत्रतारासु नक्षत्रेऽपि विशेषतः ॥२३३१॥
विलोचने धने पुत्रे सामभेदेषु चापि नप् ।
ज्योतिष्टोमाख्ययागे च तथाग्नौ ज्योतिरस्त्रियाम् ॥२३३२॥
ज्योतिषाम्पतिरर्के च चन्द्रे चापि पुमान्मतः ।
ज्योतिष्मज्ज्योतिषा युक्ते त्रिषु ज्योतिष्मती पुनः ॥२३३३॥
पिण्ड्याख्यस्थावरे क्षुद्रधान्ये यस्याह्वयान्तरम् ।
गवीधुरिति तत्र स्याज्ज्योतिषो मासि कुत्रचित् ॥२३३४॥
ज्योतिःसम्बन्धिनि त्वेतन्त्रिलिङ्गं परिकीर्त्तितम् ।
ज्योत्स्ना चन्द्रातपेऽपि स्याज्ज्योत्स्नायुक्तनिशि स्त्रियाम् ॥२३३५॥

ज्यौत्स्नी तु स्त्री पटोल्यां स्याज्ज्योतिष्मद्रजनावपि ।
ज्योत्स्नावति त्वथ ज्यौत्स्नस्त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥२३३६॥
ज्वरो व्याधौ हरक्रोधोद्भूतायां च महारुजि ।
ज्वरघ्नस्तु गुडूच्यां स्याच्छाकभेदे च वास्तुके ॥२३३७॥
ज्वलनोऽग्नावथ क्लीबे ज्वलनं दीपने स्मृतम् ।
ज्वलनं ज्वलना चेति न ना ज्वलन इष्यते ॥२३३८॥
ज्वलितं वाच्यवद्दग्धेप्युज्ज्वलेऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥२३३८१/२॥

झ

झो झण्टीशे सुरगुरौ दैत्यराजेऽध्वनावपि ॥२३३९॥
झटो झटितरि द्वे तु शूद्रामैत्रेयजे नरे ।
झरा स्त्री झरणे नद्यां झरी ना निर्झरे झरः ॥२३४०॥
झर्झरः स्यात्कलियुगे वाद्यभेदे नदान्तरे ।
विशीर्णे तु त्रिलिङ्गं तज्झर्झरं परिकीर्त्तितम् ॥२३४१॥
झला स्यादातपस्योर्मौ दुहितर्यपि च स्त्रियाम् ।
झल्लरी वाद्यभेदे च छत्रान्तालम्बिवाससि ॥२३४२॥
झल्लिकोद्वर्त्तनपटे स्त्रियां द्योते च कीर्त्तिता ।
झषो ना विपिने तापेऽथ द्वे मकरमत्स्ययोः ॥२३४३॥
झषा नागबलासंज्ञभेषजे स्यात्स्त्रियामियम् ।
झाण्टो निकुञ्जे कान्तारे व्रणादीनां च मार्जने ॥२३४४॥
पुमान्स्थावरभेदेऽपि संघातेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
झिल्लिका स्त्रीमता झिण्ट्यामातपस्य रुचावपि ॥२३४५॥
झिल्ली चीर्याख्यकीटे स्यादातपस्य रुचौ स्त्रियाम् ।
तथा दग्धौदनेऽपि स्याद्वर्त्त्यामुद्वर्त्तनांशुके ॥२३४६॥

ञ

ञः पुमान्स्याद्बलीवर्दे शुके वामगतावपि ॥२३४६१/२॥

ट

टः पुमान्वामने पादे निःस्वनेऽपि पुमान्मतः ॥२३४७॥
टङ्कोऽस्त्री परशौ शैलशृङ्गे पाषाणदारणे ।
मुद्रितोन्मानभेदे च टङ्कणे चाथ नृस्त्रियोः ॥२३४८॥
मृगभेदेऽप्यवस्थाने ना तु कश्मीरविश्रुते ॥
महीरुहान्तरे नीलकपित्थे क्ली फले तयोः ॥२३४९॥
टङ्कारो विस्मये पुंसि प्रसिद्धौ शिञ्जिनीध्वनौ ।
टट्टरी लम्बभेदे स्याल्लम्बापटहसंज्ञके ॥२३५०॥
मिथ्यावादेऽपि च स्त्रीत्वे भेरीनादे तु टट्टरः ।
टागरष्टङ्कणक्षारे केकराख्ये च वीक्षिते ॥२३५१॥
अथ केकरनेत्रे त्रिष्टागरः स्याच्छरीरिणि ।
टारो लङ्के तुरङ्गे च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥२३५२॥
टुण्टुकोऽल्पे त्रिलिङ्गः स्यान्ना तरौ शोणकाभिधे ॥२३५२½॥

ठ

ठो मण्डले चन्द्रबिम्बे शून्ये चालोकगोचरे ॥२३५३॥

ड

डः पुमान्वाडवाग्नौ स्याड्डा डाकिन्यां स्त्रियां मता ।
डिङ्गरस्तु भवेत्क्षेप्ये गङ्गरेऽप्यभिधेयवत् ॥२३५४॥
डिम्बो भयध्वनावण्डे फुप्फुसे प्लीह्नि विप्लवे ।
डिम्बिका जलबिम्बे स्यान्मोणके कामुकस्त्रियाम् ॥२३५५॥
डिम्भः शिशौ बालिशे च त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥२३५५½॥

ढ

ढो ढक्कायां पुमानुक्तः शुनि पुच्छे तथा शुनः ॥२३५६॥

ण

णः पुमान्बिन्दुदेवे स्याद्भूषणे गुणवर्जिते ।
पानीयविलयेऽपीति केचिदूचुर्विपश्चितः ॥२३५७॥

त

तश्चौरामृतपुच्छेषु क्रोडे म्लेच्छे च कुत्रचित्
पुमांस्तु तरणे पुण्ये कथितः शब्दवेदिभिः ॥२३५८॥
तक्षकस्त्रिस्तक्षितरि ना तु तक्ष्ण्युरगान्तरे ।
तक्षा ना वर्द्धकौ द्वे तु त्रिप्रीकरणजे नरे ॥२३५९॥
आयोगवे च वृश्चिश्चेत्तक्षणं तस्य ना पुनः ।
तक्षा दीपे ज्वरे सूर्य आतपे क्ली तु पुत्रयोः ॥२३६०॥
तगरन्तु नताख्ये स्याद्गन्धद्रव्ये नपुंसकम् ।
नन्द्यावर्त्तस्य पुष्पेऽथ तद्गुल्मे तगरः पुमान् ॥२३६१॥
तङ्कः सम्भावनायाञ्च भीतावपि पुमान्मतः ।
तटस्तटी तटश्चेति त्रिषु तीरेऽद्रिसानुनि ॥२३६२॥
तथा जलाशयप्रान्ते क्षेत्रे तु क्ली तटम्मतम् ।
तटिस्तटतिधातौ ना सूनायां तु स्त्रियाम्मतम् ॥२३६३॥
तडागोऽस्त्री जलाधारविशेषे यन्त्रकूटके ।
तण्डकः खञ्जने फेने समासप्रायवाचि च ॥२३६४॥
देवदारुतरुस्कन्धमायावहुलकेष्वपि ।
तण्डुलस्तु नृलिङ्गः स्याद्व्रीह्यादिफलवीजके ॥२३६५॥
विडङ्गे च स्त्रियान्त्वेषा पिप्पल्यां तण्डुला मता ।
तण्डुलीयः शाकभेदे विडङ्गतरुताप्ययोः ॥२३६६॥
तण्डुवीणः कीटमात्रे बर्बरे तण्डुलोदके ।
तण्डूर्द्रोणिप्लवे चैव तथा दर्व्यां स्त्रियां मता ॥२३६७॥
ततं व्याप्ते विस्तृते च वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ।
क्लीवं वीणादिवाद्येऽथ ततो वायौ पितर्यपि ॥२३६८॥

तत्त्वं स्वरूपे परमात्मनि भूते रहस्यके ।
विलम्बिताख्यनृत्ये च नपुंसकमुदीरितम् ॥२३६९॥
तथाभ्युपगमे पृष्टप्रतिवाक्यसमुच्चये ।
सदृशे निश्चयेऽप्येतदव्ययं परिकीर्त्तितम् ॥२३७०॥
तनुर्वपुषि लग्ने चासृग्धरायामपि स्त्रियाम् ।
तन्वी स्त्रियां स्यात्पिप्पल्यां नान्दीवृक्षे तनुः पुमान्॥२३७१॥
तनुस्तु विरलेऽल्पे च मेद्यलिङ्गः प्रकीर्त्तितः ।
तनुस्तु सान्तं क्लीवं च स्याद्विस्तारशरीरयोः ॥२३७२॥
तनूनपात्तु पुँल्लिङ्ग आज्ये चाग्नौ च कीर्त्तितः ।
तनूरुहन्तु लोम्नि स्यात्पतत्रे च नपुंसकम् ॥२३७३॥
तन्तुस्तु सूत्रे ना यज्ञसंस्थायां चाऽथ स द्वयोः ।
एकत्र भेदे भेदानाम्मण्डलाह्वयभोगिनाम् ॥२३७४॥
ग्राहाख्ययादोभेदे च सामभेदे पुनर्नपि ।
सर्वाग्निचित्यायाः पुच्छे पक्ष्याकारस्य वस्तुनः ॥२३७५॥
छुरिकायां च खड्गादि मुष्टौ चाप्यस्त्रियां मतः ।
तन्तुवायः कुविन्देऽपि तथा लूताक्रिमौ द्वयोः ॥२३७६॥
तन्त्रस्वराष्ट्रव्यापारे तन्तुवायपरिच्छदे ।
शास्त्रौषधान्त्रमुख्येषु प्रयोगेऽध्वरकर्मणाम् ॥२३७७॥
एकस्यैवोभयार्थत्वे कुटुम्बव्यापृतावपि ।
सेनायां सामसूत्रे च सिद्धान्तेऽन्यकुटुम्बके ॥२३७८॥
क्रतुकामाभिवादानामृक्सामानां समागमे ।
अथ तन्त्री स्त्रियामेव वीणाया गुण इष्यते ॥२३७९॥
तन्त्रकं नववस्त्रे स्याद्गुडूच्यां तन्त्रिका मता ।
तपोऽर्केऽपि च वीतंसनाम्नि ना पक्षिबन्धने ॥२३८०॥
तपनोरुष्करतरौ रवौ धर्मे पशावपि ।
चन्द्रे नरकभेदे ना तपनन्तापकर्मणि ॥२३८१॥
तपनीयं त्रि तप्तव्ये क्ली स्वर्णे शालिभिद्यपि ।
तपस्तु नपि कृच्छ्रादौ धर्मसन्तापयोरपि ॥२३८२॥

लग्नान्नवमराशौ च शिशिरर्त्तौ तथा त्वचि ।
लोकभेदेऽप्यथ तपा न स्त्रियां माघमास्ययम् ॥२३८३॥
तपसस्तु पुमांश्चन्द्रे वाच्यवन्महति स्मृतः ।
तपस्या व्रतचर्यायां तपस्यः फाल्गुने पुमान् ॥२३८४॥
तपस्वी शिशिरर्त्तौ च चन्द्रे च त्रिस्तु तापसे ।
शौच्येऽथ मांस्यां कटुरोहिण्यां च स्त्री तपस्विनी ॥२३८५॥
तपोधनस्तापसे स्यान्मुण्डिर्यान्तु तपोधना ।
तप्ता स्याद्भास्करे पुंसि भेद्यलिङ्गस्तु तापके ॥२३८६॥
तमः क्ली नरके शोके पापे ध्वान्ते ज्वलत्यपि ।
अज्ञाने प्रकृतेः सत्त्वरजोभिन्ने गुणे निशि ॥२३८७॥
तमास्तु राहावुदितः पुंनपुंसकयोरयम् ।
तमसा स्त्री नदीभेदे नारूपाऽध्यवसाययोः ॥२३८८॥
तमालस्तिलके खड्गे तापिच्छे वरुणद्रुमे ।
तमालपत्रं तापिञ्छे तिलके पत्रकेपि च[1] ॥२३८९॥
तमिस्रमन्धतमसे तमोमात्रक्रुधोरना ।
तमिस्रा ध्वान्तरात्रौ च रात्रिमात्रेऽपि च स्त्रियाम् ॥२३९०॥
तमोनुत्पुंसि चन्द्रार्कपावकेषु प्रकीर्त्तितः ।
तमोनुदस्तमोनुद्वत्पुंसि चन्द्रार्कवह्निषु ॥२३९१॥
तमोऽपहः पुमान्सूर्ये चन्द्रे चाग्नौ जिनेऽपि च ।
तरोऽग्नौ तरणे पुंसि पेटके तु तरी स्त्रियाम् ॥२३९२॥
तरङ्गिणी हरिद्रायां नद्यां सोर्मिणि तु त्रिषु ।
तरणिः सूर्यवार्ध्योर्ना स्त्री सरिन्नौरयेष्वियम् ॥२३९३॥
पुष्पस्तम्बे कुमार्याख्ये व्रजस्तम्भे च सोप्ययम् ।
गवामुत्थापने काष्ठे पतितानां त्रि तु द्रुते ॥२३९४॥
तरण्डो वडिसीसूत्रबद्धकाष्ठादिके प्लवे ।
नौकायामथ न स्त्री स्यात्तिन्तिडीडिम्बचिश्चयोः ॥२३९५॥

---

१. तमालाख्यस्य वृक्षस्य भस्मादेश्च विशेषके ।

तरत् स्त्रियां प्लवेपि स्यात्कारण्डे च विहङ्गमे ।
तरत्रं क्ली प्लवे त्रिस्तु घासहारिणि तन्मतम् ।।२३९६।।
तरन्तस्तु द्वयोर्भेके वाच्यवत्स्यात्तरी तरि ।
तरलं त्रिश्चञ्चले च भास्वरे तरलस्तु ना ।।२३९७।।
हारमध्यगरत्ने च हारे च तरलं तु नपु् ।
चर्मकोशेऽथ तरला यवागूसुरयोः स्त्रियाम् ।।२३९८।।
तरवारिः सायके ना स्त्री यष्टचाख्यायुधान्तरे ।
तरो बले च वेगे च सान्तं क्लीबमुदीरितम् ।।२३९९।।
तरस्वी द्वे व्याघ्रकप्योस्त्रिशूरबलिवेगिषु ।
तरिशब्दः समाख्यातः पुंसि वैश्वानरानले ।।२४००।।
स्त्री चर्मवृतपेडायां नावि चैव तरिर्मता ।
तरीषः शोभनाकारे भेलेऽब्धिव्यवसाययोः ।।२४०१।।
तरुजस्तु पुमानग्नौ भेद्यलिङ्गस्तु वृक्षजे ।
तरुणं यूनि भव्ये त्रिर्नैरण्डे कुब्जपुष्पके ।।२४०२।।
तर्कः काङ्क्षावितर्कोहहेतुशास्त्रेषु कथ्यते ।
तर्कारः पादपे तक्रे नवनीतेन संयुते ।।२४०३।।
स्यात्सद्योमथिते वैजयन्त्यां तर्कार्युदीरिता ।
तर्कुः पुमान्सूत्रवेष्टशलाकायाम्प्रकीर्त्तितः ।।२४०४।।
अनलाधारपात्रेऽपि तथा शेफस्यपीष्यते ।
तर्तरीकं वहित्रे त्रि पारणे तु त्रिषु स्मृतम् ।।२४०५।।
तर्पणन्तु गुडाज्याढ्यलाजसक्तुषु चेन्धने ।
तृप्तौ तर्पयतेस्त्वर्थे तर्पणं तर्पणा न ना ।।२४०६।।
जलोद्भवे तु श्रृङ्गारस्तम्बे तर्पण एष ना ।
तर्षः पुमान्पिपासायां लिप्सायां च प्रकीर्त्तितः ।।२४०७।।
तलश्च पेटे तालाख्यद्रुमे शीतगुणे च ना ।
त्रि तु तद्वति शण्डे तु तालसंज्ञतरोः फले ।।२४०८।।
पाताले समदेशे च चतुर्भागे पलस्य च ।
पाणिना दक्षिणेनैव वीणातन्त्र्याश्च ताडने ।।२४०९।।

अधःस्वरूपयोस्त्वस्त्री तलमेतत्प्रकीर्त्तितम् ।
धने त्सरौ कार्यबीजे हस्तघ्ने तु तला तलम् ॥२४१०॥
तलितं विरले स्तोके तुच्छे चाप्यभिधेयवत् ।
अट्टालिकायान्तु स्त्रीत्वे तलिन्येषा प्रकीर्त्तिता ॥२४११॥
तलिमं कुट्टिमे तल्पे चन्द्रहासे वितानके ।
तलुनः पवने यूनि युवत्यां तलुनी स्मृता ॥२४१२॥
तल्पं शय्याऽट्टदारेषु संग्रामे नौशिरस्यपि ।
तल्ली तरुण्यान्तल्लस्तु जलाधारान्तरे पुमान् ॥२४१३॥
[1]तविषस्त्वर्णवे स्वर्गे बले ना तविषी भुवि ।
वात्यायां देवकन्यायामिन्द्रपुत्र्यामपि स्त्रियाम् ॥२४१४॥
ताडो ना ताडने ताडी स्त्री तालीपादपे मता ।
ताडिस्स्त्री तरुभेदेऽपि तथैवाभरणान्तरे ॥२४१५॥
ताण्डस्तु ताडने घोषे मुष्टिमेयतृणादिषु ।
यवद्रुमे तथैवाऽयम्पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥२४१६॥
ताण्डवस्त्वस्त्रियां नृत्ते तृणभेदे च कीर्त्तितः ।
तातस्तु जनके चाऽनुकम्प्येऽपि च पुमान्मतः ॥२४१७॥
तातगुः क्षुद्रताते ना ताताय तु हिते त्रिषु ।
तातलो रुजि पाके च लोहकूटे पुमानथ ॥२४१८॥
स्यान्मनोजवसे तप्ते तातलः सोऽभिधेयवत् ।
तानन्तु गीतिधर्मे स्याद्विस्तारे तान इष्यते ॥२४१९॥
तान्तस्तु मासे ना श्रान्तिमति तु त्रिषु कीर्त्तितः ।
तापिस्तापयतौ दैत्यभेदे ना स्त्री नदीभिदि ॥२४२०॥
तापिच्छस्तु तमालद्रौ काकतुण्ड्याञ्च पुंस्ययम् ।
तापी नद्यन्तरे तापः पुमान्सन्तापकृच्छ्रयोः ॥२४२१॥
क्लीबन्तामरसं पद्मे ताम्रकाञ्चनयोरपि ।
तामसं तमसायुक्ते त्रिः खले सतमोगुणे ॥२४२२॥
प्रावृण्निशि तु दुर्गायां निद्रायां निशि तामसी ।
ताम्बूलं वृक्षपत्रेऽपि नागवल्लीदलस्य च ॥२४२३॥

१. तरि···वा

शुक्तिचूर्णस्य पूगस्य वीट्यां पूगफलेऽपि च ।
ताम्बूली तु स्त्रियामेषा नागवल्ल्याम्प्रकीर्त्तिता ॥२४२४॥
ताम्रा स्त्री कृष्णलावल्ल्यां ताम्रं क्ली शुल्बरूपयोः ।
ना शुल्बवर्णसदृशे वर्णे तद्वति तु त्रिषु ॥२४२५॥
ताम्रचूडो रक्तचूडे त्रिर्द्वयोः कुक्कुटे मतः ।
ताम्रवृन्तः कुलत्थे ना रक्तवृन्ते तु वाच्यवत् ॥२४२६॥
तारस्तु शुद्धयुक्तायां मुक्ताशुद्धौ च तारणे ।
रदे वानरभेदेऽपि तारा तु स्यान्नरस्त्रियोः ॥२४२७॥
नक्षत्रे नेत्रमध्ये च रजते तु नृशण्डयोः ।
स्त्री बुद्धदेवताभेदे बालिगीष्पतिभार्ययोः ॥२४२८॥
त्रि तूच्चशब्दे विशदे क्लीवं तु प्रणवेऽम्बुजे ।
तारका त्वपुमानक्षितारानक्षत्रयोरथ ॥२४२९॥
कर्णधारे दैत्यभेदे पुंसि स्यात्प्रणवे तु नप् ।
तरीतृतारयित्रोस्तु त्रिर्देवीभिदि तारिका ॥२४३०॥
तारणः सौरसंक्रान्त्यवधिके मासि पुंस्ययम् ।
तारणी त्वस्त्रियां गोष्ठ्यां त्रि तु सम्बन्धिनि स्मृतः ॥२४३१॥
तरणेस्तारणस्याथ चार्थे तारयतेरना ।
तार्क्ष्यो ना गरुडे विष्णौ विष्णोर्वामनविग्रहे ॥२४३२॥
शैलजे च रथे चापि गरुडस्य तथाऽग्रजे ।
तार्क्ष्यं रसाञ्जने सौवर्चले च क्ली द्वयोर्हये ॥२४३३॥
तार्णं भारतवर्षस्य द्वीपभेदे नपुंसकम् ॥
तृणसम्बन्धिनि त्वेतत्तार्णं स्यादभिधेयवत् ॥२४३४॥
तालः कालक्रियामाने चपेटे त्रपुसेत्सरौ ।
तृणराजे करास्फालेऽङ्गुष्ठमध्यमयोर्मितौ ॥२४३५॥
इक्षुभेदे च नाऽथ स्त्री ताली दृढदलाह्वये ।
तृणद्रुमे तामलकी सौराष्ट्रीमुसलीषु च ॥२४३६॥
प्रतिताल्यामथ क्लीवं हरिताले फलेषु च ।
अत्रोक्तस्थावराणां स्यात्कांस्यस्थाल्यान्तु तत्र ये ॥२४३७॥

तालकं द्वारयन्त्रे च कर्णभूषणभिद्यपि ।
पुमांस्तूणगुणे त्रिस्तु तद्वत्ययमुदीरितः ॥२४३८॥
तालपत्री स्त्रियां वाद्यभेदे स्यात्तालसंज्ञके ।
तथा मूषिकपर्ण्यां न तु ना ताडङ्कभूषणे ॥२४३९॥
तालितं तूलितपटं गुणवादित्रभाण्डयोः ।
तालीशपत्रं भूम्यामलकीतालीशयोः स्मृतम् ॥२४४०॥
तावत्तत्परिमाणे त्रिरव्ययं त्ववधारणे ।
संभ्रमे च परिच्छेदे तथा कात्स्न्यधिकारयोः ॥२४४१॥
ताविषः स्वर्गवारिध्योस्ताविषी भूसरिद्भिदोः ।
वात्यायां देवकन्यायां क्ली तु तेजसि ताविषम् ॥२४४२॥
तिक्तस्तु पर्पटे पुंसि पटोले गुग्गुलावपि ।
विरसाख्यरसे षण्णां रसानां कटुकेऽपि च ॥२४४३॥
गन्धे च सुरभावे तद्गुणत्रययुते त्रिषु ।
तिक्तपर्वा गुडूचीहिलमोचीयष्टिषु स्त्रियाम् ॥२४४४॥
तिक्तशाकस्तु वरुणे खदिरे पत्रसुन्दरे ॥
तिक्ता तु कटुरोहिण्यां स्त्रीलिङ्ग्यां परिकीर्त्तिता ॥२४४५॥
तिग्मो वज्रोष्मणो त्रिस्तु तीक्ष्णतेजसि सोष्मसु ।
तित्तिरो द्वे खरक्वाणखगे ऋष्यन्तरे तु ना ॥२४४६॥
तिन्तिडीकाऽम्लिकाचिञ्चाद्याख्ये वृक्षे त्रिषु स्मृता ।
तिन्तिडीकं तु वृक्षाम्लाख्ये फलेऽथाम्बुवेतसे ॥२४४७॥
तित्रिणो दैत्यभेदे स्याच्चिञ्चायां तित्रिणी मता ।
तिमिरन्त्वन्धकारेऽपि न स्त्री नेत्ररुजान्तरे ॥२४४८॥
तिमिरा तु स्त्रियामेषा वाद्यभेदे प्रकीर्त्तिता ।
तिरोऽन्तर्धौ तिर्यगर्थेप्यव्ययम्परिकीर्त्तितम् ॥२४४९॥
तिरस्करणमित्येतच्छादनेऽनादरेपि नप् ।
भवेद्यवनिकायां तु सा तिरस्करिणी स्त्रियाम् ॥२४५०॥
तिरस्कारः परिभवेऽप्यन्तर्धानेऽपि कीर्त्तितम् ।
तिरीटस्तु पुमान्रक्तलोध्रे स्यात्कर्कटे तु नप् ॥२४५१॥

तिरीटी तु स्त्रियामेषा [1]बदर्याम्परिकीर्त्तिता ।
तिर्यक् तु साचिभेदे त्रिः पश्वादौ तु पुमान्मतः ॥२४५२॥
तिर्यग्गामी त्रि योगार्थे पुंसि शुक्रग्रहे स्मृतः ।
तिलकः पुण्ड्रके न स्त्री पुमान्रोगान्तरे तथा ॥२४५३॥
क्षुरकद्रौ क्षुद्रतिले तिलकालकसंज्ञके ।
पिप्लुभेदे कुरवके क्ली तु सौवर्चले तथा ॥२४५४॥
त्रिश्लोक्यां क्लोम्नि जठरस्थिते द्वे तु हयान्तरे ।
तिलित्सो गोनसे चैव तरक्षौ च द्वयोर्मतः ॥२४५५॥
तिल्यन्तु त्रिषु तैलीने तिलसाधुहितादिषु ।
तिष्यो वह्नौ कलियुगे शिवे मरुति पुष्यभे ॥२४५६॥
तद्युक्ते कालसामान्ये तज्जाते तु भवेत्त्रिषु ।
आमलक्याम्पुनः स्त्रीत्वे तिष्येति परिकीर्त्तिता ॥२४५७॥
तीक्ष्णो न स्त्री विषे तीक्ष्णं गरे कालायसे रणे ।
मुष्के सामुद्रलवणे तीक्ष्णस्तु स्याज्जवाग्रजे ॥२४५८॥
तीक्ष्णार्जकाह्वयस्तम्भे हिंस्रा कुशतृणन्तरे ।
सूर्ये च स्त्री तु तीक्ष्णेति वचायाम्परिकीर्त्तिता ॥२४५९॥
अथात्मत्यागिनि शिलोष्णेषु तीक्ष्णोऽभिधेयवत् ।
तीरं त्रपुणि कूले च तीर्यल्पेऽतिजवे शरे ॥२४६०॥
तीरितम्पारिते तीरं नीते तीरीकृतेऽपि च ॥
सत्ये वा सत्कृते सभ्यैर्वाच्यवद्व्यवहारगैः ॥२४६१॥
तीर्थमस्त्री पुण्यजले पुण्यक्षेत्रेऽध्वरे भगे ।
जलावगाहमार्गे च मन्त्राद्यष्टादशस्वपि ॥२४६२॥
शास्त्रे निदाने योग्ये च स्त्रीपुष्पे दर्शनेष्वपि ।
उपाध्यायेऽप्युपाये च नद्यां गुरुकुलेऽपि च ॥२४६३॥
तीवरं क्ली वले द्वे तु धीवरीब्राह्मणात्मजे ।
तीव्रा तु कटुरोहिण्यां राजिकामण्डदूर्वयोः ॥२४६४॥
क्लीत्वसत्त्वे नितान्ते तु तीव्रोऽत्युष्णे कटौ त्रिषु ।
तु पादपूरणे पक्षान्तरे भेदेऽवधारणे ॥२४६५॥

---

१. विदार्याम्

समुच्चये नियोगे च प्रशंसायां विनिग्रहे ।
तुग्रो यवे वरिष्ठे तु त्रिरन्नाकाशयोस्तु नप् ॥२४६६॥
तुङ्गो नगे च पुन्नागे ना प्रांशौ तु त्रिषु स्मृतः ।
निशाऽजगन्धयोस्तुङ्गी तुङ्गा स्याद्वंशरोचना ॥२४६७॥
तुङ्गीशस्तु पुमांश्चन्द्रे शिवे च परिकीर्त्तितः ।
तुच्छन्तु त्रिषु शून्ये स्यादसुखे तु नपुंसकम् ॥२४६८॥
तुञ्जस्तु दाने वज्रे च बलादानादिके च ना ।
तुञ्जा तु रक्षणे स्त्री स्याद्धिंसायां तु नरस्त्रियोः ॥२४६९॥
तुटिर्द्वयोरल्पकालभेदे वाद्यान्तरे लवे ।
सूक्ष्मैलायां संशये च ना त्वेष तुटतौ मतः ॥२४७०॥
तुण्डिकेरी कण्ठरुग्भिद्बिम्बीकार्पासिकासु च ।
तुण्डी नास्ये तथा शूननाभौ चैव स्त्रियां मता ॥२४७१॥
तुत्थं रसाञ्जने तुत्था नीली सूक्ष्मैलयोः स्त्रियाम् ।
तुन्नस्तु व्यथिते त्रि स्यान्नान्दीवृक्षे तु पुंस्ययम् ॥२४७२॥
तुमुलं संकुलरणे तुमुलो व्याकुले स्वरे ।
अथ त्रिलिङ्गस्तुमुलो विभीतकमहीरुहे ॥२४७३॥
तुम्बा तु रथचक्रस्य नाभौ स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ।
तुम्ब्यलाब्वाम्मता स्त्रीत्वे तत्फले तुम्बमिष्यते ॥२४७४॥
तुम्बुरी कथिता स्त्रीत्वे धन्याके कुक्कुरस्त्रियाम् ।
तुम्बुरुस्तिन्दुकीवृक्षे तत्फले तु नपुंसकम् ॥२४७५॥
गन्धर्वाऽधिपभेदे तु तुम्बुरुः पुंसि भाषितः ।
तुरगी त्वश्वगन्धायां चित्ते ना द्वे तुरङ्गमे ॥२४७६॥
तुरसत्रं षोडशाहोपवासेऽपि प्रकीर्त्तितम् ।
तुरनाम्नो देवमुनेः सत्रेऽपि स्यान्नपुंसकम् ॥२४७७॥
तुरिः स्त्री तन्तुवायोपकरणान्तर इष्यते ॥
तुतोर्तिधातौ त्वेष स्याद्वारिधौ च तुरिः पुमान् ॥२४७८॥
तुरुष्कः सिल्हनिर्यासे राजभेदेऽस्य तु स्त्रियाम् ॥
तुरुष्काऽपत्यके देशे तुरुष्काः स्युर्नृभूमनि ॥२४७९॥

तुला तून्मानदण्डेऽपि सादृश्येऽपि स्त्रियां मता ।
स्तम्भपीठे पलशते तथा राशौ च सप्तमे ॥२४८०॥
तुलाकोटिस्तुलानां द्वे कोटौ स्यान्नूपुरे तु ना ।
तुलाधारस्तुलाराशौ पुंसि वाणिजके त्रिषु ॥२४८१॥
स्यात्तुलापुरुषः पुंसि त्र्यहमेकैकभोजनात् ।
पिण्याकाचामतक्राम्बुसक्तूनां च व्रतान्तरे ॥२४८२॥
तुवरो ना कषायाख्यरसे त्रिषु तु तद्वति ।
तुवरी तु स्त्रियां धान्य आढकीसंज्ञके तथा ॥२४८३॥
सुराष्ट्रकाह्वये चापि भेषजे परिकीर्त्तिता ।
तुषो धान्यत्वचि स्वर्णादिखण्डेऽपि च तत्समे ॥२४८४॥
विभीतकतरौ च स्यात्तत्फले तु तुषं नपि ।
तुषारः शीकरे शैत्ये प्रालेये च हिमान्तरे ॥२४८५॥
शैत्यधर्मवति त्वेष तुषारो वाच्यवन्मतः ।
तुष्टस्तु नान्दीवृक्षे ना तुष्टौ क्ली तद्वति त्रिषु ॥२४८६॥
तुस्तः प्रदीपने चैव जटायामपि कीर्त्तितः ।
तूकः पर्वतजातौ स्यादुपस्थेऽपि तथा पुमान् ॥२४८७॥
तूणी नील्यां स्त्रियामुक्ता निषङ्गे तूण एष ना ।
तूबरो प्रौढश्रृङ्गे स्याद्व्यश्मश्रौ च पूरुषे ॥२४८८॥
पुरुषव्यञ्जनत्यक्ते स्यात्कषायरसेऽपि च ।
तूयं नपुंसकं तोये वाच्यवत्तु द्रुते मतम् ॥२४८९॥
तूरा गतिस्त्वराहिंसयोस्तूरो वाद्यनिस्वने ।
तूर्णं त्रिषु स्यात्त्वरिते हिंसिते क्ली तु हिंसने ॥२४९०॥
तूर्योऽस्त्री वाद्यनिर्घोषे वाद्ये तूर्यं नपुंसकम् ।
तूलोऽस्त्री स्यात्पिचौ क्ली तु ब्रह्मदारुविहायसोः ॥२४९१॥
तूलपुष्पो बकद्रौ स्याद्यौगिके तु यथायथम् ।
तूलिः शय्यान्तरे चित्रकूर्चिकायामपि स्त्रियाम् ॥२४९२॥
तूलिका कूर्चिकायां च शय्योपकरणेऽपि च ।
तूषं वासोदशायां क्ली तूषा तुष्टौ द्वयोर्मता ॥२४९३॥

तृणं स्यान्मल्लिकाभेदे सुरूपाख्येऽथ न स्त्रियाम् ।
दूर्वायवेक्षुप्रभृतिक्षुद्रस्थावरजातिषु ॥२४९४॥
तृणगोधा चित्रकोले कृकलासेऽपि च स्त्रियाम् ।
तृणता तु स्त्रियामुक्ता तृणत्वे च शरासने ॥२४९५॥
तृणराजस्तु हिन्ताले तालेऽपि च प्रकीर्त्तितः ॥
तृणशून्यं मल्लिकायां तथा स्यात्केतकीफले ॥२४९६॥
तृतीया स्त्री तृतीयस्यां विभक्तौ च तथा तिथौ ।
गौर्याश्चाथ त्रयाणान्तु तृतीयः पूरणे त्रिषु ॥२४९७॥
तृपत्समुद्रे चन्द्रे च तृणभूमौ तथा पुमान् ।
तृप्तं तु तृप्तौ षट्षष्टिस्वरे छन्दोऽन्तरे च नपू ॥२४९८॥
प्रीते तु सुहिते चैव तृप्तं स्यादभिधेयवत् ।
तृप्तः पुमान्पुरोडाशे क्ली तृप्तं पापदुःखयोः ॥२४९९॥
तृप्तिः सुखे च तोये च सौहित्ये च स्त्रियां मता ।
तृफलं शुष्कपर्णे च क्लीबं शुष्कतृणेऽपि च ॥२५००॥
तृफला तु स्त्रियामेषा लतायाम्परिकीर्त्तिता ।
तृट् स्त्री कान्ता कामपुत्र्यां स्याल्लिप्सोदन्ययोरपि ॥२५०१॥
तृषा तृष्णावदिच्छायां पिपासायामपि स्त्रियाम् ।
ते शब्दः क्रीडने स्त्री स्यात्क्रीडके तु त्रिषु स्मृता ॥२५०२॥
तेजनो ना शरस्तम्बे वेणौ स्यात्स्त्री तु तेजनी ।
तृणपूले च मूर्वायां ज्योतिष्मत्यां तथाऽसृजि ॥२५०३॥
आकर्णकर्षणाच्चापि यद्र्धाध्यधिकाङ्गुलम् ।
आकर्षणमथाकृष्टधनुष्कैर्यदिषोर्भवेत् ॥२५०४॥
सन्धानं तेजना तत्र निशाने च तथास्त्रियाम् ।
तेजोबलाम्बुधर्माग्निरेतोर्चिर्ज्योतिरात्मसु ॥२५०५॥
प्रभावे नवनीतेऽन्ने सत्त्वे ज्वलति पौरुषे ।
तेमनं व्यञ्जने क्लेदेऽपि क्लीबं परिकीर्त्तितम् ॥२५०६॥
तेरः कतकवृक्षे स्यात्तेरं तत्फलवक्त्रयोः ।
तेवनं स्यात्केलिवने क्रीडायाश्च नपुंसकम् ॥२५०७॥

तैतिलो गणके पुंसि तैतिलं करणान्तरे ।
ज्योतिःशास्त्रप्रसिद्धे स्यात्तथैव तिलपिञ्जके ॥२५०८॥
तैतिलास्तु कलिङ्गाख्ये नीवृद्भेदे नृभूमनि ।
तैलो न स्त्री तिलस्नेहे त्रि तु स्यात्तिलयोगिनि ॥२५०९॥
तैलपर्णी सिल्हकेऽपि श्रीवेष्टे श्वेतचन्दने ।
तोकं पुत्रे च पुत्र्यां च नपुंसकमपत्यवत् ॥२५१०॥
तोक्मं कर्णमले पुंसि हरिते च हरिद्यवे ।
तोग्मो हरिद्यवे पुंसि हरिद्वर्णेऽथ तद्वति ॥२५११॥
त्रिषु क्लीबं तु तोग्मं स्यात्कर्णमूलाभ्रयोरिदम् ।
तोडोऽपनयने पुंसि तोडं सशिखमुण्डने ॥२५१२॥
तोत्रं नपुंसकं प्रोक्तं प्राजने वेणुकेऽपि च ।
तोदकस्तोत्तरि त्रि स्यात्पुमांस्तु सितसर्षपे ॥२५१३॥
तोदनं व्यथने क्लीबं तोत्रेऽपि परिकीर्त्तितम् ।
तोयदो मुस्तके मेघे तोयदं धनुराज्ययोः ॥२५१४॥
अथ तोयधरो मुस्ता सुनिषण्णौषधीघने ।
तोयप्रसादनः पुंसि कतके तत्फले तु नप् ॥२५१५॥
तोरणं त्वस्त्रियां गेहबहिर्द्वारे नपि त्वदः ।
तरुप्रभेदेऽस्य फले त्वरायामपि तोरणम् ॥२५१६॥
तोषणी स्त्री हरिद्रायान्तुष्टौ क्ली तोषणं मतम् ।
तोषणं तोषणेत्येते अर्थे तोषयतेर्मते ॥२५१७॥
त्यागः समुज्झने पुंसि दानेऽपि परिकीर्त्तितः ।
त्यागी दातरि शूरे च वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ॥२५१८॥
त्रपा तु कुलटायां च लज्जायां च स्त्रियां मता ।
त्रपुर्वङ्गे च सीसे च नपुंसकमुदीरितम् ॥२५१९॥
त्रयी त्रिवेद्यां स्त्र्यपुमांस्त्रिवृन्दे त्रितये त्रिषु ।
त्रयोदशी पूरणे त्रिरथ कामतिथौ तथा ॥२५२०॥
स्त्री त्रयोदशतन्त्रीके वीणाभेदे त्रयोदशी ।
त्रासं त्रिजङ्गमे स्त्री तु त्रसी दिग्भ्रमदे भये ॥२५२१॥

त्रसरो वर्णकौशेयसूत्रके स्यात्पुमानथ ।
शलाकामण्डने सूत्रवेष्टने त्रसरोऽस्त्रियाम् ॥२५२२॥
त्रसरेणुः प्रभाख्यायां सूर्यपत्न्यां स्त्रियां मता ।
त्रसरेणुस्त्रि रजसि जालान्तःसूर्यरश्मिगे ॥२५२३॥
त्राकः शरणदे शीये त्रिर्धर्मे तु पुमान्मतः ।
त्राणं तु त्रायमाणायां रक्षणे त्रि तु रक्षिते ॥२५२४॥
त्राता त्रिः पातरि पुमांस्त्वयं स्यात्सितसर्षपे ।
त्रापुषं रजते क्लीबं विकारे त्रपुणस्त्रिषु ॥२५२५॥
त्रायमाणस्त्रिरक्षितृरक्ष्ययोर्वार्षिके स्त्रियाम् ।
त्रासः पुमान्मणेर्दोषे भयेऽपि परिकीर्त्तितः ॥२५२६॥
त्रिकं त्रिनिवहे त्रि स्यात्पृष्ठवंशधरे तु नप् ।
मुन्यन्तरेषुशालङ्कायनाख्येषु नृभूमनि ॥२५२७॥
त्रिका तु नेमौ कूपस्य स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
त्रिककुत्पुंसि विष्णौ च त्रिकूटाख्ये च पर्वते ॥२५२८॥
त्रिकण्टको निपत्रायां स्नुह्यामपि च गोक्षुरे ।
त्रिकूटो ना सुवेलाद्रौ क्ली सिन्धुलवणे स्मृतम् ॥२५२९॥
त्रिकेतुस्तु शुके ना त्रिः केतुत्रयसमन्विते ।
भवेत्त्रिगन्धमेलात्वक्पत्राणां क्ली समुच्चये ॥२५३०॥
त्रिगर्त्तास्तु नृभूम्नि स्युर्देशे ना गणितान्तरे ।
स्यात्त्रिगर्त्ता घुर्घुरिकाकामुकाङ्गतयोस्त्रियाम् ॥२५३१॥
त्रिदिवो व्योम्नि च स्वर्गे पुंनपुंसकयोर्मतः ।
त्रिदिवा तु नदीभेद एलायां च स्त्रियां मता ॥२५३२॥
त्रिधामा वासुदेवे च पुँल्लिङ्गः पावकेऽप्यथ ।
त्रिलिङ्गोऽयं यौगिकार्थे त्रिधामा परिकीर्त्तितः ॥२५३३॥
त्रिपक्षी श्राद्धभेदे स्यादन्ते पक्षत्रयस्य यः ।
पक्षत्रये च स्त्री त्रिस्तु बहुव्रीहौ प्रकीर्त्तिता ॥२५३४॥
त्रिपदी गजपद्धन्ध रज्जावपि पदत्रये ।
पदत्रयवति त्वेष त्रिपदो वाच्यवन्मतः ॥२५३५॥

त्रिपुटा त्रिपुटी च स्त्री त्रिवृद्वल्ल्यां प्रकीर्त्तिता ।
सूक्ष्मैलायां मल्लिकायां ना तु तीरसतीनयोः ॥२५३६॥
त्रिपुरी त्रिपुरं चैव क्ली स्त्रियोः स्यात्पुरत्रये ।
त्रिपुरी मदमत्ताख्यधूर्धुरे परिकीर्त्तिता ॥२५३७॥
आदन्ता त्रिपुरा स्त्रीत्वे पुरभेदे प्रकीर्त्तिता ।
त्रिमार्गा त्रिर्बहुव्रीहौ गङ्गायां स्त्री प्रकीर्त्तिता ॥२५३८॥
त्रिरेखस्तु पुमाञ्छङ्खे चिक्रोडाखौ पुनर्द्वयोः ।
त्रिवर्गो धर्मकामार्थे त्रिफलायां कटुत्रिके ॥२५३९॥
वृद्धिस्थानक्षये सत्त्वरजस्तमसि चेष्यते ।
त्रिवर्णकं गोक्षुरके त्रिफलायां कटुत्रये ॥२५४०॥
त्रिगन्धेऽपि तथैवेतन्नपुंसकमुदीरितम् ।
त्रिवलीकमपाने क्ली बलित्रययुते त्रिषु ॥२५४१॥
त्रिविक्रमोऽवतारान्तरे हरेस्त्रि तु यौगिके ॥
त्रिवृत्स्त्री त्रिवृतासंज्ञलताभेदेऽथ पुंसि सः । २५४२॥
नवसंख्यात्मके स्तोमे त्रि तु स्तोत्रे च तद्वति ।
तद्युक्तेऽप्यहरादौ स्याद्रज्ज्वादौ त्रिगुणेऽपि च ॥२५४३॥
त्रिवृता श्वेतवल्ल्यां स्त्री त्रिगुणे त्वभिधेयवत् ।
त्रिशङ्कुर्द्वे बिडालेऽपि शलभेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥२५४४॥
राजान्तरे तु तार्क्ष्ये च त्रिशङ्कुः पुंसि कीर्त्तितः ।
त्रिशिखं तु त्रिशूलेऽपि स्याच्छिरोभूषणान्तरे ॥२५४५॥
त्रिशिखस्तु पुमानेष कीर्त्तितो राक्षसान्तरे ।
त्रिशिरास्तु कुबेरे च पुमान्स्याद्राक्षसान्तरे ॥२५४६॥
त्रिष्टुभा सर्षपे गौरे त्रिष्टुभः सितसर्षपे ।
त्रिसुगन्धं तु जानीयादेलात्वक्पत्रसंयुते ॥२५४७॥
त्रिस्रोतास्तु नदीभेदे गङ्गायां च स्त्रियां मता ।
त्रुटिः स्त्री लेशसूक्ष्मैलार्धमात्राकालसंशये ॥२५४८॥
त्रेताऽग्नित्रितये चैव द्वितीये च युगे स्त्रियाम् ।
त्रैष्टुभं तु नपि व्योम्नि त्रिष्टुप्छन्दसि च त्रिषु ॥२५४९॥

त्रिष्टुप्सम्बन्धिनि स्याच्च प्रगाथे त्रिष्टुबादिके।
त्रोटिः स्त्री कट्फले चञ्च्वां खगे मीनान्तरेऽपि च ॥२५५०॥
त्र्यङ्कटं शिक्यभेदेऽपि धौताञ्जन्याञ्च न द्वयोः॥
त्र्यङ्गटः शिक्यभेदेऽपि विधौ जन्यां च कीर्त्तितः ॥२५५१॥
त्र्यश्रा स्त्रियां त्रिवृत्संज्ञवल्ल्यां त्र्यश्रौ पुनस्त्रिषु।
त्वशब्दोऽर्थे पुमांस्त्रिस्तु युष्मदेकार्थयोर्मतः ॥२५५२॥
त्वक् स्त्री चर्मणि वल्केऽपि चान्ता स्याच्च गुडत्वचि।
त्वक्पत्रं क्ली वराङ्गे स्त्री त्वक्पत्री वाष्पिकोषधौ ॥२५५३॥
त्वक्सारः पुंसि वेणौ च स्यात्तालादितृणद्रुषु।
क्ली तु तत्प्रसवे स्त्री तु त्वक्सारा वल्लिषु स्मृता ॥२५५४॥
त्वचा द्वे वल्कले क्ली सूत्कटाख्ये गन्धवस्तुनि।
त्वरितन्तु त्वरायां क्ली स्याच्छीघ्रे त्वभिधेयवत् ॥२५५५॥
त्वष्टा प्रजापतौ वह्नौ देवतक्षणि तक्षणि।
विष्णवग्रजे माध्यमिकदेवे दिनकरे च ना ॥२५५६॥
त्वष्टा तु त्वक्षितर्येष भेद्यवत्परिकीर्त्तितः।
त्वाष्ट्री तु सूर्यपत्नी भेदे त्वष्टुः पुनस्त्रिषु ॥२५५७॥
सम्बन्धिमात्रे यस्यापि त्वष्टा स्याद्देवतात्र च।
अपत्ये तु द्वयोस्त्वष्टुस्त्वाष्ट्रस्तु क्षपके पुमान् ॥२५५८॥
अरत्नीनां च यूपस्य स्यादरत्नौ चतुर्दशे।
त्विड् ज्वालादीप्तिशोभासु वाचि चैव स्त्रियां मता ॥२५५९॥

थ

थं रक्षणे मङ्गले च साध्वसे च नपुंसकम्।
शिलोच्चये तु थः पुंसि क्वचिच्च भयरक्षके ॥२५६०॥

द

दंशो द्वयोर्मक्षिकायां वन्यायामल्पके पुनः।
तज्जातिभेदे दंशी स्त्री वर्मदंशनयोस्तु ना ॥२५६१॥

दंशितं जातदंशे च त्रिषु स्यात्कवचान्विते ।
दंष्ट्री ग्राहवाराहाखुव्याघ्राहिषु मतो द्वयोः ॥२५६२॥
दः पुमानचले दन्ते स्त्रियां शोधनदानयोः ।
छेदोपतापरक्षासु पुमान्दो दातरि स्मृतः ॥२५६३॥
दक्षः प्रजापतिभिदि मुनिभेदे बले च ना ।
प्राचेतसे हरवृषे कुक्कुटे तु द्वयोर्मतः ॥२५६४॥
अथ त्रिश्चारुणिपटौ दक्षा तूर्वीद्रुभेदयोः ।
दक्षकन्या तु पार्वत्यान्तथैव दिशि कीर्त्तिता ॥२५६५॥
दक्षाय्योऽग्नौ च तार्क्ष्ये ना द्वयोर्गृध्रे प्रकीर्त्तितः ।
दक्षिणो दक्षिणोद्भूते परच्छन्दानुवर्त्तिनि ॥२५६६॥
विदग्धे कुशले चैव वामस्य प्रतियोगिनि ।
उदारे सरले च त्रिर्याम्याशायान्तु दक्षिणा ॥२५६७॥
स्त्रियां दानेऽपि यज्ञादिविधिदत्ते प्रकीर्त्तिता ।
स्त्रियामृत्विग्भृतौ चापि प्रतिष्ठायां तथा स्त्रियाम् ॥२५६८॥
दक्षिणस्थः सारथौ ना योगार्थे तु त्रिषु स्मृतः ।
दक्षिणाशारतोऽगस्त्यमुनौ पुंसि त्रियौगिके ॥२५६९॥
दग्धं प्लुष्टे न्यलिङ्गं स्यात्स्थितार्कदिशि तु स्त्रियाम् ।
दण्डस्तु निग्रहे राजशासने लगुडे नृपे ॥२५७०॥
सैन्यमन्थानहिंसाज्ञावृक्षशाखासु चास्त्रियाम् ।
[1]कालमानव्यूहभेदेऽभिमाने कोण एव च ॥२५७१॥
यमे तु ना प्रकाण्डेऽश्वे चण्डांशोः पारिपार्श्विके ।
दण्डकोऽस्त्री समासाढ्यवाक्ये छन्दःसु चोत्कृतेः ॥२५७२॥
अधिकेष्वथ पुंभूम्नि महाराष्ट्रेषु दण्डकाः ।
दण्डको दण्डयितरि वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ॥२५७३॥
दण्डयामस्तु कीनाशे दिवसे कुम्भसम्भवे ।
दण्डारो वहने मत्तवारणे शरयन्त्रके ॥२५७४॥
कुम्भकारस्य चक्रे च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
दण्डाहतं कालशेये दण्डेन त्वाहते त्रिषु ॥२५७५॥

---

१. कोणेऽभिमाने काले च व्यूहभिन्मानभेदयोः

दण्डिकस्त्र्यंशशल्ये ना नाराचे दण्डिनि त्रिषु ।
दण्डिका दण्डरूपे च वादित्रेऽल्पकलस्वने ॥२५७६॥
दण्डी ना द्वाःस्थयमयोर्द्वे शुके त्रि सदण्डके ।
दत्तोऽर्चितेऽर्पिते च त्रिर्दत्तन्तु नपि हेमनि ॥२५७७॥
स्याद्दद्रुनाशिनी हस्तिवातिङ्गन इति श्रुते ।
बातिङ्गनान्तरे योगार्थैं तु लिङ्गं यथायथम् ॥२५७८॥
दधि क्षीरविकारे क्ली विप्रप्रियमिति श्रुते ।
दधिस्तु पुंसि श्रीवाससर्जयोः परिकीर्त्तितः ॥२५७९॥
दधिपाय्यस्तु पुंसि स्यात्पृषत्यपि च सर्पिषि ।
पुमान्दधिमुखः कप्यन्तरेऽपि च कपिमात्रके ॥२५८०॥
स्त्रियां दधिमुखीकालरात्र्यामेषा प्रकीर्त्तिता ।
दन्तो रदेऽद्रिकटके ना कुञ्जकरिदंष्ट्रयोः ॥२५८१॥
स्त्रियां तु दन्ती कथिता नागदन्त्याख्यभेषजे ।
स्याद्दन्तधावनः पुंसि करञ्जे खदिरद्रुमे ॥२५८२॥
अरिभेदेऽथ नब्दन्तकाष्ठे दन्तस्य शोधने ।
पुंसि दन्तशठो भव्ये जम्बीरे च कपित्थके ॥२५८३॥
अम्ले चैव रसेऽथाऽम्लरसोपेते त्रिषु स्मृतः ।
स्त्रियां दन्तशठा चिञ्चाचाङ्गेर्योः परिकीर्त्तिता ॥२५८४॥
दन्तिको गृहभित्तिस्थे नागदन्तेऽथ दन्तिका ।
स्त्रियां निकुम्भसंज्ञे स्यादौषधे दन्तिनि त्रिषु ॥२५८५॥
दन्तुरस्तून्नतरदे त्रिषु स्यादुन्नतानने ।
दन्दशूको द्वयोः सर्परक्षसोर्दंशके त्रिषु ॥२५८६॥
दभ्रं त्र्यल्पशिशुह्रस्वकुशले नाऽब्धिचन्द्रयोः ।
दमो दण्डे गृहे पङ्के पुमांश्चेन्द्रियनिग्रहे ॥२५८७॥
दमथस्तु पुमान्दण्डे दमे च परिकीर्त्तितः ।
दमनः कुसुमस्तम्बान्तरे धीरे तु स त्रिषु ॥२५८८॥
दमयद्दमयित्रर्थे वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ।
दमयन्ती ब्रह्मचारिदण्डे भैम्यामपि स्त्रियाम् ॥२५८९॥

दमुनास्तु रवौ वह्नौ पुंसि सान्तः प्रकीर्त्तितः ।
दरः शङ्के भये श्वभ्रे छिद्रमात्रेऽपि न स्त्रियाम् ।।२५९०।।
दरी तु कन्दरे स्त्री स्यान्मनागर्थे दराऽव्ययम् ।
दरणं क्ली द्विधाभावे शुके तु दरणो द्वयोः ।।२५९१।।
दरत्प्रपातमीविष्ठाद्यत्सरिद्गिरिषु स्त्रियाम् ।
तथा तटे हिमवतो राजभेदे तु पुंस्ययम् ।।२५९२।।
तस्यैव पुमपत्येषु भूम्नि देशस्य भूपतेः ।
दरथो विवरे भीत्यां दिक्षु चापि प्रसारणे ।।२५९३।।
दर्दरस्तु पुमाञ्छैलप्रभेदे कलशीमुखः ।
इति प्रसिद्धवाद्ये च त्रि त्वीषद्भग्नवस्तुनि ।।२५९४।।
दर्दरीकोऽनिले चन्द्रे वाद्यभेदे च दाडिमे ।
दर्दुरस्तु द्वयोर्भेके पुमांस्तु गजपार्श्वयोः ।।२५९५।।
वारिदे चाऽद्रिभेदे च वाद्यभाण्डान्तरेऽप्यथ ।
दर्दुरा चण्डिकायां स्त्री ग्रामजाले तु दर्दुरम् ।।२५९६।।
दर्पस्तु पुंसि कस्तूर्यामहङ्कारेऽपि चेष्यते ।
दर्पको ना स्मरे दृप्तदर्पयित्रोस्तु वाच्यवत् ।।२५९७।।
पुमान्दर्पण आदर्शे दृप्तौ दर्पणमद्वयोः ।
दर्पणन्दर्पणा चेति कृतौ दर्पयतेर्द्वयम् ।।२५९८।।
दर्वो द्वये राक्षसेऽथ देशभेदे नृभूमनि ।
दर्वरस्तु पुमान्वज्रे सेनायां दर्वरी स्त्रियाम् ।।२५९९।।
दर्विः खजाकायां सर्पफणे स्त्री प्रतिकीलके ।
दर्वीवदिष्यते ना तु दर्विश्चक्रसमुद्रयोः ।।२६००।।
दर्वीकरो द्वयोः सर्पे सर्पजात्यन्तरेऽपि च ।
दर्शो दृष्टावमायां च परपक्षान्तकर्मणि ।।२६०१।।
दर्शको दर्शयितरि प्रवीणे द्रष्टरि त्रिषु ।
प्रतीहाराऽपराख्ये तु द्वाःस्थे स्याद्दर्शकः पुमान् ।।२६०२।।
दर्शनं स्वप्नवीक्षासु नेत्रे शास्त्रे मते धियि ।
ज्ञाने च दर्पणे धर्मे क्रियायां पश्यतेरपि ।।२६०३।।

दर्शनी तूपरथ्यायां स्त्री पुरादेर्गदस्य च।
यन्त्रभेदे दर्शनार्थे दर्शना त्वपि दर्शनम् ॥२६०४॥
स्यातां दर्शयतेरर्थे स्त्रीनपुंसकयोरिमे।
दलमस्त्री भवेद्भागेऽथापद्रव्ये तरुच्छदे ॥२६०५॥
शस्त्रीच्छेदे तथोत्सेधे दलं क्लीबमुदाहृतम्।
दलवो ना प्रहरणे विदले च दलान्तरे ॥२६०६॥
दलाढकः स्वयञ्जाततिले पृश्न्याश्च गैरिके।
फेनखातकयोर्नागकेसरे च महत्तरे ॥२६०७॥
दलामलं मरुवके दमनेऽपि नपुंसकम्।
[1]दल्भो गोत्रर्षिभेदे ना दल्भं वल्के नपुंसकम् ॥२६०८॥
दवो वने स्मृतोऽग्नौ च वनवह्न्युपतापयोः।
दशनः शिखरे दन्ते क्ली तु दष्टौ च वर्मणि ॥२६०९॥
दशनं कवचे दंशे नपुंसकमुदीरितम्।
दशनोच्छिष्ट उच्छ्वासे चुम्बने दशनच्छदे ॥२६१०॥
क्लीबं दशपुरन्देशभेदेऽपि स्यात्स्रवेऽपि च।
दशमी स्त्री यमतिथौ त्रिर्दशानां च पूरणे ॥२६११॥
दशमीस्थस्त्रिवृद्धेऽपि नष्टबीजे व्रताशने।
दशा कर्मविपाके स्त्री दशमांशे तथाऽऽयुषः ॥२६१२॥
दीपवर्त्तौ परावस्थावस्थामात्रकयोरपि।
दशास्तु वसनस्यान्ते द्वयोर्भूमनि कीर्त्तिताः ॥२६१३॥
दशेरः कुक्कुरे सर्पे द्वयोरथ नृभूमनि।
मरुसंज्ञे जनपदे दशेराः परिकीर्त्तिताः ॥२६१४॥
दस्मोऽग्निवज्रयोः पुंसि दस्युयज्ञकृतोस्त्रिषु।
दस्युः पुंसि रिपौ त्रिस्तु चौरे द्वे तु गजान्तरे ॥२६१५॥
मर्त्यजातिचतुष्षष्टेरेकस्मिन्गर्ह्यवृत्तिके।
दहनश्चित्रकाऽग्न्युष्णगुणभल्लातकेषु ना ॥२६१६॥
क्ली दाहे त्रि तु सोष्णे च तथा स्याद्दुष्टचेष्टिते।
दहरस्तु द्वयोरल्पमूषिके बालके त्रिषु ॥२६१७॥

---

१. दल्भं नपुंसकं वल्के दल्भो गोत्रर्षिभिद्ययम्।

अल्पेऽथ भ्रातरि पुमान्हृदये तु नपुंसकम् ।
दाकस्तु दातरि त्रि स्याद्यजमाने द्वयोर्मतः ॥२६१८॥
दाक्षस्त्रिर्दक्षसम्बन्धिन्यथ दाक्षी स्त्रियां गवि ।
कपिलायां जनन्याश्च कीर्त्तिता पाणिनेर्मुनेः ॥२६१९॥
दाक्षायणी स्त्री पार्वत्यामश्विन्याद्युडुषु क्षितौ ।
अदितौ द्वे तु दक्षस्यापत्ये क्लीबं तु हेमनि ॥२६२०॥
दाक्षिणात्यो नारिकेले त्रिषु दक्षिणदिग्भवे ।
दाडिमं प्रसवे क्लीबं त्रिष्वेलामुचुलिन्दयोः ॥२६२१॥
दाडिम्येलाकरकयोस्त्रिषु तत्प्रसवे तु नप् ।
दात्यूहो द्वे कालकण्ठखगचातकपक्षिणोः ॥२६२२॥
दात्व आयुक्तके त्रि स्याद्दाने यज्ञे च पुंस्ययम् ।
दानं हस्तिमदे त्यागे खण्डने लवने क्षये ॥२६२३॥
शोधने रक्षणे चापि क्लीबलिङ्गं प्रकीर्त्तितम् ।
दानवं क्ली दमनके दनुजे दानवो द्वयोः ॥२६२४॥
[1]दानुर्दातरि विक्रान्ते त्रिषु द्वे यष्टरि स्मृतः ।
समीरणार्कयोर्दानुः पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥२६२५॥
दान्तस्त्रिर्दमिते दान्तियुक्ते दन्तविकारके ।
स्त्र्यर्थे तु पूर्वयोर्दन्तिवाच्ययोरन्तिमे पुनः ॥२६२६॥
स्त्र्यर्थे दान्त्यथ दान्तं क्ली दान्तौ दमनकेऽपि च ।
दायस्तु दातरि त्रि स्यात्पुंसि सोल्लुण्ठभाषिते ॥२६२७॥
रक्षणादौ विभक्तव्यपित्रादिद्रविणेऽपि च ।
यौतकादिधने दाने लवने शोधनेऽपि च ॥२६२८॥
दायादो दायभाजि त्रिः सपिण्डसुतयोर्द्वयोः ।
दारको द्वे सुते बाले तरुणे त्रि तु भेत्तरि ॥२६२९॥
दारदो ना देशभेदे पारदे हिङ्गुलेऽप्यथ ।
दारदो विषभेदेऽयं पुंनपुंसकयोर्मतः ॥२६३०॥
दार्वस्त्री पित्तले काष्ठे क्ली पुनर्देवदारुणि ।
दारुको दैत्यभेदे च पुमान्स्यात्कृष्णसारथौ ॥२६३१॥

---

१. दानुर्द्वे यजमाने त्रिर्दातिर्येकेनिले च ना ।

अस्त्री तु दारुक इति कुदार्वर्थे प्रयुज्यते ।
दारुणे रसभेदे ना क्ली व्याधौ भीषणे त्रिषु ॥२६३२॥
द्राक्षायां स्त्री दारुफला योगार्थे त्वभिधेयवत् ।
दार्वी दारुहरिद्रायां स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥२६३३॥
दावो दवाग्नावग्नौ च दावन्तु क्ली वने मतम् ।
दाशो दाशा द्वयोर्दाने दाशी कैवर्त्तभृत्ययोः ॥२६३४॥
द्वयोरथ दशायोगिन्युक्तो दाशोऽभिधेयवत् ।
दासो ज्ञानात्मनि त्रि द्वे भृत्ये शूद्रे च धीवरे ॥२६३५॥
दासी तु स्त्री नीलझिण्टीषडस्रावीरुधोरियम् ।
दासेरो दासिकापुत्रे द्वयोः पुंसि क्रमेलके ॥२६३६॥
दासेरकस्तु करभे दासीपुत्रे च धीवरे ।
दिक्करीषत्प्रौढयोषित्यथ योगे यथायथम् ॥२६३७॥
[1]दिगम्बरं क्ली ध्वान्ते त्रि नग्ने ना क्षपणे शिवे ।
दिग्धः पुंसि विषाक्तेषौ त्रिषु लिप्तप्रवृद्धयोः ॥२६३८॥
नपुंसकन्तु दिग्धं स्यात्स्नेहेऽप्युपचये तथा ।
दितिर्दैत्यजनन्याश्च खण्डनेऽपि स्त्रियाम्मता ॥२६३९॥
दिधिषूः परिविन्नाग्रज्ज्येष्ठा चेद्भगिनी स्त्रियाम् ।
कनिष्ठपत्न्याम्पुनर्भ्वां ना त्वस्या दिधिषुर्धवे ॥२६४०॥
दिधिषूपतिरासक्ते पत्न्याम्भ्रातुर्मृतस्य च ।
पुनर्भ्वाश्च तथा पत्यौ पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥२६४१॥
द्यौर्ना सूर्ये स्त्रियां तु स्वर्वियतोर्द्यौर्दिवन्तु नप् ।
दिवाकीर्त्तिर्द्वयोरुक्तश्चण्डाले नापितेऽपि च ॥२६४२॥
दिवाचरस्तु ना शुक्रे त्रिलिङ्गो दिनचारिणि ।
दिवाभीत उलूके द्वे पुमांस्तु कुमुदाकरे ॥२६४३॥
त्रिषु चोरे व्यवहितेऽपि दिवाभीत इष्यते ।
दिवोकाश्च दिवौकाश्च न क्ली देवे च चातके ॥२६४४॥
दिव्यं लवङ्गे लशुने व्योम्नि तन्त्रीस्वरेऽपि च ।
प्रत्ययेऽथ स्त्रियान्धात्र्यां वल्गुप्रभवयोस्त्रिषु ॥२६४५॥

1. दिगम्बरः स्यात्क्षपणे ना ने तमसि शङ्करे ।

दिव्येलको द्वयोर्भेदे वैकरञ्जाख्यभोगिनः ।
त्रयोदशां भेदानां राजिलस्य च कुत्रचित् ॥२६४६॥
दिष्टः काले कृतान्तेऽथ दैवे संवदने च नप् ।
दानभूषणयोः स्नाने तथा स्यान्मृत्तिकाम्भसा ॥२६४७॥
दिष्टन्तु भाषिते दत्ते त्रिलिङ्गं परिकीर्त्तितम् ।
दिष्टिर्नाऽष्टाङ्गुले माने स्त्री दानोक्तिसुखेषु च ॥२६४८॥
दिष्ट्याऽव्ययम्मङ्गले च हर्षे च परिकीर्त्तितम् ।
दीक्षा स्त्रियां व्रतादेशे मौण्ड्ये चोपनयेऽपि च ॥२६४९॥
नियमे यजने चैव पूजायाश्च प्रकीर्त्तिता ।
दीदिविस्त्वोदने न क्ली ना स्वर्गेऽग्नौ बृहस्पतौ ॥२६५०॥
दीधितिस्तु स्त्रियां रश्मावङ्गुलावपि कीर्त्तिता ।
[1]दीनः पुन्नागकेतक्योः पुमान्दीना तु मूषिका ॥२६५१॥
दरिद्रकृपणक्षीणेष्वयन्दीनस्त्रिषु स्मृतः ।
दीपको जीरके दीपे यवान्याम्ना च पक्षिणि ॥२६५२॥
पक्षिणो येन गृह्यन्तेऽथ क्ली वाचामलङ्कृतौ ।
अथ दीपयितर्येष दीपितर्यपि वाच्यवत् ॥२६५३॥
दीपनी त्रिषु दीप्तेः स्यात्साधने क्ली तु दीपनम् ।
दीप्तौ दीपयतेस्त्वर्थे दीपनन्दीपना न ना ॥२६५४॥
दीपनः स्यात्पुंसि महाकदम्बाख्ये द्रुमान्तरे ।
दीप्ता विद्युति दीप्तं त्रिर्दग्धज्वलितभासिते ॥२६५५॥
दीप्यो जीरे यवान्याम्ना दीपनीये तु स त्रिषु ।
दीप्यकस्त्वजमोदायां यवानीबर्हिचूडयोः ॥२६५६॥
दीर्घं त्रिष्वायते मात्राद्वयोच्चार्यस्वरेऽपि च ।
नपुंसकन्तु सीम्नोः स्यात्ससुन्त्रेवर्गगीतयोः ॥२६५७॥
दीर्घनादः शुनि द्वे स्याद्योगार्थे तु त्रिषु स्मृतः ।
दीर्घनिद्रा मृतौ स्त्री स्याद्योगार्थे तु यथायथम् ॥२६५८॥
दीर्घपत्री स्त्रियामेषा कदल्याम्परिकीर्त्तिता ।
दीर्घपत्रः पलाण्डौ स्यादशानां भेद एकके ॥२६५९॥

१. दीनस्तु पुंसि पुंनाभे केतक्याञ्च त्रिषु त्वयम् ।

दीर्घपादो द्वयोः कङ्के योगार्थे तु त्रिषु स्मृतः ।
दीर्घरोमा तु भल्लूके द्वे योगे तु त्रिषु स्मृतः ॥२६६०॥
दीर्घाध्वगो द्वयोरुष्ट्रे लेख्यहारे तु वाच्यवत् ।
दीर्घायुः शाल्मलीकक्षे पुमाञ्जीवकपादपे ॥२६६१॥
मार्कण्डेये च काके तु द्वे त्रिः स्याच्चिरजीविनि ।
दीर्णो भिन्ने च भीते त्रिर्दीर्णा तु स्याद्दिशि स्त्रियाम् ॥२६६२॥
दुकूलं सूक्ष्मवसने क्षौमे धवलवाससि ।
दुःखं व्यथायां क्लीबं स्यात्त्रिलिङ्गं त्वस्य साधने ॥२६६३॥
दुग्धं नपुंसकं क्षीरे कृतदोहे तु स त्रिषु ।
क्षीरादौ च गवादौ च दुग्धी तु क्षीरिकौषधौ ॥२६६४॥
दुग्धतालीयन्तु दुग्धफेने दुग्धाम्रकेऽपि च ।
दुग्धाशी तु शुके द्वे स्यात्क्षीराशिनि तु भेद्यवत् ॥२६६५॥
दुच्छको गन्धकुट्यां स्याद्विहाराद्यवकाशके ।
दुन्दुभिर्दैत्यभेदे च भेर्याञ्च वरुणे पुमान् ॥२६६६॥
स्त्री तु द्यूतशलाकायान्द्वे तु कीटान्तरे भवेत् ।
दुरव्ययन्निषेधे च कष्टे च परिकीर्त्तितम् ॥२६६७॥
दुराशः कृकलासे द्वे दुष्टाशे त्वभिधेयवत् ।
दुरासदः पुमानग्नौ दुष्प्रापे तु मतस्त्रिषु ॥२६६८॥
दुरितन्दुर्गतौ पापे दुर्गते तु त्रिषु स्मृतम् ।
दुरोदरो स्त्रीपणे क्ली द्यूते द्यूतकरे पुमान् ॥२६६९॥
दुर्गं वनेऽपि नरके दुर्गोऽस्त्री दुर्गमे पुरे ।
राष्ट्रे तु पुंसि दुर्गः स्त्री दुर्गोमायां त्रि दुर्गमे ॥२६७०॥
दुर्गतिः स्त्री दरिद्रत्वे नरके तु द्वयोर्मता ।
दुर्गन्धो ना कुगन्धे दुर्गन्धं सौवर्चले नपि ॥२६७१॥
दुर्गमो भूधरे पुंसि दुष्प्रवेशे त्वयं त्रिषु ।
दुर्जातं व्यसने क्लीबमसुजाते तु भेद्यवत् ॥२६७२॥
दुर्दर्शा त्वविवाह्यायां कन्यायां कुब्जतावशात् ।
वाच्यवत्त्वेष दुष्प्रेक्षे दुर्दर्शः परिकीर्त्तितः ॥२६७३॥

[दुर्धरस्त्वृषभा]ख्ये ना भेषजे निरयान्तरे ।
[पारदे राक्षसभिदि दुःखधार्ये त्रि] दुर्धरम्[१] ॥२६७४॥
दुर्लभो ना यवासे [त्रिर्दुष्प्रापातिप्रशस्तयोः] ।
दुर्वर्णं रजते चैलावालुकाख्ये च भेषजे ॥२६७५॥
दुष्टवर्णे तु नृनपोर्बहुव्रीहौ पुनस्त्रिषु ।
दुर्वारस्तु यमे पुंसि दूरोधे त्वभिधेयवत् ॥२६७६॥
दुर्विधो वाच्यलिङ्गः स्यान्नीचे दुर्गत एव च ।
दुलिः स्त्रियां कमठ्यां स्यादथ मुन्यन्तरे पुमान् ॥२६७७॥
दुष्कृतं कुकृते त्रि स्यात्पापे तु क्लीबमिष्यते ।
दुरस्थस्त्रिर्दुर्गते मूर्खे तथा दुःखेन तिष्ठति ॥२६७८॥
दुस्स्पर्शो ना यवासे स्याद्दुःखस्पर्शे भवेत्त्रिषु ।
दुस्स्पर्शा कण्टकार्याञ्चात्मगुप्तायामपि स्त्रियाम् ॥२६७९॥
दूतः शुक्रे पुमान्द्वे तु मतः सन्देशहारके ।
सञ्चारिकायान्तु स्त्रीत्वमात्रे दूती प्रकीर्त्तिता ॥२६८०॥
दूत्यन्दूतस्य भागे च भावे कर्मण्यपि स्मृतम् ।
दूरदर्शी द्वयोर्गृध्रे त्रिर्दूरेऽक्षिमनीषिणोः ॥२६८१॥
दूषिका स्त्री क्रोधवशकन्यायां यौगिके त्रिषु ।
दूषिकं दूषिका चाऽक्षिमले क्लीबे स्त्रियामपि ॥२६८२॥
दूषिका तु स्त्रियां वीणान्तरल्लूतालतासु च ।
दूष्यं पूये स्थले वस्त्रे दूषणीये तु तत्त्रिषु ॥२६८३॥
दृग्भूः स्त्री स्यात्तरौ सर्पे बिले च द्रोहकैः कृते ।
[दृढन्]त्वयस्युशीरे च श्लेष्मणि त्वस्त्रियां दृढः ॥२६८४॥
तथा दृढा त्वामलक्यां तालमूल्यां दृढा स्त्रियाम् ।
[वाच्यवत्त्रि दृढं] स्थूले बलवत्यधिके भृशे ॥२६८५॥
स्त्रियां दृढदला ताली पादपे बल्वजेषु च ।
दृतिर्भस्त्रा चर्मखण्डजिह्वामेघर्षिभिद्झषे ॥२६८६॥
दृतिर्ना [चर्म्मपुटके मेघेऽथ गलकम्बले] ।
दृन्भूः स्त्रियां भुजङ्गे च चक्रे च परिकीर्त्तिता ॥२६८७॥

दृक् स्त्री ज्ञानाक्षिधीदृष्टिष्वथ त्रिर्ज्ञातृवीक्षिणोः ।
दृशा नो ना रवौ क्ली ज्योतिषि द्रष्टरि तु त्रिषु ॥२६८८॥
दृशीकं नयने क्ली त्रिर्दृशीकः स्याद्बुपुष्मति[1] ।
दृश्या स्त्री सेवने त्रिस्तु द्रष्टव्ये क्ली तु भूषणे ॥२६८९॥
दृषन्निष्पेषणशिलापट्टप्रस्तरयोः पुमान् ।
दृषद्वती नदीभेदे पार्वत्याञ्च स्त्रियाम्मता ॥२६९०॥
दृष्टं त्रि वीक्षिते ज्ञाने क्लीबन्त्वैहिकवस्तुनि ।
उक्तं तथैव भूपानाम्भये स्वपरचक्रजे ॥२६९१॥
दृष्टान्तः पुंसि शास्त्रे च तथोदाहरणे मतः ।
दृष्टिशब्दोऽक्ष्णि बुद्धौ च ज्ञाने दर्शे तथा स्त्रियाम् ॥२६९२॥
देवः खड्गे नृपे मेघे नृपे नाट्योक्तिगेऽपि ना ।
चक्षुरादीन्द्रियेष्वस्त्री देवी स्त्री मघमूर्वयोः ॥२६९३॥
महिष्यान्नृपतेर्नाट्ये राजवंश्यनृपस्त्रियाम् ।
गुडूचीस्पृक्क्योर्देवस्तु द्वयोर्दैवते मतः ॥२६९४॥
देवताडः सैंहिकेये जीमूते च हुताशने ।
देवदण्डस्तु नृनपोर्दण्डाकारायुधान्तरे ॥२६९५॥
अरन्तिमात्रे योगे तु लिङ्गाद्यूह्यं यथायथम् ।
देवदुन्दुभिरिन्द्रेऽयम्पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥२६९६॥
स्त्री तु कृष्णार्जके कृष्णवचायां देवदुन्दुभिः ।
देवधान्यं यावनाले देवानान्धान्यकेऽपि च ॥२६९७॥
देवधूपस्तु देवानान्धूपे स्याद्गुग्गुलावपि ।
[2]देवनं विजिगीषायां गतिकान्त्योर्द्युतौ स्तुतौ ॥२६९८॥
क्रीडायां व्यवहारेऽथ देवना-परिदेवने ।
अना देवयतेश्चार्थेऽथ नाऽक्षे देवनो मतः ॥२६९९॥
देवभिन्नो मण्डलाख्यसर्पाणां विंशतिश्च षट् ।
ये भेदा एकके तेषां द्वे योगार्थे त्वयं त्रिषु ॥२७००॥

---

१. दृषत्स्त्रियां स्यात्पेषण्यामश्ममात्रे तु नैव नप् ।
२. देवनं विजिगीषायां व्यवहारे द्युतौ स्तुतौ ।
क्रीडायां गतिकान्त्योः क्ली देवना तु स्त्रियाम्मता ।

पुमान्देवमणिर्घोटगलदेशसमुद्भवे ।
रोमावर्त्ते महादेवे कौस्तुभे च प्रकीर्त्तितः ॥२७०१॥
देवयुस्त्वृत्विजि तथा होमेऽपि च पुमानथ ॥
वाच्यवद्देवयुः प्रोक्तो धार्मिके लोकयात्रिके ॥२७०२॥
नटे देवरथो रामभूमिके देवयानकः ।
देवलस्त्वृषिभेदे ना देवाजीवे तथा पुमान् ॥२७०३॥
स्त्रियां देववधूर्देवपत्न्यान्दिशि च कीर्त्तिता ।
देववृक्षः सप्तपर्णे मन्दारादिषु गुग्गुलौ ॥२७०४॥
स्त्री देवसिन्धुर्गङ्गायां योगार्थे तु यथायथम् ।
देवसेना देवचम्वां स्कन्दपत्नीन्द्रकन्ययोः ॥२७०५॥
नागाञ्जनेभसुन्दर्यान्नागयष्टौ तथा स्त्रियाम् ।
देवार्हं रसविद्धे क्ली हेम्नि देवोचिते त्रिषु ॥२७०६॥
देवाग्नौ देवरे पुंसि स्त्री पितृव्यस्त्रियां मता ।
देशरूपोऽस्त्रियां न्याये योगार्थे तु यथायथम् ॥२७०७॥
देशी गुरौ पुमान्मार्गोपदेष्टरि तु वाच्यवत् ।
स्त्री तु प्रदेशिनीनाम्न्यामङ्गुल्यान्देशिनी मता ॥२७०८॥
देष्णो बाहौ पुमान्द्वे तु यजमाने मतोऽथ च ।
सुरूपे दानशीले च भेद्यवद्देष्ण इष्यते ॥२७०९॥
देष्णुस्तु दुर्गमेऽपि स्याद्दातर्यप्यभिधेयवत् ।
ना देहमर्दनो व्याधौ क्ली तु देहस्य मर्दने ॥२७१०॥
देहयात्रा तु मरणे भोजनेऽपि स्त्रियाम्मता ।
दैतिकी स्याद्दिनभृतौ क्लीबन्तु दिनयोगिनि ॥२७११॥
[1]दैत्यो विभीतके दैत्यमुशीरे दितिजे द्वयोः ।
अथ दैत्या मुरा चण्डौषधमद्यान्तरेष्वपि ॥२७१२॥
दैत्यदेवस्तु वरुणो पवनेऽपि पुमान्मतः ।
दैत्यारिर्देवमात्रेऽपि पुमांश्च गरुडध्वजे ॥२७१३॥

---

१. दैत्यो विभीतके पुंसि क्लीबं दैत्यमुशीरके ।
मुराख्यचण्डौषधयोर्दैत्या स्त्री दितिजे द्वयोः ॥

दैनन्त्रिर्दिनसम्बद्धे दैन्ये तु स्यान्नपुंसकम् ।
दैन्यं तु दीनतायाञ्च शोके च क्लीबमिष्यते ॥२७१४॥
दैवो विवाहभेदे स्याद्दैवी तेन विवाहिता ।
दैवन्तु दैवते भाग्ये नपुंसकमुदीरितम् ॥२७१५॥
[1]दैवज्ञस्त्रिर्दैवविदि दैवज्ञा गृहगोलिका ।
दैशिकन्नृत्यभेदे क्ली देशयोगिनि तु त्रिषु ॥२७१६॥
आहुर्दैशिकवत्केचिद्दैशिकञ्चोपदेशकम् ।
दैष्टं क्ली याज्ञिकानां स्यात्प्रोक्षण्यासादने तथा ॥२७१७॥
सम्बन्धिनि स्याद्दिष्टस्य दिष्टेरपि च वाच्यवत् ।
दोग्धा दोहनकारे त्रिर्लोभात्कवयितर्यपि ॥२७१८॥
दोग्ध्री तु स्तनपायिन्यान्धात्र्यां धेनावपि स्त्रियाम् ।
दोधकं वृत्तभेदे क्ली त्रिः स्वाम्यर्थापहारके ॥२७१९॥
दोरकन्नपि रज्जौ स्याद्वीणारुन्त्र्यान्तु दोरिका ।
दोलः फाल्गुनशुक्लस्य चतुर्दश्युत्सवे मतः ॥२७२०॥
दोलकस्त्र्युत्क्षेप्तरि स्यादथ दोलकमम्बुजे ।
दोला प्रेङ्खे यानभेदेऽपि स्त्री स्यान्नीलिकौषधौ ॥२७२१॥
दोलितो महिषे द्वे स्यात्कम्पिते दोलितस्त्रिषु ।
दोषो वातादिके दुष्टे गुणस्य प्रतियोगिनि ॥२७२२॥
दोषज्ञः पण्डिते वैद्ये त्रिषु दोषस्य बोधके ॥
स्याद्दोषा तु भुजायां स्त्री तथा रात्रौ च तन्मुखे ॥२७२३॥
रात्र्यर्थे तु निशीत्यर्थे दोषेत्यादन्तमव्ययम् ।
दोषाकरस्तु चन्द्रे स्याद्दोषाणामाकरेऽपि च ॥२७२४॥
दोषिको दोषसम्बद्धे त्रिर्व्याधौ पुंसि कस्यचित् ।
वयः सन्धौ च गर्भे च क्लीबन्दोहदलक्षणम् ॥२७२५॥
दोहलोऽस्त्री गर्भिणीच्छाभेदे श्रद्धाभिधे मतः ।
देये वृक्षादिपुष्प्यर्थे करीषादावपि स्मृतः ॥२७२६॥
दौन्दुभी वरयात्रायान्दम्भे चैव स्त्रियाम्मता ।
क्लीत्वे कलेख्यकेष्टानां लेख्यानां व्यवहारिणाम् ॥२७२७॥

---

१. दैवज्ञो ना ज्योतिषिको दैवज्ञा गृहगोलिका(के) ।

दौर्वीणं म्लिष्टपर्णे च दूर्वायाश्च रसे मतम् ।
दौष्यन्तः स्याद्द्वयोरुग्रे मत्स्यघातनजीविनि ॥२७२८॥
कक्ष्याजीविनि चाऽम्बष्ठे पुंल्लिङ्गस्तु नृपान्तरे ।
दौहृदं तु दुहृत्त्वेऽपि तथा दोहलनामनि ॥२७२९॥
इच्छाविशेषे गर्भिण्यान्नपुंसकमुदीरितम् ।
द्युरस्त्री गगने चाह्नि पावके तु पुमान्मतः ॥२७३०॥
द्युतिः पुमान्द्योततौ स्त्री प्रभाभिगमकान्तिषु ।
द्युम्नं धने यशस्यन्ने बलेऽपि क्लीबमिष्यते ॥२७३१॥
द्युवाऽभिगन्तरि त्रि स्यान्ना तु स्वर्गार्कराजसु ।
द्योशब्दस्तु स्त्रियामुक्तः स्वर्गे चैव विहायसि ॥२७३२॥
द्योतस्तु द्योतनायाश्च दीप्तौ द्योता त्वियं स्त्रियाम् ।
ज्ञेया पिङ्गलकेश्यादिकन्यायां सुरभावपि ॥२७३३॥
द्योतना तूषसि स्त्री स्याद्द्योतनं क्ली धनेऽक्षिण च ।
द्योतकार्थे स्त्रीनपोस्तु द्योतना स्यात्प्रकाशने ॥२७३४॥
द्यौत्रं क्लीबं प्रमाणेऽह्नि प्रतोदज्योतिषोरपि ।
द्रमिलस्तु द्वयोर्मर्त्ये त्रिराज्यप्रभवे मतः ॥२७३५॥
वैश्यपूर्वक्षत्रियायां व्रात्याज्जातेऽपि कीर्त्तितः ।
द्रवो नर्मणि निर्यासे द्रवणे ना पलायने ॥२७३६॥
नद्यान्तु स्त्री द्रवा त्रिस्तु भिन्नेऽपि तरले घने ।
द्रवत्पलायके चैव द्रावकेपि त्रिषु स्मृतः ॥२७३७॥
द्रवन्ती तु स्त्रियामेषा न्यग्रोधीस्तम्ब इष्यते ।
द्रविणं न द्वयोर्वित्ते काञ्चने च पराक्रमे ॥२७३८॥
द्रव्यं स्यात्पित्तले वित्ते पृथिव्यादौ विलेपने ।
योग्ये च भेषजे क्लीबमृक्सामेष्विष्टिगामिषु ॥२७३९॥
द्रुविकारे पुनर्द्रव्यमभिधेयवदिष्यते ।
द्राङ्गस्तु सत्वरे प्रांशावपि वाच्यवदिष्यते ॥२७४०॥
द्रावकस्त्रि द्रावयितृद्रोत्रोर्ना घोषकाश्मनोः ॥
द्रावको ग्रावभेदे स्याद्विदग्धे मोषकेऽपि च ॥२७४१॥

क्ली तु तत्प्रसवे द्रावयत्यर्थे तु न ना भवेत् ।
द्रावणस्तु विडाख्ये स्याल्लवणे कतकद्रुमे ॥२७४२॥
द्रुघणो मुद्गरेऽपि स्याद्द्रुहिणे च परश्वधे ।
द्रुणो द्वयोर्वृश्चिके स्यात्क्लीबं तु धनुषि द्रुणम् २७४३॥
स्त्रियां द्रुणा स्यात्कच्छप्यां मौर्व्यां तु स्याद्द्रुणी स्त्रियाम् ।
द्रुतं विलीने शीघ्रे च विद्राणे चापि वाच्यवत् ॥२७४४॥
द्रुमो ना वृक्षमात्रेऽपि नान्दीवृक्षे तथा स्मृतः ।
पारिजातद्रुमे राजभेदे किम्पुरुषेश्वरे ॥२७४५॥
द्रुमामयस्तु लाक्षायां स्याद्द्रुमस्यामयेऽपि च ।
द्रुमार्दनः स्याच्छिशिर ऋतौ ना त्रि तु यौगिके ॥२७४६॥
द्रुहिणो ब्रह्मविष्णवोर्ना त्रिक्षुद्रे क्ली तु पद्मनि ।
द्रोणो द्वयोर्दग्धकाके पुमांस्तु स्यात्कृपीपतौ ॥२७४७॥
शाकस्तम्बान्तरे चैव द्रोणा तु चतुराढके ।
दारुपात्रविशेषे स्याद्द्रोणी तु द्रवभाजने ॥२७४८॥
तथा काष्ठाम्बुवाहिन्यां द्रोणपुष्प्यां गिरिप्लवे ।
शैलस्य शिलयोः सन्धावपि द्रोणी प्रकीर्त्तिता ॥२७४९॥
द्रोहो द्वेषे पुमान्द्वे तु भवेद्विग्रखषीसुते ।
द्रोहकस्त्रिषु वैडालवृत्तौ गाथाऽन्तरे तु ना ॥२७५०॥
द्रोहाटः कथितो गाथाप्रभेदे मृगलुब्धके ।
द्वन्द्वोऽस्त्री युधि युग्ये तु रहस्ये मिथुनेऽपि नप् ॥२७५१॥
पुँल्लिङ्गस्तु भवेद्द्वन्द्वः समासे चार्थचोदिते ।
द्वन्द्वन्तु भेद्यलिङ्गं स्याद्युग्मावयववस्तुषु ॥२७५२॥
द्वादशोऽस्त्री विष्णुतिथौ संख्यायाः पूरणे त्रिषु ।
द्वापरः संशयेऽपि स्यात्तृतीयेऽपि युगे पुमान् ॥२७५३॥
द्वार्द्वारे चाप्युपाये च स्त्रियां द्वारन्तु नप्तयोः ॥
द्विकमात्ममनोयुग्मे क्लीबं द्वे काककोकयोः ॥२७५४॥
त्रिषु तु द्वितयेऽपि स्याद्द्वाभ्यां क्रीतादिकेष्वपि ।
द्विजो द्वे ब्राह्मणक्षत्रवैश्येष्वण्डोद्भवेषु च ॥२७५५॥

दन्तेषु पुंसि भार्ग्यान्तु हरेणौ च द्विजा स्त्रियाम् ।
द्विजन्मा पुंसि दन्तेऽथ द्वे ब्रह्मक्षत्रविट्खगे ॥२७५६॥

द्विजपोतो द्वयोः शूद्रे तथा स्यात्पक्षिणः शिशौ ।
द्विजराजस्त्वनन्तेऽपि चन्द्रे च गरुडे पुमान् ॥२७५७॥

द्विजातिः पक्षिणि ब्रह्मक्षत्रविट्सु तथा पुमान् ।
द्विजिह्वस्तु द्वयोः सर्पे सूचके तु त्रिषु स्मृतः ॥२७५८॥

द्वितीया स्त्री द्वितीयस्यां विभक्तौ ब्रह्मणस्तिथौ ॥
भार्यायाश्च द्वितीयस्तु द्वयोः स्यात्पूरणे त्रिषु ॥२७५९॥

द्विपाद्द्वे विहगे मर्त्ये द्व्यङ्घ्रिके तु त्रिषु स्मृतः ।
द्विषस्तु पुंसि शत्रौ स्यात्त्रिलिङ्गो द्वेष्टरि स्मृतः ॥२७६०॥

द्वीपी जलाशयभिदि स्त्री द्वीपोऽस्त्र्यन्तरीपके ।
द्वीपवान्सिन्धुनद्योर्द्वीपवत्यापगाभुवोः ॥२७६१॥

द्वीपिस्तु श्वापदे कालेऽपि च न क्लीबमिष्यते ।
द्वैपं रथे द्वीपिचर्मच्छन्नेऽङ्गे द्वीपिनस्तथा ॥२७६२॥

विकारेऽप्यासमुद्रान्तद्वीपसम्बन्धिवस्तुनि ।
अन्यत्र मानुषात्तत्स्थादभिधेयवदिष्यते ॥२७६३॥

ध

[1]धो धर्मब्रह्मधनदधैवतेष्वथ नब्धने ।
धो धा च ब्रह्मणि ख्यातौ ना धा त्रिर्धारके भवेत् ॥२७६४॥
[2]धटस्तुलाराशिदिव्यतुलयोश्चीवरे धटी ।
धत्तो द्रुमेऽर्के क्ली गेहव्योमसत्रे दिवि स्त्रियाम् ॥२७६५॥
धत्तूरो मातुले क्ली तु तत्फले हेम्नि चेष्यते ।
धत्रं गेहव्योमसत्रे दिवि स्त्री नाऽर्कवृक्षयोः ॥२७६६॥

---

१. धो ना धर्मे कुबेरे च धं तु क्लीबं धने मतम् ।
२. धटो दिव्यतुलायां स्याद्धटी चीरे च वाससः ।

[1]धनं वित्ते गोव्रजे द्वितीयर्क्षे स्नेहपात्रयोः ।
[2]धनञ्जयोऽर्जुनेन्द्राग्निचित्रकेऽस्यहिभेदयोः ॥२७६७॥
[3]धनदो ना कुबेरे च वृक्षे त्रिस्तु धनप्रदे ।
द्वयोस्तु गुह्यके गेहभेदे तु धनदम्मतम् ॥२७६८॥
धनधारणमित्येतत्स्वापतेयस्य धारणे ।
व्यवहारप्रवृत्तानां लेख्यभेदेऽपि कीर्त्तितम् ॥२७६९॥
पुमान्धनपतिर्यक्षराज आढ्ये तु स त्रिषु ।
धनवानम्बुधौ स्त्री तु धनिष्ठा धनवत्यपि ॥२७७०॥
उद्भिद्भेदे धनहरः पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
नेपालगन्धद्रव्ये तु मता धनहरी स्त्रियाम् ॥२७७१॥
धनाध्यक्षः कुबेरेऽपि स्याद्धनाधिकृतेऽपि ना ।
धनिकः साधुधनिनोस्त्रि स्त्री स्यात्साधुयोषिति ॥२७७२॥
धनिकाऽपि च धान्याके क्वचित्तु नृपयोषिति ।
धनी कुबेरे पुँल्लिङ्गस्त्रिस्तु वार्द्धुषिकाढ्ययोः ॥२७७३॥
धनिष्ठेऽतीव धनिकस्त्रिर्धनिष्ठर्क्षभिदि स्त्रियाम् ।
[4]धनुर्धनुः प्रियालस्य फले पापे च न द्वयोः ॥२७७४॥
पुमांस्तु स्यात्प्रियालद्रौ राशिभेदे शरासने ।
भल्लातके चतुर्हस्तमानेऽपि स्याद्धनूरपि ॥२७७५॥
द्वीपे तु पुलिने नद्यादितटे स्त्री धनुर्धनूः ।
धनुका तु स्त्रियां वध्वां भेद्यलिङ्गे तु साधुनि ॥२७७६॥
धनुर्ग्रहस्तु पुँल्लिङ्गः प्रमाणेऽष्टाङ्गुले मतः ।
चापस्य ग्रहणे चाथ त्रिर्ग्रहीतरि धन्वनः ॥२७७७॥
धनुर्दण्डश्चतुर्हस्तप्रमाणे यौगिकेऽपि च ।
धनुर्लता धनुर्वल्ल्यां सोमवल्ल्यामपीष्यते ॥२७७८॥

---

१. धनं गवां व्रजे वित्ते लग्नाद्राशौ द्वितीयके ।
२. धनञ्जयोर्जुनेन्द्राग्निनागकायानिलान्तरे ।
३. धनदस्तु कुबेरे ना भेद्यवत्तु धनप्रदे ।
४. उकारान्तः षान्तश्च ।

धनुर्नृशण्डश्चापे क्ली चतुर्हस्तप्रमाणके ।
धनुष्करश्चापकारे पुष्पभेदे धनुष्करी ॥२७७९॥
धनुष्कोटिश्चापकोटौ स्याद्रामेश्वरतीर्थके ।
धनूस्त्रियान्धनुर्ज्यायान्धनुष्यप्युत्तमस्त्रियाम् ॥२७८०॥
मूर्वामहेन्द्रवारुण्योर्धनुःश्रेणी प्रकीर्त्तिता ।
धनेशस्तु कुबेरे ना स्यात्त्वाढ्ये भेद्यलिङ्गकः ॥२७८१॥
धन्यो धननिमित्ते च पुण्यवत्यपि वाच्यवत् ।
अनीशवादिनि क्रौञ्चद्वीपवैश्ये पुनर्द्वयोः ॥२७८२॥
धन्या लता बृहतिकाधान्याकामलकीषु च ।
धन्वा स्यान्मरुदेशे ना व्योम्नि चापत्स्थलेषु नप् ॥२७८३॥
धन्वन्तरिः काशिराजे भास्करेऽपि मतः पुमान् ।
धन्वी तु ना धनूराशौ धानुष्के तु भवेत्त्रिषु ॥२७८४॥
धमनस्तु नडस्तम्बे पुंसि नासापुटेऽपि च ।
धमनी स्त्री सिराहट्टविलासिन्योश्च वाचि च ॥२७८५॥
वाच्यवद्धमनः क्रूरे स्याद्भस्त्राध्मापकेऽपि च ।
धरः कूर्मेशकार्पासीवसुभृद्गिरितूलके ॥२७८६॥
धरणन्त्वष्टके हेम्नः पलानां सप्ततौ तथा ।
ताम्रस्य दशकेऽन्येषां रूप्यकर्षे च धारणे ॥२७८७॥
धारणी तु स्त्रियामेषा वसुधायाम्प्रकीर्त्तिता ।
धरा भूमिगुडूच्योश्च स्त्रीगर्भाशयमेदसोः ॥२७८८॥
धराधरस्तु शैलेऽपि शिवेऽपि च पुमान्मतः ।
धर्णसिस्तु पुमाञ्छैले सलिले तु नपुंसकम् ॥२७८९॥
धर्त्ता ऋदन्तः पुँल्लिङ्गो धर्मे स्याद्धारके त्रिषु ।
धर्मोऽस्त्री सुकृते साम्ये स्वभावे लग्नराशितः ॥२७९०॥
राशौ च नवमे प्राहुर्मौहूर्त्ता ना तु सोमपे ।
न्यायाचारयमाहिंसाखड्गचापेषु राज्ञि च ॥२७९१॥
प्रधानशेषे सत्ये च श्रुतौ दण्डविनिर्णये ।
सताश्च सङ्गते यज्ञे तथैवोपनिषद्यपि ॥२७९२॥

धर्मणस्तु प्रमान्वृक्षभेदसर्पप्रभेदयोः ।
धर्मपालः पुमान्खड्गे त्रिस्तु धर्मस्य पालके ।।२७९३।।
धर्मराजस्तु बुद्धेऽपि यमेऽपि च युधिष्ठिरे ।
धर्षणं क्ली मतं धार्ष्ट्येऽभिभवे सुरतेऽप्यथ ।।२७९४।।
धर्षणी कुलटायां स्त्री धर्षणम्भर्त्सने न ना ।
धवो ना धवने धूर्त्ते प्रभौ पत्यौ च योषिताम् ।।२७९५।।
धुरन्धरद्रुमेऽथ क्ली तत्पले द्वे तु मानवे ।
धवलो वृषभे श्वेते वर्णेऽथ धवला गवि ।।२७९६।।
वाच्यवत्तु श्वेतवर्णयुते श्रेष्ठे च सुन्दरे ।
[1]धाकः पुमानोदनेऽपि कीर्त्तितश्चानडुह्यपि ।।२७९७।।
धाणकस्तु पुमांश्छिद्रविधाने हविषां ग्रहे ।
धाणका स्त्री पणतृतीयांशे सम्परिकीर्त्तिता ।।२७९८।।
धातुर्धनेऽस्थ्नि लोहे च शरीरे गैरिके रसे ।
स्वर्णे रेतसि पाषाणे स्याद्भूवादिसुबन्तयोः ।।२७९९।।
वातादिशब्दस्पर्शादिगैरिकादित्वगादिषु ।
आकारे च स्वभावे च पादे पञ्चाक्षरे तथा ।।२८००।।
महाभूतेष्विन्द्रियेषु श्लेष्मादौ च पुमानयम् ।
धाता ब्रह्मणि ना त्रिस्तु पितृपालककर्भर्तृषु ।।२८०१।।
.... ।
[2]धात्री द्वयोः स्यात्कितवे धात्री तु स्त्र्युपमातरि ।।२८०२।।
जनन्यामामलक्याञ्च वसुधायाञ्च कीर्त्तिता ।
धानन्तु धारणे पाने दाने च क्लीबमिष्यते ।।२८०३।।
धाना भृष्टयवेऽपि स्त्री फलबीजे च भूरुहाम् ।
धाना स्त्री भूरुहाम्बीजे कुस्तुम्बुरुणि चाप्यथ ।।२८०४।।
भूम्नि भृष्टयवेष्वेवं स्थूले तच्चूर्णकेऽपि च ।
धामं त्वदन्तं तिलकतेजसोः क्लीबमिष्यते ।।२८०५।।

१. धो धा च ब्रह्मणि ख्यातौ धा तु स्याद्धारकेऽपि च ।
२. धात्री जनन्यामलकी वसुमत्युपमातृषु ।

धाम स्थानाधिकरणधनत्विट्सारलक्ष्मसु ।
गेहदेहप्रभावान्नभोजनेनव्योमजन्मसु ॥२८०६॥
शाखायामपि वैचित्र्ये नकारान्तन्नपुंसकम् ।
धामार्गवोऽपामार्गे कोशातक्यां प्रसवे तु नप् ॥२८०७॥
धारणस्तु स्तने लोके धातर्यर्के जले तु नप् ।
धारणी नाडिकायां स्याद्बौद्धमन्त्राऽन्तरेप्यथ ॥२८०८॥
धारणा योगाङ्गभेदे चित्तस्य स्थिरधारणे ।
अनाऽनुग्रहने चैव मर्यादायाञ्च धारणा ॥२८०९॥
धारा प्रवाहे नद्यादेः सैन्याग्रे द्रवसन्ततौ ।
वाचि शस्त्रमुखेऽश्वानां गतिष्वास्कन्दितादिषु ॥२८१०॥
घटादिच्छिद्रसन्तत्योर्धारस्त्वश्मान्तरे फणे ।
धाराङ्कुरस्तु नासीरे शीकरेऽपि घनोपले ॥२८११॥
धाराङ्गस्त्ववतारेऽश्रावस्त्री न तीर्थखड्गयोः ।
धाराटस्तु द्वयोरश्वे चातकेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥२८१२॥
धाराधरस्तु खड्गेऽपि जलदेऽपि पुमान्मतः ।
धार्त्तराष्ट्रो द्वयोश्चञ्चूचरणैरसितैः सिते ॥२८१३॥
हंसभेदेऽप्यपत्ये च धृतराष्ट्रस्य ना पुनः ।
नागराजेऽसुरे त्रिस्तु धृतराष्ट्रस्य योगिनि ॥२८१४॥
धार्मिको नृपतेर्धर्माऽधिकृते पुरुषे त्रि तु ।
पाठके धर्मशास्त्राणान्धर्मस्य चरितर्यपि ॥२८१५॥
धावनं क्लीबलिङ्गं स्याच्छोधने च गतावथ ।
धौताञ्चले पृश्निपर्ण्यां रजन्यां धावनी स्त्रियाम् ॥२८१६॥
न तु ना धावयत्यर्थे धावनन्धावना भवेत् ।
धिग्भर्त्सने च निन्दायामव्ययं परिकीर्त्तितम् ॥२८१७॥
धिषणा तु स्त्रियाम्बुद्धौ स्त्री चिह्ने पार्वतीगिरोः ।
धिषणे त्वेव रोदस्योर्धिषणास्तु बृहस्पतौ ॥२८१८॥
धिष्ण्यो वह्नौ याज्ञिकानां वह्निभेदेषु केषुचित् ।
तुषास्थानेषु शुक्राख्यमङ्गलग्रहयोरथ ॥२८१९॥

धिष्ण्योल्कायां क्ली तु गेहासनस्थानर्क्षशक्तिषु ।
धीर्ज्ञानं ज्ञानभेदे च बुद्धौ कर्मणि च स्त्रियाम् ॥२८२०॥
धीता बुद्धौ सुतायां च कन्यायां च स्त्रियां मता ।
धीतिस्तु त्र्यङ्गुलौ पानेऽप्याधारे[1] च व्यवस्थितौ ॥२८२१॥
धीमान्बृहस्पतौ पुंसि पण्डिते त्वभिधेयवत् ।
धीरोऽब्धौ मन्थरे तु त्रि धृतिमद्विदुषोरपि ॥२८२२॥
धीरन्तु कुङ्कुमे धीरा गुडूच्याम्परिकीर्त्तिता ।
धीवा व्याधौ पुमान्धीवा धीवरी सुरमत्स्ययोः ॥२८२३॥
धीवधीवाधीवरीति त्रिषु कर्मकरे भवेत् ।
धीवरो नाऽम्बुधौ व्याधे काललोहे तु धीवरम् ॥२८२४॥
द्वे तु दाशेऽपि मर्त्ये च कैवर्त्तीवृषलोद्भवे ।
धुतन्तु कम्पिते त्यक्ते भर्त्सिते धूतवत्त्रिषु ॥२८२५॥
धुनी नद्यां स्त्रियामुक्ता धुनस्तु स्यान्नरे पुमान् ।
धुन्धुमारः शक्रगोपे गृहधूमे पदाऽलिके ॥२८२६॥
धूरङ्गुलौ यानमुखे साम्नान्द्रष्टृषु केषुचित् ।
भारे विकृतगीतौ स्त्री गायत्राह्वयसामनि ॥२८२७॥
धुरन्धरो धवद्रौ ना वाच्यलिङ्गस्तु धूर्वहे ।
धूरूदन्ता स्त्रियामेव धूनने परिकीर्त्तिता ॥२८२८॥
धूका स्त्री कामिलायां स्याद्धूको व्याधौ पुमान्मतः ।
धूतन्तु कम्पिते त्यक्ते भर्त्सितेऽप्यभिधेयवत् ॥२८२९॥
धूमकेतन इत्युक्तः केतुग्रह हुताशयोः ।
धूमकेतुः पुमानग्नौ स्यादुत्पातान्तरेऽपि च ॥२८३०॥
धूमलो ना कृष्णरक्ते वर्णे त्रिषु तु तद्वति ।
देवतार्चनतूर्ये तु धूमलम्पुंनपुंसकम् ॥८२३१॥
धूर्त्तः शिवे कुरवके ना धुर्धूरकदम्बयोः ।
क्लीबन्तु खण्डलवणे प्रसवे चोक्तभूरुहाम् ॥२८३२॥
अयोमयेऽपि पत्राङ्गे मेद्यलिङ्गन्तु वञ्चके ।
धूलीकदम्बो वरुणफले नीपान्तरे पुमान् ॥२८३३॥

---

१. आधाने वा ।

धूसरो द्वे खरे स्त्री तु धूसरी किंनरीभिदि ।
स्तोकपाण्डुरवर्णे तु धूसरो ना त्रि तद्वति ॥२८३४॥
धृतराष्ट्रः सुराज्ञि स्यान्नागक्षत्रियभेदयोः ।
धृतराष्ट्री स्त्रियामेषा हंसपत्न्याम्प्रकीर्त्तिता ॥२८३५॥
धृतिर्धारणसन्तोषधैर्यशौर्यसुखे स्त्रियाम् ।
द्वासप्तत्युत्तरच्छन्दोविशेषेऽपि तथा मता ॥२८३६॥
धृत्वा विष्णौ गिरावब्धौ यतौ ना धृत्वरी भुवि ।
धृष्टिः पुमान्भवेद्रश्मौ स्त्रियां सा धर्षणे मता ॥२८३७॥
धृष्णुः प्रगल्भे चौरे त्रिर्ना तु सन्तापशैलयोः ।
धेनुः स्त्रियां स्याद्धस्तिन्यान्नवसूतगवीगिरोः ॥२८३८॥
नपुंसकन्तु धेन्वे तत्सामभेदे क्वचिन्मतम् ।
धेनुका क्षुरिकोमागोकरेणुष्वसुरे तु ना ॥२८३९॥
धैनुकन्धेनुसङ्घेऽपि रतबन्धान्तरे तु नप् ।
धोतस्तु मारुते पुंसि शठे तु त्रिषु कीर्त्तितः ॥२८४०॥
धोरणं वाहनेऽश्वानां धोरिते रथगतौ च नप् ।
त्रिषु त्वेतद्गतियुतेऽथ हंसे धोरणो द्वयोः ॥२८४१॥
ध्यामन्दमनके गन्धतृणेऽथ श्यामले त्रिषु ।
ध्राजिः पिटकजातौ स्त्री वात्यायामपि कीर्त्तिता ॥२८४२॥
ध्रुवः शङ्कौ हरे विष्णौ वटे चोत्तानपादजे ।
वसुयोगभिदोः पुंसि त्रिर्नित्ये निश्चले स्फुटे ॥२८४३॥
ध्रुवा तु स्त्री सालपर्ण्यां गीतिस्रुग्भेदयोर्भुवि ।
ध्वजमस्त्री पताकायाञ्चिह्ने पूर्वदिशो गृहे ॥२८४४॥
खट्वाङ्गशिश्नयोर्ना तु तालद्रौ शौण्डिके द्रुमे ।
ध्वजी द्वे शौण्डिके चम्वां ध्वजिनी त्रिर्ध्वजान्विते ॥२८४५॥
ध्वनिताला तु वीणायां वेणुकाहलयोरपि ।
ध्वस्तं ग्रासीकृते लुप्ते नयहीनेऽपि वाच्यवत् ॥२८४६॥
ध्वाङ्क्षो ध्वाङ्क्षी बके काके ध्वाङ्क्षा द्वे घोरवाशिते ।
ना भिक्षौ तक्षके ध्वाङ्क्षो ध्वाङ्क्षी कक्कोलिकौषधौ ॥२८४७॥
ध्वाङ्क्षिर्ध्वाङ्क्षतिधातौ ना स्त्री तु स्याद्घोरवाशिते ॥२८४७३॥

न

नः पुमान्सुगते बन्धे द्विरण्डे प्रस्तुतेऽपि च ॥२८४८॥
नकुलस्तु द्वयोर्बभ्रौ सहदेवाग्रजे तु ना।
ऋषिभेदे बभ्रुवर्णे त्रि तु तद्वर्णसंयुते ॥२८४९॥
नकुली तु स्त्रियां मांस्यां कुक्कुट्याश्च प्रकीर्त्तिता।
नकूबारो देवरे ना त्रिषु तु स्यान्निराश्रये ॥२८५०॥
नक्तञ्चरो रात्रिचरे त्रि द्वे तूलूकरक्षसोः।
नक्रो द्वयोः स्यात्कुम्भीरग्राहसंज्ञकयादसोः ॥२८५१॥
नक्षत्रनेमिः स्त्री रेवत्याम्पुमान्विष्णुचन्द्रयोः।
नक्षत्रमाला स्त्री प्रोक्ता हस्तिमस्तकभूषणे ॥२८५२॥
स्थासकाख्ये तथा सप्तविंशत्या मौक्तिकैः कृते।
एकयष्टौ हारभेदे नक्षत्राणां तथाऽवलौ ॥२८५३॥
नखोऽस्त्री नखरे क्ली स्त्री नखी शुक्त्याख्यभेषजे।
नखरायुध इत्युक्तो विडाले त्रि तु यौगिके ॥२८५४॥
नगस्तु पर्वते पुंसि तरावप्यगवन्मतः।
नगभूषणमित्येतद्धरितालेऽपि यौगिके ॥२८५५॥
नगौकाः पुंसि शरभे पक्षिपञ्चास्ययोरपि।
नग्नो वन्दिक्षपणयोस्त्रित्वनग्ने दिगम्बरे ॥२८५६॥
नग्निका तु कुमार्यान्नग्नकः क्षपणवन्दिनोः।
नञभावे निषेधे च स्वरूपार्थेऽप्यतिक्रमे ॥२८५७॥
ईषदर्थे च सादृश्ये तद्विहीनतदन्ययोः।
नटष्टुण्डुद्रुमेऽशोके शैलूषे तु नटो नटी ॥२८५८॥
नटी नल्यपराख्यायां स्त्री विद्रुमलतौषधौ।
नतन्नमस्कृते वक्रे बन्धुरे चाभिधेयवत् ॥२८५९॥
नपुंसकं तु नमने नगरेऽप्यगुरौ मतम्।
नदी धुन्यान्नदस्तु स्यात्स्तोतर्यपि सरस्वति ॥२८६०॥

नदनुस्तु मृधे मेघे पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
नदीकान्तः समुद्रे ना हिज्जले सिन्दुवारके ॥२८६१॥
नदीकान्ता तु जम्ब्वां स्त्री काकजङ्घौषधावपि ।
नदीभवं क्ली लवणे सैन्धवे त्रिसरिद्भवे ॥२८६२॥
नदीष्णः कुशलेऽपि स्यात्तरौ तु कुशले त्रिषु ।
नद्धो बद्धे तथोद्वृत्तेऽप्यभिधेयवदिष्यते ॥२८६३॥
ननु स्यादव्ययं प्रश्नदुष्टोक्त्योश्च विनिग्रहे ।
अनुप्रश्ने परकृतावधिकारे च संभ्रमे ॥२८६४॥
आमन्त्रणेऽप्यनुनये प्रश्नाऽनुज्ञाऽवधारणे ।
नन्दकः पुंसि कृष्णस्य खड्गेऽसौ परिकीर्त्तितः ॥२८६५॥
नन्दको वाच्यवत्प्रोक्तो हर्षके कुलपालके ।
नन्दनो नन्दना पुत्रे दुहितर्यपि च द्वयोः ॥२८६६॥
इन्द्रोद्याने नन्दनं स्यान्नन्दथौ च नपुंसकम् ।
न ना नन्दयतेरर्थे त्रिषु नन्दयितर्ययम् ॥२८६७॥
नन्दन्तस्तु पुमान्सख्यौ नन्दन्ती स्यात्सखीजने ।
नन्दतामिति यत्राशीर्नन्दन्तस्त्रिषु तत्र सः ॥२८६८॥
नन्दयन्तः पुमान्राज्ञि नन्दयन्ती सुखेऽपि च ।
सुवर्णेऽपि च पार्वत्यां त्रि तु नन्दयितर्यपि ॥२८६९॥
नन्दा तु प्रतिपत्षष्ठ्येकादशीषु स्नुहीतरौ ।
अलिञ्जरे च पार्वत्यान्नन्दः पूर्वनृपेषु च ॥२८७०॥
[1]निधिभेदे यशोदेशे द्वे तु नन्दनकर्मणि ।
नन्दिः स्त्री स्यात्सुखे भेरीवाद्ये द्यूताङ्गभिद्यपि ॥२८७१॥
पुमांस्तु नन्दतौ धातौ प्रतीहारे शिवस्य च ।
नन्दी नन्दीश्वरे माषे नाद्यनान्द्याश्च पाठके ॥२८७२॥
वनद्रुमे गर्दभाण्डे तथा पुँल्लिङ्ग इष्यते ।
नन्दिनी पार्वती गङ्गाधेनुभेदननान्दृषु ॥२८७३॥

---

१. यशोदाभर्त्तरि द्वे तु नन्दनाख्ये सकर्मणि ।

शस्तवास्तुस्थलेऽयोध्याहरीतक्युपकुञ्चिषु ।
नन्दिवर्धन ईशाने चन्द्रवंश्यनृपान्तरे ॥२८७४॥
पुत्रे च पञ्चदश्याञ्च योगार्थे तु यथायथम् ।
नन्द्यावर्त्तस्तु वेश्मादेः स्याद्विन्यासान्तरे पुमान् ॥२८७५॥
तगराख्ये पुष्पगुल्मेऽप्यथ तत्प्रसवे तु नप् ।
नपात्द्वयोस्तकारान्तः पौत्रानन्तरवंशजे ॥२८७६॥
नप्ता द्वे पौत्रदौहित्रतत्पुत्रादिषु कीर्त्तितः ।
नभश्चरो घने वाते द्वे तु विद्याधरे खगे ॥२८७७॥
नभा वृद्धे त्रि खस्वर्गाम्बुषु तु क्ली नभोऽस्त्रियाम् ।
अभ्रश्रावणवर्षासु घ्राणे सूर्ये पतद्ग्रहे ॥२८७८॥
विसतन्तावथ द्यावापृथिव्योर्नभसी इति ।
नभसस्तु पुमान्व्योम्नि ऋतावपि सरित्पतौ ॥२८७९॥
नभाका चक्रवाके स्त्री नभाको वायसे द्वयोः ।
नमतः पुंसि धूमे च तथा दिनकरे मतः ॥२८८०॥
क्लीबन्तूर्णास्तरणके ह्रस्वे तु नमतस्त्रिषु ।
नमसः पुंसि वेत्रे च प्रणामे च प्रकीर्त्तितः ॥२८८१॥
त्रिर्नमस्योऽर्चनीये स्त्री नमस्याऽर्चन इष्यते ।
नमस्कारी खदिर्यां स्त्री नमस्कारो नतौ पुमान् ॥२८८२॥
नमिर्नमतिधातौ च जैनतीर्थे करान्तरे ।
विद्याधरेश्वरेऽप्येष कस्मिंश्चित्पुंसि कीर्त्तितः ॥२८८३॥
नमुचिस्तु पुमान्दैत्यभेदे पुष्पशरेऽपि च ।
नयो नीतौ तथा द्यूतभेदेऽपि च पुमान्मतः ॥२८८४॥
नरः पुंस्यर्जुने विष्णोरवताराऽन्तरे नये ।
मनुष्यजातौ तु द्वे स्यात्स्त्र्यर्थे नारीति तत्र च ॥२८८५॥
नरन्तु रामकर्पूरे सलिले च नपुंसकम् ।
नरकः पुंसि निरये तथा स्यादसुरान्तरे ॥२८८६॥
नराङ्गं मेहने क्लीबं नराङ्गो ना वरण्डके ।
नरेन्द्रो विषवैद्ये च मन्त्रवादिनि भूमिपे ॥२८८७॥

नरेन्द्रपत्नी भूमौ च राजपत्न्यामपि स्त्रियाम् ।
नर्त्तकश्चारणे पुंसि नटे पोटगलेऽपि च ॥२८८८॥
नर्त्तकी लासिकायाञ्च करेण्वाञ्च स्त्रियां मता ।
नर्त्तनप्रिय इत्युक्तो मयूरे त्रि तु यौगिके ॥२८८९॥
नर्मठः पुंसि षिङ्गे च चूचुके च प्रकीर्त्तितः ।
नर्मदः केलिसचिवे रेवायां नर्मदा मता ॥२८९०॥
[1]नर्मरा नीरजे स्त्री भान्दुदरीमुरलासु च ।
नर्मरं द्रुमकर्पूरे नाराचे मानवेऽर्जुने ॥२८९१॥
नलः पोटगले राज्ञि पितृदेवे कपीश्वरे ।
नलन्तु कमले क्लीबं नलीनद्याम्प्रकीर्त्तिता ॥२८९२॥
नलदं स्यादुशीरेऽपि मांस्यां पुष्परसेऽपि नप् ।
नलिनं नलिकायां क्ली पद्मे तु नलिनी त्रिषु ॥२८९३॥
सरसीस्वर्धुनीपद्मस्तम्बेषु नलिनी स्त्रियाम् ।
नवः स्तुतौ ना त्रिर्नव्ये कार्पास्यान्तु नवा स्त्रियाम् ॥२८९४॥
नवनीतन्तु योगार्थे घृतस्य प्रकृतावपि ।
नवनम्पूरणार्थे त्रिर्नवमी स्यादुमातिथौ ॥२८९५॥
सप्तलायान्नवायाञ्च मालायान्नवमालिका ।
नश्वरं नाशशीलादौ त्रि दैन्यान्वितवाचि च ॥२८९६॥
नष्टः पलायितमृततिरोभूतेषु वाच्यवत् ।
स्पृष्टमैथुनकन्यायां नष्टा स्त्रीलिङ्ग इष्यते ॥२८९७॥
नस्तो नासापुटेऽपि स्याद्दृषावपि पुमानयम् ।
नहुषो द्वे मनुष्ये ना नागभेदे नृपान्तरे ॥२८९८॥
नाकः सूर्ये पुमानस्त्री स्वर्व्योम्नोर्द्वे तु पुत्रयोः ।
दुःखाभाववति त्वेष वाच्यवन्नाक इष्यते ॥२८९९॥
नाकुर्मुन्यन्तरे शैले वल्मीके ना वनस्पतौ ।
नाकुली कुक्कुटीकन्दे स्त्री रास्नाचव्ययोरपि ॥२९००॥

१. मुरलायां दरीभान्दुनीरजः स्त्रीषु नर्मरा ।
क्लीबं स्याद्द्रुमकर्पूरे नाराचे मानवेऽर्जुने ॥

यवतिक्तासर्पगन्धानामोषध्योरपि स्मृता ।
ऊर्ध्वज्ञोरुपविष्टस्य भुजाभ्याञ्जङ्घयोर्द्वयम् ॥२९०१॥
बद्धावस्थानरूपे चासने क्ली नाकुलम्मतम् ।
अथो नकुलसम्बन्धिन्यप्येतत्त्रिषु नाकुलम् ॥२९०२॥
नागो मेघे नागदन्त्याम्पुन्नागे नागकेसरे ।
देहाऽनिलान्तरे मुस्ते नागवल्ल्याम्पुमान्मतः ॥२९०३॥
नागोऽस्त्री सीसके वङ्गे क्ली तु स्त्रीकारणान्तरे ।
द्वयोर्गजे च सर्पे च तथा ग्राहाख्ययादसि ॥२९०४॥
स्थूले तु वाच्यवन्नागः क्रूराचारिणि च स्मृतः ।
स्त्रियां तत्र च नागी स्यात् श्रेष्ठे पुंस्युत्तरस्थितः ॥२९०५॥
नागदन्तः पुमान्भित्तिशङ्कौ निर्यूहनामनि ।
नागस्य च रदे नागदन्ती त्वौषधगुल्मके ॥२९०६॥
कुम्भानिकुम्भाद्यभिधे श्रीहस्तिन्यामपीष्यते ।
नपुंसके नागदन्तमासनान्तर इष्यते ॥२९०७॥
यदूर्ध्वज्ञोः प्रसृतयोर्भुजयोर्जानुसंस्थयोः ।
नागपाशः पुमान्स्त्रीणां करणे वरुणायुधे ॥२९०८॥
नागपुष्पस्तु पुन्नागे चम्पके नागकेसरे ।
नागभूषणमित्येतद्धरितालेऽपि यौगिके ॥२९०९॥
नागरं मुस्तके शुण्ठ्याञ्चुक्रे राजकशेरुणि ।
नागरस्तु त्रिलिङ्गः स्याद्विदग्धे नगरोद्भवे ॥२९१०॥
स्यान्नागवारिकस्तार्क्ष्ये गणस्थे राजकुञ्जरे ।
हस्तिपे च मयूरे तु स द्वयोः परिकीर्त्तितः ॥२९११॥
नागोदर्युदरत्राणे भटानां त्रि तु यौगिके ।
नाटकं रूपकभिदि नाटिका तूपरूपके ॥२९१२॥
नाटको नाटयितरि नर्तितर्यपि वाच्यवत् ।
नाट्यं घोषाख्यलोहे क्ली नृत्ते तौर्यत्रिके तथा ॥२९१३॥
अथ नाट्यन्नाटयितव्येऽभिधेयवदिष्यते ।
नाडी नाडीव्रणे ताले धमन्यर्धमुहूर्त्तयोः ॥२९१४॥

सच्छिद्रदीर्घद्रव्येऽपि चर्यायां कुहनस्य च ।
नक्षत्रे नासिकायां स्त्री नाली नाडिश्च नाटिवत् ॥२९१५॥
नाडीतरङ्गः काकोले हिण्डके रतहिण्डके ।
नाथस्त्विन्द्रे पुमानेष स्यात्प्रभौ त्वभिधेयवत् ॥२९१६॥
द्वयोस्तु नाथो नाथेति याच्ञैश्वर्यादिके भवेत् ।
नाथात उक्त आहारे पुमांश्चैव प्रजापतौ ॥२९१७॥
नादो ध्वनौ स्तोतरि ना नदसम्बन्धिनि त्रिषु ।
नादेयो नागरङ्गे स्यान्नादेयी जलवेतसे ॥२९१८॥
कर्कर्याम्भूमिजम्ब्वाश्च महोदर्याख्यमुस्तके ।
कङ्गुष्ठेप्यथ नादेयं क्ली सिन्धुलवणे मतम् ॥२९१९॥
नदीसम्बन्धिनि त्वेष स्यन्नादेयोऽभिधेयवत् ।
नानाऽव्ययं विनार्थेऽपि तथाऽनेकोभयार्थयोः ॥२९२०॥
नाना स्त्रियां स्याद्धारत्यां जनन्यान्दुहितर्यपि ।
नान्दिः कल्याणवृद्धौ स्त्री नाट्यारम्भार्चनान्तरे ॥२९२१॥
नापितस्तु द्वयोर्विप्रवैश्याजे व्यभिचारतः ।
मर्त्यजात्यन्तरेऽम्बष्ठक्षत्रियासम्भवेऽपि च ॥२९२२॥
नाभिर्द्वयोः स्याज्जन्त्वङ्गे यस्य संज्ञा प्रतारिका ।
रथचक्रस्य मध्यस्थपिण्डिकायाञ्च ना पुनः ॥२९२३॥
आद्यक्षत्रियभेदेऽन्त्यमनौ मुख्यमहीपतौ ।
नाभि क्ली भारते वर्षे स्त्रियां कस्तूरिकामदे ॥२९२४॥
नामाऽस्त्री प्रातिपदिके संज्ञायां क्ली तु वारिणि ।
अव्ययं त्वभ्युपगमरोषसरणविस्मये ॥२९२५॥
सम्भाव्यकुत्साप्राकाश्यविकल्ये नाम कीर्त्तितम् ।
नायस्त्रि नेतरि प्राप्तौ ना नायी तु दिशि स्त्रियाम् ॥२९२६॥
नायको नायिका द्वे नेतरि स्त्रीपुंसयोर्भवेत् ।
नायकस्त्रिः प्रभौ श्रेष्ठे हारमध्यमणौ तु ना ॥२९२७॥
नारं क्ली भारताद्वर्षाद्दक्षिणे प्रतिजानते ।
कस्मिंश्चिदन्तरद्वीपे त्रि तु स्यान्नरयोगिनि ॥२९२८॥

नारी तु योषित्तिन्तिड्योर्नारस्तर्णकतीरयोः।
आपो नारा इति प्रोक्तास्त्वप्सु लिङ्गं न निश्चितम् ॥२९२९॥
नारको नरके ना त्रिलिङ्गो नरकयोगिनि।
नारकीटोऽश्वकीटे स्यात्स्वदत्ताशाविहन्तरि ॥२९३०॥
नारङ्गो नारङ्गद्रौ विटे ना पिप्पलीरसे।
यमजे तु द्वयोः क्ली तु नागरङ्गफले मतम् ॥२९३१॥
नाराच्येपणिकायां स्त्री नाऽयोबाणाम्बुहस्तिनोः।
नारायणः पुमान्विष्णौ नरस्य सहचारिणि ॥२९३२॥
तस्यावतारभेदे च स्त्री तु नारायणी श्रियाम्।
पार्वत्याञ्च शतावर्यां गण्डक्याख्यसरित्यपि ॥२९३३॥
सुपार्श्वाख्यशिवस्थानस्थशिवायां विशेषतः।
नाराशंसः पुमान्यज्ञे चाग्नौ मन्त्रान्तरेऽपि च ॥२९३४॥
नाली त्रयी धान्यकाण्डे नाला चाब्जादिदण्डके।
नालन्तु रन्ध्रे शेफे च नपुंसकमुदीरितम् ॥२९३५॥
नालिका स्त्री चतुर्हस्तप्रमाणे युगसंज्ञके।
नवहस्तप्रमाणे च स्याद्रन्ध्रे नालकालयोः ॥२९३६॥
वेणुपात्रान्तरे चुल्लीरन्ध्रे शाकलतान्तरे।
कलम्बीशतपर्वादिशब्दैः ख्याते जलोद्भवे ॥२९३७॥
नालीकमम्बुजे क्लीबं नालीकस्तु शरे पुमान्।
नालीकिनी स्त्री पद्मिन्यान्नालीकवति तु त्रिषु ॥२९३८॥
नाविकस्तारयितरि त्रि तरीतरि नौकया।
अम्बष्ठाद्ब्राह्मणीजाते मर्त्यजात्यन्तरे द्वयोः ॥२९३९॥
नाशः पलायनध्वंसमरणानुपलब्धिषु।
नासा स्त्री नासिकायाञ्च गृहद्वारोर्ध्वदारुणि ॥२९४०॥
नासिक्यावश्विनौ नासिक्या तु नासाभवे त्रिषु।
नाहस्तु बन्धने पुंसि कूटेऽपि परिकीर्त्तितः ॥२९४१॥
नि निवेशे भृशार्थे च नित्यार्थे संशयेऽव्ययम्।
क्षेपकौशलसामीप्याश्रयदानेषु बन्धने ॥२९४२॥

राश्यधोभावविन्यासे मोक्षेऽन्तर्भाव एव च ।
निकरो निवहे सारे न्यायदेयधने निधौ ॥२९४३॥
निकषः शाणफलके निकषा यातुमातरि ।
निकायस्तु शरव्ये स्यात्समूहेऽपि सधर्मणाम् ॥२९४४॥
गृहे बहूनामेकत्र करणे परमात्मनि ।
निकारस्तु तिरस्कारे धान्यस्योत्क्षेपणेऽपि च ॥२९४५॥
निकुम्भः कुम्भकर्णस्य तनये दन्तिकौषधौ ।
निकुरुम्बं समूहे चाङ्कुरेऽपि च नपुंसकम् ॥२९४६॥
निकृतो विप्रलब्धेऽपि हते विप्रकृते त्रिषु ।
निकृन्तिर्भर्त्सने क्षेपे शठे शाठ्येऽपि च स्त्रियाम् ॥२९४७॥
निक्षेपस्तु निधाने स्यात्तथैवोपनिधावपि ।
निगमो नगरे वेदे निश्चये च वणिक्पथे ॥२९४८॥
मार्गे वणिज्यपि कटे ग्रन्थभेदेऽर्थशासके ।
भोजने क्ली निगरणं गले निगरणः पुमान् ॥२९४९॥
निग्रहो भर्त्सने पुंसि मर्यादायाञ्च बन्धने ।
निघातस्त्वनुदात्ताख्यस्वरे निहननेऽपि ना ॥२९५०॥
निघातिका लौहकारैर्यत्र निक्षिप्य हन्यते ।
कूटेन लोहं तत्र स्त्री त्रिषु तु स्यान्निहन्तरि ॥२९५१॥
निचुम्पुणस्तु चन्द्रेऽपि समुद्रेऽवभृथे पुमान् ।
निचुलस्तु निचोले स्यादिज्जलाख्यद्रुमेऽपि च ॥२९५२॥
निचोलः प्रच्छदपटे कञ्चुके च प्रकीर्त्तितः ।
निजं त्रि नित्ये चात्मीये क्ली स्वभावेऽथवाऽऽत्मनि ॥२९५३॥
कृत्तिकायान्तृतीयस्यान्दूर्वायां स्त्री नितत्निवाक् ।
नितम्बो रोधसि स्कन्धे स्त्रियाः पश्चात्कटावपि ॥२९५४॥
कटके पर्वतस्यापि तथैव कटिमात्रके ।
नित्यं तु सन्ततेऽपि स्यात् शाश्वते चाभिधेयवत् ॥२९५५॥
नित्यशङ्की मृगे द्वे स्यात्रिस्तु स्यान्नित्यशङ्किते ।
निदाघो ग्रीष्मकाले स्यादुष्णस्वेदाम्बुनोरपि ॥२९५६॥

निदानमवदानेऽपि खण्डनेऽप्यादिकारणे ।
पतञ्जलेः सूत्रभेदे कारणे वत्सदाम्नि च ॥२९५७॥
निदिग्धिका स्त्रियामुक्ता कण्टकार्यां तथैव च ।
गिरिप्रियेति विख्याते क्षुद्रवातिङ्गिनान्तरे ॥२९५८॥
निदेशः शासनेऽपि स्यात्कथनोपातन्योरपि ।
निदेशनस्तु पुंसि स्याद्दशहस्तप्रमाणके ॥२९५९॥
क्ली त्वाज्ञायाञ्च दाने च न तु ना ण्यन्तकर्मणि ।
निन्द्रालुः सुनिषण्णाख्यजलशाके पुमान्मतः ॥२९६०॥
निद्राशीले तु निद्रालुरभिधेयवदिष्यते ।
निधनोऽस्त्री सामभक्तौ पञ्चम्यां कुलनाशयोः ॥२९६१॥
निधा स्त्रियां निधाने स्यात्तथा पाशकदम्बके ।
भवेन्निधुवनं कम्पे सुरते च नपुंसकम् ॥२९६२॥
निन्दा स्यादपवादेऽपि कुत्सायाञ्च तथा स्त्रियाम् ।
निपातः पुंस्यधःपाते चादिप्रभृतिकेष्वपि ॥२९६३॥
निभं व्याजेऽथ सदृशे स्यादुत्तरपदं त्रिषु ।
निमित्तं लक्ष्यहेत्वोश्च शुभादेः सूचकेऽपि नप् ॥२९६४॥
निमीलनं निमेषे च मुकुलीभाव इष्यते ।
निमेषनिमिषौ काष्ठाऽष्टादशांशे निमीलने ॥२९६५॥
निम्नगा तु स्त्रियान्नद्यान्त्रि तु स्यान्निम्नगन्तरि ।
नियतिर्नियमे च स्त्री दैवे च परिकीर्त्तिता ॥२९६६॥
नियन्ता सारथौ पुंसि भेद्यवत्तु नियामके ।
नियमस्तु प्रतिज्ञायामाज्ञायां च नियन्त्रणे ॥२९६७॥
व्रते च निश्चये चैव पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
नियामकः कर्णधारे पोतवाहे पुमान्मतः ॥२९६८॥
भेद्यलिङ्गस्तु नियमकर्त्तर्येष प्रकीर्त्तितः ।
नियुतं लक्षदशकेऽप्युशीरे लक्ष एव च ॥२९६९॥
निर्निषेधे निर्णये च बहिर्भावेपि चाव्ययम् ।
निरञ्जना पूर्णिमायां विष्णोर्नवसु शक्तिषु ॥२९७०॥

एकस्यां कृष्णसारे तु द्वयोस्त्रिर्निर्गताऽञ्जने ।
निष्ठीवने प्रतिक्षेपे वधे निरसनम्मतम् ॥२९७१॥
निरस्तः क्षिप्तबाणेऽपि वचने च द्रुतोदिते ।
निराकृते च निह्नूते तथा प्रतिहते त्रिषु ॥२९७२॥
निराकृतिर्निषेधास्वाध्यायानाकृतिषु त्रिषु ।
निरामयस्तु पुंसि स्यादिडिक्के त्रिषु नीरुजि ॥२९७३॥
पदभञ्जनशास्त्रे क्ली निरुक्तं स्यात्त्रिषु त्वदः ।
कृतनिर्वचने शब्दे यातुमन्त्रेऽभिधीयते ॥२९७४॥
इन्द्रादिर्दैवता तस्यामुक्तायां स्यात्स्वसंज्ञया ।
तद्देवताके च तथा स्यात्प्रातःसवनादिके ॥२९७५॥
निरुधा तु दिशि स्त्री स्यात्त्रिस्तु पुण्यक्रमे स्मृता ।
[1]निरूपणं नपुंस्यालोकविचारनिदर्शने ॥२९७६॥
निरूहो बस्तिभेदे ना त्र्यूहशून्ये च निश्चिते ।
निर्ऋतिस्तु स्त्र्यलक्ष्म्यां त्रिरगतौ निर्गमे पुमान् ॥२९७७॥
निरोधः पुंसि रोधे स्यात्तथा संक्षयनाशयोः ।
निर्गुण्डी नीलशेफाल्यां सिन्दुवारेऽपि च स्त्रियाम् ॥२९७८॥
निर्ग्रन्थो नग्नकेऽपि स्यान्निःस्ववालिशयोरपि ।
निर्ग्रन्थः स्यात्क्षपणके दरिद्रे ग्रन्थवर्जिते ॥२९७९॥
निर्ग्रन्थकः स्यात्क्षपणे निष्फलेऽप्यपरिच्छदे ।
निर्जरा तु गुरूच्यां स्त्री द्वे देवे त्रि जरोज्झिते ॥२९८०॥
निर्दटः परदोषोक्तिपरे निष्ठुरभाषिणि ।
निर्दटो निर्दये व्यर्थे स्यात्त्रिष्वन्यापवादिनि ॥२९८१॥
निर्दरं निर्झरे सारेऽन्यवत्तु कठिनेऽत्रपे ।
निर्देशो देशहीने त्रिः पुमांस्तु कथनाज्ञयोः ॥२९८२॥
निर्नरस्तु सहस्रांशोस्तुरङ्गे तुषपावके ।
निर्भर्त्सनं खलीकारेऽलक्तकेऽपि नपुंसकम् ॥२९८३॥

---

१. निरूपणं स्यादालोके विचारे च निदर्शने ।
निरूपणा विचारे निदर्शनालोकयोर्न ना ॥

निर्मलं विमले त्रि स्यान्निर्माल्याभ्रकयोस्तु नप् ।
निर्माणं निर्मितौ सारे तथा क्लीबं समञ्जसे ॥२९८४॥
निर्माल्यं तूपयुक्ते क्ली माल्ये त्रिर्माल्यवर्जिते ।
निर्मुक्तस्त्रिस्त्यक्तसङ्गमुक्तकञ्चुकसर्पयोः ॥२९८५॥
निर्मोको मोचने व्योम्नि संनाहे सर्पकञ्चुके ।
निर्याणं करिणोपाङ्गे मृत्यौ मोक्षेऽध्वनिर्गमे ॥२९८६॥
निर्यातनञ्च निर्यातना प्रतीकारमात्रके ।
न्यासप्रत्यर्पणे याने वैरशुद्धौ तथा भवेत् ॥२९८७॥
निर्यामः कर्णधारे ना यामहीने तु भेद्यवत् ।
[1]निर्यूहो नागदन्तद्वाःक्वाथनिर्यासशेखरे ॥२९८८॥
निर्लज्जा तु स्त्रियां यान्यन्नियुक्ता देवरे व्रजेत् ।
लज्जाहीने तु निर्लज्जस्त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥२९८९॥
निर्लेपन्त्वम्बुजे क्लीबं लेपहीने तु वाच्यवत् ।
निर्वाणं निर्वृतौ मोक्षे नाशे च गजमज्जने ॥२९९०॥
सङ्गमे त्रिस्तु शान्तादौ मुनिवह्निगजादिके ।
निर्वादः परिवादे ना वादहीने तु भेद्यवत् ॥२९९१॥
निर्वापणा स्यात्तापशमनायां वधे न ना ।
निर्वासना न नाघाते नगरादिबहिष्कृतौ ॥२९९२॥
निर्वृतिः सुस्थितावस्तगमने च सुखे स्त्रियाम् ।
निर्वेदस्तु पुमान्स्वेदे वेदहीने तु वाच्यवत् ॥२९९३॥
निर्वेशस्तु पुमान्भोगे वेतने मूर्च्छनेऽपि च ।
क्ली तु निर्व्यथनं रन्ध्रे निर्व्यथे तु त्रिषु स्मृतम् ॥२९९४॥
निर्हृतौ मुष्टिमान्द्ये च बन्धुनिर्हरणम्मतम् ।
निलयस्तु गृहे पुंसि तथा निलयने स्मृतः ॥२९९५॥
निलिम्पस्तु द्वयोर्देवे निलिम्पा तु स्त्रियां गवि ।
निवर्त्तनं निवृत्तौ च रज्जूनां त्रितयेऽपि च ॥२९९६॥

---

१. निर्यूहः पुंसि शिखरे द्वारे निर्यास एव च ।
क्वाथेपि नागदन्ताख्यशङ्कुष्वपि तथा मतः ॥ (के०)

अष्टहस्तमितानां स्यान्नतु ना ण्यन्ततः कृतौ ।
वसनक्रिययोर्वस्त्रे गृहे निवसनम्मतम् ॥२९९७॥
निवहस्तु समूहे च वायुस्कन्धान्तरे पुमान् ।
[1]निवातो दृढसंनाहे वातशून्येऽपि चाश्रये ॥२९९८॥
न ना निशमना प्रोक्ता दर्शने श्रवणेऽपि च ।
निशा दारुहरिद्रायां स्त्री त्रियामाहरिद्रयोः ॥२९९९॥
निशाचरः पुंस्युलूके सृगाले सर्परक्षसोः ।
निशाचरी पांसुलायां शिवाख्ये जम्बुकान्तरे ॥३०००॥
निशाचरो रात्रिचरमात्रे स्यादभिधेयवत् ।
निशान्तं क्ली गृहे शान्ते त्रि रात्र्यन्ते तदस्त्रियाम् ॥३००१॥
निशीथस्त्वर्धरात्रेऽपि प्रदोषे रात्रिमात्रके ।
निश्चारकस्तु पुँल्लिङ्गः पुरीषोत्सर्जिमारुते ॥३००२॥
निर्गन्तरि तु निश्चारकोऽयं स्यादभिधेयवत् ।
निःश्रोणिरधिरोहिण्यां स्त्री खर्जूरीद्रुमेऽपि च ॥३००३॥
निःश्रेयसं तु कल्याणमोक्षयोः शकटे तु ना ।
निषङ्गः पुंसि सङ्गेपि तूणीरेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥३००४॥
निषङ्गधिस्तु पुँल्लिङ्गो रुद्रेऽपि च धनुर्धरे ।
निषद्वरः पुमान्पङ्के वह्नाविन्द्रे च मन्मथे ॥३००५॥
निषद्वरी तु स्त्री प्रोक्ता प्रभायां रजनावपि ।
निषधो दक्षिणे मेरोः पुमान्स्यात्कुलपर्वते ॥३००६॥
देशभेदे च तद्राजे कठिने तु त्रिषु स्मृतः ।
[2]निषादो द्वे पारशवे विप्रोढावृषलीसुते ॥३००७॥
चण्डालेऽपि पुमांस्तु स्यादयं गीतिस्वरान्तरे ।
निषेधः प्रतिषेधेऽपि पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥३००८॥
प्रसोमदेववर्गस्य पञ्चमे साम्नि च स्मृतः ।
निष्कोऽस्त्री हेम्नि दीनारे साष्टकर्षशते पले ॥३००९॥

---

१. निवातस्त्र्याश्रये शस्त्राभेदवर्मण्यमारुते । (के०)
२. निषादो द्वे क्रमोढायां शूद्रायां विप्रतः सुते ॥

वक्षोभूषान्तरे कर्षे फले हेम्नो रहस्यपि ।
निष्कस्तु निर्गताद्येषु त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥३०१०॥
निष्कलाऽतीतार्त्तवायामवीर्ये त्वकले त्रिषु ।
निष्कासितो निर्गमितेऽप्याहितेऽधिकृते त्रिषु ॥३०११॥
निष्कुटो ना गृहारामे स्यात्केदारकवाटयोः ।
अथैलायां निष्कुटीति स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥३०१२॥
निष्कोशो ना हस्तिकुक्षिमध्ये कोशोज्झिते त्रिषु ।
निष्क्रयो बुद्धिसम्पत्तौ निर्गमे दुष्कुलेऽपि च ॥३०१३॥
द्वे निष्क्वोऽन्ध्रीशबरजे निष्ठ्या स्वात्यां स्त्रियां मता ।
निष्ठोत्कर्षेप्यवस्थायां नाशेऽन्ते च व्रते तथा ॥३०१४॥
क्लेशे निर्वहणे चैव क्तक्तवत्वोरपि स्त्रियाम् ।
निष्पत्तावपि याञ्चायां परमायां गतावपि ॥३०१५॥
निष्ठुरं तु कठोरे त्रिः परुषाक्षरवाच्यपि ।
स्त्रियां तु निष्ठुरा मुद्राविशेषे हस्तनिर्मिते ॥३०१६॥
निष्पावः शूर्पपवने राजमाषे कडङ्गके ।
पवने शिम्बिकायां ना निर्विकल्पेऽन्यलिङ्गकः ॥३०१७॥
निस् निषेधे च साकल्येऽतीतार्थे निश्चयेऽव्ययम् ।
निसर्गः सर्जने न्यासे स्वभावे निर्गमेऽपि च ॥३०१८॥
निसृष्टञ्जनिते न्यस्ते वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ।
निसृष्टा तु स्त्रियां व्यङ्गकथायामियमिष्यते ॥३०१९॥
निस्तारे स्यान्निस्तरणमुपाये तरणेऽपि च ।
निस्तलं वर्त्तुलेऽप्येवं स्याच्चलेऽपि च वाच्यवत् ॥३०२०॥
निस्तारः पुंसि तूणीरे हिमानिलनिवारणे ।
प्रावारभेदे तरणेऽप्युपायेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥३०२१॥
त्रिषु निस्तुषितं त्यक्ते चाग्निहीने लघूकृते ।
निस्त्रिंशस्तु त्रिषु क्रूरे खड्गे पुँल्लिङ्ग इष्यते ॥३०२२॥
निसङ्गा त्वतिमुक्ते स्त्री त्रिषु स्यात्सङ्गवर्जिते ।
क्लीबं निस्सरणन्द्वारे मरणे भयनिर्गतौ ॥३०२३॥

उपाये निर्गमे याने मुखे पुरगृहादिनः ।
निस्स्रावो भक्तमण्डेऽपि स्यान्निस्स्रावणकर्मणि ॥३०२४॥
निहतस्त्रि हते नीचस्वरयुक्ते तथाऽक्षरे ।
निह्नवस्त्वपलापे स्याद्विश्वासे निकृतावपि ॥३०२५॥
यादवस्तु सुविश्वासे नमस्कारेऽपि साञ्जलौ[1] ।
नीको द्वे ज्ञातिखगयोर्नीका कुल्यार्थिका स्त्रियाम्[2] ॥३०२६॥
नीकाशो निश्चये पुंसि तुल्ये स्यादभिधेयवत् ।
नीचः पुमान् शनौ नीचैःस्वरे नीचस्तु तद्वति ॥३०२७॥
वामने च निकृष्टे च वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ।
नीडमस्त्री कुलाये च निलये च प्रकीर्त्तितम् ॥३०२८॥
नीतं क्ली नवनीताऽन्नधनेषु त्रि तु यौगिके ।
नीतिः स्त्रियां नयेऽप्येवम्प्रापणेऽपि स्त्रियाम्मता ॥३०२९॥
नीथो विप्रे द्वयोर्धर्मशीले त्रिर्ना नृपान्तरे ।
नीपकेऽथ च नीथा स्त्री नीतौ क्ली गीतभिद्यपि ॥३०३०॥
नीपः कदम्बबन्धूकनीलाऽशोकद्रुमेषु ना ।
[3]नीरजं कमले कुष्ठे नीरजः कृष्ण इष्यते ॥३०३१॥
नीलस्तु निधिभेदे ना गिरिभित्कपिभेदयोः ।
कार्ष्ण्यशौक्ल्याख्यगुणयोस्त्रि तु तद्वति तत्र च ॥३०३२॥
स्त्र्यर्थे नीलैव वस्त्रे स्यात्संज्ञायान्तु द्वयम्भवेत् ।
नीला नीली च नील्येव प्राणिन्येषा प्रकीर्त्तिता ॥३०३३॥
नीलको नीलितर्येष वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ।
नीलकण्ठो मयूरे द्वे मूलके तु शिवे च ना ॥३०३४॥
नीलकेशी स्त्रियां नील्यां त्रिस्तु कृष्णशिरोरुहे ।
नीलगुः स्यात्कृमौ पुंसि भम्भराल्यान्तु सा स्त्रियाम् ॥३०३५॥
नीलग्रीवः शिवे पुंसि त्रिस्तु नीलशिरोधरे ।
नीलवासाः शनौ चापि बलदेवे पुमान्मतः ॥३०३६॥

---

१. नीकः स्त्री पुंसयोर्ज्ञातौ खगे च परिकीर्त्तितः ।
२. नीको द्वे ज्ञातिखगयोर्नीकः पुंसि द्रुमान्तरे ।
सेवनार्थकतुल्यायां नीका स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ॥
३. नीरजं कमले कुष्ठे पुंसि कृष्णे प्रकीर्त्तितम् ।

नीलशीर्षः पुमान्गोलाङ्गूले त्रिः कृष्णमस्तके ।
नीलाञ्जसाऽप्सरोभेदे नदीभेदे च विद्युति ॥३०३७॥
नीलाम्बरो राक्षसे च बलदेवे शनैश्चरे ।
नीलिका नीलिनीक्षुद्रारोगशेफालिकास्वियम् ॥३०३८॥
नीलिका लोहभेदे स्त्री स्यात्सिंहमलनामनि ।
[1]नीली स्त्र्योषधिभेदे स्यात्काल्याख्ये च रुजान्तरे ॥३०३९॥
नीवरो वणिजे पुंसि वास्तव्ये च प्रकीर्त्तितः ।
नीवलस्तु द्वयोर्मर्त्त्यजातिभेदे प्रकीर्त्तितः ॥३०४०॥
वैदेहीशूद्रजे किञ्च पुण्ड्रवत्तुरगान्तरे ।
नीवी तु कवचे शस्त्रे वणिङ्मूलधने स्त्रियाम् ॥३०४१॥
स्त्रीकटीवसनग्रन्थावपि नीविवदिष्यते ।
नीव्रं नेमौ वलीकेन्द्वोरेवतीभेऽपि कानने ॥३०४२॥
नीहारस्तु तुषारेऽपि शकृदुत्सर्ग एव च ।
नूतनं त्रिष्वभिनवे स्त्रीभूमनि तु नूतनाः ॥३०४३॥
सूर्यवृष्टिचतुःशत्या वृष्टिदायाः शते क्वचित् ।
नूधा अनूधास्सान्तौ द्वौ सूतमागधयोरनप् ॥३०४४॥
नूनन्तु निश्चिते तर्के स्मरणे वाक्यपूरणे ।
ना द्वे हरे हये मर्त्येऽथ नारी योषिति स्त्रियाम् ॥३०४५॥
नृपयज्ञस्तु संग्रामे राजसूयादिकेष्वपि ।
नृपलक्ष्म नृपच्छत्रे नृपाङ्के च नपुंसकम् ॥३०४६॥
नृपात्मजः स्यात्कूष्माण्डे कटुतुम्ब्यां नृपात्मजा ।
नृपार्हन्त्वगुरौ क्लीबं स्याद्राजार्हे पुनस्त्रिषु ॥३०४७॥
नृभुः प्लवे प्रतिकृतौ तथा दीर्घक्रिमौ स्त्रियाम् ।
नेत् विकल्पे निषेधे चाऽव्ययमेतत्प्रकीर्त्तितम् ॥३०४८॥
नेता भव्यतरौ पुंसि तत्फले क्लीबमिष्यते ।
नीतिक्रियाकर्त्तरि तु सारथौ च प्रभौ त्रिषु ॥३०४९॥
नेत्रोऽस्त्री वस्त्रदण्डनाडीद्रुमूलेषु मथोगुणे ।
नेत्वं द्यावापृथिव्याश्च पुमांस्तु शशलाञ्छने ॥३०५०॥

---

१. नील्योषधौ च शेफालिकायां रोगान्तरेऽपि च ।

नेपः पुरोहिते वृक्षे नयेनाभृतके त्रिषु ।
नेपथ्यं स्यादलङ्कारे रङ्गभूमौ[1] नपुंसकम् ॥३०५१॥
नेपालस्त्विक्षुभिद्रक्षोभिदोर्देशे नृमूर्धनि ।
नेपालकुनटीरास्नानवमालीष्वियं स्त्रियाम् ॥३०५२॥
नेपालन्तिलचूर्णे च पङ्के मांसे च पक्षले ।
नेमः पुरोहिते वज्रेऽर्धेऽन्ने ना खे नपुंसकम् ॥३०५३॥
सदृशे तु समीपे च भवेन्नेमोऽभिधेयवत् ।
नेमिस्तिनिशवृक्षे च भित्तिमूले तथा स्त्रियाम् ॥३०५४॥
चक्रप्रान्ते च कूपे च तथा तन्मुखबन्धने ।
पीताहाख्ये परिच्छेदे वज्रे च परिकीर्त्तिता ॥३०५५॥
नैगमस्तूपनिषदि पुमानुक्तो द्यूतावपि ।
वणिङ्नागरयोस्तु त्रिस्तथा निगमयोगिनि ॥३०५६॥
नैचिकी गोशिरोदेशे श्रेष्ठायाञ्च गवि स्त्रियाम् ।
नैर्ऋतो राक्षसे द्वे स्यात्त्रि स्यान्निर्ऋतियोगिनि ॥३०५७॥
नैषधं हरिवर्णे स्यान्निषधाद्रेर्यदुत्तरम् ।
वाच्यवन्नैषधः प्रोक्तस्तथा निषधयोगिनि ॥३०५८॥
नौ स्त्रियां वाचि काले च तर्यामपि मता स्त्रियाम् ।
न्यंशुको रणरेणौ प्रावरणे वेणुचन्द्रयोः ॥३०५९॥
प्रवासशीले तु मतो न्यंशुकः सोऽभिधेयवत् ।
न्यक्षं कृत्स्ने निकृष्टे च वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ॥३०६०॥
न्यग्रोधो ना शमीवृक्षे व्याममाने वटद्रुमे ।
फले त्वस्य लुक्कोभावान्नैयग्रोधामिति स्मृतम् ॥३०६१॥
न्यग्रोधी तु स्त्रियां स्तम्बे द्रवन्तीसंज्ञके मता ।
न्यङ् निरस्तेऽपि नीचेऽपि वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ॥३०६२॥
न्यङ्कुर्गुरुकुलेवासि शिष्ये मुन्यन्तरे पुमान् ।
मृगभेदे पुनर्न्यङ्कुर्द्वयोरयमुदीरितः ॥३०६३॥
न्यस्तकस्त्वस्त्रियामर्थनिक्षेपे निहिते त्रिषु ।
न्युक्षस्त्रि नीचे क्ली कार्त्स्न्ये तृणेऽथ महिषे द्वयोः ॥३०६४॥

---

१. रज्ज्वायां वा ।

न्युङ्खः सम्यङ्मनोज्ञे च साम्नः षट्प्रवणेषु च ।
न्युब्जो व्याधौ कर्मरङ्गद्रुमे दर्भमये स्रुचि ॥३०६५॥
कर्मरङ्गफले क्लीबं कुब्जाऽधोमुखयोस्त्रिषु ।
न्यूङ्खः साम्नः षडोङ्कारेष्वथ त्रिः सुन्दरे प्रिये ॥३०६६॥
न्यूनमूने विगर्ह्ये च वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ॥३०६६१/२॥

प

पो ना वाताण्डपूतेषु पाने पातरि कीर्त्तितः ॥३०६७॥
स्त्रियां तु रक्षणे पाने द्यूते पूरितके च सः ।
पक्तिस्त्रियां गौरवे च पाने च परिकीर्त्तिता ॥३०६८॥
पक्त्रन्तु गार्हपत्येऽपि पिठरे स्यान्नपुंसकम् ।
पक्वं त्रि कथितो नाशोन्मुखे परिणते खले ॥३०६९॥
क्लीबन्तु पचने प्रोक्तं भृतक्षीरजदध्नि च ।
पक्षः पार्श्वगरुत्साध्यसहायबलभित्तिषु ॥३०७०॥
पार्श्वद्वारे विरोधेऽर्द्धमासे चुल्लीबिलेऽन्तिके ।
हस्तिपार्श्वे परिज्ञाने केशशब्दात्परश्चये ॥३०७१॥
चन्द्रे पक्षचरो ना त्रिर्यूथभ्रष्टैकचारिणोः ।
पक्षतिः पक्षमूलेऽपि स्त्रियां च प्रतिपत्तिथौ ॥३०७२॥
पक्षी द्वयोः खगे स्त्री तु पूर्णिमाशाकिनीभिदोः ।
आगामिवर्त्तमानाहर्युक्तरात्रौ च पक्षिणी ॥३०७३॥
पक्ष्मपुष्पच्छदे पक्षिपक्षे नयनलोमसु ।
किञ्जल्के तत्तु तूलादेः सूक्ष्मांऽशे च नपुंसकम् ॥३०७४॥
पङ्कोऽस्त्री कर्दमे पापे तथैव परिकीर्त्तितः ।
पुमान्पङ्करसः शीधौ पङ्कस्यापि रसे स्मृतः ॥३०७५॥
पङ्कारः शैवले सेतौ सोपाने जलकुब्जके ।
पङ्क्तिश्छन्दोविशेषेषु चत्वारिंशत्स्वरादिषु ॥३०७६॥
आवलौ दशसंख्यायां त्वेकत्वे तन्मितेषु तु ।
स्याद्वस्तुषु द्वित्वत्रित्वादौ सर्वत्र स्त्रियामियम् ॥३०७७॥

पचत्रं रन्धनस्थाल्यां पचत्रोऽपूपकारके ।
पचम्पचा तु स्त्री दार्व्यां चम्पके ना पचम्पचः ॥३०७८॥
पचिर्ना पचतौ धातावग्नौ च क्षुधि तु स्त्रियाम् ।
पचेलिमस्तु ना वह्नौ माषे च द्वे तु घोटके ॥३०७९॥
पच्छः शिलायां ना त्रिस्तु पादपीठेन गन्तरि ।
पाणिसंज्ञे[1] तु पच्छी स्त्री भवेद्दारुटकान्तरे ॥३०८०॥
पञ्चगुप्तो द्वयोः कूर्मे ना तु चार्वाकदर्शने ।
पञ्चत्वम्पञ्चभावे च मरणे पञ्चता तथा ॥३०८१॥
स्त्री पञ्चदश्यमावास्यापौर्णमास्योऽस्त्रि पूरणे ।
पञ्चमो रागभेदेपि षडजादीनां स्वरे क्वचित् ॥३०८२॥
स्त्री तु पाण्डवपत्न्यां स्यात् पञ्चमी श्रीतिथावपि ।
स्यात्पच्चमविभक्तौ च पञ्चानान्तु त्रि पूरणे ॥३०८३॥
त्रिषु पञ्चसुगन्धः स्यादन्याऽर्थे क्लीसमाहृतौ ।
पूगकर्पूरतक्कोलजातीफललवङ्गके ॥३०८४॥
पञ्चाङ्गी तु खलीने च स्त्री पञ्चाङ्गसमाहृतौ ।
अङ्गैस्तु पञ्चभिर्युक्ते स्यात्पञ्चाङ्गोऽभिधेयवत् ॥३०८५॥
पञ्चाङ्गुलस्त्वेरण्डे ना पञ्चाङ्गुलिमिते त्रिषु ।
पञ्चाननः शिवे पुंसि सिंहे त्वेष द्वयोर्मतः ॥३०८६॥
पञ्चालस्त्वृषिभेदे ना देशभेदे नृभूमनि ।
तद्राजे सर्ववचनः पाञ्चालास्यस्त्र्यपत्यके ॥३०८७॥
पञ्चाली तु स्त्रियां गीतौ पुत्रिकायाञ्च कीर्त्तिता ।
पच्चालिका तु स्त्रीवस्त्रपुत्रिकागीतिभेदयोः ॥३०८८॥
पञ्चिका द्यूतभेदे स्याद्व्याख्या ग्रन्थान्तरेऽपि च ।
त्रि तु विस्तारके पञ्चकश्च पञ्चाङ्गसंहतौ ॥३०८९॥
पटस्तु वस्त्रे केचितु सुवस्त्रे पुंनपुंसकम् ।
पटी तु स्त्री विशिष्टे स्यात्पटे प्रावरणात्मके ॥३०९०॥
पटः प्रियालवृक्षे ना फले त्वस्य नपुंसकम् ।
पटच्चरं जीर्णवस्त्रे पुम्भूम्नि तु पटच्चराः ॥३०९१॥

1.

मध्यदेशगते नीवृद्विशेषे परिकीर्त्तिताः ।
पटलोऽस्त्र्यक्षिरुग्भेदेऽध्याये गेहच्छदिष्वपि ॥३०९२॥
क्ली स्त्रियोस्तु समूहेऽथ पटली पिटकान्तरे ॥
पटहस्तु समारम्भे निर्घोषे युद्धवाद्यजे ॥३०९३॥
आनकेऽपि समाख्यातः पुन्नपुंसकलिङ्गकः ।
पटिः स्त्री पटभेदे स्याद्वागुलौ कुम्भिकाद्रुमे ॥३०९४॥
पटीरः पुंसि कन्दर्पे कन्दरे चन्दनेऽपि च ।
पटीरो मूलकेदारवेणुसारेषु वारिदे ॥३०९५॥
तितउन्यपि रङ्गे च वातिके पुंसि कीर्त्तितः ।
पटुस्त्रिशूरनिर्व्याधिदक्षाऽमन्दाऽच्छबुद्धिषु ॥३०९६॥
विस्पष्टे निस्त्वरे तीक्ष्णे लवणाख्यरसान्विते ।
एष्वर्थेषु स्त्रियां पट्वी पटुरित्युभयम्भवेत् ॥३०९७॥
पटुः पुंसि पटोल्यां च लवणाख्यरसान्तरे ।
ऊषसैन्धवनाम्नोस्तु क्ली स्याल्लवणयोः पटु ॥३०९८॥
पटुलन्तु बले क्लीबं त्रि तु स्याद्वाग्मिकल्ययोः ।
पटोलस्तु पुमान्वल्लिजातौ तिक्तकनामनि ॥३०९९॥
पटोली तु स्त्रियां कोशातक्यां क्ली वसनान्तरे ।
पट्टः प्रशस्तकौशेयक्षौमादौ व्रणबन्धने ॥३१००॥
शाणस्य नेत्रे स्वर्णादिकृतदीर्घाच्छपत्रके ।
गुवाकनालिकेरादिपत्रमूलस्थवेष्टने ॥३१०१॥
पट्टनं शकटैर्गम्ये घोटकैर्नौभिरेव च ।
पुटभेदनसंज्ञे च क्षुद्रग्रामे पुरेऽपि च ॥३१०२॥
पट्टबन्धः क्षत्रियायाञ्जारेण क्षत्रियेण यः ।
जनितः स्याद्द्वयोस्तत्र नाम्ना क्षत्रियकुण्डके ॥३१०३॥
अभिधेयवदेष स्यात्पट्टबन्धनकर्त्तरि ।
पठिस्तु विदुषि त्रि स्यान्ना तु वेदस्य पाठके ॥३१०४॥
स्त्रियाम्फलकिकायां स्यादल्पायां युद्धकारिणाम् ।
पणो विक्रय्यशाकादिबद्धमुष्टौ ग्लहे धने ॥३१०५॥

द्यूते शीतौ वराटानां कार्षिकव्यवहारयोः ।
मूल्ये भृतौ व्यवस्थायां विक्रये च प्रकीर्त्तितः ॥३१०६॥
पणवो डिण्डिमे चापि गजस्कन्धे प्रकीर्त्तितः ।
पणिर्ना पणतौ धातौ वणिजि त्रिषु कीर्त्तितः ॥३१०७॥
पणिकस्तु वणिग्गेहे याज्ञिकानान्तु विश्रुते ।
पुरोडाशस्य प्रथने पणिकं स्यान्नपुंसकम् ॥३१०८॥
पण्डा स्त्री तत्त्वबुद्धौ द्वे गतौ ना तु नपुंसके ।
पण्डा वेदोज्ज्वला बुद्धिस्तद्योगात्पण्डितो मतः ॥३१०९॥
पण्डितः सूकराकारे मृगे स्त्रीपुंसयोर्मतः ।
नासिह्लकाख्यनिर्यासे विदुषि त्वभिधेयवत् ॥३११०॥
पतङ्गो द्वे बिडालेऽश्वे शलभे पक्षिमात्रके ।
ना त्वर्के शालिभेदेऽथ पुत्रिकायां पतङ्ग्यपि ॥३१११॥
पतन्द्वयोः पक्षिणि स्यात्त्रिः स्यात्पतनकर्त्तरि ।
क्लीबम्पतत्रमाकाशे पक्षे पक्ष्यादिकस्य च ॥३११२॥
पतनन्तरुपत्रेऽपि पाते हानौ च कर्मणः ।
पताका वैजयन्त्याश्च सौभाग्ये नाटकाङ्कके ॥३११३॥
पताकिनी चम्वां त्रिस्तु पताकी वैजयन्तिके ।
पतिर्धवे गतौ मूले धातौ च पततौ पुमान् ॥३११४॥
स्त्रियान्तु पत्नी भार्यायां पतिः स्वामिनि वाच्यवत् ।
(ग्रामस्य तु प्रभौ ग्रामपत्नी ग्रामपतिः स्त्रियाम् ॥३११५॥
वृद्धो यस्याः पतिर्वृद्धपत्नी वृद्धपतिश्च सा ।
एवं प्रयोगा अन्येपि तर्कणीया यथायथम्) ॥३११६॥
पतिघ्नो वाच्यवत्पत्युर्घातके परिकीर्त्तितः ।
वैधव्यलक्षणोपेते पतिघ्नी कन्यकान्तरे ॥३११७॥
पतितस्त्रिषु कर्मभ्यो हीने प्रस्कन्न एव च ।
पतेरस्तु पुमाञ्ज्ञेयः पवने द्वे तु पक्षिणि ॥३११८॥
पत्तनत्तौ मात्रगम्ये पुटभेदननामनि ।
क्षुद्रग्रामे पुरे चापि क्रयविक्रयभुव्यपि ॥३११९॥

पत्तिस्तु पतनेऽपि स्त्री पदनेऽपि प्रकीर्त्तिता ।
एकैकेभरथत्र्यश्वपञ्चपद्गबलेऽपि च ॥३१२०॥
लेपेन कृतलेखायां बाह्वादौ पदिके तु ना ।
पत्रोऽस्त्री छुरिकायातपर्णेष्विषुखगच्छदे ॥३१२१॥
पत्रको यावशूकाख्ये यवक्षारान्तरे पुमान् ।
व्यवहारगतानान्तु लेख्ये स्यात्पत्तिसंज्ञके ॥३१२२॥
अनुलेपनविन्यासभेदेऽपि नपि पत्रकम् ।
पत्रलो जातपत्रे त्रिस्तालीवृक्षे तु पत्रला ॥३१२३॥
पत्रलन्त्वघने क्लीवन्दधिभेदे प्रकीर्त्तितम् ।
पत्राङ्गं न द्वयोर्भूर्जे पद्मके रक्तचन्दने ॥३१२४॥
पत्री शराद्रचोः काण्डद्रौ रथिके ना द्वयोः खगे ।
श्येनेऽथ पत्रिणी पत्न्याः कनिष्ठस्वसरि स्त्रियाम् ॥३१२५॥
पत्रन्तु यत्र यस्याऽपि तत्र स्याद्धेयलिङ्गकम् ।
पत्रोर्णन्धौतकौशेये ना तु डुण्डुक[1]-पादपे ॥३१२६॥
पत्सलस्तु प्रहारेऽपि प्रहासे च प्रकीर्त्तितः ।
पथिकृद्वर्त्महोमाग्नौ त्रिस्तु मार्गस्य कर्त्तरि ॥३१२७॥
पथ्यम्पथोऽनपेते त्रिर्हिते नित्येषु च क्रतोः ।
स्याद्विष्टुत्यादिकाङ्गेषु ऋक्सामे दाशरात्रिके ॥३१२८॥
पथ्या तु स्त्री हरीतक्यां तथार्याच्छन्दसोऽन्तरे ।
गणेषु त्रिषु यस्यादावर्धयोर्दृश्यते यतिः ॥३१२९॥
बृहतीच्छन्दसो भेदे यस्य स्याद्द्वादशाक्षरम् ।
उपोत्तमम्पदम्पादास्त्रयोऽन्येऽष्टाक्षराः स्मृताः ॥३१३०॥
क्लीबन्तु पथ्यं गायत्र्यादिकच्छन्दःसु सप्तसु ।
पदमङ्घ्रौ शरे त्राणे व्यवसायाऽपदेशयोः ॥३१३१॥
चिह्नेऽङ्घ्रिचिह्नेऽङ्घ्रिन्यासे पद्यभागेऽशुवस्तुनोः ।
स्थाने वाक्ये सुप्तिङन्ते माने पञ्चदशाङ्गुलौ ॥३१३२॥
इन्द्रपुच्छेऽतिवर्गस्याऽप्यादितस्त्रिषु सामसु ।
पदको ना मध्यमणौ पदाऽध्येतर्यपि स्मृतः ॥३१३३॥

---

1. डुण्डुक वा ।

उपाधिभूषणादौ तु पदत्रे च नपुंसकम् ।
पदाजिर्युधि मार्गे ना पदगे तु त्रिषु स्मृतः ॥३१३४॥
पदातिः पदिके पुंसि भवेत्स्थानवति त्रिषु ।
पदारस्तु पुमान्वास्तुदेवभेदेऽङ्घ्रिधूलिषु ॥३१३५॥
पदारन्तु पदालिन्दे नपुंसकमुदीरितम् ।
पद्धतिस्तु स्त्रियां पङ्क्तौ मार्गे च परिकीर्त्तिता ॥३१३६॥
[1]पद्मोऽस्त्री पङ्कजे क्लीबं संख्याभेदे तथेन्द्रिये ।
गजबिन्दुष्वष्टकायान्नागराजान्तरे तु ना ॥३१३७॥
निधिभेदे व्यूहभेदे वर्णपीतसितासिते ।
त्रि तु तद्वति पद्मा तु लक्ष्मीभार्ग्योः स्त्रियामियम् ॥३१३८॥
स्यात्पद्मनालिकायां पद्मचारिण्याख्यभेषजे ।
पद्मकं स्यात्पद्मकाष्ठे कुसुम्भे बिन्दुजालके ॥३१३९॥
स्यात्पद्मलाञ्छनो लोकेश्वरे ब्रह्मणि भास्करे ।
धनदेऽथ श्रियान्तारावाग्देव्योः पद्मलाञ्छना ॥३१४०॥
पद्मासनन्त्वासनस्य भेदे क्ली पुंसि धातरि ।
पद्मी द्वयोर्हस्तिनि स्यात्त्रि तु पद्मवति स्मृतः ॥३१४१॥
पद्मिनी सरसीलक्ष्म्योर्नलिन्यां योषिदन्तरे ।
पद्यं क्लीबं मतं श्लोके त्रिषु स्यात्पदसाधुनि ॥३१४२॥
द्वयोस्तु पद्यो वृषले पद्या तु स्यात्स्त्रियां पथि ।
पद्रो ग्रामनिवेशे ना त्रिषु शून्ये प्रकीर्त्तितः ॥३१४३॥
पद्वा वत्से द्वयोः पुंसि तूक्तो गत्यवसानयोः ।
पनसः कण्टकिफले कण्टकेऽपि पुमान्मतः ॥३१४४॥
पनसं स्वफले क्लीबं पनसी तु रुजान्तरे ।
पन्नः स्कन्ने त्रिषु क्ली तु जिह्वायां पन्नमिष्यते ॥३१४५॥
पन्नगस्त्वोषधेर्भेदे पुमान्सर्पे तु सद्वयोः ।
पपीर्ना किरणे सूर्ये द्वे तु हस्तिनि कीर्त्तितः ॥३१४६॥

---

१. पद्मोऽस्त्री पद्मके व्यूहनिधिसंख्यान्तरेऽम्बुजे ।
ना नागे स्त्री फञ्जिका श्री चारटी पन्नगी (गे) षु च । मे०

पयस्सामान्तरे दुग्धे रजन्यामन्नतोययोः ।
पयस्या क्षीरकाकोल्यामिक्षयोर्दुधिकौषधे ॥३१४७॥
स्वर्णक्षीर्याम्पयःसाधुभवादौ तु त्रिषु स्मृता ।
पयस्वती निशानद्योः पयस्विनि पुनस्त्रिषु ॥३१४८॥
पयस्विनी नदीधेनुनिष्सु स्त्री क्षीरिणि त्रिषु ।
पयोगर्भः पुमान्मेघे जलगर्भे यथायथम् ॥३१४९॥
पयोधरः कोषकारे नारिकेले स्तने स्त्रियाः ।
कशेरुमेघयोः पुंसि वाच्यवत्तु पयोभृति ॥३१५०॥
परम्प्रकृष्टे द्विषति पूर्वावाक्प्रतियोगिनोः ।
अन्यस्मिन्केवले दूरे त्रिषु ना परमात्मनि ॥३१५१॥
क्लीबम्परार्धसंज्ञायाः संख्याया द्विगुणात्मनि ।
संख्यायामथवा त्रिष्वेतत्संख्येयेषु वस्तुषु ॥३१५२॥
परः श्रेष्ठादिदूरान्योत्तरे क्लीबन्तु केवले ।
द्वयोस्तूद्रे परक्कुलो योगार्थे तु यथायथम् ॥३१५३॥
परजातो द्वयोर्दासे स्यात्त्रिषु त्वन्यजन्मनि ।
परञ्जस्तैलयन्त्रे स्याच्छुरिकाफलफेनयोः ॥३१५४॥
परपुष्टा तु वेश्यायाम्परपुष्टो द्वयोः पिके ।
परभृद्वायसे त्रिस्तु परभर्त्तरि कीर्त्तितः ॥३१५५॥
परमस्मादनुज्ञायामव्ययम्परमेश्वरे ।
पुँल्लिङ्ग उक्तः परमरसस्तक्रे रसोत्तमे ॥३१५६॥
परमेष्ठी विधौ विष्णौ शिवेऽथ परमेष्ठिनी ।
पार्वत्याम्परमेष्ठी तु निर्वृते चोत्तमे त्रिषु ॥३१५७॥
परम्परा स्त्री सन्ताने परिपाट्याञ्च हिंसने ।
द्वयोस्तु गृहिणः पुत्रपौत्रादेः पञ्चमेऽपि च ॥३१५८॥
षष्ठे च मृगभेदे च गोकर्ण इति विश्रुते ।
परशुः पुंसि वज्रे च टङ्कणे च परश्वधे ॥३१५९॥
पुमान्परशुभिद्विघ्नराजे त्रिस्तु कुठारिणि ।
पराऽव्ययं विमोक्षाभिमुख्यप्राधान्यधर्षणे ॥३१६०॥

प्रातिलोम्ये भृशाऽर्थे च विक्रमे च गतौ वधे ।
पराको द्वादशाहोपवासात्मव्रतखङ्गयोः ॥३१६१॥
दूरेऽहीनक्रतूनाञ्च त्रिरात्राणां क्वचिन्मतः ।
पराक्रमो विक्रमे स्यात्सामर्थ्योद्योगयोरपि ॥३१६२॥
परागः पुष्परेणौ च स्नानीयादौ रजस्यपि ।
उपरागेऽद्रिभेदे च विख्यातौ चन्दनेऽपि च ॥३१६३॥
पराभवस्तिरस्कारे विनाशे च पुमान्मतः ।
परायणञ्चतुर्मासोपवासेऽपि नपुंसकम् ॥३१६४॥
आसङ्गेऽपि च साकल्ये तथैव परिकीर्त्तितम् ।
पराशरस्तु शक्रेऽपि व्यासस्य जनकेऽपि च ॥३१६५॥
परासनन्निरसने वधे चापि नपुंसकम् ।
परि स्यात्सर्वतोभावे वर्जने व्याधिशेषयोः ॥३१६६॥
इत्थम्भूताख्यानभागवीप्साऽऽलिङ्गनलक्षणे ।
दोषाख्याने निरसने पूजाव्याप्त्योश्च भूषणे ॥३१६७॥
परिकम्पो भये कम्पे पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
पुमान्परिकरः सङ्घे पर्यङ्कपरिवारयोः ॥३१६८॥
प्रगाढगात्रिकाबन्धे सभारम्भविवेकयोः ।
परिखाऽम्बुनिधौ खेये तथा भूभृत्यपि स्त्रियाम् ॥३१६९॥
त्रि स्यात्परिगतं व्याप्ते विज्ञाने परिवेष्टिते ।
परिग्रहस्तु शपथे मूले परिजने तथा ॥३१७०॥
आदानपत्न्योरर्केन्द्वोः स्याग्द्ग्रहग्रस्तयोरपि ।
परिघस्त्वर्गले दण्डे परिघाताऽस्त्रयोरपि ॥३१७१॥
कालयोगविशेषे च मूढगर्भे च मुद्गरे ।
परिघोषो निनादे स्यादवाच्ये जलदध्वनौ ॥३१७२॥
परिचारक उक्तो द्वे दासे शुश्रूषकेऽप्यथ ।
सग्भूषणादिष्वर्थेषु नियुक्तायान्नृपस्त्रियाम् ॥३१७३॥
स्त्रीलिङ्गमात्रे कथिता कविभिः परिचारिका ।
परिच्छदो जातिभेदे शबरी विप्रजे द्वयोः ॥३१७४॥

पुँल्लिङ्गस्तूपकरणे परिच्छद उदीरितः ।
[1]परिज्वाऽग्नौ च वायौ च चन्द्रे चाऽपि पुमान्मतः ॥३१७५॥
परिणाहो विशालत्वे परितो बन्धनेऽपि च ।
परितापस्तु पुंसि स्याद्दुःखे च नरकान्तरे ॥३१७६॥
परिधानमधोवस्त्रे तदाच्छादनकर्मणि ।
परिधाय्यो जनस्थाने परिच्छेदनितम्बयोः ॥३१७७॥
परिधिर्यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यके ।
प्राकारे परिधाने च षट्सु शुक्रियसामसु ॥३१७८॥
परिप्लवा दण्डहीनस्रुचि स्त्री त्रिषु चञ्चले ।
परिबर्हो राजयोग्यद्रव्ये चापि परिच्छदे ॥३१७९॥
परिभाषणमालापेऽप्युपालम्भे नपुंसकम् ।
अतिमर्दे परिमलो गन्धे चातिमनोहरे ॥३१८०॥
रतोपमर्दविकसत्कायरागादिसौरभे ।
परिवत्सर उक्तः संवत्सरेऽपि च तद्भिदि ॥३१८१॥
परित्यागे वधे च स्त्रीनपोः स्यात्परिवर्जना ।
परिवर्त्तो विनिमये कूर्मराजे प्रवर्त्तने ॥३१८२॥
परिवादस्तु निर्वादे वीणावादनसाधने ।
परिवादी तु परिवादवति त्र्यपवादिनि ॥३१८३॥
वीणायान्तु स्त्रियामेषा कीर्त्तिता परिवादिनी ।
परिवापः परीवापो लाजेषु च परिच्छदे ॥३१८४॥
पर्युप्तौ स्थाप्यबीजालवालारोहेषु कीर्त्तितः ।
[2]परिवारः परिजने प्रावारे खड्गकोशके ॥३१८५॥
परिवित्तिस्तु परिवेदने स्त्रीत्वेऽथ नाऽग्रजे ।
यस्याकृतविवाहस्य कनीयान्दारसंग्रही ॥३१८६॥
परिवेशो वेष्टने स्यात्परिधावपि पुंस्ययम् ।
परिवेषस्तु पुँल्लिङ्गः परिधौ परिवेषणे ॥३१८७॥

---

१. परिज्वा तु पुमानिन्दौ याज्ञिके परिचारिके ।
२. परिवारो जङ्गमे स्यात्खड्गकोशे परिच्छदे ।

परिवेषणमुक्तं क्ली भोजनायाश्च वेष्टने ।
परिशुष्कन्तु भूयोऽद्भिः सिक्त्वा घृतविपाचिते ॥३१८८॥
मांसे मृदुनि मरिचाद्युपेतेऽथ त्रि शुष्कके ।
भवेत्परिसरो मृत्यौ विधावपि च पुंस्ययम् ॥३१८९॥
परिस्पन्दः परिजने स्पन्देऽपि च पुमान्मतः ।
परिस्रुता स्त्री वारुण्यां स्यन्ने त्रिषु परिस्रुतः ॥३१९०॥
परीरन्तु हले ज्ञेयं तथा हलमुखेऽपि च ।
परीरणो द्वे कमठे ना दण्डे पट्टशाटके ॥३१९१॥
परीवारो जङ्गमे स्यात्खड्गकोशे परिच्छदे ।
परीवारो जलोच्छ्वासे महीभृद्योग्यवस्तुनि ॥३१९२॥
परीष्टिस्तु परीप्सायामभितो यजनेऽपि च ।
मार्गणे परिचर्यायाम्प्राकारेऽपि स्त्रियाम्मता ॥३१९३॥
परुलस्तु द्वयोरश्वे पार्वत्याम्परुला स्त्रियाम् ।
परुरिक्ष्वादिकग्रन्थौ धर्मेऽपि च नपुंसकम् ॥३१९४॥
परुषं निष्ठुरोक्ते त्र्यस्निग्धे मिश्रे च कर्बुरे ।
परूषः पुंसि खर्जूरे क्ली तु तत्प्रसवे मतम् ॥३१९५॥
परेतस्तु मृते त्रि स्याद्भूतजात्यन्तरे द्वयोः ।
परेधितस्तु द्वे दासे त्रि तु स्यात्परवर्द्धिते ॥३१९६॥
पर्कटी तु स्त्रियाम्प्लक्षे पूगादेश्च नवे फले ।
क्ली पर्कटम्पूगफले द्वे तु कङ्काख्यपक्षिणि ॥३१९७॥
पर्जन्यस्तु पुमानिन्द्रे चास्त्रयन्त्रान्तरे मतः ।
गर्जदभ्रनिनदे वास्तुदेवान्तरेऽपि च ॥३१९८॥
पर्णः पलाशवृक्षे ना क्ली तत्सत्ये तरुच्छदे ।
पर्णसि स्याज्जले क्लीबं शाकादौ तु नृभूमनि ॥३१९९॥
उलूखले तु पुँल्लिङ्गः पर्णसिः परिकीर्त्तितः ।
[1]पर्पः शङ्खेऽम्बुधौ वस्त्रे पुँल्लिङ्गः-परिकीर्त्तितः ॥३२००॥
पर्पटो भेषजस्तम्बान्तरेऽपूपान्तरे पुमान् ।
पर्पटी त्वाढकीसंज्ञमृत्स्नादारुहरिद्रयोः ॥३२०१॥

---

१. पर्वः पलः वा ।

पर्परीकस्तु ना वह्नौ भक्षे च द्वे तु कुक्कुरे ।
कुररे पर्परीकस्तु पुंस्यपामाकरे त्रि तु ॥३२०२॥
पर्परीणश्च पर्णस्य सिरायान्द्यूतकम्बले ।
पर्णचूर्णरसेऽपि स्यात्पर्परीणान्तु पर्वणि ॥३२०३॥
पर्यङ्कः पुंसि खट्वायाम्पर्यस्त्यामासनेषु च ।
पद्मार्धपद्मपादोपवेशगूढपदात्मसु ॥३२०४॥
पुंसि पर्यनुयोगोऽनुयोगोपालम्भयोर्मतः ।
स्यात्पर्यवसितं लब्धे विरतिप्राप्तवत्यपि ॥३२०५॥
पर्यस्तस्तु हते चापि पातिते चाभिधेयवत् ।
पर्याप्तं वारणे तृप्तौ यथेष्टे त्रि तु शक्तके ॥३२०६॥
पर्याप्तिस्तु स्त्रियामुक्ता प्रकामप्राप्तिरक्षणे ।
पर्यायोऽवसरे पुंसि प्रकारक्रमयोरपि ॥३२०७॥
सामस्तोत्रगतस्तोमतृतीयांशेऽपि च स्मृतः ।
पर्वमिक्ष्वादिकाण्डस्थग्रन्थौ क्लीबं शिवे पुमान् ॥३२०८॥
पर्वतः पादपे पुंसि शाकमत्स्यप्रभेदयोः ।
देवमुन्यन्तरे शैले मेघे च परिकीर्त्तितः ॥३२०९॥
पर्वाऽस्त्री विषुवादौ च पञ्चदश्यान्तथोत्सवे ।
प्रतिपत्पञ्चदश्योश्च सन्धौ ग्रन्थिद्वयान्तरे ॥३२१०॥
इक्षुवेण्वादिकग्रन्थौ प्रस्तावे लक्षणान्तरे ।
पर्विः काके द्वयोरेष हिंस्रे स्यादभिधेयवत् ॥३२११॥
पलोऽस्त्रियां भवेन्मांसे मानेऽप्यक्षचतुष्टये ।
पलगण्डो द्वयोर्मर्त्त्ये किरातकरणीभवे ॥३२१२॥
तथा स्याल्लेपके चैव भित्त्यादेः सुधया द्वयोः ।
पलङ्कषा गोक्षुरके रास्नागुग्गुलुकिंशुके ॥३२१३॥
मुण्डीरीलाक्षयोश्च स्त्री राक्षसे ना पलङ्कषः ।
पललन्तिलचूर्णे क्ली मांसकर्दमभेदयोः ॥३२१४॥
व्रीहिस्तम्बे तु लूनान्तफले स्यात्पललोऽस्त्र्यथ ।
महापलाले क्षोदे च पलालस्य पलल्यसौ ॥३२१५॥

पलाण्डुर्दशजातीनां सुकन्दस्य क्वचिन्मतः ।
सुकन्दकन्दमात्रे च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥३२१६॥
पलाशः किंशुके शठ्यौषधे वर्णे हरित्यपि ।
त्रि तु तद्वर्णसंयुक्ते क्लीबं पत्रे तरोर्मतम् ॥३२१७॥
किंशुकप्रसवे चाथ पलाशो राक्षसे द्वयोः ।
पलाशिका तु सत्यां स्त्री लाक्षायां च प्रकीर्त्तिता ॥३२१८॥
पलाशी राक्षसे द्वे ना वृक्षे मांसादिनि त्रिषु ।
पलिघः काचकलशघटप्राकारगोपुरे ॥३२१९॥
पलितोऽस्त्री राजशौक्ल्ये तद्वद्वलवतोस्त्रिषु ।
क्ली तु शैलेयमरिचतापाङ्के कर्दमे तु ना ॥३२२०॥
पल्यङ्को मञ्चपर्यङ्कवृषीपर्यस्तिकासु च ।
क्लीबं पल्ययनं पर्याणेऽश्वादेर्द्वे तु पञ्चमे ॥३२२१॥
परम्पराख्ये पुत्रस्यापत्ये पल्ययनो मतः ।
पल्लवोऽस्त्री किसलयेऽलक्तरागप्रकोष्ठयोः ॥३२२२॥
वलविस्तारविटपे पत्रमात्रेऽथ ना विटे ।
त्रिषु पल्लवितं लाक्षारक्ते सत्पल्लवे तते ॥३२२३॥
पल्लिः कुटीराल्पग्रामाऽऽश्रमव्याधालयेष्वपि ।
क्ली मुसल्याश्च पल्लीवत्पल्लिः स्थूलकुसूलके ॥३२२४॥
पवनो वायुनिष्पावांशुषुष्वर्थे तु नप्तथा ।
पाकस्थाने कुलालस्य त्रिस्तु स्यात्पवसाधने ॥३२२५॥
पवमानो मरुत्यग्नौ गार्हपत्ये विशेषतः ।
यज्ञस्तोत्रविशेषेषु त्रिषु चैव पुमान्मतः ॥३२२६॥
पवनाख्यक्रियायास्तु मतः कर्त्तरि भेद्यवत् ।
पविर्वज्रे शस्त्रमुखे वायावपि पुमान्मतः ॥३२२७॥
पवित्रः पवने सोमे यवरश्म्यग्निभानुषु ।
विष्णौ शक्रे क्ली तु वृष्टौ कुशे मन्त्रेऽप्सु गोमये ॥३२२८॥
दध्नि ताम्रे ब्रह्मसूत्रे हेम्न्यर्थे कलशेऽम्बुजे ।
क्षीरे दर्भाङ्गलीये त्वस्त्री मेध्ये त्वभिधेयवत् ॥३२२९॥

पवीरन्तु हले चापि रङ्गस्थाने नपुंसकम् ।
पशुस्त्वप्रमुक्तात्मनि नाच्छगले च गवादिके ॥३२३०॥
ग्राम्ये मृगादौ वन्ये च दृश्यर्थे त्वव्ययम्पशु ।
पश्चात्प्रतीच्याञ्चरमेऽप्यधिकारेऽपि दृश्यते ॥३२३१॥
पश्याऽव्ययम्प्रशंसायां विस्मयेऽपि निगद्यते ।
पश्यत्तु स्यात्प्रशंसायां विस्मयेऽपि तथा भवेत् ॥३२३२॥
पांशुर्धूलौ च शस्यार्थचिरसंचितगोमये ।
पांशुचामर उक्तो ना दूर्वाञ्चितटीभुवि ॥३२३३॥
वर्द्धापके प्रशंसायां पुरोटौ धूलिगुच्छके ।
पांसुजम्पांसुजाते त्रि लवणे तूषजे नपि ॥३२३४॥
पांसुला कुलटोदक्याभूषु स्त्री त्रिषु पांसुके ।
पांसुलः पुंश्चले शम्भोः खट्वाङ्गेऽपि पुमान्मतः ॥३२३५॥
पाकः परिणतौ पक्तौ सूर्ये दैत्यान्तरे गिरा ।
पाकः शिशौ जरानिष्ठापचनक्लेदनेषु च ॥३२३६॥
स्थाल्यादौ चाथ पाकं क्ली करमर्दफले मतम् ।
पाकलं कुष्ठभैषज्ये पाकलः कुञ्जरज्वरे ॥३२३७॥
पाक्यं विडाख्यलवणे स्याद्भूमिलवणे तथा ।
यवक्षारेऽपि च क्लीबम्पक्तव्ये त्वभिधेयवत् ॥३२३८॥
पाचनन्दशमूलादौ प्रायश्चित्ते नले तु ना ।
वाच्यवत्पाचयितरि हरीतक्यान्तु पाचनी ॥३२३९॥
पाचलम्पाचने नाऽग्नौ राधनद्रव्यवातयोः ।
पाञ्चजन्यो विष्णुशङ्खे शङ्खमात्रे हुताशने ॥३२४०॥
पाजो बले तथाऽन्ने च सकारान्तं नपुंसकम् ।
पाटकं याज्ञिकानां स्यात्सोमोन्माने नपुंसकम् ॥३२४१॥
[1]ग्रामार्धे त्वस्त्रियां त्रिस्तु पटेः पाटयतेस्तृतः ।
पाटकः स्यान्महाकिष्कौ कटकान्तरवाद्ययोः ॥३२४२॥

---

१. पाटको रोधसि ग्रामैकदेशेक्षादिपातके ।

अक्षादिचालने मूलद्रव्यापचयरोधसोः ।
पाटलस्तु पुमानाशुसंज्ञव्रीह्यन्तरे तथा ॥३२४३॥
श्वेतलोहितसंमिश्रवर्णभेदेऽथ तद्वति ।
त्रि स्त्री तु तद्वर्णाख्यायां पाटला पाटलिद्रुमे ॥३२४४॥
पुष्पे तु तस्य नप्स्त्री स्यात्पाटलं पाटलेति च ।
पाटलिः पाटलासंज्ञपुष्पवृक्षे द्वयोर्भवेत् ॥३२४५॥
विवाहार्थे पुनः शङ्खपात्रे स्यात्पाटली स्त्रियाम् ।
पाटीरो मूलके वङ्गे तितऔ वार्त्तिकेऽम्बुदे ॥३२४६॥
केदारे वेणुसारे च पुँल्लिङ्गः स्यात्पटीरवत् ।
पाठा स्त्री विडकर्ण्यां[1] स्यात्ख्याते तु पठने च ना ॥३२४७॥
पाठीनः पाठके गुग्गुलौ मत्स्यभिदि तु द्वयोः ।
पाणिः पलचतुर्भागे हस्तेऽपि च पुमान्मतः ॥३२४८॥
रक्तोत्पले पाणिकं ना पणेऽशीतिकपर्दके ।
पाणिग्रहो विवाहे स्यात्पाणेश्च ग्रहणे पुमान् ॥३२४९॥
पाण्डुः कुन्तीपतौ पाण्ड्यदेशराजाऽन्तरेऽपि ना ।
शालिजात्यन्तरे रोगभेदे खर्जूरपादपे ॥३२५०॥
वर्णान्तरे तद्वति तु त्रि खर्जूरफले तु नप् ।
स्यात्पाण्डुकम्बलः श्वेतप्रावारग्रावभेदयोः ॥३२५१॥
पाण्डुरं क्ली मरुवके शुक्ले ना त्रि तु तद्वति ।
पातो ना पतने राहौ पातं त्राणे च शोषणे ॥३२५२॥
पातन्तु शुष्के त्राते च वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ।
पापे तु पातकोऽस्त्री त्रिः पतेः पातयतेर्ण्वुलि ॥३२५३॥
पातालन्नागलोके स्याद्विवरे वडवानले ।
पाताली वागुरायाञ्च स्थाल्याञ्चैव स्त्रियाम्मता ॥३२५४॥
पातिली वागुरायां स्यान्नारीपात्रप्रभेदयोः ।
पातुकः पतयालौ त्रिर्ना प्रपातेऽविभे द्वयोः ॥३२५५॥
पात्रम्पात्री च पात्रश्च पिबेस्त्रातरि शोष्टरि ।
तथैव भाजनेऽपि स्यादथ योग्ये स्रुगादिके ॥३२५६॥

1. बिडपर्ण्यां वा ।

आढके मण्डिते वित्ते नद्याः कूलद्वयान्तरे ।
प्रधानाङ्गे च सुगुणे पर्णे पात्रन्नपुंसकम् ॥३२५७॥
पात्रटस्तु कृशे त्रि स्यात्कर्पटे तु पुमानयम् ।
पात्रटीरः कांस्यलोहरौप्यपात्रेऽपि पावके ॥३२५८॥
सिंहाणेऽपि पुमांस्तद्वद्युक्तव्यापारमन्त्रिणि ।
पाथः स्थाने जलेऽन्ने च व्योम्न्यर्केऽग्नौ नपुंसकम् ॥३२५९॥
पाथिरस्त्री रवौ चन्द्रस्वर्गज्योतिर्नदीषु नप् ।
पादोंऽशौ चरणे वृक्षेमूलेऽद्रेः प्रान्तपर्वते ॥३२६०॥
तुर्यभागे पद्यभागे परिमाणान्तरेऽपि च ।
पादचत्वर इत्युक्तश्छागसैकतपिप्पले ॥३२६१॥
करके परदोषैकप्रवक्तृपुरुषेऽपि च ।
पादपस्तु पुमान्वृक्षे पादपीठेऽप्यथ स्त्रियाम् ॥३२६२॥
पादपा पादुकायां स्यात्पादरक्षे तु भेद्यवत् ।
पादपाशी खड्डुकायां शृङ्खलायामपि स्त्रियाम् ॥३२६३॥
पादबन्धनमित्युक्तं क्लीबं चरणबन्धने ।
तथा जीवधनाभिख्ये गोमहिष्यादिवस्तुनि ॥३२६४॥
उपानहि स्त्रियां पादरक्षणी क्ल्यङ्घ्रिरक्षणे ।
पादातन्तु पदातीनां सङ्घे क्लीबम्प्रकीर्त्तितम् ॥३२६५॥
पदातिसम्बन्धिनि तु पदातौ च त्रिषु स्मृतम् ।
पादावर्त्तः पुमान्पादस्यावर्त्तेप्यरघट्टके ॥३२६६॥
पादिका मन्दिरस्याल्पस्थूणायामप्युपानहि ।
रसतुर्येण हेमादेर्वेधे चापि स्त्रियाम्मता ॥३२६७॥
क्रीताद्यर्थे पादिकस्त्रिः स्यात्पत्तरि तु पादकः ।
पादुः पादूरपि स्त्री स्यात्पादुकायामुपानहि ॥३२६८॥
पानन्तु पीतौ त्राणे च पानपात्रे च शोषणे ।
दर्शने क्वाप्यथो पानः पुमान्निःश्वासमारुते ॥३२६९॥
पानीयन्तु जले क्लीबं पातव्ये तु मतं त्रिषु ।
पानीयसम्भवं तु क्ली कूप्याख्यलवणान्तरे ॥३२७०॥

त्रि तु यत्किञ्चिदन्यत्स्याद्वारिजन्तत्र कीर्त्तितम् ।
पापस्तु कुत्सिते क्रूरे त्रिषु क्लीबन्तु दुष्कृते ॥३२७१॥
विभीतकफले चाथ विभीतकतरौ पुमान् ।
पापर्द्धिर्मृगयायां स्त्री पापऋद्धौ यथायथम् ॥३२७२॥
पाप्मा रोगे च पापे च नान्तः पुंसि प्रकीर्त्तितः ।
पामरो वाच्यवत्खण्डे नीचे चाज्ञे च कीर्त्तितः ॥३२७३॥
पायसोऽस्त्री दुग्धसिद्ध ओदने पुंसि तु स्मृतः ।
श्रीवेष्टाह्वयनिर्यासे पयोयोगिनि तु त्रिषु ॥३२७४॥
पायुर्भगे गुदे चापि पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
पारोऽस्त्र्यन्यतटे प्रान्ते सांख्यतुष्ट्यन्तरे च ना ॥३२७५॥
पारी पूरे दोहपात्रे पादरज्जौ च दन्तिनः ।
पुष्पधूलौ च खण्डेऽथ पारा स्त्री सरिदन्तरे ॥३२७६॥
मध्यदेशस्थिते पारस्तु त्रिस्तारकपालके ।
क्वचित्खण्डे परागे च पारस्तु त्रिषु तारके ॥३२७७॥
पारः पुमान्स्यात्तरणपारतर्षिंनृपान्तरे ।
पारकस्तारयितरि तर्पके पूरके त्रिषु ॥३२७८॥
पारके पारकास्तु स्युर्नृजातिभिदि भूम्नि पुम् ।
पारणस्तारके त्रिर्ना मेघे क्ली तु समापने ॥३२७९॥
व्रतान्तभोजने क्ली स्त्री पारणम्पारणापि च ।
कात्स्न्र्ये समस्तपाठेऽपि पारणं केचिदूचिरे ॥३२८०॥
पारतः पारदे पुंसि पारतस्तसि चाव्ययम् ।
पारदः पारते पुंसि त्रिस्तु पारस्य दातरि ॥३२८१॥
उदीच्यनीवृद्भेदे तु पारदाः स्युर्नृभूमनि ।
पारपारः पुमान् विष्णौ साख्यतुष्टयन्तरे तु नप् ॥३२८२॥
पारगे त्रिः पारमितो भावे पारमितास्य च ।
पारलौकिकमन्यस्य लोकस्य त्रिषु योगिनि ॥३२८३॥
मौक्तिकाकरभेदे तु पुंसि तन्मौक्तिकेऽपि च ।
द्वे तु पारशवो विप्रस्योढशुद्रासुते तथा ॥३२८४॥

परस्त्रीतनये चापि मौक्तिके तु पुमान्मतः ।
अथास्त्रियां स्यात् शस्त्रेऽपि लोहे कालायसाह्वये ॥३२८५॥
मध्यदेशनृजातीनां भेदे तु स्युर्नृभूमनि ।
पारापारन्तीरयुगे पारापारस्तु वारिधौ ॥३२८६॥
अथ पारायणन्ध्याने तत्परेऽधीष्ट आश्रये ।
साकल्यासङ्गयोश्च स्यादङ्कुशस्य च बन्धने ॥३२८७॥
जलेन चतुरो मासान्वर्त्तनात्मनि च व्रते ।
कात्स्न्र्ये समस्तपाठ्ये च पाठे पारायणस्तु ना ॥३२८८॥
कथकेऽपि च शिष्टेऽपि कथितः कस्यचिन्मते ।
पारायणी सरस्वत्यां कर्मध्यानप्रभासु च ॥३२८९॥
पारावतो व्रीहिभेदे तरुभेदेन्द्रनीलयोः ।
अतस्यां वर्णभेदे चेषत्पाण्डौ त्रि तु तद्वति ॥३२९०॥
नीचेऽप्यथ द्रुमस्यात्रोक्तस्य पारावते फले ।
[1]वर्मण्यप्यथ पारावतो द्वे गृहकपोतके ॥३२९१॥
पारावती गोपगीते नदीभिल्लवलीफले ।
पारावतपदी स्त्री स्याज्जीवन्तीसंज्ञभेषजे ॥३२९२॥
यथासमासं योगार्थे लिङ्गाद्यस्य प्रकीर्त्तितम् ।
[2]पारावारोऽम्बुधौ पारावारन्तु स्यात्समाहृतौ ॥३२९३॥
पारावारे परार्वाचोः कूलयोरसमाहृतौ ।
पारिः सृणिगुणे पण्व्यां स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ॥३२९४॥
पारिजातः सुरद्रूणां पञ्चानां क्वचिदिष्यते ।
वृक्षभेदे च मन्दारपारिभद्रादिनामनि ॥३२९५॥
पारिन्दस्तु पुमान्वृक्षे गाथके त्वभिधेयवत् ।
पारिप्लवस्त्वाकुलेऽपि चञ्चले चाभिधेयवत् ॥३२९६॥

---

१. चर्मण्यथ वा ।

२. पारावारः पुमान्विष्णौ सांख्यतुष्ट्यन्तरे तु नपु् ।
पारावारं तीरयुगे पारावारस्तु वारिधौ ॥

कथान्तरेऽश्वमेधादिकीर्त्तनीये पुमान्मतः ।
पारिभद्रस्तु मन्दारे निम्बद्रौ देवदारुणि ॥३२९७॥
पारिव्याधस्तु पुंसि स्याद्वेतसे च द्रुमोत्पले ।
पारुष्यं परुषत्वे च दुर्वाक्ये चेन्द्रकानने ॥३२९८॥
बृहस्पतौ तु पारुष्यः पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
पार्थिवः पुंसि भूपेऽथ पृथिव्यां विदिते त्रिषु ॥३२९९॥
पृथिव्याश्च विकारे स्यादिदमर्थादिके तथा ।
तत्र स्त्र्यर्थे भवेद्वृत्तौ पार्थिवा पार्थिवीति च ॥३३००॥
पार्थिवी तु स्त्रियामेव जानक्याम्परिकीर्त्तिता ।
पार्परो भक्तसिक्थे स्यात्कीनाशे राजयक्ष्मणि ॥३३०१॥
जराटेऽपि कदम्बस्य केसरे च गदान्तरे ।
पार्यः पारहितेऽन्त्ये त्रिः पार्यन्त्वन्ते नपुंसकम् ॥३३०२॥
पार्वतस्तु पुमान्निम्बे त्रि पर्वतभवादिके ।
पार्वती तु भवान्यामप्याढकीसंज्ञमृद्यपि ॥३३०३॥
गोपाल-[1]पत्रिकायाञ्च गजभक्ष्याख्यभूरुहे ।
पार्श्वन्तु कक्षाऽधोभागे पर्शुवृन्दात्मके तनोः ॥३३०४॥
चक्रोपान्तेऽन्तिके ना तु जैनतीर्थकरान्तरे ।
पार्श्व्यौ पुनः स्त्रियौ द्यावापृथिव्योः परिकीर्त्तितौ ॥३३०५॥
पार्ष्णिरुन्मत्तनार्यां स्त्री पादग्रन्थ्यधरे तु सा ।
सैन्यस्य पृष्ठभागे च स्त्रियां पुंसि च कीर्त्तिता ॥३३०६॥
पाली स्त्री जडकन्यायाम्पालस्तु त्रिषु पालके ।
पालस्त्राणे पुमानस्त्री द्रोणाख्ये काष्ठपात्रके ॥३३०७॥
पालकस्तु पुमान्हास्तिशिरोमध्यस्य पार्श्वयोः ।
गजज्वरे च द्वे त्वश्वे क्ली तु कुष्ठाख्यभेषजे ॥३३०८॥
पालङ्कः शल्लकीशाकभेदयोः प्राजिपक्षिणि ।
पालिः कर्णलताऽग्रेऽश्रौ पङ्क्तावङ्कप्रभेदयोः ॥३३०९॥

---

१. पुत्रिकाञ्च वा ।

छात्रादिदेये स्त्री पाली यूकासश्मश्रुयोषितोः ।
पालिकस्तु पुमान्वृक्षे नृपतावपि कीर्त्तितः ॥३३१०॥
भेद्यवद्द्राथके मुख्ये पूज्ये रक्षक एव च ।
पालुकः सूपकारेऽभिधेयवत्प्रोच्यतेऽथ च ॥३३११॥
लघुवाचिनि सूपे ना स्यादध्वर्यौ च पालुकः ।
पालूरस्तु द्वयोर्दूते क्लीबन्त्वन्यपुरान्तरे ॥३३१२॥
पावकोऽग्नौ सदाचारे वह्निमन्थे च चित्रके ।
भल्लातके विडङ्गे च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥३३१३॥
पावनन्तु जलेऽपि स्यात्प्रायश्चित्ते नपुंसकम् ।
अथ स्यात्पावयितरि पवितर्यपि वाच्यवत् ॥३३१४॥
पावनस्तु पुमान्व्यासे पावकेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
पाशो ना पाशनायां स्रुब्धातोः पाशयतेर्घञि ॥३३१५॥
रज्ज्वादिप्रान्तविन्यस्तग्रन्थिभेदे तथैव च ।
मृगपक्ष्यादिबन्धार्थयन्त्रभेदे च तत्कृते ॥३३१६॥
स्त्री तु केशाच्छिखायां स्यात्केशपाशिन्यथ त्रिषु ।
याप्ये प्रत्ययसंज्ञः स स्वार्थिको निहतस्वरः ॥३३१७॥
पाशी तु वरुणे पुंसि व्याधे पाशी च पाशिनी ।
पुमान्पाशुपतो वृक्षे शिवमल्लीबकाभिधे ॥३३१८॥
त्रि स्यात्पशुपतेः सम्बन्धिनि क्ली तु व्रतान्तरे ।
पिङ्गो मण्डलिसर्पाणां प्रभेदे महिषे द्वयोः ॥३३१९॥
ना पिशङ्गाह्वये वर्णे ऋषिभेदे च सर्षपे ।
पिशङ्गवर्णयुक्ते तु त्रि स्त्रियां पिङ्गलाह्वये ॥३३२०॥
पिङ्गा पक्ष्यन्तरे ब्रह्मरीतिसंज्ञे च लोहके ।
तथा गोरोचनाहिङ्गुनालिकाचण्डिकासु च ॥३३२१॥
पिङ्गी तु शम्याम्पिङ्गन्तु तालके क्लीबमिष्यते ।
पिङ्गलो नागमुनिभिद्विष्णुब्रह्मशिवाग्निषु ॥३३२२॥
रवेरन्यतमे पारिपार्श्विकानां पिशङ्गके ।
वर्णे तद्वति तु त्रि स्त्री करिण्यां पिङ्गला मता ॥३३२३॥

पुण्डरीकाभिधानस्याग्नेयदिक्करिणस्तथा ।
षण्णामन्यतमायाश्च निर्विषाणां जलौकसाम् ॥३३२४॥
शरीरनाडिभेदे च पक्षिजात्यन्तरेऽपि च ।
महाभारतविख्यातवेश्यायां लोहभिद्यपि ॥३३२५॥
ब्रह्मरीतिसमाख्यायां ह्रीबेरे तु नपुंसकम् ।
द्वयोर्बिडाले नकुले वानरेऽपि च पिङ्गलः ॥३३२६॥
पिचुर्ना कुष्ठभित्कर्षमानतूलसुरान्तरे ।
पिचुलो झावुकेऽपि स्यादिज्जले जलवायसे ॥३३२७॥
पिचटो नेत्ररोगे ना क्लीबं सीसकरङ्गयोः ।
पिच्छा पूगच्छटाकोशमोचाशाल्मलिवेष्टके ॥३३२८॥
सर्वपिच्छिलमण्डे च पङ्क्तावश्वपदामये ।
यवाग्वाश्च स्त्रियां पिच्छस्तु द्वयोर्बर्हचूडयोः ॥३३२९॥
पक्षिणस्तु छदे क्लीबं पिच्छं पुच्छे तु पुंस्ययम् ।
पिच्छः स्याद्गुणभेदे च यद्वा पिच्छिल उच्यते ॥३३३०॥
[1]पिच्छूली त्रिस्तृणस्तम्बे राशौ पिच्छूल एष ना ।
पिञ्जरः पीतरक्ताख्ये मिश्रवर्णान्तरे पुमान् ॥३३३१॥
त्रि तु तद्वत्यथ क्लीबं हरितालेऽपि पिञ्जरम् ।
पिञ्जा तूले हरिद्रायाम्पिञ्जन्तु क्ली बले स्मृतम् ॥३३३२॥
पिञ्जस्तु स्याद्वधे पुंसि व्याकुले त्वभिधेयवत् ।
पिटो रोमपुटे तद्वत्कण्डोलेऽपि पुमान्मतः ॥३३३३॥
पिटं पिटाटिकाख्ये क्ली छदिषोऽवयवे मतम् ।
पिटकस्त्रिषु विस्फोटे मञ्जूषायाम्पुमान्मतः ॥३३३४॥
पिठरम्मुस्तके मन्थदण्डेऽपि स्यान्नपुंसकम् ।
पिठरी तु स्त्रियां क्लीबेऽपि स्यात्स्थाल्युखयोरियम् ॥३३३५॥

---

१. स्यात्पक्षिपक्षेऽपि मयूरस्य शिखण्डके ।
स्त्रियाम्पुंसि तु लाङ्गूले न द्वयोर्बर्हचूडयोः ।

[1]पिण्डो बाले बले सान्द्रे देहागारैकदेशयोः ।
देहमात्रे निकाये च गोलसिल्हकयोरपि ॥३३३६॥
ओड्रपुष्पे च पुंसि स्यात्क्लीबमाजीवनायसोः ।
पिण्डी तु पिण्डीतगरेऽलाबुखर्जूरभेदयोः ॥३३३७॥
पिण्डपुष्पमशोके च जवायाश्च कुशेशये ।
स्त्रियाम्पिण्डफलाऽलाबुवल्ल्यां योगे यथायथम् ॥३३३८॥
[2]पिण्डारः क्षपणे गोपे महिषीरक्षके द्रुमे ।
पिण्डारको ना पिण्डीके चित्राङ्गद्वीपिनि द्वयोः ॥३३३९॥
पिण्डिर्ना पिष्टधानादिचूर्णे निःस्नेहपिण्डके ।
पिण्डिकस्तु पुमान्गेहावयवेऽलिन्दसंज्ञके ॥३३४०॥
पिण्डिका तु स्त्रियान्नाभौ रथचक्रस्य कीर्त्तिता ।
जङ्घापिण्डे तथा हस्तिचरणावयवान्तरे ॥३३४१॥
पिण्डितो ना तुरुष्केऽथ त्रिषु स्याद्गणिते घने ।
पिण्डिलस्तु पुमान्मेघे हिमे क्ली गणके त्रिषु ॥३३४२॥
पिण्डीतकः स्यात्तगरे मदनाख्यमहीरुहे ।
पिण्याकोऽस्त्री तुरुष्काख्यनिर्यासे हिङ्गुकिण्वयोः ॥३३४३॥
श्रीपिष्टाख्ये च निर्यासे यवानीतिलकल्कयोः ।
पितामहो विरिञ्चे ना पितुश्च पितरि स्मृतः ॥३३४४॥
पितामही पुनः स्त्रीत्वे पितुर्मातरि कीर्त्तिता ।
पितुस्त्वन्ने विरिञ्चे च सूर्ये चापि पुमान्मतः ॥३३४५॥
पितृप्रपा तु योगार्थे गयायामाम्रसेचने ।
पित्तलं त्वारसंज्ञे क्ली लोहभेदे स्त्रियाम्पुनः ॥३३४६॥
पित्तला तोयपिप्पल्यां त्रिस्तु पित्तकरे भवेत् ।
पित्र्या तु पूर्णिमायां स्त्री पित्र्यन्तु पितृदैवते ॥३३४७॥

---

१. पिण्डो निवापे सङ्घात आजीवे च गुडेरके ।
बाले च पुद्गले (पुङ्गले) पिण्डस्त्वस्त्रियां काय इष्यते ।
पिण्डी तु स्त्री देवपीठे भक्तपिण्डेऽपि कीर्त्तिता ।

२. पिदारः वा ।

पितृसाधौ पितुश्चैवागतादौ वाच्यवन्मतम् ।
पित्सन्खगे द्वयोस्त्रिस्तु पत्तुं पतितुमेष्टरि ॥३३४८॥
पिदारो महिषीपाले गोपे द्वे क्षपणे तु ना ।
पिनाकः कार्मुके शम्भोः शूलेऽपि परिकीर्त्तितः ॥३३४९॥
पांशुवर्षे च दण्डे च पुंनपुंसकयोरयम् ।
द्वयोः पिपतिषन्पक्षिण्यथ त्रिः पतनोत्सुके ॥३३५०॥
पिप्परस्तु पुमान्वृक्षभेदे स्यात्स्त्री तु पिप्परी ।
पिप्पलन्तु जले क्लीबं वृक्षाणां च फले तथा ॥३३५१॥
वस्त्रच्छेदप्रभेदे च सूचीसूत्रेऽपि चूचुके ।
पिप्पली तु कणायाश्च कर्णमूले च हस्तिनः ॥३३५२॥
मृज्यमानेऽतिवर्गस्य सामभेदे च सप्तमे ।
[1]निरङ्कुले पक्षिभेदे ना त्वश्वत्थे हि पिप्पलः ॥३३५३॥
क्लीबं पिप्पलकं स्यूतिसूत्रे वृन्ते स्तनस्य च ।
पियालो वृक्षयोः सन्नकद्रुराजादनाख्ययोः ॥३३५४॥
क्ली तु तत्प्रसवे द्राक्षायां पियाला स्त्रियां मता ।
[2]पिल्लस्त्रिषु स्यात्क्लिन्नेऽक्षिण तथा क्लिन्नाक्षिमत्यपि ॥३३५५॥
पिशाचस्त्रिषु सोन्मादे देवयोन्यन्तरे द्वयोः ।
पिशितं क्ली भवेन्मांसे मांस्यां तु पिशिता स्त्रियाम् ॥३३५६॥
पिशीलं क्लीबमुदितमेतदंसद्वयान्तरे ।
अथ स्त्रियां पिशीलीति वीणाभेदे प्रकीर्त्तिता ॥३३५७॥
पिशुनं कुङ्कुमे रूपे तगरे च नपुंसकम् ।
नारदेऽपि च काले ना सूचकक्रूरयोस्त्रिषु ॥३३५८॥
स्पृक्कायां तु स्त्रियामेषा पिशुना परिकीर्त्तिता ।
पिष्टको घृतपूपादौ नेत्ररोगान्तरेऽपि च ॥३३५९॥
पीको जलाशये योनौ पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
पीठं स्यादासने स्थाने तीर्थासनभिदोरपि ॥३३६०॥

---

१. निरंशुके वा ।
२. पिल्लः पुमान्क्लिन्ननेत्रे क्लिन्नाक्षे पुनरन्यवत् ।

अवधापूरणे ना तु सूर्ये मत्स्यान्तरेऽपि च ।
कंसामात्येऽपि कस्मिंश्चिदसुरेऽपि तथोदितः ॥३३६१॥
पीठकस्त्वस्त्रियां पीठे शिविकायामपि क्वचित् ।
पीठिका तु स्त्रियां क्षुद्रपीठसुन्दरपीठयोः ॥३३६२॥
पीठमर्दोऽतिधृष्टे त्रिर्नायकस्य प्रिये तु ना ।
पीडनं मर्दने दुःखदानेप्यावरणेप्यना ॥३३६३॥
पीडा व्यथा शिरोमालाकृपासु सरलद्रुमे ।
उपरागोपेक्षणादौ केषांचित्पिटकेपि सा ॥३३६४॥
पीडितं कृतपीडे त्रिः क्ली पीडारतबन्धयोः ।
पीतो ना गन्धके हारिद्राभवर्णे च कीर्तितः ॥३३६५॥
शाल्मलिद्वीपवैश्येऽपि गोमूत्रोद्भववर्णके ।
त्रि तु तद्वर्णवति च पिबतेः पीयतेस्तथा ॥३३६६॥
कर्मण्यथ हरिद्रायां पीता पीतौ तु नप् स्मृतम् ।
पीतकावेरमित्येतत्कुङ्कुमे पित्तलेऽपि च ॥३३६७॥
पीतचन्दनमुद्दिष्टं कोलीयकहरिद्रयोः ।
दीपके दर्पणे चापि केषाञ्चित्पीतचम्पकः ॥३३६८॥
स्त्री पीततण्डुला कङ्गुधान्ये स्याद्यौगिके त्रिषु ।
[1]पीतदारुस्तु नप्पीतचन्दने देवदारुणि ॥३३६९॥
अग्नौ सुवर्णे [क्लीबं स्यात्] ताम्रसारे च चन्दने ।
पीतदुग्धा मता स्वर्णक्षीर्यामपि तथा गवि ॥३३७०॥
पीतनो नाम्रातके क्ली हरिताले च कुङ्कुमे ।
पीतदारुणि च प्रोक्तमाम्रातकफलेऽपि च ॥३३७१॥
पीतपुष्पस्तु ना कासमर्दकूष्माण्डयोर्मतः ।
शाखोटे कर्मरङ्गेऽपि पुमान्पीतफलो मतः ॥३३७२॥
द्वे पीतमारुतः सर्पभेदे योगे यथायथम् ।
पीतरक्तो रक्तपीते पीताऽसृज्यपि चेष्यते ॥३३७३॥
पीतरागं मधूच्छिष्टे मृणाले न स्त्रियामिदम् ।
पीतलः पीतवर्णे ना पीते त्रिः पित्तले तु नप् ॥३३७४॥

---

१. पीतदारुस्तु खदिरे देवदारुद्रुमेऽपि च ।

पीतवृक्षो देवदारुद्रुमे स्योनाकपादपे ।
स्यात्पीतशोणितोऽप्यत्र यौगिकत्वाद्यथायथम् ॥३३७५॥
पीतसारो मलयजे गोमेदकमणावपि ।
पीता षकारे कदलीभेदशिंशपयोरपि ॥३३७६॥
हरिद्रायां महाज्योतिष्मत्यामतिविषौषधे ।
पीताङ्गो भेकभेदेऽपि तथा स्योनाकपादपे ॥३३७७॥
पीताब्धिः स्यादगस्त्येऽपि पुँल्लिङ्गश्चीनसागरे ।
पीताम्बरस्तु शैलूषे तथा कैटभसूदने ॥३३७८॥
पीतिस्तु स्याद्द्वयोरश्वे पानकर्मणि तु स्त्रियाम् ।
पीती तु स्याद्द्वयोरश्वेऽथ पीतवति वाच्यवत् ॥३३७९॥
पीतुर्द्वयोः पक्षिणि स्याल्लोचने तु प्रभाकरे ।
यूथाध्यक्षगजे पुंसि बालाज्यचषकेऽपि च ॥३३८०॥
बालानां घृतपानार्थभाजने च पुमान्मतः ।
पीतदारुस्तु खदिरे देवदारुद्रुमेऽपि च ॥३३८१॥
पीथो ना नवनीतेऽग्नौ बालपेयघृतेऽपि च ।
पानेऽथ पीथं क्ली क्षीरे जलेऽपि परिकीर्त्तितम् ॥३३८२॥
पीनसो ना प्रतिश्याये द्वे तु मण्डलसंज्ञिनाम् ।
षड्विंशतेः सर्पजातिभेदानां क्वचिदिष्यते ॥३३८३॥
पीनस्कन्धो वराहे द्वे स्थूलांसे तु त्रिषु स्मृतः ।
पीयकोऽसुरजातौ द्वे तथैव त्रिषु निन्दके ॥३३८४॥
पीयुर्द्वयोरुलूके स्यान्ना काले किरणे रवौ ।
पीयुः काकोलूकयोर्द्वे त्रिषु हिंस्रे प्रकीर्त्तितः ॥३३८५॥
पीयुर्ना किरणे काले सुवर्णे पावके रवौ ।
पीयूषन्त्वमृते दुग्धे नवसूतगवीभवे ॥३३८६॥
पीला स्यादप्सरोभेदे स्त्रीविशेषे तथा मता ।
[1]पीलुस्तु कट्फले काण्डे पुष्पे गुडफलद्रुमे ॥३३८७॥

---

१. पीलुः पुमान्प्रसूने स्यात्परमाणौ मतङ्गजे ।
अस्थिखण्डे च तालस्य काण्डपादपभेदयोः ।

तालकाण्डे क्रमौ वाणे पुद्गले शरकोरके ।
फालास्थिखण्डे च पुमान्द्वे तु पीलुमतङ्गजे ॥३३८८॥
कट्फलस्य तु पीलोश्च फले पीलु नपुंसकम् ।
पीलुको वृक्षभेदे ना द्वयोस्तु स्यात्पिपीलके ॥३३८९॥
[1]पीलुपर्णी तु मूर्वायां बिम्बिकायामपि स्त्रियाम् ।
पीवः स्थूले वाच्यवत्स्यात् पीवा तु स्यात्स्त्रियां जले ॥३३९०॥
पीवा वायौ पुमान्स्थूले वाच्यवत्पीवरी पुनः ।
युवत्यां च शतावर्यां तथा च गवि कीर्त्तिता ॥३३९१॥
बर्हिषत्पितृकन्यायां पत्न्यां वेदशिरोमुनेः ।
पीवरस्तु द्वयोः कूर्मे स्थूले तु त्रिषु कीर्त्तितः ॥३३९२॥
पीवरा त्वश्वगन्धायां शतावर्यां प्रकीर्त्तिता ।
पीवरन्तु मतं क्रौञ्चद्वीपवर्षान्तरे नपि ॥३३९३॥
पीवरी तु स्त्रियामेषा शतावर्यां प्रकीर्त्तिता ।
पुंश्चलः स्वैरिपुरुषे स्वैरिण्यां पुंश्चली मता ॥३३९४॥
पुंश्चलूर्व्यभिचारिण्यां स्त्री ना तु व्यभिचारिणि ।
अथ पुंसवनं गर्भस्त्रियाः संस्कारकर्मणि ॥३३९५॥
[2]क्षीरे पुंसश्च सवने नपुंसकमुदीरितम् ।
पुंस्त्वन्तु पुरुषत्वेऽपि शुक्रेपि क्वचिदिष्यते ॥३३९६॥
पुक्कसी कलिकायां च नीलिकायामपि स्त्रियाम् ।
श्वपचे तु द्वयोरेष पुक्कसस्त्वधमे त्रिषु ॥३३९७॥
[3]पुङ्खः श्येने द्वयोर्ना मङ्गलाचारशराङ्गयोः ।
पुङ्गलः सुन्दराकारे त्रिषु पुंस्याऽऽत्मदेहयोः ॥३३९८॥
[4]पुङ्गवस्तु बलीवर्दे प्रभेदेप्यौषधस्य च ।
उत्तरस्थः पुनः श्रेष्ठे पुङ्गवः परिकीर्त्तितः ॥३३९९॥

---

१. पीलुपर्णी बिम्बिकायां मूर्वायामोषधिभिदि ।
२. उल्बे द्वितीयसंस्कारे दुग्धे पुंसवनं मतम् ।
३. पुङ्खः श्येने द्वयोर्ना तु कर्त्तर्याख्ये शराङ्गके ।
४. पुङ्गवस्तूषभे श्रेष्ठे प्रभेदेप्यौषधस्य च ।

पुच्छः पश्चात्प्रदेशे मुख्याङ्गे लाङ्गूलयोर्नृनप् ।
पुच्छी स्यादर्कपर्णे ना कुक्कुटे तु द्वयोर्मतः ॥३४००॥
पुञ्जिष्ठः कैवर्त्तके द्वे वाच्यवत्पुञ्जिते मतः ।
[1]पुटः स्त्रीपुंसयोः शूद्रकवरीसम्भवे मतः ॥३४०१॥
पूर्यां करण्ड्यां कौपीने पुटस्तु स्यात्समुद्गके ।
छन्दोऽन्तरे पुटन्तु स्यात्क्लीबं जातीफले पुरे ॥३४०२॥
पुटकः स्यात्पत्रपुटे पाणिमुद्रान्तरे पुटे ।
पुटिका भस्त्रिकाशुक्त्योरेलायाञ्च स्त्रियाम्मता ॥३४०३॥
जातीफले तु पुटकं कमले कुमुदेऽपि च ।
पुटग्रीवा तु गर्गर्यां ताम्रघट्यामपि स्त्रियाम् ॥३४०४॥
पुटभेदो नदीवक्त्रे पत्तनातोद्ययोरपि ।
पुटितं स्याद्धस्तिपुटे त्रि तु स्यूते च पाटिते ॥३४०५॥
पुण्डरीकं सिते छत्रे कुष्ठव्याध्यन्तरेऽपि च ।
पद्ममात्रे सिताम्भोजे बालुकाख्यविषान्तरे ॥३४०६॥
स्यादाम्रस्य फले गन्धद्रव्ये मदनकाह्वये ।
पुण्डरीकस्त्वग्निदिशो गजे हस्तिज्वरान्तरे ॥३४०७॥
कोशकारान्तरे चेक्षुशालिजातिभिदोरपि ।
महाश्वेतापतौ चापि विष्णुभक्ते द्विजान्तरे ॥३४०८॥
द्वयोस्तु सर्पभेदा ये राजिलाख्यास्त्रयोदश ।
तेषामेकत्र भेदे च व्याघ्रे च परिकीर्त्तितः ॥३४०९॥
आनूपमांसवर्गस्य मध्ये यः प्लवसंज्ञकः ।
हंसादिर्गण उद्दिष्टस्तत्र चैकत्र पक्षिणि ॥३४१०॥
अस्त्रियां तिलके यज्ञभेदेऽपि परिकीर्त्तितः ।
पुण्डरीका त्वप्सरोभित्क्रौञ्चद्वीपसरिद्भिदोः ॥३४११॥
पुण्डरीकमुखः पद्मवदने वाच्यवन्मतः ।
पुण्डरीकमुखी तु स्त्री जलौकाभिदि कीर्त्तिता ॥३४१२॥

---

१. पुटी त्रयी करण्ड्यां क्ली नगरे ना समुद्गके ।
पुटो द्वे कवरी शूद्रसम्भवेथ पुटी त्रिषु ।

पुण्डरीकाक्ष इत्येष विष्णौ जलखगान्तरे ।
पुण्डरीकाक्षमित्येतत्क्लीवं स्याद्भेषजान्तरे ॥३४१३॥
पुण्डरीयक इत्येष विश्वेदेवान्तरेऽथ च ।
प्रपौण्डर्ये भेषजभिद्यपि स्यात्पुण्डरीयकम् ॥३४१४॥
पुण्ड्रन्तु तिलके न स्त्री पुण्ड्रस्त्विक्ष्वन्तरे क्रिमौ ।
पुण्ड्रं हिमाचलहेमकूटयोर्मध्ये······पुरम् ॥३४१५॥
पुष्पगुल्मेऽतिमुक्ताख्ये दैत्यभित्पुण्डरीकयोः ।
नीवृद्भेदे तु पुण्ड्राः स्युर्वरेन्द्रचाख्ये नृभूमनि ॥३४१६॥
अथ पुण्ड्रा स्त्रियामेव धवलायां गवीष्यते ।
पुण्ड्रकः पुण्ड्रतुल्यार्थे ना कोशक्रमिजीविनि ॥३४१७॥
पुण्यं पुष्पेऽप्सु खे हेम्नि व्रते धर्मे सुकर्मणि ।
गङ्गार्घ्ययोस्तु पुण्या स्त्री स्यात्तुलस्यश्वगन्धयोः ॥३४१८॥
अस्त्री तु स्यात्सरोभेदे त्रिर्मनोज्ञे च पावके ।
पुण्यकं व्रतभेदेऽत्र भार्यायै चाप्युपायने ॥३४१९॥
पुण्यकृत्त्रिषु योगार्थे विश्वेदेवान्तरे पुमान् ।
पुण्यगन्धः सुगन्धे त्रिश्चम्पके तु पुमान्मतः ॥३४२०॥
पुमान्पुण्यजनो यक्षे राक्षसे सज्जनेऽपि च ।
पुंसि पुण्यफलो लक्ष्म्या उद्याने यौगिके त्रिषु ॥३४२१॥
पुंसि पुण्यबलो बोधिसत्त्वशक्त्यन्तरे तथा ।
पुण्यवत्याख्यपुर्याश्च नृपतौ परिकीर्त्तितः ॥३४२२॥
पुण्यभूमिः पुत्रमातर्यार्यावर्त्तेऽपि च स्त्रियाम् ।
पुण्यवांस्त्रि सुकृतिनि पूर्भेदे पुण्यवत्यपि ॥३४२३॥
पुण्यश्लोकः पुण्यकीर्त्तौ वाच्यवच्च प्रियंवदे ।
पुत्तलः पुद्गले देहे नरजीवशिवात्मसु ॥३४२४॥
द्वे तु स्फटिकवर्णाऽश्वे मनोज्ञे तु त्रिषु स्मृतः ।
पुत्रास्तु भूम्निच्छान्दोग्ये मधुकृत्सु प्रकीर्त्तिताः ॥३४२५॥
पुत्रस्तु तनये पुंसि पञ्चमे भवनेऽपि च ।
पुत्रकाख्येऽपि सविषक्षुद्रजन्तौ नृपान्तरे ॥३४२६॥

पुत्री दुहितरि स्त्रीत्वे सालभञ्ज्यामपीष्यते ।
ह्रस्वार्थेऽप्यसिपुत्र्यादौ पार्वत्यां वीरुदन्तरे ॥३४२७॥
पुत्रकस्तु पुमान्दीक्ष्यभेदे स्यात्पर्वतान्तरे ।
पेषण्यां पाटलिपुरनिर्मातृद्रुमभेदयोः ॥३४२८॥
पुत्रदा स्तम्बभेदेऽपि कन्दभेदे च कीर्त्तिता ।
वन्ध्याकर्कोटकीवल्लौ योगार्थे तु त्रि पुत्रदः ॥३४२९॥
पुत्रदात्री मालवजे वीरुद्भेदेऽपि यौगिके ।
पुत्रप्रियः पक्षिभेदे द्वयोस्त्रिषु तु यौगिके ॥३४३०॥
स्याद्वसिष्ठे पुत्रहतो हतपुत्रे त्रिषु स्मृतः ।
स्यात्पुत्रिका पुत्तलिकादुहित्रोर्याचतूलके ॥३४३१॥
खड्गासिपुत्रिकादौ च ह्रस्वत्वे सा प्रयुज्यते ।
कृत्रिमादौ द्वयोः स्त्रीत्वे पुत्रका पुत्रिकेति च ॥३४३२॥
अभ्रातृपितृका कन्या पूर्णदाया च पुत्रिका ।
पुत्रिका तु मता स्त्रीत्वे मृद्दार्वादिकपुत्तले ॥३४३३॥
पतङ्गिकायां देशे च प्लुषौ श्वेतपिपीलके ।
पुद्गलः परमाण्वात्मदेहे ना त्रिस्तु सुन्दरे ॥३४३४॥
पुनः पक्षान्तरे भेदाधिकाराप्रथमेषु च ।
विरुद्धायां दिशीत्यर्थे क्वचिच्छ्रुतिषु दृश्यते ॥३४३५॥
पुनर्भवः पुनर्जन्म नखरक्तपुनर्नवे ।
पुनर्भूः पुनरूढायां स्त्री पुनर्नूतने त्रिषु ॥३४३६॥
पुनर्वसुर्वररुचौ विष्णौ लोकान्तरे शिवे ।
नृपान्तरे धनस्योपक्रमे ना दितिभे पुनः ॥३४३७॥
पुनर्वसू द्विवचने तद्युक्ते चाप्यनेहसि ।
पुनर्वसुस्तु जातेऽत्र वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ॥३४३८॥
पुनस्सरः प्रतिगमेऽप्यपामार्गे पुमान्मतः ।
पुन्नागस्तु नरश्रेष्ठजातीफलसितोत्पले ॥३४३९॥
केसरे पाण्डुनागे च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
पुन्नागः पूज्यपुरुषे पुंगजे पुम्भुजङ्गमे ॥३४४०॥

देववल्लभवृक्षे ना क्लीबं तत्प्रसवे मतम् ।
पुप्फुसोऽम्बुजबीजानां कोशे चापि कफाशये ॥३४४१॥
पुमांस्तु पुरुषे विष्णावात्मन्यपि च पौरुषे ।
[वंशावृत्तौ तथा] दासे पुँल्लिङ्गे सांख्यपूरुषे ॥३४४२॥
पूः स्त्रियां नगरे देहे बुद्धौ पूर्त्तावपीष्यते ।
पुरन्तु न स्त्रियां ध्यामस्तम्बे स्याद्गेहदेहयोः ॥३४४३॥
असुराणां त्रिषु पुरेष्वपि त्वचि च मुस्तके ।
सर्वतोभद्रकाद्ये च स्याच्छैवागममण्डले ॥३४४४॥
पुरस्तु गुग्गुलौ पुंसि नगरे तु पुरी त्रिषु ।
द्वयोस्तु शूद्रमहिषीपुत्रे पुरिरपि स्त्रियाम् ॥३४४५॥
पुरे पुरा पुनः स्त्रीत्वे गन्धद्रव्यान्तरे मता ।
पुरी स्त्रियां जगन्नाथक्षेत्रे पुंसि पुनः क्वचित् ॥३४४६॥
दशानामपि भिक्षूणां शङ्करानुगमायिनाम् ।
पुरञ्जनस्तु वरुणे पुमानात्मनि चेष्यते ॥३४४७॥
पुरञ्जनी पुनर्बुद्धौ स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।
पुरञ्जयो राजभेदेष्वैरावतसुतेऽपि च ॥३४४८॥
पुरतः प्रथमे चाग्रेऽप्यव्ययम्परिकीर्त्तितम् ।
पुरन्दरोग्नाविन्द्रे च शिवे दस्यौ पुमानथ ॥३४४९॥
पुरन्दरा तु गङ्गायां तथा नद्यन्तरे स्त्रियाम् ।
पुरन्दरम्पुनः क्लीबमुदितं चव्यभेषजे ॥३४५०॥
पुरन्धिः स्यादुदारे त्रिः स्त्री सौभाग्यवती स्त्रियाम् ।
औदार्यौदारदेव्योश्च पुरन्धिः श्रुतिषु श्रुता ॥३४५१॥
पुरन्ध्रिः पुनरिन्द्रे च वरुणे च पुमान्मतः ।
पुरश्छदश्चुचूकेऽपि [पुरश्चरणमनुष्ठितौ] ॥३४५२॥
पुरोऽग्रे प्रथमे भूयोऽधिकारे च पुनः पुनः ।
पुरस्कारोऽग्रेकरणे तथैव स्यादुपायने ॥३४५३॥
पुरस्कृतः पूजिते स्यादभियुक्ते च शत्रुभिः ।
अग्रतश्च कृते चैवाप्यभिषिक्तेऽभिधेयवत् ॥३४५४॥

पुरस्तात्प्रथमे प्राच्यामग्रतोऽर्थपुरार्थयोः ।
पुरा पुराणे निकटे प्रबन्धातीतभाविषु ॥३४५५॥
पुराणन्तु ग्रन्थभेदे क्लीबं स्यात्पञ्चलक्षणे ।
पुराणः कार्षिके पुंसि त्रिषु तु स्याच्चिरन्तने ॥३४५६॥
पुराणा च पुराणी च तत्र रूपं स्त्रियान्द्वयम् ।
पुराणगस्त्रिः कथके ब्रह्मण्येष पुमान्मतः ॥३४५७॥
पुरीतदन्त्रे हृदयावरणेऽपि नपुंसकम् ।
पुरीषी व्यापके भूमेर्वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ॥३४५८॥
अथानिर्णीतलिङ्गोऽयं सरय्वां सरिदन्तरे ।
पुरीष्यं भूमिसम्बद्धे पुरीषस्य च योगिनि ॥३४५९॥
पुरारातिः शिवे पुंसि विष्णावपि तथा क्वचित् ।
पुरिस्तु नगरेऽपि स्त्री नद्यामपि तथा मता ॥३४६०॥
पुरीषं मृत्तिकाचूर्णे विष्ठायां सलिलेऽपि च ।
सामभिद्भिम्वतेजस्सु पुरीषी चयनान्तरे ॥३४६१॥
पुरुर्नृपान्तरे गङ्गाद्वारादौ स्वर्ग एव च ।
परागे ना द्वयोर्मर्त्ये त्रि तु प्राज्ये महत्यपि ॥३४६२॥
पुरुटः पुंसि दम्पत्योः परैरसहने भवेत् ।
स्त्रीपुंसयोश्च संलापे जलजन्तौ पुनर्द्वयोः ॥३४६३॥
पुरुदंसा पुमान्सान्तइन्द्रे त्रिर्बहुकर्मणि ।
[1]पुरुभोजा गिरौ मेघे पुंसि त्रिर्बहुभुज्यपि ॥३४६४॥
[2]पुरुवारो बहुकचेऽश्वादौ त्रिश्च बहुप्रदे ।
[3]पुरुषः पुरुषीमर्त्यजातौ द्वे ना सशेफके ॥३४६५॥
तिबादित्रिकभेदेऽपि प्रथमोत्तममध्यमे ।
अधिकारिणि मित्रे च सांख्यवादिनि वंशजे ॥३४६६॥

---

१. पुरुभोजास्तु मेघे च गिरावपि पुमान्मतः ।
२. पुरुभोजा बहुभुजि त्रिषु मेघे पुमान्मतः ।
३. पुरुषस्तु द्वयोर्मर्त्ये ना तु जन्तौ सशेफके ।
पुन्नागवृक्षे द्रुहिणे क्षेत्रज्ञे सांख्यवेदिनाम् ।

पञ्चारत्निप्रमाणे च सविंशतिशताङ्गुले ।
कनीनिकायाञ्जीवे च विष्णौ च परमात्मनि ॥३४६७॥
शिवदुर्गाब्रह्मविष्णुस्वरूपे सांख्यपूरुषे ।
वृक्षादिसौरभे सप्ततत्त्वेष्वङ्घ्रावृचान्तथा ॥३४६८॥
महानाम्नीसमाख्यानां मेषादिविषमेष्वपि ।
चाक्षुषस्य मनोः पुत्रेऽष्टादशानां रवेरपि ॥३४६९॥
स्यात्पारिपार्श्विकानामेकत्र पञ्चसु पुंस्यपि ।
राजयोगोद्भवेष्वेवम्पुन्नागे [पुरुषः पुमान्] ॥३४७०॥
अश्वावस्थानभेदे तु नस्त्री क्ली मेरुपर्वते ।
सेतुषानाम्नि पुरुषगतिः सामनि कीर्त्तिता ॥३४७१॥
अहमस्मीत्यृगुत्पन्ने पुरुषस्य गतावपि ।
द्वयोस्तु पुरुषव्याघ्रो गृध्रे ना पुरुषोत्तमे ॥३४७२॥
पुरुषाद्यस्तु विष्णौ स्यादादिनाथर्षभेऽपि च ।
पुरुषान्तरमन्यस्मिन्पुंसि भेदे नृणामपि ॥३४७३॥
विष्णावर्हत्यथाप्यर्हद्विशेषे पुरुषोत्तमः ।
अधिमासे जगन्नाथक्षेत्रेऽपि परिकीर्त्तितः ॥३४७४॥
पुरुष्टुतस्त्रिर्बहुभिः स्तुते पुंसि शिवे मतः ।
पुरुहूतस्तु बहुभिर्हूते त्रिः पुंसि वासवे ॥३४७५॥
पुरुहूता पुनः स्त्रीत्वे दुर्गारूपान्तरे मता ।
[1]पुरोगामी पुरोगे त्रिः कुक्कुरे तु द्वयोर्मतः ॥३४७६॥
पुरोटिः [2]पत्रझङ्कारे नदीवेगेऽपि कस्यचित् ।
[3]पुरोडाशः सोमरसे हविस्तद्दानमन्त्रयोः ॥३४७७॥
हुतशेषे च पुँल्लिङ्गः शब्दोयं परिकीर्त्तितः ।
पुरोद्भवस्त्रि पौरे द्वे वृक्षभेदे पुरोद्भवा ॥३४७८॥

१. पुरोगामी शुनि द्वे स्यात्त्रिषु तु स्यात्पुरःसरे ।
२. पुरसंस्कारे वा ।
३. पुरोडाशो हविर्भेदे चमस्यां पिष्टकस्य च ।

पुरोभागस्तु दोषैकदृक्त्वेऽग्रावस्थितावपि ।
पुरोहितोऽग्रनिहिते त्रिः पुमांस्तु पुरोधसि ॥३४७९॥
[1]पुलः स्यात्पुंसि पुलके तथैव प्रमथान्तरे ।
पुला तालूर्ध्वभागे स्त्री गतिभेदे च वाजिनाम् ॥३४८०॥
पुली तृणादिपूले स्त्री स्यादायामे पुलन्नपि ।
पुलकः पुंसि खड्गस्याखण्डराजिषु हीरके ॥३४८१॥
शाकभेदे द्रुभेदे च तृणादेरपि पूलके ।
कृमिप्रभेदे गल्वर्कमणिदोषप्रभेदयोः ॥३४८२॥
रोमाञ्चे हरिताले च रत्नभेदेऽपि कीर्त्तितः ।
गजान्नपिण्डे गन्धर्वेऽप्यसौ पुलक इष्यते ॥३४८३॥
पुलकी ना कदम्बद्रावथ रोमाञ्चिते त्रिषु ।
पुलस्तिः स्निग्धकेशे त्रिर्ऋषिभेदे पुमान्मतः ॥३४८४॥
पुलस्त्यः ऋषिभेदेऽपि शिवे स्यात्तारकान्तरे ।
पुलहस्त्वृषिभेदेऽपि शिवे स्यात्तारकान्तरे ॥३४८५॥
पुलाकस्तुच्छधान्ये स्यात्संक्षेपे भक्तसिक्थके ।
धान्यभेदे त्वरायाश्च न स्त्रियां परिकीर्त्तितः ॥३४८६॥
पुलिनो स्त्री सैकते ना गरुडेन जितेऽसुरे ।
पुलिन्दो निष्ठ्यपूर्वायां किरात्यां शबरात्सुते ॥३४८७॥
निष्ठ्यादनन्यपूर्वायां किरात्यां च सुते द्वयोः ।
[2]पोलिन्दाख्येऽपि पोताङ्गे नागकन्यान्तरे पुनः ॥३४८८॥
पुलिन्दाऽथ पुलिन्दी तु शबर्यां रागभिद्यपि ।
पुलोमा तु वचायां स्यात्पुत्र्यां वैश्वानरस्य च ॥३४८९॥
पुल्कसः स्याद्द्वयोर्मर्त्यजातिभेदे यदुद्भवः ।
करण्यामपि चण्डालात्क्षत्रियायाश्च शूद्रतः ॥३४९०॥

---

१. पुलः स्यात्पुंसि पुलके विपुले त्वन्यलिङ्गकः ।
२. पोलिन्दाख्येपि पोताङ्गे पुलिन्दा तु स्त्रियां मता ।
नागकन्यान्तरे स्त्री तु पुलिन्दी शबरस्त्रियाम् ।

पुल्लो विकसिते त्रि स्यात्पुष्पे पुल्लन्नपुंसकम् ।
पुल्वो द्वयोः कीटकृमौ कीटे दर्वीकरोरगे ॥३४९१॥
पुषस्तु पोषके त्रि स्यात् ··· ··· ।
[1]पुष्करं नीलकमले कमलेऽपि स्रुचो मुखे ॥३४९२॥
मुरजत्वचि शुण्डाग्रे जले व्योमनि सायके ।
पञ्जरे युधि लास्येंऽशे मदेप्यैक्ये नपुंसकम् ॥३४९३॥
कुष्ठौषधे सोमभौमशनिमत्याममातिथौ ।
असिकोशेऽसिधारायामजमेरुह्रदान्तरे ॥३४९४॥
अस्त्री तु पुष्करद्वीपे ब्रह्माण्डे पञ्चभारते ।
पुमांस्तु योगभेदे च सूर्येऽपि मुरजे ह्रदे ॥३४९५॥
रोगनागभिदोः कृष्णे शिवेऽपि वरुणात्मजे ॥
बुद्धभेदे पुष्कराख्यद्वीपस्याद्रौ द्विजेषु च ॥३४९६॥
कुशद्वीपस्य मेघेषु पुष्करावर्त्तकेषु च ।
नलभ्रातरि ऋक्षेषु कृत्तिकाद्येषु तत्र च ॥३४९७॥
पुनर्वसूत्तराषाढाकृत्तिकोत्तरफल्गुनि ।
पूर्वभाद्रपदा चैव विशाखे यद्यवस्थिताः ॥३४९८॥
द्वयोस्तु सारसे स्त्री तु पुष्करी शिवमातरि ।
पुष्करी स्यादिभे खड्गेऽथ पद्मवति वाच्यवत् ॥३४९९॥
स्त्रियां पुष्करिणी चेभ्यां सरोजिन्यां जलाशये ।
अथ पुष्करपर्णन्तु क्लीबं स्यादिष्टकान्तरे ॥३५००॥
पुष्करस्रक्तु योगार्थेऽश्विनोस्तौ पुष्करस्रजौ ।
पुष्कराक्षस्तु विष्णौ ना सारसे तु द्वयोर्मतः ॥३५०१॥
दाक्षायण्यां च पूर्भेदे स्त्रीत्वे स्यात्पुष्करावती ।
पुष्कराह्वः सारसे द्वे क्ली तु स्यात्कुष्ठभेषजे ॥३५०२॥

---

१. पुष्करं करिहस्ताग्रे जले वाद्यमुखे युधि ।
खेऽब्जे दिव्यसिधारायां तीर्थभेषजभेदयोः ।
काण्डे कुष्ठौषधे द्वीपभेदेऽपि पटहे तथा ।

[1]पुष्कलं भेद्यवच्छुद्धे सारे रम्यप्रभूतयोः ।
पुमान्पुष्करवाद्येऽपि तरुवाद्यान्तरेषु च ॥३५०३॥
शिवे वरुणपुत्रेऽपि बुद्धभिद्यसुरान्तरे ।
नृभूम्नि तु कुशद्वीपक्षत्रियेष्विह पुष्कलाः ॥३५०४॥
पुष्कलं तीर्थभेदेऽपि चमसे दुश्चिकाष्टके ।
हिरण्यमानभेदेऽपि भिक्षागणचतुष्टये ॥३५०५॥
केचित्तु पुष्कलं क्लीबमाहुर्मेरुमहीभृति ।
अथ पुष्कलको गन्धमृगे क्षपणकीलयोः ॥३५०६॥
पुष्टं पुष्टौ धने स्थूलपालितादौ तु वाच्यवत् ।
पुष्टग्रीवस्तु पुँल्लिङ्गो गर्गरी-ताम्रकुम्भयोः ॥३५०७॥
पुष्टिस्तु पोषणे वृद्धौ स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
पुष्टिर्धने धर्मपत्नयामपि च स्त्री व्रतान्तरे ॥३५०८॥
अश्वगन्धौषधे शक्तिमातृकेन्दुकलासु च ।
दाक्षायण्यां सरस्वत्यां प्रकृतेश्च कलान्तरे ॥३५०९॥
पुष्टिदाः पितृभेदे स्युः पुष्टिदा वृद्धिभेषजे ।
अश्वगन्धौषधे चापि स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥३५१०॥
पुष्टिवर्द्धन इत्युक्तश्चाषाख्यविहगे द्वयोः ।
त्रि तु वर्द्धनके पुष्टेरन्यच्चेद्दशमूह्यताम् ॥३५११॥
[2]पुष्पः पुमान् विकासे स्यात्स्त्री तु पुष्पी बलौषधे ।
पुष्पोऽस्त्री कुसुमे योषिदार्त्तवे नेत्ररुग्भिदि ॥३५१२॥
नखदन्तादिकस्थेऽङ्के गन्धभित्सामभेदयोः ।
प्रणयोक्तौ कुबेरस्य विमने पुष्पकाभिधे ॥३५१३॥
विमाने तु पुमान्नागरत्नगिर्यन्तरेषु च ।
बोध्यन्तरे पुष्पसूत्रे पुष्पा चम्पापुरी स्त्रियाम् ॥३५१४॥

---

१. पुष्कलं भेद्यवच्छुद्धे प्रभूते शोभनेप्यथ (नदीभिदि) ।
भिक्षाचतुष्टये च स्याद्दषिभेदे च पुंस्ययम् ।
सुष्ट्यष्टकाष्टके तु क्ली तथा धान्यहिरण्ययोः ।
२. पुष्पोऽस्त्री स्यात्प्रसूने च योषितामार्त्तवेऽप्यथ ।

पुष्पकस्त्रिः पुष्पितरि ना विमाने धनेशितुः ।
द्वयोस्तु द्वादशानां निर्विषाणां भोगिनां क्वचित् ॥३५१५॥
पुष्पकं रीतिपुष्पे च नेत्ररोगे रसाञ्जने ।
लौहकांस्ये मृदङ्गारशकट्यां रत्नकङ्कणे ॥३५१६॥
पुष्पिका स्याद्दन्तमले जिह्वाशिश्नोर्मलेषु च ।
पुष्पकालो वसन्तेऽप्यार्त्तवस्य समयेऽपि च ॥३५१७॥
पुष्पकेतुः पुमान्कामे तथा पुष्पाञ्जनेऽपि च ।
पुष्पजं क्ली परागेऽथ पुंसि पुष्परसे मतः ॥३५१८॥
पुष्पजा तु स्त्रियां विन्ध्यसमुद्भूते सरिद्भिदि ।
पुष्पदन्तस्तु ना वायुदिग्गजे विष्णुघोटके ॥३५१९॥
शिवे नागान्तरे शूद्रजेऽथाद्रौ नवमार्हति ।
विद्याधरान्तरे पुष्पदन्तौ तु शशिसूर्ययोः ॥३५२०॥
पुष्पदन्ती राक्षसीभिद्यथ क्ली गोपुरान्तरे ।
पुष्पदामप्रसूनानां माल्ये छन्दोन्तरेऽपि च ॥३५२१॥
क्लीबं पुष्पफलं द्वन्द्वे कपित्थे तु पुमान्मतः ।
कपित्थेऽपि च कूष्माण्डे पुमान्पुष्पफलो मतः ॥३५२२॥
पुष्पभद्रो वास्तुभेदे द्वाषष्टिस्तम्भभूषिते ।
पुष्पभद्रा नदीभेदे क्लीबं तु नगरान्तरे ॥३५२३॥
अथ पुष्परजः क्लीवं परागे कुङ्कुमेपि च ।
पुष्पवत्त्रिः सकुसुमे स्त्री तु पुष्पवती मता ॥३५२४॥
रजस्वलायां नृ द्वे तु रवीन्द्वोः पुष्पवन्तवत् ।
वृषस्यन्त्यां गवादौ च [मता पुष्पवती स्त्रियाम्] ॥३५२५॥
पुष्पसारा तुलस्यां स्त्री पुष्पसारो मरन्दके ।
पुष्पहासर्तुमत्यां स्त्री पुष्पहासः पुमान्हरौ ॥३५२६॥
पुष्पहीना तु वृद्धायामुदुम्बरतरावपि ।
पुष्पाढ्यस्तु स्वयं शीर्णपुष्पमूलफलाशने ॥३५२७॥
व्रतिभेदे त्रिषु पुनः पुष्पैराढ्ये प्रकीर्त्तितः ।
पुष्पाभिकीर्णकस्तु द्वे स्याद्दर्वीकरसंज्ञिनाम् ॥३५२८॥

पुष्पितं त्रिर्विकसिते सपुष्पे मृत्युगन्धिनि ।
पुष्पिता ऋतुमत्यां स्यात्पुमान्बुद्धान्तरे मतः ॥३५२९॥
भुजङ्गमानां भेदे च वैकरञ्जाभिधावताम् ।
पुष्यस्तु ना कलियुगे पौषे बुद्धान्तरे तथा ॥३५३०॥
नक्षत्रे तिष्यसिद्ध्यादिनामभिर्विश्रुते मतः ।
तद्युक्ते कालसामान्ये त्रिस्तु तत्र भवेऽथ च ॥३५३१॥
[1]पुष्टावप्युत्तमफले क्ली कूष्माण्डफलेऽपि च ।
वैरूपाष्टकवर्गस्य साम्नि चैवान्तिमे स्मृतम् ॥३५३२॥
पुष्या तु वृक्षभेदेऽपि तिष्यऋक्षेऽपि च क्वचित् ।
[2]पुस्तोऽस्त्रियां मतो लेख्ये क्ली तु लेप्यादिकर्मणि ॥३५३३॥
पुस्ताऽपि कस्यचिल्लेख्येऽथ पुस्तं छादिते त्रिषु ।
पुस्तकोऽस्त्री मतो लेप्ये ग्रन्थे तु त्रिषु पुस्तिका ॥३५३४॥
पूरुत्तरस्थः पानस्य शुद्धेः कर्तरि च त्रिषु ।
पूग्यक्ली क्रमुके क्ली तत्फले ना त्वद्रिवृन्दयोः ॥३५३५॥
फलसारे च पूगी तु स्त्री मलप्वां सरिद्भिदि ।
पूजितः पूजनीये त्रिर्देवे पुंसि प्रकीर्त्तितः ॥३५३६॥
पूज्यः पुमान्स्याच्छ्वशुरे पूजनीये त्रिषु स्मृतः ।
पूतं त्रिषु पवित्रे च शटिते बहुलीकृते ॥३५३७॥
पूतः शङ्खे श्वेतकुशे [पूतौ द्वित्वे नितम्बयोः] ।
[3]पूतद्रुः खदिरे देवदारुण्यपि पुमान्मतः ॥३५३८॥
पूतना तु हरीतक्यां दानवीरोगभेदयोः ।
रवेरंशुचतुःशत्या वृष्टिदात्र्याः शते क्वचित् ॥३५३९॥
पूतनस्तु द्वयोः प्रेतभेदेऽपि परिकीर्त्तितः ।
पूतरस्त्वधमे त्रिः स्याद्यादोभेदे द्वयोर्मतः ॥३५४०॥

---

१. पुष्यं तु कूष्माण्डफले नपुंसकमुदीरितम् ।
२. पुमान्पुष्पफलः कूष्माण्डे योगे तु यथायथम् ।
३. पूतौ तु पुं द्विवचने नितम्बौ परिकीर्त्तितौ ।

पूतिर्दुःखे च दुर्गन्धे तृणजात्यन्तरे पुमान् ।
पवनाख्यक्रियायां स्त्री दुर्गन्धवति तु त्रिषु ॥३५४१॥
पूतिकस्तृणभेदे यः सोमभेदे प्रयुज्यते ।
स्यात्पूतिकरजे कर्णरुजायां पूतिकर्णकः ॥३५४२॥
पूतिकाष्ठं तु सरले देवदारुणि चापि नप् ।
पूतिगन्धो गन्धकेऽपि नेङ्गुदीवृक्षमात्रके ॥३५४३॥
पूतिपुष्पी मातुलुङ्ग्यां योगार्थे तु त्रिषु स्मृता ।
स्त्री तु पूतिफली सोमराज्यां विस्रफले त्रिषु ॥३५४४॥
[1]पूतीकः पूतिकार्थेपि दुर्गन्धे तु त्रिषु स्मृतः ।
पूतीकोपोदिकायाञ्च स्त्री पिपीलकभिद्यपि ॥३५४५॥
नपुंसकन्तु पूतीकं पुरीषे परिकीर्त्तितम् ।
पूत्कारः पूत्कृतौ पुंसि पूत्कारी तु स्त्रियां मता ॥३५४६॥
सरस्वत्यां च केषाञ्चिद्भोगवत्यामपीष्यते ।
पूत्यण्डस्तु द्वयोरण्डकारकाख्येऽल्पपक्षिणि ॥३५४७॥
गन्धकीटेऽपि पूत्यण्डा द्वयोः कस्तूरिकामृगे ।
[2]पूरः पुनर्नवायां च नद्यादेर्जलबृंहणे ॥३५४८॥
खाद्यान्तरे व्रणस्यापि संशुद्धौ पुंसि कीर्त्तितः ।
प्राणायामे पूरकाख्ये बीजपूरद्रुमेऽपि च ॥३५४९॥
पूरी स्त्री वंशवाद्येऽपि खाद्यभेदे प्रकीर्त्तिता ।
प्रपूरणे तु पूरो ना पूराऽपि स्त्रीत्व इष्यते ॥३५५०॥
स्यात्पूरयितृपूरित्रोः पूरको भेद्यलिङ्गकः ।
[3]पूरकस्तु कलाये ना पूरेऽपि गुणकेऽपि च ॥३५५१॥
प्राणायामान्तरे पिण्डभेदे स्याद्बीजपूरके ।
अपूपभेदे तु स्त्रीत्वे पूरिकेति प्रकीर्त्तिता ॥३५५२॥

---

१. खट्टाशे तु द्वयोरेषु पूतीकोपि प्रयुज्यते ।
२. पूत्यण्डः कीटभेदेपि द्वयोः कस्तूरिकामृगे ।
पुरुत्तरस्थः पानस्य शुद्धेः कर्त्तरि च त्रिषु ।
३. पूरकस्तु कलायेथाऽपूपभेदे तु पूरिका ।

पूरणं पूर्त्तिकर्मण्यना पूरयतेर्युचि ।
पूरणा पूरणी तु स्त्री शाल्मलौ च तथाल्पके ॥३५५३॥
पुनर्नवाजातिभेदे त्रि तु स्यात्पूर्त्तिसाधने ।
[समुद्रसेतौ तु] पुमान्पूरणः परिकीर्त्तितः ॥३५५४॥
पूर्णं क्लीबं जले पूर्त्तौ पूर्णा स्त्री पूर्णिमातिथौ ।
पञ्चमी दशमी पञ्चदशीष्वपि तिथिष्वथ ॥३५५५॥
पूरिते त्रि समग्रे च शरस्याकर्णकर्षणे ।
पूर्णं शक्ते समग्रे ना पूरिते त्वभिधेयवत् ॥३५५६॥
पूर्णकः स्वर्णपुच्छे स्यान्नासाच्छिन्न्यां तु पूर्णिका ।
पूर्णिमायां चाथ पूर्णसुखादौ त्रिषु पूर्णकः ॥३५५७॥
पूर्णकूटो द्वयोः कूटपूरिचापविहङ्गयोः ।
पूर्णकोशस्त्वपूपे ना पूर्णकोशौषधिभिदि ॥३५५८॥
पूर्णपात्रोऽस्त्रियां मित्रैर्वस्त्रमाल्यादि यद्बलात् ।
आच्छिद्योत्सवकालेषु गृह्यते तत्र कीर्त्तितः ॥३५५९॥
यस्य प्रमाणं मुष्टीनां षट्पञ्चाशच्छतद्वयम् ।
तत्रापि तण्डुलाद्येऽथ त्रिस्तु स्यात्पूर्णभाजने ॥३५६०॥
पूर्णानकं तूत्सवेषु बलादाकृष्य गृह्यते ।
वस्त्रमाल्यादियन्मित्रैस्तत्र स्त्री त्वानके मृते ॥३५६१॥
पूर्त्तं त्रि रक्षिते चूर्णे क्ली तु खातादिकर्मणि ।
पूर्वा प्राच्यां स्त्रियां पूर्वस्त्व्यपरप्रतियोगिनि ॥३५६२॥
दिग्देशकालविषये पुराणेऽग्रे तथाऽऽदिमे ।
पूर्वाः पितामहाद्येषु पूर्वजेषु नृभूमनि ॥३५६३॥
पूर्वेद्युः [स्तु प्रभाते] स्यात्तथैव धर्मवासरे ।
पूषा वृद्धौ द्वयोः पूषो ब्रह्मदारुद्रुमे पुमान् ॥३५६४॥
[1]पृक्षोन्नेपि च संग्रामे पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
पृतना तु स्त्रियां युद्धे सेनायामपि कीर्त्तिता ॥३५६५॥

---

१. अन्नसंग्रामयोः पृक्षं समाम्नाये समाम तत् ।

सेनाभेदेपि वाहिन्याः पृतना त्रिगुणात्मनि ।
पृथो हस्ततले पुंसि पृथा कुन्त्यां स्त्रियां मता ॥३५६६॥
त्रयोदशाङ्गुलमिते मानेऽपि परिकीर्त्तिता ।
पृथग्जनस्तु मूर्खेऽपि नीचेऽपि च पुमान्मतः ॥३५६७॥
पृथिवी तु स्त्रियां भूमावाकाशेऽपि प्रकीर्त्तिता ।
पृथिवीपतिरुक्तो ना ऋषभाभिधभेषजे ॥३५६८॥
धर्मराजे च भूपाले तथैव नरकासुरे ।
पृथुर्वैन्ये त्रिशङ्कोश्च जनकेऽप्यनरण्यजे ॥३५६९॥
राजान्तरे कृष्णपक्ष्येऽग्नौ विस्तीर्णे तु स त्रिषु ।
तत्र स्त्रियां पृथुः पृथ्वी द्वयं तत्कृष्णजीरके ॥३५७०॥
पृथ्वी तु स्त्री पृथिव्यां स्यात्पृथुर्वाष्प्यौषधेऽस्त्रियाम् ।
स्त्रीपुंसयोः पृथुरयम् वानरे परिकीर्त्तितः ॥३५७१॥
पृथुकः पुंसि चिपिटे शिशौ स्यादभिधेयवत् ।
पृथुचित्रः कुण्ठमितः धान्यसंग्राहके पुमान् ॥३५७२॥
गृहस्थे स्थूलचित्रे तु वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ।
पृथुच्छदः शाकवृक्षे स्थूलपर्णे पुनस्त्रिषु ॥३५७३॥
पृथुरोमा द्वयोर्मत्स्ये स्थूलरोम्णि त्रिषु स्मृतः ।
पृथुहस्तस्त्रिषु स्थूलकरे पुंसि तु हस्तिनः ॥३५७४॥
ये करस्याङ्गुलेरूर्ध्वं सप्तांशास्तेषु सप्तमे ।
पृथ्वी भूमौ महत्यां च त्वक्पत्र्यां कृष्णजीरके ॥३५७५॥
पृथ्वीका पुनरेलायां तथा स्यात्कृष्णजीरके ।
[1]पृदाकुर्गोत्रकृद्दष्यन्तरे पुंसि प्रकीर्त्तितः ॥३५७६॥
पृदाकुर्वृश्चिके व्याघ्रे सर्पचित्रकयोरनप् ।
पृश्निर्ना किरणे स्वर्गे सूर्ये देवान्तरेषु च ॥३५७७॥
क्लीवं तुन्ने च साम्नोश्च बृहद्भिरिति गीतयोः ।
त्रिषु त्वल्पवपुर्जन्तौ बिन्दुचित्रपशावपि ॥३५७८॥

१. द्वयोः पृदाकुरुदितः पन्नगे वृश्चिकेपि च ।

विराजः पृश्नय इति त्वत्रवर्णनिबन्धनः ।
बिन्दुमत्त्वनिमित्तो वा प्रयोग इति संशयः ॥३५७९॥
पृषत्पुण्ड्रे च बिन्दौ च पशुगात्रादिबिन्दुषु ।
तथा दध्युपसिक्ताज्ये कुविन्दस्य च तन्त्रके ॥३५८०॥
[1]अथ द्वे मृगभिद्येष त्रिस्तु स्याच्छ्वेतबिन्दुके ।
पृषतः पृश्निसंज्ञे स्यात्पुँल्लिङ्गो देहवैकृते ॥३५८१॥
श्वेतबिन्दुयुते तु त्रिर्मृगभेदे द्वयोर्मतः ।
[2]शम्बरस्तु सबिन्दुश्चेत्पृषतो सावितिस्मृते ॥३५८२॥
पृषातको दध्नि साज्ये घृतदुग्धे पृषातकम् ।
पृष्ठमन्त्यांशमात्रेऽपि पश्चादंशे तनोरपि ॥३५८३॥
चतुर्षु सामस्तोत्रेषु क्रतोः सामान्तरे कुशे ।
पृष्ठशृङ्गी पुमान्दंशभीरौ षण्डे वृकोदरे ॥३५८४॥
स्यात्पृष्ठहायनो धान्यान्तरे द्वे तु मतङ्गजे ।
पेचको ना हस्तिपुच्छमूलोपान्ते द्वयोः पुनः ॥३५८५॥
उलूके पेचिका तु स्त्री पिङ्गलासंज्ञपक्षिणि ।
पेटकः पेटिकावृन्दे द्वयोर्ना पिटके स्मृतः ॥३५८६॥
पेटा दास्यां स्त्री त्रि पेटी पेडायां पेटके त्रिषु ।
पेत्वस्तप्ते भुवोंऽशे ना पशौ गालितमुष्कके ॥३५८७॥
मेषे तु पेत्वः पेत्वीति मिथुने परिकीर्त्यते ।
पेयस्तु त्रिषु पातव्ये रक्षितव्ये च कीर्त्तितः ॥३५८८॥
पेया तु विरलायां स्त्री यवाग्वां परिकीर्त्तिता ।
पेयं पातव्यपयसोः पेया श्राणाच्छमण्डयोः ॥३५८९॥
पेरुर्नाऽब्धौ रवौ शैले कलविङ्के त्वयं द्वयोः ।
पेलवन्तु त्रिषु मृदौ मरिचे तु नपुंसकम् ॥३५९०॥
पेशलस्तु मतश्चारौ दक्षे चाप्यभिधेयवत् ।
पेशो रूपे सुवर्णेऽपि सकारान्तं नपुंसकम् ॥३५९१॥

---

१. पृषत्पुनर्द्वयोरेष मृगभेदे प्रकीर्त्तितः ।
२. मृगस्तु ताम्रो हरिणो हरिणोऽल्पश्च शम्बरः ।

पेशी सुपक्वकलिके मांस्यां खङ्गपिधानके।
मांसपिण्ड्यां तथैवाण्डभेदेप्येषा स्त्रियाम्मता ॥३५९२॥
पोगण्डस्तु द्वयोर्यूनि विकलाङ्गे तु भेद्यवत्।
भवेत्पोटगलः काशे स्तम्बेऽपि नडसंज्ञके ॥३५९३॥
पोटा दास्यां राज्यकर्त्र्यां स्त्रीपुंसाङ्कनपुंसके।
पुमान्पोडगलः काशे नडे मत्स्यान्तरेऽपि च ॥३५९४॥
वैकरञ्जाख्यसर्पाणां त्रयाणां च क्वचिन्मतः।
पोतोऽपत्ये दशाऽब्दे भे शिशौ द्वे तरुणे पशौ ॥३५९५॥
यानपात्रे तु पोतो ना गृहस्थाने च वाससि।
पोत्रं वज्रे मुखाग्रे च सूकरस्य हलस्य च ॥३५९६॥
पोला तु परिखायाश्च द्वारयन्त्रणतालके।
पोषयित्नुः पुमान्मेघे कोकिले तु द्वयोर्मतः ॥३५९७॥
पौंस्नं पुंसवने क्लीबं पुंसः सम्बन्धिनि त्रिषु।
पौंस्यं बले च युद्धे च नपुंसकमुदीरितम् ॥३५९८॥
पौरः पुमाञ्श्वेतशालौ बलदेवे च कीर्त्तितः।
पुरसम्बन्धिनि त्रि स्यात्क्लीबं तु ध्यामकौषधे ॥३५९९॥
पौरुषं नपि भावे च पुंसः कर्मणि चोच्यते।
शौर्ये रेतसि च त्रिस्तु पुंसम्बन्धिन्युदीर्यते ॥३६००॥
ऊर्ध्वविस्तृतदोःपाणि नृमानेपि तथा भवेत्।
[1]पौरुषेयः कृते पुंसा विकारे पुरुषस्य च ॥३६०१॥
त्रिषु ना सङ्घवधयोः पुरुषस्य पदान्तरे।
पौरोहितमथर्वस्वप्यथ पौरोधसे त्रिषु ॥३६०२॥
पौर्णमासी पूर्णिमायां पौर्णमासो मखान्तरे।
पौलस्त्यस्तु कुबेरेऽपि रावणेऽपि पुमान्मतः ॥३६०३॥
द्वयोः पुलस्त्यवंशे स्यात्क्लीबं युद्धे प्रकीर्त्तितम्।
पौषस्तु तैषमासे स्यात्पौषे सामान्तरे मतम् ॥३६०४॥

---

१. पौरुषेयं तु पुरुषकृतेपि पुरुषस्य च।
विकारेऽपि वधेऽप्येतद्वाच्यवत्परिकीर्त्तितम्।

पौषी तु पुष्यनक्षत्रयुक्तायां पूर्णिमातिथौ ।
प्र प्रकर्षे गताद्यर्थेऽप्यव्ययं परिकीर्त्तितम् ॥३६०५॥
प्रकरः स्यात्पुमान्सङ्घे विशीर्णकुसुमादिषु ।
नपुंसकं जोङ्गके स्त्री नाट्याङ्गे चत्वरावनौ ॥३६०६॥
[1]प्रघट्टके प्रकरणं प्रकीर्णौ रूपकान्तरे ।
प्रकाण्डः पादपस्योक्तो मूलस्कन्धान्तरेऽपि च ॥३६०७॥
विटपेऽपि प्रशस्तेऽपि पुंनपुंसकलिङ्गकः ।
प्रकारः पुंसि सादृश्ये भेदेऽपि परिकीर्त्तितः ॥३६०८॥
प्रकाशोऽर्चिषि दीप्तौ ना [2]तुल्ये स्फुटेऽपि त्रिषु ।
[3]प्रकीर्णकं त्रिः संकीर्णे चामरे क्ली द्वयोर्हये ॥३६०९॥
प्रकीर्यः पूतिकरजे विनिकीर्णे तु वाच्यवत् ।
प्रकृतिः पञ्चभूतेषु स्वभावे मूलकारणे ॥३६१०॥
कारणे शिश्नयोन्योश्च जन्त्वमात्यादिमातृषु ।
प्रत्ययात्पूर्वभागे च छन्दस्यष्टस्वरेऽपि च ॥३६११॥
अत्युक्ताख्यं च चतुरशीत्यब्दे सलिलाभिधे ।
स्यात्प्रकोष्ठस्तु हस्तस्य कफोणिमणिबन्धयोः ॥३६१२॥
मध्येऽलिके च भूपालसद्मकक्ष्यान्तरेऽपि च ।
अथ प्रक्रम आरम्भेऽवसरेऽपि क्रमेऽपि च ॥३६१३॥
प्रमाणभेदेऽप्युक्तोऽसौ द्विपदस्त्रिपदोऽपि वा ।
प्रक्रिया चाधिकारेऽपि प्रकारे शब्दसाधने ॥३६१४॥
प्रक्षरं क्ली तुरङ्गादेः संनाहे प्रखराह्वये ।
त्रिषु त्वतिक्षरितरि प्रक्षरः परिकीर्त्तितः ॥३६१५॥
प्रखरोऽस्त्री तुरङ्गादेः संनाहे प्रक्षराह्वये ।
द्वे कुक्कुरे चाश्वतरे खलातिखरयोस्त्रिषु ॥३६१६॥

---

१. प्रकरस्तत्पुष्पादौ ना प्रकीर्णसमूहयोः ।
क्लीबं त्वगुरुसंज्ञे तद्गन्धद्रव्ये प्रकीर्त्तितम् ।
(अथ प्रकरणं प्रोक्तं प्रकीर्णौ रूपकान्तरे ।)
२. ख्याते वा ।
३. प्रकाशस्तु स्फुटे ख्याते प्रहासातपयोरपि ।

प्रगाढस्तु भृशे चापि कृच्छ्रे चाप्यभिधेयवत् ।
प्रग्रहस्तु तुलासूत्रे वन्द्यामारग्वधद्रुमे ॥३६१७॥
अश्वादिरश्मौ रश्मौ च तथा नियमनेऽर्चने ।
प्रग्राहस्तु तुलासूत्रे तथैवाश्वादिरश्मिषु ॥३६१८॥
प्रग्रीवमस्त्री कलशे ग्रीवाप्रासादयोरपि ।
प्रघणस्ताम्रकुम्भे स्यादलिन्दे लोहमुद्गरे ॥३६१९॥
प्रघाणस्तु तरुस्कन्धेप्यलिन्देऽपि पुमान्मतः ।
प्रचण्डो दुर्वहे श्वेतकरवीरे प्रतापिनि ॥३६२०॥
प्रचलाको मयूरस्य शिखण्डे पुंसि कीर्त्तितः ।
बिम्बाख्यकृकलासे तु नानावर्णकरे द्वयोः ॥३६२१॥
प्रचलाकी मयूरे च सर्पे चापि द्वयोर्मतः ।
प्रचारः पुंसि खङ्गे च स्यात् प्रायश्चरणेपि च ॥३६२२॥
प्रचेताः वरुणेऽग्नौ ना त्रिषु तूत्कृष्टचेतसि ।
[1]प्रचोदनी कण्टकार्यां स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥३६२३॥
प्रचोदना प्रेरणायां तथैव स्यात्प्रचोदनम् ।
प्रच्छन्नं छादिते त्रि स्यादन्तर्द्वारे गृहस्य नप् ॥३६२४॥
क्लीबं प्रजननं प्रोक्तं प्रजातावप्युपस्थयोः ।
प्रजा जने च संताने स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ॥३६२५॥
प्रजाकरस्तु खङ्गे ना योगार्थे तु यथायथम् ।
प्रजागमस्तु पुंसि स्यात् प्रजाया आगमे तथा ॥३६२६॥
एकाहाहीनसत्राख्ययज्ञक्रतुषु च स्मृतः ।
प्रजापतिश्च दक्षादौ महीपाले विधातरि ॥३६२७॥
प्रजावती भ्रातृपत्न्यां प्रजावत्तु त्रि सप्रजे ।
प्रज्ञस्तु पण्डिते त्रि स्यात्प्रज्ञाबुद्धौ स्त्रियां मता ॥३६२८॥
प्रज्ञानं तु मतौ चिह्ने नपुंसकमुदीरितम् ।
त्रिषु प्रज्वलितं दग्धे दीप्ते दीपित एव च ॥३६२९॥

१. प्रचेताः पाशिनि मुनौ ना प्रहृष्टहृदि त्रिषु ।

प्रणयः स्यात्परिचये विस्रम्भे प्रसरेऽपि च ।
याञ्चासौहृदनिर्माणेष्वपि पुंसि प्रकीर्त्तितः ॥३६३०॥
प्रणवस्तु पुमान्स्तुत्यामोंकारेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
प्रणादस्तु पुमांस्तारशब्दे च श्रवणामये ॥३६३१॥
प्रणाप्यो संमते चापि निष्कामे चाभिधेयवत् ।
प्रणिधानं प्रयत्ने स्यात्समाधौ च प्रवेशने ॥३६३२॥
प्रणिधिः प्रणिधाने च प्रार्थनेऽपि चरेऽपि च ।
त्रिषु प्रणिहितं प्राप्ते न्यस्तेऽपि च समाहिते ॥३६३३॥
[1]प्रणीतः संस्कृताग्नौ ना यज्ञपात्रान्तरे स्त्रियाम् ।
त्रिषु क्षिप्तोपसंपन्नविहितेषु प्रवेशिते ॥३६३४॥
प्रततं वितते चापि क्षुण्णे चाप्यभिधेयवत् ।
प्रततिर्वल्लिविस्तारवीरुत्सु स्त्री प्रकीर्त्तिता ॥३६३५॥
प्रतलं पातालभेदे तताङ्गुलिकरे पुमान् ।
प्रतापो ना प्रभावेऽपि भृशतापे प्रकीर्त्तितः ॥३६३६॥
प्रतापसो ना श्वेतार्के मृदुशृङ्गमृगे द्वयोः ।
प्रतारिका स्त्रियां नाभौ वञ्चके ना प्रतारकः ॥३६३७॥
प्रति प्रतिनिधावित्थम्भूताख्यानाभिमुख्ययोः ।
मात्राऽर्थभागवीप्सासु लक्षणप्रतिदानयोः ॥३६३८॥
प्रतिकाशः प्रतीकाशस्तुल्यार्थावुत्तरे पदे ।
मूलस्याधःप्रदेशेपि गजानां पूर्वपादयोः ॥३६३९॥
स्त्रियां प्रतिकृतिः प्रोक्ता प्रतिमाप्रतिकारयोः ।
तथा प्रतिनिधावेषा प्रतिकृतिः परिकीर्त्तिता ॥३६४०॥
प्रतिकृष्टं मतं गुह्यो द्विरावृत्या च कर्षिते ।
प्रतिग्रहः क्रियाकारे सैन्यपृष्ठे पतद्ग्रहे ॥३६४१॥
द्विजेभ्यो विधिवद्देये तद्ग्रहे स्वीकृतावपि ।
प्रतिग्राहयतेस्त्वर्थे प्रतिग्राहश्च तद्ग्रहे ॥३६४२॥

---

१. प्रणीत उपसंपन्नौदनादौ च प्रवेशिते ।
निर्मितक्षिप्तयोर्नीते विधिनाग्नौ च वाच्यवत् ।

प्रतिग्राहः स्वीकरणे सैन्यपृष्ठे पतद्ग्रहे ।
द्विजेभ्यो विधिवद्देये तद्ग्रहे च ग्रहान्तरे ॥३६४३॥
प्रतिघस्तु प्रतिहतौ स्यात्क्रोधवधयोरपि ।
प्रतिदानं परीवर्त्तन्यासद्रव्यस्य चार्पणे ॥३६४४॥
पुंसि प्रतिदिवाऽह्नि स्यादपराह्णेऽपि च स्मृतः ।
'प्रतिपत्तिः प्रवृत्तौ च प्रतिभाज्ञानयोः स्त्रियाम् ॥३६४५॥
प्रागल्भ्ये गौरवे प्राप्तौ विश्वासेऽपि प्रकीर्त्तिता ।
प्रतिपद् स्त्री मता बोधे पक्षस्याद्यतिथावपि ॥३६४६॥
स्याद्बहिष्पवमानस्य प्रथमायां तथा ऋचि ।
प्रतिपन्नोऽन्यलिङ्गः स्याद्विज्ञानेऽङ्गीकृतेऽपि च ॥३६४७॥
बोधके त्रिषु खट्वाङ्गाधारे स्यात्प्रतिपादकम् ।
स्त्रीनपुंसकयोर्दाने ज्ञापने प्रतिपादना' ॥३६४८॥
प्रतिभा प्रतिभासे स्त्री प्रतिभो ना विदूषके ।
अथाऽभिधेयवत्प्रोक्तः प्रतिभः प्रतिभातरि ॥३६४९॥
क्लीबं प्रतिभयं भीतौ त्रिषु तु स्याद्भयानके ।
प्रतिमा तु प्रतिकृतौ गजानां दन्तबन्धने ॥३६५०॥
प्रतिमानं प्रतिकृतौ गजदन्तद्वयान्तरे ।
प्रतियत्नस्तु संस्कार उपग्रहणलिप्सयोः ॥३६५१॥
प्रतिशिष्टं निरस्ते चाप्याहूय प्रेषिते त्रिषु ।
प्रतिश्रयस्तु विज्ञेयः स्थाने गोष्ठ्यां तथा पुमान् ॥३६५२॥
प्रत्याहारे तथा सत्रशाले मण्डप आश्रये ।
प्रतिष्कशस्त्रिः सहाये प्रष्ठे च प्रतिगन्तरि ॥३६५३॥
प्रतिष्कशस्त्वयं धूते पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
प्रतिष्ठा स्थितिमाहात्म्यस्थानगौरवभूमिषु ॥३६५४॥

---

१. प्रतिपत्तिः प्रवृत्तौ च प्रागल्भ्ये गौरवेपि च ।
संप्राप्तौ च प्रबोधे च पदप्राप्तौ च बोधिते ।
२. प्रतिपादनं तु दाने प्रतिपत्तौ च बोधने ।

प्रणयः स्यात्परिचये विस्रम्भे प्रसरेऽपि च ।
याश्ञासौहृदनिर्माणेष्वपि पुंसि प्रकीर्त्तितः ॥३६३०॥
प्रणवस्तु पुमान्स्तुत्यामोंकारेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
प्रणादस्तु पुमांस्तारशब्दे च श्रवणामये ॥३६३१॥
प्रणाप्यो संमते चापि निष्कामे चाभिधेयवत् ।
प्रणिधानं प्रयत्ने स्यात्समाधौ च प्रवेशने ॥३६३२॥
प्रणिधिः प्रणिधाने च प्रार्थनेऽपि चरेऽपि च ।
त्रिषु प्रणिहितं प्राप्ते न्यस्तेऽपि च समाहिते ॥३६३३॥
[1]प्रणीतः संस्कृताग्नौ ना यज्ञपात्रान्तरे स्त्रियाम् ।
त्रिषु क्षिप्तोपसंपन्नविहितेषु प्रवेशिते ॥३६३४॥
प्रततं वितते चापि क्षुण्णे चाप्यभिधेयवत् ।
प्रततिर्वल्लिविस्तारवीरुत्सु स्त्री प्रकीर्त्तिता ॥३६३५॥
प्रतलं पातालभेदे तताङ्गुलिकरे पुमान् ।
प्रतापो ना प्रभावेऽपि भृशतापे प्रकीर्त्तितः ॥३६३६॥
प्रतापसो ना श्वेतार्के मृदुशृङ्गमृगे द्वयोः ।
प्रतारिका स्त्रियां नाभौ वञ्चके ना प्रतारकः ॥३६३७॥
प्रति प्रतिनिधावित्थम्भूताख्यानाभिमुख्ययोः ।
मात्राऽर्थभागवीप्सासु लक्षणप्रतिदानयोः ॥३६३८॥
प्रतिकाशः प्रतीकाशस्तुल्यार्थावुत्तरे पदे ।
मूलस्याधःप्रदेशेपि गजानां पूर्वपादयोः ॥३६३९॥
स्त्रियां प्रतिकृतिः प्रोक्ता प्रतिमाप्रतिकारयोः ।
तथा प्रतिनिधावेषा प्रतिकृतिः परिकीर्त्तिता ॥३६४०॥
प्रतिकृष्टं मतं गुह्यो द्विरावृत्या च कर्षिते ।
प्रतिग्रहः क्रियाकारे सैन्यपृष्ठे पतद्ग्रहे ॥३६४१॥
द्विजेभ्यो विधिवद्देये तद्ग्रहे स्वीकृतावपि ।
प्रतिग्राहयतेस्त्वर्थे प्रतिग्राहश्च तद्ग्रहे ॥३६४२॥

---

१. प्रणीत उपसंपन्नौदनादौ च प्रवेशिते ।
निर्मितक्षिप्तयोर्नीते विधिनाग्नौ च वाच्यवत् ।

प्रतिग्राहः स्वीकरणे सैन्यपृष्ठे पतद्ग्रहे ।
द्विजेभ्यो विधिवद्देये तद्ग्रहे च ग्रहान्तरे ॥३६४३॥
प्रतिघस्तु प्रतिहतौ स्यात्क्रोधवधयोरपि ।
प्रतिदानं परीवर्त्तन्यासद्रव्यस्य चार्पणे ॥३६४४॥
पुंसि प्रतिदिवाऽह्नि स्यादपराह्णेऽपि च स्मृतः ।
[1]प्रतिपत्तिः प्रवृत्तौ च प्रतिभाज्ञानयोः स्त्रियाम् ॥३६४५॥
प्रागल्भ्ये गौरवे प्राप्तौ विश्वासेऽपि प्रकीर्त्तिता ।
प्रतिपद् स्त्री मता बोधे पक्षस्याद्यतिथावपि ॥३६४६॥
स्याद्बहिष्पवमानस्य प्रथमायां तथा ऋचि ।
प्रतिपन्नोऽन्यलिङ्गः स्याद्विज्ञानेऽङ्गीकृतेऽपि च ॥३६४७॥
बोधके त्रिषु खट्वाङ्गयाधारे स्यात्प्रतिपादकम् ।
स्त्रीनपुंसकयोर्दाने ज्ञापने प्रतिपादना[2] ॥३६४८॥
प्रतिभा प्रतिभासे स्त्री प्रतिभो ना विदूषके ।
अथाऽभिधेयवत्प्रोक्तः प्रतिभः प्रतिभातरि ॥३६४९॥
क्लीबं प्रतिभयं भीतौ त्रिषु तु स्याद्भयानके ।
प्रतिमा तु प्रतिकृतौ गजानां दन्तबन्धने ॥३६५०॥
प्रतिमानं प्रतिकृतौ गजदन्तद्वयान्तरे ।
प्रतियत्नस्तु संस्कार उपग्रहणलिप्सयोः ॥३६५१॥
प्रतिशिष्टं निरस्ते चाप्याहूय प्रेषिते त्रिषु ।
प्रतिश्रयस्तु विज्ञेयः स्थाने गोष्ठ्यां तथा पुमान् ॥३६५२॥
प्रत्याहारे तथा सत्रशाले मण्डप आश्रये ।
प्रतिष्कशस्त्रिः सहाये प्रष्ठे च प्रतिगन्तरि ॥३६५३॥
प्रतिष्कशस्त्वयं द्यूते पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
प्रतिष्ठा स्थितिमाहात्म्यस्थानगौरवभूमिषु ॥३६५४॥

---

१. प्रतिपत्तिः प्रवृत्तौ च प्रागल्भ्ये गौरवेपि च ।
संप्राप्तौ च प्रबोधे च पदप्राप्तौ च योषिति ।
२. प्रतिपादनं तु दाने प्रतिपत्तौ च बोधने ।

यागसिद्धौ तथाच्छन्दविशेषे षोडशाक्षरे ।
अस्त्री प्रतिसरः सैन्यजघने हस्तसूत्रके ॥३६५५॥
पुमांस्तु व्रणशुद्धौ चाप्यारक्षे चैव मण्डले ।
अथासतीच्छन्नदूत्यामेकदेशे च वेश्मनः ॥३६५६॥
स्त्रियां प्रतिसरा त्रिर्नियोज्ये प्रतिसरो मतः ।
प्रतिसृष्टः प्रेषिते स्यात्प्रत्याख्याते च वाच्यवत् ॥३६५७॥
प्रतिस्पर्शः सहाये स्याद्वार्त्ताहरपुरोगयोः ।
भवेत्प्रतिहतं द्विष्टे प्रतिस्खलितरुद्धयोः ॥३६५८॥
प्रतिहर्त्ता त्रिषु ज्ञेयः प्रतिनेतरि तस्करे ।
प्रतिहारो द्वारपाले द्वारे प्रतिहृतावपि ॥३६५९॥
साम्नस्तृतीयभक्तौ च ना स्त्री तु प्रतिहार्यथ ।
तत्र या पृथिवीपालं सम्भावयति सर्वदा ॥३६६०॥
प्रतीकोऽवयवे दीपे नानुकूलाऽनुरूपयोः ।
प्रतिकूले प्रतीकं त्रि [र्देवमूर्त्यादिषूच्यते] ॥३६६१॥
प्रतीकारो नृपाणां स्याद्वैरनिर्यातने पुमान् ।
अपि प्रतिक्रियामात्रे प्रोक्तः स प्रतिकारवत् ॥३६६२॥
प्रतीकाशः समासान्ते तुल्यार्थः प्रतिकाशवत् ।
मूलस्याधःप्रदेशेऽपि गजानां पूर्वपादयोः ॥३६६३॥
प्रतीक्ष्यः प्रतिपाल्ये च पूज्ये चाप्यभिधेयवत् ।
प्रतीतः प्रतियाते च हृष्टे ख्याते च सादरे ॥३६६४॥
ज्ञाते बुधे प्रत्ययिते वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ।
प्रतीहारः प्रतीहारी द्वे द्वाःस्थे चापि कच्छपे ॥३६६५॥
प्रतीहारस्तु पुँल्लिङ्गो द्वारे स्यात्प्रतिहारवत् ।
प्रतोदः पुंसि तोत्रे च तथैवोक्तः प्रतोदने ॥३६६६॥
सामप्रभेदयोश्चापि परीतेत्यृचिगीतयोः ।
प्रतोली गोपुरेऽपि स्त्री रथ्यायाश्च प्रकीर्त्तिता ॥३६६७॥
प्रत्नं छन्दसि पञ्चाशद्वर्णे त्रि तु पुरातने ।
प्रत्यक्च्छ्रेणी नागदन्त्यां गिरिकर्ण्यामपि स्मृता ॥३६६८॥

तथा मूषिकपर्ण्यां च सा प्रत्यक्छ्रेणिवन्मता ।
प्रत्यग्दृष्टिस्तु मीमांसायां योगे तु यथायथम् ॥३६६९॥
प्रत्यक् प्रतीच्येऽभिमुखे प्रतीच्यभिमुखे त्रिषु ।
देशे पुंसि प्रतीची तु पश्चिमायां दिशि स्त्रियाम् ॥३६७०॥
प्रथमापञ्चमीसप्तम्यर्थेष्वेषोऽपि चाव्ययम् ।
प्रत्ययोऽधीनशपथज्ञानविश्वासहेतुषु ॥३६७१॥
रन्ध्रे च प्रथितत्वे चाप्याचारप्रतियातयोः ।
सनादिशब्दावयवे तथैव स्यात्सुबादिषु ॥३६७२॥
[1]प्रत्यर्थी पुंसि शत्रौ स्याद्धेयवत्प्रतियोगिनि ।
शत्रौ ना प्रत्यवस्थानः परिस्पर्धिजने त्रिषु ॥३६७३॥
प्रत्याकारः पुमान्प्रत्याकृतावायुधकोशके ।
प्रत्यालीढं तु चरणन्यासभेदेऽशिते त्रिषु ॥३६७४॥
प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णौ प्रत्यासरणकर्मणि ।
चमूकक्ष्यामपि तथा पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥३६७५॥
प्रत्याहारोऽक्षरसमाम्नायेऽपि स्यादणादिषु ।
स्यात्प्रत्यानयनेऽर्थेभ्यश्चेन्द्रियाणां समाहृतौ ॥३६७६॥
वाद्यवादकसामग्रीविन्यासे नाट्यगोचरे ।
धौतांशुकद्वये प्रत्युद्गमतीयं नपुंसकम् ॥३६७७॥
स्यात्प्रत्युद्गमतीयस्तूपस्थातव्येऽभिधेयवत् ।
प्रत्यूषोऽस्त्री प्रभाते स्यात्त्रिः प्रत्यूषितरि स्मृतः ॥३६७८॥
प्रथनः पुंसि युद्धे स्याद्विसृतौ प्रथनं नपि ।
प्रकाशनायां प्रथना न नापि च विसारणे ॥३६७९॥
प्रथमं त्रि प्रधाने चादिमेऽथ प्रथमा स्त्रियाम् ।
आद्यायां सुब्विभक्तौ स्यात्तथैव प्रतिपत्तिथौ ॥३६८०॥
प्रथमस्तु पुमानाद्यत्रितये तिङ्विभक्तिषु ।
प्रदाकुस्तु द्वयोर्व्याघ्रे भेकाजगरयोरपि ॥३६८१॥

---

१. प्रत्यर्थी वाच्यवत्प्रोक्तः शात्रवप्रतिवादिनोः ।

प्रदीप्तं भासिते चापि दग्धे चाप्यभिधेयवत् ।
प्रदेश उपदेशैकदेशप्रादेशदत्रिषु ॥३६८२॥
[1]प्रदेशनं प्रदिष्टौ च दाने च प्राभृतेऽपि च ।
प्रदोषस्तु पुमान्दोषे रात्रेर्यामेऽपि चादिमे ॥३६८३॥
प्रकृष्टदोषादौ त्वेष प्रदोषो वाच्यवन्मतः ।
प्रद्युम्नो मन्मथे पुंसि प्रकृष्टद्युम्नके त्रिषु ॥३६८४॥
प्रद्योतनस्तु वा सूर्ये क्लीबं दीप्तौ प्रकीर्त्तितम् ।
प्रधनं तु समे क्लीबं त्रि प्रकृष्टधने मतम् ॥३६८५॥
प्रधानन्तु प्रकृत्याख्ये सांख्यतत्त्वे परात्मनि ।
महामात्रे च बुद्धौ च मुख्ये तु क्ली च वाच्यवत् ॥३६८६॥
प्रधूपिता स्त्रियां सूर्यगन्तव्यदिशि कीर्त्तिता ।
अथाभिधेयवच्चैष क्लेशिते स्यात्प्रधूपितः ॥३६८७॥
प्रपञ्चः पुंसि विस्तारे संचये च विपर्यये ।
प्रपदन्तु पदाग्रेऽपि निगदाख्ययजुष्षु च ॥३६८८॥
प्रपातस्तु प्रपतने भृगौ सौप्तिकरोधसोः ।
प्रपितामह इत्येष विधौ पितृपितामहे ॥३६८९॥
प्रबुद्धो विरतस्वापे पण्डितेऽवहिते त्रिषु ।
प्रबोधना तु पुमाञ्ज्ञापनेप्यनुबोधने ॥३६९०॥
आलेपविषये चापि प्रबुद्धौ तु प्रबोधनम् ।
प्रभञ्जनो ना मरुति योगार्थे तु यथायथम् ॥३६९१॥
प्रभवः स्यादपांमूले विक्रमे जन्मकारणे ।
आद्योपलब्धिस्थानेऽपि पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥३६९२॥
प्रभा भास्यर्चिषि स्त्री स्यात्सूर्यपत्न्यन्तरेऽपि च ।
प्रभाकरस्तु सूर्येऽपि पावकेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥३६९३॥
प्रभावस्तु प्रतापे च माहात्म्ये च पुमान्मतः ।
प्रभासस्तीर्थभेदे च पुँल्लिङ्गः स्यात्प्रभासने ॥३६९४॥

---

१. प्रदेशो देशमात्रे स्यात्तर्जन्यङ्गुष्ठसंमिते ।
भित्तावपि तथा तन्त्रयुक्तिभेदे प्रकीर्त्तितः ॥

स्यात्प्रभिन्नो मत्तगजे वाच्यवच्च विदारिते ।
प्रभूतमुद्गते प्राज्येऽपि प्रोक्तमभिधेयवत् ॥३६९५॥
स्त्री तु प्रभृतिरादौ त्रि प्रकृष्टभृतिकादिके ।
प्रमथा स्त्री हरीतक्यां प्रमथो ना शिवानुगे ॥३६९६॥
क्लीबे प्रमथनं हिंसामन्थनक्रिययोर्मतम् ।
प्रमदा स्त्रीविशेषे च कीर्त्तिता चोत्तमस्त्रियाम् ॥३६९७॥
हर्षे तु प्रमदः पुंसि त्रिप्रकृष्टमदादिके ।
प्रमाणं हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्ताप्रमातृषु ॥३६९८॥
सम्यग्वक्तरि नित्ये स्यादेकताबोधयोरपि ।
छन्दोवृत्तविशेषेऽपि नपुंसकमुदीरितम् ॥३६९९॥
प्रमाणना तु न पुमाञ्ज्ञापनेऽपि वधेऽपि च ।
प्रमन्थने च हिंसायां प्रमाथो लस्तकग्रहे ॥३७००॥
प्रमीढो मूत्रिते चापि स्याद्घनेप्यभिधेयवत् ।
प्रमीतस्तु मृते तद्वत्प्रोक्षितेऽप्यभिधेयवत् ॥३७०१॥
प्रमुखं तु प्रधानेऽपि तथाद्यग्रेऽपि कीर्त्तितम् ।
प्रयतः संस्कृते प्रोक्तः पूते चाप्यभिधेयवत् ॥३७०२॥
प्रयागस्तीर्थराजे स्याद्यज्ञे शतमखाश्वयोः ।
प्रयाणं करिहक्पूर्वप्रदेशे गमने मृतौ ॥३७०३॥
प्रयाम उक्तो नीवाके प्रायत्येऽपि पुमानयम् ।
प्रयोक्ता तूत्तमर्णेऽपि भेद्यवत्स्यात्प्रयोजके ॥३७०४॥
प्रयोगः स्यात्कर्मविधौ सुरतर्णप्रतानयोः ।
शब्दस्योच्चारणे चोच्चारितशब्दे प्रवर्त्तने ॥३७०५॥
प्रयोजनं तु कार्येऽपि हेतौ चापि नपुंसकम् ।
वाणौ प्रीत्वा नार्यां तु विधिज्ञायां प्रीत्वरी ॥३७०६॥
प्ररूहः सम्प्ररोहे त्रिः पुँल्लिङ्गस्तु महायवे ।
प्ररोहस्तु पुमानिष्टोऽङ्कुरे चैव प्ररोहणे ॥३७०७॥
प्रलम्बो दैत्यभेदे स्यात्त्रपुषेऽपि पयोधरे ।
लताङ्कुरे च शाखायां हारभेदे प्रलम्बने ॥३७०८॥

प्रलयस्तु पुमान्मृत्यौ क्षये चास्पन्दनस्थितौ ।
मूर्च्छायामपि कल्पान्ते श्लेषे च परिकीर्त्तितः ॥३७०९॥
प्रलोभी किङ्किराते स्याल्लोभशीले तु स त्रिषु ।
प्रवङ्गमः कपौ भेके प्लवङ्गमवदिष्यते ॥३७१०॥
अथ प्रवचनं वेदे व्याख्याने च प्रकीर्त्तितम् ।
प्रशस्तवचने च स्याच्छास्त्रेऽपि च नपुंसकम् ॥३७११॥
त्रिषु प्रवचनीयं स्यात्प्रवक्तव्ये प्रवक्तरि ।
प्रवणः क्रमनिम्ने त्रिः प्रह्वे ना तु चतुष्पथे ॥३७१२॥
प्रवरः कृष्णमुद्गेऽब्धिलवणे च पुमान्मतः ।
प्रवरं सन्ततौ गोत्रे क्लीबं श्रेष्ठे तु वाच्यवत् ॥३७१३॥
प्रवहो वायुभेदे स्याद्वायुमात्रे बहिर्गतौ ।
क्लीबं प्रवहणं कर्णीरथे वहन उत्तमे ॥३७१४॥
प्रवारणं निषेधे स्यात्काम्यदाने च न द्वयोः ।
प्रवालस्त्वस्त्रियां वृक्षे पल्लवस्याङ्कुरे मतः ॥३७१५॥
वीणादण्डे विद्रुमे च तथैव नवपल्लवे ।
प्रवासना वधेऽपि स्यान्न ना तद्वद्विवासने ॥३७१६॥
प्रवाहस्तु प्रकृष्टाऽश्वे तथा स्रोतसि वारिणः ।
परम्परायामपि च प्रवृत्तौ च पुमान्मतः ॥३७१७॥
स्त्रीनपुंसकयोर्भेदे युद्धे क्ली प्रविदारणम् ।
वधे विकीर्णीकरणे नप्स्त्रियोः प्रविसारणा ॥३७१८॥
प्रवृत्तिः स्त्री प्रवारोच्चारयोर्व्यापारवार्त्तयोः ।
कुलत्थसंज्ञधान्ये चावन्त्यादौ हस्तिनां मदे ॥३७१९॥
प्रवृद्ध एधिते चापि प्रसृते चाभिधेयवत् ।
प्रवेणी स्त्री कुथायां च वेण्यां च स्यात्प्रवेणित् ॥३७२०॥
प्रवेष्टस्तु भुजे पुंसि गजदन्तस्य मूलतः ।
करीयाख्यात्प्रदेशेऽपि परस्मिन्परिकीर्त्तितः ॥३७२१॥
अथ प्रव्रजिता मांसीमुण्डीरीतापसीषु च ।
प्रष्ठस्त्रिष्वग्रगे श्रेष्ठे पुंसि चाण्डालिकौषधौ ॥३७२२॥

प्रसत्त्वा पत्रने मातृप्रतिपत्त्योः प्रसत्त्वरी ।
प्रसन्ना तु सुरायां स्त्री स्वच्छसन्तुष्टयोस्त्रिषु ॥३७२३॥
प्रसभं तु बलात्कारे द्त्तस्य स्यान्नपुंसकम् ।
प्रसभः पुंसि वेगे स्यात्त्रिप्रकृष्टसभादिके ॥३७२४॥
प्रसरः प्रणये वेगे पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
न ना प्रसरणी ख्यात आसारे युद्धकारिणाम् ॥३७२५॥
अथ प्रसरणं क्लीबलिङ्गं विसरणे मतम् ।
प्रसर्पको दर्शनाय यज्ञस्थानमुपागते ॥३७२६॥
प्रसर्परि पुनर्वाच्यलिङ्गकोऽयं प्रसर्पकः ।
प्रसवो जननानुज्ञापुत्रेषु फलपुष्पयोः ॥३७२७॥
पारम्पर्ये प्रसङ्गेऽपि प्राणिनां गर्भमोचने ।
प्रेरणे प्रसृतौ चापि पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥३७२८॥
प्रसव्यं प्रतिकूले चानुकूले च प्रकीर्त्तितम् ।
आयत्ते दक्षिणे चापि सव्ये चाप्यभिधेयवत् ॥३७२९॥
नपुंसकं प्रसहनं भङ्गे चाभिभवे मतम् ।
लताबृहत्यां तु स्त्रीत्वे मता प्रसहनीति सा ॥३७३०॥
प्रसादस्तु प्रसत्तौ च स्वच्छत्वेप्यनुरोधने ।
काव्यस्यौजोमुखानां च गुणानामेकके मतः ॥३७३१॥
प्रसादनस्तु प्रासाद ओदने स्यात्प्रसादनम् ।
प्रसन्नीकरणे त्वेषा न ना प्रोक्ता प्रसादना ॥३७३२॥
प्रसाधना तु न पुमानभ्यङ्गप्रतिकर्मणोः ।
शुश्रूषायां च नृ स्त्री तु कङ्कते स्यात्प्रसाधनी ॥३७३३॥
प्रसिद्धो भूषिते ख्याते सिद्धे चाप्यभिधेयवत् ।
प्रसूरश्वाजनन्योश्च कन्दली वीरुधो स्त्रियाम् ॥३७३४॥
प्रसूतं प्रेरिते जाते स्यात्कृतप्रसवे त्रिषु ।
ना सारथौ क्ली प्रसूने प्रसूता सूतिमस्त्रियाम् ॥३७३५॥
प्रसूतो वाच्यवज्जाते क्लीबे तु फलपुष्पयोः ।
प्रसूतिः स्त्री प्रजनने प्रजायां जननेऽपि च ॥३७३६॥

प्रसृता तु स्त्रियां जङ्घासंज्ञाऽङ्गे पुंनपोः पुनः ।
द्विमुष्टिकेऽर्धकुडबमाने स्याद्वेणुपर्पटे ॥३७३७॥
निकुब्जपाणौ च त्रिस्तु वेगिते विस्तृतेऽपि च ।
प्रसृतिः स्त्री वचोजालबन्धतात्पर्यतन्तुषु ॥३७३८॥
प्रसेकः सेचने चापि श्च्युतावपि पुमान्मतः ।
प्रसेवः पुंसि वीणाङ्गे स्यूते च परिकीर्त्तितः ॥३७३९॥
प्रसेवकस्तु ककुभे त्रिषु सेवापरायणे ।
प्रस्तारस्तु प्रस्तरणे वृत्तविन्यसनेऽपि च ॥३७४०॥
प्रस्तावोऽवसरे चैवाऽधिकारे सामवेदिनाम् ।
साम्नः प्रथमभक्तौ च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥३७४१॥
प्रस्तुता सुरभौ स्त्री स्यात्प्रस्तुतम्प्रकृते त्रिषु ।
प्रस्तोता प्रस्तावभक्तेः साम्नो गातरि ऋत्विजि ॥३७४२॥
पुँल्लिङ्गो वाच्यवत्त्वेष मतः प्रस्तावकर्त्तरि ।
प्रस्थोऽस्त्री स्यात् कुडवचतुष्कैतन्मितेषु च ॥३७४३॥
प्रस्फोटनं तु शूर्पे स्यात्ताडने च विकाशने ।
भवेत्प्रस्रवणं क्लीबं प्रस्रुतावुत्स एव च ॥३७४४॥
माल्यवानितिविख्याते पर्वते तु पुमान्मतः ।
प्रस्रावः प्रस्रुतौ मूत्रे भक्तमण्डे तथा पुमान् ॥३७४५॥
प्रहतस्तु मतः क्षुण्णे व्युत्पन्नेऽप्यभिधेयवत् ।
क्लीबं प्रहरणं शस्त्रे युद्धे चाघातकर्मणि ॥३७४६॥
क्लीबं प्रहसनं हासे रूपकान्यतमेऽपि च ।
प्रहितः प्रेषिते चास्य स्याल्लिङ्गमभिधेयवत् ॥३७४७॥
मुद्गादिभिन्ननिर्वृत्ते तु सूपे प्रहितोऽस्त्रियाम् ।
प्रहृष्टस्तु सरोमाञ्चे प्रहर्षवति विस्मिते ॥३७४८॥
तथा प्रतिहते चापि वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ।
प्राकाशः कुण्डले पुंसि स्यात्प्रकाशयुजि त्रिषु ॥३७४९॥
प्राग्भारो गिरिश्रृङ्गाग्रे तथैवातिशये पुमान् ।
प्राक् प्राग्भवे प्राङ्मुखे च पूर्वेऽर्वाचि च भेद्यवत् ॥३७५०॥

दिग्देशकालविषये प्राची तु स्त्री हेरर्दिशि ।
प्रथमा-पञ्चमी-सप्तम्यर्थेष्वव्यय एव वा ॥३७५१॥
सर्वेषु पूर्वोक्तार्थेष्वित्येवं प्राक्छब्द ईरितः ।
प्राचिका सल्लकीवृक्षे शाके पालङ्क्यभिख्यके ॥३७५२॥
अरण्यमक्षिकायां च श्येनसंज्ञे च पक्षिणि ।
प्राचीनबर्हिर्वह्नौ ना शक्रे चैव नृपान्तरे ॥३७५३॥
प्राचेतसो ना वाल्मीकौ प्रचेतोयोगिनि त्रिषु ।
प्राच्यः प्राचि शरावत्यां देशे प्राग्दक्षिणे त्रिषु ॥३७५४॥
प्राजापत्यं सामभित्सु गर्भाधानाख्यसंस्कृतौ ।
द्वादशाहकृते कृच्छ्रे भावे चैव प्रजापतेः ॥३७५५॥
विवाहभेदे तु तथा कृतोद्वाहद्विजे च ना ।
प्रजापतेस्त्वपत्ये द्वे तत्सम्बन्धिनि तु त्रिषु ॥३७५६॥
प्राज्ञस्तु धीमज्ज्ञात्रोस्त्रि प्राज्ञा प्राज्ञी स्त्रियां क्रमात् ।
[1]प्राणो बलेऽनिले पुंसि तथा कायानिलान्तरे ॥३७५७॥
द्वन्द्वानां प्रथमे साम्नीन्द्रियेषु शशभेषजे ।
प्राणाश्चाऽसुषु पुंभूम्नि त्रिः पूर्णे क्ली तु पूरणे ॥३७५८॥
[2]प्राणकः सत्त्वजातीये जीवकद्रुमचोलयोः ।
प्राणथो मदनाख्ये च वृक्षे चैव प्रजापतौ ॥३७५९॥
प्राणदा तु हरीतक्यां स्त्रियामृद्ध्यौषधेऽपि च ।
प्राणदः पुंसि वैद्ये स्यात्त्रिषु तु प्राणदातरि ॥३७६०॥
प्राणनाथस्तु विज्ञेयो यमराजे प्रियेऽपि च ।
प्राणिद्यूतोऽस्त्रियां युद्धे पश्वाद्यैर्युद्ध एव च ॥३७६१॥
प्रातिः पूर्त्तौ मता स्त्रीत्वे प्रादेशेऽपि प्रकीर्त्तिता ।
प्राध्वं स्याद्दूरमार्गे च बन्धने च नपुंसकम् ॥३७६२॥
प्रवेशे त्वव्ययं प्राध्वमानुकूल्ये च नर्मणि ।
प्रान्तरं तु वने दूरशून्यवर्त्मनि कोटरे ॥३७६३॥

---

१. प्राणो हृन्मारुते बाले काव्यजीवेऽनिले बले ।
पुँल्लिङ्गः पूरिते तु त्रिलिङ्गः पुंभूम्नि चासुषु ॥
२. प्राणकस्तु प्राणिन्नि त्रिर्ना तु स्याज्जीवकद्रुमे ।

प्राप्तं समञ्जसेऽपि स्याल्लब्धे चाप्यभिधेयवत् ।
प्राप्तरूपो वाच्यवत्स्यात्सुन्दरे च विचक्षणे ॥३७६४॥
प्राप्तिः स्त्रियामधिगमेऽप्युदये च प्रकीर्त्तिता ।
प्रायो मृत्यौ प्रगमने बाहुल्येऽनशनेऽपि ना ॥३७६५॥
बाल्यादिवयसि प्रोक्तस्तुल्यार्थे तु त्रिषु स्मृतः ।
प्रायश्चित्तं चिकित्सायां रोगस्याप्यघनिष्क्रये ॥३७६६॥
प्रार्थितं याचिते शत्रुसंरुद्धेऽभिहते त्रिषु ।
प्रार्दितन्त्वभियुक्तेऽपि याचिते च हते त्रिषु ॥३७६७॥
प्रालम्बमृजुलम्बिन्यां कण्ठात्स्यात्कुसुमस्रजि ।
प्रालम्बी तु स्त्रियां स्वर्णललन्त्यां परिकीर्त्तिता ॥३७६८॥
पुनर्नवाशूकशिम्ब्योः स्त्रियां स्यात्प्रावृषायणी ।
प्रावृषेण्यः कदम्बद्रौ त्रि तु प्रावृड्भवादिषु ॥३७६९॥
प्रासः कुन्ताख्यशस्त्रे ना तथाऽनुप्रास एव च ।
प्रासादस्तु प्रकृष्टासादे देवाढ्यनृपालये ॥३७७०॥
प्रियः करुणवृक्षे ना वृद्धिनामौषधे धवे ।
वल्लभे सुन्दरे त्रिः स्त्री प्रियाऽभीप्सितयोषिति ॥३७७१॥
प्रियको ना फलाध्यक्षफलिन्यसननीपके ।
तेषां तु प्रसवे क्लीबं मृगभेदे तु स द्वयोः ॥३७७२॥
घनैर्मृदूच्चमसृणै रोमभिश्चापि संयुते ।
नीलपाण्डुररेखावत्यपि वा श्वेतचन्द्रके ॥३७७३॥
प्रियङ्गुः स्त्री कणायां च राजिकायां च कीर्त्तिता ।
फलिन्यां कङ्गुसस्येऽथ क्ली प्रियङ्ग्वपि कुङ्कुमे ॥३७७४॥
प्रियंवदा स्त्री मालत्यां त्रि तु स्यात्प्रियवक्तरि ।
प्रियंवदः कथायां ना श्रुते विद्याधरान्तरे ॥३७७५॥
स्त्रियां मङ्गलवाद्यस्य निर्घोषे प्रियवादिका ।
प्रियवक्तरि तु प्रोक्तो भेद्यवत्प्रियवादकः ॥३७७६॥
प्रियापत्यो द्वयोः कङ्कखगे प्रियसुते त्रिषु ।
प्रीतं त्रिषु स्याद्धर्षितेऽथ नर्मणि नपुंसकम् ॥३७७७॥

प्रीतिर्योगान्तरे प्रेम्णि स्मरपत्नीमुदोः स्त्रियाम् ।
धकारेऽपि त्रयोदश्यां कलायां शशिनो मता ॥३७७८॥
प्रुक्षिः पुमान्यावके चाप्युदपाने च कीर्त्तितः ।
प्रेक्षा बुद्धौ तथा नृत्तदर्शनेऽपि स्त्रियाम्मता ॥३७७९॥
प्रेङ्खो दासे द्वयोः प्रेङ्खाऽऽसन्यां प्रेङ्खोलने तथा ।
स्त्रियां पर्यटने प्रोक्ता घोटकस्य गतावपि ॥३७८०॥
प्रेतो भूतान्तरे द्वे स्यान्मृते प्रेतोऽभिधेयवत् ।
प्रेतालयो ना शाकोटद्रुमे योगे यथायथम् ॥३७८१॥
प्रेमा ना वासवे वाते प्रेमा स्त्री स्नेहनर्मणोः ।
प्रेरित्वा तु समुद्रे ना स्त्री तु प्रेरित्वरी पुरी ॥३७८२॥
प्रेष्यो दासे द्वयोरेष प्रेषणीयेऽभिधेयवत् ।
प्रैषः प्रेषण उन्मादे क्लेशे मर्दन इष्यते ॥३७८३॥
प्रोक्षणं तु वधे यज्ञपशोश्चाऽभ्युक्षणोऽम्भसा ।
प्रोक्षण्यो यज्वनां कास्वप्प्यप्सु तासां च भाजने ॥३७८४॥
प्रोक्षितं निहिते सिक्ते वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ।
प्रोतं नपुंसकं वस्त्रे खचिते वाच्यलिङ्गकम् ॥३७८५॥
प्रोथोऽस्त्री हयघोणायां ना कट्यामध्वगे त्रिषु ।
प्रोष्ठः पुंस्यृषभे स्त्री तु शफर्यां प्रोष्ठ्युदीरिता ॥३७८६॥
वाच्यवन्निपुणे तर्के प्रोहो हस्त्यङ्घ्रिपर्वणोः ।
प्लक्षोऽश्वत्थे द्वीपभेदे पर्कटीगर्दभाण्डयोः ॥३७८७॥
प्लवस्तु प्लवने मेघे जलपूरे तथोडुपे ।
द्वयोस्तु मर्कटे भेके चण्डाले शकटाविले ॥३७८८॥
त्रिश्वेतवाहलान्तेषु हंससारसकादिषु ।
खगेषु सुश्रुतोक्तेषु कैवर्त्तीमुस्तके प्लवम् ॥३७८९॥
प्लवगो द्वे कपौ भेके ना तु सूर्यस्य सारथौ ।
प्लवङ्गमः प्लवङ्गश्च प्लवकः प्लवगस्तथा ॥३७९०॥
प्लवङ्कश्च द्वयोरुक्ता भेकवानरयोरिमे ।
प्लवनं तु प्लुतीभावोन्मज्जनक्रमणेषु नप् ॥३७९१॥

प्लावी तु पक्षिणि तथा मृगे स्त्रीपुंसयोर्मतः ।
प्लुक्षिरग्नौ कुसूले च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥३७९२॥
प्लुतं तु प्लवने चाश्वगतिभेदे नपुंसकम् ।
अथ त्रि तद्वत्यश्वे च सिक्ते वर्णे त्रिमात्रके ॥३७९३॥

फ

फो यज्ञसाधनं स्फानं झञ्झावाते च पुंस्ययम् ।
फं रूक्षोक्तौ च फूत्कारे तथा निष्फल भाषणे ॥३७९४॥
फक्किका तु स्त्रियामेकग्रन्थे गौरे च सर्षपे ।
अथ फक्कितरि प्रोक्तः फक्ककश्चाभिधेयवत् ॥३७९५॥
फटा तु स्त्री फणेऽपि स्यात्तथा दन्तेऽपि भोगिनाम् ।
फर्फरीकश्च पेटे स्यात्फर्फरीकं तु मार्दवे ॥३७९६॥
फलं फाले धने बीजे निष्पत्तौ भोगलाभयोः ।
सस्ये हेतुकृते चर्मसंज्ञशस्त्रनिवारणे ॥३७९७॥
शस्त्राणां च मुखे ना तु करमर्देऽथ सा फला ।
कार्पास्यां लवलीराजकोशातक्योः स्त्रियामथ ॥३७९८॥
कोशातक्यां फलिन्यां स्त्री ताम्रादिफलके फली ।
मत्स्यभेदे त्वपि स्त्रीत्वे फलीत्येव प्रकीर्त्तिता ॥३७९९॥
फलकं काष्ठकीटे खेटकाख्ये शस्त्रवारणे ।
फलकी चित्रफल्याख्ये मत्स्यभेदे च चन्दने ॥३८००॥
फलकस्तु क्षुमासंज्ञे धान्ये पुंसि प्रकीर्त्तितः ।
फलकी चर्मपाणौ त्रिः स्त्र· · ·यां फलकिन्यपि ॥३८०१॥
द्वयोस्तु फलकीत्येष मत्स्यभेदे प्रकीर्त्तितः ।
फलपाकान्ता तु तालीद्रुमे स्त्री प्रियवादिषु ॥३८०२॥
मुद्गमाषतिलाद्येषु फलपाकविनाशिषु ।
फलाशनः शुके द्वे स्यात्फलभक्षिणि तु त्रिषु ॥३८०३॥
फलिन्यग्निशिखायां च कोशातक्यामपि स्त्रियाम् ।
प्रियङ्गावपि च त्रिस्तु फली फलसमन्विते ॥३८०४॥

फलेरुहस्तालवृक्षे पाटल्यां तु फलेरुहा ।
फलोदयः पुमांल्लाभे स्वर्गेऽपि परिकीर्त्तितः ॥३८०५॥
त्रिपु फल्गुरसारे स्त्री काकोदुम्बरिकातरौ ।
काकोदुम्बरिकायां ना फल्गुस्त्रि त्वल्पमोघयोः ॥३८०६॥
फल्गुनी भगदैवत्ये नक्षत्रे यमदैवते ।
ताभ्यां युक्ते कालमात्रे जाते त्वत्र त्रि फल्गुनी ॥३८०७॥
फल्गुनस्तु पुमानेव ज्ञेयो मध्यमपाण्डवे ।
फाणिर्गुडे करम्बे च स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥३८०८॥
फाणितं गौडविकृतिभेदेऽथ क्वाथिते त्रिषु ।
फालो लाङ्गलकूटेऽपि श्वेतार्के दाडिमे पुमान् ॥३८०९॥
निष्पत्तौ स्याद्विशरणे तक्कोले तु नपुंसकम् ।
फलस्य तु विकारादौ फालं स्यादभिधेयवत् ॥३८१०॥
फालः पुंसि महादेवे कालिन्दीभेदनेऽपि च ।
क्लीबं सीरोपकरणे त्रिषु कार्पासवाससि ॥३८११॥
फाल्गुनी पूर्णिमायां स्त्री कीर्त्तिता फल्गुनीयुजि ।
फाल्गुनस्तद्युते मासि तथा मध्यमपाण्डवे ॥३८१२॥
नदीजार्जुनवृक्षे च फाल्गुनं तु तृणान्तरे ।
आश्चर्ये स्याद्विकसितेऽफुल्लं विशरणे नपि ॥
फेनिलोऽरिष्टवृक्षे ना त्रि सफेनेऽथ फेनिलम् ॥३८१३॥
मदनस्य बदर्याश्चारिष्टस्य च फले स्मृतम् ।
फेरवस्तु द्वयोरुक्तो जम्बुकेऽप्यस्रपे तथा ॥३८१४॥

ब

बः पुमान्वरुणे सिन्धौ भगे तोषे गतेऽपि च ।
गन्धने तन्तुसन्ताने पुंस्येव वपने स्मृतः ॥३८१५॥
बकस्तु ना दाल्भ्यमुनावेकचक्रेश्वरेऽसुरे ।
बकपुष्पद्रुमे तद्वत्कुबेरेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥३८१६॥

द्वे तु पक्षिणि कह्वाख्ये पुल्कसीक्षत्रजेऽपि च ।
बको रुक्मबलाकाभिद्धातावर्जितशाखयोः ॥३८१७॥
बडिशं त्वध्यमानस्य भेदेऽपि स्यान्नपुंसकम् ।
मत्स्यवेधनयन्त्रे च विरज्जौ परिकीर्त्तितम् ॥३८१८॥
बण्ठरः स्थगिकारज्जौ लाङ्गले कुक्कुरस्य च ।
करीरकोषे तालस्य पल्लवे च पयोधरे ॥३८१९॥
बदरी कुवलीवृक्षेऽजगन्धास्तम्बके स्त्रियाम् ।
ईश्वरस्थानभेदेऽथ कार्पास्यां बदरा तथा ॥३८२०॥
विष्वक्सेनप्रिया संज्ञभेषजे बदरं तु नप् ।
उक्तं पूर्वंस्थावराणाम्प्रसवे परिकीर्त्तितम् ॥३८२१॥
अथ बद्धशिखा स्त्री स्यादुच्चटायां शिशौ त्रिषु ।
बधिः श्येने च काके च नृस्त्रियोः परिकीर्त्तितः ॥३८२२॥
बन्दनी नतिजीवातुकुटीयाचनकर्मसु ।
बन्दा वन्ध्याश्च भिक्षुक्यां लताभेदेऽपि च स्त्रियाम् ॥३८२३॥
बन्धः सीसाख्यलोहेऽपि पुमानाधौ च बन्धने ।
स्याद्बन्धकी स्त्री कुलटाऽनासृसत्कृतिवेश्ययोः ॥३८२४॥
करिण्यामप्यथाऽऽधौ तु बन्धकं त्रिषु बन्द्धरि ।
बन्धनं क्ली संयमने त्रि तु बन्धस्य साधने ॥३८२५॥
पशुबन्धनरज्जौ तु बन्धनी स्त्री प्रकीर्त्तिता ।
बन्धुः स्वरे ना स्वजने तुर्ये राशौ च लग्नतः ॥३८२६॥
अथ बन्धुरधिक्षेप्ये वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ।
बन्धुजीवस्तु बन्धूके क्ली तत्पुष्पे प्रकीर्त्तितम् ॥३८२७॥
योगार्थे त्वस्य लिङ्गादि तर्कणीयं यथायथम् ।
बन्धुरस्तु द्वयोर्हंसे बन्धूके न स्त्रियामयम् ॥३८२८॥
त्रिलिङ्गः सुन्दरे नम्रे तथा स्यादुन्नतानते ।
बन्धुरं मुकुटे पुंसि स्त्रीचिह्ने तैलकल्कयोः ॥३८२९॥
बन्धूके वधिरे हंसे त्रिषु स्याद्रम्पनम्रयोः ।
बन्धूको बन्धुजीवाख्यपुष्पगुल्मेऽसनद्रुमे ॥३८३०॥

नपुंसकं तु बन्धूकमनयोः प्रसवे मतम् ।
बन्धूरा पण्ययोषायां स्त्रियां पुंभूम्नि शत्रुषु ॥३८३१॥
बभ्रुर्ना केशवे पूर्वराजभेदर्षिभेदयोः ।
आनौ कडारवृषभे धने वर्णे च पिङ्गले ॥३८३२॥
त्रि तु तद्वति खल्वाटे द्वे त्वोते नकुलेऽपि च ।
स्त्रियां तु बभ्रुरित्येषा कपिलायां गवि स्मृता ॥३८३३॥
बरटा द्वयोर्वरट्यां स्त्री हंस्यां च तत्पतौ पुमान् ।
बरण्डोऽप्यन्तरे वेदीसमूहमुखरागयोः ॥३८३४॥
बरण्डकस्तु मातङ्गवेद्यां यौवनकण्टके ।
बराटकः पद्मबीजकोषे रज्जौ कपर्दके ॥३८३५॥
बर्पटी व्रीहिभेदे च तथा पण्यस्त्रियां मता ।
बर्बरो बर्बरी म्लेच्छजातिभेदे द्वयोर्भवेत् ॥३८३६॥
बर्बरा त्वजगन्धायां भार्ग्यां चापि स्त्रियां मता ।
बर्हं मयूरपिच्छेऽपि वृक्षपत्रे नपुंसकम् ॥३८३७॥
बर्हिणं भारतद्वीपान्तरे केकिनि तु द्वयोः ।
बर्हिः कुशेक्षुखे यज्ञे क्ली महत्यनले तु ना ॥३८३८॥
बलोऽस्त्र्यस्थनि रूपे च शक्तिरेतश्चमूष्वपि ।
स्थौल्येऽथ ना यावकाख्ययवे चापि हलायुधे ॥३८३९॥
दैत्यान्तरेऽथ बलिनि त्रिः स्त्री वाट्यालके बला ।
पिप्पल्याश्च द्विलिङ्गस्तु बलः काके प्रकीर्त्तितः ॥३८४०॥
बलजं गोपुरक्षेत्रे शस्यसङ्गरयोरपि ।
बणिज्यायां पुमान् बाणिज्यके च करणान्तरे ॥३८४१॥
बलदेवो बले वाते त्रायमाणौषधौ स्त्रियाम् ।
बलभद्रा त्रायमाणाकुमार्योः पुंसि सीरिणि ॥३८४२॥
बलाहको गिरौ मेघे दैत्यनागविशेषयोः ।
बलिः पूजोपहारे ना भागधेये नृपस्य च ॥३८४३॥
प्राणनार्थकधातौ च दैत्यभेदेऽपि कीर्त्तितः ।
देवतार्चनतूर्ये तु नृस्त्रियोर्बलिरिष्यते ॥३८४४॥

बलिर्दैत्यप्रभेदे ना करचामरदण्डयोः ।
उपहारे पुमान्स्त्री तु जरयाश्लथचर्मणि ॥३८४५॥
गृहदारुप्रभेदे च जठरावयवेऽपि च ।
बली माषे नालिकेरे शोणाम्लाने च मज्झि च ॥३८४६॥
षष्ठे शरीरधातूनां कारवेल्लान्तरेऽपि च ।
बृहत्कर्कोटकाख्ये ना बलयुक्ते तु स त्रिषु ॥३८४७॥
बलिपुष्टीर्द्वयोः काके योगार्थे तु यथायथम् ।
बलिभुक्तु द्वयोः काके बलिभोक्तरि तु त्रिषु ॥३८४८॥
बलीका विसकण्ठ्यां च बन्धकीकुलटार्थयोः ।
बल्लूरस्तु पले पुंसि स्तने चाथ झषे द्वयोः ॥३८४९॥
बल्यं प्रधानधातौ स्यात्क्लीबं बलकरे त्रिषु ।
बहलं पुष्कले सान्द्रे मेघवत्परिकीर्त्तितम् ॥३८५०॥
बहिष्ठन्तु महिष्ठे त्रि ह्रीबेरे तु नपुंसकम् ।
बहुव्रतान्तहोमाग्नौ मेघलिङ्गं तु वाच्ययोः ॥३८५१॥
त्रित्वादिसंख्यासंख्येये महाऽर्थेऽप्यत्र च स्त्रियाम् ।
यदावृत्तिस्तदा बह्वी बहुरित्यपि वा द्वयम् ॥३८५२॥
बहुप्रजो द्वे वराहे योगार्थे तु यथायथम् ।
भवेद्बहुफलो नीपे क्ष्मामलक्यां तु योषिति ॥३८५३॥
बहुरूपः शिवे विष्णौ धूनके सरटे स्मरे ।
बहुलस्तु पुमानग्नौ कृष्णपक्षे च नीपके ॥३८५४॥
त्रिस्तु कृष्णे प्रभूते च कृत्तिकाकालजातके ।
अथ स्त्री बहुला श्वेताभूम्येलासुरभीषु च ॥३८५५॥
स्त्री भूम्नि कृत्तिकास्त्रेता रोदस्योर्बहुले इति ।
बहुलीकृतमेतत्त्रिः पूतधान्येऽपि विस्तृते ॥३८५६॥
शतावर्या बहुसुता योगार्थे तु यथायथम् ।
बाढस्त्रिषु भृशार्थे स्याद्बाढं त्वनुमतावपि ॥३८५७॥
अवश्यमर्थे च तथा प्रतिज्ञायां नपुंसकम् ।
बाणोऽसुरे बलिसुते तथेक्ष्वाकुमहीभृतः ॥३८५८॥

प्रपौत्रे वृक्षभेदे च ककुभाख्ये पुमान्मतः ।
द्वयो बणिग्नीलझिण्ट्यामस्त्रियां शरतद्धिदोः ॥३८५९॥
भवेद्वाणिजकः पुंसि वडवान्ते वणिज्यपि ।
बाणी सरस्वती देव्यां वाचि स्यूतावपि स्त्रियाम् ॥३८६०॥
बाधः क्षुद्रफले पूगे बले चापि पुमान्मतः ।
द्वयोस्तु बाधा दुःखे च निषेधे च प्रकीर्त्तिता ॥३८६१॥
बान्धवो ज्ञातिसुहृदोर्द्वे त्रि स्याद्बन्धुयोगिनि ।
बाभ्रवी गिरिजायां स्त्री बभ्रुवंश्ये द्वयोर्भवेत् ॥३८६२॥
बभ्रुसम्बन्धिनि त्रि स्यान्न स्त्री दक्कर्णयोर्मले ।
गणिस्थराजे पुँल्लिङ्गो बाभ्रवः परिकीर्त्तितः ॥३८६३॥
बारकी शत्रुचित्राश्वपर्णी जीवपयोधिषु ।
बारुण्डी द्वारपिण्ड्यां स्त्री फणिनां राजके पुमान् ॥३८६४॥
न स्त्रियां सेकपात्रे च मलेऽक्ष्णः श्रवणस्य च ।
बार्दरस्तु पुमान्मेलनन्दायां दिवसे तु नप् ॥३८६५॥
बार्हतं बृहतीच्छन्दस्यपि स्याद्बृहतीफले ।
बृहत्या बृहतश्चापि सम्बन्धिन्यभिधेयवत् ॥३८६६॥
बालः शिशौ च मूर्खे च वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ।
बालस्तु नालिकेरे ना पञ्चवर्षगजे द्वयोः ॥३८६७॥
बाला तु मल्लिकाभेदे हरिद्रायामपि स्त्रियाम् ।
बालकस्तु पुमान्कृष्णशालौ त्रिस्त्वतिबालिशे ॥३८६८॥
बालकस्तु शिशावज्ञे बालधौ हयहस्तिनोः ।
अङ्गुलीयकहीबेरवलये पुंसि बालिका ॥३८६९॥
बालायां बालुकापत्रकाहलाकर्णभूषणे ।
बालवत्सो बालपुत्रयुते त्रिष्वथ च द्वयोः ॥३८७०॥
पारावताख्यादन्यस्मिन्कपोताख्यविहङ्गमे ।
बालिशस्तु भवेन्मूर्खे तथा बालेऽभिधेयवत् ॥३८७१॥
बालुका सिकतासु स्याद्वालुकं त्वेलबालुके ।
बालेयो गर्दभे दैत्येऽपि द्वयोः परिकीर्त्तितः ॥३८७२॥

मृदौ बलिहिते चापि खलेऽपि त्रिषु कीर्त्तितः ।
बाष्पस्तु धूमाभासे ना मुखतोयादिजेऽश्रुणि ॥३८७३॥
शाकभेदे च बाष्पी तु हिङ्गुपत्र्याख्यभेषजे ।
बाहा प्रवाहणे नृस्त्री स्त्रियां बाहौ प्रकीर्त्तिता ॥३८७४॥
बाहुः पुरुषभेदे ना द्वयोस्त्वेष भुजे मतः ।
षट्त्रिंशदङ्गुलेऽप्येष स्यात्प्रमाणान्तरे तथा ॥३८७५॥
गृहादिद्वारपार्श्वस्थयाज्ञिकख्यातदारुषु ।
बाहुकः कर्कटे चार्के दात्यूहे जलखातके ॥३८७६॥
बाहुजस्तु द्वयोः कीरे क्षत्रिये च प्रकीर्त्तितः ।
स्वयंजाततिले पुंसि बाहुजाते तु वाच्यवत् ॥३८७७॥
बाहुदा स्त्री नदीभेदे बाहोर्दातरि तु त्रिषु ।
अनयोर्बहुदस्यापि त्रि सम्बन्धिनि बाहुदी ॥३८७८॥
बाहुलः कार्त्तिके पुंसि बाहुत्राणे तु बाहुलम् ।
स्याद्बाहुलं तु बहुलसम्बन्धिन्यभिधेयवत् ॥३८७९॥
बाहुलेयः पुमान्स्कन्दे द्वयोस्तु बहुलासुते ।
बाह्यं स्वकल्पिते नृत्ते क्लीबं त्रिस्तु बहिर्भवे ॥३८८०॥
बाह्लवन्तु क्लीबलिङ्गं हिङ्गुकुङ्कुमयोर्मतम् ।
बाह्लिकं क्ली कुसुम्भेऽपि हिङ्गुकुङ्कुमयोरपि ॥३८८१॥
पुंभूम्नि देशभेदेपि द्वयोस्तद्देशजन्तुषु ।
विशेषाद्बाल्हिकाऽश्वेषु बाल्हीकं तत्समार्थकम् ॥३८८२॥
विदलः पाटिते काष्ठे वेण्वादीनां दलेऽपि च ।
द्विधाकृते मुद्गादावस्त्रियां परिकीर्त्तितः ॥३८८३॥
भ्रुवोर्मध्ये विदुर्दन्तक्षतभेदे पुमान्मतः ।
वेदितर्यन्यलिङ्गः स्यात् स्वकार्यप्रकृतौ पुमान् ॥३८८४॥
बिन्दुर्विप्रुषि पश्वादिशरीरस्थपृषत्सु ना ।
लवे चावयवे नश्यत्प्रजयोषिति तु द्वयोः ॥३८८५॥
बिन्दुलस्तु भवेदम्बुवेतसे वेतसेऽपि च ।
बिम्बोऽस्त्री मण्डलसमप्रतिमामुखलक्ष्मसु ॥३८८६॥

प्रतिबिम्बे तत्प्रकृतौ समानत्वोपधानयोः ।
आदर्शे स्त्री तु बिम्बोष्ठीलतायां क्ली तु तत्फले ॥३८८७॥
बिम्बस्तु कृकलासे स्यान्नानावर्णक्षमे द्वयोः ।
बिम्बिसारकमित्युक्तं चापभेदे नपुंसकम् ॥३८८८॥
बाणभेदे तु विज्ञेयो ना द्वापश्चाशदङ्गुले ।
बिलं छिद्रे गुहायाश्च पुमानुच्चैःश्रवोहये ॥३८८९॥
बिलेशयो द्वे नकुले मूषिके भुजगेऽपि च ।
बिलेशया तु गोधायामियं स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ॥३८९०॥
बिल्वः पादपभेदे ना श्रीफलाख्ये प्रकीर्त्तितः ।
क्लीबन्तु तत्फले बिम्बमानेऽपि फलनामनि ॥३८९१॥
बिसखण्डं रक्तपद्मे योगार्थे तु यथायथम् ।
बीजमन्त्रेऽप्यपत्ये च रेतस्यङ्कुरकारणे ॥३८९२॥
फलास्थनि च हेतौ च नपुंसकमुदीरितम् ।
बीजपुष्पं मरुबके तथा मदनकेऽपि च ॥३८९३॥
बीजी बीजवति त्रि स्यात्पुमांस्तु पितरि स्मृतः ।
बीज्यो धान्ये यावशूकाख्ययवक्षारभिद्यपि ॥३८९४॥
बीभत्सस्तु पुमान्पापे काव्यस्थे च रसान्तरे ।
बुकस्तु शिवमल्ल्यां ना मूषायां तु बुका स्त्रियाम् ॥३८९५॥
बुक्कणो वावदूके त्रिः शुनि द्वे ना नृपान्तरे ।
बुद्धो ना सुगतेऽथ त्रिः पण्डिते ज्ञातरि स्मृतः ॥३८९६॥
ज्ञायमाने च फुल्ले च बोधने तु नपुंसकम् ।
बुद्धिमान्राजभृङ्गाख्ये स्याद्भृम्याटान्तरे द्वयोः ॥३८९७॥
वाच्यवद्बुद्धिमानेष बुद्धियुक्ते प्रकीर्त्तितः ।
बुद्बुदोऽपां विकारे ना नेत्ररोगे त्रि तद्वति ॥३८९८॥
बुधः सुरे द्वयोर्ना तु बुधश्चान्द्रमसायनौ ।
विद्वद्वोद्ध्रोस्त्रिषु बुधो बुद्धौ तु स्यात्स्त्रियां बुधा ॥३८९९॥
मुण्डीसंज्ञतृणस्तम्बे बृद्धिसंज्ञे च भेषजे ।
बुधानस्तु गुरौ पुंसि विज्ञे स्यादभिधेयवत् ॥३९००॥

बुध्नः प्रजापतौ रुद्रे पृष्ठान्ते स्वर्गतुण्डयोः ।
वृक्षादेरप्यवाग्भागे पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥३९०१॥

बुलिर्यौनौ च वायौ च स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
बुसः कडंगरे न स्त्री क्लीबं तु सलिले बुसम् ॥३९०२॥

गोकरीषेन्धने त्वेषा बुसा स्त्री परिकीर्त्तिता ।
बुस्तः प्रहसने पुंसि धनुष्कोटौ नपुंसकम् ॥३९०३॥

बृञ्चूको द्वे मातृवाहनाम्नि जन्तौ जले तु नप् ।
बृन्दारको द्वयोर्देवे त्रि तु मुख्येऽपि सुन्दरे ॥३९०४॥

बृहच्छदः शोथशत्रुस्तम्बे ना त्रि तु यौगिके ।
बृहत्त्वारण्यके साम्नि त्वामिद्धीत्यृक्समुद्भवे ॥३९०५॥

क्ली त्रिर्महति तत्रापि स्त्र्यर्थे स्याद्बृहतीत्यथ ।
प्रसहासंज्ञवार्त्ताक्यां छन्दोभेदेषु केषुचित् ॥३९०६॥

षट्त्रिंशदक्षराद्येषु तथा विश्वावसोरपि ।
वीणायां क्षुद्रवार्त्ताक्यां बृहतीवाच्यपि स्त्रियाम् ॥३९०७॥

बृहत्कं सामभेदे य आगन्तेत्यृचि गीयते ।
मणिभेदेऽपि तत्रायं बृहत्कः पुंसि कीर्त्तितः ॥३९०८॥

प्रविकासिप्रभोऽल्पोऽपि यो महानिव लक्ष्यते ।
बृहन्नला गुडाकेशे महापोटगले पुमान् ॥३९०९॥

बेकटः स्याद्वैकटिके मत्स्यभेदे च यूनि च ।
बेटकस्त्रिर्वैकटिके तथा सञ्जातयौवने ॥३९१०॥

बैजिकं शिग्रुतैले च हेतौ सद्योऽङ्कुरे तु ना ।
अथ बीजप्रयोज्यादौ बैजिकं भेद्यलिङ्गकम् ॥३९११॥

बोधनी बोधपिप्पल्योर्बोधनं गन्धदीपने ।
बोधनीया स्त्रियां बृद्धिसंज्ञके भेषजान्तरे ॥३९१२॥

अथ बोधयितव्ये च बोद्धव्येऽपि च वाच्यवत् ।
बोधिस्त्वर्थे स्त्रियां सम्यग्ज्ञाने च द्वे तु कुक्कुटे ॥३९१३॥

पुमांस्तु बोधिर्बुद्धे स्यादश्वत्थेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
बोलं साज्ये मधुनि च तक्कोले ना त्वपोभ्रमे ॥३९१४॥
लेखन्युद्धृतमस्यां च तथा गन्धरसौषधे ।
ब्रघ्नो ना ऋषिभित्सर्गसूर्ये द्वे त्वश्वविप्रयोः ॥३९१५॥
ब्रह्मघोषो वेदघोषे तथैव गरलान्तरे ।
ब्रह्मचारी पुमान्स्कन्देऽप्युपनीतेऽपि कीर्त्तितः ॥३९१६॥
ब्रह्मचारिण्युमायां स्त्री त्रि त्वमैथुनकारिणि ।
ब्रह्मण्यः स्याद्ब्रह्मसाधु ब्रह्मदारुशनैश्चरे ॥३९१७॥
ब्रह्मदण्डी तु भाङ्ग्यां स्याद्ब्रह्मदण्डो धनुर्भिदि ।
ब्रह्मा रुद्रहृषीकेशविरिञ्चार्केन्दुवह्निषु ॥३९१८॥
यज्ञे विप्रे च भृग्वादिष्वृत्विग्भेदे तु पुंस्ययम् ।
क्लीबं तु वेदे मन्त्रेऽन्ने खेऽध्वात्माऽऽत्मतपस्सु च ॥३९१९॥
मोक्षे जपे धने चैतेष्वर्थेषु ब्रह्म कीर्त्तितम् ।
ब्रह्मपुत्रो विषे ब्रह्मवालुकाख्ये पुमान्मतः ॥३९२०॥
रुद्रे केतुग्रहे चापि योगार्थे तु यथायथम् ।
ब्रह्मपुत्रः क्षेत्रभेदे नदभेदे च पुंस्ययम् ॥३९२१॥
ब्रह्मबन्धुस्त्र्यधिक्षिप्य निर्देश्ये ब्राह्मणाधमे ।
ब्रह्मी तु फञ्जिकायां स्याच्छाकमत्स्यप्रभेदयोः ॥३९२२॥
ब्राह्मोऽन्तिमे रात्रियामेऽथ ब्राह्मी सप्तमातृषु ।
एकस्यां दिशि चोर्ध्वायां ब्रह्मरीत्याख्यलोहके ॥३९२३॥
मत्स्याक्ष्याख्यतृणस्तम्भवाचिषु त्रि तु यौगिके ।
ब्राह्मणस्तु द्वयोर्विप्र आत्मज्ञे तु त्रिषु स्मृतः ॥३९२४॥
स्याद्व्याख्यायकवेदांशतदंशान्तरयोस्तु नप् ।
ब्राह्मणी तु ब्रह्मरीतिलोहे भाङ्ग्यामपि स्त्रियाम् ॥३९२५॥
हरेणुस्पृक्कयोश्चापि स्यात्पिङ्गविपुले तथा ।
पिपीलिकान्तरे रक्तपुच्छे चाञ्जनिकान्तरे ॥३९२६॥
ब्राह्मण्यं विप्रसङ्घे ब्राह्मणानां भावकर्मणोः ॥३९२६½॥

भ

भं नक्षत्रे च मेषादौ संख्यायां सप्तविंशतौ ॥३९२७॥
भस्तु भ्रान्तौ तथा शुक्रग्रहेऽप्यादिगुरौ गणे।
संज्ञान्तरे पाणिनेश्च भा तु भासि स्त्रियां मता ॥३९२८॥
भक्षणाऽभ्यवहारे स्त्री भक्षणं च नपुंसकम्।
गवीधुकाख्यधान्ये तु भक्षणीति स्त्रियां मता ॥३९२९॥
भक्तस्त्रिः सेविते सेवकेऽथ क्लयोदनसेवयोः।
भक्तिर्भागे सेव्यमाने लक्षणासेवयोः स्त्रियाम् ॥३९३०॥
भगोऽस्त्री स्याद्यशोवीर्ययोनियत्नार्कभूतिषु।
कान्तीच्छाज्ञानवैराग्यधर्मैश्वर्यतपस्सु च ॥३९३१॥
धैर्यसौभाग्यमाहात्म्यधनशुक्रमतिश्रुते।
पुमांस्तु सूर्ये चादित्यभेदानामपि कुत्रचित् ॥३९३२॥
भगवांस्तु महादेवे शिवे च सुगते पुमान्।
स्त्री पार्वत्यां भगवती पूज्ये तु भगवांस्त्रिषु ॥३९३३॥
भङ्गः पुमांस्तरङ्गे च भञ्जने च प्रकीर्त्तितः।
धान्ये तु मातुलान्याख्ये स्त्रियां भङ्गा प्रकीर्त्तिता ॥३९३४॥
भङ्गिर्भङ्गेऽप्याकृतौ च विच्छित्तौ च स्त्रियाम्मता।
भङ्गुरो नश्वरे चापि नम्रे स्यादभिधेयवत् ॥३९३५॥
भङ्ग्यो भाङ्गीनभङ्क्तव्यभङ्गसाध्वादिषु त्रिषु।
भञ्जनं क्लीबमामर्देऽथार्थे भञ्जयतेर्न ना ॥३९३६॥
भञ्जना तु स्त्रियामेव विवृत्य वचने भवेत्।
भटस्तु योधे ना मर्त्ये नटीविप्रोद्भवे द्वयोः ॥३९३७॥
भटालं तु कपाले क्ली भटालः सेवके त्रिषु।
भटिलः सेवके त्रि स्याद्द्वयोस्तु शुनके मतः ॥३९३८॥
भट्टारको ना नाट्योक्तौ राज्ञि पूज्ये च पूरुषे।
स्त्री तु भट्टारिका ज्ञेया नाट्योक्तावेव मातरि ॥३९३९॥

भट्टिनी द्विजभार्यायां नाट्योक्त्यां राजयोषिति ।
भण्डं धनवतां कोशस्थितेऽर्थे स्यान्नपुंसकम् ॥३९४०॥
परिहासे द्वयोर्भण्डा हास्यकारिणि तु त्रिषु ।
भण्डी मण्डूकपर्ण्याख्यतृणस्तम्बे स्त्रियाम्मता ॥३९४१॥
[1]भण्डनं परिहासे क्ली दुग्धे च कवचे रणे ।
भण्डिलस्तु शिरीषे ना द्वयोः पुत्रे तथा शुनि ॥३९४२॥
भण्डीरी मण्डूकपर्ण्यां भण्डीरो योद्धरि त्रिषु ।
भदन्तः पुंसि संन्यासिन्यपि स्यात्पूजनीयके ॥३९४३॥
शाक्यक्षपणकानां च त्रिस्तु ताराभदन्तके ।
भद्रः पुमान्स्याद्वृषभे गजभेदे द्वयोर्मतः ॥३९४४॥
नपुंसकं तु भद्रं स्यात्सामभेदे शुभे सुखे ।
भद्रस्तु कीर्त्तितः साधौ बृहत्यप्यभिधेयवत् ॥३९४५॥
स्त्रियां तु भद्रा दूर्वायां शारिबारास्नयोरपि ।
द्वितीयासप्तमीद्वादश्याख्यासु च तिथिष्वपि ॥३९४६॥
भद्रकाली तु गन्धोल्यां कात्यायन्यामपि स्त्रियाम् ।
भयं प्रतिभये घोरे प्रसूने कुब्जकस्य च ॥३९४७॥
[2]भयानको द्वे वराहे व्याघ्रे स्यान्मूषिकान्तरे ।
रसभेदे तु राहौ च पुमांस्त्रिषु तु भीषणे ॥३९४८॥
भरस्त्वतिशये भारे संग्रामे गरिमण्यपि ।
घोषके भरणं तु क्ली धारणे पोषणेऽपि च ॥३९४९॥
[3]भरणी घोषके ऋक्षे भरणं वेतने भृतौ ।
भरतस्त्वृत्विजि नटे रामस्य च कनीयसि ॥३९५०॥
आद्यक्षत्रियभेदे च वर्षेऽस्मिन्नृत्तशास्त्रके ।
भरद्वाजो गुरोः पुत्रे व्याघ्राटाख्यविहङ्गमे ॥३९५१॥

१. भण्डनं कवचे युद्धे खलीकारेऽपि न द्वयोः ।
२. भयानकः स्मृतो व्याघ्रे रसे राहौ भयंकरे ।
३. भरणी यमनक्षत्रे भरण्यो भूस्त्र्यपि स्त्रियाम् ।
भरणं पोषणे चापि धारणेऽपि नपुंसकम् ।

भरुः सुवर्णे च शिवे भर्त्तरि त्वभिधेयवत् ।
[1]भरुजो द्वे शृगालेऽपि स्नेहसंमृष्टतण्डुले ॥३९५२॥
भक्ष्यभेदेऽपि तत्राऽन्त्ये भरुजी भरुजा स्त्रियाम् ।
भरुटः कुम्भकारे द्वे कपर्दे तु पुमान्मतः ॥३९५३॥
भर्गशब्दस्त्वदन्तः स्यात्सामभेदे महेश्वरे ।
भर्गस्तेजसि च क्लीबं सान्तं रेतस्यपीष्यते ॥३९५४॥
भर्त्ता धवे ना त्रिषु तु स्वामिपोषकधर्त्तृषु ।
भर्त्तृदारक उक्तो ना नाट्योक्तौ युवराजके ॥३९५५॥
राजपुत्र्यां तु नाट्योक्तौ स्त्रीलिङ्गा भर्त्तृदारिका ।
भर्म स्याद्वेतने चापि काञ्चनेऽपि नपुंसकम् ॥३९५६॥
भर्मकं रोगभेदे स्याद्विडङ्गकलधौतयोः ।
भल्लः स्यात्पुंसि भल्लूके शस्त्रभेदे पुनर्द्वयोः ॥३९५७॥
भल्लीति भल्लातक्यां च स्त्रियामेव प्रकीर्त्तिता ।
भल्लको वानरे चापि तथा ऋक्षमृगे द्वयोः ॥३९५८॥
भल्लाटस्तु द्वयोर्ऋक्षे ना देवे वास्तुवासिनि ।
उदक्पार्श्वस्थकोष्ठानां प्रत्यगारभ्य तुर्यके ॥३९५९॥
भल्लूकस्तुण्डुवृक्षे ना द्वयोस्त्वृक्षमृगे मतः ।
भवः शिवप्राप्तिसत्त्रजगज्जन्मशुभक्षुधि ॥३९६०॥
भवस्तु भावितर्येष भेद्यवत्परिकीर्त्तितः ।
भवत्पूज्ये सर्वनाम त्रिष्वत्र भवती स्त्रियाम् ॥३९६१॥
त्रि त्वेव जायमाने च विद्यमाने च तत्र च ।
स्त्रीत्वे भवन्तीत्येतत्स्यान्ना तु गोत्रस्य कर्त्तरि ॥३९६२॥
ऋषिभेदे भवन्ती तु स्त्रीलिङ्गा लट्श्रुतौ स्मृता ।
भवनं क्लीबमुत्पत्तौ गृहे भवनमस्त्रियाम् ॥३९६३॥
स्त्रीपुंसयोस्तु भवनः कुक्कुटे परिकीर्त्तितः ।
भवन्तः पुंसि काले त्रिर्भवन्ती भवितर्यपि ॥३९६४॥

---

१. भरुस्तु वर्णे पुंसि स्याद्भर्त्तरि त्वभिधेयवत् ।

भविलस्त्रिषु भव्ये क्ली गृहे मुन्यन्तरे तु ना।
भविष्यत्सलिले क्लीबं भाविनि त्वभिधेयवत् ॥३९६५॥
भव्यो ना कर्मरङ्गद्रौ क्लीबं तस्य फले धने।
कल्याणाख्यगुणे च स्याद्भेद्यलिङ्गं तु तद्वति ॥३९६६॥
योग्ये भवितरि प्राप्ये भवितव्ये तु तन्नपि।
भषणः कुक्कुरे द्वे स्यात्क्ली तु बुक्कणकर्मणि ॥३९६७॥
भसद्दान्ता स्त्रियां विष्ठा गुह्यकोष्ठेषु नप् मुखे।
भस्त्रा तु वह्निध्मानार्थाऽयस्कारादिदृतौ स्त्रियाम् ॥३९६८॥
भेदे सप्तदशस्तोमविच्युतेरिषुधावपि।
भस्मकं व्याधिभेदेऽपि विडङ्गेऽपि नपुंसकम् ॥३९६९॥
भस्मतूलं ग्रामकूटे पांशुवर्षे हिमेऽपि च।
भाकूटः शैलभेदेऽपि तथैव निमिषान्तरे ॥३९७०॥
भाक्तस्तु भक्तसाधौ स्यात्त्रिषु लाक्षणिकेऽपि च।
भागौ भाग्ये तुरीयांशे रूपकाऽर्धेंऽशमात्रके ॥३९७१॥
भागन्तु सामभेदे क्ली भगसम्बन्धिनि त्रिषु।
भागधेयन्तु भाग्ये क्ली दायादे तु पुमानयम् ॥३९७२॥
स्त्रीपुंसयोर्भागधेयी राजदेयकरे मता।
अथ भागवतः प्रोक्तो भगवद्योगिनि त्रिषु ॥३९७३॥
द्वयोः क्षत्रियपूर्वायां वैश्यायां व्रात्यतः सुते।
भाग्यं शुभाशुभे जन्मान्तरकर्मणि कर्मणि ॥३९७४॥
शुभाशुभेऽथ भक्तव्ये त्रिषु तत्र च साधुनि।
प्रदीयते यो वृद्ध्यायलाभशुल्को पदात्मना ॥३९७५॥
भाजनं तु मतं योग्ये पात्रे चापि नपुंसकम्।
भाण्डं क्लीबममत्रेऽश्वभूषणे भूषणेऽपि च ॥३९७६॥
वणिङ्मूलधने पण्ये तथैवोपस्करे स्मृतम्।
भाण्डी तु स्त्री शिरीषद्रौ भण्डसम्बन्धिनि त्रिषु ॥३९७७॥
भातुः शरीरावयवे दैवे चापि पुमान्मतः।
भानुर्ना भास्करे घस्रे नृस्त्रियोस्तु गभस्तिषु ॥३९७८॥

भामः क्रोधे च भगिनीपतौ भामा तु योषिति।
स्त्रीत्वे च सत्यभामायामीर्ष्यावति तु स त्रिषु ॥३९७९॥
[1]भारः सहस्रद्वितये पलानां च गरिम्णि च।
वोढव्ये भरणे चापि पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥३९८०॥
भारतं त्वस्त्रियामस्मिन्वर्षे स्यात्स्त्री तु भारती।
यक्षिणीतुलसीवाणीनाट्यवृत्त्यन्तरेषु च ॥३९८१॥
क्लीबं तु भारतमिति महाभारत इष्यते।
[2]भारद्वाजः पक्षिभेदे व्याघ्राटाख्ये द्वयोर्मतः ॥३९८२॥
भारद्वाजी स्त्रियां वन्यकार्पास्यां ना क्वचिन्मुनौ।
भरद्वाजस्य वंश्ये द्वे त्रि तु सम्बन्धिनि स्मृतः ॥३९८३॥
भारवाहो रेचिताख्याऽश्वगतौ पुंसि कीर्त्तितः।
अथ तद्वति भारस्य वोढर्यपि च वाच्यवत् ॥३९८४॥
भारुण्डं सामभेदेषु क्ली भारुण्डः पुनर्द्वयोः।
एकोदरपृथग्ग्रीवे पक्षिण्यम्बुधिचारिणि ॥३९८५॥
भार्गवी पार्वतीलक्ष्मीदूर्वासु स्यात्स्त्रियामथ।
शुक्रे परशुरामे च गजे धन्विनि भार्गवः ॥३९८६॥
भार्त्रं पोषे त्रि तु भृतेर्ग्राहके भर्त्तृयोगिनि।
भार्या स्त्री सहधर्मिण्यां भार्यस्त्वादिनृपान्तरे ॥३९८७॥
भारसाध्वादिके त्वेष भार्यः स्यादभिधेयवत्।
भार्याटिकः पुमान्भार्यानिर्जिते हरिणान्तरे ॥३९८८॥
भार्यारुः शैलभेदे स्यान्मृगभेदे च तत्र च।
क्रीडया परभार्यायाम्पुत्रो येनोपपादितः ॥३९८९॥
भालन्तु तेजसि क्लीबं ललाटे च प्रकीर्त्तितम्।
भालाङ्कस्तु शिवे शाकभेदेऽपि करपत्रके ॥३९९०॥

---

१. भारः स्याद्वीवधे विष्णौ पलानां द्विसहस्रके।
२. भारद्वाजस्तु ना द्रोणे द्वे भरद्वाजवंशजे।
भारद्वाजी तु वन्यायां कार्पास्यां परिकीर्त्तिता।

महालक्षणसम्पन्नपुरुषे रोहिते च ना।
कच्छपे च द्वयोस्त्रिस्तु रोहिते गुणिनि स्मृतः ॥३९९१॥

भावस्तु भास्करे ज्येष्ठभ्रातर्यपि पुमान्मतः।
भावो लीलाक्रियाचेष्टाभूत्यभिप्रायजन्तुषु ॥३९९२॥

पदार्थमात्रे सत्तायामात्मयोनिस्वभावयोः।
आत्मन्यपि च योनौ च प्राप्तिसंस्कारजन्मसु ॥३९९३॥

शृङ्गारादे रसस्यापि कारणे चान्तरात्मनि।
नाट्योक्तिविषये प्राज्ञे पुंसि त्रिषु तु मानिनि ॥३९९४॥

भवसम्बन्धिनि बुधे भावः स्याद्भवितर्यपि।
भावज्ञा स्त्री प्रियङ्गुद्रौ भेद्यवद्भाववेदिनि ॥३९९५॥

भावनोत्पादने चापि तथा गन्धाधिवासने।
प्रवर्त्तनायामपि च नप्स्त्रियोः परिकीर्त्तिता ॥३९९६॥

भावाटस्तु त्रिषु ज्ञेयो भावके कामुकेऽपि च।
ना तु साधुनिवेशे स्याद्भावाटस्तु द्वयोर्नटे ॥३९९७॥

भावित्रं तु भवेद्भद्रे त्रैलोक्ये च नपुंसकम्।
भावुकं कुशले क्लीबमुपालम्भे तु भाषणी ॥३९९८॥

भाषा गिर्यभियोगोक्तौ लौकिकोक्तौ च भाषणे।
भाष्यं तु क्ली विवरणग्रन्थजात्यन्तरे यथा ॥३९९९॥

महाभाष्यादि तत्र स्याद्भाषणीये तु भेद्यवत्।
भाः प्रभावे मयूखे च स्त्रियामुक्ता रुचावपि ॥४०००॥

भासो द्वयोः शकुन्ताख्यखगे दीप्तावपि स्मृतः।
सामान्तरे तु भासं तन्नपुंसकमुदीरितम् ॥४००१॥

भासन्तः सुन्दराकारे त्रिषु ना भासपक्षिणि।
भासयन्तो रवौ ना त्रि भाषयन्ती प्रभाकृति ॥४००२॥

भास्करः पावके सूर्ये क्वचित्पाषणशिल्पिनि।
भास्वान्रवीन्द्वोर्ना स्त्री नद्युषसोस्त्रिस्तु भास्वरे ॥४००३॥

'भिक्षा तु भिक्षितद्रव्ये देयान्ने ग्रासमात्रके ।
याचने सेवने चापि भृतावपि मता स्त्रियाम् ॥४००४॥
भिक्षुरित्येष पुँल्लिङ्गः परिव्राजि प्रकीर्त्तितः ।
चतुर्थकालाशिनि तु भिक्षाशीले च भेद्यवत् ॥४००५॥
भित्तिः प्रदेशे कुड्ये चाप्यवलम्बे भवेत्स्त्रियाम् ।
भित्तिका तु नदीभेदे शरावत्याह्वये स्मृता ४००६॥
तथा भाषादिचूर्णे च वज्रे च परिकीर्त्तिता ।
भिदकः परशौ वस्त्रे पुंसि स्याद्वज्रकामयोः ॥४००७॥
भिदुरं कुलिशे त्रिस्तु भेत्तर्यपि भिदेलिमे ।
भिन्द्रं स्याददृढे त्रि क्ली त्वेतद्दरणवज्रयोः ॥४००८॥
भिन्नं विदारितेऽन्यसिन्मिश्रे चाप्यभिधेयवत् ।
भिन्नकुम्भस्त्रि योगार्थे तथा स्याद्दास्यमोचिते ॥४००९॥
भिल्लो द्वयोः स्याच्छबरान्निष्ध्यपूर्वाऽन्धिकासुते ।
अथ भिल्लः पुमानेष पक्कणे परिकीर्त्तितः ॥४०१०॥
भीतं भये क्ली भीतस्तु त्रिषु प्रोक्तो भयान्विते ।
भीमोऽम्लवेतसे घोरे शम्भौ मध्यमपाण्डवे ॥४०११॥
दमयन्त्याश्चपितरि क्रूरे लिङ्गन्तु भेद्यवत् ।
भीरुः पुंसीङ्गुदतरौ स्त्रियां तूर्वारुयोषितोः ॥४०१२॥
योषिद्भेदेऽपि भीरुस्तु कातरे त्रिषु कीर्त्तितः ।
भीरुचेतास्त्रियोगार्थे मृगे त्वेष द्वयोर्मतः ॥४०१३॥
भीषणा भापनायां न ना भीमे तु त्रि भीषणम् ।
भीषणा तु कवाटे च स्त्रियां स्यात्सल्लकीरसे ॥४०१४॥

---

१. भासयन्तस्तु पुँल्लिङ्गो भास्करे परिकीर्त्तितः ।
अथ भासयितर्युक्ता भासयन्त्याभिधेयवत् ।
भास्करः पुंसि सूर्येपि पावकेपि प्रकीर्त्तितः ।
भास्वानिन्द्रौ रवौ पुंसि भेद्यलिङ्गं तु भास्वरे ।
भास्वती तु स्त्रियां नद्यां तथैवोषसि कीर्त्तिता ।

भीष्मः शान्तनवे पुंसि भेद्यवत्तु भयानके ।
[1]भुजो भूर्जद्रुमे [ऽर्केऽग्नौ] बाहौ भूमानगोचरे ॥४०१५॥
[गरुडे वस्तुभेदे] च भुजा [स्यान्] नृस्त्रियो [रियम्] ।
भुजङ्गस्तु विटे पिङ्गे तथैवान्यतमे भवेत् ॥४०१६॥
चण्डवृष्टिप्रपातादिदण्डकान्ते द्वयोस्त्वहौ ।
भुजिर्भुनक्तिधातौ च पावके भुजतावपि ॥४०१७॥
भुजिष्यस्तु द्वयोर्दास आचार्ये त्वोदने तथा ।
हस्तसूत्रेऽपि ना त्रिस्तु भोक्तर्येष धने तु नप् ॥४०१८॥
भुरण्यस्तु त्रिषु क्षिप्रे विष्ण्वर्काग्निषु पुंस्ययम् ।
[2]भुरिग्बाहौ च कन्दे च वसायां भुवि च स्त्रियाम् ॥४०१९॥
उक्ताद्युत्कृतिपर्यन्तच्छन्दःस्वेकाक्षराधिके ।
छन्दोभेदेऽप्यथ पुमान्भुरिग्राजनि कीर्त्तितः ॥४०२०॥
भुलिङ्गस्त्वृषिभेदे ना नीवृद्भेदे तु भूम्नि च ।
स्यात्साल्वावयवे द्वे तु पक्षिजात्यन्तरे मतः ॥४०२१॥
[3]भुवनोऽस्त्री भवेल्लोके क्लीबं तु गगने जले ।
भुवन्युः स्यात्पुमानर्के ज्वलने शशलाञ्छने ॥४०२२॥
भुवो नपुंसकं सान्तं लोकभेदे रवावपि ।
भूर्भूम्यां स्थानमात्रे स्त्री सौराष्ट्र्यां व्योमदेहयोः ॥४०२३॥
भूकं छिद्रे च काले च नपुंसकमुदीरितम् ।
भूकेऽश्यवल्गुजे स्त्री स्याद्भूकेशः शैवले वटे ॥४०२४॥
भूजम्बुरितिगोधूमे विकङ्कतफले स्त्रियाम् ।
भूतं प्राप्तिमहाभूतसत्वे भवनकर्मणि ॥४०२५॥
त्रि तु प्राणिनि च न्याय्येऽतीतलब्धसमेषु च ।
देवयोन्यन्तरे त्वस्त्री भूता तन्मातरि स्त्रियाम् ॥४०२६॥

---

१. भुजस्तु गरुडेऽर्केऽग्नौ बाहौ तु स्याद्द्वयोर्भुजा ।
२. भुरिक् स्त्री भूवसाकन्दभुजेच्छन्दोत्तरेपि च ।
३. भुवनोऽस्त्री भवेल्लोके क्लीबं तु भुवने जले ।

अथ भूतः कुमारेऽयं पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
भूतं क्ष्मादौ पिशाचादौ जन्तौ क्लीबं त्रिषूचिते ॥४०२७॥
प्राप्ते वित्ते समे सत्ये देवयोन्यन्तरे तु ना ।
भूतवृक्षस्तु शाखोटद्रुमे स्योनाकपादपे ॥४०२८॥
[1]भूतात्मा पुंसि [पवने] दैवे[जीवात्मब्रह्मणोः] ।
भूतिर्भस्मनि सम्पत्तिहस्तिश्रृङ्गारयोः स्त्रियाम् ॥४०२९॥
भूतिकं तु यवान्यां कत्तृणभूनिम्बभूस्तृणे ।
छत्रायवान्योर्भूतीकं भूनिम्बे कट्फलेऽपि च ॥४०३०॥
भूतेष्टा स्त्री चतुर्दश्यां तिथौ स्यात्त्रिस्तु यौगिके ।
भूभृत्पुमान्नृपे चापि पर्वते च प्रकीर्त्तितः ॥४०३१॥
भूमिः पृथिव्यां विषये स्थानमात्रे भवेत्स्त्रियाम् ।
भूमिका रचनायां स्याद्वेषान्तरपरिग्रहे ॥४०३२॥
भूमिजोऽङ्गारके पुंसि तथैव नरकासुरे ।
स्त्रियां तु भूमिजा सीतादेव्यां त्रिषु तु भूद्भवे ॥४०३३॥
भूमिस्पृक् स्याद्द्वयोर्वैश्यमर्त्ययोस्त्रि तु यौगिके ।
भूयोऽव्ययं पुनरर्थे त्रिस्त्वितरे च महत्तरे ॥४०३४॥
[2]भूरिर्ना वासुदेवे च हरे च परमेष्ठिनि ।
नपुंसकं सुवर्णे च प्राज्ये स्याद्वाच्यलिङ्गकः ॥४०३५॥
स्त्रियां भूरिफलाऽन्यस्मिन्पुष्पवल्लेः प्रकीर्त्तिता ।
स्थावरे सप्तलानाम्नि यौगिके तु त्रिषु स्मृता ॥४०३६॥
भूर्णिर्भ्रमणशीले त्रि स्त्रिया भूमौ धृतावपि ।
भूषणाऽलङ्कृतौ च स्यात्स्त्री क्ली त्वाभरणे भवेत् ॥४०३७॥
भृगुर्गिरितटे ऋष्यन्तरे शुक्रे शिवे पुमान् ।
[3]भृङ्गो द्वयोः स्याद्भूम्याटे भ्रमरे च पुमान्पुनः ॥४०३८॥

---

१. भूतात्मा पवनेदेहे जीवात्मनि विरञ्चने ।
२. भूरिस्त्री सुवर्णे स्यात्प्रचुरे तु त्रिषु स्मृतः ।
३. भृगुः प्रधाने मुनिभित्तत्सुतेषु नृभूमनि ।

भृङ्गराजे लवङ्गे च भृङ्गारे वर्णभिद्यपि ।
पिङ्गाख्ये त्रिस्तु तद्युक्ते क्ली तु त्वक्पत्रभेषजे ॥४०३९॥
[1]भृङ्गराजो मार्कवे स्याद्योदक्षिणपदावलेः ।
वास्तुनः सप्तमपदे प्राक्त आरभ्य तिष्ठति ॥४०४०॥
वास्तुदेवेऽपि ना तस्मिन्द्वे तु भू (धू) म्याटभृङ्गयोः ।
भृङ्गारः कनकाल्वां भृङ्गारी झिल्ल्याख्यकीटके ॥४०४१॥
भृङ्गारी झिल्लिकायां स्यात्कनकालौ पुनः पुमान् ।
भृज्जकण्ठस्तु वैश्यायां विप्रेण जनितेऽपि च ॥४०४२॥
तथा व्रात्येन विप्रायां जनितेऽपि सुते द्वयोः ।
भृतिः स्त्री धारणे पोषे भृतकादेश्च वेतने ॥४०४३॥
अथ तत्र भृतिः स्त्री स्यान्मूल्येऽपि भरणेऽपि च ।
भृत्यो दासे द्वयोर्भृत्या तु स्त्रियां वेतने मता ॥४०४४॥
भृमलः कृमिभेदे द्वे क्ली चक्रे नाऽनिले मतः ।
भृमिर्द्वयोर्हस्तिनि स्यात्पुंसि वायौ जलेऽपि च ॥४०४५॥
भृष्टिः स्याद्भर्जने शून्यवाटिकायामपि स्त्रियाम् ।
[2]भेको निषादविप्राजे मण्डूकेऽपि द्वयोर्मतः ॥४०४६॥
भेदो विशेषे व्यावृत्तावुपजापे विदारणे ।
भेनस्तु चन्द्रे सूर्ये च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥४०४७॥
भेरस्तु कातरे त्रि स्याद्भेरी स्त्री दुन्दुभौ मता ।
भेरुण्डा देवताभेदयक्षिण्यन्तरयोः स्त्रियाम् ॥४०४८॥
भयानके तु भेरुण्डो वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ।
भेलः स्यादुडुपे पुंसि चिकित्साग्रन्थकृन्मुनौ ॥४०४९॥
पूज्यप्राज्यप्रहीणेषु तु त्रिः स्यात्कातरेऽपि च ।
भेषजं स्यात्सुखे तोये भेषजी त्वौषधे नना ॥४०५०॥
भैरवी मातृभेदे स्त्री ना शिवे त्रिस्तु भीषणे ।
भोगो धने सुखे राज्ये सर्पस्य फणकाययोः ॥४०५१॥

१. मधुव्रते भृङ्गराजे पुंसि भृङ्गी गुडत्वचि ।
२. पुमांस्तु मेघे भेकः स्याद् भीरुके च तथा मतः ।

कौटिल्ये भोजने त्राणे वेश्यादीनां भृतावपि ।
भोगवद्भोगयुक्ते त्रिर्भुजगे भोगवान्द्वयोः ॥४०५२॥
स्त्री तु भोगवती नागपुरी पातालगङ्गयोः ।
भोगी तु सर्पे द्वे स्त्री तु भोगिनी नृपयोषिति ॥४०५३॥
कृताभिषेकाया अन्यस्यां भोगी त्वेष च वाच्यवत् ।
वैयावृत्यकरे चापि भूपाले भोगवत्यपि ॥४०५४॥
भोजो राजन्यमात्रेऽपि नीवृद्भेदेऽस्य राजनि ।
मर्त्यजात्यन्तरे चापि द्वयोः क्षत्रियगोलके ॥४०५५॥
पुंभूमनि तु विन्ध्याद्रिपार्श्वस्थे नीवृदन्तरे ।
भोजनं धनमुक्त्योः क्ली न ना भोजयतेर्युचि ॥४०५६॥
भोजनीयं त्रि भोक्तव्ये सामुद्रलवणे तु नप् ।
भोलो द्वयोर्द्वीपिनामशार्दूलान्तर इष्यते ॥४०५७॥
उदीच्यनीवृद्भेदे तु भोलाः पुंभूमनि स्मृताः ।
भोलो मीनान्तरे पुंसि त्रिषु कामादिविह्वले ॥४०५८॥
भोस्तु सम्बोधने चैव विषादेऽप्यव्ययं मतम् ।
भौतो देवलके पुंसि भौती रात्रौ स्त्रियां मता ॥४०५९॥
भौतं भूतसमूहे क्ली भूतसम्बन्धिनि त्रिषु ।
भौतिकं भूतसम्बद्धे त्रिषु ना भौतिकः शिवे ॥४०६०॥
भौमोऽभिधेयवद्भूमिभवेऽथ नरकासुरे ।
कुजग्रहे रक्तपुनर्नवायामम्बरेऽपि ना ॥४०६१॥
भौरिकः कनकाध्यक्षे त्रिः पुंभूम्नि तु भौरिकाः ।
प्राग्देशावस्थिते नीवृद्भेदे समतटाह्वये ॥४०६२॥
भ्रंशस्तु व्यसने पाते नाशे चैव पुमान्मतः ।
भ्रमस्तु मिथ्याज्ञाने च भ्रमणे विचिकित्सने ॥४०६३॥
शस्त्रमार्जनयन्त्रे च गृहाच्च निर्गमाध्वनि ।
[1]भ्रमको भ्रामकः क्रोष्टौ द्वे सूर्यावर्त्तके पुमान् ॥४०६४॥

---

१. भ्रमोऽस्तु निर्गमे भ्रान्तौ कुन्दभ्रमणयोरपि ।

अयस्कान्तविशेषे च लोहभ्रमणकारिणि ।
भ्रमणं तु नपि भ्रान्तौ स्त्रीनपुंसकयोः पुनः ॥४०६५॥
भ्रमणा भ्रमयत्यर्थे स्त्रियां तु परिकीर्त्तिता ।
कारुण्डिकायां भ्रमणी क्रियाद्यायामधीशितुः ॥४०६६॥
भ्रमरोऽलौ द्वयोर्ना तु गिरिके कामुके बटौ ।
हस्तमुद्रान्तरे पुत्रदात्रीजतुकयोः पुनः ॥४०६७॥
भ्रमरी भ्रमरच्छल्ल्यां तु स्त्रियां भ्रमरा मता ।
अथ भ्रमरको भृङ्गे गिरिके चाऽलकान्तरे ॥४०६८॥
भ्रमरेष्टस्तु पुंस्याम्रे नीपे जम्बूटपादपे ।
भ्रमिः स्त्री भ्रमणे धात्वोर्भ्रमतौ भ्राम्यतौ च ना ॥४०६९॥
भ्राजो दीप्ते त्रिष्वथ ना दीप्तावादित्यभिद्यपि ।
भ्राजास्तु श्लोकभेदे स्युर्भ्राजं सामान्तरे नपि ॥४०७०॥
भ्रातृव्यस्तु पुमाञ्शत्रौ भ्रात्रपत्ये द्वयोर्मतः ।
भ्रान्तो ना राजधुस्तूरे मत्तेभे त्रिस्तु सम्भ्रमे ॥४०७१॥
भ्रान्तिर्मिथ्यामतौ चापि भ्रमणे च स्त्रियां मता ।
भ्रान्तिमान्भ्रान्तियुक्ते स्यादलङ्कारान्तरेऽपि च ॥४०७२॥
भ्रामरं मधुभेदे स्यात्क्लीबं भ्रमरनिर्मिते ।
दुर्गायां भ्रामरी स्त्री स्याद्भ्रामरः प्रस्तरान्तरे ॥४०७३॥
भ्रामाको जम्बुके धूर्ते सूर्यावर्त्ताऽश्मभेदयोः ।
भ्रुकुटीमुख इत्युक्तो यौगिके सर्पभिद्यपि ॥४०७४॥
भ्रूणोऽर्भके च भूपे च ब्राह्मण्यां श्रोत्रियद्विजे ।
गर्भिण्यां स्त्रैणगर्भे च विप्रे चार्ये मतावपि ॥४०७५॥

म

मो मध्यमस्वरे काले शिवेन्द्रब्रह्मविष्णुषु ।
यमे विषे [1]मन्त्रभेदे पुमांश्छन्दोगणान्तरे ॥४०७६॥

---

१. यन्त्रभेदे वा ।

मा प्रभा मातृमानेषुज्ञानबन्धनमृत्युषु ।
लक्ष्म्यां कथ्यां स्त्रियो मं तु [1]धनेऽम्बुनि नपुंसकम् ॥४०७७॥
मकरो द्वे झषे ना तु निधिराशिभिदोः स्मृतः ।
मकरन्दः पुष्परसे तथा स्यान्मल्लिकान्तरे ॥४०७८॥
रससिन्दूरभेदे च कामे च मकरध्वजः ।
नपुंसकं मकरमुखं तथा स्यान्मकराकृतौ ॥४०७९॥
मकराङ्कः समुद्रेऽपि कामदेवे पुमान्मतः ।
जलनिर्गमनद्वारे जानूर्ध्वावयवे तथा ॥४०८०॥
मकुरः स्यान्मुकुरवद्दर्पणे बकुलद्रुमे ।
कुलालदण्डे मुकुले बकुलस्य फलेऽपि नप् ॥४०८१॥
मकुलो बकुले पुंसि कुड्मले त्वस्त्रियां मतः ।
मकुष्ठो व्रीहिभेदे ना मन्थरे पुनरन्यवत् ॥४०८२॥
मक्कणस्तु पुमान्कालेऽप्यजातरदने गजे ।
निःश्मश्रुपुरुषे द्वे तूद्दंशे खर्वगजेऽपि च ॥४०८३॥
क्लीबं तु [2]मक्कणं योधजङ्घात्राणार्थयन्त्रके ।
मखो यशस्कामसत्रयाजिक्रत्वमरान्तरे ॥४०८४॥
मखद्वेषी शिवे चापि राक्षसेऽपि पुमान्मतः ।
मगधो राजभेदेऽस्य मगधा भूम्नि नीवृति ॥४०८५॥
मुष्टौ च फलकादीनां वाद्यभेदे च मड्डुके ।
पिप्पल्यां मगधा स्त्रीत्वे [सुश्रुते परिकीर्त्तिता] ॥४०८६॥
मघाः स्त्रियोऽग्निनक्षत्रे भूम्नि काले च तद्युते ।
मघा तु गिरिजायां स्त्री मघी धान्यान्तरे भवेत् ॥४०८७॥
मघा त्वोषधिभेदे द्वे मघो द्वीपान्तरे पुमान् ।
क्ली तु दानधनादौ च मघं स्यात्कुसुमान्तरे ॥४०८८॥
मघवा ना नकारान्तस्त्रन्तोपीन्द्रे त्रि दातरि ।
मङ्क्षु शीघ्रे भृशार्थे चाव्ययमेतत्प्रकीर्त्तितम् ॥ ४०८९॥

---

१. सुखेऽम्बुनि वा ।
२. मङ्कणं वा ।

मङ्गोऽस्त्री मङ्गले ना तु मङ्ग आर्योपजीविनि।
मङ्गस्तु मङ्गलस्य स्यात्पठितर्यभिधेयवत् ॥४०९०॥
मङ्गोऽस्त्री नौशिरस्यक्ली मङ्गने गमनात्मके।
मङ्गला सितदूर्वायामुमायामस्त्रियां शुभे ॥४०९१॥
त्रि तु स्यान्मल्लिकापुष्पगन्धे लब्धार्थरक्षणे।
मङ्गलोऽङ्गारके ग्रामवास्तुभेदे च पुंस्ययम् ॥४०९२॥
मङ्गल्यं निमित्तादौ मङ्गलस्याभिधेयत्।
मल्लिकासमगन्धे च दध्नि तु स्यान्नपुंसकम् ॥४०९३॥
तथा सर्वौषिधिस्नाने ना तु बिल्वमसूरयोः।
अश्वत्थे त्रायमाणायां वचायां तु स्त्रियां मता ॥४०९४॥
कालागुरुविशेषे च मल्लिकाख्ये च सौरभे।
रोचनाशम्यधःपुष्पीमसीशुक्लवचास्वपि ॥४०९५॥
रीठाकरञ्जे जीरे च नारिकेलकपित्थयोः।
मङ्गल्या गिरिजायां च चीडायामृद्धिभेषजे ॥४०९६॥
दूर्वाहरिद्राजीवन्तीमाषपर्णीप्रियङ्गुषु।
मञ्जरी तिलकद्रुमुक्तयोर्वल्लरौ द्वयोः ॥४०९७॥
मञ्जुघोषाऽप्सरोभेदे यौगिके तु भवेत्त्रिषु।
मञ्जुनाशी तु शच्यां स्त्री मञ्जुनाशस्त्रियौगिके ॥४०९८॥
मञ्जुलो जलरङ्काख्यखगे द्वे त्रि तु सुन्दरे।
मञ्जुलं तु मतं क्लीबं निकुञ्जे च जलाञ्चले ॥४०९९॥
जलाञ्चलं स्वतोवारिनिर्गमे शैवलेऽपि च।
मञ्जूषा स्यात्पुटे तद्वत्पेटायामपि च स्त्रियाम् ॥४१००॥
मटची करकायां स्याच्छलभे कस्यचिन्मते।
मठरस्त्वृषिभेदे ना भेद्यवच्चलसे स्मृतः ॥४१०१॥
मठरं दध्न्यतितरान्द्रवीभूते नपुंसकम्।
त्रि तु कण्ठगते प्राणे कृमिजात्यन्तरे द्वयोः ॥४१०२॥
मड्डकं वाद्यभेदे च मुष्टौ स्यात्फलकस्य च।
मणिः स्त्रीपुंसयो रत्ने मणिबन्धेऽप्यलिञ्जरे ॥४१०३॥

अजादिकण्ठप्रभवे स्तनाकारे च वस्तुनि ।
काष्ठलोहादिनिष्पाद्यगुलिकायामपीष्यते ॥४१०४॥
गोलमात्रे गुह्यमध्यगुले शेफाग्रकेऽपि च ।
घण्टायां मणतौ त्वेष धातौ पुंसि मणिः स्मृतः ॥४१०५॥
कुण्डले तीर्थभेदे च स्त्रियां स्यान्मणिकर्णिका ।
मणिच्छिद्रा तु भेदायामृषभाख्यौषधावपि ॥४१०६॥
मणिबन्धो मणेर्बन्धे सन्धौ पाणिप्रकोष्ठयोः ।
मणिमाला स्त्रियां हारे तथा दन्तक्षतान्तरे ॥४१०७॥
मणिसोपानशब्दोऽयं सोपाने मणिनिर्मिते ।
चाटुकार इति ख्यातेऽप्येकवल्ल्या समे कृते ॥४१०८॥
सौवर्णैर्गुडकैर्विद्यादलङ्कारान्तरेऽपि तम् ।
मणीचं मौक्तिके पुष्पे चाग्रहस्तेऽपि कीर्त्तितम् ॥४१०९॥
मण्डः सर्वरसाग्रे स्यादस्त्री मण्डा तु नृस्त्रियोः ।
मण्डने किरणे तु स्यान्मण्डो मण्डी तु सा स्त्रियाम् ॥४११०॥
या (ग्वा)गुल्यां पञ्चमाषे तून्माने मण्डं नपुंसकम् ।
मण्डनं भूषणे क्लीबं न ना भूषिकृतौ भवेत् ॥४१११॥
मण्डनालङ्करिष्णौ तु वाच्यवन्मण्डनो मतः ।
मण्डपस्त्रिषु मण्डस्य पिबेऽथाऽस्त्रीजनाश्रये ॥४११२॥
मण्डयन्तस्तु मुकुरेऽप्योदनेऽपि पुमान्मतः ।
अथ प्रसाधके वित्तपालेऽप्यर्थमये त्रिषु ॥४११३॥
तत्रापि मण्डयन्तीति स्त्रीत्वे रूपं प्रकीर्त्तितम् ।
मण्डली त्र्युपसूर्ये च बिम्बे कुष्ठरुजान्तरे ॥४११४॥
समूहमात्रे ग्रामौघे देशे द्वादशराजके ।
युग्मे च कुक्कुरे त्वेष कीर्त्तितो मण्डलो द्वयोः ॥४११५॥
क्लीबं मण्डलकं बिम्बे कुष्ठभेदे रुजान्तरे ।
मण्डलाग्रस्तु खड्गेऽप्यन्वर्थे खड्गान्तरेऽपि ना ॥४११६॥
मण्डली तु द्वयोः सर्पजातिभेदेषु केषुचित् ।
षड्विंशतौ मण्डलवदर्थे नान्तस्त्रिषु स्मृतः ॥४११७॥

[1]मण्डूकः पिकभेदे च भेके स्त्रीपुंसयोर्मतः ।
अथोपरिष्टादारभ्य तुर्यभागे स्त्रियामियम् ॥४११८॥
गजापराङ्घ्रेर्मण्डूकी कृतस्य दशधा मता ॥
मण्डूकपर्ण्यामपि च लाङ्गलावयवान्तरे ॥४११९॥
पुरदुर्गबहिर्भूमिकृतयन्त्रान्तरे तु ना ।
मण्डूकष्टुण्टुकेऽपि स्यात्तथा नागान्तरेऽपि च ॥४१२०॥
रतबन्धान्तरे त्वेतन्मण्डूकं स्यान्नपुंसकम् ।
मण्डूकपर्णी भण्डीरीवल्ल्यां स्त्री परिकीर्त्तिता ॥४१२१॥
मण्डूकपर्णस्तु पुमांष्टुण्डुवृक्षे प्रकीर्त्तितः ।
मण्डोदकं चित्तरागे क्लीबमातर्पणेऽपि च ॥४१२२॥
मतं तु वाञ्छिते ज्ञायमाने च त्रिषु कीर्त्तितम् ।
अथ क्लीबं मतं ज्ञाने स्यादाकूतेच्छयोरपि ॥४१२३॥
मतिर्बुद्धावपि स्त्री स्यादिच्छायां च तथा मता ।
मत्कुणो निर्विषाणेभे निःश्मश्रुपुरुषेऽपि च ॥४१२४॥
उद्दंशे नारिकेले च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
मत्तः क्षीबे च हृष्टे त्रिः क्लीबं तु मदकर्मणि ॥१४२५॥
मत्तवारणमुक्तं क्ली निर्यूहेऽपाश्रयेऽपि च ।
अथ मत्तगजे पुंसि मत्तवारण इष्यते ॥४१२६॥
क्लीबं प्रासादवीथीनां कुड्यवृक्षवृतावपि ।
मत्यं क्षेत्रस्य कृष्टस्य क्ली समीकृतिसाधने ॥४१२७॥
अथ मत्यो मतेः साधौ मतस्याप्यभिधेयवत् ।
मत्सरोऽन्यशुभद्वेषे लोभे कोपे तथा क्रतोः ॥४१२८॥
सोमाख्ये साधने चैव निष्क्रयेऽपि पुमान्मतः ।
कृपणे त्वन्यसम्पत्तेरसोढरि तथा त्रिषु ॥४१२९॥
मत्सरा तु स्त्रियामेषा मक्षिकायां प्रकीर्त्तिता ।
मत्सरी त्रिकदर्याढ्ये परसम्पदसोढरि ॥४१३०॥

---

१. मण्डूकः स्यात्खुरतलेऽश्वस्य भेके पिकान्तरे ।
भार्यायां स्त्रीत्वञ्च स्वैरिण्यां मण्डूकी कीर्त्तिता तथा ॥

मत्स्यो मीने द्वयोर्मत्स्या नीवृद्भेदे नृभूमनि ।
तद्राजे तु पुमान्मत्स्यो मीनराशौ तथा मतः ॥४१३१॥
मत्स्यराड् मकरे द्वे स्याद्विराडाख्ये नृपे पुमान् ।
मत्स्याक्षी तु स्त्रियां ब्राह्मीसंज्ञानूपतृणान्तरे ॥४१३२॥
मत्स्याक्षस्तु पुमाञ्शाकस्तम्बे पत्तूरसंज्ञके ।
मथितं तु क्लीबलिङ्गं निर्जले गोरसे कृते ॥४१३३॥
त्रिस्तु मन्थतिमथ्नातिकर्मभूतेषु वस्तुषु ।
क्लीबं निर्मलघोले स्यात्त्रिष्वालोडितघृष्टयोः ॥४१३४॥
मदो रेतसि गर्वे च हर्षे गन्धे पुमांस्तथा ।
गजदानजले मेढ्रप्रवर्त्तिनि विशेषतः ॥४१३५॥
कस्तूर्याञ्चाथ मत्तावस्थायां स्त्रीत्वे मदी मता ।
मत्तनागे मदकलस्त्रिर्मदाव्यक्तवाचि च ॥४१३६॥
मदनो ना स्मरे पिण्डीतकद्रौ वनकोद्रवे ।
धुर्धूरे कुरवे चैव मधूच्छिष्टवसन्तयोः ॥४१३७॥
कस्तूरिकामृगाण्डे तु मद्ये च मदनी स्त्रियाम् ।
प्रसवे तूक्तवृक्षाणां मदनं स्यान्नपुंसकम् ॥४१३८॥
माद्यत्यर्थेऽपि मदना त्वना मदयतेः कृतौ ।
सारिकायां तु मदनशलाका परिकीर्त्तिता ॥४१३९॥
अपि चैषा मता स्त्रीत्वे कामोद्दीपकभेषजे ।
मदमत्तस्तु धुर्धूरे न स्त्री ना तु पुरे मतः ॥४१४०॥
अथ मत्ते मदेन स्यान्मदमत्तोऽभिधेयवत् ।
मदयन्ती मल्लिकायां मदयन्तस्त्रि मादके ॥४१४१॥
मदयित्नुस्तु समदे पुमान्मद्ये तु नप्स्मृतः ।
मदारो हस्तिनि द्वे स्यात्त्रिषु त्वलसधूर्त्तयोः ॥४१४२॥
मदोत्कटो द्वयोः पारावतनामनि पक्षिणि ।
मदोत्कटा चैत्ररथनाम्नि याऽस्ति शिवालये ॥४१४३॥
तस्यां शिवायां त्रिस्त्वेष मदेनोद्धत इष्यते ।
मद्गुर्द्वे जलकाके च निष्टयाच्च वरुटीभवे ॥४१४४॥

अम्बष्ठसंज्ञे माहिष्ये चायुर्वेदेन जीवति ।
स्यात्पारधैनुके चापि य आघोषणवृत्तिकः ॥४१४५॥
मद्रं शुभे सुखे क्लीबं त्रि तु तद्वति कीर्त्तितम् ।
अथ नीवृद्विशेषे ते मद्राः पुंभूमनि स्मृताः ॥४१४६॥
मद्वा ऋष्यन्तरे तृप्तिक्रीडाकान्तिशिरस्सु ना ।
अथ मद्वा मेदितरि त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥४१४७॥
मधुस्तु ना चैत्रमासे वसन्ते दानवान्तरे ।
पूर्वक्षत्रियभेदे च विप्रभेदे च कुत्रचित् ॥४१४८॥
मधूकद्रौ कुरवके मद्यभेदे च कुत्रचित् ।
मध्वासवाख्ये मधुररसे मिश्ररसेऽपि च ॥४१४९॥
कटुकस्वादुतिक्तात्मन्यथ तद्वति स त्रिषु ।
क्लीबं तु सलिले क्षीरे मद्ये पुष्परसे मधु ॥४१५०॥
मन्त्रभेदेषु शाके तु जीवन्त्याख्ये स्त्रियां मधुः ।
अस्त्री तु पौत्तिकक्षौद्रादिमधुष्वपि तत्सुरे ॥४१५१॥
मधुकं मधुयष्ट्याख्यौषधे क्लीबे स्त्रियामपि ।
मैत्रेयाऽयोगवीपुत्रे त्वपि वन्दिनि स द्वयोः ॥४१५२॥
मधुका तु श्यामकङ्गौ मधुपर्ण्यामपि स्त्रियाम् ।
मधुच्छदो ना वृक्षे विकङ्कताख्ये त्रि यौगिके ॥४१५३॥
मधुद्रो भ्रमरेऽपि स्यात्कामुकेऽपि द्वयोर्मतः ।
मधुपर्णी तु काश्मर्यगुडूचीनीलिनीषु च ॥४१५४॥
मधुरो ना रसे स्वादुनाम्नि तद्वति तु त्रिषु ।
प्रिये च शोभने स्त्री तु मधुरा नगरान्तरे ॥४१५५॥
दूर्वायां मधुयष्ट्यां च मिश्रे या शतपुष्पयोः ।
मधुकुक्कुटिकासंज्ञमातुलुङ्गान्तरे तथा ॥४१५६॥
मेदायां च विषे क्ली तु काञ्जिके मधुरो न ना ।
भवेन्मधुरसा द्राक्षामूर्विकादुग्धिकासु च ॥४१५७॥
मधुरस्वन उक्तो ना शङ्खे त्रिषु तु यौगिके ।
पुमान्मधुरिकः प्रोक्तो जीवकाह्वयभेषजे ॥४१५८॥

शालेयाख्ये शीतशिवे स्त्रियां मधुरिका मता ।
मधुवाक्कोकिले द्वे स्यात्प्रियवाचि तु भेद्यवत् ॥४१५९॥
मधुव्रतः श्वेतगुञ्जायां फलाध्यक्षके तु ना ।
मधुसूदन उक्तो द्वे भृङ्गे ना वनमालिनि ॥४१६०॥
मधूलः पुंसि गिरिजे मधूके मधुरे तथा ।
त्रि तु तद्वत्यथ मधौ मधूलंसारघादिके ॥४१६१॥
मधूलकस्तु गिरिजे मधूकाख्यतरौ पुमान् ।
मधूकपुष्पविहितसुरायां स्त्री मधूलिका ॥४१६२॥
मूर्वायामपि च प्रोक्ता स्याद्यष्टिमधुकेऽपि च ।
मध्यं दशगुणे संख्यान्तरे क्लीबं समुद्रतः ॥४१६३॥
वस्तुद्वयस्यान्तराले छन्दोभेदेऽपि कीर्त्तितम् ।
त्रि तु न्याय्येवलग्नाख्यकायाङ्गे तु नृशण्डयोः ॥४१६४॥
हिमोत्सर्गाय सूर्यस्य रश्मीनां यच्छतत्रयम् ।
तत्रैकत्र शते ह्रादिन्याख्येषु रविरश्मिषु ॥४२६५॥
स्त्रियां मध्या भूमनि स्युर्मध्या स्त्री नायिकान्तरे ।
मध्यमोऽस्त्र्यवलग्ने ना मध्यदेशेश्वरे नृपे ॥४१६६॥
'षड्जादीनां स्वराणां च सप्तानां क्वचिदिष्यते ।
त्रि तु मध्यभवे स्त्री तु मध्यमा मध्यमाङ्गुलौ ॥४१६७॥
स्त्रियां च दृष्टरजसि कर्णिकायां च कीर्त्तिता ।
मनश्चित्ते मनीषायामपि च क्लीबमिष्यते ॥४१६८॥
मनागल्पे च मन्दे चाप्यव्ययं परिकीर्त्तितम् ।
मनाका तु करिण्यां च कामिन्यां स्त्रीत्व इष्यते ॥४१६९॥
मनुस्तु पुंसि मन्त्रे स्यात्पूर्वे च क्षत्रियान्तरे ।
स्त्रियां तु तस्य भार्यायां मनायी च मनाव्यपि ॥४१७०॥
मनोजवाऽग्निजिह्वानां सप्तानां क्वचिदिष्यते ।
मनोजवो द्वयोरेषोऽपत्ये स्यात्पितृधर्मिणि ॥४१७१॥

१. पुमान्स्वरे मध्यदेशेप्यवलग्ने तु न स्त्रियाम् ।
स्त्रियां दृष्टरजो नार्यां कर्णिकाङ्गुलिभेदयोः ॥

मनोरथोऽभिलाषेऽपि वाञ्छितार्थेऽपि कीर्त्तितः ।
मनोहरा तु पिप्पल्यां स्यान्ममोहारिणि त्रिषु ॥४१७२॥
मन्तुः शोकेऽपराधे ना वैमनस्ये प्रजापतौ ।
प्रियंवदे तु विज्ञे च मन्तुः स्यादभिधेयवत् ॥४१७३॥
मन्ता प्रजापतौ नाथ विद्वज्ज्ञात्रेष्टृषु त्रिषु ।
मन्त्र ऋग्यजुरादौ च तथा स्याद्गूढभाषणे ॥४१७४॥
पुमान्मन्त्रस्समुद्दिष्टो देवादीनां च साधने ।
मन्त्रज्ञस्तु पुमांश्चारे त्रि तु स्यान्मन्त्रवादिनि ॥४१७५॥
मन्त्री धीसचिवे राज्ञः पुंसि मन्त्रवति त्रिषु ।
मन्थो मन्थनदण्डे च मन्थने च पुमान्मतः ॥४१७६॥
दिवाकरेऽपि च तथा द्रवसिक्तेषु सक्तुषु ।
मन्थरो मन्दगे वक्रे पृथौ मन्दे त्रि सूचके ॥४१७७॥
ना तु बाधे बले कोपे मन्थदण्डेऽथ मन्थरम् ।
कुसुम्भ्यां मन्थरा तु स्त्री कैकेय्याश्चेटिकान्तरे ॥४१७८॥
मन्थी तु भास्करे राहौ चन्द्रेऽपि च पुमांस्तथा ।
गृहाख्यसोमपात्राणामेकस्मिन्यज्ञकारिणाम् ॥४१७९॥
मन्दः शनौ ना त्रिषु तु स्वल्पाज्ञापटुरोगिषु ॥
निर्भाग्ये च कनिष्ठे च मन्दजाते तु दध्नि नप् ॥४१८०॥
अथ मन्दो द्वयोरेष गजभेदे प्रकीर्त्तितः ।
[1]मन्दनं तु स्तुतौ मोदे गतौ स्वप्ने मदेऽपि च ॥४१८१॥
मन्दरस्तु पुमान्मन्थशैले मन्दारपादपे ।
वाच्यवद्बहले मन्दे मन्दरः परिकीर्त्तितः ॥४१८२॥
त्रिषु मन्दविसर्पी स्याच्छनकैः सृप्तिशीलके ।
शिरःक्रिमौ च यूकाख्ये स्त्रियां मन्दविसर्पिणी ॥४१८३॥
मन्दसानो द्वयोर्हंसे ना जीवार्केन्दुवह्निषु ।
मन्दाकिनी स्यादाकाशगङ्गायामापगान्तरे ॥४१८४॥

---

१. मन्दो तीक्ष्णे च मूर्खे च स्वैरे चाभाग्यरोगिणोः ।
अल्पे च त्रिपु पुंसि स्याद्धस्तिजात्यन्तरे शनौ ॥

मन्दाक्षो मन्ददृष्टौ च तथा मन्देन्द्रिये त्रिषु ।
नपुंसकन्तु मन्दाक्षं लज्जायां परिकीर्त्तितम् ॥४१८५॥
मन्दारस्तु पुमान्देववृक्षभेदेऽर्कनाम्नि च ।
गुल्मे स्यात्पारिभद्राख्यवृक्षतद्भेदयोरपि ॥४१८६॥
अथारविन्दे मन्दारमुक्ताद्रुप्रसवेऽपि च ।
मन्दिरन्तु पुरे गेहे क्लीबमब्धौ तु मन्दिरः ॥४१८७॥
मन्दुरा वाजिशालायां शयनीयार्थवस्तुनि ।
मन्द्रः स्वराणां सप्तानां षष्ठे ना सामवर्त्तिनाम् ।४१८८॥
मन्द्रो गम्भीरशब्दे त्रिर्मन्द्रा वाचि स्त्रियां मता ।
मन्मथः कामचिन्तायां कपित्थेऽपि स्मरे पुमान् ॥४१८९॥
मन्मथं तु कपित्थस्य प्रसवे क्लीबमिष्यते ।
मन्युः कृपारुट्शुग्दैन्ययज्ञे ना धीमति त्रिषु ॥४१९०॥
मयः प्रक्षेपणे दैत्यवर्द्धकौ पुंसि हिंसने ।
[1]मया स्त्रीत्वे चिकित्सायां द्वयोरश्वोष्ट्रयोर्मयी ॥४१९१॥
मयटस्तृणहर्म्येऽपि प्रासादेऽपि पुमान्मतः ।
मयुः पुमान्स्यात्प्रक्षेपेऽथ द्वयोः किन्नरे मृगे ॥४१९२॥
मयूखः किरणे न स्त्री रथाऽक्षे तु पुमानयम् ।
ज्वालादीप्त्योश्च शङ्कौ च मयूखः परिकीर्त्तितः ॥४१९३॥
अग्निभेदेऽपि दीप्तौ तु मयूखाऽपि स्त्रियां क्वचित् ।
मयूरो बर्हिणे द्वे नाऽपामार्गे तुलसीभिदि ॥४१९४॥
अल्पपत्रसुगन्धौ च स्यान्मयूरशिखौषधे ।
कालमानान्तरे नृत्यगतिभित्कविभेदयोः ॥४१९५॥
अथ तुत्थाञ्जने क्लीबं मयूरञ्चासवान्तरे ।
क्वचिद्द्वयोः कुक्कुटेऽथ मयूर्यप्यौषधान्तरे ॥४१९६॥
मयूरकः सुगन्धौ मञ्जीरकाख्ये फणिर्जके ।
अपामार्गेऽप्यथ मयूरकन्तुत्थाञ्जने मतम् ॥४१९७॥
मयूरचूडं स्त्रीत्वे तु स्यान्मयूरशिखौषधौ ।
मरो मृत्यौ मर्त्यलोके नारकेषु त्वनी नृभू ॥४१९८॥

---

१. अथाश्वेपि तथैवोष्ट्रे मयः स्त्रीपुंसयोर्मतः ।

मरको जनमार्यां नृ जातिभेदे पुनर्नृभू ।
मरतोऽग्नौ पुमाञ्जन्तौ द्वयोर्मरत इष्यते ॥४१९९॥
मरणन्तु मृतौ स्थानेऽप्यष्टमे गरलान्तरे ।
मरायो मृत एकाह ऋतुभेदकुसूलयोः ॥४२००॥
नपुंसकं मरायं स्यादुभयोः सामभेदयोः ।
अग्नि नरो दीधितिभिरित्यस्यामृचि गीतयोः ॥४२०१॥
मरायी घातके दीप्ते कैश्चित्संज्ञान्तरे स्मृतः ।
मरालः पुंसि वर्णेऽल्पपीतरक्ते त्रि तद्वति ॥४२०२॥
मरालः कज्जले जाल्मे मेघे दाडिमकुञ्जके ।
मृदौ शुभे विशालेऽथ द्वे तु हंसाश्वहस्तिषु ॥४२०३॥
मरिचस्तु मरीचेऽपि कतके तुलसीभिदि ।
मरिचं तु मरीचस्य फले कक्कोलकेऽपि च ॥४२०४॥
मरीचौ च मरीचं तु मरिचस्य फले मतम् ।
मरीचिर्मृगतृष्णायां किरणे च द्वयोर्मतः ॥४२०५॥
अष्टके त्रसरेणूनां लिक्षाख्यपरिमाणके ।
ना तु सप्तर्षिभेदेऽपि कृपणे तु त्रिषु स्मृतः ॥४२०६॥
मरीचिका स्त्री लिक्षाख्ये त्रसरेणुभिरष्टभिः ।
संमिते मानभेदेऽपि मृगतृष्णाख्यतेजसि ॥४२०७॥
मरीचिकस्तु पुँल्लिङ्गो लोकभेदे प्रकीर्त्तितः ।
मरीचिगर्भो लोकेऽपि हरिवंशादिवर्णिते ॥४२०८॥
नृभूम्नि दाक्षसावर्णिमन्वन्तरसुरेष्वपि ।
[1]मरीचिपस्त्रियोर्गार्थे किरणेषु नृभूमनि ॥४२०९॥
मरुस्तु निर्जले देशे शैले चेक्ष्वाकुवंशजे ।
पितामहेऽम्बरीषस्य हर्यश्वतनयेऽपि च ॥४२१०॥
सोमवंश्येऽथ पुंभूम्नि स्युर्दाशेरकनीवृति ।
तन्निवासिष्वपि तथा द्वयोस्तु हरिणे मरुः ॥४२११॥

---

१. तथैव ऋषिवंशेऽपि भारतादिषु वर्णिते ।

क्वाप्युद्भिदन्तरे पुंसि स्यान्निरम्बूपवासके ।
वसुभेदे तथा दैत्यभेदे चापि मरुर्मतः ॥४२१२॥
मरुकस्तु मयूरेऽपि हरिणेऽपि द्वयोर्मतः ।
मरुजा तु स्त्रियामुच्चमृदुपाण्डुररोमिका ॥४२१३॥
रोमराजिमती मध्ये द्वादशाङ्गुलसंमिता ।
इत्युक्ते मृगभेदे स्यादथ त्रिर्मरुसम्भवे ॥४२१४॥
नखाख्यगन्धखदिरभिदोस्स्त्री त्विन्द्रवारुणी ।
[1]मरुजो हंसभेदे द्वे श्वापदेऽप्यथ नब्जले ॥४२१५॥
मरुण्डोचलललाटा स्त्री नृभूम्नि तु जनान्तरे ।
मरुन्ना पवने शैलशिखरे चामरान्तरे ॥४२१६॥
बृहद्रथे साध्यभेदे स्यात्तथैवोद्भिदन्तरे ।
मरुदेशे च रूपे चत्विर्जि स्वर्णे तु नप्स्मृतम् ॥४२१७॥
[2]द्वे देवमात्रे स्पृक्कायां स्त्री क्लीबं ग्रन्थिपर्णके ।
मरुतस्तु सुरे द्वे स्याद्वायुपाटलयोः पुमान् ॥४२१८॥
मरुत्तो नृपभेदेऽपि क्वचिद्वायौ प्रकीर्त्तितः ।
मरुत्पुत्रस्य पर्यायाभीमेऽपि च हनूमति ॥४२१९॥
[3]मरुत्वान्वा मरुत्मान् वा मेघेन्द्रहनुमत्सु च ।
मरुत्सखोऽग्नाविन्द्रे च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥४२२०॥
मरुद्वृद्धो यागपात्रभित्सामांशभिदोर्हरौ ।
मरुद्भवा ताम्रमूलाकार्पास्योः परिकीर्त्तिता ॥४२२१॥
मरुद्रथोऽश्वे देवानां स्यन्दने च प्रकीर्त्तितः ।
मरुद्वृधा नदीभेदे मरुद्वर्धिनि तु त्रिषु ॥४२२२॥
मरुद्वहस्तु धूमेऽपि तथाऽग्नौ च पुमान्मतः ।
मरुन्माला हि रक्तेऽपि स्पृक्कायां च प्रकीर्त्तिता ॥४२२३॥

---

१. मरुजस्तु नखाग्रे गन्धद्रव्ये खदिरान्तरे ।

२. मरुद्द्वयोर्देवमात्रे स्पृक्कायां तु मरुत्स्त्रियाम् ।
मरुद्देने समीरे ना ग्रन्थिपर्णे नपुंसकम् ॥

३. भवेन्मरुबकः पुंसि मदनद्रौ फणिर्जके ।

भवेन्मरुबकः पुंसि मदनद्रौ फणिर्जके ।
राहौ भयानके तु त्रि द्वयोर्व्याघ्रे बकेऽपि च ॥४२२४॥
[1]महेन्द्रवारुण्यायासभेदयोर्मरुसम्भवा ।
अथ मूलकभेदेऽयं पुमान्स्यान्मरुसम्भवः ॥४२२५॥
मरूकः केकिहरिणभेकेषु च पुमानयम् ।
मर्कोऽभ्रार्कमरुद्‌ब्रह्मेन्दुमनोदेवदारुषु ॥४२२६॥
सूर्योपरागे शुक्रस्य पुत्रे बालग्रहान्तरे ।
द्वयोः सर्पेऽथ विघ्नस्य कर्त्तरि त्रिषु कीर्त्तितः ॥४२२७॥
प्राणवायावपि तथा मर्को यक्षान्तरे क्वचित् ।
मर्कटस्तु कपौ द्वे स्याल्लूतायां चाथ नप्स्त्रियोः ॥४२२८॥
कपाटबन्धनार्थायाः सूचेर्विष्कम्भयन्त्रके ।
मर्कटं मर्कटी चेति स्यात्स्त्रियां त्वेव मर्कटी ॥४२२९॥
कपिकच्छ्वाख्यवल्ल्याश्च करञ्जद्रुमभिद्यथ ।
तुरुष्कनिर्यासे वन्याख्यमुद्गेपि च मर्कटः ॥४२३०॥
विषभेदेऽपि च स्त्रीणां पुमान्स्यात्करणान्तरे ।
धान्यभेदे मर्कटको द्वे तु मत्स्यान्तरे मतः ॥४२३१॥
मर्करो भृङ्गराजे ना मर्करा वन्ध्ययोषिति ।
क्षितेर्गर्भे च गर्त्ते च भाजनेऽपि स्त्रियां मता ॥४२३२॥
मर्जूः संमार्जनीशुद्धयोर्नद्यां तीरे नदीतटे ।
शिलायां च स्त्रियामुक्ता रजके तु द्वयोर्मता ॥४२३३॥
पुमांस्तु पीठमर्देऽपि स्त्रीधर्मिपुरुषे क्वचित् ।
मर्त्तृस्त्वृष्यन्तरे मर्त्त्यलोके ना मनुजे द्वयोः ॥४२३४॥
मर्त्तव्यो मरणार्हे त्रिरवश्यमरणे तु नप ।
मर्त्त्यो द्वयोर्मनुष्ये भेद्यवन्मरणधर्मिणि ॥४२३५॥
मर्त्त्यलोके पुमान्मर्त्त्या मृत्यौ स्त्री क्ली पुनः स्तनौ ।
मर्दो ना मर्दने बाधे पीडायां त्रिस्तु मर्दके ॥४२३६॥
मर्दनी तु स्त्रियां योधपादरक्षार्थयन्त्रके ।
युधि स्यान्मर्दनः प्राय उत्तरस्थः प्रबाधके ॥४२३७॥

---

१. मरुद्भवा यासभेदे तथैव खदिरान्तरे ।
मरुद्भवस्तु [पुँल्लिङ्गे भेदे स्यान्मूलकस्य च] ॥

नपुंसकं तु मृद्नातेरर्थे मर्दनमिष्यते ।
स्यात्प्रसाधनसंवाहनादितद्बाधनादि च ॥४२३८॥
मर्दिनी गीतभेदे स्याद्योगार्थे तूत्तरस्त्रिषु ।
मर्म व्रणार्हस्थानेऽङ्गसन्धौ गोप्ये नपुंसकम् ॥४२३९॥
मर्मरो वस्त्रपर्णादिस्वनिते त्रिस्तु तद्वति ।
मर्मरा भक्ष्यभेदे स्त्री मौडी (ढी) संज्ञेऽथ मर्मरी ॥४२४०॥
श्रुतिशष्कुलितानाडीभिद्यपि स्त्री देवदारुणि ।
मर्मरीकोऽनले शूरे ना द्वे श्येनेऽधमे त्रिषु ॥४२४१॥
मर्यो मर्त्येऽपि तरुणे वरणीयेऽश्व उष्ट्रके ।
मर्या तु चिह्ने सीमान्तेऽपि च स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ॥४२४२॥
मर्यादा स्त्री व्यवस्थासीमयो रक्षाङ्गुलीयके ।
क्वाप्यथर्वेऽपदिष्टेऽथ न्यायनिर्णेतरि त्रिषु ॥४२४३॥
अर्वाचीनस्य वैदर्भ्याम्पत्न्यां देवातिथेरपि ।
विदेहजायां भार्यायां मर्यादा नाम दृश्यते ॥४२४४॥
मर्शः क्षुताभिजनने चोपदेशे पुमानयम् ।
मर्शनं घर्षणे स्पर्शे स्याद्व्याख्याने परीक्षणे ॥४२४५॥
मर्षितं क्ली क्षमायां तद्युक्ते स्यान्मर्षितर्यपि ।
मलः पापे च वातादावस्त्रियां किट्टविष्ठयोः ॥४२४६॥
समुद्रफेने कर्पूरे क्ली तु स्यात्कांस्यलोहयोः ।
वृश्चिकस्य च शूकेपि तथा चर्मणि शोधिते ॥४२४७॥
मला तु भूम्यामल्यां स्त्री त्रिः स्यान्मलिनपापिनोः ।
द्वयोस्तु मालुकीशूद्रसम्भवे वर्णसङ्करे ॥४२४८॥
मलघ्नः शाल्मलेर्मूले मलघ्नी नागमर्दिनी ।
तथायं स्यात्त्रिलिङ्गस्तु मलघ्नम्मलहन्तरि ॥४२४९॥
मलजं तु मतं पूये नृभूमलदजातिषु ।
मलदो माषधान्ये ना मलदास्तु नृभूमनि ॥४२५०॥
स्थौराख्यनीवृद्भेदे स्युस्त्रिष्वयं मलदातरि ।
मलनः पटवासे ना मलनं मर्दने नपि ॥४२५१॥

मलपु क्ली नले भृङ्ग्यां त्रिस्तु स्यान्मलमार्जके ।
काकोदुम्बरिकाक्षीरविदार्योर्मलपू स्त्रियाम् ॥४२५२॥

मलयो देश आरामे शैलांशे पर्वतान्तरे ।
उपद्वीपान्तरे नन्दनोद्यानोद्यानयोः क्वचित् ॥४२५३॥

तालभेदेऽपि न स्त्री स्यात् त्रि वृतायां तु योषिति ।
चन्दने क्ली मलयजं राहौ मलयजः पुमान् ॥४२५४॥

मलवान्मलिने त्रिः सार्त्तवायां मलवत्यसौ ।
स्त्रियां तु मलवद्वासा उदक्यायां त्रियौगिके ॥४२५५॥

मलहारक इत्येष मलहर्त्तरि वाच्यवत् ।
गजोपचारकुशले पुंसि स्यान्मलहारकः ॥४२५६॥

मलाका स्वैरिणीदूतीकरेणुष्विष्यते स्त्रियाम् ।
मलिना मलिनी पुष्पवत्यां स्त्री मलिनं नपि ॥४२५७॥

पापटङ्कणतुच्छेऽप्सु त्रिस्तु कृष्णे मलीमसे ।
मलिनस्तु पुमांस्तंसुपुत्रे पाशुपते यतौ ॥४२५८॥

क्रूरे त्रिर्ना तु मलिनमुखोऽग्नौ प्रेतभिद्यपि ।
गोलाङ्गूले तु मलिनमुखः स्त्रीपुंसयोर्मतः ॥४२५९॥

मलिम्लुचोऽयश्च यज्ञे गृहस्थे पावकेऽपि च ।
अधिमासेऽपि पुंसि स्याच्चौरे तु त्रिष्वथ स्मृतः ॥४२६०॥

मशके शावके चापि चातके रजके द्वयोः ।
मलिष्ठो मलिने त्रि स्त्री मलिष्ठा सार्तवस्त्रियाम् ॥४२६१॥

[1]मलीकन्त्वञ्जने क्लीबम्मलीकः पुंसि विद्विषि ।
मलीमसस्तु मलिने पुष्पकाशीशलोहयोः ॥४२६२॥

मलुको जठरे पुंसि द्वयोस्तु स्याच्चतुष्पदे ।
[2]मलूकः कृमिभेदे द्वे सरोजशकुनौ खगे ॥४२६३॥

---

१. ना लोहे पुष्पकाशीशे मलिने त्रिर्मलीमसः ।
२. मलूकः पक्षिमात्रे च सरोजशकुनौ द्वयोः ।

[1]मल्लो योधे बलिष्ठे च श्रेष्ठे स्यादुत्तरस्थितः ।
स्यान्नारायणराजेऽर्हत्येकविंशे भविष्यति ॥४२६४॥
हविःशेषासुरभिदोर्हनौ पात्रान्तरे पुनः ।
मल्लो मल्ली कपाल्याख्यमत्स्यभेदेऽपि च द्वयोः ॥४२६५॥
व्रात्यपूर्वक्षत्रियाजे व्रात्याज्जाते द्वयोर्मतः ।
[2]मल्लनागः पत्रवाहे वात्स्यायनसुरेभयोः ॥४२६६॥
मल्लरिस्तु पुमान्कृष्णे शिवेऽपि परिकीर्त्तितः ।
मल्लकस्तु पुमान्दन्ते नृभूम्नि तु जनान्तरे ॥४२६७॥
मल्ला तु प्रमदायां स्त्री मल्लिकायां तु मल्ल्यपि ।
मल्ला मल्लिश्च पीठे तु पत्रवल्लीविभूषणे ॥४२६८॥
द्वे तु पत्रपुटे पात्रे नारिकेलास्थिभाजने ।
मल्लारो रागभेदेऽथ मल्लारी रागिणीभिदि ॥४२६९॥
[3]मल्लिस्स्त्री मस्त्यभेदेऽपि स्यात्कपालकरङ्कयोः ।
मल्लिकायां च मृत्पात्रेऽथासनेप्यथ मल्लतौ ॥४२७०॥
धातावर्हत्यूनविंशेपि च मल्लिः पुमान्मतः ।
[4]मल्लिको नृस्त्रियोर्दीपाधारे स्याद्धंसभिद्यपि ॥४२७१॥
मल्लिका भूपदीनाम्न्यां पुष्पवल्ल्यां स्त्रियां मता ।
मल्लिका तृणशून्येऽपि मीनमृत्पात्रभेदयोः ॥४२७२॥
मल्लिकाकुसुमः पुंसि करुणाख्ये फलद्रुमे ।
योगार्थे त्वस्य लिङ्गादि तर्कणीयं यथायथम् ॥४२७३॥

---

१. सरोजशकुनिं वेद भगवाञ्छाकटायनः ।
मल्लो योधे बलिष्ठे च पात्रभेदे तु नृस्त्रियोः ।
मल्लो मल्ली च मल्ली तु मल्लिकापीठयोः स्त्रियाम् ॥
नृस्त्रियोर्धारणे मल्लो मल्ला चेति द्वयोः पुनः ।
२. मल्लनागोऽभ्रमातङ्गे वात्स्यायनमुनावपि ।
३. मल्लिका मत्स्यभेदे तु मल्ल्या छन्दोभिदोः स्त्रियाम् ।
मल्लिको हंसभिद्दीपाधारभाजनयोर्द्वयोः ॥
मल्लिका भूपदीशेफालिकावाद्यान्तरे स्त्रियाम् ।
मल्लिकस्तु पुमान्……………………॥
४. मल्लिस्तु मल्लतौ धातौ पुंल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।

मल्लिकाक्षः सितैर्नेत्रैर्लक्षितेऽश्वे शुनि द्वयोः ।
हंसे च चञ्चुचरणैर्मलिनैरुपलक्षिते ॥४२७४॥
मल्लिकाक्षी श्वेतचिह्ननेत्रशुन्यां क्वचिन्मता ।
मशः शब्देऽपि कोपे ना मशके तु द्वयोर्मतः ॥४२७५॥
[1]मशकस्त्वृषिभेदे ना चर्मरोगान्तरे दृतौ ।
शाकद्वीप्ये जनपदे द्वयोस्तु स्यान्मलिम्लुचे ॥४२७६॥
वस्त्रैः कृते स्यान्मशकहरी मशकरुद्वये ।
मशकं क्षिपते योन्यस्तत्र वाच्यवदिष्यते ॥४२७७॥
मसनं हिंसने माने सोमराज्याश्च कीर्त्तितम् ।
मसारो नीलरत्ने स्यात्तथा जनपदान्तरे ॥४२७८॥
मसिः कृपणतृष्णायां शस्त्र्यां मष्याश्च काण्डके ।
मसिकः सर्पविवरे शेफाली मसिका स्मृता ॥४२७९॥
मसूरः पुंसि मङ्गल्यधान्ये चर्मासनान्तरे ।
मसूरी व्रीहिकङ्काख्यधान्ये स्त्री मारिवेश्ययोः ॥४२८०॥
मसूरो मसुरी चापि ह्रस्वमध्यावपि स्मृतौ ।
[2]मसूरी पापरोगे स्यादुपधाने पुनः पुमान् ॥४२८१॥
मसृणी तु स्त्रियामेषा क्षुमाधान्ये प्रकर्त्तिता ।
अथाप्यकर्कशे स्निग्धे मसृणो वाच्यवन्मतः ॥४२८२॥
मस्तं माने त्रिषु क्लीबं मस्तके देवदारुणि ।
मस्तकोऽस्त्री शिरःपूर्वभागमध्ये शिरस्यपि ॥४२८३॥
शिवस्य रूपभेदेऽपि तरुगिर्यादिकस्य च ।
मस्तिष्कोऽस्त्री शिरःस्नेहे तच्चिकित्साक्षमौषधे ॥४२८४॥
मस्तुः स्त्रीपुंसयोर्मुष्टौ पिण्डिताङ्गुलिरूपके ।
दधिमण्डे तु तन्मस्तु नपुंसकमुदीरितम् ॥४२८५॥
दधिवारिण्यपि क्लीबं प्रयुक्तं मस्तु सुश्रुते ।
मस्तुलुङ्गः शिरःस्नेहे न स्त्री क्ली दधिमण्डके ॥४२८६॥

---

१. मशकस्त्वृषिभेदे ना द्वयोस्तु स्यान्मलिम्लुचे ।
२. मसूरो मसुरो वा ना वेश्याव्रीहिप्रभेदयोः ॥

महः पुंस्युत्सवे स्त्री तु मही वाचि गवि क्षितौ ।
नदीभेदेऽप्यथ द्वित्वे द्यावाभूम्योर्मही इति ॥४२८७॥
महद्राज्ये च वृन्दे च जले चापि नपुंसकम् ।
त्रिर्बृहत्यपि पूज्येऽथ महर्लोके मतौ च ना ॥४२८८॥
महती तु त्रिबृहद्वल्ल्यां वीणायां नारदस्य च ।
निशोऽन्तिमे त्रिभागे वा यामे वाऽज्ञातलिङ्गकः ॥४२८९॥
महत्तरी तु स्त्री राज्ञो वृद्धा या परिचारिका ।
आशीस्स्वस्त्ययनाभिज्ञा तस्यां त्रिस्तु बृहत्तरे ॥४२९०॥
महो नपुंसकं सान्तं जले तेजसि चोत्सवे ।
महाकच्छस्तु पुंसि स्यात्समुद्रे च प्रचेतसि ॥४२९१॥
महाकन्दं तु शुण्ठ्यां क्ली लशुने त्वस्त्रियां मतम् ।
महाकायो बृहद्देहे त्रिष्वथ स्याद्गजे द्वयोः ॥४२९२॥
महाकालः प्रमथकिपाकबाणासुरे शिवे ।
महाग्रीवो द्वयोरुष्ट्रे वाच्यवद्दीर्घकन्दरे ॥४२९३॥
महाघोषोऽतिघोषे ना क्लीबं हट्टे प्रकीर्त्तितम् ।
अथ कर्कटश्रृङ्ग्यां स्त्री महाघोषाऽभिधीयते ॥४२९४॥
महाजाली स्त्रियां पीतघोषवल्लौ त्रि यौगिके ।
महादंष्ट्रो द्वयोर्व्याघ्रे चित्राङ्गाख्ये त्रि यौगिके ॥४९९५॥
महादिवाकीर्त्त्यं सामभेदे त्रिषु तु यौगिके ।
पार्वत्यामपि राज्ञश्चाभिषिक्तायां च योषिति ॥४२९६॥
महाधनं युधि स्वर्णे सिल्हे त्रिस्तु महार्हके ।
महानटः शिवे पुंसि योगार्थे तु यथायथम् ॥४२९७॥
महानद्युत्कलनदीभेदे स्यात्फल्गुगङ्गयोः ।
ततो गयाप्रदेशे तु पूर्वतोऽस्ति महानदी ॥४२९८॥
महानर्मा द्वयोर्वैश्याक्षत्रपुत्रे त्रि यौगिके ।
महानसं तु शकटे पाकस्थानेऽपि कीर्त्तितम् ॥४२९९॥
महानादो द्वयोः सिंहेभयोर्ना वर्षुकाम्बुदे ।
महानीलो भृङ्गराजे मणिनागविशेषयोः ॥४३००॥

महापक्षस्त्रियोगार्थे द्वे कारण्डवपक्षिणि ।
महापक्षी तु घूके द्वे यौगिके तु यथायथम् ॥४३०१॥
महापत्रस्तालवृक्षे योगार्थे तु त्रिषु स्मृतः ।
महापद्मो द्वयोः षड्वंशतिर्दर्वीकरोरगाः ॥४३०२॥
ये तेषामेकभेदे ना झाटे शोथारिनाम्नि च ।
क्लीबं तु रक्तकमले महापद्मं प्रकीर्त्तितम् ॥४३०३॥
महाफला तु कूष्माण्डे महाजम्ब्वामपि स्त्रियाम् ।
महाबलं सीसके तु बलायां तु महाबला ॥४३०४॥
महाबलस्त्वतिबले वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ।
महाबुसो यवे चापि धान्ये हायनसंज्ञके ॥४३०५॥
महामात्रः समृद्धे चामात्ये हस्तिपकाधिपे ।
महामुखो द्वयोर्नक्रे बृहद्वक्त्रे च वाच्यवत् ॥४३०६॥
महामुनिस्तु रुद्राक्षेऽगस्त्ये चापि महत्यृषौ ।
अथ कुस्तुम्बुरुण्येतन्महामुनि नपुंसकम् ॥४३०७॥
महामूल्यः पद्मरागे ना महार्हे तु वाच्यवत् ।
महारजतमुद्दिष्टं शातकुम्भकुसुम्भयोः ॥४३०८॥
महारसा द्रोणपुष्पीनील्योषध्योः स्त्रियां मता ।
महारसस्तु खर्जूरवृक्षे चेक्षे तथा पुमान् ॥४३०९॥
महाराजः कररुहे कुबेरे च महानृपे ।
महार्घस्त्रिर्महामूल्ये द्वे तु लावकपक्षिणि ॥४३१०॥
महालयो धनिगृहभेदेऽपि परमात्मनि ।
तीर्थे विहारे चामायामाश्विनस्य प्रकीर्त्तितः ॥४३११॥
महावीरो महादेवे पावके गरुडे पुमान् ।
सोमवंशसमुद्भूते बृहद्रथसुते नृपे ॥४३१२॥
वर्द्धमानजिने सोमवंश्ये बार्हद्रथौ नृपे ।
प्रवर्ग्यपात्रे सुभटे वीरे वज्रेऽप्यपत्रिषु ॥४३१३॥
प्रवरे द्वे तु हंसे च श्वेताश्वे च खगेऽपि च ।
यौगिकार्थे तु लिङ्गादि तर्कणीयं यथायथम् ॥४३१४॥

महावेगः कपौ द्वे स्याद्वाच्यवत्तु महारये ।
महाव्रतः शिवे पुंसि क्ली त्वेकाहमखान्तरे ॥४३१५॥
अस्त्री व्रते स्यान्महति त्रि तु स्याद्विपुलव्रते ।
स्यान्महाशकुनो घूके द्वयोरपि महाखगे ॥४३१६॥
महाशङ्खो मानुषास्थिसंख्याभेदालिकेषु च ।
महाशल्को द्वयोर्मत्स्यभेद एत्थालनामनि ॥४३१७॥
देविकाख्ये महाशल्का मातुलुङ्गान्तरे स्त्रियाम् ।
महाशिला महाग्राव्णि शस्त्रभेदे यदीदृशम् ॥४३१८॥
शतघ्नी तु चतुस्ताला लोहकण्टकसञ्चिता ।
अयःकण्टकसंछन्ना शतघ्न्येकमहाशिला ॥४३१९॥
महाश्वेता नीलगिरिकर्ण्यां स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ।
तथा क्षीरविदार्यां च कण्टकिव्रततीभिदि ॥४३२०॥
पुण्डरीकप्रियायां च योगार्थे तु यथायथम् ।
महासर्पो द्वयोः षड्विंशतिर्दर्वीकरोरगाः ॥४३२१॥
ये तेषामेकभेदेऽथ क्ली संसर्पाख्यसामसु ।
महासहा माषपर्ण्यां स्तम्बे चाम्लानसंज्ञके ॥४३२२॥
महासेनः कार्त्तिकेये महासैन्यपतावपि ।
महिस्तु धरणौ स्त्रीत्वे महति त्वेष भेद्यवत् ॥४३२३॥
महिनं तु भवेद्राज्ये शय्यायाञ्च नपुंसकम् ।
महिला तु फलिन्यां च स्त्रीत्वे योषित्यपीष्यते ॥४३२४॥
महिषी त्वोषधीभेदेऽभिषिक्तायां नृपस्त्रियाम् ।
सैरिभे तु द्वयोरेष महिषः परिकीर्त्तितः ॥४३२५॥
मही भूमावपि स्त्रीत्वे तथा नद्यन्तरे मता ।
महीपतिस्तु नृपतौ पुंसि भव्यतरावपि ॥४३२६॥
महेन्द्रस्तु भवेच्छैलविशेषेऽपि पुरन्दरे ।
महेश्वरो महादेवे पुंसि स्याद्गुल्गुलावपि ॥४३२७॥
महेश्वरी तु स्त्री ब्रह्मरीतिसंज्ञकलोहके ।
पार्वत्याञ्च श्रियां चाथाऽधीश्वरे तु त्रिषु स्मृतः ॥४३२८॥

महोग्रा तु त्रयोदश्यां तिथावत्युग्रके त्रिषु ।
महोदया नना कान्यकुब्जाख्यनगरे मता ॥४३२९॥
स्त्रीत्वे किञ्चित्प्रौढायां कन्यायां परिकीर्त्तिता ।
महोदरी नादेयीनाम्नि स्यान्मुस्तकान्तरे ॥४३३०॥
रावणस्य त्वमात्ये ना क्ली तूदररुजान्तरे ।
महौषधन्तु लशुनातिविषाशुण्ठिषु स्मृतम् ॥४३३१॥
महति त्वौषधे न स्त्री महौषध उदीरितः ।
अन्यस्मिंश्चैव लशुनादशस्वपि पलाण्डुषु ॥४३३२॥
मांसं स्यादामिषे मांसी कक्लोलीजटयोर्मता ।
मा स्त्री शिवाश्रियोरव्ययं विकल्पे निवारणे ॥४३३३॥
माकन्दोऽस्त्री रसाले स्त्री धात्रीनगरभेदयोः ।
माक्षिकं चक्रसंज्ञे स्याच्छैलधात्वन्तरे तथा ॥४३३४॥
सारघे मधुनि क्लीबं मक्षिकायोगिनि त्रिषु ।
मागधी तु स्त्रियां यूथीपिप्पल्योः परिकीर्त्तिता ॥४३३५॥
द्वयोस्तु वैश्याद्विप्रायां जाते मर्त्यान्तरेऽपि च ।
वैश्यात्क्षत्रियकन्यायां जाते च स्याच्च वन्दिनि ॥४३३६॥
पुमांस्तु मगधानां स्याद्राज्ञि जीरकजीवके ।
माघी स्त्री पूर्णिमायां स्यान्मघायुज्यथ तद्वति ॥४३३७॥
मासे माघस्त्रिस्तु मघानक्षत्रयुतकालजे ।
माघ्यस्तु कुन्दवृक्षे स्यान्माघ्यं तत्प्रसवे मतम् ॥४३३८॥
माघसाधौ तु माघ्योऽसावभिधेयवदिष्यते ।
माचलो वन्दिचौरे च तथा स्याद् ग्राहरोगयोः ॥४३३९॥
माठरस्तु पुमान्व्यासे रवेः स्यात्पारिपार्श्विके ।
माठिः स्त्रियां स्यात् कवचे तरुपत्रसिरास्वपि ॥४३४०॥
माढिः स्त्री पत्रपंक्तौ च दैन्यस्यापि प्रकाशने ।
माणवस्तु पुमान्हारभेदे षोडशयष्टिके ॥४३४१॥
द्वयोस्तु माणवो बाले तथा कुपुरुषेऽपि च ।
भवेन्माणवकः पुंसि हारे षोडशयष्टिके ॥४३४२॥

द्वयोस्तु गर्ह्यपुरुषे बाले माणविका मता ।
माणिक्या गृहगोधायां माणिक्यं रत्नसत्तमे ॥४३४३॥
मातङ्गस्तु द्वयोरुक्तो हस्तिनि श्वपचेऽपि च ।
मातामहस्तु पित्रोः स्यान्मातुर्मातामहीत्यपि ॥४३४४॥
मातामहास्तु मातुः स्युः पूर्वजेषु नृभूमनि ।
मातिः स्त्रियामवच्छेदे तथा मानेऽपि कीर्त्तिता ॥४३४५॥
मातुलः पुंसि धुर्धूरे मातुलाख्यद्रुमेऽपि च ।
[1]मातुर्भ्रातरि च स्त्री तु भार्यायां तस्य मातुली ॥४३४६॥
द्वयोस्तु मालुधानाख्यसर्पभेदेऽपि मातुलः ।
[2]मातुलानी कलाये स्याद्भङ्गायां मातुलस्त्रियाम् ॥४३४७॥
मातुलुङ्गस्तु रुचकगुल्मेऽत्यम्लफले पुनः ।
भेदेऽस्य मातुलुङ्गी स्यादथ क्लीबं फलेऽनयोः ॥४३४८॥
मातोमाजननीगोषु वेषणीसरितोर्भुवि ।
अकारादिकवर्णानामाम्नाये तारकासु च ॥४३४९॥
आश्विन्यादिषु पौष्याख्यपूर्णिमायामपि स्त्रियाम् ।
ब्राह्मयादिदेवीषु त्रिस्तु मात्री स्यान्मानकारिणि ॥४३५०॥
स्यान्मातरि स्त्रियां नित्यं धातृकाकारणे स्वरे ।
[3]मान्तु यन्त्रायते तत्र मात्रः स्यादभिधेयवत् ॥४३५१॥
मात्रा कर्णविभूषायां वित्ते माने परिच्छदे ।
अक्षरावयवे स्वल्पे क्लीबं कार्त्स्न्येऽवधारणे ॥४३५२॥
माथस्तु मथने चापि मार्गे चापि पुमान्मतः ।
माधवो ना वसन्ते वैशाखमासे हरावपि ॥४३५३॥
मध्वासवसमाख्ये तु मद्यभेदे नृशण्डयोः ।
अतिमुक्तलतायां तु सुरायामपि माधवी ॥४३५४॥

१. मातुलानी च भङ्गाख्य धान्ये स्या... ...... ।
२. मातुलो व्रीहिभिन्मातृभ्रात्रोश्च मदनद्रुमे ।
३. मात्रा धने प्रवृत्तौ च पर्वते कर्णभूषणे ।
हस्वोच्चारणकालेऽपि परिच्छेदे परिच्छदे ।
एकदेशेऽथ मात्रन्तूत्तरं कार्त्स्न्येऽवधारणे ।

जयन्त्यामपि कोशातक्यां दीर्घफलनामनि ।
शतपुष्प्यामपि मधुशर्करायां तथा स्त्रियाम् ॥४३५५॥
मधुपुत्रादिषु पुनर्माधवस्त्रिषु कीर्त्तितः ।
माधुकं मधुनि क्लीबं पुराणे यौगिके त्रिषु ॥४३५६॥
माधुरः षोडशेऽरत्नौ यूपस्यारभ्य मूलतः ।
भवेत्सप्तदशारत्नेर्योगार्थे तु त्रिषु स्मृतः ॥४३५७॥
मानं क्लीबं परिच्छेदे हस्तादौ चापि हिंसने ।
लग्नाद्दशमराशौ च प्रक्षेपप्रणिदानयोः ॥४३५८॥
आधारानतिरिक्तत्वं यदाधेयस्य सम्भवः ।
तत्राथ मानः पूजायां ज्ञाने चित्तोन्नतौ च ना ॥४३५९॥
स्त्रियां तु मानी कुडुवपरिमाणद्वये मता ।
मानवस्तु मनुष्ये द्वे मनुसम्बन्धिनि त्रिषु ॥४३६०॥
मानसन्तु मतं चित्ते हिमवत्सरसामपि ।
एकस्मिन्स्तोत्रभेदेऽपि यज्वनां त्रि तु यौगिके ॥४३६१॥
मानिनी तु स्त्रियां फल्यां मानी मानवति त्रिषु ।
मामकं स्यान्मदीयार्थे त्रिषु पुंसि तु मातुले ॥४३६२॥
माया स्त्री शाम्बरीबुद्ध्योर्विष्णोर्नवसु शक्तिषु ।
एकस्यां सांख्यतत्त्वे च प्रधानाख्येऽथ स त्रिषु ॥४३६३॥
मायके यश्च मां याति तत्रापि परिकीर्त्तिता ।
[1]मारस्तु मरणे कामे मृतावपि पुमान्मतः ॥४३६४॥
[2]मारिर्मारी स्त्रियामुक्ते मसूरीसंज्ञके गदे ।
[कालरात्रौ] सर्वलोकतते मृत्यौ [सुरान्तरे] ॥४३६५॥
मारिर्मारयतौ धातौ पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
मारिषो जीवशाकेऽपि चार्ये नाट्योक्तिगोचरे ॥४३६६॥
दक्षमातरि तु स्त्रीत्वे मारिषा परिकीर्त्तिता ।
मारीचो रक्षसो भेदे कक्कोले याजकद्विजे ॥४३६७॥

१. माया स्यात्शाम्बरीबुद्ध्योर्मायः पीताम्बरे सुरे ।
२. मारी मारिः स्त्रियां कालरात्रौ व्यापिमृतावपि ।

कश्यपेऽथ स्त्रियामुक्ता मारीची देवतान्तरे ।
मारुण्डोऽण्डे भुजङ्गानां मार्गे गोमयमण्डले ॥४३६८॥
[1]मारुतो हनुमद्भीमसेनवायुष्वयं पुमान् ।
पुराम्भिन्दुर्युवेत्यस्यामृचि गीते तु साम्नि नप् ॥४३६९॥
मार्गो मृगमदे मार्ष्टौ मार्गशीर्षाऽध्वनोश्च ना ।
सौम्यगेऽथ द्वयोर्मार्गी प्रोक्ता मार्गणकर्मणि ॥४३७०॥
मार्गणो याचके बाणेऽपि च पुंसि प्रकीर्त्तितः ।
मार्गणा तु न ना याच्ञाद्वेषयोरियमिष्यते ॥४३७१॥
मार्गरस्तु द्वयोरायोगव्यां जाते निषादतः ।
कैवर्त्तेऽप्यथ मार्गस्य दातरि त्रिषु मार्गरः ॥४३७२॥
मार्गशीर्षी पूर्णिमायां मृगशीर्षयुजि स्त्रियाम् ।
पुमांस्तु मासे तद्युक्ते मार्गशीर्षः प्रकीर्त्तितः ॥४३७३॥
मार्जनोऽस्त्री स्नेहगुणे पुंसि स्याल्लोध्रशाखिनि ।
मार्जनं मार्जना चेति मार्ष्टौ स्त्रीक्लीवयोर्भवेत् ॥४३७४॥
मार्जारो द्वे विडालेऽगस्त्येङ्गुदद्रुमयोस्तु ना ।
मार्जारी चमराकारे कोद्रङ्गाख्ये मृगान्तरे ॥४३७५॥
कस्तूरिकामृगाण्डेऽपि मार्जारी स्त्रीत्व इष्यते ।
मार्जारीयः स्मृतः शूद्रे बिडाले कायशोधने ॥४३७६॥
मार्जालीयः पुमानङ्गशोधने धौतिदेशके ।
मार्जालीयस्तु मार्जारे मतः स्त्रीपुंसयोरयम् ॥४३७७॥
मार्जितं शोधिते त्रि स्याद्रसालायां तु मार्जिता ।
अपक्वतक्रं सव्योषचतुर्जातगुडार्द्रकम् ॥४३७८॥
सजीरकं रसाला स्यादिति तल्लक्षणं विदुः ।
मार्त्तण्डस्तु खगे चापि द्वयोर्दंष्ट्रिणि च स्मृतः ॥४३७९॥
रवौ तु पुंसि मार्त्तण्डमार्त्ताण्डौ परिकीर्त्तितौ ।
मालस्तु प्रहतक्षेत्रभूतले त्रिषु कीर्त्तितः ॥४३८०॥

---

१. मारुतस्तु पुमान्वायौ भीमसेने हनूमति ।
पुरांभिन्दुर्युवेत्यस्यामृचि गीते च साम्नि नप् ॥

माला पृक्कास्रजोर्मालः सूतीशूद्रोद्भवे द्वयोः ।
तत्र माली जातिङीषि मालस्तु स्यात्कठिञ्जरे ॥४३८१॥
पुँल्लिङ्गः कालपर्ण्याख्यतुलस्यां धारणेऽप्यथ ।
क्ली दक्षिणान्तरद्वीपे मालमस्माच्च भारतात् ॥४३८२॥
मालको धारके विज्ञैरभिधेयवदिष्यते ।
वनदुर्गनिवासे तु मालकं खेटकाभिधे ॥४३८३॥
मालिका तु स्त्रियां पङ्क्तावाढ्यानां च गृहान्तरे ।
सप्तलासंज्ञके पुष्पवल्लिभेदेऽपि मालिका ॥४३८४॥
ग्रैवेयके पुष्पमाल्ये पुत्रिकाहस्तिमल्लयोः ।
मालकी तु स्त्रियां पुष्पवल्लीषु सकलास्वपि ॥४३८५॥
मालवाः स्युर्जनपदेऽवन्तिनाम्नि नृभूमनि ।
तन्निवासिव्रते तु द्वे मर्त्यजात्यन्तरेऽपि च ॥४३८६॥
मालिको द्वे भवेन्मालाकारे मालावति त्रिषु ।
मालिनी मातृकावृत्तभिदोर्मालिकयोषिति ॥४३८७॥
गौरीचम्पानगर्योश्च मन्दाकिन्यां नदीभिदि ।
मालुः पत्रलतायां च नार्यां च स्त्रीत्व इष्यते ॥४३८८॥
मालुधानो मातुलाहौ मालुधानी लतान्तरे ।
माल्यं क्ली कुसुमे पुष्पस्रजि धार्ये तु भेद्यवत् ॥४३८९॥
माषस्तु धान्ये वृष्याख्ये पुंनपुंसकयोर्मतः ।
पञ्चगुञ्जात्मके माने तण्डुलोन्मितवस्तुनि ॥४३९०॥
कार्षापणप्रभेदेऽपि हिंसार्थमषणे तु ना ।
माषो व्रीह्यन्तरे मूर्खे मानत्वग्दोषभेदयोः ॥४३९१॥
माषाशी तु तुरङ्गे द्वे माषस्य त्वाशके त्रिषु ।
माष्यन्तु हिंस्यमाषीणमाषसाध्वादिषु त्रिषु ॥४३९२॥
मास्तु मासेऽपि चन्द्रेऽपि सान्तः पुँल्लिङ्ग इष्यते ।
मासरो भक्तमण्डे वल्कसाख्ये भक्तसाधने ॥४३९३॥
मासिकं स्यात्स्त्रीरजसि मासश्राद्धे तु न स्त्रियाम् ।
मासिकं तु त्रिषु ज्ञेयं मासम्भूतभृतादिषु ॥४३९४॥

माहिरस्तु पुमानिन्द्रे क्लीबं शयनबालयोः ।
माहूरः पर्वते पुंसि पूजके तु त्रिषु स्मृतः ॥४३९५॥
माहेन्द्री सप्तमातॄणामेकस्यां कदलीभिदि ।
पृथुदीर्घफलायां स्यादथ त्रियोगिके भवेत् ॥४३९६॥
मित्रं क्ली सुहृदि स्थौणेयौषधे लग्नतस्तथा ।
चतुर्थराशावथ ना मित्रेऽर्केऽर्कान्तरेऽपि च ॥४३९७॥
मित्रबिन्दः पुमानुक्तः कोहलस्य मुनेः सुते ।
मित्रबिन्दा स्त्रियामिष्टिविशेषे यज्वनि श्रुते ॥४३९८॥
कृष्णप्रधानपत्नीनां सप्तानामपि कुत्रचित् ।
मिथोऽन्योन्येऽव्ययं प्रोक्तं रहस्यपि तथा स्मृतम् ॥४३९९॥
मिथुनन्तु क्लीबलिङ्गं स्त्रीपुंसयुगले तथा ।
मधुसर्पिर्द्वये राशौ तृतीये च द्वयोर्गणे ॥४४००॥
युग्माख्ये तद्वति त्रि स्याद्दम्पत्योर्मिथुनः पुमान् ।
मिथुनत्वं रते भावकर्मणोर्मिथुनस्य च ॥४४०१॥
मिथुनी तु द्वयोः खञ्जरीटे त्रिषु तु यौगिके ।
मिद्धं चित्ताभिसंक्षेपे क्लीबमालस्यनिद्रयोः ॥४४०२॥
मिशिस्तु तुत्थनीलिन्यां सूक्ष्मैलायां च कीर्त्तिता ।
मिश्रकं यजमानस्य क्लीबमुक्तं घृताञ्जने ॥४४०३॥
मिश्रकस्त्रिषु संकीर्णे तथा मिश्रयितर्यपि ।
मिषं तु क्ली छलेऽथ द्वे घर्घरीक्षत्रियोद्भवे ॥४४०४॥
मिषं व्याजे मतं क्लीबं स्पर्धनेऽपि प्रकीर्त्तितम् ।
मिसिः स्त्री मधुरामांस्योः शतपुष्पाजमोदयोः ॥४४०५॥
मिहिरोऽर्केऽनिले मेघे वद्धे नप् सलिले स्मृतम् ।
मीढो मेषे द्वयोः क्लीबं मूत्रणे मूत्रितेऽन्यवत् ॥४४०६॥
मीढा तु देवरे याऽन्यं नियुक्तेत्यभिसारिका ।
मीनो ना द्वादशे राशौ द्वे तु मत्स्ये त्रि हिंसिते ॥४४०७॥
यष्टौ तु मीना स्त्री क्ली तु हिंसने मीनमिष्यते ।
मीनी स्त्रीणस्तु पुँल्लिङ्गो दर्दुराम्रे च खञ्जने ॥४४०८॥

मीमांसा श्रौतवाक्यार्थशास्त्रेऽपि च विचारणे।
मीरं क्लीबमुखायां मांस्पचन्यां ना तु वारिधौ ॥४४०९॥
मीलितो मुद्रिते चापि योजिते चाभिधेयवत्।
मुकुन्दो निधिभिद्विष्णुरत्नभेदे च कुन्दुरौ ॥४४१०॥
मुकुरो बकुले दण्डे कुलाले स्याच्च दर्पणे।
स्त्री मुक्तबन्धना मल्लिकायां त्रिषु तु यौगिके ॥४४११॥
मुक्ता स्त्री मौक्तिके त्रिस्तु विसृष्टे मुक्तिभाजि च।
मुक्ताफलं तु कर्पूरमौक्तिके लवलीफले ॥४४१२॥
मुक्तिः स्त्रियां स्यात्स्वर्गे चाप्यपवर्गे च मोक्षणे।
मुखं वक्त्रेऽभ्युपाये च मुख्ये ताम्रे च सैन्धवे ॥४४१३॥
[1]आदौ निःसरणे गेहपुरादेर्द्वार एव च।
संध्यन्तरे नाटकादेः शब्देऽपि च नपुंसकम् ॥४४१४॥
मुखभूषणमास्यालङ्कृतौ वङ्गाख्यलेखके।
मुखमण्डन इत्युक्तस्तिलकाख्यद्रुमे पुमान् ॥४४१५॥
मुखस्य भूषणे क्लीबं वर्ण्यते येन वस्तुना।
मुखं वाच्यवदत्रैतन्मुखमण्डन उच्यते ॥४४१६॥
मुखरा शारिकायां स्त्री मुखरो दुर्मुखे त्रिषु।
मुखशोभा वेदशालिमुखे कान्तौ मुखस्य च ॥४४१७॥
मुख्यं वक्त्रेऽप्युपाये च नपुंसकमुदीरितम्।
त्रिषु तु स्यान्मुखभवे प्रधाने प्रथमेऽपि च ॥४४१८॥
मुग्धं मूढे च सौम्ये च नूतनेऽप्यभिधेयवत्।
मुचिरोऽर्केऽम्बुदे घर्मे पुमान्दातरि तु त्रिषु ॥४४१९॥
मुचुकुन्दः पुष्पवृक्षभेदमान्धातृपुत्रयोः।
क्लीबं तु मुचुकुन्दस्य प्रसवे परिकीर्त्तितम् ॥४४२०॥
मुण्डः स्यान्मस्तके त्रिस्तु परिवापितकेशके।
स्त्री तु मुण्डा च मुण्डी च स्तम्बे श्रमणिकाह्वये ॥४४२१॥

---

१. मुखं निःसरणे वक्त्रे प्रारम्भोपाययोरपि।

सा तु मुण्डैव भिक्षुक्यां मण्डने तु नरस्त्रियोः ।
मुण्डो दैत्यान्तरे राहुग्रहे ना मुण्डिते त्रिषु ॥४४२२॥
मुण्डनं वपने चापि त्राणेऽपि च नपुंसकम् ।
मण्डितस्तूप्तकेशे त्रिर्मुण्ड्याख्ये भेषजे स्त्रियाम् ॥४४२३॥
मुदिरोऽर्के च मेघे ना भेके द्वे कामुके त्रिषु ।
मुद्गरो द्रुघणे पुंसि तथा वेण्वादिभेदने ॥४४२४॥
[1]मल्लिकायाम्मुद्गरदे त्रि क्लीबं स्यान्मल्लिकान्तरे ।
मुद्राऽङ्गुलीये लिखिताक्षरे चिह्नेऽप्सरोऽन्तरे ॥४४२५॥
हस्तविन्यासभेदेषु स्थापनीनिष्ठुरादिषु ।
अथाऽभिधेयवन्मुद्रशब्दो मोदस्य दातरि ॥४४२६॥
मुनिर्ऋषावगस्त्यर्षौ बुद्धे दमनके कुशे ।
अगस्त्यद्रौ द्वयोस्तु स्याद्भेके वाचंयमे त्रिषु ॥४४२७॥
मुनिप्रियो ना श्यामाके योगार्थे तु यथायथम् ।
मुनिभेषजमागस्त्यहरीतक्यां च लङ्घने ॥४४२८॥
मुनिसेवित उक्तो ना नीवारे त्रि तु यौगिके ।
मुमुचानो मोक्तृमुमुक्षित्रोस्त्रिर्ना तु वारिदे ॥४४२९॥
मुरली वंशवाद्ये पुण्डिकाख्ये काहलान्तरे ।
मुरवो वाद्यभेदे च खण्डिकाद्यमानके ॥४४३०॥
मुरा तु गन्धकुट्यां च चन्द्रगुप्तस्य मातरि ।
अथ दैत्यान्तरे विष्णुनिहते स्यान्मुरः पुमान् ॥४४३१॥
[2]मुर्मुरस्तुषवह्नौ स्यान्मन्मथे रविवाजिनि ।
मुषलं स्यादयोग्रे च पुंनपुंसकयोः स्त्रियाम् ॥४४३२॥
तालमूल्यामाखुपर्णीगृहगोधिकयोरपि ।
मुषितं तु हृतेऽपि स्यात्खण्डितेऽप्यभिधेयवत् ॥४४३३॥
[3]मुष्को मोक्षकवृक्षे स्यात्संहते वृषणेऽपि च ।
मुष्टिः फलकखड्गादेः पलाख्ये ग्रहणाश्रये ॥४४३४॥

---

१. मुद्गरं क (म) ल्लिकाभेदे पुंसि लोष्ट्रादिभेदने ।
२. मुर्मुरो ज्वलदङ्गारपूर्णाग्नौ च तुषानले ।
३. मुष्कस्तु वृषणे न स्त्री भगस्यावयवे तु ना ।

उन्मानभेदे सुदृढपिण्डिताङ्गुलिसंहतौ ।
धानुष्कहस्तविन्यासभेदे ग्राह्ये च मुष्टि नपु् ॥४४३५॥
मुष्टिकस्तु पुमान्स्वर्णकारे स्यात्स्त्री तु मुष्टिका ।
स्वर्णकारोपकरणभेद एषा प्रकीर्त्तिता ॥४४३६॥
मुसलोऽस्त्र्यवघाताय दण्डे स्त्री तु मुसल्यसौ ।
गृहगोधातालमूलीकुस्तुम्बुरुषु कीर्त्तिता ॥४४३७॥
मुस्ता तु मुस्तके त्रि स्याद्विषभेदे तु न स्त्रियाम् ।
मुहरिस्तु पुमान्सूर्ये तथा स्यादनडुह्यपि ॥४४३८॥
[1]मुहिरोऽर्कें स्मरे पुंसि त्रिर्मूर्खे क्ली तमस्यपि ।
मूको दैत्यान्तरे ना त्रि [रवाच्यमतिदीनयोः] ॥४४३९॥
अश्वायां वेसराज्जाते [पशौ द्वे क्ल्याविलाम्बुनि] ।
मूढा प्रहेलिकाभेदे मोहने तु नपुंसकम् ॥४४४०॥
मूढस्तु तन्द्रितेऽप्यज्ञे क्रुद्धमूर्च्छितयोस्त्रिषु ।
मूत आतञ्चने व्रीहावपि पुंसि मतस्तथा ॥४४४१॥
आचमन्यां तृणैर्बद्धे भारे व्रीह्यादिकस्य च ।
वस्त्रवेष्टनबन्धेऽथ त्रिर्बद्धे क्ली तु बन्धने ॥४४४२॥
मूर्च्छनं स्यादभिव्याप्तौ मोहे चाप्यथ मूर्च्छना ।
गीतिधर्मान्तरे स्त्री स्यान्नना मूर्च्छयतेः कृतौ ॥४४४३॥
मूर्च्छितस्तु प्रवृद्धेऽपि मूढसोच्छ्राययोस्त्रिषु ।
मूर्त्तः स्यात्त्रिषु मूर्च्छाले कठिने मूर्त्तिमत्यपि ॥४४४४॥
मूर्त्तिः काये च काठिन्ये काकप्रतिमयोरपि ।
मूर्धाभिषिक्तो ना राज्ञि क्षत्रिये तु द्वयोर्मतः ॥४४४५॥
अथ प्रधाने मूर्धाभिषिक्तः स्यात्त्रिषु च प्रभौ ।
मूर्धावसिक्तो द्वे विप्रात्क्षत्रियाजे त्रियौगिके ॥४४४६॥
मूलोऽस्त्र्यादौ समीपे च वृक्षाङ्घ्रौ च वशीकृतौ ।
नक्षत्रभेदे स्वीये च कारणेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥४४४७॥

१. मुहिरोऽर्कें च काये च मुहिरं तमसि स्मृतम् ।

मूलकोऽस्त्री बुस्तिकाख्यशाकस्तम्बान्तरे मतः ।
मूलनक्षत्रसंयुक्तकालजाते त्रिषु स्मृतः ॥४४४८॥
मूलेरस्तु पुमानुक्त आपणीयवनस्पतौ ।
स्याद्वनस्पतिमात्रेऽपि पण्ये तु स्यान्नपुंसकम् ॥४४४९॥
मूल्यं क्ली वेतने [त्रिस्तु वहने मूल्य इष्यते] ।
माषमुद्गादिके मूलोत्पाद्ये तत्रापि चेष्यते ॥४४५०॥
यः परादिरुपादानद्रव्यतुल्यप्रयोजनः ।
मूषा लोहकृतां तैजसावर्त्तन्याख्यभाण्डके ॥४४५१॥
द्वे तु चौरे भवेन्मूषा मूषश्चोरे भवेत्त्रिषु ।
मूषिकस्त्वाखुजातौ द्वे स्त्रीत्वे त्वेतस्य मूषिका ॥४४५२॥
अनिष्टगन्धे विज्ञेया मूषिकैः सदृशाकृतौ ।
मूषिका निर्विषाणां च जातिभेदे जलौकसाम् ॥४४५३॥
[1]मृगो मकरराशौ च मृगशीर्षे च तद्युते ।
काले पश्वन्वेषणयोर्द्वे तु हस्तिकुरङ्गयोः ॥४४५४॥
स षडङ्गुलयोनौ तु नायिकायां भवेन्मृगी ।
मृगनेत्रा रात्रिभेदे त्रिर्मृगाक्षे स्त्रियो भिदि ॥४४५५॥
मृगयुः पुंसि गोमायौ व्याधे च परमेष्ठिनि ।
पुमान्मृगरिपुः सिंहे व्याघ्रेऽपि परिकीर्त्तितः ॥४४५६॥
नपुंसकं मृगशिरो मृगशीर्षे त्रि यौगिके ।
मृगशीर्षं सोमऋक्षे योगार्थे तु यथायथम् ॥४४५७॥
मृगारिस्तु तरक्षौ स्याद्योगार्थे तु यथायथम् ।
कण्ठीरवे च शार्दूले मृगारिस्तु भवेद्द्वयोः ॥४४५८॥
मृणालोऽस्त्री बिसे पद्माङ्कुरे स्यात्पद्मकोरके ।
मृतं त्रि नष्टे भैक्षे तु याचिते मरणे च नप् ॥४४५९॥
मृत्युर्द्वयोः स्यान्मरणे पुमानेवाऽन्तके मतः ।
मृत्यु [ञ्जयोमहादेवे] श्रीफलद्रोणकाकयोः ॥४४६०॥

---

१. मृगः पशौ कुरङ्गे च करिनक्षत्रभेदयोः ।
अन्वेषणे च याञ्चायां मृगी तु वनितान्तरे ।

मृत्युपुष्पः पुमान्वेणाविक्षावपि तथा मतः ।
स्यात्कदल्यां मृत्युफला महाकालफले पुमान् ॥४४६१॥
मृत्युसंयमनः पुंस्यासनभेदेऽस्य लक्षणम् ।
भुजवेष्टितजङ्घोरोश्चूलिकाश्लेषितावनेः ॥४४६२॥
पृष्ठतो भुजपाशश्चेन्मृत्युसंयमनो हि सः ।
योगार्थे त्वस्य लिङ्गादि तर्कणीयं यथायथम् ॥४४६३॥
मृत्सा मृत्स्ना तुवर्याञ्च तथा श्रेष्ठमृदि स्मृते ।
मृत्स्नी जले मृत्तिकायां तुवरीसंज्ञभेषजे ॥४४६४॥
मृदङ्गो लतयोः स्वल्पफलकोशातकीति च ।
महाकोशातकीतिख्यातयोर्वाद्यान्तरेऽपि च ॥४४६५॥
मुरजाख्येऽथ लतयोरुक्तयोः प्रसवे नपि ।
मृदु वङ्गे कोमले तु त्रि स्यादकठिनेऽपि च ॥४४६६॥
मृदुकण्टक उक्तो द्वे पाठीने त्रि तु यौगिके ।
मृदुत्वक् पुंसि भूर्जे च मुञ्जे त्रिषु तु यौगिके ॥४४६७॥
मृदुरोमा शशे द्वे स्याद्योगार्थे तु यथायथम् ।
मृदुलं क्लीबमगुरौ मृदुनि त्रिषु कीर्त्तितम् ॥४४६८॥
मृष्टेरुको वदान्येऽपि मृष्टाशिन्यतिथिद्विषि ।
मेकला विन्ध्यपर्यन्तनीवृद्भेदे नृभूमनि ॥४४६९॥
मेकलोऽद्र्यन्तरे शीतगुणे त्रिषु तु तद्वति ।
मेखला कटिसूत्रेऽपि श्रोणिस्थानेऽपि च स्त्रियाम् ॥४४७०॥
खड्गत्सरुबिबन्धस्याश्रयेऽद्रिकटके तथा ।
मेघः स्यात्पुंसि जलदे मुस्तायां च तदर्थकाः ॥४४७१॥
मेघजं तु जले क्लीबं त्रि तु स्यान्मेघसम्भवे ।
मेघनादो मेघघोष इन्द्रजित्तण्डुलीययोः ॥४४७२॥
वरुणे च द्वयोस्त्वेष आखुजात्यन्तरे मतः ।
मेघपुष्पो हरेरश्वे पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥४४७३॥
मेघपुष्पं तु पिण्डाभ्राम्बुनादेयेषु नप्स्मृतम् ।
मेघवाहन इत्येष पुंसि शक्रे शिवेऽपि च ॥४४७४॥

मेघानन्दा बलाका स्यान्मेघानन्दास्तु बर्हिणः ।
मेघ्यः प्रावृषि ना त्रिस्तु मेघसाधुनि तद्भवे ॥४४७५॥
मेचकः श्यामले कृष्णे पुमांस्तद्वति तु त्रिषु ।
मेचकोऽस्त्री मयूरस्य चन्द्रके स्तनचूचुके ॥४४७६॥
मेचकं त्वन्धकारे च क्लीबं स्रोतोऽञ्जने मतम् ।
मेढ्रं नपुंसकं शिश्ने मेढ्रो मेषे द्वयोर्मतः ॥४४७७॥
मेथिः पुमान्खले दारुन्यस्तं यत्पशुबन्धने ।
मेथीवन्मेथिकायां सा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥४४७८॥
मेदा तु स्त्र्योषधीभेदे मेदने ना द्वयोः पुनः ।
वैदेहकनिषादीजे मर्त्यजात्यन्तरे भवेत् ॥४४७९॥
मेदुरौषधिभेदे स्त्री सान्द्रस्निग्धे पुनस्त्रिषु ।
मेधा स्त्री धारणावत्यां भवेद्बुद्धौ धनेऽप्यथ ॥४४८०॥
मेधो यज्ञे सङ्गमे तु द्वयोर्मेधाविनि त्रिषु ।
मेधातिथिः शुके द्वे स्यान्मुनिभेदे पुनः पुमान् ॥४४८१॥
मेधावती महाज्योतिष्मत्यां स्त्री त्रिः समेधके ।
मेध्यं शुचिनि यज्ञार्हे मेधाभ्वर्हादिषु त्रिषु ॥४४८२॥
मेध्यस्तु खदिरे छागे यवे मुञ्जे पुमान्मतः ।
मेध्यं धने बले स्वर्णे मेध्या तु स्यान्नदीभिदि ॥४४८३॥
केतकीरोचनाज्योतिष्मतीब्राह्मीशमीषु च ।
माण्डूक्यां शङ्खपुष्प्यां च वचयोः श्वेतरक्तयोः ॥४४८४॥
मेनो ना पृषदश्वाख्ये कीर्त्तितः पूर्वपार्थिवे ।
मेनाऽस्य पुत्र्यां स्त्रीमात्रे वा गुप्तामातृषु स्मृता ॥४४८५॥
मेनादस्तु द्वयोश्छागे स्यान्मार्जारमयूरयोः ।
मेनिस्तु वाचि च स्त्रीत्वे सङ्कल्पे च प्रकीर्त्तिता ॥४४८६॥
मेरुकः शल्लकीवृक्षे देशभेदे तु मेरुकाः ।
मेला पत्राञ्जने मस्यां मेलस्तु नारिसङ्गमे ॥४४८७॥
मेषो ना प्रथमे राशावुरभ्रे तु द्वयोरयम् ।
मेषको जीवशाके स्यान्मेष्यां स्त्री मेषिका मता ॥४४८८॥

मेषशृङ्ग्यौषधभिदि न तु स्त्री विषभिद्यपि।
अथ मेष्यो हिमोत्सर्गक्षमा ये रविरश्मयः ॥४४८९॥
शतत्रयमितास्तेषामेकस्मिञ्छत ईरिताः।
मेहा शुचि स्यान्मेहस्तु मूत्रणे मूत्ररुग्भिदि ॥४४९०॥
मेहघ्नी स्त्री हरिद्रायां त्रिर्मेहारावमानने।
मेहनं मूत्रणे क्लीबमस्त्री मेढ्रे प्रकीर्त्तितम् ॥४४९१॥
मेही मेहवति त्रि स्याद्व्याघ्रे द्वीप्यभिधे द्वयोः।
मैत्रो विप्रे वैश्यपूर्वे वैश्यायां व्रात्यजे द्वयोः ॥४४९२॥
मित्रे त्वपाने ना सन्धियोगाऽऽदित्यान्तरेष्वथ।
मैत्रं पुरीषोत्सर्गे क्ली मित्रसङ्घे तथा मतम् ॥४४९३॥
मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षं मृदु मैत्रं भृगुस्तथा।
उपस्थानेऽपि सूर्यस्य सूत्रभेदे तथा भवेत् ॥४४९४॥
मैत्री मुनेर्वृत्तिभेदेऽनुराधासख्ययोः स्त्रियाम्।
वसिष्ठागस्त्यवाल्मीक्यर्थे मैत्रावरुणिः पुमान् ॥४४९५॥
स्यान्मैथिली स्त्री सीतायां ना वैदेहप्रदोषयोः।
मैथुनं सुरते क्लीवं सङ्गतावपि कीर्त्तितम् ॥४४९६॥
त्रिर्मैथुनोद्वाहयुक्ते मिथुनाङ्गे तथा मतः।
द्वे तु मैथुनिकः त्रि तु मैथुनवत्यसौ ॥४४९७॥
स्त्री तु मैथुनिका पाणिग्रहणे परिकीर्त्तिता।
मैथुनी सारसे द्वे स्यात्त्रि तु मैथुनवत्यसौ ॥४४९८॥
मोको ना मोचने शिष्ये मोकी रात्रौ स्त्रियां मता।
स्त्रीपुंसयोस्तु मोकी च मोकश्च स्याच्चतुष्पदे ॥४४९९॥
मोकं तु पशुवृत्तौ तत् क्लीबलिङ्गं प्रकीर्त्तितम्।
मोक्षो मुष्करवृक्षे च मृतौ मुक्तो विमोचने ॥४५००॥
मोचा तु कदलीमात्रे सुगन्ध्यल्पफलेऽपि च।
स्यात्कदल्यन्तरे किं च शाल्मलौ ना तु शिग्रुके ॥४५०१॥

वृक्षस्य च रसे मोचः पाटल्यां तु द्वयोर्भवेत् ।
[1]मोचकः कदले शिग्रुनिर्मोचकविरागिषु ॥४५०२॥
मोचाटः कृष्णजीरे च रम्भास्थ्नि मलयोद्भवे ।
मोणः शुष्कफले तक्रमक्षिकाहिकरण्डयोः ॥४५०३॥
मोदकः पूपभेदे स्यात्पुँल्लिङ्गे च नपुंसके ।
वाच्यवन्मोदयितरि मोदितर्यपि मोदकः ॥४५०४॥
मोरटः कृष्णजीरे च रम्भास्थ्नि मलयोद्भवे ।
मोरटं तु प्रसूत्यादिसप्ताहात्क्षीर ऊर्ध्वजे ॥४५०५॥
मोरकाख्ये गवादीनामिक्षुमूले च गोरसे ।
[2]मोरटा तु स्त्रियां मूर्वासंज्ञके भेषजान्तरे ॥४५०६॥
सूर्यावर्त्ते पर्णिकाख्यस्तम्बे च परिकीर्त्तिता ।
मोहः क्रोधे च मूर्च्छायां तथैवाज्ञानतन्द्रयोः ॥४५०७॥
मोहनं क्ली रते मोहेऽथार्थे मोहयतेरना ।
मोहना विष्णुशक्तौ तु कस्याश्चिन्मोहनी मता ॥४५०८॥
मौढी यक्षे मर्मराख्ये मूढयोगिनि तु त्रिषु ।
मौलिस्तु नृस्त्रियोर्मूर्ध्नि चूडामुकुटयोरपि ॥४५०९॥
धम्मिल्लेऽशोकवृक्षे तु ना भूमौ तु स्त्रियां भवेत् ।
मौष्टिको ना स्वर्णकारे त्रि तु मुष्टिप्रहारिणि ॥४५१०॥
म्लानं म्लानवति त्रि स्यात्क्लीवं म्लानौ प्रकीर्त्तितम् ।
मण्डूकभेदे गृहजे म्लानः स्त्रीपुंसयोर्मतः ॥४५११॥
म्लिष्टं म्लानेऽप्यविस्पष्टवाक्ये स्यादभिधेयवत् ।
म्लेच्छास्तु द्वे म्लेच्छवाक्षु स्युः प्रत्यन्तनिवासिषु ॥४५१२॥
म्लेच्छने तु द्वयोर्म्लेच्छा ताम्रे तु म्लेच्छमिष्यते ।
म्लेच्छभोजास्तु गोधूमे योगार्थे तु यथायथम् ॥४५१३॥
म्लेच्छास्यं ताम्रसंज्ञे स्याल्लोहे म्लेच्छमुखेऽपि नप् ।
म्लेच्छानां त्वसने स्त्रीत्वे म्लेच्छास्या परिकीर्त्तिता ॥४५१४॥

---

१. मोचकः शाल्मलिः सौभाञ्जनो रम्भा च मोक्तरि ।
२. दूर्वायां स्त्रीक्षुमूले तु गोरसेऽपि च मोरटम् ।

य

यो ना वायौ यानयोगयशोयमनयातृषु ।
या यात्राधूमितत्यागसमज्ञायोगवारणे ॥४५१५॥
आप्तौ रथादियानेपि स्त्रीयोनावपि च स्त्रियाम् ।
यक्षी तु पूजनीये त्रिर्यक्ष्यां स्त्री यक्षिणीष्यते ॥४५१६॥
यक्षो वैश्रवणे पुंसि प्रासादेपि विडौजसः ।
यक्षं नपुंसकं सत्त्वे स्यात्खाषेयशुनोर्द्वयोः ॥४५१७॥
यक्षकर्दम इत्येष यक्षाणामपि कर्दमे ।
कर्पूरागरुकस्तूरी तक्कोलैः साधितेऽपि च ॥४५१८॥
गन्धयुक्तिविशेषे स्यादेतैर्वा स्यात्सकुङ्कुमैः ।
यक्षराट् पुंसि धनदे मल्लानां रङ्गचत्वरे ॥४५१९॥
यक्ष्मस्तु व्याधिमात्रेऽपि क्षयरोगे च पूजने ।
यक्ष्मा न व्याधिमात्रेऽपि क्षयरोगे विशेषतः ॥४५२०॥
यजतस्तु शशाङ्केऽपि यज्ञद्रव्ये च ऋत्विजि ।
शिवेऽपि यजनीये तु शब्दोऽयम्परिकीर्त्तितः ॥४५२१॥
यजत्रमग्निहोत्रे च यज्ञोपकरणे मतम् ।
यजत्रस्तु त्रिलिङ्गोऽसौ यजनीये प्रकीर्त्तितः ॥४५२२॥
यजत्रस्तु पुमानग्निहोत्रिण्यपि च कस्यचित् ।
यजनं तु यजत्राख्ये यागोपकरणे क्रतौ ॥४५२३॥
यागस्य चाधिकरणे करणे च नपुंसकम् ।
यजिस्तु यजधातौ ना यजमाने द्वयोर्मतः ॥४५२४॥
यजनार्थे तु मन्वादौ लिङ्गं नाऽस्य विभाव्यते ।
यजुरध्वर्युवह्न्योर्ना द्वे शिष्ययजमानयोः ॥४५२५॥
चन्द्राऽश्वभेदेऽपि यजुः कैश्चित्पुंसि कीर्त्तितः ।
यजुर्यज्ञोत्सवे क्लीबं मन्त्रजात्यन्तरेऽपि च ॥४५२६॥
यज्ञस्तु केशवे चाग्नौ योगे चात्मनि चेष्यते ।
यज्ञार्हो यागयोग्ये त्रिः कृष्णसारमृगे द्वयोः ॥४५२७॥

यज्ञियो यज्ञकर्मार्हे त्रिर्मुञ्जे तु पुमान्मतः ।
यतन्तु यमने हस्तिपंकानां पादकर्मणि ॥४५२८॥
भेद्यलिङ्गं तु बद्धे स्यात्तथैवोपरतेऽपि च ।
यतिर्जितेन्द्रिये चापि परिव्राजि तथा त्रिषु ॥४५२९॥
स्त्रियां तु यमने पादच्छेदभेदे यतिर्मता ।
तथा कारागृहे धातौ त्वेष ना यततौ मतः ॥४५३०॥
यथा तु योग्यतावीप्सापदार्थानतिवृत्तिषु ।
सादृश्ये चैव माने च प्रशंसायामपीष्यते ॥४५३१॥
यथासुखः पुमांश्चन्द्रे यौगिके तु यथायथम् ।
यदव्ययं स्याद्गर्हायां तथा हेत्ववधारणे ॥४५३२॥
यदि त्वेतद्विकल्पेऽपि गर्हायामव्ययं मतम् ।
यदुर्नाऽऽद्यनृपे द्वे तु तद्वंश्येषु च मानवे ॥४५३३॥
यद्वत्प्रश्ने वितर्के चाऽप्यव्ययं परिकीर्त्तितम् ।
यन्ता हस्तिपके सूते पुंसि त्रिर्यमकर्त्तरि ॥४५३४॥
यन्त्रं तु क्ली लघूपायकर्मनिर्माणसाधने ।
यन्त्रणायां तु पुँल्लिङ्गो यन्त्रोऽयं परिकीर्त्तितः ॥४५३५॥
यन्त्रणं स्यान्नियमने रक्षणे बन्धनेऽपि च ।
यमो वैवस्वते पुंसि यमने च शनैश्चरे ॥४५३६॥
शब्दवर्णविशेषेषु तथैव स्याच्चतुर्ष्वपि ।
शरीरसाधनाऽपेक्षे सत्यादौ नित्यकर्मणि ॥४५३७॥
वल्गिताख्यस्य घोटानां गतिभेदस्य चाष्टसु ।
भेदेष्वेकत्र भेदे स्यात्क्ली तु युग्मे त्रिषु त्वदः ॥४५३८॥
मरणे युग्मवति च यमी तु यमुना सरित् ।
स्त्री यमाविति तु द्यावापृथिव्योरथ वायसे ॥४५३९॥
हीनाधिकाङ्गतुरगे तथा स्त्रीपुंसयोर्मतः ।
महिषे स्याद्यमरथो यमस्य स्यन्दनेऽपि च ॥४५४०॥
यमलं युगले क्लीबं यमली चोटिकाद्वये ।
यमस्वसा तु दुर्गायां यमुनायामपि स्त्रियाम् ॥४५४१॥

यम्या रात्रौ स्त्रियामुक्ता यन्तव्ये तु त्रिलिङ्गके ।
यम्यो यमयितव्ये च यमसाधावपीष्यते ॥४५४२॥
ययीस्तु पुंसि सूर्येऽपि मोक्षमार्गेऽपि कीर्त्तितः ।
ययीः स्त्रीपुंसयोर्विप्र घोटके च प्रयुज्यते ॥४५४३॥
स्त्री तु प्राप्तौ दीर्घवृष्टौ दिव्यवृष्टौ ययीर्मता ।
ययुस्तु नाऽश्वमेधाऽश्वेऽश्वमात्रे तु द्वयोर्ययुः ॥४५४४॥
यवा रश्मौ मनीषायां [ना व्रीहौ महति त्रिषु] ।
यवनं मिश्रणे द्वे तु शूद्राक्षत्रियजे तथा ॥४५४५॥
वैश्याक्षत्रियजेऽपि स्याद्यवना तु नृभूमनि ।
देशे तुरुष्कराख्ये तन्मर्त्ये सर्ववचो द्वयोः ॥४५४६॥
यवनेष्टः पलाण्डूनां दशानामेकभेदके ।
योगार्थे तु त्रिलिङ्गोयं यवनेष्टः प्रकीर्त्तितः ॥४५४७॥
पुमान्यवफलो वेणौ मांसीकुटजयोरपि ।
यविष्ठस्त्रिर्युवतमेऽग्नौ तु ना सवनाहुतेः ॥४५४८॥
यवीयाननुजेऽपि स्यादिति यूनि च वाच्यवत् ।
यव्यं यवोत्पत्त्युचिते क्षेत्रे यवहितेऽपि च ॥४५४९॥
यवसाधावथ स्त्रीत्वे यव्या नद्यां प्रकीर्त्तिता ।
यशस्तु सत्त्वख्यातिश्रीज्ञानमाहात्म्यवारिषु ॥४५५०॥
धनप्रतापयोश्चापि नपुंसकमुदीरितम् ।
यशोदा त्वग्निचित्यायाा इष्टकासु च कासुचित् ॥४५५१॥
नन्दगोपस्य पत्न्याश्च त्रि तु कीर्त्तेः प्रदातरि ।
यष्टिरस्त्री गृहस्थस्य दण्डे स्याद्दण्डमात्रके ॥४५५२॥
तरवारौ च यष्टिः स्यात् तथा खड्गायुधान्तरे ।
तथा हारलतायाश्च स्त्री तु स्यान्मधुकोषधौ ॥४५५३॥
यागो यज्ञेऽपि पुँल्लिङ्गो मण्डलेष्वपि कीर्त्तितः ।
शैवागमप्रसिद्धेषु सर्वतोभद्रकादिषु ॥४५५४॥
याच्ञाऽनुवर्त्तने स्त्री स्यात्प्रार्थनेऽपि तथेष्यते ।
याजकस्त्रिर्याजयितृयष्ट्रोः पुंसि तु ऋत्विजि ॥४५५५॥

याजन्यस्तु पुमान्यज्ञे क्षत्रिये तु द्वयोर्मतः ।
याजिको ना यज्ञविद्यामधीयाने विदत्यपि ॥४५५६॥
कुशे च याजके त्रिस्तु यज्ञेन नयतीदृशे ।
यातं हस्तिपककृत्ये तथा चाङ्कुशवारणे ॥४५५७॥
गते तथा यतियतसम्बन्धिन्यभिधेयवत् ।
यातयामं तु जीर्णेऽपि परिभुक्तोज्झिते त्रिषु ॥५५५८॥
याता देवरपत्न्यां स्त्री यात्री तु त्रिषु गन्तरि ।
यातु क्ली राक्षसे यातुः पापे ना पथिके त्रिषु ॥४५५९॥
यात्रा तु यापनेऽपि स्याद्गमनोत्सवयोः स्त्रियाम् ।
यादःपतिस्तु वरुणे समुद्रेऽपि पुमान्मतः ॥४५६०॥
यादवः केशवे पुंसि [यदुसम्बन्धिनि त्रिषु] ।
यादसाम्पतिरम्भोधौ पश्चिमाशापतावपि ॥४५६१॥
यानोऽस्त्री वाहने प्रोक्तो यानं क्ली गमने मतम् ।
यापनावर्त्तने प्रस्थापने निरसनेऽपि च ॥४५६२॥
कालक्षेपेऽपि च प्रोक्ता स्त्रियां चैव नपुंसके ।
याप्यन्तु यापनीयेऽपि वाच्यवच्च विगर्हिते ॥४५६३॥
यामं सामान्तरे ना तु प्रहरे यमनेऽपि च ।
यामको यन्तरि त्रि स्याद्यामकौ तु पुनर्वसू ॥४५६४॥
यामिः कुलस्त्रियामिष्टा तथैव स्वसरि स्त्रियाम् ।
यामुनं स्रोतोऽञ्जने क्ली यमुनायोगिनि त्रिषु ॥४५६५॥
याम्याऽवाच्यां भरण्यां च याम्योऽगस्त्ये च चन्दने ।
यावो नाऽलक्तके माषे यवयोगिनि तु त्रिषु ॥४५६६॥
यावको यवभेदे स्यात्कुल्माषाख्येऽप्यलक्तके ।
यावको यवितर्येष त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥४५६७॥
यावत् कार्त्स्न्ये प्रशंसायां परिच्छेदेऽवधारणे ।
पक्षान्तरेऽपि च प्रोक्तोऽधिकारे मानसम्भ्रमे ॥३५६८॥
यावतस्तु तुरुष्काख्यनिर्यासे पुंसि कीर्त्तितः ।
यावता यावदर्थे तु स्त्रीनपुंसकयोर्मता ॥४५६९॥

यावसं तु मतं क्लीबं मित्रे रक्ततृणेऽपि च।
युक्तः प्रकारे ना न्याय्यसमाहितयुते त्रिषु ॥४५७०॥
युक्तिः स्त्रियां समाधावप्युपपत्तौ च योजने।
युगं तु क्ली चतुर्हस्ते षडशीत्यङ्गुलेऽपि या ॥४५७१॥
युग्मेऽथ तद्वति त्रि स्याद्युगा स्त्री ऋद्धिभेषजे।
युगोऽस्त्री स्यन्दनादीनामीषाबन्धनदारुणि ॥४५७२॥
माने कृतादित्रेतादिकाले स्याज्जन्मपर्वसु।
युगन्धरोऽस्त्रियामेष प्रोक्तः स्यन्दनकूवरे ॥४५७३॥
साल्वैकावयवे तु स्युर्नृभूमनि युगन्धराः।
युग्मं नपुंसकं शम्भुकार्मुके वाहनेऽपि च ॥४५७४॥
युग्यस्तु युगसाधौ च युगवोढरि च त्रिषु।
युङ् सहाये द्वितीयादिसमसंख्ये त्रि वस्तुनि ॥४५७५॥
युञ्जानः सारथौ पुंसि विप्रे द्वे योक्तरि त्रिषु।
युतोऽपृथक्कृते युक्ते बद्धे च त्रिषु नप्पुनः ॥४५७६॥
मिश्रणे च पृथक्कारे बन्धने च युतादि तत्।
[1]युतकं योषितो वस्त्रभेदे शूर्पाग्र एव च ॥४५७७॥
यौतके युगले चापि संश्रये वसनाञ्चले।
युतकम्भेद्यवद्युक्ते युग्मावयवयोरपि ॥४५७८॥
युद्धस्तु शत्रौ संग्रामे ना योद्धरि तु स त्रिषु।
युधिष्ठिरः पाण्डवानां ज्येष्ठे शक्रे तथा पुमान् ॥४५७९॥
युध्मस्तु संयुगे पुंसि तथा धनुषि कीर्त्तितः।
युयुधानो युयुत्सौ त्रिः साहासान्वितयोद्धरि ॥४५८०॥
युयुधानस्तु कस्मिंश्चित्पुँल्लिङ्गो राजनि स्मृतः।
युवा स्यात्तरुणे श्रेष्ठे निसर्गबलशालिनि ॥४५८१॥
यूथिकाऽम्लानके पुष्पविशेषेऽपि च योषिति।
यूथी स्त्री मागधीवल्ल्यां न स्त्री तिर्यक् [समूहयोः] ॥४५८२॥
यूषोऽस्त्री व्यञ्जनरसे छायायां तु स्त्रियामियम्।
यूषा तु पुंसि च स्त्रीत्वे हिंसायां परिकीर्त्तिता ॥४५८३॥

१. युतो युक्तेऽपृथग्भूते क्लीबं हस्तचतुष्टये।

योक्त्रं स्यादङ्गुलौ तद्वत्करणे च युजेरपि ।
योगः स्यात्सङ्गतौ प्राप्तौ जवे विस्रब्धघातिनि ॥४५८४॥
ध्यानयोजनकार्ये संनहनेऽपि च भेषजे ।
योगी ना यावशूकाख्यलवणे नागरङ्गके ॥४५८५॥
समाहिते तु संयोगशीले योगवति त्रिषु ।
योगिनी तु स्त्रियां शैलराजपुत्र्यां प्रकीर्त्तिता ॥४५८६॥
योग्यं वृद्ध्यौषधेऽपूपे वाहनक्षीरचन्दने ।
योग्यः क्षमे प्रवीणेऽर्हेऽप्युपायिन्यभिधेयवत् ॥४५८७॥
योग्यो ना पुष्यनक्षत्रे योग्या ऋद्ध्यौषधे न ना ।
योग्या पुनर्नवायां स्त्री रक्तायां गुणनेऽपि च ॥४५८८॥
योग्यास्तु भूमनि स्त्रीत्वे भरणीषु प्रकीर्त्तिताः ।
योजनं परमात्मन्यप्यध्वमाने नपुंसकम् ॥४५८९॥
कोसलाद्येष्टयत्क्रोशचत्वारो मगणादिषु ।
तथा युक्तिक्रियायां च लतापूगे तु योजनः ॥४५९०॥
अथ योजनगन्धेति जानक्यां व्यासमातरि ।
तथा कस्तूरिकायाश्च स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥४५९१॥
योनिः स्त्रीणां भगे स्थाने गृहे कारणताम्रयोः ।
आकरे च स्त्रियामेषा पुंसि चापि प्रकीर्त्तिता ॥४५९२॥
यौतुकं कन्यया प्राप्ये पित्रादेः स्यान्नपुंसकम् ।
लेख्येऽपि च त्रिषु त्वेतदात्मीये परिकीर्त्तितम् ॥४५९३॥
यौनं त्रि योनिसम्बद्धे क्ली गर्भाधानसंस्कृतौ ।
यौवनं नपि तारुण्ये युवतीनां कदम्बके ॥४५९४॥
लावण्ये च कुचे चापि प्रोक्तं यौवनलक्षणम् ॥४५९४½॥

र

रंहः क्ली वेग औत्सुक्ये सान्तोऽदन्तस्तु पुंस्ययम् ॥४५९५॥
रंहसं च समासान्ते सान्तो ना स्याच्छिवे हरौ ।
रंहिर्द्वयोर्जविन्यश्वे धारौत्सुक्यजवे स्त्रियाम् ॥४५९६॥

[1]रो रेफे लघुमध्ये रप्रत्याहारे रलात्मके ।
प्रेमेच्छाग्निजवे तीक्ष्णदातृधातृषु तु त्रिषु ॥४५९७॥
रा दाने विभ्रमे स्वर्णे री गतौ रं मतं द्युतौ ।
रक्तं कुङ्कुमताम्रासृक् स्त्रीपुष्पे रागवस्तुनि ॥४५९८॥
पत्राङ्गाख्येऽपि सिन्दूरे हिङ्गुले पद्मकेऽपि च ।
भूधात्र्याश्च फले क्लीबं ना तु रोहीतकद्रुमे ॥४५९९॥
कुसुम्भेऽपि शिवे सूर्यकान्ते स्यान्मङ्गलग्रहे ।
वर्णे च लोहिते त्रिस्तु रक्तं तद्वति रागिणि ॥४६००॥
कृतान्यवर्णे मधुरेऽनुरक्ते चानुनासिके ।
रक्तस्तु रक्तिकालाक्षामञ्जिष्ठाश्रुतिभित्सु च ॥४६०१॥
सप्तानां वह्निजिह्वानामेकस्यां काचसारयोः ।
रक्तकोऽम्लानबन्धूकपत्राङ्गे रक्तशिग्रुके ॥४६०२॥
रक्तवस्त्रे वाच्यवत्तु सानुरागे सविभ्रमे ।
सशोणिते रक्तिका तु श्रुतिभिद्गुञ्जयोर्मता ॥४६०३॥
रक्तकण्ठः कोकिले द्वे त्रिस्तु स्यान्मधुरस्वरे ।
रक्तकन्दो विद्रुमे त्रिस्तथा राजपलाण्डुके ॥४६०४॥
रक्तग्रन्थिर्व्याधिभेदे सल्लकीभेद एव च ।
रक्तग्रीवस्तु रक्षोभित्पारावतभिदोर्द्वयोः ॥४६०५॥
रक्तघ्नो रोहितको दूर्वा रक्तघ्न्युदीरिता ।
पत्राङ्गेऽपि कुसुम्भेऽपि योगार्थे रक्तचन्दनम् ॥४६०६॥
अतिरक्ते रक्ततरस्त्रिः क्लीबं रक्तगैरिके ।
रक्तदन्ती तु पार्वत्यां त्रि तु शोणरदे भवेत् ॥४६०७॥
रक्तदृष्टिर्द्वयोः पारावतयोगे यथायथम् ।
रक्तपा तु जलौकायां डाकिन्यां ना तु राक्षसे ॥४६०८॥
रक्तपुच्छी त्रि योगार्थे ब्राह्मणीकीटके स्त्रियाम् ।
रक्तपुष्पः कोविदारासनयोर्ना त्रियौगिके ॥४६०९॥

---

१. रस्तु रेफेपि रलयोरिच्छाप्रेमाग्निषु स्मृतः ।
दातृधात्रोस्तु राधातोस्तीक्ष्णे चाप्येष वाच्यवत् ॥

स्त्रियां रक्तफला बिम्बीलतायां त्रि तु यौगिके।
रक्तरेणुस्तु सिन्दूरे पलाशस्य च कोरके ॥४६१०॥
रक्तशीर्षो नृनिर्यासे श्रीपिष्टाख्ये त्रियौगिके।
[1]रक्ताक्षः कासरे क्रूरे पारावतचकोरयोः ॥४६११॥
रक्ताङ्गं विद्रुमं क्लीबं रक्ताङ्गो मङ्गलग्रहे।
[2]स्त्री रक्ताङ्गेति काम्पिल्ल्यजीवन्त्योः परिकीर्त्तिता ॥४६१२॥
रक्षणा रक्षणं त्राणे विष्णौ स्यात्पुंसि रक्षणः।
रक्षस्तु रक्षके त्रि स्याद्द्विषद्राक्षसयोस्तु नप् ॥४६१३॥
रक्षा भस्मनि लाक्षायां रक्षणे यन्त्रबन्धने।
स्याद्रक्षापेक्षको द्वारपालेऽन्तःपुररक्षिणि ॥४६१४॥
रक्षोघ्नो गौरसिद्धार्थभल्लातक्योः क्ली काञ्जिके।
हिङ्गुन्यथ स्त्री रक्षोघ्नी रक्षोहन्तरि वाच्यवत् ॥४६१५॥
रक्षिका धार्ययन्त्रादौ स्त्रीत्रातरि तु वाच्ययत्।
रघुर्लघौ वेगवति त्रिर्द्वे तु जविवाजिनि ॥६४१६॥
पुमान्दिलीपपुत्रेऽपि ककुत्स्थस्य सुतेऽपि वा।
रघुवंशाख्यकाव्येऽपि प्रयुक्तो लक्षणाबलात् ॥४६१७॥
रङ्कोऽनुदारे लुब्धे त्रिर्मन्दे दीने बुभुक्षिते।
रङ्कुर्द्वे मृगभेदे स्यान्नीवृद्भेदे तु पुंस्ययम् ॥४६१८॥
रङ्गः स्थाने नृत्तयुद्धस्थाने स्याद्दर्पवर्णयोः।
नासयोच्चारणे हर्षे प्रेम्णि तालान्तरेऽपि च ॥४६१९॥
टङ्के खदिरसारेऽथ रङ्गा नद्यन्तरे स्त्रियाम्।
रङ्गं तु नागे सीसे च वङ्गवत्स्यान्नपुंसकम् ॥४६२०॥
रङ्गजीवक इत्येष वर्णकारे नटेपि ना।
रङ्गदा स्वर्जिका ना तु टङ्कणे खादिरे रसे ॥४६२१॥
रङ्गमाता तु कुट्टिन्यां लाक्षायां च त्रुटावपि।
रङ्गाजीवश्चित्रकरे पुंसि त्रिषु तु यौगिके ॥४३२२॥
रङ्गावतारी तु नटे वाच्यवत्परिकीर्त्तितः।
पुमांस्तु तस्मिन्संप्राप्तो यो नाटचे रुद्रभूमिकाम् ॥४६२३॥

---

१. रक्ताक्षो द्वे कपोते चकोरे मरिपरक्षसोः।
२. रक्तिका कृष्णलायां स्त्री बन्धूकाम्लानयोस्तु ना।

रचनं स्यात्प्रणयने करणे रचना पुनः ।
रीतौ च रचनार्थे च त्वष्टुः पत्न्यामपि स्त्रियाम् ॥४६२४॥
रजस्त्वदन्तः स्त्रीपुष्पे पांसावपि रजोगुणे ।
रजकस्तु शुके चापि पुंसि निर्णेजके द्वयोः ॥४६२५॥
रजकस्त्रिर्मृगाणां स्यादयं रमयितर्यपि ।
रजतोऽस्त्री मतो रूप्ये शोणिते हृदहारयोः ॥४६२६॥
अथ श्वेते त्रिलिङ्गोऽयं रजतः परिकीर्त्तितः ।
रजती स्त्री हरिद्रायां तथा नील्योषधौ निशि ॥४६२७॥
जतुकृत्संज्ञवल्ल्यां च रागद्रव्ये तु नप्स्मृतम् ।
रजःपूता सुरभ्यां स्याद्यौगिके तु यथायथम् ॥४६२८॥
रजोऽह्नि शरदि क्ली स्त्री पुष्पे रेणौ जले स्रजि ।
सत्त्वाद्यन्यतमे रात्रौ लोहे तेजसि रेतसि ॥४६२९॥
रजस्वलो द्वे महिष उदक्यायां रजस्वला ।
रजस्वलस्तु रजसा युक्ते स्यादभिधेयवत् ॥४६३०॥
रजिर्नेन्द्रपराभूते नृपे वा दानवान्तरे ।
कस्यांचिद्वनितायां वा राज्ये वेत्याह सायणः ॥४६३१॥
आयोः पुत्रेऽप्याङ्गिरसे रोदस्योर्वेन्दुसूर्ययोः ।
उभारजी रजिस्स्त्रीत्वे ऋक्षुद्दष्टा दिगर्थिका ॥४६३२॥
रज्जूर्वराटके स्त्र्यष्टहस्तमानेऽपि रज्जुवत् ।
नाडीभेदेऽपि पृष्ठास्थिनिर्गते तारकान्तरे ॥४६३३॥
रञ्जनं नील्योषधौ च क्लीबं स्याद्रक्तचन्दने ।
मनःशिलायां तु स्त्री स्याद्धरिद्रायां च रञ्जनी ॥४६३४॥
अथ रञ्जयतेरर्थे रञ्जना रञ्जनं द्वयम् ।
रञ्जसानः पुमान्मेघे घर्मेऽपि परिकीर्त्तितः ॥४६३५॥
[1]रणोऽस्त्रियां मतो युद्धेऽतिशब्दे शब्द एव च ।
रणकस्तु वियोगे स्यात्पुंस्यप्यौत्सुक्य इष्यते ॥४६३६॥
रण्डा मूषिकपर्ण्यां स्याद्विधवायामपि स्त्रियाम् ।
स्वसम्बन्धार्थशून्येऽन्तःकरणे क्ली नरे तु ना ॥४६३७॥

---

१. रणः कोणे क्वणे पुंसि समरे स्यान्नपुंसकम् ।

रतस्त्रि कृतरामे च तन्निष्ठे सुरते तु नपू ।
सरे तु रतनारी च नारीणां सीत्कृतौ शुनि ॥४६३८॥
रतद्धिकं स्याद्दिवसे सुखस्थानेऽष्टमङ्गले ।
[1]रतिस्तु सुरतोत्कण्ठापरमप्रीतिषु स्मृता ॥४६३९॥
रागे कामस्य भार्यायां गुह्यरत्ननदीसृतौ ।
[2]रतुर्दूते पुमान्स्त्री तु नद्यां पथि च बन्धने ॥४६४०॥
रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि माणिक्यादौ धनेऽम्बुनि ।
रत्नगर्भा भुवि स्त्री ना कुबेरे त्रि तु यौगिके ॥४६४१॥
भवेद्रत्नवरं स्वर्णे रत्नानां प्रवरेऽपि च ।
रत्नाकरस्तु रत्नानामाकरेऽम्भोनिधावपि ॥४६४२॥
रथस्तु स्यन्दने पुंसि वेतसे च प्रकीर्त्तितः ।
द्वयोस्तु चक्रवाके स्याद्रन्त्र्यां तु स्त्री रथी स्मृता ॥४६४३॥
रथकारस्त्रि तक्ष्णि द्वे माहिष्यात्करणीसुते ।
रथाङ्गं रथचक्रे क्ली स्यन्दनावयवेऽपि च ॥४६४४॥
चक्रवाकाह्वये तु स्यात्पक्षिभेदे द्वयोरयम् ।
[3]रथ्या रथसमूहे च प्रतोल्यां पथि च स्त्रियाम् ॥४६४५॥
रथस्य वोढृस्वीयादौ रथ्यः स्यादभिधेयवत् ।
रदो विलेखने पुंसि तथा दन्तेऽपि कीर्त्तितः ॥४६४६॥
रन्तिदेवः पुमान्विष्णौ तथैव स्यान्नृपान्तरे ।
रन्ध्रं स्याद्विवरे क्लीबमपराधे च दूषणे ॥४६४७॥
राशौ लग्नाऽष्टमे द्वे तु विप्रमैत्रीसमुद्भवे ।
रप (पा) ठस्तु द्वयोर्ज्ञेयो मण्डूके विदुषि त्रिषु ॥४६४८॥
रभसो वेजसरम्भहर्षेऽथ महति द्वयोः ।
रमठस्तु द्वयोर्म्लेच्छे त्रिषु क्रीडनशीलके ॥४६४९॥
रमणस्तु धवे [कामे नपि क्रीडानितम्बयोः] ।
[पटोलमूले नार्यां स्त्री रमणी रमणा न ना] ॥४६५०॥

---

१. रतिः परप्रीतिरतोत्कण्ठारागे स्मरस्त्रियाम् ।
२. रतिः स्त्रीं स्मरदारेषु रागे सुरतगुह्ययोः ।
३. रथ्या रथौघविशिखावर्त्तनीषु च योषिति ।

रमतिस्तु सभायां [ना] स्वर्गे कामे [च नायके]।
रमा लक्ष्म्यां रमः कान्ते रक्ताशोकद्रुमे स्मरे ॥४६५१॥
रम्भा गौरकदल्यां च कदल्यामप्सरोऽन्तरे।
सौत्र्यां च मेखलायां स्त्री वेणौ रम्भ [श्च वानरे] ॥४६५२॥
रम्या रात्रौ चम्पके ना मनोज्ञे त्वभिधेयवत्।
नपुंसकं पटोलस्य मूले रम्यं प्रकीर्त्तितम् ॥४६५३॥
रयिर्जले धने चापि नृस्त्रियोः परिकीर्त्तितः।
रल्लकः कम्बले पुंसि मृगभेदे द्वयोर्मतः ॥४६५४॥
रवणो वल्लभे शब्दे शब्दे पटोलाख्यलतान्तरे।
पटोलमूले क्लीबं स्यात् कांस्यलोहे रुतेऽपि च ॥४६५५॥
भृङ्गोष्ट्रगर्दभेषु द्वे त्रिस्तु शब्दनशीलके।
रशना त्वङ्गुलौ स्त्रीत्वे काञ्च्यां चापि प्रकीर्त्तिता ॥४६५६॥
[1]रश्मिः पुमान्दीधितौ स्यात्पक्ष्मप्रग्रहयोरपि।
रसो रागे विषे वीर्ये तिक्तादौ पारदे द्रवे ॥४६५७॥
रेतस्यास्वादने हेम्नि निर्यासेऽमृतशब्दयोः।
देहधातुविशेषे च शृङ्गारादौ फले जले ॥४६५८॥
कषायभोजनान्नेषु लोहे हिङ्गुलबोलयोः।
लशुने च हरिद्वर्णे शाकस्तम्बान्तरे तथा ॥४६५९॥
देवमारिषनाम्नीक्षुमांसशुक्तसुरेषु ना।
शण्डेऽपि वा रसा तु स्त्री दूर्वापातालभूमिषु ॥४६६०॥
[2]द्राक्षायामपि पाठायां तथैव परिकीर्त्तिता।
रसकस्त्वयसःसारे मांसनिष्क्वाथ एव च ॥४६६१॥
अथ धातो रसयतेर्भेद्यलिङ्गः प्रकीर्त्तितः।
वेधके वकुले नागपुष्पेऽपि रसकेसरम् ॥४६६२॥
रसज्ञा रसनायां स्त्री रसवेदिनि तु त्रिषु।
वैक्रान्ताख्ये त्वयोभेदे रसज्ञः पुंसि कीर्त्तितः ॥४६६३॥

१. रश्मिर्द्वयोः स्याज्ज्वालायां प्रग्रहे किरणेऽपि च।
२. शृङ्गारादौ विषे वीर्ये तिक्तादौ द्रवरागयोः।
देहधातुप्रभेदे च पारदस्वादयोः पुमान्।
स्त्रियां रसना पाठा शल्लकीकङ्गुभूमिषु ॥

रसनं तु फले स्नेहे निर्यासे हेमरूप्ययोः ।
स्यात्कषायद्रवेऽन्ने च विषेऽपि च नपुंसकम् ॥४६६४॥
आस्वादने तु जिह्वायां शब्दने रसना न ना ।
रसवत्त्रि रसाख्ये रसवती स्त्री महानसे ॥४६६५॥
रसायनं दीर्घायुष्कभेषजेऽपि रसाश्रये ।
रसायनं विषेऽपि स्याज्जराव्याधिजिदौषधौ ॥४६६६॥
पुँल्लिङ्गः पक्षिराजे च विडङ्गाख्यौषधेऽपि च ।
रसालस्तु पुमानिक्षावाम्रेऽपि वरुणद्रुमे ॥४६६७॥
संमिश्ररसभेदे च कटुतिक्तकषायके ।
त्रि तु स्यात्तद्वति स्त्री तु रसाला पानकान्तरे ॥४६६८॥
अपक्वतक्रं सव्योषचतुर्जातगुडार्द्रकम् ।
सजीरकं यन्निर्दिष्टं पानकन्तत्र सा भवेत् ॥४६६९॥
रसाला रसनादूर्वाविदारीमार्जितासु च ।
रसिको मद्यभेदे स्यादपक्वेक्षुरसैः कृते ॥४६७०॥
रसिकस्तु रसज्ञेऽयमभिधेयवदिष्यते ।
रसिका स्त्री रसालेक्षुरसयोः सरसे त्रिषु ॥४६७१॥
रसितं मेघनिर्घोषे रुते च स्यान्नपुंसकम् ।
त्रिषु त्वास्वादिते चैव स्वर्णादिरचितेऽपि च ॥४६७२॥
रसोनो लशुने पुंसि रसहीने तु स त्रिषु ।
रस्नो दण्डे पुमानश्वे द्वयो रस्नः प्रकीर्त्तितः ॥४६७३॥
रहोऽव्ययं वा विजने [नग्नत्वे रतिगुह्ययोः] ।
रहस्या तु नदीभेदे स्त्रियां त्रिस्तु रहोभवे ॥४६७४॥
राकः स्यादातपे सूर्ये पुमान् राका त्वियं स्त्रियाम् ।
[1]नद्यन्तरे च कच्छ्वां च नवजातरजःस्त्रियाम् ॥४६७५॥
सम्पूर्णेन्दुतिथौ पूर्णिमा चेत् प्रतिपद्युता ।
[2]राक्षसो यातुधाने द्वे राक्षसी गन्धवस्तुनि ॥४६७६॥

---

१. स्याजातार्त्तवकन्यायां तथा पूर्णेन्दुपर्वणि ।

२. राक्षसो यातुधाने द्वे राक्षसी गन्धवस्तुनि ।
विवाहभेदे तु त्रिंशे मुहूर्त्ते योगभिद्यपि ।
वत्सरे चोनपञ्चाशे नन्दाऽमात्यान्तरे पुमान् ।

चण्डासंज्ञे तथा रात्रौ लङ्काद्वीपेऽपि च स्त्रियाम् ।
सायाह्नत्रिमुहूर्ते च दंष्ट्रायां च प्रकीर्त्तिता ॥४६७७॥
नन्दाऽमात्ये विवाहस्य भेदे वर्षमुहूर्त्तयोः ।
योगस्य ना राक्षसस्तु रक्षस्सम्बन्धिनि त्रिषु ॥४६७८॥
[1]रागोऽनुरागे मात्सर्ये रक्तवर्णे रजस्यपि ।
लाक्षादिरञ्जनद्रव्ये दीप्तौ क्लेशादिकेऽपि च ॥४६७९॥
लोहितादिषु वर्णेषु गीतिधर्मान्तरेऽपि च ।
रागचूर्णः पुमान्दन्तधावने मकरध्वजे ॥४६८०॥
रागवान्पूगवृक्षे ना त्रि तु रागवति स्मृतः ।
रागसूत्रं पट्टसूत्रे तुलासूत्रेऽपि कीर्त्तितम् ॥४६८१॥
रागी रक्ते कामुके च वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ।
राघवो द्वे महातिम्यन्तरे वंश्ये रघोरपि ॥४६८२॥
रघुसम्बन्धिमात्रे तु राघवस्त्रिषु कीर्त्तितः ।
राट् तु छन्दोविशेषे स्त्री द्वाविंशत्यक्षरे मता ॥४६८३॥
अथ राट् ऋतुभेदे च पार्थिवेऽपि पुमान्मतः ।
राजकन्या तु राज्ञश्च कन्यायां च नपुंसके ॥४६८४॥
अपि केसरमालाख्यझाटे सा परिकीर्त्तिता ।
राजजम्बूस्तु जम्बूभित्पिण्डखर्जूरयोः स्त्रियाम् ॥४६८५॥
अथ राजतरुः कर्णिकारारग्वधवृक्षयोः ।
राजा ना सोमवल्ल्यां च चन्द्रे शक्रे तु पार्थिवे ॥४६८६॥
क्षत्रिये द्वे प्रभौ तु [यक्षे नाऽथ भवेत्स्त्रियाम्] ।
राज्ञी लोहे ब्रह्मरीतिनाम्नि रूपं स्त्रियामिदम् ॥४६८७॥
राजनं सामभेदे क्ली राज्ञः शूद्रासुते द्वयोः ।
राजन्यः क्षत्रिये राजपुत्रेऽग्नौ क्षीरिकाद्रुमे ॥४६८८॥
राजपुत्रो महाराजाम्रे बुधे राजनन्दने ।
राजपुत्री तु मालत्यां तिक्तालाब्वां च कीर्त्तिता ॥४६८९॥

---

१. चण्डासंज्ञे वाच्यवत्तु रक्षःसम्बन्धिनि त्रिषु ।
मुहूर्त्तवर्षयोगानां भेदे स्याद्राक्षसः पुमान् ।

चुछुन्दर्यामपि स्त्रीत्वे योगार्थे तु यथायथम् ।
स्याद्राजबदरं रक्तामलके लवणेऽपि च ॥४६९०॥
राजराजः कुबेरेऽपि सार्वभौमे सुधाकरे ।
राजवृक्षः समाख्यातः सुवर्णाकपिपालयोः ॥४६९१॥
मन्थानके समाख्यातो राजवृक्षस्तृणाधिपे ।
स्त्रियां राजसभाराष्ट्रे राज्ञश्चास्थान इष्यते ॥४६९२॥
राजसी निशि शैशिर्यां रजोयोगिनि तु त्रिषु ।
राजहंसस्तु कादम्बे कलहंसे नृपोत्तमे ॥४६९३॥
द्वयोः स्त्रियां राजहंसी रसालाभिदि कीर्त्तिता ।
राजादनं प्रियालद्रौ क्ली पलाशद्रुमे तु ना ॥४६९४॥
फलाध्यक्षद्रुमे त्वेष न स्त्री राजादनो मतः ।
राजार्हं राजयोग्ये त्रिः कस्तूर्यण्डे नपुंसकम् ॥४६९५॥
जोङ्गके चाथ राजार्हा स्त्रीत्वे जम्ब्वां प्रकीर्त्तिता ।
राजिस्तु राजसर्पे चाधोभागे रसनस्य च ॥४६९६॥
क्षेत्रे कारादिलेखायां पङ्क्तावपि भवेत्स्त्रियाम् ।
केदारेऽपि च पङ्क्तौ च राजवृन्दे तु राजकम् ॥४६९७॥
राजको राजितर्यैष त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
राजिकाक्षवसंज्ञे स्त्री विज्ञेया सर्षपान्तरे ॥४६९८॥
राजीवं कमले क्लीबं त्रिस्तु तद्वति वस्तुनि ।
राजोपजीविनि द्वे तु मत्स्ये हस्तिनि सारसे ॥४६९९॥
राजीवो हरिणाख्येपि राजीमतिमृगान्तरे ।
राठा नीवृतिसुह्मेषु शोभायामपि च स्त्रियाम् ॥४७००॥
रातोऽभिधेयवद्दत्ते राती त्री रतयोगिनि ।
विहारशीलकन्यायां रातादानं तु नप्स्मृतम् ॥४७०१॥
रात्रकं पञ्चरात्रे ना वेश्यावेश्माब्दवासिनि ।
द्वे राक्षसे रात्रिचरी रात्रिचारिणि तु त्रिषु ॥४७०२॥
रात्रिजं तारके क्लीबं रात्रिजाते त्रिषु स्मृतम् ।
रात्रिजागर उक्तो द्वे शुनके त्रिस्तु यौगिके ॥४७०३॥

राधा विशाखानक्षत्रे तद्युक्ते कालमात्रके ।
कर्णमातरि च स्त्री स्याद्विशाखासम्भवे त्रिषु ॥४७०४॥
राधस्तु मासे वैशाखे राधी तत्पूर्णिमा मता ।
राधो मासान्तरे राधा चित्रभेदे च धन्विनाम् ॥४७०५॥
गोपीविशाखामलकीविष्णुक्रान्तासु विद्युति ।
राधनं साधने प्राप्तौ राधना भाषणे स्त्रियाम् ॥४७०६॥
राधस्तु सान्तं क्लीबं स्यात्प्ररूढे च धनेऽपि च ।
राधेरकः पुमान्सीरे सीरके च घनोपले ॥४७०७॥
रामः परशुरामे ना विष्णौ दाशरथौ रतौ ।
बलभद्रे ध्वजे शब्दे मौलौ लक्ष्मणि कीर्त्तितः ॥४७०८॥
वर्णेषु शुक्लशबलकृष्णेषु त्रि तु तद्वति ।
चारुप्रधानयोश्चापि रामा तु स्त्र्यन्तरे स्त्रियाम्[1] ॥४७०९॥
हिङ्गुनद्योस्तथा क्लीबं कुष्ठवास्तूकयोरथ ।
ना हये पशुभेदे च वरुणे च प्रकीर्त्तितः ॥४७१०॥
रामको रक्तरि त्रि स्यान्मर्त्यजात्यन्तरे द्वयोः ।
रामिलो रमणे कामे पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥४७११॥
राम्भो ना वैणवे दण्डे रम्भासम्बन्धिनि त्रिषु ।
राशिः क्रत्वन्तरे पुञ्जे मेषादावाढकेऽपि ना ॥४७१२॥
साम्नोस्त्वर्ग्नि नरोवर्गगीतयोः स्यान्नपुंसकम् ।
राष्ट्रस्त्वजन्ये विषयेऽप्यस्त्रियां परिकीर्त्तितः ॥४७१३॥
रासः कोलाहले ध्वाने भाषाशृङ्खलकेऽपि च ।
क्रीडाभेदे यादवानां पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥४७१४॥
रासेरसस्तु गोष्ठ्यां स्याद्रासशृङ्गारयोरपि ।
रससिद्धौ रसावासषष्ठीजागरयोपि ॥४७१५॥
रास्ना स्त्रीत्वे मता धेनौ सुवाख्येपि च भेषजे ।
रिक्तं शून्ये त्रिषु क्ली तु रेचने च वनेऽपि च ॥४७१६॥
क्षीयमाणतिथिप्रायपक्षे रिक्तः पुमान्मतः ।
रिक्ता चतुर्थनवमचतुर्दशतिथिष्वियम् ॥४७१७॥

---

१. रामा योषाहिंगुनद्योः क्लीबं वास्तूककुष्ठयोः ।
ना राघवे च वरुणे रैणुकेये हलायुधे ॥

रिङ्खाऽश्वगतिभेदेपि शूकशिम्ब्यां च नर्त्तने ।
रितं गतौ हिंसनेऽपि त्रिर्गर्त्ते हिंसितेऽपि च ॥४७१८॥
रिपुः शत्रौ पुमांश्चौरे तथा षष्ठगृहे रिपुः ।
रिप्रं दुःखे च पापे च क्लीबलिङ्गं प्रकीर्त्तितम् ॥४७१९॥
[1]रिष्टं त्वभावे पापेऽथ त्रिर्याप्येऽप्यशुभे शुभे ।
खड्गे च फेनिले पुंसि रिष्टिरित्यपि रिष्टवत् ॥४७२०॥
रीतिर्दग्धसुवर्णादिमले स्थित्यारकूटयोः ।
प्रचारे स्रवणे पङ्क्तौ स्वभावे पित्तले स्त्रियाम् ॥४७२१॥
वैदर्भी मागधी लाटी गौडी पाञ्चाल्यवन्तिका ।
इत्यादि नामधेयासु काव्यवृत्तिषु चेष्यते ॥४७२२॥
रीतिकं रीतिकुसुमे रीतिधातौ तु रीतिका ।
रीज्याऽवमाननायां च लज्जायां स्त्रीत्व इष्यते ॥४७२३॥
रुस्तु शब्दे भये युद्धे विच्छेदेऽपि पुमान्मतः ।
[2]रुक्मं सुवर्णे तीक्ष्णाख्ये चायोभेदेऽञ्जनान्तरे ॥४७२४॥
रुक्मस्तु निष्कालंकारे धत्तूरे नागकेसरे ।
रुक्मिणी द्वारवत्यां दाक्षायणी कृष्णपत्न्यपि ॥४७२५॥
रुक्मी तु तद्भ्रातरि पुमांस्तथा स्यात्पर्वतान्तरे ।
रुग्णो भग्ने व्याधिते त्रिः क्ली रुग्णं भगरन्ध्रयोः[3] ॥४७२६॥
रुक्प्रभाकान्तिवाञ्छासु चकारान्ता स्त्रियां मता ।
रुचको विपुले चापि वाच्यवद्रुचिकारिणि ॥४७२७॥
अस्त्री दन्तेऽङ्गुलीये च निष्के सौभाग्यभूषणे ।
द्वे मातुलुङ्गजम्बीरकपोतेष्वेरण्ड एव ना ॥४७२८॥
चतुरस्रस्तम्भभेदे पञ्चानां भाग्यशालिनाम् ।
ग्रहयोगविशेषेण चैकस्मिन् पर्वतान्तरे ॥४७२९॥

---

१. रिष्टं क्षेमाशुभाभावे पुंसि खड्गे च फेनिले ।
२. रुक्मस्तु पुंसि निष्काख्ये मतो वक्षोविभूषणे ।
३. रुक्तु व्याधौ जकारान्ता व्यथायां च स्त्रियां मता ।
रुग्व्याधिव्यथयोर्जान्ता स्त्री तथा कुष्ठभेष जे ॥

अश्वभूषान्तरे तु क्ली माल्येऽपि रुचकं मतम् ।
सौवर्चले विडङ्गे च क्षारे च मधुरद्रवे ॥४७३०॥
गोरोचनायां रुचिकृद्द्रव्यभेदेऽपि कीर्त्तितम् ।
उत्तरालिन्दशून्ये च रुचकं मन्दिरान्तरे ॥४७३१॥
रुचिः स्त्री दीप्तिशोभाभिलाषाभिष्वङ्गरश्मिषु ।
रतबन्धान्तरे चैव रोचनायां मता रुचिः ॥४७३२॥
वृक्षाम्लसंज्ञे तिन्तिण्याः फले स्त्री देवतान्तरे ।
आकूतेस्तु पुमान्पत्यौ यज्ञस्य पितरि स्मृतः ॥४७३३॥
क्लीबं रुचिफलं बिम्बीफले पारेवतेऽपि च ।
[1]रुचिभर्त्ता पुमान्सूर्ये पत्यावपि रुचेर्मतः ॥४७३४॥
रुचिराऽतिजगत्यन्तर्वृत्तरोचनयोः स्त्रियाम् ।
वाच्यवत्सुन्दरे चैव दीप्तेऽपि रुचिकारिणि ॥४७३५॥
क्ली कुङ्कुमे रुधिरवल्लवङ्गे सुषिरं यथा ।
कैश्चिदुक्तं मूलकेऽपि रुचिरं स्यान्नपुंसकम् ॥४७३६॥
रुचिष्यः स्वदमाने त्रिः खद्योते तु द्वयोर्मतः ।
रुचिष्यं श्वेतलवणे क्लीबलिङ्गं प्रकीर्त्तितम् ॥४७३७॥
रुच्यः पत्यौ च कतके बिल्वे शालौ पुमानथ ।
रुच्या तु कर्कटीभेदे कृष्णजीरे तथा स्त्रियाम् ॥४७३८॥
रुच्यं सौर्वचले क्लीबं भूषणेऽपि विलेपने ।
रुचिकारिण्ययं रुच्यो वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ॥४७३९॥
रुक् व्याधिव्यधयोर्जान्ता स्त्री तथा कुष्ठभेषजे ।
रुजा भङ्गजरामृत्युरोगेषु स्त्रीत्व इष्यते ॥४७४०॥
मेष्यामपि तथा कुष्ठभेषजे भञ्जके त्रिषु ।
रुजाकरो रोगकरे कर्मरङ्गफलेऽपि च ॥४७४१॥
रुजासहो रोगसहे परुषेऽपि तथा पुमान् ।
रुणिः क्रमुकभेदेऽपि दुष्टदेवश्रुतौ स्त्रियाम् ॥४७४२॥

---

१. रुचिरो वाच्यलिङ्गोऽयं सुन्दरे रुचिकारिणि ।

हिमालयोपत्यकायां प्रयुक्तैषाऽऽमरुत्फले ।
रुण्डो नृजातिभेदे द्वे वरुटीशूद्रसम्भवे ॥४७४३॥
चतुष्पाज्जातिभेदे च स्यादश्वावेसरोद्भवे ।
कबन्धे तु पुमान्रुण्डः खण्डिते त्वेष वाच्यवत् ॥४७४४॥
[1]रुण्डिका युद्धभूद्वारपिण्डीदूतीविभूतिषु ।
रुतं क्लीबं रवे प्रोक्तं विच्छिन्ने वाच्यवन्मतम् ॥४७४५॥
रुद् स्त्रियां रोदनव्याध्योः रोदके त्र्युत्तरस्थितः ।
रुदथस्तु शिशुच्छात्रकुक्कुटेषु शुनिद्वयोः ॥४७४६॥
रुदितं क्ली रोदनेऽथ त्रिः साक्रन्दे च शोचिते ।
रुद्रस्तु ना शिवेऽग्नौ च रुद्राणी पार्वती स्त्रियाम् ॥४७४७॥
देवभेदेषु मन्त्रेषु भीमे स्तोतरि च त्रिषु ।
अजैकपादहिर्बुध्न्यो हरो निर्ऋत ईश्वरः ॥४७४८॥
भुवनोऽङ्गारको मृत्युरर्धकेतुकपालिनौ ।
सर्वश्चेत्येकादशामी रुद्रा वायव्यकीर्त्तिताः ॥४७४९॥
स्यादेकादशसंख्यायां प्रथमे च मुहूर्त्तके ।
एकारवीणान्तरयोः कोशकारान्तरेऽपि च ॥४७५०॥
रुद्रा तु स्याल्लताभेदे स्त्रीभूम्नि त्वर्यमांशुषु ।
शतसंख्येषु ये तापं वितरन्त्यथ च स्त्रियाम् ॥४७५१॥
स्याद्रुद्रतनयो दण्डे तथा खड्गेऽपि पुंस्ययम् ।
रुद्रपत्नी तु दुर्गायामतस्याश्च प्रकीर्त्तिता ॥४७५२॥
रुद्रप्रिया तु पार्वत्यां हरीतक्यामपि स्मृता ।
रुधिरोऽङ्गारके चाथ शोणिते कुङ्कुमेऽपि नप् ॥४७५३॥
रुमा सुग्रीवदारेषु विशिष्टलवणाकरे ।
रुम्रस्सूर्यसूते चैव विनाशेऽपि पुमान्मतः ॥४७५४॥
ब्राह्मणे तु द्वयोरुम्रो दर्शनीये तु स त्रिषु ।
रुरुः प्रमद्वारायाश्च पत्यौ ना मृगदैत्ययोः ॥४७५५॥

---

१. रुण्डिका द्वारपिण्ड्यां च पूतिकायां रणक्षितौ ।

रुवथो ना ध्वनौ द्वे तु कुक्कुटे शकुनावपि
रुशद्वर्णविशेषेण युक्ते वाक्येऽप्यमङ्गले ॥४७५६॥
हिंसितर्यपि पूर्वत्र स्त्र्यर्थे स्याद्रुशतीति हि।
'रुह्वा पुमान्प्रावृषि च तथा प्रावृड्वनस्पतौ ॥४७५७॥
रुह्वरीति स्त्रियामेषा वसुधायां प्रकीर्त्तिता।
रूक्षं क्ली निःशरे दध्नि त्रिष्वप्रेम्ण्यपि चिक्कणे ॥४७५८॥
पादपे तु पुमानेष रूक्षः सम्परिकीर्त्तितः।
रूक्षणी यागवीथौ स्यात्स तु शीथुनि नामतः ॥४७५९॥
अथ रूक्षयितव्ये च सरूक्षणहिते त्रिषु।
रूक्षस्वरो गर्दभे स्याद्योगार्थे तु यथायथम् ॥४७६०॥
रूढो यवे ना क्ली जाते प्रसिद्धे वाच्यवच्च सः।
कृतप्ररोहणे शब्देऽवयवार्थबहिष्कृते ॥४७६१॥
रूपं स्वभावसौन्दर्यश्लोकाकृतिवपुःषु च।
शब्दे च नाटके नाटकादौ शुक्लादिकेष्वपि ॥४७६२॥
ग्रन्थावृत्तौ च मृगजात्यन्तरे तु द्वयोरयम्।
रूपणे तु पुमानेव रूप एष प्रयुज्यते ॥४७६३॥
रूपकं नाटके मूर्त्ते काव्यालङ्करणेऽपि च।
रूप्यं विभूषणे हेम्नि रजते चाहते मतम् ॥४७६४॥
अथ प्रशस्तरूपेऽपि रूपणीये च वाच्यवत्।
रेको विरेके शङ्कायां रेकः स्यादवमेऽपि च ॥४७६५॥
रेखा तु कृत्रिमे मार्गे हस्तपादतलादिषु।
निरन्तरालपङ्क्तौ च [चिह्ने रेखा प्रकीर्त्तिता] ॥४७६६॥
रेचना रेचयत्यर्थे न ना रिक्तौ तु रेचनम्।
रेचनी दन्तिकागुल्मे कम्पिल्ले त्रिवृदोषधौ ॥४७६७॥
क्लीबं रेचितमावक्रद्रुतात्माश्वगतौ मतम्।
वियोजने च भ्रुकुटौ कृतायामेकया भ्रुवा ॥४७६८॥

१. हिंसितुः स्त्र्यर्थविषये रुशन्ती रुशतीति च।

मतं रेचयतेरर्थे तथा सम्पर्चनेऽपि च ।
रेचितं वाच्यवत्प्रोक्तं सम्पृक्ते च वियोजिते ॥४७६९॥
कर्मभूते रेचयतेस्तथोक्तगतिमत्यपि ।
रेटिः स्त्री वह्निरटिते संयतोत्कटवाचि च ॥४७७०॥
तिन्त्रिटीके स्पृहायां च तथा कान्त्यर्चिषोरपि ।
रेणुः स्त्रियां हरेण्वाख्यभेषजे परिकीर्त्तिता ॥४७७१॥
स्त्रीपुंसयोस्तु पांसौ स्यात्त्रसरेण्वष्टकेपि च ।
रेणुका तु हरेणौ स्त्री जमदग्नेश्च योषिति ॥४७७२॥
रेतो जले च शुक्रे च सान्तं क्लीं पारदेऽपि च ।
रेत्रं रेतसि पीयूषे पटवासे च सूतके ॥४७७३॥
रेपाः स्यादधमे क्रूरे कृपणेऽप्यभिधेयवत् ।
रेफस्तु पुंसि मूर्धन्योन्तस्स्थावर्णे प्रकीर्त्तितः ॥४७७४॥
वाच्यवत्तु मतो रेफः स्तोतर्यपि च कुत्सिते ।
रेरिहाणस्तु पुंसि स्यान्महादेवेऽम्बरेऽपि च ॥४७७५॥
रेवटं दक्षिणावर्त्तशङ्खे क्लीबं प्रकीर्त्तितम् ।
रेणुवातूलयोः पुंसि विषवैद्ये पुनर्द्वयोः ॥४७७६॥
रेवती बलभद्रस्य पत्न्यां गवि च पौष्णभे ।
तद्युक्ते कालमात्रे च तत्र जातस्त्रियां तथा ॥४७७७॥
मालत्यां नागदन्ताख्यस्तम्बे मातृषु च स्त्रियाम् ।
केषुचित्सामभेदेषु रेवत्य इति भूम्नि च ॥४७७८॥
प्रत्येकं स्युस्तृचे चापि रेवतीर्न उपक्रमे ।
[रेवा नील्योषधौ रत्यां नर्मदाख्यनदीभिदि] ॥४७७९॥
रैशब्दो द्वे धने स्वर्णे मेघे त्वेष पुमान्मतः ।
रैवतोऽद्रौ शिवे मेघारग्वधाऽद्र्यन्तरेषु च ॥४७८०॥
सम्बन्धिनि तु रेवत्या रैवतं भेद्यवन्मतम् ।
रोको दीप्तौ विले रोकं नौकाक्रयणभेदयोः ॥४७८१॥
रोगः कुष्ठौषधे व्याधौ [तथाऽऽधौ परिकीर्त्तितः] ।
रोचकस्तु पुमान्हस्तिकर्ण इत्यतिविश्रुते ॥४७८२॥

कम्बलस्य प्रभेदे स्यात्त्रितु रोचितरि स्मृतः ॥४७८३॥
रोचना रक्तकल्हारे कर्कशावारयोषितोः ।
रोचनी तु त्रिवृद्वल्यां गोपित्ते रोचना मता ॥४७८४॥
मनःशिलायां काम्बिल्यसंज्ञवृक्षेपि च स्त्रियाम् ।
रोचनः कूटशाल्मल्यां रोचत्यर्थे तु रोचनम् ॥४७८५॥
रोचना रोचयत्यर्थे न ना त्रिषु तु रोचके ।
रोडः क्षोदे भवेत्पुंसि तृप्ते स्याद्वाच्यलिङ्गकः ॥४७८६॥
रोडा तु पांसुलायां स्त्री त्रिषु हस्तादिवर्जिते ।
रोदनी तु यवासेऽथ रोदनं रुदिताश्रुणोः ॥४७८७॥
रोदः क्ली रोदसी च स्त्री द्वयं व्योम्नि तथा भुवि ।
सहोक्तौ तु भवेद्द्यावा पृथिव्यो रोदसी इति ॥४७८८॥
रोधस्तीरेऽन्तरिक्षे च वृत्तौ कुड्ये च बन्धने ।
रोधसी इति तु द्वित्वे रोदसोरिदमुच्यते ॥४७८९॥
रोध्रो ना सावरे क्लीबमपराधे च किल्बिषे ।
रोपस्तु रोपणेऽपि स्यात्तथा बाणे पुमान्मतः ॥४७९०॥
रोपणस्तु शरे पुंसि त्रि तु रोहणसाधने ।
रोपणा रोहणायां च मता क्लीबे स्त्रियामपि ॥४७९१॥
रोमशस्तु द्वयोर्मेषे ना निम्बे ऋषिभिद्यपि ।
रोमशा तु स्त्रियां शूकशिम्ब्यां कासीस इष्यते ॥४७९२॥
काकजङ्घासहामांसीमेदासु त्रिस्तु लोमशे ।
रोमहर्षणः [सूतमुनौ रोमाञ्चजनके त्रिषु] ॥४७९३॥
रोषणस्तु पुमान्स्वर्णकषणग्राण्णि पारदे ।
क्रोधने रोषशीलार्थे त्रिषु स्यादूषरेऽपि च ॥४७९४॥
रोहकः प्रेतभेदे ना रोढरि त्रिषु विश्रुतः ।
रोहन्ती स्त्री लतायां स्याद्रोहन्तस्तु पुमान्द्रुमे ॥४७९५॥
रोहन्तो भेद्यवच्चैष रोहतादिति कर्त्तरि ।
रोहिणी लोहिनीपथ्याऽतसीकन्यासु गव्यपि ॥४७९६॥

कण्ठरोगप्रभेदे च नक्षत्रे च प्रजापतेः ।
तद्युक्ते कालमात्रे च तत्रजातस्त्रियामपि ॥४७९७॥
[एकत्र कृष्णपत्नीषु मूलभे च तदित्यपि] ।
रोहिदग्निहये पुंसि वर्णभेदेऽर्क एव च ॥४७९८॥
त्रि तु तद्वर्णवत्येष वाच्यवत्तु द्वयोर्मतः ।
स्त्रियां त्वृश्यस्य भार्यायां नद्यङ्गुलिलतासु च ॥४७९९॥
रोहितः पुंसि वृषभे रक्तवर्णे प्रकीर्त्तितः ।
रक्ते वर्णेऽथ तद्युक्ते रोहिता रोहिणी त्रिषु ॥४८००॥
द्वे श्वेतराजिमृगभिद्यृश्यमत्स्यान्तरेष्वपि ।
रोहिणी तु स्त्रियां रक्तवर्णायां गवि कीर्त्तिता ॥४८०१॥
[1]रोहितं कुङ्कुमे घासे ऋजौ शक्रशरासने ।
रोहिताश्वश्चित्रभानौ हरिश्चन्द्रनृपात्मजे ॥४८०२॥
रोही रोहितकद्रौ ना रोहवत्येष वाच्यवत् ।
रोहिषो गर्दभाभासमृगभिन्मत्स्यभेदयोः ॥४८०३॥
कत्तृणाकाशयोः स्त्री तु वात्यायां रोहिषी स्मृता ।
रौद्रो न स्त्री भवेद् घर्मे काव्यस्य च रसान्तरे ॥४८०४॥
शिवशक्त्यन्तरे चैवोग्रताचण्डिकयोः स्त्रियाम् ।
एकस्यां सप्तमातॄणां त्रि तूग्रे रुद्रयोगिनि ॥४८०५॥
रौरवः सामभेदेऽपि पुमांश्च नरकान्तरे ।
रुरुसम्बन्धिनि त्वेष वाच्यवच्च भयङ्करे ॥४८०६॥
रौहिणेयो बुधेऽपि स्याद्बलभद्रे तथा पुमान् ।
स्यादपत्ये तु रोहिण्या रौहिणेयो द्वयोरयम् ॥४८०७॥
रौहिषं कत्तृणे क्लीबं पुंसि स्याद्धरिणान्तरे ॥४८०७$\frac{1}{2}$॥

ल

लक्तिका गवि गोधायां वाद्यभेदेऽपि च स्त्रियाम् ॥४८०८॥

---

१. रोहितं ऋत्विजौ शक्रचापे चापि तृणेऽपि च ।
पुंसि स्यान्मीनमृगयोर्भेदे रोहितकद्रुमे ।

लक्षं शरव्ये क्लीबं स्याल्लक्षोऽस्त्री व्याज इष्यते ।
लक्षः करुणवृक्षे ना दर्शनाङ्कनयोरपि ॥४८०९॥
अयुते तु दशाभ्यस्ते लक्षं लक्षा च नप्स्त्रियोः ।
लक्षणं कार्षिके चिह्ने नाम्नि मुद्राङ्कसम्पदोः ॥४८१०॥
भक्त्यां स्त्री लक्षणा स्यात्तु सारस्यान्दर्शनाङ्कयोः ।
लक्ष्मणः सारसे द्वे स्यात्पुमान्रामानुजे मतः ॥४८११॥
प्रियायां सारसस्य स्याल्लक्ष्मणा लक्ष्मणीति च ।
स्त्रियां लतान्तरे पुत्रजननीनाम्नि लक्ष्मणा ॥४८१२॥
ज्योतिष्मत्योषधौ चापि स्यात्तु लक्ष्मवति त्रिषु ।
लक्ष्मचिह्ने प्रधाने च प्रोक्तं नान्तं नपुंसकम् ॥४८१३॥
लक्ष्मीः श्रीभूतिशोभासु ऋद्धिवृद्ध्यौषधद्वये ।
लवङ्गे नवशक्तीनां विष्णोरेकत्र च स्त्रियाम् ॥४८१४॥
लक्ष्मीपतिर्नृपे चापि विष्णावपि पुमान्मतः ।
लक्ष्मीपुत्रो द्वयोरश्वे श्रीसुतेऽथाढ्यके त्रिषु ॥४८१५॥
लक्ष्मीवाञ्श्रीमति त्रि स्यात्कतकाख्यद्रुमे तु ना ।
लक्ष्यं शरव्ये क्ली शब्दे सिद्धे लक्षणतस्तथा ॥४८१६॥
द्रष्टव्ये त्वङ्कनीये च लक्ष्यः स्यादभिधेयवत् ।
लग्नं राश्युदये क्लीबं सक्तलज्जितयोस्त्रिषु ॥४८१७॥
लघण्मेघे टकारान्तो वायावपि पुमान्मतः ।
हिरण्यमाषकस्यापि भेदे स्त्री त्वप्सरस्यसौ ॥४८१८॥
लघ्वसारेष्टरम्याल्पशीघ्रे प्रतिभटे गुरोः ।
एकमात्रस्वरे चैषु स्त्र्यर्थे लघ्वी लघुस्तथा ॥४८१९॥
अथ क्लीबं लघूशीरेऽप्यगुरावपि कीर्त्तितम् ।
गुग्गुलौ तु पुमान्स्त्री तु स्पृक्कायां स्यन्दनान्तरे ॥४८२०॥
लङ्का रक्षःपुरीशाखाशाकिनीकुलटासु च ।
लङ्गः सङ्गे च षिङ्गे च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥४८२१॥
लङ्घनं तु गतौ क्लीबं लङ्घनी तु स्त्रियामियम् ।
वस्त्रलम्बनदण्डे स्यात्तिरश्चीने गृहादिषु ॥४८२२॥

लङ्कस्त्रिर्लङ्घितरि द्वे तु रङ्गोपजीविनि ।
लङ्घनन्तूपवासे स्यात्क्रमणे प्लवनेऽपि च ॥४८२३॥
लज्जालुः स्त्री नमस्कार्याख्येऽनूपलतान्तरे ।
शमीफलाख्ये सलिलोद्भूतवल्ल्यन्तरेऽपि च ॥४८२४॥
लज्जालुर्वाच्यवच्चैष लज्जाशीले प्रकीर्त्तितः ।
लट्वः कटाहे लट्वा तु कुसुम्भे पक्षिभिद्यपि ॥४८२५॥
लट्वा करञ्जभेदे स्यात्फले वाद्ये स्त्रियामियम् ।
लडहो ना विलासे त्रिर्विलासवति सुन्दरे ॥४८२६॥
लता तु वल्ल्यां शाखायां प्रियङ्गुस्पृक्कयोरपि ।
लता बृहत्यामपि च ज्योतिष्मत्यतिमुक्तयोः ॥४८२७॥
तथैव शारिवायां च माधवीदूर्वयोस्स्त्रियाम् ।
लब्धवर्णः पण्डिते त्रिर्योगार्थे तु यथायथम् ॥४८२८॥
लभ्यं न्याय्ये च लब्धव्ये वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ।
लम्पाको लम्पटे देशे पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥४८२९॥
लम्बस्तु लम्बने पुंसि स्त्रियां चैव प्रकीर्त्तितः ।
लम्बकर्णः स्मृतः कोहपादपे छगलेऽपि च ॥४८३०॥
लम्बनः शङ्कुने द्वे स्याल्लम्बनम्भूषणे मतम् ।
ललन्तिकासमाख्येपि तथा लम्बनकर्मणि ॥४८३१॥
लम्बा पद्मालयागौर्योस्तिक्ततुम्ब्यामपि स्त्रियाम् ।
लम्बा स्त्रीभूमिभेदेऽपि तथोत्कोचे प्रकीर्त्तिता ॥४८३२॥
लम्बोदरो विघ्नराजे विशेषे नृपतौ तथा ।
लयो विनाशे संश्लेषे साम्ये तौर्यत्रिके मतम् ॥४८३३॥
लर्जुशब्दो मतः स्त्रीत्वे वणिज्यपि च विद्युति ।
ललं तु पल्लवेऽपि स्यादुद्यानेऽपि नपुंसकम् ॥४८३४॥
ललजिह्वोऽन्यवत् हिंस्रे क्रमेलकशुनोः पुमान् ।
ललत् त्रिषु विलासस्य कर्त्तर्येतत्प्रकीर्त्तितम् ॥४८३५॥
लम्बनाख्ये त्वलङ्कारे ललन्ती स्त्रीत्व इष्यते ।
ललना कामिनीजिह्वानाडी [ष्वाचारसर्जयोः] ॥४८३६॥

नपुंसकं तु ललनं विलासे परिकीर्त्तितम् ।
ललाटिका ललाटस्थपत्राङ्गुल्यां प्रकीर्त्तिता ॥४८३७॥
तथैव पत्रपाश्यायामपि स्त्रीलिङ्ग इष्यते ।
ललामोऽस्त्री ध्वजे चिह्ने प्रभावे पुरुषे नृपे ॥४८३८॥
छत्रे धाम्नि पशोः शृङ्गे पुण्ड्रे पुच्छे च भूषणे ।
वाच्यवल्लिङ्गिनि श्रेष्ठेऽथ ललामो द्वयोर्हये ॥४८३९॥
ललितं हारभेदे क्ली लसितेऽथ त्रिरीप्सिते ।
लवश्छेदे च लेशे च काले नाशे च राघवे ॥४८४०॥
लवणो दैत्यभेदे च पुमान्पटुरसेऽप्यथ ।
लवणद्रव्यसंसृष्टे त्रि स्यात्पटुरसान्विते ॥४८४१॥
लताभेदे तु लवणी क्ली तु स्यात्सैन्धवादिषु ।
[ना तु सिन्धौ च लवणी नदीभेदद्विषोः स्त्रियाम्] ॥४८४२॥
लवाणकस्तु कालेऽपि दात्रेऽपि तृणभिद्यपि ।
लष्वो (ष्यो) द्वयोरपत्ये स्यादृषिस्थाने तु पुंस्ययम् ॥४८४३॥
ला स्त्रीलिङ्गं हि दाने स्याद्ग्रहणेपि निगद्यते ।
लाक्षा त्वलक्तकेप्याथर्वणोक्तेऽपि लतान्तरे ॥४८४४॥
लाक्षावृक्षः पलाशे पुम् कोशाम्रेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
लाक्षिको लाक्षयारक्ते लक्षमूल्ये च भेद्यवत् ॥४८४५॥
लाङ्गलं तु हले गेहदारुपुष्पविशेषयोः ।
ताले मेढ्रे [च पुच्छे च लाङ्गलं] कस्यचिन्मतम् ॥४८४६॥
लाङ्गल्यग्निशिखातोयपिप्पलीशालिभित्स्वपि ।
मञ्जिष्ठानारिकेल्योश्च रास्नायामपि कीर्त्तिता ॥४८४७॥
नदीभेदेऽथ चरकः शालिभेदेऽवदन्नरम् ।
नृभूम्नि लाङ्गलाः शाखाभिन्नृजातिभिदोरपि ॥४८४८॥
स्याल्लाङ्गले लाङ्गलकमथ लाङ्गलिका स्त्रियाम् ।
भवेदग्निशिखायामप्यथ लाङ्गलकी मता ॥४८४९॥
विषभेदे लाङ्गलिको नृभू सामगशाखिषु ।
लाङ्गली बलदेवे नालिकेरे ना त्रियौगिके ॥४८५०॥

अथ लाङ्गलिनी लाङ्गलिक्यां स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता[1] ।
लाङ्गूलवल्लाङ्गुलं क्ली कीर्त्तितं मेढ्रपुच्छयोः ॥४८५१॥
लाङ्गूली पृश्निपर्ण्यां स्याल्लाङ्गूलं मेढ्रपुच्छयोः ।
लाङ्गूली वानरे कन्दभेदे हैमवतेऽपि ना ॥४८५२॥
लाङ्गूलिनी नदीभेदे लाङ्गुन्यपि च सा मता ।
लाजं क्लीबमुशीरेऽथ स्त्रियां पुंभूम्नि चाक्षते ॥४८५३॥
भृष्टधान्येऽपि च स्त्रीत्वे किंवा पुंभूम्नि कस्यचित् ।
लाञ्छनी स्त्री च मुद्रायां क्लीचिह्नाङ्कननामसु ॥४८५४॥
लाटो देशान्तरे वस्त्रे लाटदेश्येषु भूम्न्ययम् ।
लातशब्दस्तु पुँल्लिङ्गो वृत्तिकादानभाजने ॥४८५५॥
आत्ते तु भेद्यलिङ्गः स आदाने तु नपुंसकम् ।
लावः पक्षिविशेषे द्वे [लावा रूपं स्त्रियाम्भवेत्] ॥४८५६॥
लालिकाऽश्वनसो रज्जौ त्रिस्तु स्याल्ललितर्यपि ।
बालानुकृतिशब्दे तु लालकः परिकीर्त्तितः ॥४८५७॥
लालना लालयत्यर्थे न ना सर्जरसे तु ना ।
द्वयोस्तु मूषिकाकारसविषप्राणिभिद्यपि ॥४८५८॥
लालसा तु न नौत्सुक्ये प्रार्थनायां च दोहदे ।
अतिमात्राभिलाषेऽथ स्त्री छन्दोयोगिनीभिदोः ॥४८५९॥
लाला मुखजले काञ्च्यां कान्त्याञ्च लवलीद्रुमे ।
द्वयोस्तु लालो मैत्रेय ब्राह्मणीसम्भवे मतः ॥४८६०॥
विलासे तु पुमांल्लालः स्यादुपक्रन्दने तु नप् ।
स्यादुपच्छन्दने लालं गुह्यार्थपरभार्ययोः ॥४८६१॥
लालाटी तु ललाटे स्त्री ललाटयुजि वाच्यवत् ।
लालाटिकः प्रभोर्भावदर्शिन्याश्लेषणान्तरे ॥४८६२॥
कार्याक्षमे [चैव पुमान्मतोऽयं शब्दवेदिभिः] ।
लालास्रावस्तु लूतायां द्वे लालास्रवणे पुमान् ॥४८६३॥

---

१. लाङ्गली हलिनि त्रिर्ना नारिकेलेऽच्युताग्रजे ।

लावश्छेत्तर्युत्तरत्र त्रिर्द्वे लाबाख्यपक्षिणि ।
लावणी स्त्री नृत्यगीतभिदोर्लवणयोगिनि ॥४८६४॥
लवणं यस्य पण्यं त्रिस्तत्र लावणिको मतः ।
[क्लीबे लावणिकं प्रोक्तम्पात्रे च लवणस्य तु ॥४८६५॥
लासः स्यान्नर्त्तने पुंसि मांसरूपे तथा मतः ।
स्त्री लासिका स्यान्नर्त्तक्यां त्रिषु स्याल्लसितर्यपि ॥४८६६॥
लासको ना शिवे वेष्टे न स्त्री स्यादायुधान्तरे ।
द्वे मयूरे दृश्यकाव्यविशेषे लासिका स्त्रियाम् ॥४८६७॥
लासिका लासकी नर्त्तक्यामङ्गे लासकं नपि ।
लास्यं तौर्यत्रिके नृत्ये लास्या द्वे नृत्यकारिणि ॥४८६८॥
लिः कल्पेऽन्ते क्षये साम्ये कङ्कणेऽपि पुमान्मतः ।
लिकुचो लकुचे पुंसि लिकुचं फलभक्षणे ॥४८६९॥
लिक्षं लिक्षोऽपि लिक्षा च यूकाण्डे मानभिद्यपि ।
लिखिर्ना लिखनौ द्वे तु शिल्पिनि त्रिस्तु पण्डिते ॥४८७०॥
लिखितं कृतलेखादौ लिखितः स्मृतिकृद्भिदि ।
लिगुर्गोत्रान्तरे मन्त्रे द्वारभूमिप्रदेशयोः ॥४८७१॥
[1]ना द्वयोस्तु मृगे क्ली तु हृदये लिगु कीर्त्तितम् ।
लिङ्गं बुद्ध्यादिसंहत्यां सांख्यानां प्रकृतावपि ॥४८७२॥
स्त्रीपुंसादेश्च संस्थाने शरीरे चिह्नशेफसोः ।
प्रव्रज्यायामवयवे वेषे बुद्ध्यनुमानयोः ॥४८७३॥
शिवमूर्त्तिविशेषेपि पुराणे लिङ्गनामके ।
लिङ्गकस्तु कपित्थे स्याल्लिङ्गिकाभेषजान्तरे ॥४८७४॥
लिङ्गजः स्याच्छिश्नमले लिङ्गजा भेषजान्तरे ।
लिङ्गी परशुरामे ना लिङ्गयव्यक्ते नपुंसकम् ॥४८७५॥
लिङ्गिनः केपि शैवाः स्युर्लिङ्गिनी भेषजान्तरे ।
लिङ्गुर्गोत्रान्तरे मस्तौ चित्तेऽपि च पुमान्मतः ॥४८७६॥

---

१. मृगे त्वयं लिगुः पुंसि स्त्रियां च परिकीर्त्तितः ।

चित्रकारे लिपिकरो लेखकेऽपि च वाच्यवत् ।
लिप्तं क्ली भोजने लेपे त्रिस्तु दिग्धे विषादिना ॥४८७७॥
भुक्तेऽपि लिप्ता तु स्त्रीत्वे मता षष्टितमांशके ।
लिम्पाको गर्दभे द्वे स्याज्जम्बीरे तु मतः पुमान् ॥४८७८॥
ली श्लेषणे च चपले स्त्रीत्व एव प्रकीर्त्तिता ।
लीलाविलासे क्रीडायां छन्दोभिद्योगिनीभिदोः ॥४८७९॥
शृङ्गारभावचेष्टायाम् (अपि स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता) ।
लीलाखेलस्त्रिः सलीले क्ली तु छन्दोभिदि स्मृतम् ॥४८८०॥
लीलावान्सविलासे त्रि स्त्रियां लीलावती मता ।
दुर्गायाम्भास्कराचार्यपाटीगणितपुस्तके ॥४८८१॥
लुञ्चको लुञ्चनकृति त्रिर्ना धान्यान्तरे मतः ।
लुण्टाकस्त्रिषु चोरे स्याद्द्वयोः काके प्रकीर्त्तितः ॥४८८२॥
लुण्ठनं दस्युकार्ये क्ली लुञ्चने लुठनेऽपि च ।
लुण्ठाकस्त्रिषु चोरेऽथ काके स्त्रीपुंसयोर्मतः ॥४८८३॥
लुण्डी तु लुण्डिकायां च निगमेऽपि स्त्रियाम्मता ।
लुप्तु लोपेऽपि लुप्ते तु लुप्स्यादेषोऽभिधेयवत् ॥४८८४॥
लुब्धो व्याधे पुमांस्त्रिस्तु कदर्येच्छावतोरयम् ।
लुब्धकस्तु मतो व्याधे तथार्द्रायामपीष्यते ॥४८८५॥
लुम्बिका भक्ष्यभेदेप्युलुम्बाख्ये वाद्यभिद्यपि ।
स्यास्त्रिषु त्वर्दनाख्यस्य लुब्धनस्य च कर्त्तरि ॥४८८६॥
लुशभो मत्तकरिणि लुशभं तु वने स्मृतम् ।
अथ लूतश्च विच्छिन्ने वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ॥४८८७॥
लूता चर्मगदेऽप्यूर्णनाभे चापि पिपीलके ।
लूतो मर्कटके पुत्रीनवमालिकयोः स्त्रियाम् ॥४८८८॥
लूनश्छिन्ने त्रिषु प्रोक्तो लूनं पुच्छे नपुंसकम् ।
लूनको द्वे पशौ प्रोक्तो भेदिते वाच्यवन्मतः ॥४८८९॥
लूनिश्छेदे स्त्रियामुक्ता तथा शालौ प्रकीर्त्तिता ।
लेखो देवे द्वयोर्ना तु लेख्ये चैव विलेखने ॥४८९०॥

लेखा लिपौ कृत्रिमायां संख्याने राजिसीमयोः।
आभोगचूडाग्रशिखाकलास्वपि तथा स्त्रियाम् ॥४८९१॥
लेखनं लिखतेरर्थे साधने लेखकर्मणः।
लिपिन्यासे छर्दने च भूर्जे चापि नपुंसकम् ॥४८९२॥
लेखनिकः कथितो लेखहारके पुंस्त्रियोरयम्।
लेखेषु परहस्तेन स्वहस्तस्य च लेखके ॥४८९३॥
लेखनी तूलिकायां स्त्री त्रिस्तु लेखनसाधने।
लेख्यं नपुंसकं पत्रे संख्यायां लिखिताक्षरे ॥४८९४॥
लेख्यो लेखयितव्ये च लेखितव्येऽपि च त्रिषु।
लेख्यपत्रो मतस्ताले लेखपत्रे पुनर्नपि ॥४८९५॥
लेढा तु मृदुवाते ना लेहके तु त्रिषु स्मृतः।
लेपस्तु भोजने लिप्तिक्रियायां रोगभिद्यपि ॥४८९६॥
लेपनं चन्दनादौ च मांसेऽपि रुधिरे नपि।
ना तु लिप्तिक्रियायां स्यात् त्रि तु तत्साधने मतम् ॥४८९७॥
लेप्यं तु लेपनीये त्रिः क्लीबं स्यात्पुस्तकर्मणि।
लेयस्तु सिंहराशौ ना स्यादादेये तु भेद्यवत् ॥४८९८॥
लेलिहः कृमिभेदेऽपि सर्पे चापि द्वयोर्मतः।
लेलिहा तु स्त्रियामेषाऽङ्गुलिमुद्रान्तरे मता ॥४८९९॥
लेलिहानस्तु सर्पे द्वे शिवे ना रेरिहाणवत्।
लेलिहाना स्त्रियामेषाऽङ्गुलिमुद्रान्तरे मता ॥४९००॥
मुहुर्लेढरि तु त्रित्वे लेलिहानः प्रकीर्त्तितः।
लेशः कलाद्वयमिते काले सूक्ष्मांश एव च ॥४९०१॥
गीतभेदे कणायाश्च नाट्यालङ्करणान्तरे।
लेहस्तु लेहने [पुंसि तथा लेहनकर्मणि] ॥४९०२॥
लेहनस्तु शुनि द्वे स्याच्चौर्यग्रासिनि तु त्रिषु।
सौवर्चलद्रवे त्वस्त्री लोहिते जारणाह्वये ॥४९०३॥
तथा लेहयतेः कर्मभूते स्याल्लेढिकर्त्तरि।
लेही त्वेषा स्त्रियां कर्णशष्कुलीरोगभिद्यपि ॥४९०४॥

लेह्यं त्रिर्लेहनीये स्यादमृते तु नपुंसकम् ।
लैङ्गं पुराणभेदे क्ली लैङ्गी स्याद्भेषजान्तरे ॥४९०५॥
लैलिहानो द्वयोः सर्पे मुहुर्लेढरि तु त्रिषु ।
लोको जने च स्थाने च विष्टपे सामभिद्यपि ॥४९०६॥
लोककर्त्ता पुमान्विष्णौ शिवे ब्रह्मणि चेष्यते ।
लोककान्तौषधभिदि लोककान्तो जनप्रिये ॥४९०७॥
लोककृत् स्थानकृल्लोकस्त्वष्टा वा परिकीर्त्तितः ।
लोकनाथो ब्रह्मविष्णुशिवबुद्धनृपेष्वपि ॥४९०८॥
रसान्तरे तथैवावलोकितेश्वर उच्यते ।
लोकपालस्तु शुक्रादौ राजन्यपि पुमान्मतः ॥४९०९॥
लोकबन्धुः शिवे चैव सूर्ये चापि पुमान्मतः ।
लोकमाता तु दुर्गायां लक्ष्म्यां चैव प्रकीर्त्तिता ॥४९१०॥
लोकम्पृणो लोकसुखे त्रि स्त्री स्यादिष्टकान्तरे ।
अथ लोकविसर्गः स्यात्प्रलये [वाच्यवत्यपि] ॥४९११॥
लोकेशो ब्रह्मणि तथा पारदेऽपि पुमान्मतः ।
लोचको मांसपिण्डेऽक्षितारकायां च कज्जले ॥४९१२॥
ललाटाभरणे स्त्रीणां कदली नीलवस्त्रयोः ।
नीलिन्यां कर्णपूरे च मौर्व्यां भ्रूश्लथचर्मणि ॥४९१३॥
रक्तांशुके चर्मणि च स्त्रुचि स्यात्सर्पकञ्चुके ।
अथ निर्बुद्धिदुर्बुद्ध्योर्लोचितर्यपि वाच्यवत् ॥४९१४॥
लोचिका तु स्त्रियामेषा शष्कुल्यां परिकीर्त्तिता ।
लोचनं त्वक्षणि क्लीबं पश्यत्यर्थे तु सा न ना ॥४९१५॥
लोचनं लोचना स्त्री तु विचारोक्तौ च लोचना ।
लोचनीति पुनः स्त्रीत्वे भेषजान्तर इष्यते ॥४९१६॥
लोट उन्मादरोगस्स्यात्तथा लोटाम्लवास्तुके ।
लोटना स्त्री सानुसारवाचि क्ली तु विलोटने ॥४९१७॥
लोणिका च बृहल्लोण्यां घोटिकायाम्प्रकीर्त्तिता ।
लोतोऽश्रुचिह्नयोर्लोतं लोप्त्राख्ये मुषिते धने ॥४९१८॥

लोधो लोध्रे द्वे तु जन्तुभेदे लुब्धे त्रिसायणः ।
लोपस्तु छेदने पुंसि तथा वर्णाद्यदर्शने ॥४९१९॥

लोपा शुकान्तरे लोपामुद्रायां च प्रकीर्त्तिता ।
लोप्ता त्रिर्लोपके लोप्त्री चोरीते च धने स्मृता ॥४९२०॥

लोभनं तु सुवर्णे च लोभे चापि नपुंसकम् ।
अथ लोभयतेरर्थे लोभनं लोभना न ना ॥४९२१॥

लोभ्यो मुद्गेऽप्यारकूटे लोभ्यं त्रिर्लोभनीयके ।
लोम क्लीबं तनुरुहे सामभेदे तथा मतम् ॥४९२२॥

लोमशो मुनिभेदे ना तथा स्याद्भेषजान्तरे ।
लोमशा तु स्त्रियां काकजङ्घामांसीवचासु च ॥४९२३॥

शूकशिम्बिमहामेदाकाकोलीकर्कटीषु च ।
काशीशे शालिनीभेदे लोपाश्यां च प्रकीर्त्तिता ॥४९२४॥

द्वे तु मेषे त्रिः सलोम्नि क्ली तु छन्दोन्तरे मतम्[१] ।
क्ली लोमहर्षणं रोमाञ्चेऽथ सूतमुनौ पुमान् ॥४९२५॥

रोमाञ्चजनके तु त्रिर्लोमहर्षण उच्यते ।
लोलश्चले सतृष्णे त्रिर्लोला जिह्वाश्रियोः स्त्रियाम् ॥४९२६॥

दाक्षायण्यामुत्पलावर्त्तकस्थायां च विद्युति ।
मधुदैत्यजनन्यां च छन्दोभिद्योगिनीभिदोः ॥४९२७॥

लोलस्तु पुंसि मेढ्रे स्याल्लोली संगीतभिद्यपि ।
लोलुपस्त्रिषु लुब्धे स्याल्लोलुपा योगिनीभिदि ॥४९२८॥

लोष्टोऽस्त्री लेष्टुके सीम्नि लोष्टं क्लीबमयोमले ।
लोहोऽस्त्री मरिचस्वर्णागुर्वयःसु च तैजसे ॥४९२९॥

द्वयोः पक्ष्यन्तरे रक्तच्छागे रक्ते तु वाच्यवत् ।
लोहजं कांस्यलोहे क्ली भेद्यवल्लोहसम्भवे ॥४९३०॥

लोहद्रावी तु योगार्थे स तु स्यात्पुंसि टङ्कणे ।
लोहपृष्ठो द्वयोः कङ्के चरकः प्रतुदान्तरे ॥४९३१॥

लोहलोऽस्फुटवाचि त्रिः शृङ्खलाधार्य एष ना ।
स्याल्लोहसङ्करो लोहमिश्रणे क्ल्युत्तमायसे ॥४९३२॥

१. लोमशो मुनिभेदे ना मेषे द्वे- लोमशस्त्रिषु ।
लोमान्विते स्त्रियां काकजङ्घामांसीवचासु च ।
२. शूकशिम्बिमहामेदाकाकोलीषु प्रकीर्त्तिता ॥

लोहायसं ताम्रभवे त्रि क्ली तु ताम्रेण मिश्रिते ।
लोहितं तु मतं ताम्रे कुङ्कुमे रक्तचन्दने ॥४९३३॥
रुधिरे रक्तगोशीर्षे पद्मरागमणावपि ।
अशुभेन्द्रायुधभिदि कदनेऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥४९३४॥
रोहिताख्यान्तरे सर्पभेदेऽपि हरिणान्तरे ।
पुमांस्तु रत्नभेदेऽपि रोगेऽप्यक्षिपुटार्दिनि ॥४९३५॥
रक्तशालावतस्यां चाङ्गारके मत्स्यभिद्यपि ।
ब्रह्मपुत्रनदे वार्ध्यन्तरे देशान्तरे तथा ॥४९३६॥
रक्तवर्णे त्रिस्तु तद्वत्यत्र रूपद्वयं स्त्रियाम् ।
लोहिनी लोहिता चेति लोहिता तु स्त्रियामियम् ॥४९३७॥
पुनर्नवायां रक्तायां स्तम्बे लज्जालुनामनि ।
पद्मरागे लोहितकोऽस्त्री त्रिः कोपादिलोहिते ॥४९३८॥
तत्र स्त्रियां लोहितिका रूपं लोहिनिकेति च ।
कांस्ये लोहितकं क्लीबं स्त्री तु लोहितिकामता ॥४९३९॥
रक्ताशयान्तरे कस्याञ्चनभेषजभिद्यपि ।
लोहिते चन्दने न स्त्री प्रोक्तो लोहितचन्दनः ॥४९४०॥
कुङ्कुमे तु मतं क्लीबमिदं लोहितचन्दनम् ।
स्त्रीत्वे लोहितपुष्पी स्यात् पुन्तु दाडिमवृक्षके ॥४९४१॥
पुमाँल्लोहितपुष्पोऽसौ दाडिमे परिकीर्त्तितः ।
लोहिताक्षः सर्पभेदे कोकिलेऽपि द्वयोर्मतः ॥४९४२॥
विष्णौ तु लोहितेऽप्यक्षे [त्रिर्नब् रक्ताशयान्तरे] ।
लोहिताक्षो मतो वह्नौ तथा शम्भावपि क्वचित् ॥४९४३॥
योगार्थे नकुले तु द्वे कथितो लोहिताननः ।
लोहित्यो दक्षिणाब्धौ च शालिभिद्ब्रह्मपुत्रयोः ॥४९४४॥
लौल्यं क्लीबं सतृष्णत्वे चाञ्चल्येऽपि प्रकीर्त्तितम् ।
लौहं क्लीबमयस्युक्तं लोहसम्बन्धिनि त्रिषु ॥४९४५॥
लौहा तु लोहरचितपाकपात्रान्तरे मता ।
लौहित्यं लोहितत्वे क्ली ब्रह्मपुत्रनदे पुमान् ॥४९४६॥

व

वः सान्त्वने च वाते च वरुणे वन्दने [शुभे] ।
[मन्त्रणे] वसतौ बाहौ वस्त्रेऽपि वरुणालये ॥४९४७॥
शार्दूले चैव शाल्के बलवत्यपि पुंसि च ।
वं बीजे वरुणस्य स्यादिवार्थे तु तदव्ययम् ॥४९४८॥
वा स्त्री वयनहिंसेषु गमे ना तन्तुवायके ।
वंशः पृष्ठास्थ्नि गेहोर्ध्वकाष्ठे वेणौ गणे कुले ॥४९४९॥
नासोर्ध्वास्थ्नीक्षुभेदे च शाले विंशतिहस्तके ।
रागभेदे तुगाक्षीर्यां विष्णौ वंशः प्रकीर्त्तितः ॥४९५०॥
वंशकस्त्विक्षुवेण्वोऽस्थ्नोर्द्वे तु मत्स्यान्तरे मतः ।
स्त्री वंशिका मुरल्यां च वंशके त्वगुरौ न ना ॥४९५१॥
वंशजः कुलजे त्रि स्याद्वंशबीजे पुमानयम् ।
वंशजा तु तुगाक्षीर्यां स्त्रीत्वे क्लीबेऽपि च क्वचित् ॥४९५२॥
[वंशपत्रं मतं क्लीबं हरिताले स्त्रियामपि ।
पुंसि मीनेक्षुभेदे च वंशपत्रक इष्यते] ॥४९५३॥
वंशर्णवस्तु चणकधान्ये ना त्रि तु यौगिके ।
वंशिकस्त्वध्वमाने ना दशस्तोमात्मके मतः ॥४९५४॥
वंशिका वंशवाद्ये च वंशजालेऽपि च स्त्रियाम् ।
वंशिकं भेद्यवत्तुच्छे क्लीबं त्वगुरुणि स्मृतम् ॥४९५५॥
वंशि तु दैर्घ्यमाने तुगाक्षीरीवीणयोरपि ।
रक्ताशये चतुष्कर्षमाने चापि स्त्रियां मता ॥४९५६॥
वंश्यां कुस्तुम्बुरीसंज्ञधान्ये स्त्री वंशजे त्रिषु ।
वक्तव्यः कुत्सिते नीचे वाच्येऽधीने तथा त्रिषु ॥४९५७॥
वक्तव्यवाक्ये वक्तव्यपुरुषे च तथा मतः ।
वक्ता तु पण्डितेऽपि स्याद् वाग्मिन्यप्यन्यलिङ्गकः ॥४९५८॥
वक्त्रोऽस्त्री स्यान्मुखेऽनुष्टुप्छन्दो वृत्तान्तरेषु च ।
वस्त्रभेदेऽपि तगरमूलेऽपि परिकीर्त्तितः ॥४९५९॥

वक्रो विष्णौ शनावङ्गारके पर्पटभेषजे ।
रुद्रे वाणासुरे पुंसि तगरे तु नपुंसकम् ॥४९६०॥
वक्रा वीणान्तरे चापि कुटिलक्रूरयोस्त्रिषु ।
वक्रकण्टस्तु बदरे खदिरेऽपि मतः पुमान् ॥४९६१॥
वक्रतुण्डो गणेशे ना शुके स्त्रीपुंसयोर्मतः ।
वक्रदंष्ट्रो वराहे द्वे योगार्थे तु त्रिषु स्मृतः ॥४९६२॥
वक्रदन्तो [वराहे स्याद्] दन्तवक्र नृपे तु ना ।
वक्रनक्रस्तु पिशुने तथैव शुकपक्षिणि ॥४९६३॥
वक्रपुष्पो बकागस्त्यपलाशतरुषु स्मृतः ।
वक्रशल्या कुटुम्बिन्यां गुञ्जायाञ्च प्रकीर्त्तिता ॥४९६४॥
वक्रिः पर्शुसमाख्येऽस्थि पार्श्वस्य स्त्री पुमान्पुनः ।
दिवसे त्रिस्तु कुटिले शल्यके तु द्वयोरयम् ॥४९६५॥
वक्षणा वक्षसि तथा तदादावपि कीर्त्तिता ।
वक्षाः पुँल्लिङ्ग उक्षिण स्याद्वक्षः क्लीबमुरस्थले ॥४९६६॥
वग्नुः पुमान्स्याद्वचने वाचाले त्वभिधेयवत् ।
वङ्का पर्याणभागे द्वे ना नदीपात्रभङ्गुरे ॥४९६७॥
वङ्किर्वाद्यविशेषे स्त्री कण्टके तु पुमान् मतः ।
वङ्कुर्मुनिविशेषे ना वङ्क्तरि त्वभिधेयवत् ॥४९६८॥
वङ्गाः पौरस्त्यजनपदान्तरे तज्जनेषु च ।
नृभूम्नि ना तु वङ्गः स्याद्दक्षे वृक्षान्तरेऽप्यथ ॥४९६९॥
न स्त्री वृन्ताककार्पास्योः क्ली सीसे यशदेऽपि च ।
गतौ तु वङ्गो वङ्गा च पुंसि स्त्रीत्वे तथा भवेत् ॥४९७०॥
वचः कीरे द्वयोः स्त्री तु शारिकौषधयोर्वचा ।
पुमांसं करणे सूर्ये चापि केचिद्द्वयं विदुः ॥४९७१॥
वचक्नुः श्रोत्रिये पुंसि तथाचार्ये प्रकीर्त्तितः ।
त्रिषु वाग्मिनि विप्रे तु वचक्नुः कीर्त्तितो द्वयोः ॥४९७२॥
वचण्डा च वचण्डी च छुरिका सारिकाऽन्ययोः ।
वचनं वाक्य उक्तौ च संख्याशुण्ठ्योस्तथेष्यते ॥४९७३॥

वचनीयं तु वाक्येऽपि तथा दोषे नपुंसकम् ।
वचरः कुक्कुटे द्वे स्याच्छठे पुँल्लिङ्ग इष्यते ॥४९७४॥
वचलुस्तु पुमान्प्रेतेऽपराधेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
वचिस्तु वचधातौ ना वचने तु स्त्रियाम्भवेत् ॥४९७५॥
वचुष्यो वक्तरि त्रि स्यान्नकुले तु द्वयोर्मतः ।
वज्रोऽस्त्री कुलिशे शस्त्रेऽप्यशनौ मणिवेधके ॥४९७६॥
हीरकेऽभ्रकभेदेऽपि चासने यस्य लक्षणम् ।
जङ्घे पद्मासनावस्थे तत्सन्धिनिहितौ करौ ॥४९७७॥
ताभ्यामेव स्थितौ भूमावन्तरिक्षासनं च तत् ।
व्रतभेदे च गोमूत्रे दम्भे यावकजीवने ॥४९७८॥
वज्रं स्याद्बालके धात्र्यां योगयज्ञभिदोस्तु ना ।
वज्रा स्नुह्यां गुडूच्यां च वज्री दुर्गास्नुहीभिदोः ॥४९७९॥
वाग्वज्रेऽपि च शल्येऽपि ग्रहस्थित्यन्तरेऽपि च ।
तिलपुष्पे श्वेतकुशे कोकिलाक्षे च निष्ठुरे ॥४९८०॥
स्नुह्यां च कोकिलाक्षे च पुमान्स्याद्वज्रकण्टकः ।
वज्रतुण्डो द्वयोर्गृध्रे [1]दंशेऽपि गरुडे तु ना ॥४९८१॥
वज्रदन्तः सूकरेऽपि मूषिकेऽपि द्वयोर्मतः ।
शतपुष्प्यां वज्रपुष्पा स्त्री क्ली तु तिलपुष्पके ॥४९८२॥
वज्रवृक्षः पत्रहीनस्नुहीद्रौ ना क्वचिन्मतः ।
वज्रशल्यः शल्यके द्वे वज्रशल्यौषधान्तरे ॥४९८३॥
वज्रहस्तः पुमानिन्द्रे वज्रहस्ता समिद्भिदि ।
वज्राङ्गस्तु द्वयोः सर्पे वज्राङ्गी च गवेधुका ॥४९८४॥
वज्री तु वज्रयुक्ते त्रिः पुमानिद्रे तथागते ।
ग (र) ति-लक्षणमप्युक्तं यस्य नामान्तरं तथा ॥४९८५॥
वज्रीन्द्रबुद्धयोः पुंसि स्यात् विश्वेदेवान्तरेऽपि च ।
वज्रिणी तु स्त्रियामिष्टकान्तरे परिकीर्त्तिता ॥४९८६॥
वञ्चकस्तु खले चापि धूर्त्ते वाच्यवदिष्यते ।
द्वयोस्तु गृहबभ्रौ च जम्बुके चापि वञ्चकः ॥४९८७॥

---

१. हेरम्बे वा ।

वञ्चितो विप्रलब्धे त्रिर्वञ्चिता नायिकाभिदि ।
वञ्चुथः कोकिले कारौ द्वे ना दम्भेऽध्वकालयोः ॥४९८८॥
वञ्चुलस्तिमिशेऽशोके वेतसेऽपि मतः पुमान् ।
वञ्जुलस्तिमिशेऽशोके वेतसेऽथापगान्तरे ॥४९८९॥
द्वे स्त्री गवि सुदोह्यायां न क्ली नदनदीभिदोः ।
वटो न्यग्रोधवृक्षेऽपूपान्तरे गन्धके पुमान् ॥४९९०॥
साम्ये चाथ द्वे कपर्दे पक्षिभेदे तथा वटी ।
वेणुकीवैश्यजे चाथ स्त्री क्रीडागुटिकार्थिका ॥४९९१॥
वृक्षान्तरेऽपि गाढायां रज्जौ तु स्याद्वटी त्रिषु ।
वटकः पुंसि मानस्य भेदे स्यादष्टमाषके ॥४९९२॥
वटिका तु स्त्रियां क्रीडागुटिका गुलिकाऽर्थिका ।
वटपत्रस्तु तुलसीभेदे शुक्ले पुमान्मतः ॥४९९३॥
वटपत्रा पुनः स्त्रीत्वे कीर्त्तिता मल्लिकान्तरे ।
वटपत्री त्विरावत्यां स्त्रीत्व एव प्रकीर्त्तिता ॥४९९४॥
वटम्बस्तृणपुञ्जे च शैले च परिकीर्त्तितः ।
वटरः कुक्कुरे वस्त्रे शठे त्रिश्चौरचञ्चले ॥४९९५॥
वटिरुद्देहिकाशूननाभ्योः कल्केऽपि च स्त्रियाम् ।
पुमांस्तु वटतौ धातौ वेष्टनार्थे वटिः स्मृतः ॥४९९६॥
वटी तु रज्जुके नान्तो कत्तु लेऽप्यभिधेयवत् ।
चतुरङ्गादिगुलिकार्थे तु पुंसि वटी स्मृतः ॥४९९७॥
वठरस्तु शठे स्थूले मन्दे वक्रेऽपि च त्रिषु ।
अथाम्बष्ठे शब्दकारे वर्षे च वठरः पुमान् ॥४९९८॥
स्त्रियां तु वडवाऽश्वायां कुम्भदास्यां द्विजस्त्रियाम् ।
कामतन्त्रप्रसिद्धे स्त्रीभेदे तत्र तु ना वृषे ॥४९९९॥
गावः पुमांसं यंसन्तमारोहन्ति यियप्सवः ।
वडवामुखमश्वाया मुखे क्ली च रसातले ॥५०००॥
वडवामुख इत्येष पुमान्स्यादौर्वपावके ।
वणिक्पथस्तुलाराशौ वणिग्वर्त्मनि चेष्यते ॥५००१॥

वणिक्कर्मणि केषाञ्चित् वणिज्यपि पुमान्मतः ।
वणिक् स्त्रियां वणिज्यायां क्रयविक्रयिके त्रिषु ॥५००२॥
तुलाराशौ तु करणभेदे ना वणिजो वणिक् ।
वण्टो भागे दात्रमुष्टावथो विभजने द्वयोः ॥५००३॥
वण्टालो युद्धभेदे च नौकायां च खनित्रके ।
वण्ठः स्यादकृतोद्वाहे खर्वे कुन्तायुधेऽपि च ॥५००४॥
वण्ठरस्तु स्तने तालाङ्कुरे मेघे श्वपुच्छके ।
करीरकोशे स्थगिकारज्जौ द्वे ना तु कुक्कुरे ॥५००५॥
वण्डो ना मृतभार्येऽथाभिनिविष्टे त्रिषु स्मृतः ।
अल्पे दुश्चर्मणि तथा छिन्नपुच्छपशावपि ॥५००६॥
वण्डं निष्कुषितत्वच्यग्रशिश्ने शिश्नमात्रके ।
वण्डालः शूरयोर्युद्धे नौकायां च खनित्रके ॥५००७॥
वतंसः शेखरे कर्णपूरे वीतंसके क्वचित् ।
वतामन्त्रणसन्तोषखेदानुक्रोशविस्मये ॥५००८॥
वतूर्देवनदीसत्यवाक्पथ्यक्षिरुजि स्त्रियाम् ।
वत्सः संवत्सरे वृक्षभेदे कुटजसंज्ञके ॥५००९॥
ऋषिभेदे च तद्वंश्यपुरुषेषु तु भूमनि ।
फले तु कुटजस्य क्ली द्वे तु तर्णकसंज्ञके ॥५०१०॥
गोमहिष्यादिपोतेऽपि बालेऽपि तनयादिके ।
वर्ये तु वाच्यवद्वत्सो न तु स्त्री वक्षसि स्मृतः ॥५०११॥
वत्सको वत्सवाच्येऽथ पीततुत्थे नपुंसकम् ।
तथैव वत्सनाभेऽपि वत्सकं क्लीबमिष्यते ॥५०१२॥
वत्सनाभो वृक्षभेदे विषभेदेऽपि दृश्यते ।
वत्सरस्तु पुमान्वर्षे पञ्चषान्यतमेऽपि च ॥५०१३॥
वत्सलो हरिणादौ द्वे त्रिषु प्रेमवति स्मृतः ।
गवि सा वत्सकामायां वत्सला स्त्रीत्व इष्यते ॥५०१४॥
पुमांस्तु रसभेदेऽपि तृणाग्नावपि वत्सलः ।
वत्सादनी गुडूच्यां स्त्री द्वयोस्तु वृक इष्यते ॥५०१५॥

वदो वक्तर्यपि त्रिः स्यान्मगवेदादिमे पुमान् ।
वदनं स्यान्मुखेऽप्युक्तावग्रेऽपि शिखरेऽपि च ॥५०१६॥
वदान्यो वल्गुवाचि स्यात्त्रिषु वाग्मिनि दातरि ।
सहस्रदंष्ट्रे पाठीने वदालो मत्स्ययोर्द्वयोः ॥५०१७॥
वधो ना हनने वज्रे बले त्रिषु तु हिंसके ।
वधस्तु हनने वज्रे बलेऽपि गुणनेऽपि च ॥५०१८॥
वधा तु स्त्री कलम्ब्याख्यजलशाके प्रकीर्त्तिता ।
वधकं पद्मबीजे क्ली ना व्याधौ त्रि तु घातके ॥५०१९॥
वधत्रमायुधे तन्तुवायदण्डे च कीर्त्तितम् ।
शूरे धवयिमर्माख्ये कन्दुके च नपुंसकम् ॥५०२०॥
वधिको घातके त्रिः स्यात्कस्तूर्यां क्लीबमिष्यते ।
वधूः स्त्री शारि [वायाञ्च नदीपूर्वजभार्ययोः] ॥५०२१॥
स्नुषाशटीनवोढासु चार्णस्पृक्काङ्गनासु च ।
वधूटी तु नवोढायां पुत्रपत्न्यां तथेष्यते ॥५०२२॥
वध्यस्तु हननीये त्रिर्वध्या हत्या प्रकीर्त्तिता ।
वध्री वध्रं वरत्रायां नपि त्रपुणि कीर्त्तितम् ॥५०२३॥
वध्रिका तु वरत्रायां वध्रिकः स्यान्नपुंसके ।
वनं यज्ञे जलेऽरण्ये गहनेऽशौ धने मुदि ॥५०२४॥
काष्ठे मुस्ते निवासे च वनी स्त्री गहने मता ।
वनकन्दस्तु धरणीकन्देऽपि वनशूरणे ॥५०२५॥
अगुरौ देवदारौ च वनचन्दनमिष्यते ।
वनजो द्वे गजे ना तु मुस्तेऽपि वनशूरणे ॥५०२६॥
जम्बीरेऽपि च धान्याके वनजा तु वनार्द्रके ।
अश्वगन्धाहरिद्राभिद्वनकार्पासिकासु च ॥५०२७॥
मुद्गपर्ण्यां लताभेदे क्ली कंसोत्पलपद्मयोः ।
वनतिक्तो हरीतक्यां वनतिक्ता पुनस्स्त्रियाम् ॥५०२८॥
वनद्रुमस्त्वगुरुणि वनस्थविटपिन्यपि ।
वनप्रियः कोकिले द्वे तथैव हरिणान्तरे ॥५०२९॥

वनमाली हरौ तालभेदे स्त्री वनमालिनी ।
वराह्यां द्वारकापुर्यामपि चैव प्रकीर्त्तिता ॥५०३०॥
वनवासी तु काके द्वे नृभूम्नि वनवासिनः ।
दाक्षिणात्येषु देशेषु केषुचित्परिकीर्त्तितः ॥५०३१॥
पुमांस्तु वानप्रस्थे स्याद्वनवस्तरि च त्रिषु ।
वनश्वा गन्धमार्जारे द्वे व्याघ्रे जम्बुकेऽपि च ॥५०३२॥
वनस्थो द्वे वनगजे हरिणेऽप्यथ च स्त्रियाम् ।
वनस्थाऽत्यम्लपर्ण्याञ्च क्षुद्राश्वत्थे तथा मता ॥५०३३॥
वनस्पतिर्ना द्रुमात्रे विनापुष्पं फलिद्रुमे ।
सोमे वटे पाटले च धृतपृष्ठस्य चात्मजे ॥५०३४॥
वनहासस्तु काशेऽपि तथा स्यान्मल्लिकान्तरे ।
वनायवो जनपद्भेदे तद्वासिनृष्वपि ॥५०३५॥
वनायुस्तु सुते पुंसि स्यात्पुरूरवसः क्वचित् ।
वनिः सनुनि चाग्नौ च याच्ञायां च पुमान्मतः ॥५०३६॥
वनिः स्त्रियां स्यादिच्छायां पुमान्कामे वनिर्मतः ।
वनतौ च वनोतौ च शकुनौ तु द्वयोर्मतः ॥५०३७॥
वनिता स्त्रीमात्रकेऽपि जातरागस्त्रियामपि ।
अथ प्रिये याचिते च सेवितेऽप्यभिधेयवत् ॥५०३८॥
वनिष्ठुस्तु गुदे नाऽश्वे सम्भक्ते त्वभिधेयवत् ।
वनी वृक्षे मतौ मेघे सोमे त्रिष्वभिलाषिणि ॥५०३९॥
वनोद्भवा मुद्गपर्ण्यां वन्ये स्याद्बीजपूरके ।
वनदार्वासिफायां च योगे तु स्याद्यथायथम् ॥५०४०॥
वनौका वनवास्तव्ये त्रि द्वयोर्वानरे मतः ।
वन्दकस्तु द्वयोर्वन्दावृक्षे ना श्रमणान्तरे ॥५०४१॥
वन्दथस्तु पुमान्स्तुत्ये तथा स्तोतरि कीर्त्तितः ।
वन्दना तु न ना स्तुत्यामभिवादन एव च ॥५०४२॥
वन्दनी नतिजीवातुवटीयाचनकर्मसु ।
वन्दनीयस्त्रिषु स्तुत्ये वन्दनीया तु भिक्षुकी ॥५०४३॥

वन्दा वन्दाकवृक्षेऽपि भिक्षुक्यां च स्त्रियां मता ।
वन्दारुः स्तोतरि त्रि स्याद्वन्दारु क्ली स्तुतौ मतम् ॥५०४४॥
वन्दिः स्त्री प्रग्रहे ना तु वन्दतौ त्रि तु वन्दिनि ।
वन्दी त्रिस्तावके द्वे तु वैदेहे मागधेऽपि च ॥५०४५॥
वन्दी तु निगृहीते स्यात्स्त्रीत्वे चैव प्रयुज्यते ।
वन्दीकस्तोरणस्तम्भे तथैव स्यात्पुरन्दरे ॥५०४६॥
वन्द्यस्स्तुत्ये त्रि वन्द्या स्त्री भिक्षुकीवन्दयोर्मता ।
वन्ध्यं त्रिर्निष्फले शून्ये वन्ध्या तु स्त्रीत्व इष्यते ॥५०४७॥
गन्धद्रव्यान्तरे गर्भधृत्ययोग्यस्त्रियामपि ।
वन्यस्तु पुंसि वेत्रे च धान्ये मर्कटकाह्वये ॥५०४८॥
वनशूरणकन्देऽपि रक्तालौ................।
नवबौद्धोपासके तु द्वे वन्या तु जलाप्लवे ॥५०४९॥
अरण्यान्यां तिक्तकोशातकी वल्ल्यश्वगन्धयोः ।
क्ली तु कंसोत्पले वन्यं वनसाधौ तु वाच्यवत् ॥५०५०॥
वन्यं त्रिषु वनोद्भूते स्त्री वनाम्बुसमूहयोः ।
वपनं बीजनिक्षेपे क्लीबं स्यात् क्षौरकर्मणि ॥५०५१॥
खरुक्कुट्याख्यवपनशास्त्रायां वपनी स्त्रियाम् ।
वपनी तु स्त्रियां क्षौरशालायां परिकीर्त्तिता ॥५०५२॥
वपा मेदसि रन्ध्रे च स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।
वपुः शरीरे लावण्ये दीप्तिप्रकृतिवारिषु ॥५०५३॥
वप्ता पितरि ना त्रिर्मुण्डके व्रीह्यादिवापके ।
वप्रोऽस्त्री वास्तुभूक्षेत्ररोधःप्राकारसानुषु ॥५०५४॥
प्राकारमूले क्ली सीसे मञ्जिष्ठायां स्त्रियामथ ।
निष्ठुरे वनजे वाजिकायां पाटीर इष्यते ॥५०५५॥
रेणौ चये पुंसि तटे जनके च प्रजापतौ ।
वप्रिः समुद्रे क्षेत्रे ना दुर्गतौ तु स्त्रियां मता ॥५०५६॥
वमथुर्वमने मेघे गजहस्तोत्थशीकरे ।
वमनोऽङ्कोठवृक्षेऽपि भङ्गायां च पुमान्मतः ॥५०५७॥

वमनी तु जलौकायां कार्पास्यां योगिनीभिदि ।
अना तु छर्दने तद्वदर्दनेऽप्याहुतात्रपि ॥५०५८॥
नृजातिभेदे वमना नृवहुत्वे प्रकीर्त्तिता ।
वमिर्नाऽग्नौ च धत्तूरे वान्तौ स्त्री वमतौ तु ना ॥५०५९॥
वम्रः पुंस्युषिभेदे स्याद्धूमवर्णप्रभेदयोः ।
उपदीका जातिमात्रे वम्रो वम्री च नृस्त्रियोः ॥५०६०॥
वयो धनेऽन्ने बाल्यादौ वत्सरे जीविते खगे ।
जातौ च यौवने चैव सान्तं क्लीबमुदीरितम् ॥५०६१॥
वयस्यस्तरुणे त्रि द्वे मित्रे ब्राह्मयां पुनः स्त्रियाम् ।
काकोलीक्षीरकाकोल्यत्यम्लपर्णीगुडूचिषु च ॥५०६२॥
सूक्ष्मैलायां हरीतक्यां वयस्या परिकीर्त्तिता ।
वया स्त्री तरुशाखायां ना तु गत्यशनादिषु ॥५०६३॥
वयुनं मन्दिरे शस्ते वैदुष्येऽपि मखे तु ना ।
वयुना कान्तिबुद्धयोः स्त्री द्वे तु स्याद्देवविप्रयोः ॥५०६४॥
वयोधास्तु द्वयोर्यूनि वयसो धातरि त्रिषु ।
आकारान्तोऽपिदृशेऽर्थे तु वयोधाः परिकीर्त्तितः ॥५०६५॥
वरो ना भूपजामात्रोर्देवादेरीप्सिते क्रुधि ।
संभक्तौ चानिरोधे च वृङ्वृञोर्भाववाचकः ॥५०६६॥
विडेऽपि वरटाख्येऽपि धान्यभेदे प्रकीर्त्तितः ।
यवक्षारे तुरुष्काख्यनिर्यासे मारिषान्तरे ॥५०६७॥
लतामारिष इत्युक्ते चटके तु द्वयोरयम् ।
अथोत्तरेषु षट्सु क्ली तकोले कुङ्कुमेऽपि च ॥५०६८॥
गुग्गुलौ हरिताले च महोदर्याख्यमुस्तके ।
वर्त्तुलाकाररचितवह्निकुण्डेऽप्यथ स्त्रियाम् ॥५०६९॥
विडङ्गेऽपि गुडूच्यां च ब्राह्मीरेणुकयोरपि ।
पाठायाश्च नदीभेदे पार्वत्यामपि कीर्त्तिता ॥५०७०॥
पथ्यागुञ्जाहरिद्रासु दूर्वादारुहरिद्रयोः ।
आस्फोताकण्टकार्योश्च वरापि स्यात्फलत्रिके ॥५०७१॥

शरपर्णीमुद्गपर्ण्योः शालिभेदेऽपि पर्पटे ।
अस्त्रियां तु द्विखण्डाख्ये मतः प्रावरणान्तरे ॥५०७२॥
क्लीबमेव मनागिष्टेऽव्ययं वा थोन्तमे त्रिषु ।
वरकं स्यात्पटगृहे वस्त्रेऽपि च नपुंसकम् ॥५०७३॥
वरको वनमुद्गे ना रूक्षणाख्ये च कोद्रवे ।
भार्ग्यां वराटिकातुल्यधान्ये च वरकाष्ठका ॥५०७४॥
देवदारुणि कालेयेऽपि प्रोक्तं वरचन्दनम् ।
वरटो धान्यभेदे कुसुम्भबीजाख्ययोदिते ॥५०७५॥
वरटाऽप्यथ हंसस्य योषायान्तु स्त्रियाम् मता ।
वरटा वरटी चेति सविषे शलभान्तरे ॥५०७६॥
नृजातिभेदे वरटा मल्लीपुष्पे नपुंसकम् ।
वरणस्तु पुमांस्तिक्तशाकप्राकारयोरपि ॥५०७७॥
अथावृतौ च सम्भक्तौ कन्यादिवरणे नपि ।
वरणा स्यान्नदीभेदे काशीस्थे वरुणाऽपि च ॥५०७८॥
वरण्डः पुम्बलाख्ये स्यान्मुखरोगे च स ह्यना ।
प्राकारेऽप्यन्तरावेदौ तृणकाष्ठादिभारके ॥५०७९॥
वडिशे स्त्र्यसिपुत्र्याश्च रज्जुशारिकयोरपि ।
स्त्रियां वरतनुश्चारुनार्यां छन्दोऽन्तरेऽपि च ॥५०८०॥
वरतिक्तस्तु कुटजे स्यान्निम्बे पर्पटेऽपि च ।
वरतिक्ता तु पाठायां सैव स्याद्वरतिक्तिका ॥५०८१॥
वरत्रा तु स्त्रियां वर्त्तौ तथा स्याद्वध्रिकक्ष्ययोः ।
वरदस्तु प्रसन्नेऽपि वाच्यवत्स्यात्समर्थके ॥५०८२॥
नृजातिभेदे वरदाः कन्यायां वरदा मता ।
त्रिपर्ण्यामपि रक्तालौ वरतन्तोः कुलस्य च ॥५०८३॥
देव्यां योगिन्यन्तरे च मध्यदेशे नदीभिदि ।
वरपोतो द्वे हरिणे शाकभेदे नपुंसकम् ॥५०८४॥
वरप्रदो विधौ लोपामुद्रायां तु वरप्रदा ।
धवे वरयिता पुंसि त्रि स्याद्वरयतेस्तृचि ॥५०८५॥

कात्यायने वररुचिः कोषकारे कवौ शिवे ।
वरलो वरला चापि गन्धोलीहंसयोषितोः ॥५०८६॥
वरलब्धश्चम्पकेऽपि काञ्चीभेदे पुमान्मतः ।
वरवर्णिन्यस्तु लाक्षाहरिद्रारोचनासु च ॥५०८७॥
स्त्रीरत्ने च फलिन्यां च साधीयस्यामपि स्त्रियाम् ।
दुर्गायामपि लक्ष्म्याञ्च सरस्वत्यामपीष्यते ॥५०८८॥
वराकः शङ्करे पुंसि हिंसायां भेषजान्तरे ।
शोचनीये पुनरयं स्याद्वराकोऽभिधेयवत् ॥५०८९॥
वराङ्गं योनिमातङ्गमस्तकेषु गुडे त्वचि ।
हस्ते चोचाख्यौषधौ ना विष्णौ नाक्षत्रवत्सरे ॥५०९०॥
चतुर्विंशतिसंयुक्तवासरत्रिशतीमिते ।
वराङ्गा तु चतुर्वर्षसुरभौ परिकीर्त्तिता ॥५०९१॥
वराङ्गी तु हरिद्रायां शाकाम्ले तु प्रकीर्त्तिता ।
वराङ्गना श्रेष्ठनार्यां तथा तालीद्रुमेऽस्त्रियाम् ॥५०९२॥
वराटो बीजकोशे नाऽब्जस्य स्याद्रज्जुनीचयोः ।
खड्गभेदेऽपि चैरण्डबीजाभपुलकावलौ ॥५०९३॥
कपर्देऽपि वराटी तु रागभेदे प्रकीर्त्तिता ।
वराटको द्वे कपर्देऽब्जबीजकोशे त्रि सेवके ॥५०९४॥
स्याद्वराणस्तु शक्रेऽपि वात्स्यायनमुनावपि ।
वराणकः पुमानुक्तो वात्स्यायनमुनावयम् ॥५०९५॥
द्वयोर्वराणकः प्रोक्तस्तीवरीडोम्बयोः सुते ।
वराणसो वराणीये त्रिः काश्यां तु वराणसी ॥५०९६॥
तथैव च नदीभेदे स्त्रीत्व एव प्रकीर्त्तितः ।
वरारोहा श्रेष्ठनार्यां महोदर्याख्यमुस्तके ॥५०९७॥
मल्लिकाया विशेषे च देवमल्लीति विश्रुते ।
सोमेश्वरस्थदाक्षायण्यां रम्ये च नितम्बके ॥५०९८॥
अथ विष्णौ गजारोहे नोत्तमारोहिणि त्रिषु ।
वरालः सितपिङ्गाभवर्णे त्रिषु तु तद्वति ॥५०९९॥

वराला हंसकान्तायां वरालं भेषजान्तरे ।
वरालिस्तु पुमांश्चन्द्रे रागभेदे प्रकीर्त्तितः ॥५१००॥
वराहः पर्वते मेघेऽङ्गिरःसुप्रवरेऽह्नि ना ।
विष्णौ वराहमिहिरे मानद्वीपाद्रिभित्स्वपि ॥५१०१॥
व्यूहभेदे मुस्तकेऽपि रक्तालौ च प्रकीर्त्तितः ।
सूकरे तु पशौ मेषे शिशुमारे द्वयोर्मतः ॥५१०२॥
वराही मातृभेदे स्याद्विष्वक्सेनप्रियौषधौ ।
स्त्रीलिङ्ग एव कथिता तथैषा मुस्तकान्तरे ॥५१०३॥
वराहनामा रक्तालौ लज्जालौ च पुमान्मतः ।
[1]वराहिकाऽश्वगन्धायां नागभेदे वराहकः ॥५१०४॥
वराहुस्तु वराहे द्वे नृभूम्नि तु वराहवः ।
[2]वरिमा तु वरत्वेऽपि तथोरुत्वे पुमान्मतः ॥५१०५॥
वरिवस्तु धनेऽपि स्याद्वरत्वेऽपि नपुंसकम् ।
वरिषस्तु पुमान्वृष्टौ वर्षासु स्त्री बहुत्वके ॥५१०६॥
वर्षे तु वरिषं क्लीबलिङ्गमेव प्रकीर्त्तितम् ।
वरिष्ठः स्यादुरुतमे तथा वरतमे त्रिषु ॥५१०७॥
[2]द्वे तित्तिरे बीजपूरे ना क्ली मरिचताम्रयोः ।
वरीता त्रिर्वरयितर्यथ पुंसि वरे स्मृतः ॥५१०८॥
वरीयान्योगभेदो ना स्यात्प्रशस्तरे त्रिषु ।
अतियून्युरूत्तरे शतावर्यां वरीयसी ॥५१०९॥
वरुटस्तु प्राक्प्रसूतस्य जातौ क्षत्रियस्त्रियाम् ।
व्रात्याज्जाते निषाद्यां च मेदे वैदेहजे द्वयोः ॥५११०॥
वरुणो वरुणद्रौ च प्रचेतसि जलोदरे ।
[3]आदित्यभेदोऽब्धावप्सु ग्रहनागाग्निभित्स्वपि ॥५१११॥

---

१. वराहकर्णइपुभित्स्त्र्यश्वगन्धा प्रकीर्त्तिता ।

२. द्वे तित्तिरे क्ली मरिचे बीजपूरे पुमान्मतः ।
पक्षिजात्यन्तरे तित्तिर्याख्ये स्त्रीपुंसयोरयम् ।
ताम्रे क्लीबं तित्तिरौ ना वरोरुतमयोस्त्रिषु ।

३. रोगे महोदरान्याख्येऽथोक्तद्रुप्रसवे नपि ।

[1]तथाऽऽयुधविशेषेऽपि वरुणा तु नदीभिदि ।
द्वे मत्स्यभेदे वरुणपाशो योगे यथायथम् ॥५११२॥
अहीनभेदे वरुणप्रघासः पुंसि कीर्त्तितः ।
चातुर्मास्ये नृभूकार्ये श्रावणाषाढपूर्णयोः ॥५११३॥
वरूथो रथगुप्तौ ना मृगे क्ली चर्मवेश्मनोः ।
अस्त्री सैन्येऽपि वृन्दे द्वे पुमांस्तु निजराष्ट्रके ॥५११४॥
वरूथी स्याद्युद्धरथे सेनायान्तु वरूथिनी ।
श्रेष्ठे क्लीवं वरेण्यं स्याद् वाच्यवच्चापि कुत्रचित् ॥५११५॥
वरेण्याः पितृभेदेषु वरेण्यं कुङ्कुमे मतम् ।
सर्वोच्चलोके पार्वत्यां तु वरेण्या प्रकीर्त्तिता ॥५११६॥
वर्करः परिहासे स्याच्छागे युवपशावपि ।
वर्कराटः कटाक्षे स्यात्तरुणादित्यरोचिषि ॥५११७॥
नारीपयोधरोत्सङ्गकान्तदत्तनखक्षते ।
वर्गः समानान्निवहे वज्रे शक्त्याह्वये बले ॥५११८॥
तावत्कृत्वः कृतौ चापि [पक्षे] पुँल्लिङ्ग [इष्यते] ।
वर्गणा गुणने वर्गीकरणे खण्डनेऽपि च ॥५११९॥
वर्ग्यश्छात्रालये पुंसि पक्ष्ये तु त्रिषु कीर्त्तितः ।
वर्चोऽन्नविष्ठातेजःसु लावण्येऽपि तथार्चिषि ॥५१२०॥
रूपे नपुंसकं पुंसि वर्चाश्चन्द्रसुते मतः ।
वर्जनं तु मतं क्लीवं हिंसायां त्याग एव च ॥५१२१॥
वर्णोऽस्त्रियां प्रकारे च शोभायाञ्च विलेपने ।
सुवर्णेऽपि तदुत्कर्षे [कथयामपि कीर्त्तितः] ॥५१२२॥
ना तु द्रव्याश्रितगुणमात्रे शुक्लादिके स्तुतौ ।
गीतिक्रमे च विप्रादौ कुथे चित्रे तथाऽऽकृतौ ॥५१२३॥
उक्तिमात्रेऽक्षरे कीर्त्तौ माल्ये वेषे वृतेऽपि च ।
ब्रह्मचर्येऽथ वर्णा स्यादाढकी पृथुबीजयोः ॥५१२४॥

---

१. वरुणस्तरुभेदेऽप्सु पश्चिमाशापतावपि ।

वर्णं तु कुङ्कुमे क्लीबलिङ्गमेव प्रकीर्त्तितम् ।
ना वर्णकस्तान्तवे स्याद्द्वयो रागेषु वर्णिका ॥५१२५॥
पर्यायार्हादिकथने व्याख्यातरि भवेत्त्रिषु ।
वर्णकश्चारणे स्त्री तु चन्दने च विलेपने ॥५१२६॥
द्वयोर्नील्यादिषु स्त्री स्यादुत्कर्षे कथनस्य च ।
वर्णाटः स्त्रीकृताजीवे त्रिश्चित्रकृति गायने ॥५१२७॥
श्लोकस्तेने सन्धिचौरेऽपि च वर्णविलोडकः ।
वर्णी त्रिर्लेखके चित्रकरेऽपि ब्रह्मचारिणि ॥५१२८॥
वर्णवत्यर्थना वृक्षभेदेऽपि श्रमणान्तरे ।
स्त्रीमात्रे तु स्त्रीविशेषे हरिद्रायाञ्च वर्णिनी ॥५१२९॥
वर्णुर्नदान्तरे वेदेऽर्के ना जनपदान्तरे ।
वर्ण्यं तु वर्णनीये त्रिः सुवर्णे तु नपुंसकम् ॥५१३०॥
वर्त्तकं स्याल्लोहभेदे त्रि तु वर्त्तितरि स्मृतः ।
वर्त्तका वर्त्तिका चाथ त्रिषु वर्त्तितरि स्मृतः ॥५१३१॥
वर्त्तकोऽश्वखुरे स्त्री तु विहगे वर्त्तकी द्वयोः ।
वर्त्तनं धूलिलुठनेऽश्वस्य व्यावर्त्तनेऽपि च ॥५१३२॥
कुटीपिण्डे प्रवृत्तौ जीविकायां वचने मुहुः ।
त्रिर्वर्त्तिष्णौ न ना वर्त्तयत्यर्थे प्रेषणे तथा ॥५१३३॥
पिण्डने तूलनालायां तर्कुपीठे तथेष्यते ।
वर्त्तनं वामने क्लीबं वृत्तौ स्त्री प्रेषणाध्वनोः ॥५१३४॥
नदीभेदे वर्त्तरुकः काकनीडे जलावटे ।
वर्त्तिर्भेषजनिर्माणे नयनाञ्जनलेखयोः ॥५१३५॥
गात्रानुलेपनीदीपदशादीपेषु योषिति ।
वर्त्तुलस्तु कलाये ना तर्कुपीठे च चक्रके ॥५१३६॥
वर्त्तुली गजपिप्पल्यां स्यात्पलाण्ड्वन्तरेऽपि च ।
वर्त्म मार्गे तथा नेत्रच्छदे नान्तं नपुंसकम् ॥५१३७॥
वर्धन्तु सीसके सेतौ भाङ्गर्या वर्धो द्वयोर्मतः ।
अथ वर्धयितर्येष वर्धः स्यादभिधेयवत् ॥५१३८॥

वर्धको द्वे तीक्ष्णभाङ्गर्यां ना वर्धयितरि त्रिषु ।
वर्धनं छेदने वृद्धिक्रियायाञ्च नपुंसकम् ॥५१३९॥
वर्धनस्त्रिषु वर्धिष्णौ तथा स्याद्वृद्धिसाधने ।
गलन्तिकायान्तु स्त्री स्यात्संमार्जन्यां च वर्धनी ॥५१४०॥
वर्धना तु न ना धातोरर्थे वर्धयतेर्मता ।
वर्धमानः अरुनभेदे शरावैरण्डविष्णुषु ॥५१४१॥
पुरान्तरे जनपदान्तरे पौरस्त्यदिग्गजे ।
महावीरार्हति तथा शब्दोऽयं त्रिः सवृद्धिके ॥५१४२॥
वर्धमानं पुनश्छन्दोऽन्तरे क्लीवं प्रकीर्त्तितम् ।
वर्धमानक उक्तो ना करमुद्रान्तरेऽपि च ॥५१४३॥
वर्धापकं पूर्णपात्रे कञ्चुके पांसुचामरे ।
वर्धापनं नाभितालच्छेदे स्यात्पूर्णपात्रके ॥५१४४॥
वर्धितं प्रसिते छिन्ने पूरितेऽपि शरावके ।
वर्ध्रं वर्ध्री वरत्रा ना वेष्टे क्ली चर्मसीसयोः ॥५१४५॥
वर्म स्यात्कवचे चापि त्वचि गेहे नपुंसकम् ।
वर्मवत् क्ली तनुत्राणे सवर्मणि तु वाच्यवत् ॥५१४६॥
वर्या पतिंवरायां स्त्री वरेण्ये त्रिषु ना स्मरे ।
वर्वरः फञ्जिका केशनीवृदन्तरचक्रले ॥५१४७॥
पारसीकजने तु द्वे शवरेऽप्यथ च स्त्रियाम् ।
पत्न्यां स्याद्वर्वरी नद्यां केशविन्यासभिद्यपि ॥५१४८॥
शाकपुष्पभिदोस्त्रिस्तु वक्रकेशेऽपि चाधमे ।
वर्वरीका सरस्वत्यां द्वे तु पक्षिणि चोरणे ॥५१४९॥
केशसंस्थानभेदे च त्रिषु वाक्यकृति स्मृतः ।
वर्वरीको [महाकालशाकभित्केशकर्मसु] ॥५१५०॥
वर्वीः स्त्री शकटे द्वे तु शरभाख्यमहामृगे ।
वर्षोऽस्त्री वत्सरे वृष्टौ दिवसे भारतादिके ॥५१५१॥
प्रावृट्संज्ञत्तुभेदे तु वर्षाः स्त्री भूम्नि कीर्त्तिताः ।
उपवर्षभ्रातरि तु वर्षः पुंसि प्रकीर्त्तितः ॥५१५२॥

वर्षा तु स्त्री च वार्षिक्यां वृष्टौ स्यात्कस्यचिन्मते ।
वर्षकस्त्रिर्वृष्टिकृति वर्षात्स्वार्थे यथायथम् ॥५१५३॥
अथ ग्रीष्मालये क्लीबं वर्षकं कैश्चिदीष्यते ।
वर्षकोशस्तु मासेऽपि तथा ज्योतिषिके पुमान् ॥५१५४॥
वर्षणं तु मतं वृष्टौ दाने मोक्षादिके गुणात् ।
वर्षणिर्वर्त्तनेऽपि स्याद्वर्षणेऽपि कृतौ क्रतौ ॥५१५५॥
षण्ढे वर्षधरो वर्षपर्वतेऽपि पुमान्मतः ।
वर्षवृद्धिस्तु वर्षोपचये जन्मदिनोत्सवे ॥५१५६॥
पुनर्नवायां वर्षाङ्गी वर्षाङ्गो मास इष्यते ।
वर्षाभूः स्त्री च शोथघ्न्यां भूलताप्लवयोः पुमान् ॥५१५७॥
वर्षाभूस्तु द्वयोर्भेके वर्षाभ्वीति यदा तदा ।
वृत्तिः स्याद्योनिमत्यर्थे तथा गण्डूपदेऽपि च ॥५१५८॥
भेकोक्तन्यायभावः स्यात्परेषां तु मतं विदुः ।
पुनर्नवासमाख्यायामोषधी स्त्री तु तत्पुनः ॥५१५९॥
स्यात्संशयितमस्माभिर्यतश्छन्दसि दृश्यते ।
अनादिसम्प्रदायात्ते प्रयोगे कण्ठजोष्मवान् ॥५१६०॥
व्युत्पन्नो ह्वयतेर्धातोर्वर्षाह्वू शब्द एष वै ।
उत्तम्भयेति वर्षाह्वा जुहोतीति ततश्च सः ॥५१६१॥
अपभ्रष्ट उताहोस्विद्वर्षाभूरिति चापरः ।
पुनर्नवायां शब्दोऽस्ति व्युत्पन्नो भवतेरिति ॥५१६२॥
व्युत्पद्यमानो भवतेर्मण्डूके सावकाशकः ।
तस्मात्पुनर्नवायां स्यादयमोष्ठ्यभकारवान् ॥५१६३॥
पुनर्नवायां स्त्री द्वे तु वर्षाभ्रूर्भेक इष्यते ।
वर्षुस्तु वर्षुके वापि वृद्धे स्यादभिधेयवत् ॥५१६४॥
वर्ष्म न स्त्री परिच्छेदे शरीरश्रेष्ठयोरपि ।
स्यादुच्छ्राये च महति शुष्मण्यपि च सुन्दरे ॥५१६५॥
वर्ष्या वृष्ट्यम्बुषु स्त्री भू त्रिस्तु वृष्ट्यब्दसम्भवे ।
वलो दैत्यान्तरे मेघे पर्वतेऽपि पुमांस्तथा ॥५१६६॥

निष्पावसंज्ञके धान्ये काके तु स्याद्वलो द्वयोः ।
उत्तरस्थः शतबले समासात्तु वलौ मतः ॥५१६७॥
वलजः पुरगेहादिद्वार्यनासस्यक्षेत्रयोः ।
अपूतधान्यराशौ तु स्त्री सुरूपस्त्रियामपि ॥५१६८॥
लवणोष्णकटुस्वादुतिक्तात्मनि तु ना रसे ।
त्रि तद्वति बलाज्जातेऽथ युद्धे वलजन्नपि ॥५१६९॥
यूथ्यामथ वणिक्पत्न्यान्ना तु वाणिज्यके मतः ।
वलनं चलने क्लीबं तन्त्वाद्यावर्त्तनेऽपि च ॥५१७०॥
संवृतौ वलयत्यर्थे तु न ना वलना मता ।
वलभिर्वलभी कूटागारे सौराष्ट्रपूर्भिदि ॥५१७१॥
वलभित्पुंसि शक्रे चैकाहक्रत्वन्तरेऽपि च ।
अथारण्यकयोः साम्नोरुपत्वाजामयोः गिरः ॥५१७२॥
इत्यस्यामृचि ये गीते वलभित्तत्र नप्स्मृतम् ।
वलयः कण्ठरोगेऽपि महोदर्याख्यमुस्तके ॥५१७३॥
पुमान्पश्चिमराश्यर्धे (र्थे) कटके त्वस्त्रियामयम् ।
चक्रीकृते वेष्टितेऽपि भवेद्वलयितं त्रिषु ॥५१७४॥
वलाहको गिरौ मेघे वायावश्वे हरेः पुमान् ।
दर्वीकराख्यसर्पाणां भेदे षड्विंशतेः क्वचित् ॥५१७५॥
कृष्णसर्प इति ख्याते निर्विषद्वादशस्वपि ।
एकभेदे स्त्रियां तु स्यादायुधीयजनश्रुते ॥५१७६॥
अन्तर्लोहेन बद्धान्ते फलके स्याद्वलाहका ।
वलिर्जठररेखायां जराप्रशिथिलत्वचि ॥५१७७॥
ऊर्मौ स्त्री गृहदारौ च वाद्यभेदेऽपि गन्धके ।
वलितस्त्रिः सवलने करमुद्रान्तरे पुमान् ॥५१७८॥
अथ स्यात्कृष्णमरिचे वलितं तन्नपुंसकम् ।
वलीमुखं दध्नि गाढास्याख्ये द्वे तु कपौ भवेत् ॥५१७९॥
वलूकोऽपि वलूकश्च शालूके न स्त्रियां भवेत् ।
द्वयोः पक्षिणि रक्ते तु कृष्णे वा वाच्यवन्मतः ॥५१८०॥

वल्कस्तु दशने पुंसि वल्कले त्वस्त्रियां मतः ।
वल्कस्तु दशने पुंसि न स्त्री वल्कलशल्कयोः ॥५१८१॥
वल्कलस्त्वचि वृक्षस्य न स्त्री वस्त्रेऽपि तत्कृते ।
ना वल्करोध्रे त्वक्पत्रे क्ली वल्लभिदि वल्कला ॥५१८२॥
वल्गितं वल्गनेऽप्यश्वगतौ त्रिषु तु तद्युते ।
वल्गु त्रिरम्ये स्त्री वाचि द्वे छागे नेत्ररोम्णि नप् ॥५१८३॥
वल्गुको ना द्रुभेदे क्ली चन्दनेऽपि वने पणे ।
वल्मीरिन्द्रे समुद्रे च पुंसि सान्द्रे तु वाच्यवत् ॥५१८४॥
वल्मीकः सातपे मेघे पुमान्सूर्येऽप्यथास्त्रियाम् ।
वल्मीकः करपादादिशोथे नाकौ तथा मतः ॥५१८५॥
वल्लो गोधूमभेदेऽपि तथा मानान्तरे पुमान् ।
वल्लकी कुन्दुरुक्यामक्षयोगान्तरवीणयोः ॥५१८६॥
वल्लभो दयितेऽध्यक्षे त्रिर्ना सल्लक्षणे हये ।
स्यादगुर्वन्तरे स्त्री तु वल्लभी परिकीर्त्तिता ॥५१८७॥
वल्लभा तु प्रियङ्गौ चाऽतिविषायाञ्च कीर्त्तिता ।
वल्लरिस्त्री लतायां च मञ्जर्यां वल्लरी तथा ॥५१८८॥
वल्लवो द्वे सूपकारे गोपे भीमे पुनः पुमान् ।
वल्ला स्त्री तुवरीधान्ये सा तु संवरणे द्वयोः ॥५१८९॥
मल्लीक्षत्रियजे त्वेषा द्वयोर्वल्ली प्रकीर्त्तिता ।
वल्ली कैवर्त्तिकाचव्याऽजमोदाव्रततिष्वपि ॥५१९०॥
फलवल्लीग्रन्थकाण्डभूषु स्त्री वल्लिवन्मता ।
वल्लिजं मरिचे वंशक्षीर्यां चैव नपुंसकम् ॥५१९१॥
सविषप्रसवे तूद्भिद्भेदे स्याद्वल्लिजः पुमान् ।
वल्लु(ल्लू)रस्तु वनक्षेत्र ऊषरे वाहने तथा ॥५१९२॥
गहनेऽपि च नक्षत्रे क्लीबलिङ्गं प्रकीर्त्तितम् ।
वल्लुरं शाद्वले क्षेत्रगहनेऽनम्भसि स्मृतम् ॥५१९३॥
मञ्जर्यामौषधे कुञ्जेऽपि क्लीबमिति केचन ।
वल्लूरकस्तु वल्लूरे कर्णवैकृतभिद्यपि ॥५१९४॥

वल्लूरा तु त्रयी शुष्कमांसस्त्रकरमांसयोः ।
वव्रः पुमान्ह्रदे त्रिस्तु वव्रो वरणकारिणि ॥५१९५॥
वशङ्गमस्त्रिर्वशगे मन्त्रभेदे वशङ्गतौ ।
वशवर्त्तिन्योषधीभिद्यथ त्रिषु तु यौगिके ॥५१९६॥
स्त्रियां वशा स्याद्वन्ध्यायां स्त्रीमात्रे दुहितर्यपि ।
करिण्यां वन्ध्यगव्यां चाप्यग्निमन्थद्रुमेऽप्यथ ॥५१९७॥
आयत्तत्वे प्रभुत्वे च स्पृहायाञ्च जनेऽपि ना ।
केचिद्वेश्यालये वाल्मीक्यृषिभिज्जन्मसूचिरे ॥५१९८॥
वशन्द्रुतवसायां च क्लीबं क्वाप्युपलभ्यते ।
त्रिष्वायत्ते द्वयोस्तु स्यात्करणीवैश्यसम्भवे ॥५१९९॥
वशिः कान्ते त्रिषु क्लीबं वशित्वे वशि कीर्त्तितम् ।
वशी वश्यात्मनि त्रि स्याद्वशिनी तु स्त्रियां मता ॥५२००॥
शम्यामपि च वन्दायां न क्ली जलविडालके ।
वशिरः किणिहीहस्तिपिप्पल्योः पुंसि कीर्त्तितः ॥५२०१॥
सामुद्रलवणे त्वेतद्वशिरं स्यान्नपुंसकम् ।
वशीरोऽपि वसीरोऽपि वसिरश्चैव न स्त्रियाम् ॥५२०२॥
वश्या वशित्वसिद्धौ न नाऽथ स्याद्वशगे त्रिषु ।
वसतिः स्त्री गृहे रात्राववस्थाने जिनाश्रमे ॥५२०३॥
वसनं छादने वस्त्रे निवासाख्ये च कर्मणि ।
वसन्तः सुरभौ छन्दोरागतालान्तरेषु च ॥५२०४॥
तथाऽतिसाररोगेऽपि पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
वसन्तजा सुरभिमासोत्सवे मल्लिकाभिदि ॥५२०५॥
वसन्ततिलका न क्ली छन्दोभेदे प्रकीर्त्तिता ।
तिलकस्य तु पुष्पे क्ली भाणभेदे रसान्तरे ॥५२०६॥
वसन्तदूतश्चैत्रेऽपि चूते ना पञ्चमस्वरे ।
वसन्तदूती पाटल्यां माधव्यां च स्त्रियां मता ॥५२०७॥
द्रुमान्तरेऽग्निमन्थाभे कोकिले तु द्वयोर्भवेत् ।
स्याद्वसन्तसखः पुंसि कामे च मलयानिले ॥५२०८॥

वसव्यं वसुदेवैस्त्रिः संबद्धे धनयोगिनि ।
वसाऽस्यादार्द्रकाभोद्भिदन्तरे मेदसि तथा ॥५२०९॥
वसादनी शिंशपायामटरूषेऽपि च स्त्रियाम् ।
छत्राकं क्ली तु कवके वसारोहं शिलीन्ध्रके ॥५२१०॥
वसिस्तु वसधातौ ना वस्त्रे स्यात्पुंसि वा स्त्रियाम् ।
वसिष्ठ ऋषिभेदेऽपि पुमांस्तारान्तरेऽपि च ॥५२११॥
वसिष्ठं तूच्यते वासिष्ठवत्कैश्चिन्नपुंसकम् ।
वसुर्नाऽनौ ह्रदे योक्त्रे किरणेऽन्धुकपादपे ॥५२१२॥
पादपे पीतमुद्गे चारत्निसंज्ञप्रमाणके ।
पूर्वक्षत्रियभेदे च देवभेदे बके द्रुमे ॥५२१३॥
आदित्यमरुदग्नीन्द्रवायुरुद्रोऽश्विविष्णुषु ।
शिवे कुवेरेऽप्युषसि सूर्ये चन्द्राष्टसंख्ययोः ॥५२१४॥
त्रिशुष्कस्वादुशस्तेषु न तु क्ली नरमत्स्ययोः ।
मणौ जले च द्रविणे क्लीबं स्याद्वसिरौषधे ॥५२१५॥
वसुदेवे तथा कृष्णे भारद्वाजऋषौ जिने ।
वृद्ध्यौषधे तथा श्यामरैरलेऽश्वेपि मौक्तिके ॥५२१६॥
रौमकाख्येऽपि लवणे वस्वी तु स्यात्स्त्रियां निशि ।
वसुको वासयितरि त्रिः पुमांस्तु बकद्रुमे ॥५२१७॥
अर्वागस्त्याटरूषेषु तालभिद्यपि (कीर्त्तितः) ।
रौमकाख्ये तु लवणे क्लीबं वसुकमिष्यते ॥५२१८॥
वसुदेवः कृष्णताते कण्ववंश्यनृपान्तरे ।
वसुदेवं धनिष्ठायां स्त्री श्वफल्कसुतार्थिका ॥५२१९॥
वसुदैव्या धनिष्ठायां तथैव नवमीतिथौ ।
वसुधास्त्रिर्धनवति भूलक्ष्म्यो (स्तु स्त्रियामियम्) ॥५२२०॥
वसुधा तु नदीबौद्धदेवीभिद्लकास्वपि ।
वसुधासुत इत्येष भौमे च नरकासुरे ॥५२२१॥
वसुप्रभाऽग्निजिह्वानामेकस्यामलकापुरि ।
वसुमान्वसुयुक्ते त्रिर्वसुमत्यवनि स्त्रियोः ॥५२२२॥

वसुरेतास्तु वह्नौ स्याच्छिवे चापि प्रयुज्यते।
वसुलस्तु द्वयोर्देवे वसुदत्ताऽभिधे तु ना ॥५२२३॥
वसुश्रेष्ठस्तु विष्णौ ना रजते तु नपुंसकम्।
वसुषेणस्तु कर्णेऽपि विष्णावपि पुमान्मतः ॥५२२४॥
वसुसाराऽलकापुर्यां योगार्थे तु यथायथम्।
वसूको बकवृक्षे ना क्ली तु स्याल्लवणान्तरे ॥५२२५॥
वसोर्धाराऽग्निचयनघृतहोमे ग्रहाऽन्तरे।
स्वर्गङ्गायां तथा स्वाहादेव्यां तीर्थान्तरेऽपि च ॥५२२६॥
वस्तिर्मूत्राशये नाभेश्चाधोदेशेऽभिषज्य ताम्।
द्वे स्नेहनोपकरणे दशायामम्बरस्य च ॥५२२७॥
अथ वस्तिः पुमान्धातौ वसावादादिके स्मृतः।
वस्ति ग्रामनगर्यादिपदार्थेऽपि धने (नपि) ॥५२२८॥
वस्तुकं वस्तुनि तथा वास्तूके क्लीबमुच्यते।
वस्त्रं स्यादंशुके क्लीबं तथा (वस्त्रा नदीभिदि) ॥५२२९॥
स्याद्वस्त्रकुट्टिमं छत्रे तथैव पटवेश्मनि।
वस्नं रुमाजे लवणे मूल्ये मेढ्रागमे तु ना ॥५२३०॥
वस्नोऽह्नि वस्त्रं तु गृहे वेतने च नपुंसकम्।
वस्वौकसारा वस्वोकसारापि स्यान्नदीभिदि ॥५२३१॥
अलकायामपि तथाऽमरावत्यामपीष्यते।
वहा नद्यां वहो वायौ गोश्वादिस्कन्धदेशके ॥५२३२॥
मानान्तरे चतुर्द्रोणे युगांशे मार्ग एव च।
वहतो वृषभेऽपि स्यात्पथिकेऽपि तथा पुमान् ॥५२३३॥
वहतिस्तु कुटुम्बेऽपि पुत्रेऽमात्ये वृषे पुमान्।
वहती त्वापगायां स्त्रीलिङ्ग एव प्रकीर्त्तिता ॥५२३४॥
वहतुस्तु बलीवर्दे कालेऽग्नौ पथिके पुमान्।
वहनं भारभरणे रथादीनां च यापने ॥५२३५॥
स्यन्दे रथविशेषे च चतुरस्रे सकूबरे।
वहन्तो रथरेणौ ना वहन्ती वोढरि त्रिषु ॥५२३६॥

ना विस्तृतकरे हस्ते क्ली ताम्रे मकरेऽपि च ।
वहन्त्यस्तु सरन्तीषु स्त्रीबहुत्वेऽप्सु कीर्त्तिताः ॥५२३७॥
क्लीबं वहित्रं पोतोपवहनाख्यरथान्तरे ।
वह्निस्त्वग्नौ पुमानुक्षिण द्वयोस्त्वश्वे त्रहिस्तथा ॥५२३८॥
भल्लातक्यां त्रिसंख्यायाञ्जम्बीरे चित्रकेऽपि च ।
रेफे कल्पेऽष्टमे चापि वाहने च पुमानयम् ॥५२३९॥
वह्निगर्भः समुद्रेऽपि वेणौ वृक्षे तथा पुमान् ।
वह्निगर्भा पुनः स्त्रीत्वे शमीवृक्षे प्रकीर्त्तिता ॥५२४०॥
वह्निज्वाला तु धातक्यां पुमांस्तु नरकान्तरे ।
अजमोदा वह्निदीपिका कुसुम्भे पुनः पुमान् ॥५२४१॥
वह्निबीजं सुवर्णेऽपि जम्बीरे रेफ एव च ।
स्यात्कुसुम्भे वह्निमुखं योगार्थे तु यथायथम् ॥५२४२॥
कुसुम्भे कुङ्कुमे क्लीबलिङ्गं वह्निशिखं मतम् ।
धातक्यां गणिकारीकाश्मर्योर्वह्निशिखा स्त्रियाम् ॥५२४३॥
अथ वह्निसखो वायौ जीरकेऽपि पुमान्मतः ।
वा स्याद्विकल्पोपमयोर्वितर्के पादपूरणे ॥५२४४॥
समुच्चये च विस्तम्भे नानार्थाऽतीतयोरपि ।
एवार्थेऽपि तथेवार्थे चार्थे तच्चाव्ययम्मतम् ॥५२४५॥
वांशी स्त्री स्यात्तुगाक्षीर्यां वंशसम्बन्धिनि त्रिषु ।
वांशिकस्त्रिषु वेणोश्च वादके वांशभारिके ॥५२४६॥
वाको वाका द्वयोरुक्तौ वाकं स्यात्सामभित्स्वपि ।
वाक्यं तु वचने क्लीबं सक्रिये कारके तथा ॥५२४७॥
मीमांसायां तर्कशास्त्रे शास्त्रार्थे परिकीर्त्तितम् ।
वागरो वारके शाणे निर्जरे वाडवे वृके ॥५२४८॥
मुमुक्षौ पण्डिते चापि परित्यक्तभयेऽपि च ।
निर्णकेऽपि विशाले च वागरो वारके पुमान् ॥५२४९॥
वागीशा तु सरस्वत्यां ना ब्रह्मणि बृहस्पतौ ।
वागीश्वरस्तु धिषणे ब्रह्मण्यपि पुमान्मतः ॥५२५०॥

वागीश्वरी सरस्वत्यां स्त्रियां वागीश्वराऽपि च ।
वागुरा मृगबन्धन्यां स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥५२५१॥
वागुरस्तु द्वयोरुक्तो वैश्यवेनीसमुद्भवे ।
वाग्दुष्टं दूषिते वाचा द्वयोस्तु व्रात्य इष्यते ॥५२५२॥
वाग्मी शुके द्वे ना जीवे वाचोयुक्तिपटौ त्रिषु ।
वाग्यः कल्येऽपि निर्वेदे वाग्दरिद्रेऽपि वाच्यवत् ॥५२५३॥
वाघतस्याद्दत्विजि पुमान्मेधाविनि तथा मतः ।
साहित्ये वाङ्मयं क्लीवं वाग्देव्यां वाङ्मयी स्त्रियाम् ॥५२५४॥
वाग्वाण्यां गौणावृत्त्या सा शब्दे वक्त्रेऽपि च स्त्रियाम् ।
एकाहभेदे जिह्वायां साम्नि वाङ्निधनाभिधे ॥५२५५॥
वाचंयमो मुनौ त्रिस्तु वाग्यते परिकीर्त्तितः ।
वाचो मत्स्यविशेषे द्वे पुमांस्तु मदनद्रुमे ॥५२५६॥
वाचको वाच्यवत्पाठकेऽपि चार्थाभिधायके ।
वाचनस्योपयुक्तेऽपि तथा वाचनकं मतम् ॥५२५७॥
वाचाला शारिकायां स्त्री बहुगर्ह्यगिरि त्रिषु ।
सन्देशे वाचिकं क्ली वागाशीर्दत्ते पुमान्मतः ॥५२५८॥
वाच्यस्त्रि कुत्सितेऽधीने विहीने वदितव्यके ।
प्रजापतौ तु पुँल्लिङ्गे वाच्यन्दोषे नपुंसकम् ॥५२५९॥
वाजः पक्षीषुपक्षे रेतसि वेगे स्वने युधि ।
अन्ने चैत्रे ऋभूणां च त्रयाणां क्वचिदिष्यते ॥५२६०॥
वाजं केचित्क्लीबमाहुर्घृतयज्ञान्नवारिषु ।
वाजपेयोऽस्त्रियां सोमसप्तसंख्यासु च क्वचित् ॥५२६१॥
पुमांस्तु तस्य मन्त्रे च कल्पे च परिकीर्त्तितः ।
पुमान्वाजसनिर्विष्णौ साम्नोरपि कयोश्चन ॥५२६२॥
याज्ञवल्क्ये वाजसनेयो नृ भूयाजुषेषु च ।
वाजिस्त्री पुङ्खवसने केशपङ्क्तौ द्वयोर्हये ॥५२६३॥
वाजी नाग्नौ गुरौ बाणे द्वे तु घोटकपक्षिणोः ।
त्रि वाजवति ना सप्तसंख्याऽर्यम्णोस्तथाऽनिले ॥५२६४॥

वाच्यवद्वाजिनं वाजिसम्बन्धिनि समीरितम् ।
वाजिनं तु मतं क्लीबं नवामिक्षाजवस्तुनि ॥५२६५॥
वाजिनी त्वश्वगन्धायामश्वायां चोषसि स्मृता ।
वाञ्छितस्तालभेदे स्यादिच्छायां तु नपुंसकम् ॥५२६६॥
वाटस्तु वेष्टने पुंसि नगरे भोजने गृहे ।
मण्डले वलये मार्गे स्त्रियां वाटी तथा मता ॥५२६७॥
कुट्यां पक्षिविशेषेऽथ वरण्डाङ्गान्नभित्सु नप् ।
स्त्रियां तु वाटी गेहान्तःक्लृप्ते पुष्पफले वने ॥५२६८॥
अस्त्री वृतौ द्वे तु वैश्यमैत्रीपुत्रेऽपि वास्तुनि ।
वाट्या बलायां स्त्री त्रिस्तु वेष्टयवेष्टयितव्ययोः ॥५२६९॥
वटयोगिनि वाट्यस्तु पुमान्भृष्टयवे मतः ।
वाडबो वडबाऽग्नौ ना ब्राह्मणे तु द्वयोर्मतः ॥५२७०॥
वाडवं करणे स्त्रीणां घोटकौघे नपुंसकम् ।
मुहूर्त्तभेदेऽप्यस्त्री तु पाताले दक्षिणध्रुवे ॥५२७१॥
नरकेऽपि च केषाञ्चिन्मते वाडबमिष्यते ।
वाडबेयोऽश्विनोः पुंसि वृषेऽथ ब्राह्मणे द्वयोः ॥५२७२॥
वाणं हुडुक्कहिक्कायां (छन्दोभिद्वीणयोस्तु ना) ।
वाणः स्याद्गोस्तने दैत्यभेदे केवलकाण्डयोः ॥५२७३॥
वाणा तु वाणमूले स्त्री नीलीझण्ट्यां पुनर्द्वयोः ।
वाणिनी तु विदग्धायां नर्त्तक्यां मत्तयोषिति ॥५२७४॥
वाणिर्वानेऽम्बुदे वाचि स्तुतावपि भवेत्स्त्रियाम् ।
वाणी वाने सरस्वत्यां वाग्वाद्यस्वरवेणुषु ॥५२७५॥
छन्दोभिदोश्च वाण्यौ तु युगेऽपि स्याद्रथादिनः ।
नदीभेदेऽपि वाणी स्यात्सा केषाञ्चित् सरस्वती ॥५२७६॥
वाणिजो वणिजि प्रोक्तस्तथैव वडबानले ।
वातं त्रिकृतवाने ना वायौ वातिकृतौ तु नप् ॥५२७७॥
वातकेलिः कलालापे षिङ्गदन्तक्षते पुमान् ।
वात्यायां पिच्छिलस्फोटे वामायां वातशोणिते ॥५२७८॥

स्त्रियां वातखुडा वातहुडावत्परिकीर्त्तिता ।
वातगामी पक्षिणि द्वे त्रि तु स्याद्वातयायिनि ॥५२७९॥
वातगामी तु वातूलोत्कचयोः शक्रकार्मुके ।
वातगुल्मस्तु वात्यायां (वात) व्याधौ पुमान्मतः ॥५२८०॥
वातघ्नस्तु पुमानेष उक्त एरण्डपादपे ।
वातघ्नी त्वमनुष्ये स्याद्वाच्यवद्वातघातके ॥५२८१॥
वातजं शूलभेदे स्याद्योगे तु स्याद्यथायथम् ।
वातपुत्रो महाधूर्त्ते भीमसेने हनूमति ॥५२८२॥
वातप्रमीः स्त्री वात्यायां द्वे तु वातमृगाश्वयोः ।
नकुलेऽपि च केषाश्चिन्मते वातप्रमीः स्मृतः ॥५२८३॥
द्वयोर्वातमृगे द्वे वातगे वातमजो मतः ।
वातरायण उन्मत्ते निष्प्रयोजनपूरुषे ॥५२८४॥
क्रकचे करपत्रे च सायके शरसङ्क्रमे ।
वातरायण इत्युक्तः कैश्चिच्च सरलद्रुमे ॥५२८५॥
वातारूषश्चक्रवातोत्कोचेन्द्रधनुरुत्कटे ।
वातवेगस्तु गरुडे धृतराष्ट्रसुते क्वचित् ॥५२८६॥
वातव्याधिस्तु योगार्थेऽनिरुद्धे तु पुमान्मतः ।
पुमान्वातसुतो वेश्याऽऽचार्ये योगे यथायथम् ॥५२८७॥
स्त्रियां वातहुडा वात्या राजशोणितयोरपि ।
पिच्छिलस्फोटिकायां च वामायामपि योषिति ॥५२८८॥
वातादो मृगभेदे द्वे बादामे ना फलेऽस्य नप् ।
वातापिर्दैत्यभेदे ना त्रिषु [वातस्य पातरि] ॥५२८९॥
वातायनोऽनिले चोलौ नृभूस्यात्सामशाखिषु ।
द्वयोरश्वे गवाक्षे तु क्लीवं वातायनं मतम् ॥५२९०॥
वातारिस्तु शतावर्यां निर्गुण्ड्येरण्डयोरपि ।
अजमोदास्नुहीभार्गीभल्लातकविडङ्गके ॥५२९१॥
सूरणे पुत्रदात्र्यां च जतुकायाम्प्रकीर्त्तिता ।
वातिर्वायौ रवीन्द्वोर्ना गतिगन्धनकर्मणि ॥५२९२॥

धातौ तत्क्रिययोस्तु स्त्री वातिः शोषे तथा मता ।
वातिको विषवैद्ये द्वे त्रिषु स्याद्वातरोगिणि ॥५२९३॥
तथा वातस्य शमने कोपने चापि वस्तुनि ।
द्वयोस्तु चातकेऽप्येष वातिको मान्त्रिकेऽपि च ॥५२९४॥
स्कन्दानुगामिनि क्वचित्पुंस्येष परिकीर्त्तितः ।
वातिगः पुंसि भण्टाक्यां धातुवादिनि वाच्यवत् ॥५२९५॥
वातुलस्तु सवाते त्रिः शिम्बीधान्यान्तरे पुमान् ।
प्रियङ्गौ चक्रवाते च वातुलः परिकीर्त्तितः ॥५२९६॥
वातूलः पुंसि वात्यायां त्रिर्वातासहवातले ।
वात्या स्त्री चक्रवातेऽथ वात्यस्त्रिर्वातयोगिनि ॥५२९७॥
वात्सकं वत्सयूथे क्ली त्रिस्तु वत्सकयोगिनि ।
वात्सीपुत्रो नापिते द्वे नागर्ष्यन्तरयोः पुमान् ॥५२९८॥
वात्स्यस्त्रिवत्साऽपत्यादौ वात्स्यं वत्सत्व इष्यते ।
वादस्तु कलहेऽप्युक्तस्तथा वीणादिवादने ॥५२९९॥
वादनं वदनेन त्रिः सम्बद्धेऽथ न ना युचि ।
वादलः स्याद्यष्टिमधौ वादलं स्याच्च दुर्दिने ॥५३००॥
वादान्यस्त्रिर्वदान्येन सम्बद्धेऽन्यत्र वादतः ।
वादिकस्त्रिर्वादवति मान्त्रिके वातिकाभिधे ॥५३०१॥
वादिकं क्ली तु वाद्ये स्याद् भेद्यलिङ्गं तु कर्त्तरि ।
अण्यन्तं वदतेर्ण्यन्ते वदतः कर्मणि स्मृतः ॥५३०२॥
वादित्रं वाद्यनिर्घोषे वाद्ये चापि नपुंसकम् ।
वदितुस्तु त्रिसम्बन्धिन्येतद्वादित्रमिष्यते ॥५३०३॥
वादिराट् पुंसि मञ्जुश्रीबुद्धे योगार्थ इष्यते ।
वाद्यन्तु क्लीबमातोद्ये त्रिर्वाद्यो वादनीयके ॥५३०४॥
वाद्यमानं त्रियोगार्थे वाद्यभाण्डे नपुंसकम् ।
वाध्रीणसो द्वयोश्छागे गण्डकेऽप्युक्षिण पक्षिणि ॥५३०५॥
कृष्णग्रीवे रक्तशीर्षे श्वेतपक्षे प्रकीर्त्तितः ।
वानं शुष्कफले शुष्के त्रि क्ली स्यूतौ च शोषणे ॥५३०६॥

वातेर्धातोः क्रियायां च क्टे वानं प्रकीर्त्तितम् ।
वानकं ब्रह्मचर्ये क्ली त्रि तु स्याद्वनितर्यपि ॥५३०७॥
वानप्रस्थो मधूके च वैखानसपलाशयोः ।
नपुंसकं तु प्रसवे स्यान्माधूकपलाशयोः ॥५३०८॥
वानरो ना तुरुष्काख्यनिर्यासेऽथ कपौ द्वयोः ।
कपिकच्छ्वौ पुनः स्त्रीत्वे वानरी परिकीर्त्तिता ॥५३०९॥
वानस्पत्यः शिवे पुंसि फलात्पुष्पवति द्रुमे ।
क्ली द्रुमाणां फले कुञ्जे त्रिर्वनस्पतियोगिनि ॥५३१०॥
वानायुस्तु द्वयोरश्वे वनायुविषयोद्भवे ।
नृभूम्नि तद्देशजने वातायौ कस्यचिद्द्वयोः ॥५३११॥
वानीरो वेतसे पुंसि तथा चित्रक इष्यते ।
वानीरकस्तु वानीरे मुञ्जेऽपि च पुमान्मतः ॥५३१२॥
वानीरजस्तु मुञ्जे वनीरजं कुष्ठभेषजे ।
वानेयं मुस्तके क्लीबं त्रिषु स्याद्वनसम्भवे ॥५३१३॥
वान्तादः कुक्कुरेऽपि द्वे तथा पक्ष्यन्तरे मतः ।
वापन्योदनभिक्षायां ग्रासमात्र्यां स्त्रियां मता ॥५३१४॥
अथ वापयतेरर्थे वापनं वापना नना ।
वापितं तु मतं बीजाकृतमुण्डितयोस्त्रिषु ॥५३१५॥
वापी तु दीर्घिकायां स्याज्ज्योतिर्योगान्तरेऽपि च ।
वामस्तु प्रतिकूले च त्रिषु सुन्दरसव्ययोः ॥५३१६॥
द्वयोस्तूष्ट्रेऽथ पुँल्लिङ्गो वामः स्याद्वरुणे सरे ।
पयोधरे हरे वान्तौ रुद्रभिद्वामहस्तयोः ॥५३१७॥
वामा स्त्री नवशक्तीनां शिवस्यैकत्र योषिति ॥
योषिद्भेदेऽपि दुर्गायां सरस्वत्यां श्रियामपि ॥५३१८॥
नदीभेदे पार्श्वनाथमातर्यपि तथा मता ।
वामी शृगालीवडवारासभीवेसरीषु च ॥५३१९॥
वामकस्त्रिर्मतो वामे द्वे तु स्यात्सङ्करान्तरे ।
अथ मुद्राविशेषे तु वामकं स्यान्नपुंसकम् ॥५३२०॥

वामदेवः शिवेऽमात्ये तथा दशरथस्य च ।
शाल्मलिद्वीपगिरिभिद्दषिभिद्व्याधिभित्सु च ॥५३२१॥
ब्रह्ममासतृतीयां वामदेवी तु पार्वती ।
वामनस्तु त्रिषु ह्रस्वे पुमांस्तु मदनद्रुमे ॥५३२२॥
अवतारान्तरे विष्णोस्तथा दक्षिणदिग्गजे ।
स्त्री वामलोचनेत्येषा स्त्रीभेदे परिकीर्त्तिता ॥५३२३॥
क्ली कर्मधारये चाथ बहुव्रीहौ तु भेद्यवत् ।
वायसोऽगुरुवृक्षे च श्रीवत्सध्वाङ्क्षयोः पुमान् ॥५३२४॥
वयस्सम्बन्धिनि तथा वायसस्त्रिषु कीर्त्तितः ।
काकोदुम्बरिकायां तु काकमाच्यां च वायसी ॥५३२५॥
क्लीबं वायुफलं शक्रकार्मुके करकेऽपि च ।
वारः क्रियाभ्यावृत्तौ च समूहेऽवसरे क्षणे ॥५३२६॥
द्वारे हरे कुब्जवृक्षे चारे सूर्यादिवासरे ।
वारी स्याद्गजबन्धन्यां कलस्यामपि योषिति ॥५३२७॥
वारकोऽश्वगतौ पुंसि वाच्यवत्स्यान्निषेधके ।
वारकीरस्तु पुंसि स्याद्द्वारग्राहिणि वाडवे ॥५३२८॥
यूकायां वेणिवेधन्यां नीराजितहयेऽपि च ।
वारङ्गः पक्षिणि द्वे स्यात्खड्गैकावयवे तु ना ॥५३२९॥
वारणो हस्तिनि द्वे स्यात्पुंसि सेतौ प्रकीर्त्तितः ।
स्त्रियां पुंसि तथैवेयं वारणा स्यान्निवारणे ॥५३३०॥
वरणद्रोस्तु विकृतौ त्रि स्याद्वरणयोगिनि ।
वारवाणोऽस्त्रियामुक्तः कञ्चुके कवचेऽपि च ॥५३३१॥
वाराहं सामभेदे क्ली वाराही तु स्त्रियां मता ।
विष्वक्सेनप्रियानाम्न्यामोषधौ च लतान्तरे ॥५३३२॥
वाराहवृन्दसंज्ञे स्यादन्यस्यां क्वचिदोषधौ ।
सप्तानां चैव मातॄणामेकस्यामपि मातरि ॥५३३३॥
वाराहं सामभेदेषु वराहमुनिना पुनः ।
कृते वराहसन्बन्धिन्यपि त्रिषु समीरितम् ॥५३३४॥

वारिः स्त्री हस्तिनो यत्र गृह्यन्ते तत्र कीर्त्तिता ।
अथ वारिकलश्यां च जलेऽपि च नपुंसकम् ॥५३३५॥
वारिजं त्वब्धिलवणे पद्मे शङ्खे तु वारिजः ।
वारिणिस्तु पशौ द्वे स्यात्पशुवृत्त्यां तु सा स्त्रियाम् ॥५३३६॥
वारिपिण्डस्तु मण्डूके द्वयोः पाषाणगर्भजे ।
यौगिके त्वस्य लिङ्गादि तर्कणीयं यथायथम् ॥५३३७॥
वारुः शुष्कफले पुंसि जङ्घायां स्त्री हये द्वयोः ।
वारुण्युमाप्रतीच्योश्च सुरायाञ्च लतान्तरे ॥५३३८॥
[1]वरुणस्य तु सम्बन्धिन्युदितं वारुणं त्रिषु ।
वारूढस्तु कपाटे च तथा वस्त्राऽञ्चलेऽपि च ॥५३३९॥
पावके पञ्जरे चैव शम्बलेऽपि पुमान्मतः ।
वार्क्षं क्लीबं वने वृक्षसम्बन्धिनि पुनस्त्रिषु ॥५३४०॥
वार्त्ता तु वर्त्तनोदन्तकृषिप्रभृतिवृत्तिषु ।
वार्त्ताक्यां च स्त्रियां वार्त्तं निःसारारोग्ययोरथ ॥५३४१॥
त्रिर्वृत्तवृत्तिसम्बन्धिन्यपि स्यादवृत्तिमत्यपि ।
वार्त्ताकी त्रिः शब्दफलस्तम्बे वातिङ्गनाह्वये ॥५३४२॥
प्रसहाख्ये क्षुद्रफले स्तम्बे तत्प्रसवे तु नप् ।
वार्त्तिकस्तु द्वयोर्दूते व्याख्याग्रन्थान्तरे तु नप् ॥५३४३॥
तथा विवाहविख्यातधूलिभक्तेऽपि कीर्त्तितम् ।
वार्दूरं कृष्णलाबीजदक्षिणावर्त्तशङ्खयोः ॥५३४४॥
काकचिञ्चीभवे बीजे वारिक्रिमिजनीरयोः ।
वार्धकं वृद्धसङ्घाते वृद्धत्वे वृद्धकर्मणि ॥५३४५॥
वार्धुषिस्त्वृणवृद्धौ स्त्री वृद्ध्या जीवे तु भेद्यवत् ।
वार्ध्रीणसः खड्गमृगे मतः स्त्रीपुंसयोरयम् ॥५३४६॥
कृष्णग्रीवे रक्तशीर्षे श्वेतपक्षे विहङ्गमे ।
त्रिविधे त्विन्द्रियक्षीणे श्वेते चाजापतौ पुमान् ॥५३४७॥

---

१. वारुणी गण्डदूर्वायां प्रतीचीसुरयोरपि ।

वार्वटीरो नक्र आम्रास्थ्न्यङ्कुरे गणिकासुते ।
वार्षिकं त्रायमाणाख्यभेषजे नप्यथ त्रिषु ॥५३४८॥
वर्षासु भवजातादौ निर्वृत्तं यच्च किञ्चन ।
वर्षणं वर्षाभिर्वा स्यात्तत्राधीष्टादिकेऽपि तत् ॥५३४९॥
वालस्तु ना संवरणे चलने केशपुच्छयोः ।
विशेषादश्वकरिणोः पुच्छे ह्रीबेरके तु नप् ॥५३५०॥
वाली हर्षुलकन्या स्यात्स्त्रियां स्याज्जतुकाहला ।
नारिकेले हरिद्रायां मल्लिकाभिदि वालधौ ॥५३५१॥
वाच्यलिङ्गोऽर्भके मूर्खे तथाऽलङ्कारभिद्यपि ।
वालकं त्वस्त्रियां ज्ञेयं वलये चाङ्गुलीयके ॥५३५२॥
ह्रीबेरे क्ली शिशौ द्वे स्त्री वालिका सिकतासु च ।
ऊर्मौ च कर्णपृष्ठस्थे विज्ञेया भूषणान्तरे ॥५३५३॥
वालवायः पुमाञ्शैलविशेषे परिकीर्त्तितः ।
वालैः कार्यस्य वस्त्रस्य यः कर्त्ता त्रिषु तत्र च ॥५३५४॥
वालि नावश्विनी ऋक्षे वाली सुग्रीवपूर्वजे ।
केशह्रीबेरपुच्छादियुक्तार्थे त्वभिधेयवत् ॥५३५५॥
वालुका सिकतासु स्त्री क्ली त्वेलावालुकौषधे ।
पुण्डरीकसमाख्ये च वालुकं स्याद्विषान्तरे ॥५३५६॥
वावीर उत्पत्तिक्षेत्रेऽप्यमोघे परिकीर्त्तितः ।
वाशा स्त्रियामाटरूषे वाशी वाचि प्रकीर्त्तिता ॥५३५७॥
हिमसृष्ट्यै च सूर्यस्य रश्मीनां यच्छतत्रयम् ।
तत्रैकत्राऽथ वाशी स्याद्वशसम्बन्धिनि त्रिषु ॥५३५८॥
वाशा तु पुंसि स्त्रीत्वे च वाशिते परिकीर्त्तिता ।
वाशं तु सामभेदे क्ली क इ वेदेत्यृचि स्थिते ॥५३५९॥
वाशिरग्नौ वाशयतौ वाशतौ वाश्यतावपि ।
द्वे गोमायौ प्रजननप्राप्तायां स्त्री चतुष्पदि ॥५३६०॥
अथ भीरावयं वाशिर्भेद्यवत्परिकीर्त्तितः ।
वाशिता तु करिण्यां च स्त्रीत्वे योषिति च स्मृता ॥५३६१॥

वाशुरः पक्षिणि द्वे स्याद्वाशुरा तु स्त्रियां निशि ।
वाश्रा चाप्यथ वाश्रस्तु पुरुषे शब्दवृन्दयोः ॥५३६२॥
वाश्रो ना दिवसे क्लीबं मन्दिरे च चतुष्पथे ।
वासतेयी तु रात्र्यां स्त्री साधौ तु वसतौ त्रिषु ॥५३६३॥
वासनस्तु पुमान्गेहावयवे घिन्दुसंज्ञके ।
वारिधान्यां च वस्त्रे च प्रत्याशाज्ञानयोः स्त्रियाम् ॥५३६४॥
वासना तु न ना गन्धधूपाद्यैर्भावनाविधौ ।
तथा निवासयत्यर्थे वस्तेर्हेतुकृतावपि ॥५३६५॥
वासनीयं कुङ्कुमे क्ली त्रि तु वासयितव्यके ।
वासन्तो ना कुरवके त्रिषु त्ववहिते तथा ॥५३६६॥
जाते वसन्तात्तद्योगिन्यपि तत्पुष्पजातिषु ।
वासन्ती माधवीयूथ्योः [कोकिलायामपीष्यते] ॥५३६७॥
वासरो दिवसे न स्त्री ना त्वग्नौ प्रावृषि स्मरे ।
वासवो वसुसम्बन्धिन्यथ त्रिर्ना पुरन्दरे ॥५३६८॥
यूपस्यारत्नयः सप्तदशद्वादश एष्वपि ।
वासिका स्त्री माल्यदाम्नि वासिकं तु नपुंसकम् ॥५३६९॥
गृहच्छदिष्काष्ठभेदे सन्धिकाष्ठाह्वये स्मृतम् ।
वासिता करिणीनार्योर्वासितं भाविते रुते ॥५३७०॥
वासुकं रौमकाख्ये क्ली लवणेऽर्कद्रुमे तु ना ।
वासुदेवस्तु ना विष्णौ द्वयोस्तु स्यात्तुरङ्गमे ॥५३७१॥
वासुरा वासितायां स्याद्वासतेयभुवि स्त्रियाम् ।
वास्तुरस्त्री गृहे सीम्नि सुरुङ्गागृहभूपुरे ॥५३७२॥
वाहस्तु ना बलीवर्दे वहने त्वंसयुग्मके ।
प्रस्थद्वयेऽर्धखार्यां स्यात्तथाखारीचतुष्टये ॥५३७३॥
स्त्रीपुंसयोस्तु वाहोऽयं मतो गर्दभघोटयोः ।
वाहसो जलनिर्याणे शयालौ सुनिषण्णके ॥५३७४॥
क्ली तु स्याद्वाहनं युग्ये वाहनी तु स्त्रियामियम् ।
पुरस्य राजमार्गे स्यादुपनिष्करसंज्ञके ॥५३७५॥

अना तु वाहयत्यर्थे वाहनं वाहनाऽपि च ।
ना त्वग्नौ सुनिषण्णाख्यशाके च जलनिर्गमे ॥५३७६॥
मेघलिङ्गस्तु वहनकर्म्मजीवे प्रकीर्त्तितः ।
वाहिकाः पुंसि भूम्नि स्युष्टर्कनामनि नीवृति ॥५३७७॥
तुलासंज्ञोन्मानभेदाद्दक्षं दशगुणं स्मृतम् ।
वृद्ध्या दशगुणं तस्मात्स्थितेष्वाचितकादिषु ॥५३७८॥
अष्टासु परिमाणेषु षट्को वाहिकमुच्यते ।
वाहिनी स्यात्तरङ्गिण्यां सेनासैन्यप्रभेदयोः ॥५३७९॥
वाह्यं वाहयितव्ये त्रिर्वोढव्ये वाहसाधुनि ।
नपुंसकं तु वाह्यं तद्वाहने परिकीर्त्तितम् ॥५३८०॥
विगन्तरि त्रिषु खगे द्वयोर्ना परमात्मनि ।
विनिग्रहे नियोगे च विज्ञाने पादपूरणे ॥५३८१॥
निश्चयेऽसहने हेतावव्याप्तिविनियोगयोः ।
ईषदर्थे परिभवे शुद्धावालम्बनेऽपि च ॥५३८२॥
विकचः क्षपणे केतौ नाऽकेशे स्फुटितेऽन्यवत् ।
विकटा वज्रवाराह्यां त्रिषूरुविकरालयोः ॥५३८३॥
विकर्त्तनो रवौ पुंसि कर्त्तने तु विकर्त्तनम् ।
अथ कर्त्तयतेरर्थे न पुंसि स्याद्विकर्त्तना ॥५३८४॥
विकल्पः पुंसि भ्रान्तौ च कल्पने (संशयेऽपि च) ।
विकसुको ना परिस्रोतो रसे त्रि गुणवादिनि ॥५३८५॥
विकारस्त्वन्यथाभावे रागे च परिकीर्त्तितः ।
विकाशः पुंसि विजने प्रकाशे (च प्रकीर्त्तितः) ॥५३८६॥
विकुस्रस्तु समुद्रेऽपि चन्द्रेऽपि परिकीर्त्तितः ।
विकृतो न स्त्रियामुक्तो रसे बीभत्सनामनि ॥५३८७॥
त्रि तद्वति विकारेणान्विते पक्षिकृतेऽपि च ।
तथा वीतकृतेऽपि स्याद्रोगिदूरूपयोरपि ॥५३८८॥
नानाविधक्रिये क्ली तु विकृतं विविधं कृते ।
त्रपाद्यैरुचितस्याप्यनुक्तौ भावान्तरे स्त्रियाः ॥५३८९॥

विक्रमः शक्तिसम्पत्तौ क्रान्तौ क्षान्तौ तथा पुमान् ।
विक्लिन्नो रजसा जीर्णे शीर्णे चार्द्रे च वाच्यवत् ॥५३९०॥
विगतं निष्प्रभे वीतेऽप्यभिधेयवदिष्यते ।
विगूढो गर्हितेऽपि स्याद् गुप्ते च त्रिषु (कीर्त्तितः) ॥५३९१॥
विग्रस्तु गतनासेऽपि तथा मेधाविनि त्रिषु ।
तत्तु मेधाविनि न्याय्यं गतनासे त्वसाम्प्रतम् ॥५३९२॥
यस्मात्स्मृतिर्वेर्घ इति नतु वेग्र इतीदृशम् ।
विग्रहो व्यासवाक्येऽपि विस्तारे युद्धदेहयोः ॥५३९३॥
वेर्ग्रहे च पुमानुक्तस्त्रि तु स्याद्विगतग्रहे ।
विघ्नकारी स्मृतो घोरदर्शनेऽपि विघातिनि ॥५३९४॥
भवेद्विचकिलो मल्लीप्रभेदे मदने पुमान् ।
विचक्षणः कृष्णशिम्बौ पण्डिते त्रिर्विचक्षणः ॥५३९५॥
विचिकित्सा संशये स्याद्योगार्थे तु यथायथम् ।
स्त्री विच्छित्तिस्तु विच्छेदे भावभेदे च योषिताम् ॥५३९६॥
स चायं वस्त्रमाल्यादेर्न्यासे ना स्थोपशोभितः ।
हारभेदेऽङ्गरागे च शब्दोऽयमपि च स्त्रियाम् ॥५३९७॥
विच्छिन्नं तु समालब्धे वाच्यवत्स्याद्द्विधाकृते ।
विजन्मा गर्ह्यजन्मन्यप्यभिधेयवदिष्यते ॥५३९८॥
शूद्रपूर्वकवैश्यायां व्रात्याज्जाते द्वयोरयम् ।
विजयस्तु जये खड्गे चार्जुनेऽपि पुमान्मतः ॥५३९९॥
विजया तु हरीतक्यां भङ्गायां [तिथिभिद्यपि] ।
विजिज्ञासा तु मीमांसने स्त्री योगे यथायथम् ॥५४००॥
विजृम्भणं सुचेष्टायां क्लीबं त्रिषु विकस्वरे ।
विजृम्भितं जृम्भणे क्ली त्रि सजृम्भे विकस्वरे ॥५४०१॥
विज्ञानं [क्लीबलिङ्गं स्याच्चेतनाज्ञानकर्म्मसु] ।
विटोद्रौ लवणे षिङ्गे मूषिके खदिरेऽपि च ॥५४०२॥
विटकान्ता हरिद्रायां योगार्थे तु यथायथम् ।
विटङ्कः पादपाङ्गे च गृहस्यावयवेऽपि च ॥५४०३॥

विटपो न स्त्रियां स्तम्बशाखाविस्तारपल्लवे ।
विट्पतिर्द्वे सुरे ना जामातरि त्रिविंशांपतौ ॥५४०४॥
विडङ्गस्त्रिष्वभिज्ञे स्यात्कृमिघ्ने पुंनपुंसकम् ।
विडालो नेत्रपिण्डे स्याद्वृषदंशकके पुमान् ॥५४०५॥
वितण्डा [करवीर्यां स्यात्] कच्छी शाकेऽ[पि च स्त्रियाम्] ।
स्वपक्षस्थापनाहीने वादे तार्किकविश्रुते ॥५४०६॥
वितर्क आशङ्कायां स्याद्वीततर्के तु भेद्यवत् ।
वितर्कस्तु पुमानूहे संशये च निगद्यते ॥५४०७॥
वितानो यज्ञ उल्लोचे विस्तारे पुन्नपुंसकम् ।
क्लीबं वृत्तविशेषे स्यात्त्रिलिङ्गो मत्ततुच्छयोः ॥५४०८॥
वितुन्नस्त्वामलक्यां वितुन्नं तुत्थाञ्जने मतम्[1] ।
वितुन्नं सुनिषण्णे च शैवाले च नपुंसकम् ॥५४०९॥
वितुन्नकस्तु धान्याके झाटामलमयूरके ।
वितुन्नकं तु भूधात्र्यां कुस्तुम्बुर्यां [नपुंसकम्] ॥५४१०॥
वित्तं धने क्ली त्रिषु तु प्रथिते च विचारिते ।
वित्तिः सम्भावनायां स्याद्विचारे लाभ एव च ॥५४११॥
विज्ञातरि त्रिषु ज्ञाने स्त्रियां ना तु बुधग्रहे ।
विदण्डो मार्गरोधार्थार्गले त्रिस्तु वियष्टिके ॥५४१२॥
विदथो योगिकृतिनोः [पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः] ।
विदाज्ञाने च निर्दिष्टा मनीषायाश्च योषिति ॥५४१३॥
विदारो ना जलोच्छ्वासो [तथा स्यात्प्रविदारणे] ।
विदारी शालपर्ण्यां च रोगभेदेक्षुगन्धयोः ॥५४१४॥
विदारणा ननाभेदे तथैव स्याद्विडम्बने ।
विदारणं विडम्बे च भेदे क्लीबं रणे द्वयोः ॥५४१५॥
विदारिका च काश्मर्यां शृगाल्याश्च [स्त्रियाम्मता] ।
विदितं संश्रुतेऽपि स्याज्ज्ञाते चाप्यभिधेयवत् ॥५४१६॥

---

१. आनूपशाकस्तम्बेऽपि सुनिषण्णाह्वये नपि ।

विदुरो नागरे धीरे कौरवाणां च मन्त्रिणि ।
विदुलस्तु पुमानम्बुवेतसे वेतसेऽपि च ॥५४१७॥
विदूषकश्चाटुवटौ परनिन्दाकरेऽपि च ।
विदेहास्तीरभुक्तौ नृ भूम्नि वीततनौ त्रिषु ॥५४१८॥
विदेहः कायशून्ये स्याज्जनकान्वयभूमिपे ।
विद्धं सूच्यादिभिर्भिन्ने सदृशे [बाधितेऽपि च] ॥५४१९॥
क्षिप्ते च त्रिषु तज्ज्ञातं ज्योतिर्विद्धीक्षितेऽपि च ।
विद्या शास्त्रेऽपि विज्ञाने मन्त्रेष्वपि मता तथा ॥५४२०॥
शैवागमप्रसिद्धेषु तत्त्वभेदेषु केषुचित् ।
महाविद्याख्यदेवीषु [सरस्वत्यामपि स्त्रियाम्] ॥५४२१॥
विद्युत्तु तडिति स्त्री स्याद्दीप्ते विद्युत्त्रिषु स्मृतः ।
[शिलायाञ्चैव] सन्ध्यायां स्त्रियां त्रिषु तु निष्प्रभे ॥५४२२॥
विद्रवो विद्रुतौ [पुंसि बुद्धावपि तथा मतः] ।
विद्रुतं विद्रवे क्ली त्रिर्विलीने च पलायिते ॥५४२३॥
विद्रुमः पल्लवे वृक्षे प्रवाले मणिभूरुहे ।
विद्वान् विदद्बुधात्मज्ञेष्वपि स्याद्विदुरे त्रिषु ॥५४२४॥
विधर्मा त्वहिते पुंसि व्यतीचारे च कीर्त्तितः ।
सामप्रभेदे तु क्लीबं त्रि स्याद्विगतधर्मके ॥५४२५॥
उच्चारणप्रभेदे च स्पृष्टताद्ये विधं मतम् ।
विधा गजान्ने ऋद्धौ च प्रकारे वेतने विधौ ॥५४२६॥
विधाता [ना विधौ कामे] कर्त्तृमेधाविनोस्त्रिषु ।
विधानं हस्तिकवले प्रेरणेऽभ्यर्चने धने ॥५४२७॥
वेदनायामुपाये च प्रकारे वैरकर्मणि ।
विधिर्ना नियतौ काले विधाने परमेष्ठिनि ॥५४२८॥
विधुर्विष्ण्वग्निकालेन्दुवात [कर्पूरकेषु च] ।
[पुँल्लिङ्गो द्वे राक्षसे तु शब्दोऽयम्परिकीर्त्तितः] ॥५४२९॥
विधुतं कम्पितेऽपि स्यात्त्यक्ते चाप्यभिधेयवत् ।
विधुरः कष्टविश्लिष्टापत्नीकविकलेषु च ॥५४३०॥

[क्लीबन्तु तत्र विश्लेषे रसालायां स्त्रियामपि] ।
विनतः प्रणते भुग्ने शिक्षिते चाभिधेयवत् ॥५४३१॥
विनता तार्क्ष्यजननी पटकाण्डभिदोस्स्त्रियाम् ।
विनया स्त्री बलायां ना शमेकीतनये त्रिषु ॥५४३२॥
विनायकस्तु हेरम्बे तार्क्ष्ये विघ्ने जिने गुरौ ।
विनिपातो निपाते स्याद्दैवादिव्यसने पुमान् ॥५४३३॥
विनीतः सुवहाऽश्वे स्याद्वणिज्यपि पुमांस्त्रिषु ।
जितेन्द्रियेऽपनीते च निभृते विनयान्विते ॥५४३४॥
विनेता केशवे राज्ञि ना [च त्रिषु विनेतरि] ।
अजयस्तु प्रकरणे दन्त्योष्ठादिपदावलेः ॥५४३५॥
दन्त्योष्ठादिं च विदुषो वाचकं विन्दुरित्यमुम् ।
विप्रुड्वाचिनमोष्ठ्यादिविन्दुशब्दं च विभ्रमात् ॥५४३६॥
एकं मत्वा द्वयोरर्थौ विन्दुर्ज्ञातरि विप्रुषि ।
विन्ध्या स्त्रियां लवल्यां स्यात्पुंसि व्याधाद्रिभेदयोः ॥५४३७॥
विन्नं तु प्राप्तसत्ताके त्रिषु लब्धे विचारिते ।
विपक्षः पक्षिपक्षेऽरौ त्रि तु स्याद्वीतपक्षके ॥५४३८॥
स्त्रियां विपञ्ची वीणायां वीणाभेदे च कीर्त्तिता ।
योऽल्पदण्डश्च तन्त्रीभिस्तथा नवभिरन्वितः ॥५४३९॥
विपणिः पण्यवीथ्यां च भवेदापणपण्ययोः ।
विपत्ति[र्यातनायां स्यात्पदि चापि स्त्रियामियम्] ॥५४४०॥
विपन्नस्तु द्वयोः सर्पे त्रिर्मृते च विपद्गते ।
विपाकः पचने स्वेदे विरुद्धे कर्मणः फले ॥५४४१॥
विपाकी ना यवक्षारे विपाकवति तु त्रिषु ।
विपिनं गहने त्रिः क्ली जलदुर्गे वनेऽपि च ॥५४४२॥
विपुलः पृथुलेऽगाधे मेरुपश्चिमभूधरे ।
विप्रतीसार उद्दिष्टः कौकृत्येऽनुशयेऽरुणि ॥५४४३॥
विप्रलापो विरोधोक्तौ विप्रलम्भोपमर्दयोः ।
विप्रस्य भाषणे चापि पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥५४४४॥

विप्रियं त्वपराधे क्ली भेद्यवद्विगतप्रिये ।
विबुधस्तु द्वयोर्देवे विदुषि त्वभिधेयवत् ॥५४४५॥
विभक्तिः स्त्री विभागेऽपि सुप्तिङोः प्राग्दिशीयके ।
प्रत्ययेऽपि तथा प्रोक्ता वीतभक्तौ तु भेद्यवत् ॥५४४६॥
विभवो ना धने मोक्षेऽप्यैश्वर्येऽपि पुमान्मतः ।
[विभाकरोऽग्नौ सूर्ये ना त्रिषु तु स्याद्विभाकृति] ॥५४४७॥
विभाजनः शाकभेदे देवमारिषसंज्ञके ।
विभागहेतुव्यापारे तु नना स्याद्विभाजना ॥५४४८॥
विभावः स्यात्परिचये रसस्योद्दीपनादिषु ।
विभावती सप्तलाख्यपुष्पवल्ल्यां प्रकीर्त्तिता ॥५४४९॥
विभावना साधनायामुपलब्धौ तथा न ना ।
विभावरी निशारात्र्योः कुट्टन्यां वक्रयोषिति ॥५४५०॥
विवादे वस्त्रगुण्ठ्यां च [स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता] ।
विभावसुर्ना सूर्याग्नीन्दुषु द्वे शतपत्रके ॥५४५१॥
विभीषणः पुमाञ्शक्रे रावणस्याऽनुजेऽपि च ।
विभुः कुबरे [सूर्ये च पुंसि ब्रह्मणि शङ्करे] ॥५४५२॥
[त्रिषु स्यात्सर्वगे नित्ये प्रभावपि तथा मतः] ।
विभूतिस्तु स्त्रियाम्भूतौ विभोरैश्वर्यसम्पदोः ॥५४५३॥
वीतभूतौ तु कथिता विभूतिरभिधेयवत् ।
विभ्रमः संशये भ्रान्तौ शोभायां वेभ्रमे पुमान् ॥५४५४॥
शृङ्गारचेष्टाभेदे च द्राग्विपर्यासरूपके ।
वीतभ्रमे त्वयं प्रोक्तो विभ्रमश्चाभिधेयवत् ॥५४५५॥
[विमला स्त्री भुवो भेदे शातलायां त्रि निर्मले] ।
विमानो व्योमयाने च सार्वभौमगृहेऽपि च ॥५४५६॥
घोटके यानपात्रे च पुंनपुंसकयोर्मतः ।
शिविकायां तथा सप्तभूमिके भवनेऽपि च ॥५४५७॥
विरजा तूड्ढदेश्ये स्त्री पूर्भेदे जम्बुपादपे ।
विरला गृध्रनख्याख्यलतायां स्त्र्यघने त्रिषु ॥५४५८॥

विरागः पुंसि वैराग्ये वीतरागे त्रिषु स्मृतः ।
विराट् छन्दोऽन्तरेषु स्यात्क्षत्रिये तु द्वयोरयम् ॥५४५९॥
अथ विष्णौ तथा यज्ञभेदे पुंसि विराड् भवेत् ।
विरिञ्चिर्ना विरिञ्चश्च वैकुण्ठे परमेष्ठिनि ॥५४६०॥
विरूढोऽङ्कुरिते जाते [वाच्यवत्परिकीर्त्तितः] ।
विरोचनोऽर्के चन्द्रेऽग्नौ प्रह्लादतनयेऽपि च ॥५४६१॥
विरोधी पुंसि शत्रौ स्यात्त्रिषु तु स्याद्विरोद्धरि ।
विलग्नं कायमध्ये क्ली सक्ते तु त्रिषु कीर्त्तितम् ॥५४६२॥
विलम्बो विषभेदेऽपि पुमान्प्रोक्तो विलम्बके ।
विलम्बितं वञ्चिते स्यात्तथा मन्देऽपि च त्रिषु ॥५४६३॥
विलासशब्दो लीलायां [हारभेदे च ना मतः] ।
तथैव भावभेदेऽपि य उक्तः श्लिष्टविक्रिया ॥५४६४॥
विलासी भोगिनि [त्रि स्याद्व्याले चाऽयम्पुमान्मतः] ।
विलीनं विद्रुतेऽपि स्यात्तथा लीनेऽपि वाच्यवत् ॥५४६५॥
विलेपस्त्वनुलेपार्थद्रव्येऽपि स्याद्विलेपने ।
विलेपी स्त्री मता तस्यां यवाग्वां या घनद्रवा ॥५४६६॥
विलेपनी सुवेषस्त्रीयवाग्वोरपि योषिति ।
विलेप्या त्रिर्विलेप्तव्ये विलेप्यां तु स्त्रियां मता ॥५४६७॥
विलोमस्तु प्रतीपे स्याद्भुजङ्गे वरुणे शुनि ।
आमलक्यां विलोमी च विलोमं चारघट्टके ॥५४६८॥
विवक्षितं तु रुचिरे वक्तुमिष्टेऽपि च त्रिषु ।
विवधो वीवधः पर्याहारे भारे तथाऽध्वनि ॥५४६९॥
विवर्त्तः समुदाये स्यादपवर्त्तननृत्ययोः ।
विवशस्त्ववस्वतन्त्रात्मन्यवश्ये च प्रकीर्त्तितः ॥५४७०॥
अरिष्टदुष्टबुद्धौ च त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
विवस्वांस्तु पुमान्सूर्ये द्वे तु देवे नरेऽपि च ॥५४७१॥
वायुदिग्गजहस्तिन्यां पुनस्त्री स्याद्विवस्वती ।
विविक्तं निर्जने शुद्धे पृथग्भूते विचारिते ॥५४७२॥

असम्बाधेऽपि च तथा वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ।
विवृता क्षुद्ररुग्भेदे विस्तृते त्वभिधेयवत् ॥५४७३॥
विवृत्ताक्षः कुक्कुटे द्वे योगार्थे तु यथायथम् ।
विवेकस्तु पृथक्कारे पृथग्भावे विचारणे ॥५४७४॥
जलद्रोण्यामपि तथा पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
विट् (श्) तु गूथे ननाऽङ्गुल्यां स्त्री द्वयोर्मर्त्त्यवैश्ययोः ॥५४७५॥
विशदः पाण्डुरे रक्ते [स्पष्टे चाऽपि तथा मतः] ।
विशयः संशये तद्वद्देश्चापि शयने पुमान् ॥५४७६॥
विशल्याऽग्निशिखादन्तीगुडूचीषु स्त्रियां मता ।
निःशल्ये तु विशल्योऽयमभिधेयवदिष्यते ॥५४७७॥
क्ली हिंसायां विशसनं खड्गे विशसनः पुमान् ।
विशाखा ऋक्षभेदेऽपि धारासंज्ञे द्रुमाङ्कके ॥५४७८॥
स्कन्ददेवे स्कन्ददेवपृष्ठजेऽपि सुरान्तरे ।
विशाखान्वितकालेयो जातस्तत्राभिधेयवत् ॥५४७९॥
विशारदस्त्रिषु बुधे धृष्टे विगतशारदे ।
विशाला त्विन्द्रवारुण्यामुज्जयिन्यान्तु योषिति ॥५४८०॥
मृगपक्षिभिदोः पुंसि पृथुले त्वभिधेयवत् ।
विशालाक्षो हरे तार्क्ष्ये ना सुनेत्रेऽभिधेयवत् ॥५४८१॥
विशिखं चेतसि क्लीबं निःशिखे तु त्रिषु स्मृतम् ।
[पुंस्ययं विशिखः प्रोक्तस्तोमरे च तथा शरे] ॥५४८२॥
विशिखा तु खनित्र्यां च रथ्यानलिकयोरपि ।
विशुद्धलवणं तु स्यात्सैन्धवे लवणे शुचौ ॥५४८३॥
विशेलिमः शशाङ्केऽपि भास्करे पाशकेऽपि च ।
विन्दुतन्त्रे तथा पुंसि च तुरङ्गेऽपि कीर्त्तितः ॥५४८४॥
विशेषोऽतिशये भेदे योगार्थे तु यथायथम् ।
विशेषकस्तु तिलके पुंसि क्लीबे च कीर्त्तितः ॥५४८५॥
विशेषयितरि त्वेष विशेष्टरि तथा त्रिषु ।
विश्रब्धोऽनुद्धटेऽपि स्याद्गाढविश्वस्तयोस्त्रिषु ॥५४८६॥

विश्लेषस्तु पृथक्कारे विरहेऽपि पुमान्मतः ।
विश्वा त्वतिविषाभूम्योः स्त्री शुण्ठ्यां स्त्रीनपुंसकम् ॥५४८७॥
सर्वनाम त्रि सर्वार्थे क्लीबं तु जगति स्मृतम् ।
विश्वे तु देवभेदेषु भवेयुः पुंसि भूमनि ॥५४८८॥
विश्वकर्मा तु सूर्येऽपि विरिञ्चे देववर्धकौ ।
विश्वगोप्ता तु शक्रेऽपि विष्णावपि पुमान्मतः ॥५४८९॥
विश्वप्सा तु पुमाञ्शक्रे [चन्द्रेऽग्ना] वान्तरेऽनिले ।
विश्वम्भरोऽच्युते शक्रे वह्नौ विश्वम्भरा भुवि ॥५४९०॥
ना शुण्ठ्यां पुंसि देवप्रभेदेऽप्यखिले त्रिषु ।
विश्वरूपः शिवे विष्णावश्वे त्वाष्ट्रे बृहस्पतौ ॥५४९१॥
विश्वरूपा गवि स्त्री स्याद्भूम्नि गायत्रसामनि ।
त्रिरभ्यासेन गीते च न्यूषुवाचं प्रमेत्यृचि ॥५४९२॥
विश्वस्ता विधवायां त्रिस्त्वाप्तविश्वासयोग्ययोः ।
विश्वात्मा तु विरिञ्चेऽपि भास्करेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥५४९३॥
विश्वावसुर्ना गन्धर्वभेदे रात्रौ स्त्रियां मता ।
विश्वेदेवास्तु सूर्येऽपि वह्नावपि पुमान्मतः ॥५४९४॥
[विट्शब्दस्तु षकारान्तः स्त्रियां पावनविष्ठयोः] ।
विषघाती द्वयोराखुजातिभेदे त्रियोगिके ॥५४९५॥
विषघ्नी त्रिवृताभार्ङ्गीगुडूचीवृश्चिकालिषु ।
त्र्यमनुष्ये विषारौ ना श्लेष्मातकशिरीषयोः ॥५४९६॥
विषन्धरो द्वयोः सर्पे पुमान्मेघे प्रकीर्त्तितः ।
विषयो गोचरे देशे तथा रूपरसादिके ॥५४९७॥
पुमाञ्जनपदे नित्यसेवितेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
विषयी मन्मथे भूपे विषयस्थजनेऽपि ना ॥५४९८॥
विषयासक्तविषयान्वितयोस्त्रीन्द्रिये तु नप् ।
विषा त्वतिविषायां स्त्री क्ष्वेडे न स्त्री जले तु नप् ॥५४९९॥
विषाणी क्षीरकाकोल्यामजश्रृङ्ग्यां च योषिति ।
कुष्ठनामौषधे क्लीबं पशुश्रृङ्गेभदन्तयोः ॥५५००॥

विषादः पुंसि चित्तावसादे त्रिविषभक्षके ।
विषायी स्यात्पुमान्राज्ञि वैषयिकजनेऽपि च ॥५५०१॥
इन्द्रिये कामदेवे च विषयासक्तपूरुषे ।
विषुवन्नृनपोः काले समरात्रिन्दिवे मतम् ॥५५०२॥
क्रतुभेदे त्वयं शब्दः पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
विष्कम्भः प्रतिवन्धे च प्रतिबन्धस्य साधने[1] ॥५५०३॥
रूपकाङ्गान्तरे योगान्तरविस्तारयोरपि ।
विष्किरो द्वे पक्षिमात्रे मयूरे कुक्कुटेऽपि च ॥५५०४॥
विष्टप् तु स्त्री दिवि प्रोक्ता विष्टप्सूर्ये पुमान्मतः ।
विष्टपं भुवने देवविमानेऽपि नपुंसकम् ॥५५०५॥
विष्टम्भः प्रतिबन्धेऽपि स्यात्स्तोमदशके परे ।
महावैराजसंज्ञस्य साम्नः प्रस्तावभक्तितः ॥५५०६॥
विष्टरस्त्वासने वृक्षे दर्भमुष्टौ तथा पुमान् ।
विष्टिर्ना कर्मणि हठात्कारिते त्रिषु तत्कृति[2] ॥५५०७॥
[2]स्त्री त्वाजूवेदनाकालभेदमूल्यप्रवेशने ।
विष्णुर्मेघे केशवस्यावतारे वामनाभिधे ॥५५०८॥
चन्द्रे द्वादशसूर्याणां तथैवान्यतमे पुमान् ।
[यज्ञे तथा केशवे च विष्णुशब्दः प्रकीर्त्तितः] ॥५५०९॥
विष्णुक्रान्ता तु सुमुखीगिरिकर्णिकयोरपि ।
विष्णुगुप्तस्तु कौटिल्ये योगार्थे तु यथायथम् ॥५५१०॥
क्लीबं विष्णुपदं व्योम्नि तीर्थभेदेऽपि कीर्त्तितम् ।
गङ्गायां स्त्री विष्णुपदी रविसङ्क्रमणेषु तु ॥५५११॥
वृषवृश्चिकसिंहेषु कुम्भे च स्त्रीनपुंसकम् ।
विष्वक् तु सर्वतोऽर्थेऽव्ययं नानागतिके त्रिषु ॥५५१२॥
स्त्रीत्वे विषूची तत्रापि स्त्र्येव सा स्याद्रुजान्तरे ।
विष्वक्सेना फलिन्यां स्त्री विष्वक्सेनस्तु ना हरौ ॥५५१३॥

१. रूपकाङ्गप्रभेदे च बन्धभेदे च योगिनाम् ।
२. विष्टिस्त्रिषु कर्मकरे स्त्र्याजूवेतनकर्मसु ।

विष्वक्सेनप्रिया लक्ष्म्यां वाराह्यामपि योषिति ।
विसरः प्रसरे चैव व्रजेऽपि स्यात्पुमानयम् ॥५५१४॥
विसर्गस्तु पुमान्दाने त्यागे च जलनिर्गमे ।
विसर्जनीयेऽप्ययनभेदेऽपि च विभावसोः ॥५५१५॥
विसृतं विगते चापि तते चाप्यभिधेयवत् ।
विस्तरो वाक्प्रपञ्चे स्याद्विस्तारे प्रणयेऽपि च ॥५५१६॥
विस्तारो विस्तृतौ तद्वत्स्तम्बेऽपि च पुमान्मतः ।
विस्फुलिङ्गस्त्वग्निकणे विषभेदे तथा पुमान् ॥५५१७॥
विस्फोटः स्फुटनेऽपि स्यान्मसूर्याञ्च तथा पुमान् ।
विस्मयस्त्वद्भुते तद्वद्गर्वेऽपि च पुमान्मतः ॥५५१८॥
स्मयेन रहिते त्वेष वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ।
विस्मापनो ना कुहके गन्धर्वनगरे स्मरे ॥५५१९॥
विस्मितस्त्रिषु विस्मेरे छन्दोभेदे त्वना भवेत् ।
विस्रगन्धिस्त्र्यामगन्धौ हरिताले नपुंसकम् ॥५५२०॥
विस्रब्धं निभृते शस्ये तथा विश्वसिते त्रिषु ।
विस्रम्भः केलिकलहे विश्वासे प्रणयेऽपि च ॥५५२१॥
विस्रा स्त्री हपुषायां क्ली रुधिरे त्वामगन्धिनि ।
विस्वरं क्ली विरुद्धे स्यात्स्वरे त्रिर्विकृतस्वरे ॥५५२२॥
विहङ्गः पक्षिणि द्वे ना रविचन्द्राम्बुदेषुषु ।
विहगस्त्वेषु दशमे राशौ सर्वग्रहस्थितौ ॥५५२३॥
विहङ्गकः पक्षिणि द्वे पर्याहारे विहङ्गिका ।
विहङ्गमः पक्षिणि द्वे सूर्ये नाऽथ नृभूमनि ॥५५२४॥
एकादशान्तरभवे निर्जराणां गणान्तरे ।
विहङ्गिकायां तु स्त्रीत्वे पक्षिण्यां च विहङ्गमा ॥५५२५॥
विहणस्त्वृषिभेदे ना शठे वाच्यवदिष्यते ।
क्लीबं विहननं विघ्ने पिञ्जनेऽपि वधेऽपि च ॥५५२६॥
तथा कार्पासतूलादेर्विघातेऽपि प्रकीर्त्तितम् ।
विहव्या इष्टकाभित्सु स्त्री क्ली ऋक्सूक्तभिद्यपि ॥५५२७॥

विहस्तस्त्रिर्बुधे व्यग्रे निर्हस्ते ना नपुंसके ।
विहा त्वसत्यामपि च विहगेषु भवे स्त्रियाम् ॥५५२८॥
विहाया व्योम्नि नृनपोर्विहगे तु द्वयोर्मतः ।
विहायसस्तु नृनपोर्व्योम्नि पक्षिणि तु द्वयोः ॥५५२९॥
विहाया महति स्तेने त्रिषु व्यापृतरि वञ्चके ।
विहारो भ्रमणे स्कन्धे लीलायां सुगतालये ॥५५३०॥
वैजयन्ते पुमान्द्वे तु बिन्दुरेखकपक्षिणि ।
विहेठनं तु हिंसायां मर्दने च विडम्बने ॥५५३१॥
विह्वलस्त्रिर्विक्लवे स्यात् रसगन्धे च पुम् स्मृतः ।
वीको वायौ वसन्तेऽर्थे नाशे वीका दृशोर्मले ॥५५३२॥
द्वयोः पक्षिणि चित्ते तु वीकं पुंसि विदुः परे ।
वीकाशस्तु प्रकाशेऽपि (तथा प्रोक्तो रहस्यपि) ॥५५३३॥
वीक्षो वीक्षा विस्मये द्वे वीक्षा स्याद्वीक्षणे स्त्रियाम् ।
वीक्षणं दर्शने नेत्रे [नपुंसकमुदीरितम् ॥५५३४॥
वीक्ष्यं तु विस्मये दृश्ये पुंसि लासकवादिनोः ।
वीङ्खा लास्यान्तरे सन्धौ कपिकच्छ्वामपि स्त्रियाम् ॥५५३५॥
वीचिः स्त्रीपुंसयोरूर्मौ लेशे पङ्क्तौ तथा मता ।
मुखेऽवकाशे किरणे [सुखे] वीच्यपि च स्त्रियाम् ॥५५३६॥
वीजनस्तु द्वयोः काकजीवजीवकपक्षिणोः ।
वीजनं व्यजने वस्तुन्यपि व्यजनचालने ॥५५३७॥
वीटकं स्याच्च ताम्बूले वीटिका तु स्त्रियां मता ।
कञ्चुक्यादेर्बन्धनेऽपि ताम्बूलादिकवेष्टने ॥५५३८॥
वीडुर्दृढे भेद्यवत्स्याद्बले तु स्यान्नपुंसकम् ।
वीणा विद्युति वल्लक्यां ग्रहयोगान्तरे तथा ॥५५३९॥
नदीभेदेऽपि च स्त्रीत्वे कीर्तिता सरिदन्तरे ।
वीणावादस्त्रि वीणायां वादके वादने तु ना ॥५५४०॥
वीतं त्वसारे हस्त्यश्वे हस्त्यारोहाङ्घ्रिकर्मणि ।
वीतस्तु वाच्यवत्प्रोक्तो गते शान्ते त्रिषु त्वथ ॥५५४१॥

गतिकान्त्यशनादौ विगतावङ्कुशवारणे ।
वीतरागो जिने बुद्धे ना रागरहिते त्रिषु ॥५५४२॥
वीतशोकोऽशोकवृक्षे वीतशोका तु पूर्भिदि ।
वीतहव्यो नृपभिदि कृष्णेऽपि च पुमान्मतः ॥५५४३॥
वीतिर्दीप्तौ गतौ धावनेऽशने प्रजने स्त्रियाम् ।
वीतिहोत्रोऽनलेऽर्के ना नृभूम्नि क्षत्रियान्तरे ॥५५४४॥
वीथी तु पङ्क्तौ मार्गे च गृहाङ्गे रूपकान्तरे ।
वीध्रोऽभ्राग्न्यनिले ना क्ली नभसि त्रिस्तु निर्मले ॥५५४५॥
वीरः शिवकुबेरेन्द्राहुस्कन्दसुतेषु ना ।
अग्निभेदे तपःपुत्रे यज्ञाग्नावर्जुनद्रुमे ॥५५४६॥
रक्तालुके महावीरजिने स्यात्तान्त्रिकान्तरे ।
वीरा तु मलपूक्षीरविदारीदुग्धिकासु च ॥५५४७॥
गम्भारीक्षीरकाकोलीतामलक्येलवालुके ।
रम्भायां च सुरायां च पतिपुत्रवती स्त्रियाम् ॥५५४८॥
वीरं तु शृङ्गीशृङ्गाटनतोशीरारुके नले ।
क्लीवं पुष्करमूलेऽपि मरिचे काञ्जिके तथा ॥५५४९॥
त्रि तु शूरे परे पक्षिक्षेपके विगते रणे ।
पक्षिक्षेपे तु विक्षेपे वीरा वीर इति द्वयोः ॥५५५०॥
शरे वीरतरः पुंसि शवे तं केचिदूचिरे ।
वीरणे क्ली वीरतरं वीरश्रेष्ठे पुनस्त्रिषु ॥५५५१॥
अथ वीरतरुः शृङ्गाटकोशीरनडार्जुने ।
भल्लातकेऽपि पुँल्लिङ्गः करवीरेऽपि चेष्यते ॥५५५२॥
नयान्तरे मयूरे तु द्वयोर्वीरन्धरो मतः ।
वीरभद्रोऽश्वमेधाश्वे वीरश्रेष्ठे च वीरणे ॥५५५३॥
रुद्रान्तरे शिवस्यापि कीर्त्तितोऽनुचरान्तरे ।
स्याद्वीरललितं वीरक्रीडाच्छन्दोभिदोरपि ॥५५५४॥
वीरलोको वीरजने वीरावासे तथा मतः ।
वीरवान् वीरयुक्ते त्रिर्वीर्यवत्यपि च क्वचित् ॥५५५५॥

स्त्रीत्वे वीरवती गन्धद्रव्यभेदाऽऽपगाभिदोः ।
वीरवृक्षो बिल्वधान्यभिदोर्भल्लातकेऽर्जुने ॥५५५६॥
वीरसेनो नलपिता आरूकफले तु नप् ॥
वीरहा त्रिषु वीरारौ ना तूत्सन्नाग्निहोत्रिणि ॥५५५७॥
वीराशंसनमाजेर्भूर्या स्यादतिभयप्रदा ।
तस्यां तथैव वीरस्याशंसनेऽपि नपुंसकम् ॥५५५८॥
वीरिणी वीरमातर्यप्यसिक्न्यां दक्षयोषिति ।
सरिद्भेदे वीरिणीति यस्या नामान्तरं विदुः ॥५५५९॥
वीरेन्द्रो वीरवर्ये स्याद्वीरेन्द्री योगिनीभिदि ।
वीरोज्झो योऽग्निहोत्री सन्नाऽब्दमग्निं जुहोत्यसौ ॥५५६०॥
वीरस्य तूज्झके चैष वीरोज्झो वाच्यवन्मतः ।
वीर्यं रेतोऽन्नशक्त्याद्यबलशौर्यपराक्रमे ॥५५६१॥
दीप्तिमाहात्म्ययोः क्लीबं स्त्रीवीर्याऽतिबलौषधे ।
वीवधो विवधः पर्याहारे भारे तथाऽध्वनि ॥५५६२॥
वीशः स्याद्विंशतिपलमाने पुँल्लिङ्ग एष तु ।
वृकः सूर्येन्दुवज्रेषु जठराग्नौ बकद्रुमे ॥५५६३॥
नृभूम्नि देशभेदे स्याद्वृकं क्लीबं हले मतम् ।
त्रिषु स्तेने च धूर्त्ते च द्वयोस्त्वीहामृगे शुनि ॥५५६४॥
काकोलूकशृगालेषु क्षत्रियेऽपि वृको वृकी ।
वृकी तु वृद्धवाशिन्यां स्त्रियामेव निरुच्यते ॥५५६५॥
वृका वृकीति द्वितयमम्बष्ठायां प्रकीर्त्तिता ।
वृकधूपः कृत्रिमश्रीपिष्टनिर्यासयोर्मतः ॥५५६६॥
वृकधूपस्तु सरलद्रवकृत्रिमधूपयोः ।
वृकलो वल्कले स्त्री तु अन्त्रे च वृकला स्मृता ॥५५६७॥
द्वाराधःकाष्ठपार्श्वे स्त्री वृकवाला प्रकीर्त्तिता ।
वृकोदरो भीमे भूम्नि प्रमथानां गणान्तरे ॥५५६८॥
वृक्षादनश्चलदले मधुच्छत्रकुठारयोः ।
वृक्षादनी तु वन्दायां विदारीकन्दकेऽपि च ॥५५६९॥

वृक्षावासो भिक्षुभेदे पक्षिणि त्वनपुंसके ।
वृक्षेशयस्त्रिर्दुशये द्वयोः सर्पान्तरे मतः ॥५५७०॥
वृजिनं क्ली बले पापे केशेऽथ कुटिले त्रिषु ।
वृतं धने वाच्यवत्तु तत्र यद्वरणं कृतम् ॥५५७१॥
वृतिर्निरोधे सम्भक्तावपि चावेष्टके स्त्रियाम् ।
धात्वोस्तु वर्त्ततौ चापि वृत्यतौ च पुमानयम् ॥५५७२॥
वृत्तोऽतीतेऽप्यधीतेऽतिवर्त्तुलेऽपि वृते मृते ।
दृढेऽन्यलिङ्गं वा क्लीबं छन्दश्चारित्रवृत्तिषु ॥५५७३॥
वृत्तः कूर्मे द्वयो [र्नस्त्री सम्भक्तौ च स्वरूपके] ।
वृत्ता महाकोशातक्यां रेणुकाझिञ्झरिष्टयोः ॥५५७४॥
प्रियङ्गौ मांसरोहिण्यां छन्दोभेदे तथा स्त्रियाम् ।
वृत्तकः श्रमणे द्वे स्याद्वृत्तकं गद्यभिद्यपि ॥५५७५॥
वृत्तपर्णी महापूर्वशणपुष्प्यौषधे तथा ।
पाठाख्यभेषजेऽप्येषा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥५५७६॥
वृत्तपुष्पः कदम्बेऽपि शिरीषे चैव मुद्गरे ।
दाडिमे बदरे वृत्तफलः क्ली मरिचे मतः ॥५५७७॥
हरीतक्यां तु वृन्ताके स्त्रियां कर्कटिकान्तरे ।
वृत्तभङ्गश्चरित्रस्य छन्दसश्चैव विप्लवे ॥५५७८॥
अर्कपर्णेऽपि मल्ल्यां च स्त्रियां स्याद्वृत्तमल्लिका ।
वृत्तान्तः प्रक्रियायां स्यात्कात्स्न्र्यवार्त्ताप्रभेदयोः ॥५५७९॥
वृत्तार्धं छन्दसोऽर्धेऽपि वर्त्तुलार्धे तथा मतम् ।
वृत्तिस्तु वर्त्तने कृष्या मारभट्यादिकेष्वपि ॥५५८०॥
शब्दोच्चारणधर्मेषु द्रुतमध्यादिषु त्रिषु ।
ऋक्पादस्याप्युपान्तेऽप्यप्रतिबन्धप्रवर्त्तने ॥५५८१॥
व्याख्याने ग्रन्थभेदे च सामगीतिगुणान्तरे ।
कृत्तद्धितादावभिधादौ च मल्लीरुजोरपि ॥५५८२॥
संभक्तौ मरणे चापि स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।
वृत्रं धने ध्वनौ पापे वृत्रो दैत्यान्तरे गिरौ ॥५५८३॥

मेघेऽन्धकारे शत्रौ च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
वृथाजातो द्विजे यज्ञत्यागिनि त्रि तु यौगिके ॥५५८४॥
वृद्धो वैवस्वते क्ली तु शैलेये स्थविरे त्रिषु ।
त्रिमात्रसामवर्णे च स्यादेधितमनीषिणोः ॥५५८५॥
गजे त्वशीतिवर्षे द्वे वृद्धापत्ये तथा मतः ।
वृद्धदारक उक्तो ना छगलान्त्र्याख्यभेषजे ॥५५८६॥
जीर्णभार्ये तु वृद्धस्य भेदकेऽपि त्रिषु स्मृतः ।
वृद्धधूपः शिरीषेऽपि श्रीवासेऽपि पुमान्मतः ॥५५८७॥
वृद्धश्रवाः पुमानिन्द्रे महायशसि वाच्यवत् ।
वृद्धावस्कन्दी तु पुंसि शक्रे त्रिषु तु यौगिके ॥५५८८॥
वृद्धिस्तु वर्धने योगेऽप्यष्टवर्गौषधान्तरे ।
कालान्तरे चाभ्युदये समृद्धावपि योषिति ॥५५८९॥
ऋणातिरिक्तदातव्ये प्रयोक्त्रे पुत्रजन्मनि ।
मुष्कवृद्ध्यात्मके वर्ध्मसंज्ञे रोगान्तरेऽपि च ॥५५९०॥
वृधः सुहृदि सौहार्दे त्रिस्तु सौहार्दकारिणि ।
वृधसानस्तु पुरुषे मृत्यौ भूमिधनेऽपि च ॥५५९१॥
अथाभिधेयवद्वृद्धिशालिन्येष प्रकीर्त्तितः ।
वृधसानुः पुमान्पत्रे पुरुषे च कृतावपि ॥५५९२॥
वृन्तं तरूणां प्रसवबन्धने चूचुकेऽपि च ।
शल्कादिमूलेऽपि घटीधारायां च नपुंसकम् ॥५५९३॥
कालिङ्गसंज्ञवल्ल्यां तु वृन्ताके वृन्त इष्यते ।
वृन्तो वृन्तीति च स्त्रीपुंसयोर्जन्त्वन्तरे मतः ॥५५९४।
वृन्ताच्छन्दोविशेषेऽपि तथैव स्थावरान्तरे ।
वृन्दं कदम्बे तौर्यत्रिकिणां सङ्घे तथा मतम् ॥५५९५॥
वृन्दस्त्वर्बुदसंख्यायां [समूहेऽपि पुमानथ] ।
वृन्दा तु तुलसीस्तम्बे राधायां च प्रकीर्त्तिता ॥५५९६॥
जलन्धरस्य पत्न्यां च जिनशक्त्यान्तरेऽपि च ।
वृन्दारकस्त्रिषु श्रेष्ठे तत्र वृन्दारका तथा ॥५५९७॥

वृन्दारिका मता स्त्रीत्वे द्वयोर्देवे प्रकीर्त्तिता ।
वृन्दावनं तु मथुरोपशल्यारण्यभिद्यथ ॥५५९८॥
वृन्दावनी तु तुलसीस्तम्बे स्त्री परिकीर्त्तिता ।
वृन्दावनेश्वरः कृष्णे राधा वृन्दावनेश्वरी ॥५५९९॥
वृशः स्यादटरूषे ना वृशा स्तम्बान्तरे मता ।
भौमायार्कार्पिते तत्र या च श्वेतपुनर्नवा ॥५६००॥
वृश्चिकस्तु द्रुणे राशौ पुमान्स्यान्मदनद्रुमे ।
अग्रहायणमासेऽपि हालिकेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥५६०१॥
वृश्चिका तु द्वयोस्तत्र याऽसौ श्वेतपुर्ननवा ।
वृश्चिकी तु द्वयोःशूककीटेऽथो वृश्चिकी तथा ॥५६०२॥
वृश्चिका च मता पादाङ्गुलीये स्त्रीत्व एव सा ।
वृश्चिकाली स्त्रियामुष्ट्रधूम्रपुच्छाख्यभेषजे ॥५६०३॥
वृश्चिकालं वृश्चिकस्य क्लीबं स्यातुच्छकण्टके ।
वृष आर्द्रक ओषध्यां बलेऽपि लशुनेऽपि च ॥५६०४॥
वृत्तौ मुष्कफलयोः कोष्ठावयवभेदयोः ।
उक्ष्णि धर्मे बलीवर्दे पुंसि शक्रे बृहस्पतौ ॥५६०५॥
मेषाद् द्वितीयराशौ च वले कर्णे [1]शिवे हरौ ।
सूर्ये रेतसि कामेक्षु या च चित्रपुनर्नवा ॥५६०६॥
तत्र हैमवते कन्दविशेषे मन्दिरान्तरे ।
वास्तुस्थानान्तरे पञ्चदशेऽब्दे च बृहस्पतेः ॥५६०७॥
शत्रौ साध्यान्तरेऽध्यक्षे करणस्य चतुष्पदः ।
वाच्यवत्सुकुले श्रेष्ठे तस्या स्याद्भूरिरेतसि ॥५६०८॥
द्वे त्वश्वे मूषिके देवे क्ली त्वन्तःपुररेतसोः ।
वृषा स्त्री कदली ऋद्ध्यौषधन्यग्रोधिकास्वपि ॥५६०९॥
कपिकच्छ्वां वृषाऽप्येषाऽटरूषे कैश्चिदिष्यते ।
सामभेदेऽप्यथ हरीतक्यां चापि प्रकीर्त्तिता ॥५६१०॥
वृसी तु कैश्चिद्भ्रमतो वृषीति परिकीर्त्तिता ।
वृषा मूषिकपर्ण्यां च मुनीनामासने वृषी ॥५६११॥

१. पुमान्मतः ।

छन्दोभेदे निदानोक्तेऽप्यष्टपञ्चाशदक्षरे ।
वृषकं सामभेदे स्याद्वृषकस्तून्द्भिदन्तरे ॥५६१२॥
वृषकर्मा तु योगेऽथायुधो मन्त्रान्तरे पुमान् ।
वृषणोऽस्त्र्यण्डकोशोऽण्डौ वृषणौ वृषणः शिवे ॥५६१३॥
वृषणश्वो वर्षकाश्व इन्द्रेऽपीन्द्राश्व एव च ।
वृषण्वसुः पुमानिन्द्रे वृषण्वसु तु तद्धने ॥५६१४॥
वृषध्वजः शिवे पुंसि दुर्गायां तु वृषध्वजा ।
वृषपर्वा कशेरौ च क्रमुके केशरे शिवे ॥५६१५॥
वृषभस्तूक्ष्णि शक्रेऽपि वृषराशौ श्रवे बिले ।
वृषकेतू मुहूर्त्तेऽष्टाविंशे चाप्यर्हदन्तरे ॥५६१६॥
दशद्युनृपतौ कृष्णनिहते चासुरान्तरे ।
अद्रिभेदेऽथ वृषभा त्वार्षभे सरिदन्तरे ॥५६१७॥
वृषभी विधवायां च कपिकच्छ्वां प्रकीर्त्तिता ।
स पुंस्त्वे तूत्तरः श्रेष्ठे वृषभो वाच्यवन्मतः ॥५६१८॥
शिवेऽपि चाद्रिभेदेऽपि पुमान्स्याद्वृषभध्वजः ।
वृषलो वृषभे शूद्रे चन्द्रगुप्तनृपे नदे ॥५६१९॥
पलाण्डुभेदेऽथ हये द्वे स्त्री स्याद्वारयोषिति ।
वृषलण्डी तु पिप्पल्यां स्त्री न स्त्री वृषवर्चसि ॥५६२०॥
वृषाकपिस्तु पुंसीन्द्रेऽप्यग्नौ सूर्ये हरे हरौ ।
सूक्तान्तरे रुद्रभेदे स्यादिन्द्रतनयेऽपि च ॥५६२१॥
वृषाकपाय्युमास्वाहाश्रीशचीषूषसि स्त्रियाम् ।
शतावर्यां च जीवन्त्यामोतौ तु द्वे वृषाकपिः ॥५६२२॥
वृषाङ्कः क्लीबभल्लातमहत्त्वशिवसाधुषु ।
वृषाणकः शिवे ऋष्यन्तरेऽपि प्रमथान्तरे ॥५६२३॥
वृष्टिस्तु वर्षणेऽप्येकाहान्तरेऽपि स्त्रियां मता ।
त्रिषु वृष्टिसनिर्वृष्टिदातरि स्त्रीबहुत्वके ॥५६२४॥
ता इष्टकान्तरे वृष्टिसनयः परिकीर्त्तिताः ।
वृष्णिश्चण्डेऽपि पाषण्डे स पुंस्त्वे वाच्यवन्मतः ॥५६२५॥

वृष्णयः पाण्डवेषु स्युर्यदुष्वपि नृभूमनि ।
वृष्णिर्द्वे गविमेषेऽथ किरणे मारुते शिवे ॥५६२६॥
अग्नाविन्द्रे च कृष्णे च वृष्णिः पुंसि प्रकीर्त्तितः ।
वृष्णयस्तु वर्षके त्रि स्याद्वृष्ण्यं पुंस्त्वे नपुंसकम् ॥५६२७॥
वृष्य इक्षौ माषधान्ये ना त्रिः स्याच्छुक्रवर्धके ।
वृष्या शतावरीपथ्याविदारीवृद्धिभेषजे ॥५६२८॥
वृष्यं नपुंसकं प्रोक्तं विदारीसंज्ञभेषजे[1] ।
वेकटो मणिकारे ना यूनि चैव विदूषके ॥५६२९॥
द्वयोस्तु मत्स्यभेदे स्याद्वेकटं त्वद्भुतेऽव्ययम् ।
वेगो जवे प्रवाहे च महाकालफलेऽपि च[2] ॥५६३०॥
पुमान्मूलादिप्रवृत्तौ स्याद्रेतो रोगवायुषु ।
वेगवान्द्वे तरक्षौ स्त्री वेगवत्योषधीभिदि ॥५६३१॥
छन्दोऽन्तरे सरिद्भेदे त्रिस्तु वेगिनि वेगवान्[3] ।
वेगी वायौ पुमाञ्श्येने द्वयोर्वेगवति त्रिषु ॥५६३२॥
स्याद्वेजनः सप्तदशेऽग्नौ यूपस्य मूलतः ।
अरत्रयः सप्तदशपदीयाः संख्यया मताः ॥५६३३॥
अना तु वेजयत्यर्थे क्लीबं तु चलने भये ।
वेटी स्त्री ना विवेटस्तु पुमाञ्शब्दे प्रकीर्त्तितः ॥५६३४॥
वेडा नावि स्त्रियां वेडं सान्द्रविच्छिन्नचन्दने ।
वेणस्तु द्वे मनुष्याणां जातिभेदे प्रकीर्त्तितः ॥५६३५॥
पुत्रे वैदेहकाऽम्बष्ठ्योर्वेन नाम्न्येव जीवति ।
लङ्घनप्लवनाद्यैः स्यात्तूग्रराज्ञीसुतेऽपि च ॥५६३६॥
मायासंमोहनादीनि वृत्तिस्तस्य भवेद्यदि ।
केषाञ्चिद्वेणुकारेऽपि वेणस्त्रीपुंसयोर्मतः ॥५६३७॥
वेणा तु नृ स्त्रियां ज्ञातिनिशामनगतिष्वपि ।
चिन्तायामपि वादित्रग्रहणेऽपि सरिद्भिदि ॥५६३८॥

---

१. वृष्या स्त्रियां विदार्यां स्याद्वृद्धिसंज्ञे च भेषजे ।
२. वेगो रंहसि किंपाकेऽपि प्रभावप्रवाहयोः ।
तथा रेतसि वायौ च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥
३. वेगी तु मारुते पुंसि त्रिषु वेगवति स्मृतः ।

वेणि (णी) र्व्याधौ केशबन्धे जनन्यां च सरित्यपि।
वेणिर्जलस्रुतौ केशबन्धभेदे लतान्तरे ॥५६३९॥
देवताडाह्वये मध्ये नद्यादेरपि च स्त्रियाम्।
वेणिस्तु वेणतौ धातौ पुँल्लिङ्गे परिकीर्त्तितः ॥५६४०॥
वेणिका स्त्री मता वेण्यां नरजात्यन्तरे नृभू।
वेणुर्नृपान्तरे त्वक्सारेऽपि वाद्यान्तरे पुमान् ॥५६४१॥
वेणुकं गजतोत्रे स्याद्वंशवाद्ये तु वेणुका।
स्त्रीपुंसयोर्वेणुकी स्यान्निषादी क्षत्रियोद्भवे ॥५६४२॥
अथ स्त्री वेणुका स्यादुद्भिद्भेदे विषवत्फले।
सरिद्भेदेऽथ पुंभूम्नि नृजातिभिदि वेणुकाः ॥५६४३॥
वेणुजो वेणुबीजे स्याद्वेणुजं मरिचे मतम्।
नागभेदे द्वयोः स्त्री तु तृणभिद्वेणुपत्रिका ॥५६४४॥
ना ज्योतिष्मत्सुते स्त्री वेणुमती सरिदन्तरे।
वेणुबीजे वेणुयवो तथा वेणुयवी स्त्रियाम् ॥५६४५॥
वेतस्तु वेत्रे वेता तु वेतने परिकीर्त्तितः।
वेतण्डो द्वे गजे वेतण्डा दुर्गायां प्रकीर्त्तिता ॥५६४६॥
वेतनं रजते मूल्ये भृतावपि नपुंसकम्।
वेतसी निचुले द्वे स्याद्वेतसं छुरिकान्तरे ॥५६४७॥
वेतस्वती तु स्त्रीनद्यां त्रिषु स्याद्बहुवेतसे।
वेतालाऽपि च वेताली दुर्गा प्रेतान्तरे तु ना ॥५६४८॥
वेत्रोऽस्त्री स्तम्बभेदे क्ली यष्टौ वंश्यङ्गभिद्यपि।
वेत्रवत्यापगाभेदे दुर्गा चित्ररथीति या ॥५६४९॥
तत्र वेत्रासुरस्यापि मातरि स्त्रीत्व इष्यते।
वेत्री तु द्वारपाले द्वे त्रिषु वेत्रवति स्मृतः ॥५६५०॥
वेदः श्रुतौ चतुःसंख्या विष्णोर्वित्ते प्रकीर्त्तितः।
कुशे मुञ्जेऽपि वेदा तु नदीभेदे प्रकीर्त्तिता ॥५६५१॥
वेदकर्त्ता शिवे विष्णौ सूर्येऽपि च पुमान्मतः।
वेदगर्भो द्वयोर्विप्रे पुमांस्तु ब्रह्मणि स्मृतः ॥५६५२॥

वेदगर्भा पुनः स्त्रीत्वे सरस्वत्यां प्रकीर्त्तिता ।
वेदनं तु न ना ज्ञाने तथानुभवपीडयोः ॥५६५३॥
नपुंसकन्तु सत्तायां तथा लाभविचारयोः ।
वेदमाता तु गायत्री सावित्री च सरस्वती ॥५६५४॥
नदीभेदे वेदवती श्रीसीताद्रौपदीषु च ।
ऋषौ क्वचिद्वेदशिराः क्लीबं तूपनिषत्स्वपि ॥५६५५॥
वेदः सान्तं मतं ज्ञाने [नपुंसकमिदम्भवेत्] ।
वेदाङ्गं षट्सु शिक्षादिष्वथ सूर्ये पुमान्मतः ॥५६५६॥
आदित्यानां द्वादशानां तथैव क्वचिदिष्यते ।
वेदात्मा तु पुमान्विष्णौ सूर्ये ब्रह्मण्यपीष्यते ॥५६५७॥
वेदिर्वितर्दौ यागाय परिष्कृतभुवि स्त्रियाम् ।
चतुष्कोणाऽग्निकुण्डेऽग्निकुण्डे वेदयतौ तु ना ॥५६५८॥
पुमांस्तु पण्डितेऽपि स्या [न्मुद्रायामङ्गुले स्त्रियाम्] ।
वेदिकाङ्गुलिमुद्रायां स्त्रीत्वे वेद्यामपीष्यते ॥५६५९॥
अम्बष्ठायां पुनर्वेदि क्लीबलिङ्गं प्रकीर्त्तितम् ।
वेदी तु ब्रह्मणि पुमान्वेदिनी स्त्री सरिद्भिदि ॥५६६०॥
वेद्यं तु वेदैः संबद्धे वेदितव्येऽपि वाच्यवत् ।
ज्ञानकार्ये तु वेद्या सा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥५६६१॥
वेधश्छेदे ग्रहादीनां दर्शने धातुमिश्रणे ।
शतत्रुट्यात्मकलवत्र्यंशमाने तथा पुमान् ॥५६६२॥
वेधा पुनर्मकारे सा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।
वेधकं व्यद्धरि त्रि स्यात्क्ली धान्याके च सैन्धवे ॥५६६३॥
वेधकः पुंसि कर्पूरे चन्दने चाम्लवेतसे ।
वेधनं व्यधने स्त्रीत्वास्फोटन्यां वेधनी मता ॥५६६४॥
वेधमुख्या तु कस्तूर्यां ना तु कर्चूरके भवेत् ।
वेधा विदुषि सर्वज्ञे त्रिर्ना देशे हरौ विधौ ॥५६६५॥
[पर्णद्रुसूर्यधर्मेषु प्रणेतरि तथा पुमान्] ।
वेध्यम्लवेतसे वेधिनी तु मेथीजलौकसोः ॥५६६६॥

वेध्यं शरव्ये क्लीबं स्याद्वेध्या वाद्यान्तरे मता ।
वेनो द्वयोर्जनेऽम्बष्ठीवैदेहकसमुद्भवे ॥५६६७॥
स्यात्पारधैनुके चापि वैदेह्याम्बष्ठजेऽपि च ।
ना तु यज्ञप्रजापत्योर्ध्यानिमेधाविनोरयम् ॥५६६८॥
[पुंसीन्द्रे च पृथुपितर्यथ स्त्री पाण्डुरोगके] ।
वेरं न स्त्री शरीरे क्ली वार्त्ताकौ कुङ्कुमे मुखे ॥५६६९॥
वेरटं चूचुके क्लीबं त्रिर्मिश्रीकृतनीचयोः ।
(वेलश्चूते) पुमानेतत्फले तु स्यान्नपुंसकम् ॥५६७०॥
उद्यानेऽपि च बौद्धानां महासंख्यान्तरे तथा ।
वेला कूले समुद्रस्य तदम्बुविकृतावपि ॥५६७१॥
तरङ्गे वत्सरे काले व्यवस्थायामपि स्त्रियाम् ।
अक्लिष्टमरणे रागे ईश्वरस्य च भोजने ॥५६७२॥
वेगे रागेऽपि केषाश्वित्स्वाध्याये दन्तमांसके ।
बुधपत्न्यां मेरुपुत्र्यां समुद्रस्य च योषिति ॥५६७३॥
वेल्लनं स्याद्विलुठने दूर्वाभेदे स्त्रियाम्मता ।
वेल्ला तु वेल्लने नृस्त्री विडङ्गे तु नपुंसकम् ॥५६७४॥
वेल्लितं गमने क्लीबं कुटिले विधुते त्रिषु ।
वेशः प्रवेशे नेपथ्ये वेश्यावासे गृहेऽपि च ॥५६७५॥
पटगेहे तथा वेश्याकर्मण्यपि पुमान्मतः ।
अथोग्रीवैश्यजे द्वे स्याद्वेशके तु त्रिषु स्मृतः ॥५६७६॥
वेशन्तः पल्वले चापि तथाकाशे प्रकीर्त्तितः ।
वेशवारः पिष्टमांसविशेषे चाप्युपस्करे ॥५६७७॥
वेश्मको वेश्मसम्बद्धे त्रिर्नृभूम्नि नृजातिषु ।
वेश्म स्यान्मन्दिरे राशौ तुर्यराशौ च लग्नतः ॥५६७८॥
वेश्या मल्लीगणिकयोः पाठाच्छन्दोभिदोरथ ।
क्ली वेश्यागेहमल्लीभेदयोस्त्रिर्वैशयोगिनि ॥५६७९॥
वेषः क्रियायामाकल्पे पुँल्लिङ्गेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
वेषस्त्रिविष्टपे रूपे क्लीबं तु व्योम्नि वारिणि ॥५६८०॥

वेष्टः श्रीवेष्टनिर्यासे वेष्टा स्याद्वेष्टने द्वयोः ।
वेष्टकं तु शिरोवेष्टनिर्यासेऽपि नपुंसकम् ॥५६८१॥
कूष्माण्डे तु पुमाञ्शब्दद्वित्वे स्यादितियोगतः ।
वेष्टनं मुकुटे वाट उष्णीषे कर्णशष्कुलौ ॥५६८२॥
तथा परिवृते चापि गुग्गुलौ च नपुंसकम् ।
वेष्टितं त्रिषु रुद्धे क्ली लासके करणान्तरे ॥५६८३॥
वेसरोऽश्वतरे स्त्रीपुंसयोः क्लीबं तु वासरे ।
वेसवारः पिष्टमांसविशेषे चाप्युपस्करे ॥५६८४॥
वै स्यात्सम्बोधने पादपूरणेऽनुनयेऽपि च ।
वैकङ्कतस्त्रिषु विकङ्कताज्जाते द्रुमे न ना ॥५६८५॥
वैकक्ष्यं पुष्पमाल्येऽपि तिर्यग्वक्षसि धारिते ।
तथा प्रावरणे चापि वैकक्षं कस्यचिन्मते ॥५६८६॥
वैकर्त्तनो यमे कर्णे सुग्रीवेऽपि शनैश्चरे ।
वैकुण्ठः केशवे शक्रे पुँल्लिङ्गस्तुलसीद्रुमे ॥५६८७॥
तालभेदे चतुर्विंशब्रह्ममासदिनेऽपि च ।
अस्त्री तु विष्णुलोके वैकुण्ठा शक्त्यन्तरे हरेः ॥५६८८॥
वैखानसो द्वयोर्वानप्रस्थेप्यृषिषु केषुचित् ।
वम्रेऽपि तारकाभेदे ना नृभूऋषिभित्सु च ॥५६८९॥
वैष्णवानां प्रभेदेषु क्वचिद्वैखानसा मताः ।
क्ली सामभेदे त्रिर्वैखानससम्बन्धिनि स्मृतः ॥५६९०॥
वैडूर्यो रत्नभेदेऽस्त्री पुमान्स्यात्पर्वतान्तरे ।
वैजयन्ती पताकायां तर्कार्यां स्त्री हरिस्रजि[1] ॥५६९१॥
वैणं सामान्तरे द्वे तु वेणुकृत्सङ्करान्तरे ।
वैणवो वेणुबीजेऽपि वंशीवाद्ये पुमान्मतः ॥५६९२॥
वैणवी तु स्त्रियां वीणातुगाक्षीर्योः प्रकीर्त्तिता ।
वैणवं स्याद्वेणुफले स्वर्णे वेणुतटोद्भवे ॥५६९३॥
वर्षान्तरे कुशद्वीपे तथा स्यात्सामभेदयोः ।
द्वयोस्तु ब्राह्मणीमाहिष्यजे स्यात्सङ्करान्तरे ॥५६९४॥

---

१. वैजयन्तो गुहे शक्रस्य प्रासादे ध्वजेऽपि च ।
वैजुकं शिग्रुतैले च हेतौ सचौऽङ्कुरे तु ना ॥

अथ वेणुविकारेऽयं वैणवो वाच्यवन्मतः ।
वैणुको वेणुसाधौ च वेणुक्रीयायुजि त्रिषु ॥५६९५॥
वेणोश्च वादके क्ली तु तोत्रे वैणुकमिष्यते ।
प्रेतनद्यां वैतरणी या विप्राय मुमूर्षुणा ॥५६९६॥
गौर्दीयते तदुत्तारहेतवे तत्र च स्त्रियाम् ।
स्यात्कलिङ्गसरिद्भेदे रक्षसामपि मातरि ॥५६९७॥
वैतसः पुंसि मेढ्रे त्रिर्विकारे वेतसस्य च ।
अस्त्री वेतसपेटायां पुमान्स्यादम्लवेतसे ॥५६९८॥
वैतालः पुंसि वेताले तत्सम्बन्धिनि तु त्रिषु ।
वैताली सुन्दरीच्छन्दस्येषा स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ॥५६९९॥
वैतालिकः पुमान् खेट्टिताले बोधकरे त्रिषु ।
वैतालीयं त्रिवेतालयुजि छन्दोऽन्तरे त्रिषु ॥५७००॥
वैदर्भी दमयन्तीन्दुमत्योः स्त्री परिकीर्त्तिता ।
रुक्मिण्यां काव्यरीतेश्च भेदे स्तम्बान्तरेऽपि च ॥५७०१॥
दुरालभाख्ये क्लीबं तु वाक्यवक्रिम्णि कुण्डिने ।
वैदर्भं वाच्यवत्त्वे तद्योगार्थेऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥५७०२॥
वैदलं पेटिकायां स्याच्छिम्बीधान्ये तु वैदलः ।
पुमान्पक्वान्नभेदेऽथ द्वे कीटे सविषे क्वचित् ॥५७०३॥
अथो विदलसम्बद्धे वाच्यवद्वैदलं मतम् ।
वैदिकस्तु पुमान्ब्रह्मचारिण्येष प्रकीर्त्तितः ॥५७०४॥
अधीतवेदे तु तथा भवेद्वेदभवे त्रिषु ।
विदेहराजे वैदेहः पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥५७०५॥
ब्राह्मणी वैश्यजे तु द्वे स्याद्वैश्याशूद्रजेऽपि च ।
विदेहादागतादौ त्रि पुंसि स्यात्पर्वतान्तरे ॥५७०६॥
वैदेही रोचनासीतावणिक्स्त्रीपिप्पलीषु च ।
वैद्यो नृजातिभेदे द्वे नाऽटरूषे चिकित्सके ॥५७०७॥
वैद्यी तु वैद्यपत्न्यां स्याद्वैद्या स्यादोषधीभिदि ।
सनत्कुमारो वैधात्रो वैधात्री ब्राह्म्यु दीरिता ॥५७०८॥

वैधृतो योगभेदे स्यादिन्द्रे चैकादशान्तरे ।
वासिष्ठसामभेदे तु वैधृतं स्यान्नपुंसकम् ॥५७०९॥
वैधेयस्त्रिषु मूर्खे नृभूयजुःशाखिभित्सु च ।
वैनतेयस्तु गरुडे ना प्रभाकरसारथौ ॥५७१०॥
वैनाशिकस्तु बौद्धेऽपि ज्योतिर्विल्लूतयोरपि ।
वैनाशिकं तु लग्नात्क्ली त्रयोविंशगृहे मतम् ॥५७११॥
वैभ्राजो लोकभेदेऽपि विष्वक्सेनेऽद्रिभिद्यपि ।
देवोद्यानविशेषे तु तत्सरोभिदि चापि नप् ॥५७१२॥
वैमत्यो विमतापत्ये विमतत्वे पुनर्नपि ।
वैयश्वो विश्वमनसि वैयश्वं सामभिद्यपि ॥५७१३॥
वैयाघ्रस्तु रथे व्याघ्रचर्माच्छन्ने त्रियौगिके ।
व्याघ्रचर्मणि तु क्लीबं वैयाघ्रं परिकीर्त्तितम् ॥५७१४॥
वैराजं सामभेदे क्ली कल्पलोकभिदोस्तु ना ।
वैराटः शक्रगोपे द्वे वैराटं रत्नभिद्यपि ॥५७१५॥
वैराटस्तु विराटस्यापत्यादौ वाच्यवन्मतः ।
वैरिणं त्रिर्वीरणेन सम्बद्धे परिकीर्त्तितम् ॥५७१६॥
वैरी शत्रौ तथैव स्याद्वैरवत्यभिधेयवत् ।
वैरोचनिस्तु सुगते वलिदैत्यार्कपत्रयोः ॥५७१७॥
वैवस्वतः शनियमरुद्रभिन्मनुभित्स्वपि ।
वैवस्वती दक्षिणस्यां यमुनायामपि स्मृता ॥५७१८॥
वैशन्तापि च वैशन्ता पल्वले स्त्रीत्व इष्यते ।
वैशन्तयोगिनि पुनर्वैशन्तं वाच्यवन्मतम् ॥५७१९॥
शौकनासे व्यासशिष्ये वैशम्पायन इष्यते ।
वैशसं वैकृतविपन्नरके नरकान्तरे ॥५७२०॥
वैशाखो मन्थदण्डेऽपि पुमान्माधवमासि च ।
वर्षाणां द्वादशानाञ्च सप्तमे स्याद्बृहस्पतेः ॥५७२१॥
अस्त्री तु धन्विनां यत्र त्रिवितस्त्यन्तरौ पदौ ।
तत्र स्यात्स्थितिभेदे च वैशाली तु स्त्रियां मता ॥५७२२॥

पूर्णिमायां विशाखर्क्षयुक्तायां करिणो नखात् ।
ऊर्ध्वङ्कृतस्य पूर्वाङ्घ्रेरूर्ध्वभागे च कीर्त्तिता ॥५७२३॥
पुनर्नवायां रक्तायां वसुदेवस्त्रियामपि ।
वैशिको वेशसम्बद्धे त्रिर्विटत्वे नपुंसकम् ॥५७२४॥
वैशेषिकं विशेषत्वे शास्त्रे काणभुजेऽपि च ।
वैशेषिकस्त्रिस्तज्ज्ञेऽपि विशेषस्य च योगिनि ॥५७२५॥
पुमान्वैश्रवणस्तूर्यमुहूर्त्ते धनदेऽपि च ।
वैश्वदेवो ग्रहैकाहभिदोः पुंसि प्रकीर्त्तितः ॥५७२६॥
वैश्वदेवीष्टकाभेदे माघशुक्लाष्टकोत्सवे ।
छन्दोभेदेऽथ तत्क्लीबं स्याच्छस्त्रश्राद्धभेदयोः ॥५७२७॥
सामान्तरेऽपि प्रथमे चातुर्मास्यस्य पर्वणि ।
वैश्वदेवं मन्त्रभेदोत्तराषाढर्क्षयोर्मतम् ॥५७२८॥
वैश्वानरोऽग्नावप्यग्निभेदे सूर्येऽपि तत्करे ।
आत्मन्यप्यवैश्वानर्युच्यते ऋक्षपद्धतौ ॥५७२९॥
पूर्वभाद्रपदादौ रेवत्यन्तायामथो नपि ।
वैश्वानरं सामभेदे तथा [स्यात्क्लीबलिङ्गकम्] ॥५७३०॥
वैश्वामित्री तु गायत्र्यां सामभेदे नपुंसकम् ।
स्त्रियां वैषयिकी या स्त्री गता वेश्यात्वमात्मनः ॥५७३१॥
भोगाय तत्र विषयभवादौ तु त्रिषु स्मृता ।
मध्यबिन्दौ वैषुवतं विषुवत्संक्रमेऽपि च ॥५७३२॥
तथा ब्राह्मणभेदेऽपि नपुंसकमुदीरितम् ।
वैष्टं तु यक्राति स्वर्गे रोहेऽपि परमात्मनि ॥५७३३॥
विष्टपे द्यवि वायौ च विष्णौ स्यात्कस्यचिन्मते ।
वैष्णवो विष्णुभक्ते विष्णुदेवे विष्णुयोगिनि ॥५७३४॥
त्र्यथ सप्तदशारत्नेर्यूपस्यारभ्य मूलतः ।
ज्ञेयस्त्रयोदशेऽरत्नौ वैष्णवी तु स्त्रियामियम् ॥५७३५॥
सप्तानामपि मातॄणामेकस्यां स्यात्तथैव सा ।
नवानां विष्णुशक्तीनामेकस्यामपि नप्पुनः ॥५७३६॥

नवाहं सोमवगस्य साम्नोराकरजान्तरे ।
शतावर्यां तुलस्यां च तथा स्यान्मूर्च्छनान्तरे ॥५७३७॥
तथाऽपराजितायां च श्रवणर्क्षे तु वैष्णवम् ।
वैहायसं तु धानुष्कस्थितिभेदे नपुंसकम् ॥५७३८॥
प्रत्यालीढाह्वये त्रिस्तु सम्बन्धिनि विहायसः ।
वैहायसी नदीभेदे स्त्री व्योम्न्युड्डयनेऽपि च ॥५७३९॥
वोढ्री स्त्री पणतुर्ये द्वे वोढ्रो मत्स्यादिभेदयोः ।
वोढा स्याद्वृषभे पुंसि तथा स्यादृषभौषधौ ॥५७४०॥
परिणेतरि मूढे तु त्रिर्भाराश्वे द्वयोर्मतः ।
वोडी स्त्री पणपादे ना गोनसाहौ झषान्तरे ॥५७४१॥
व्यक्तं त्रिर्निश्चिते स्पष्टे व्यङ्ग्येऽपि च मनीषिणि ।
व्यक्तं तु व्यञ्जनाख्ये स्यात्कार्येऽङ्कगणिते तथा ॥५७४२॥
व्यक्तगन्धा मल्लिकायां पिप्पलीमूर्वयोरपि ।
व्यक्तिस्त्री पृथगात्मत्वे लिङ्गव्यञ्जनयोरपि ॥५७४३॥
व्यग्रस्तु विगताग्रे च व्यापृताकुलयोस्त्रिषु ।
व्यङ्गो भेके द्वयोस्त्रिस्तु विरूपाङ्गगताङ्गयोः ॥५७४४॥
पुमान्नीलपृषद्रूपवक्त्रव्याधौ तथायसि ।
व्यजनं वीजने तालवृन्तादौ वायुसाधने ॥५७४५॥
व्यञ्जनं स्यादवयवे श्मश्रुनिष्ठानलक्ष्मसु ।
व्यनक्त्यर्थे न ना यज्ञपशुसंस्कारकर्मणि ॥५७४६॥
अस्त्री तु हल्समाख्येषु वर्णेषु व्यञ्जनं मतम् ।
वृत्तिभेदे व्यञ्जना स्त्री क्लीबे चापि प्रयुज्यते ॥५७४७॥
अथ व्यक्तिकरो व्याजे व्यसनव्यतिषङ्गयोः ।
प्रस्तावेऽपि च सम्पर्के पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥५७४८॥
व्यतिक्षेपस्तु युद्धेऽतिक्षेपणेऽपि पुमान्मतः ।
व्यतिरेको निषेधेऽतिरेकेऽलङ्कारभिद्यपि ॥५७४९॥
व्यतीपातो महोत्पाते योगभेदापमानयोः ।
व्यत्यस्तस्त्रिर्विपर्यस्ते महासंख्यान्तरे तु नप् ॥५७५०॥

व्यथिः क्ली वर्त्मनि क्रोधे सान्तं त्रिस्तु व्यथावति ।
व्यध्यः पुंसि धनुर्ज्यायां वेधनीयेऽभिधेयवत् ॥५७५१॥
व्यध्वो दुरध्वे पुंसि स्यात्त्रिस्ताद्दक्षाध्वयोगिनि ।
व्यन्तरे द्वे पिशाचादौ व्यन्तरं···॥५७५२॥
महोरगः किम्पुरुषो भूतगन्धर्वकिन्नराः ।
यक्षरक्षःपिशाचाश्च जैनानां व्यन्तरा मताः ॥५७५३॥
व्यपदेशोपदेशव्यवहाराभिजनेष्वपि ।
व्ययो वित्तसमुत्सर्गे निगमे पक्षिणो गतौ ॥५७५४॥
लग्नाच्च द्वादशे राशौ विंशे वर्षे बृहस्पतेः ।
व्यर्थोऽभिधेयशून्येऽपि त्रिषु स्यान्निष्प्रयोजने ॥५७५५॥
व्यलीकमप्रियाकार्यवैलक्ष्यव्यङ्ग्यपीडने ।
विपर्ययेऽपराधे च रोगे दोषेऽपि कामजे ॥५७५६॥
अनिष्टे तु व्यलीकस्त्रिर्नागरे तु पुमान्मतः ।
व्यवच्छेदस्तु व्यावृत्तौ चापाच्च शरमोक्षणे ॥५७५७॥
व्यवहारो वाक्प्रयोगे सम्बन्धे द्यूतदण्डयोः ।
शासने वित्रसंवादे विवादेऽसिवणिज्ययोः ॥५७५८॥
व्यवहारो द्रुभेदे स्यान्न्यायेऽपि च पणे स्थितौ ।
व्यवहारिका स्याल्लोकयात्रासंमार्जनीङ्गुदे ॥५७५९॥
व्यवायः सुरतेऽन्तर्धौ पुंसि क्लीबं तु तेजसि ।
व्यसनं सक्तिविपदोर्दैवानिष्टफलेऽहसि ॥५७६०॥
पैशुन्यादौ च कोपोत्थे मृगयादौ च कामजे ।
निक्षेपे निष्फलोद्योगेऽप्यशुभे च नपुंसकम् ॥५७६१॥
व्यस्तं तु व्याकुले व्याप्ते विभक्तेऽप्यभिधेयवत् ।
शब्दशास्त्रे व्याकरणं ज्याटङ्कारे स्फुटीकृतौ ॥५७६२।
व्याघातो व्याहतावारग्वधे योगान्तरेऽपि च ।
विघ्ने प्रहारेऽलङ्कारभेदे व्याघात इष्यते ॥५७६३॥
व्याघ्रः स्यात्पुंसि शार्दूले रक्तैरण्डकरञ्जयोः ।
श्रेष्ठे नराद्युत्तरस्थः कण्टकार्यां तु योषिति ॥५७६४॥

अस्त्री व्याघ्रनखं द्वीपिनखे व्यालायुधे तु नप् ।
भवेद्व्याघ्रनखं कन्दगन्धद्रव्यविशेषयोः ॥५७६५॥
नखक्षतान्तरे क्लीबं तथा स्यादायुधान्तरे ।
व्याघ्रपादृषिभेदेऽपि पुंसि च स्याद्विकङ्कते ॥५७६६॥
एरण्डे व्याघ्रपुच्छो ना द्वीपिपुच्छे तु पुंनपोः ।
व्याजः शाठ्येऽपदेशे च स्याद्व्याजमपि न स्त्रियाम् ॥५७६७॥
व्याडो नेन्द्रे द्वयोः सर्पे शृगाले स्वापदेऽपि च ।
व्यादीर्णास्यो द्वयोः सिंहे योगार्थे तु यथायथम् ॥५७६८॥
व्याधो दुष्टे त्रिषु द्वे तु मृगयौ सङ्करान्तरे ।
व्याधिः कुष्ठे च रोगे ना कर्कशायां स्त्रियान्तथा ॥५७६९॥
व्याधिघातः पुमानारग्वधवेतसयोर्मतः ।
व्याधी रोगिण्युत्तरस्थो वेधकारिणि वाच्यवत् ॥५७७०॥
व्यापारस्तु कृतौ पुंसि दशमे भवनेऽपि च ।
व्याप्तं ख्याते समाक्रान्ते [त्रिलिङ्गं परिकीर्त्तितम्] ॥५७७१॥
व्याप्यं त्रिर्व्यापनीये क्ली साधने कुष्ठभेषजे ।
व्यायतं व्यापृते दीर्घे दृढे चातिशयेऽन्यवत् ॥५७७२॥
व्यायामः पौरुषे व्यामे स्पर्धायां दुर्गसञ्चरे ।
वस्त्राद्याकर्षणे दीर्घीकरणे विषमे श्रमे ॥५७७३॥
व्यालो दुष्टगजे भूपे द्रेष्काणभिदि चित्रके ।
बहुप्रदे त्वपि शठे खले व्यालस्त्रिषु स्मृतः ॥५७७४॥
व्यालदंष्ट्रः कोकिलाक्षे गोक्षुरेऽपि मतः पुमान् ।
द्वयोर्व्यालमृगो हिंस्रमृगे चापि मृगान्तरे ॥५७७५॥
व्यालम्बो लम्बिनि त्रि स्यादेरण्डे तु पुमान्मतः ।
व्यावर्त्तकस्त्रिर्व्यावृत्तिकृति ना चक्रमर्दके ॥५७७६॥
व्यासो वृत्तार्द्धसीम्नि स्याद्विस्तारे बादरायणे ।
व्यासं धनुर्विशेषे क्ली योगार्थे तु यथायथम् ॥५७७७॥
व्युत्थानं प्रतिकूलत्वे स्वातन्त्र्यकरणेऽपि च ।
व्युष्टं तु व्युषिते त्रि स्यात्क्ली प्रभातविवासयोः ॥५७७८॥

व्युष्टिः प्रयोजनाभिख्यफले स्त्रीलिङ्ग इष्यते ।
अग्निचित्येष्टकानां च भेदेष्वृद्धिविवासयोः ॥५७७९॥
कालेऽष्टमेऽष्टमे भुङ्क्ते यस्तत्र व्युष्टिरिष्यते ।
व्यूढः संहतविन्यस्तपृथुलेष्वभिधेयवत् ॥५७८०॥
व्यूहो व्रजेऽपि विन्यासे विन्यस्तेऽपि पुमान्मतः ।
व्योम स्थाने दिशि जले चाकाशेऽपि नपुंसकम् ॥५७८१॥
अभ्रके कामवायौ च दशमे भवने तथा ।
सूर्यस्यायतने त्राणेऽवकाशेऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥५७८२॥
तथैवाक्षितसंख्यायाः संख्याया दशकात्मनि ।
वृन्दादिषु तु षट्स्वन्ये निखर्वं वद्धमक्षितम् ॥५७८३॥
व्योमा त्वेकाहभेदे ना वाच्यवत्स्यादरक्षिते ।
व्योमचारी द्वयोर्देवे खगे त्रिश्चिरजीविनि ॥५७८४॥
व्योषं स्यात्त्रिकटुद्रव्ये करिभेदे पुमानयम् ।
मरिचं पिप्पली चैवार्द्रकं त्रिकटु कीर्त्तितम् ॥५७८५॥
व्रजोऽस्त्रियामश्वगोष्ठे गोष्ठे मार्गसमूहयोः ।
व्रजस्तु मेघे शैले च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥५७८६॥
व्रजभूर्व्रजभूमौ स्त्री स्यात्कदम्बान्तरे पुमान् ।
अथ व्रजोद्भवे त्वेष वाच्यवद्व्रजभूर्मतः ॥५७८७॥
व्रज्या वर्गे गतौ चापि तथा पर्यटने स्त्रियाम् ।
व्रणः क्षतेऽपि दोषेऽपि ना स्त्रियां परिकीर्त्तितः ॥५७८८॥
व्रणकृत्त्रिषु योगार्थे पुमान्भल्लातकद्रुमे ।
व्रणहः पुंसि चैरण्डे गुडूच्यां व्रणहा स्त्रियाम् ॥५७८९॥
व्रणहृद्गणिकार्यां ना व्रणहारिणि तु त्रिषु ।
व्रणारिः पुंस्यगस्त्येऽपि [त्रिषु वाच्यवदिष्यते] ॥५७९०॥
व्रतोऽस्त्री नियमे क्ली तु व्रतं मासर्तुवत्सरे ।
विष्णावग्नौ धनेऽन्ने च विधाने भुक्तिकर्मणोः ॥५७९१॥
महाव्रतसमाख्येऽपि क्रतुभेदे व्रतं मतम् ।
व्रती व्रतवति त्रि स्याद्द्वयोरश्वे प्रकीर्त्तितः ॥५७९२॥

व्रश्चनः पत्रपरशौ पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
छेदने व्रश्चनं क्लीबं त्रि तु छेदनसाधने ॥५७९३॥
व्राजिवाक् सूत्रसार्थेऽश्वे कुक्कुटे तु द्वयोरयम् ।
व्रातस्तु ना समूहे स्यात्सङ्घे वा यस्य लक्षणम् ॥५७९४॥
प्राहुरुत्सेधजीवाश्च नानाजातीयका अपि ।
अव्यवस्थितवृत्ताश्च सङ्घा व्राता इतीदृशम् ॥५७९५॥
मनुष्ये तु द्वयोर्व्रातो व्रात्ये यस्य च लक्षणम् ।
व्रात्यस्त्वनुपनीतो यो विवाहं ब्राह्मणादिकः ॥५७९६॥
करोति तस्मिन्संस्कारहीनमात्रेऽपि ना मतः ।
द्वयोस्तु प्रतिलोमानां प्रतिलोमजमानुषे ॥५७९७॥
व्रात्या तु व्रातचर्यायां स्त्री त्रिस्तु व्रतसाधुनि ।
व्रीहिः सामान्यधान्ये स्यादाशुधान्ये तु पुंस्ययम् ॥५७९८॥
स्याद्व्रीहिराजिकः कङ्गुधान्यचीनकधान्ययोः ॥५७९८½॥

श

शंसा स्तुतौ तथेच्छायामुक्तौ स्त्रियां मता ॥५७९९॥
इच्छायां वाऽजयः प्राह तदसत्स्मर्यते यतः ।
आङ्पूर्वस्यैष शब्दज्ञैः शंसेरिच्छार्थवाचिता ॥५८००॥
शंस्य आहवनीयाऽग्नौ शंसनीये तु वाच्यवत् ।
शमव्ययं वा क्लीबं वा कल्याणेऽथ पुमान्मतः ॥५८०१॥
शस्त्रे शिवेऽप्युत्तरस्थस्त्वयं शयितरि त्रिषु ।
शको ना पशुनिष्ठायां देशभेदे जले तु नप् ॥५८०२॥
शका तु गवयाभिख्यपशुजातौ स्त्रियामियम् ।
स्याद्वत्सरेऽपि पार्थादेः शको जात्यन्तरे नृपे ॥५८०३॥
शकन्धुर्देवताभेदे तथैव स्याद्वनस्पतौ ।
शकलस्त्वृषिभेदे ना खण्डे तु नरशण्डयोः ॥५८०४॥
रागद्रव्यविशेषे च वल्कलेऽप्यथ भेद्यवत् ।
शकलो मूर्खधनिनोर्नीवृद्भेदे नृभूमनि ॥५८०५॥

शकली तु द्वयोर्मत्स्ये शकलेन युते त्रिषु ।
शकलूर्देवताभेदे स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥५८०६॥
वनस्पतिविशेषे तु शकलूः पुंसि कीर्त्तितः ।
शकुटा पश्चिमं भागं विभज्य दशधोर्ध्वतः ॥५८०७॥
हस्तिनः पञ्चमे भागे शाकस्तम्बान्तरे तु ना ।
शकुनः पक्षिणि द्वे ना मित्रे क्ली भाविसूचके ॥५८०८॥
शकुनिः पक्षिमात्रेऽपि चिल्लपक्षिणि च द्वयोः ।
शकुनिस्तु पुमानेष स्याद्दुर्योधनमातुले ॥५८०९॥
शकुन्तस्तु द्वयोः पक्षिमात्रे भासाख्यपक्षिणि ।
स्त्रीपुंसयोस्तु शकुलो मत्स्यभेदे प्रकीर्त्तितः ॥५८१०॥
अथ कूष्माण्डवल्ल्यां स्त्री शकुला परिकीर्त्तिता ।
रोहिणीतोयपिप्पल्योः शकुलादन्युदीरिता ॥५८११॥
शकृत्क्लीबे जले प्रोक्तं तथा गोमयविष्ठयोः ।
स्याच्छकोटस्तु वाहौ ना शक्ते तु त्रिषु कीर्त्तितः ॥५८१२॥
शक्तिर्वसिष्ठपुत्रे ना स्त्री सांख्यप्रकृतौ श्रियाम् ।
सामर्थ्ये च प्रभावादिजातासु च तिसृष्वपि ॥५८१३॥
कर्मण्यप्यायुधे कासूनाम्नि शक्तीतिशक्तिवत् ।
शक्रः कुटजवृक्षे च महेन्द्रे च पुमान्मतः ॥५८१४॥
शक्लः प्रियंवदे शक्ते वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ।
शक्वा तु हस्ते ग्रन्थादौ पुंस्यथो शक्वरी स्त्रियाम् ॥५८१५॥
नद्यां विद्युति काञ्च्यां च तथा वाहावपीष्यते ।
षट्पञ्चाशत्स्वरे चापि छन्दोभेदे तथा मता ॥५८१६॥
शङ्कुः शम्भौ चतुर्वक्त्रे पुमान्संख्यान्तरेऽपि च ।
कोटिलक्षात्मकेऽथास्त्री कीलमेढ्रायुधान्तरे ॥५८१७॥
वृक्षपत्रसिराजाले शङ्कुर्गोत्रेऽपि कीर्त्तिता ।
द्वयोर्विडाले हंसे च यादोभेदे च राक्षसे ॥५८१८॥
एवमुत्पादिवर्गस्य तृतीये साम्नि च स्मृतः ।
पुन्नपुंसकयोरेनमविशेषेण मन्यते ॥५८१९॥

अप्राण्यर्थं तथा प्राह शङ्कुरप्राणिगोचरः ।
इत्यर्धर्चादिवर्गस्य वैजयन्त्यां प्रपञ्चने ॥५८२०॥
शङ्कुकर्णस्तु ना मुन्यन्तरे द्वे तु खरोष्ट्रयोः ।
शङ्कुकर्णी प्रतोल्यां स्यात्परिघे लोहकीलिनि ॥५८२१॥
शङ्खोऽस्त्री वलये कम्बौ ललाटास्थिगमर्मयोः ।
संख्याभेदे निखर्वाख्यसंख्याया दशकात्मके ॥५८२२॥
विधिभेदे त्वमावास्यातिथौ नागर्षिभेदयोः ।
मणिभेदे च शुक्त्याख्यभेषजे शङ्ख एष ना ॥५८२३॥
शङ्खपालो द्वयोर्दर्वीकराणां षट् च विंशतिः ।
ये भेदास्तेषु चैकस्मिन्योगार्थे तु यथायथम् ॥५८२४॥
शङ्खिनी चौरपुष्प्यां स्यात् शङ्खी शङ्खवति त्रिषु ।
शठो ना मातुलुङ्गे च भव्यधुर्धूरयोरपि ॥५८२५॥
सिते च सर्षपे तस्य फले चाथ नपुंसकम् ।
पाये वङ्गाख्यलोहे च प्रसवेऽत्रोक्तशाखिनाम् ॥५८२६॥
त्रिस्तु धूर्ते च शत्रौ च मार्जारे तु द्वयोरयम् ।
शणीरं पुलिने शोणाम्बुमध्यस्थेऽपि गङ्गया ॥५८२७॥
सरय्वाः सङ्गमेनावृतेऽपि स्याद्दर्दरी तटे ।
पुमाञ्शतधृतिर्ब्रह्मण्यथ योगे यथायथम् ॥५८२८॥
शतपत्रं तु कमले शतपत्रस्त्वयं द्वयोः ।
मयूरे सारसे चापि स्याद्दार्वाघाटपक्षिणि ॥५८२९॥
शतपर्वा तु ना वेणौ स्त्री दूर्वावचयोरपि ।
कलम्ब्यां च विसे तु क्ली स्थौणेयाख्ये च भेषजे ॥५८३०॥
शतपात्तु शताङ्घ्रावप्यभिधेयवदिष्यते ।
अथो शतपदीकर्णजलौकायां स्त्रियां मता ॥५८३१॥
शतमानं भवेत्कर्षद्वये व्रीहेस्तथाढके ।
शतोन्मिते तण्डुलानामपि स्यात्पुन्नपुंसकम् ॥५८३२॥
स्त्रियां शतमुखी पार्वत्यां योगे तु यथायथम् ।
शतमूर्धा तु वल्मीके योगार्थे तु यथायथम् ॥५८३३॥

शतवीर्या श्वेतदूर्वा योगार्थे तु यथायथम् ।
शतह्रदा तु तडिति तडिद्भेदे त्रि यौगिके ॥५८३४॥
शताङ्गस्तु रथे पुंसि योगार्थे तु यथायथम् ।
शतानन्दस्तु ना विष्णौ विरिञ्चे गौतमेऽपि च ॥५८३५॥
शतावर्त्ता तु तडिति शतावर्त्तस्तु ना हरौ ।
शत्रिस्तु कुञ्जरे क्रौञ्चनाम्नि पक्षिणि च द्वयोः ॥५८३६॥
शत्रुस्तु पुंस्यमित्रे स्याल्लग्नात्षष्ठे च राशिके ।
शत्रुघ्नः पुंसि भरतानुजे त्रिः शत्रुहन्तरि ॥५८३७॥
शद्रिस्तु पर्वते पुंसि द्वयोस्तु गजमेषयोः ।
शपथः कार आक्रोशे शपने च सुतादिभिः ॥५८३८॥
शफः पुंसि च शण्डे च लाङ्गलाङ्गान्तरे खुरे ।
महावीराख्यपात्रस्य परिग्रहणकाष्ठयोः ॥५८३९॥
वृथश्च यस्येत्यृचि च गीतयोः सामभेदयोः ।
शफरो मत्स्यभेदे स्यात्प्रोष्ठीसंज्ञे द्वयोरयम् ॥५८४०॥
शफरी वृक्षभेदे स्यादश्मन्तक इति श्रुते ।
शबरस्तु द्वयोः शूद्रभिल्लीसम्भव इष्यते ॥५८४१॥
शबरी तापसीभेदे रामायणकथाश्रुते ।
शबरस्तु शिवे पुंसि शबरं क्ली जले मतम् ॥५८४२॥
शबलश्चित्रवर्णे ना चित्रवर्णवृषेऽपि च ।
शबली गवि चित्रायां चित्रवर्णयुते त्रिषु ॥५८४३॥
शब्दोऽक्षरे यशोगीत्योर्वाक्ये खे श्रवणे ध्वनौ ।
शब्दप्राट् तु द्वयोः शिष्ये त्रि तु शाब्दे प्रकीर्त्तितः ॥५८४४॥
शमस्तु शान्तौ पुँल्लिङ्गे माने च चतुरङ्गुले ।
शमथस्तु जले शान्तावप्याश्रमपदे पुमान् ॥५८४५॥
शमनो ना यमे शान्तौ क्ली नना शमने नना ।
तथैव शमयत्यर्थे त्रि तु स्याच्छान्तिसाधने ॥५८४६॥
शमलं तु मतं पापे विष्ठायां च नपुंसकम् ।
अथ स्त्री शमिता चूर्णे गोधूमस्येति यादवः ॥५८४७॥

असाध्विव तदाभाति शब्दज्ञानां यदाग्रणीः ।
गोधूमचूर्णसमिधं धान्तं पुँल्लिङ्गमुक्तवान् ॥५८४८॥
शाकटायन आचार्यस्तस्यापभ्रंश इत्ययम् ।
भासते चापि साध्वी चेदीप्स्ये शमयतेस्त्रिषु ॥५८४९॥
शमी तु स्यात्सक्तुफलासंज्ञवृक्षान्तरे स्त्रियाम् ।
मुद्गमाषादिसस्यानां बीजकोश्यां च चर्मणि ॥५८५०॥
शम्बो वज्रे लोहमये वलये मुसलाग्रगे ।
अरित्रेऽर्थान्तरेऽप्यस्ति शम्बबीजात्कृषाविति ॥५८५१॥
शम्बरो मेघगिर्योर्दैत्यान्तरेऽप्युरसा स्त्रियाम् ।
दधाने द्वे तु मत्स्येऽल्पहरिणेऽपि मृगान्तरे ॥५८५२॥
क्लीबं तु सलिले बौद्धव्रतभेदे बलेऽपि च ।
शम्बूको जलशुक्तौ द्वे शम्बूका तु भवेत्स्त्रियाम् ॥५८५३॥
गजस्य मुखमध्यस्य पार्श्वाधोदेशयोरथ ।
ना सूक्ष्मे तण्डुलकणे तण्डुलस्थमलेऽपि च ॥५८५४॥
शम्भुर्ब्रह्मणि विष्णौ च शिवेऽर्हति च पुंस्ययम् ।
शम्या तु युगकीलेऽस्त्री माने षट्त्रिंशदङ्गुले ॥५८५५॥
अथो शमयितव्ये त्रिः शमितव्ये तु तन्नपि ।
शयो ना शयने पाणौ कृकलासे तु स द्वयोः ॥५८५६॥
शयथस्तु प्रदोषेऽपि मृत्यौ पुंसि प्रकीर्त्तितः ।
द्वयोस्त्वजगरे मत्स्ये निद्रालौ त्वेष वाच्यवत् ॥५८५७॥
शय्यायां शयनं क्लीबं भावे च शेरतेर्मतम् ।
शयानको गिरौ द्वे त्वजगरे कृकलासके ॥५८५८॥
शयालुस्तु श्रृगाले द्वे निद्रालावभिधेयवत् ।
उदुम्बरद्रुमे पुंसि स्याद्वृक्षावयवान्तरे ॥५८५९॥
क्लीबं तू दुम्बरफले गन्धद्रव्यान्तरेऽपि च ।
शयुस्तु नाऽर्के स्वप्ने च द्वयोस्त्वजगरे मतः ॥५८६०॥
शयुनोऽजगरे द्वे स्याच्छशाङ्कस्वप्नयोस्तु ना ।
शय्या स्त्री शयनीये च ग्रन्थगुम्फे च सा त्रि तु ॥५८६१॥

शयसाधौ पाणिभवे मन्दिरे तु नपुंसकम् ।
शरः पुंसि शरद्वायौ क्षीरादेर्मुखबन्धने ॥५८६२॥
इन्द्रसंज्ञतृणस्तम्बे हिंसामार्गणयोरपि ।
अथ ह्रीबेरजलयोः शरमुक्तं नपुंसकम् ॥५८६३॥
शरठं त्वायुधे चापे क्रीडाशीले तु भेद्यवत् ।
शरद् संवत्सरे मेघाऽत्यये चापि स्त्रियां मता ॥५८६४॥
शरभः सिंहशत्रौ स्यादष्टपात्संज्ञके मृगे ।
द्वयोर्मृगान्तरे चापि करभे च प्रकीर्त्तितः ॥५८६५॥
अविवाह्यविशीर्णाङ्गकन्यायां शरभा स्त्रियाम् ।
शरवारिः शरास्ये ना पातक्यशरजीवयोः ॥५८६६॥
शरुः स्यादायुधे क्रोधे द्वयोस्तु स्यात्कपिञ्जले ।
शर्करा च सितायां च रोगभेदे शिलान्तरे ॥५८६७॥
शर्करावत्प्रदेशे च शकलेऽल्पकपालके ।
गुडे च खण्डे विकृतौ स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥५८६८॥
शर्म गेहे सुखेऽप्युक्तं नकारान्तं नपुंसकम् ।
शर्वः शिवे ना शर्वाणी स्यान्मृडान्यां स्त्रियामियम् ॥५८६९॥
शर्वरं तमसि क्लीबं शर्वरः शिवचन्द्रयोः ।
शर्वरी तु स्त्रियां रात्रौ सन्ध्यायामपि कीर्त्तिता ॥५८७०॥
शलं तु शलले क्लीबं तल्लोम्नि परिकीर्त्तिम् ।
शलस्तु गन्तरि त्रि स्याद्द्वयोरुष्ट्रे च गर्दभे ॥५८७१॥
शलली नप्स्त्रियोः श्वाविल्लोम्नि श्वाविधि तु द्वयोः ।
शलाका तु भवेत्सूच्यां द्यूतोपकरणेऽपि च ॥५८७२॥
अस्थूलदीर्घकाष्ठादिमये वस्तुनि च स्त्रियाम् ।
शल्कं तु शकले चात्तरसेऽपि शकले मतम् ॥५८७३॥
वल्कले मुद्गरे चाथ त्रिषु भीतौ च पातरि ।
शल्यमस्त्री शलाकायां शङ्कुसंज्ञायुधान्तरे ॥५८७४॥
विद्ध्वा शरीरं लीनेऽन्तःकाण्डेऽथ मदनद्रुमे ।
मद्रराजान्तरे चाथ श्वाविट्संज्ञमृगे द्वयोः ॥५८७५॥

शल्यकस्तु पुमाञ्श्वेतखदिरे कदराह्वये ।
शल्यकी तु द्वयोरेषा मृगभेदे प्रकीर्त्तिता ॥५८७६॥
शवस्तु कुणपे न स्त्री जले तु क्ली गतौ तु ना ।
शशो बोलौषधे द्वे तु रोगकर्णमृगे मतः ॥५८७७॥
शश्शरीकस्तु पुष्पाख्ये द्वयोर्लावाख्यपक्षिणि ।
क्रिमौ च भेद्यलिङ्गस्तु विकलेन्द्रियजन्तुषु ॥५८७८॥
शष्कुल्यपूपभेदेऽपि स्यात्कर्णावयवान्तरे ।
शष्पं बालतृणे रूपे रोमभेदे च न स्त्रियाम् ॥५८७९॥
शस्ता मित्रावरुणयोर्ना ब्रह्मणि पितर्यपि ।
चण्डाले तु द्वयोः शस्ता त्रिषु स्तोतरि कीर्त्तितः ॥५८८०॥
शस्त्री तु छुरिकायां स्त्री शस्त्रं तु क्लीबमायुधे ।
अयस्पृङ्मन्त्रभेदेषु शंसायाः साधनेषु च ॥५८८१॥
शस्त्रकष्टङ्कणक्षारे शस्त्रकं त्वयसि स्मृतम् ।
शाको हरितके पत्रपुष्पादिदशके तरोः ॥५८८२॥
मूलपत्रकरीराग्रफलकाण्डाधिरूढकम् ।
त्वक्पुष्पं कवकं चेति शाकं दशविधं स्मृतम् ॥५८८३॥
इत्युक्ते नस्त्रियां ना तु पृथुच्छदतरौ मतः ।
शक्तौ सहाये सुहृदि साधनेऽपि शकेर्घञि ॥५८८४॥
भारताऽनन्तरे द्वीपभेदेऽपि शकटेऽपि च ।
शिरीषेऽप्यथ शाका तु हरीतक्यां प्रकीर्त्तिता ॥५८८५॥
शाकी तु स्त्री महाशाके नानाशाकसमाहृतौ ।
शाककोष्ठा तु जीवन्तीडोडीसंज्ञकशाकयोः ॥५८८६॥
शाकम्भरी तु दुर्गायां लवणह्रदभिद्यपि ।
शाकाख्यः शाकवृक्षे ना शाके तु स्यान्नपुंसकम् ॥५८८७॥
अथ शाकट इत्येष पुमान्पलशतात्मनः ।
तुलासंज्ञस्य मानस्य विंशत्यात्मकभारके ॥५८८८॥
शाकटी ना पराभिख्ये यत्तु मानं व्यवस्थितम् ।
उक्तात्तु यद्दशगुणं ततो दशगुणं च यत् ॥५८८९॥

तस्माच्च यद्दशगुणं तस्मिन् क्ली भेद्यवत्पुनः ।
शकटेः शकटस्यापि सम्बन्धिनि च वाहके ॥५८९०॥
शकटस्याथ शाकट्यर्थे निदानकृतोदिते ।
शाकटीनस्तुलानां स्याद्विंशत्यात्मकमानके ॥५८९१॥
शकटस्य तु सम्बन्धिन्ययं वाच्यवदिष्यते ।
शाकलं शकलाख्येन रक्ते द्रव्येण वाच्यवत् ॥५८९२॥
शाकलानां च शकलस्यापि सम्बन्धिनि स्मृतम् ।
अस्त्रियां शकले पुंसि काष्ठखण्डकृताङ्गदे ॥५८९३॥
ऋषिभेदे सर्पभेदे शाकलं तु पुरान्तरे ।
मद्राणां सामभेदेऽपि शाकल्यश्रुतियागयोः ॥५८९४॥
बाह्लीकग्रामभेदेऽपि नपुंसकमुदीरितम् ।
शाकी त्रिषु सहायेऽथ शाकिनी डाकिनीभिदि ॥५८९५॥
तथैव शाकक्षेत्रेऽपि स्त्रीत्व एव प्रकीर्त्तिता ।
शाकुनः स्याच्छाकुनिके निमित्तेऽप्यथ वाच्यवत् ॥५८९६॥
शकुनेः शकुनस्यापि सम्बन्धिनि तथा मतः ।
परोत्तापिन्यपि भवेत्पश्चात्तापिनि कस्यचित् ॥५८९७॥
वैतंसिकः शाकुनिको निमित्तज्ञे तथा त्रिषु ।
केषाञ्चिन्मत्स्यबन्धेऽपि तथा शकुनयोगिनि ॥५८९८॥
शाकुनी मत्स्यबन्धे त्रिः पुमान्स्यादसुरान्तरे ।
शाकुनेयो लघूलूके द्वे त्रिः शकुनियोगिनि ॥५८९९॥
पुँल्लिङ्गः शाकुनेयोऽयं वृकनाम्न्यसुरे मतः ।
शाकुन्तलो ना भरते क्लीबं स्यान्नाटकान्तरे ॥५९००॥
द्वयोः शाकुलिको मत्स्यबन्धे त्रिर्मत्स्यसंहतौ ।
शाक्करो वृषभे सोमविशेषेऽप्यथ वाच्यवत् ॥५९०१॥
शक्करीयोगिनि क्ली तु यागसामभिदोर्भवेत् ।
शाक्तं सामान्तरे क्ली त्रिस्तान्त्रिके ना पराशरे ॥५९०२॥
शाक्तिकस्त्रिः शक्तिजीविन्यपि स्यात्तान्त्रिकान्तरे ।
शाक्त्यं सामान्तरे ना तु गौरवीति ऋषौ भवेत् ॥५९०३॥

शाक्यो गौतमबुद्धे ना त्रिः शकाभिजनादिके ।
शाक्री स्त्रियां स्याद् दुर्गायां शाक्रं ज्येष्ठर्क्ष इष्यते ॥५९०४॥
शाखा तरोर्लतायां च देहाङ्घ्रयङ्गुलिबाहुषु ।
गृहपार्श्वे द्वारपार्श्वस्तम्भे भागप्रभागयोः ॥५९०५॥
पक्षान्तरेऽन्तिके वर्षे वेदव्यक्तिषु च स्त्रियाम् ।
शाखस्तु स्कन्ददेवस्य पृष्ठजे स्यात्सुरान्तरे ॥५९०६॥
करञ्जेऽपि च पुँल्लिङ्गः शाखा व्याप्तौ द्वयोर्मता ।
शाखामृगो वानरे द्वे केषांचिच्चिक्षुरेऽपि च ॥५९०७॥
शाखाशिफा वरोहः स्यान्मूलाच्चाग्रङ्गता लता ।
शाखी तु वृक्षसामान्ये शाखिनस्तु नृभूमनि ॥५९०८॥
तुरुष्केष्वथ शाखी तु स्याच्छाखावति वाच्यवत् ।
शाख्यस्तु शाखासदृशे शाखायोगिनि च त्रिषु ॥५९०९॥
शाङ्करः शङ्करस्य स्यात्सम्बन्धिन्येष वाच्यवत् ।
'शाङ्करी तु समाम्नाये वर्णानां शिवसम्मते ॥५९१०॥
क्लीबं शाङ्करमार्द्राभे पुमान्शाकरवृद्दषे ।
शाङ्करिस्तु गणेशेऽपि कार्त्तिकेये तथा पुमान् ॥५९११॥
शाङ्खस्त्रिः शङ्खसम्बन्धिन्यथ शङ्खस्वने तु नप् ।
शाङ्खिकस्त्रिः शङ्खयोगिन्यपि शङ्खध्मि कीर्त्तितः ॥५९१२॥
द्वयोस्तु शङ्खकक्रमिजातौ शङ्खारिनामनि ।
शाडवो रागभेदेऽम्लमधुरेऽथ त्रि तद्वति ॥५९१३॥
शाणो ना निकषे द्वे तु शाणः शाणा चतुष्टये ।
माषाणामथ दाने स्त्री शाणी गोण्यामपीष्यते ॥५९१४॥
शणसम्बन्धिनि त्वेषा शाणी स्याज्जैनचीवरे ।
तथा जवनिकाभेदे संज्ञायां त्रिस्तु यौगिके ॥५९१५॥
शाण्डिल्यस्त्वृषिभेदे ना स्याद्बिल्वे पावकान्तरे ।
शाण्डिल्यस्य त्वपत्ये द्वे गोत्रे स्त्री तत्र शाण्डिली ॥५९१६॥
शाण्डिलः शाण्डिल्यजाते शाण्डिलीत्यग्निमातरि ।
शातस्तीक्ष्णे कृशे चापि शतयोगिनि वाच्यवत् ॥५९१७॥

क्ली धत्तूरसुखयोः पुंसि भ्रंशक्षयादिषु ।
शातकुम्भं सुवर्णे क्ली तत्सम्बन्धिनि तु त्रिषु ॥५९१८॥
करवीरे तु धत्तूरे ना क्लीबं प्रसवेऽनयोः ।
शातकौम्भं सुवर्णे क्ली स्यात्सौवर्णे तु वाच्यवत् ॥५९१९॥
शातनं तु भवेन्नाशे तेजनेऽपि नपुंसकम् ।
शात्रवः पुंसि शत्रौ त्रि शत्रुयोगिनि शात्रवम् ॥५९२०॥
नपुंसकं तु शत्रूणां समूहे वैर एव च ।
शादस्तु शष्पे पङ्के च शदने स्वर्णबन्धयोः ॥५९२१॥
अथ शन्तरि तद्वच्च शदसम्बन्धिनि त्रिषु ।
गृह्यकारस्य शादाभिरित्युक्तेश्चिन्त्यतां गतिः ॥५९२२॥
इष्टकार्थे गोभिलस्य प्रयोग इति केचन ।
शाद्वलः शातहरिते त्रिरस्त्रीघासवत्स्थले ॥५९२३॥
अयं शाड्वलवत्प्रोक्तः पुँल्लिङ्गस्तु वृषे मतः ।
शानस्तु पुंसि शाते स्त्री शानी स्यात्कर्कटीभिदि ॥५९२४॥
शानपादः पारिपानेऽपि चन्दनकषाश्मनि ।
शान्तः शमवति त्रिः स्यान्निशातेऽवसिते शुभे ॥५९२५॥
क्ली तु शान्तौ पुमाञ्शान्तः सुनिषण्णे रसान्तरे ।
शान्ता तु श्रुतिभेदे चाऽप्यामलक्यामपीष्यते ॥५९२६॥
दूर्वान्तरे रेणुकाख्यौषधे रामस्वसर्यपि ।
सुसमार्हद्देवतायां शक्तिभेदेऽपि कीर्त्तिता ॥५९२७॥
वर्षभेदे पुनर्जम्बूद्वीपस्थे शान्तमिष्यते ।
भीष्मे शान्तनवस्तद्वत् फिट्सूत्राणां प्रणेतरि ॥५९२८॥
द्वीपान्तरे पुनः क्लीबमिदं शान्तनवं मतम् ।
शान्तनुर्धान्यभे शान्तनौ भीष्मपितर्यपि ॥५९२९॥
शान्तिः शमे चिकित्सायां धर्मपत्न्यां च मङ्गले ।
स्त्री ना दशममन्वन्तरेन्द्रेऽपि तुषितान्तरे ॥५९३०॥
अर्हद्भेदेऽपि च तथा शान्तिनाथाऽभिधान्तरे ।
शापः शपथ आक्रोशे तरत्काष्ठादिके पुमान् ॥५९३१॥

शावरं त्वपराधेऽघे क्ली लोध्रे ना त्रियौगिके ।
जाल्मेऽपि शाबरी त्वात्मगुप्ताशबरभाषयोः ॥५९३२॥
शाबरं ताम्रतमसोस्तथा शम्बरचन्दने ।
रोध्रे शाबरकः शाबरिका स्याद्रक्तपान्तरे ॥५९३३॥
शाबल्यं शबलत्वे शाबल्या स्याद्बन्धुलस्त्रियाम् ।
शाबस्ती पुरभेदे शावस्तस्तत्कर्तृभूपतौ ॥५९३४॥
शाब्दी स्त्रीत्वे सरस्वत्यां शाब्दस्त्रिशब्दयोगिनि ।
शाब्दिकस्त्रिः शब्दयोगिन्यपि शब्दविदि स्मृतः ॥५९३५॥
शामनस्त्रिः शान्तिकृति शामनस्तु यमे पुमान् ।
शामित्रः शमितुर्यागपशुकर्त्तनकारिणः ॥५९३६॥
सम्बन्धिनि त्रिरग्नौ तु ना यागपशुवाचके ।
शामित्रं क्ली वधस्थाने तथा शामित्रकर्मणि ॥५९३७॥
शामीलस्त्रिः शमीयोगिन्यथ क्ली भस्मनि स्मृतम् ।
अथ स्त्रियामियं माल्ये शामीली परिकीर्त्तिता ॥५९३८॥
स्याच्छाम्बरी स्त्री मायायां त्रि तु शम्बरयोगिनि ।
शाम्बरं शम्बररणे तथा शबरचन्दने ॥५९३९॥
शाम्भवस्त्रिः शम्भुयोगिन्यपत्ये स्याच्छिवस्य च ।
शिवभक्तेऽप्यथ पुमान् [कर्पूरविषभेदयोः] ॥५९४०॥
स्त्री शाम्भवी स्याद्दुर्गायां शाम्भवो देवदारुणि ।
शाम्यं शान्तौ मतं क्लीबे शाम्यस्तद्योगिनि त्रिषु ॥५९४१॥
शायकः कर्त्तरि त्रि स्याच्छयनस्याऽथ शायिका ।
शयनस्यैव पर्यायादौ स्त्रीत्वे परिकीर्त्तिता ॥५९४२॥
शारो वायौ हिंसने च शबले त्रि तु तद्वति ।
शारः शारी द्यूतशारावक्ली शारी पुनः स्त्रियाम् ॥५९४३॥
शारिकाख्ये पक्षिभेदे कुशेयं त्रिः शरादणि ।
[अथ शारक इत्येष हिंसके वाच्यवन्मतः] ॥५९४४॥
शारदस्तु पुमान्पीतमुद्गे संवत्सरेऽपि च ।
त्रिस्त्वधृष्टे च शुद्धे च शरत्पक्वादिकेषु च ॥५९४५॥

शारस्य दातरि नवरोगे चाप्यप्रतिभेऽप्यथ ।
शारदः शारदीति द्वे सप्तपर्णतरौ भवेत् ॥५९४६॥
शारदी तोयपिप्पल्यां कार्त्तिकाश्विनपूर्णयोः ।
शारदं तु शरच्छस्ये क्लीबं श्वेतोत्पलेऽपि च ॥५९४७॥
शारदा सारिवाब्राह्मीदुर्गावाग्देवतासु च ।
पुंसि शारदको दूर्वाभेदे शारदिका स्त्रियाम् ॥५९४८॥
शारिपुत्रे द्रोणपुत्रे शारद्वतीपुत्र इष्यते ।
शारिः स्त्री शारिकासंज्ञविहङ्गे नृस्त्रियोः पुनः ॥५९४९॥
पर्याणभेदे द्यूतस्य गुडे शारयतौ तु ना ।
[तिष्यपत्न्यान्तथा बाणे कपटे च स्त्रियामियम्] ॥५९५०॥
शारिका पक्षिभेदे च वाद्यवादनदण्डके ।
द्यूतक्रीडाविशेषे च दुर्गायां तु स्त्रियां मता ॥५९५१॥
शारीरः पुंसि जीवात्मन्यथ त्रिः काययोगिनि ।
शारीरं कायघटनाऽऽयुर्वेदस्थानभेदयोः ॥५९५२॥
वृषेऽपि पुंसि शारीरं विद्वांसः केचिदूचिरे ।
शारीरको ना जीवात्मन्यथ त्रिः काययोगिनि ॥५९५३॥
शारीरके इति द्वित्वे स्यात्कायसुखदुःखयोः ।
शार्करो मधुमद्ये माध्वीकाख्ये दुग्धफेनयोः ॥५९५४॥
साम्नोस्तु योनौ वर्गोत्थयोः क्ली शर्करिले त्रिषु ।
शार्ङ्गन्तु विष्णुचापेऽपि चापे भृङ्गकृतेऽपि च ॥५९५५॥
कैषुचित्सामभेदेषु यदुक्तं तद्वदार्द्रके ।
चापमात्रेऽपि च क्लीबं वाच्यवच्छृङ्गयोगिनि ॥५९५६॥
तथा भृङ्गविकारेऽपि द्वे तु पक्ष्यन्तरे स्मृतः ।
शार्ङ्गेष्ठं चर्मपर्ण्याख्यलताभेदे नपुंसकम् ॥५९५७॥
शार्ङ्गेष्ठा तु स्त्रियां दासी षडश्राद्याख्यकौषधे ।
शार्ङ्गी तु पुंसि गोविन्दे तथा शार्ङ्गवति त्रिषु ॥५९५८॥
शार्दूलो द्वे व्याघ्रसिंहशरभेष्वपि चूर्णके ।
पक्ष्यन्तरेऽप्युत्तरस्थः पुंसि कोष्ठार्थको मतः ॥५९५९॥

नृभूम्नि शाखाभेदे ना छन्दोभिच्चित्रकौषधे ।
स्याच्छार्दूली तु व्याघ्रयादौ तथाश्वापदमातरि ॥५९६०॥
शार्वरोऽस्त्र्यन्धतमसे घातुके तु त्रिषु स्मृतः ।
शालस्तु पुंसि प्राकारेऽश्वकर्णे लकुचेऽपि च ॥५९६१॥
स्यात्सातवाहने वृक्षसामान्ये द्वे झषान्तरे ।
शाला तु गेहे गेहैकदेशे च स्त्री तरोस्तथा ॥५९६२॥
स्कन्धसञ्जातशाखायां सूक्ष्मैलायां त्रि गन्तरि ।
शालोऽस्त्र्यर्धर्चादिषु च वाच्यवद्गन्तरि स्मृतः ॥५९६३॥
अथ शाली स्त्रियां कृष्णजीरे पत्नीस्वसर्यपि ।
शालग्रामो ग्रामभेदे गण्डकीतीरसंस्थिते ॥५९६४॥
शालवृक्षावृते विष्णौ शालग्रामशिलास्थिते ।
अस्त्री तु तद्ग्रामभवे पूजार्हे स्याच्छिलान्तरे ॥५९६५॥
शालग्रामी तु गण्डक्यां स्त्रीत्व एव प्रकीर्त्तिता ।
शालङ्कायन इत्येष ऋषिभित्प्रमथान्तरे ॥५९६६॥
शालपुष्पं त्वश्वकर्णपुष्पे [क्लीबं प्रकीर्त्तितम्] ।
क्रीडान्तरे दारुपुत्र्यां वेश्यायां शालभञ्जिका ॥५९६७॥
शालसारस्तु वृक्षेऽपि हिङ्गुन्यपि पुमान्मतः ।
शालाकस्तु शलाकानां वृन्दे तत्पावकेऽपि च ॥५९६८॥
शालाकी शल्यवैद्येऽपि तथा स्यात्कुन्तधारिणि ।
शालाक्यस्त्वक्षिवैद्येऽथ क्लीबं शल्यचिकित्सिते ॥५९६९॥
कुर्वादित्याच्छलाकाया अपत्ये तु भवेत्त्रिषु ।
शालाद्वार्यो यागवह्न्यन्तरे त्रिर्गृहाग्रगे ॥५९७०॥
शालामुखं गृहद्वारे शालिभेदे तु पुंस्ययम् ।
शालामुखीयो योगे त्रिः शालाद्वार्योऽनले तु ना ॥५९७१॥
शालामृगः कुक्कुरेऽपि केषाञ्चिज्जम्बुके द्वयोः ।
शालारं क्ली हस्तिनखे सोपाने पक्षिपञ्जरे ॥५९७२॥
नागदन्तेऽपि भित्तिस्थे शालारं केचिदूचिरे ।
शालावृकाः कपिक्रोष्टुश्वविडालादयो मताः ॥५९७३॥

शालिर्दशविधे पुंसि तण्डुले क्वापि च स्त्रियाम् ।
खट्टाशे तु द्वयोर्यक्षान्तरे सिंहाकृतौ पुमान् ।।५९७४।।
शालिकस्त्रिषु शालाजे शालायां शालिका मता ।
शालिकस्त्रिः शालियोगिन्यस्य चूर्णे नपुंसकम् ।।५९७५।।
शाली फलाढ्ये च तथा शालिमत्येष वाच्यवत् ।
तथा शालावति प्रोक्तः शोभने तूत्तरस्थितः ।।५९७६।।
शालिनी तु स्त्रियामेषाछन्दोभेदे प्रकीर्त्तिता ।
शालिपिष्टं शालिचूर्णे क्लीबं काचमणावपि ।।५९७७।।
शालिवाहः शालिवहमाने शाल्यूहि वा वृषे ।
शालिहोत्रः पुमानश्वायुर्वेदकृन्मुनिभिद्यथ ।।५९७८।।
शालिहोत्रं तु शास्त्रेऽस्य नपुंसकमुदीरितम् ।
शालीनो गृहसम्बन्धिन्यधृष्टक्लीबयोस्त्रिषु ।।५९७९।।
पुमानाढ्यगृहस्थेऽथ शालीनं विनये भवेत् ।
शालुश्चोराख्यगन्धे ना कषाये त्रिस्तु तद्वति ।।५९८०।।
उदीच्यफलभेदे तु पद्मकन्देऽपि नब्द्वयोः ।
अथ स्त्रीपुंसयोः शालुर्दर्दुरे परिकीर्त्तितः ।।५९८१।।
शालूकं कण्ठगड्डुके तथा जातिफलेऽपि नप् ।
अथ द्वयोस्तु शालूको दर्दुरे परिकीर्त्तितः ।।५९८२।।
शालूरो दर्दुरे द्वे स्याच्छन्दोभेदे पुमान्मतः ।
शालेयः पुंसि मिश्रेयौषधे चाणक्यमूलके ।।५९८३।।
शालिक्षेत्रे तु शालेयं शालेयः पर्वतान्तरे ।
शाल्मलो द्वीपभेदे स्यान्निर्यासे शाल्मलेरपि ।।५९८४।।
उत्तरस्थः शाल्मलिवत्तूलवृक्षान्तरे मतः ।
शाल्मलिस्तु द्वयोस्तूलद्रुमभेदे द्वीपभिद्यपि ।।५९८५।।
यदावृतिर्घृताम्भोधिस्तथैव नरकान्तरे ।
स्त्रियां रूपद्वयं तस्य शाल्मलिः शाल्मलीत्यपि ।।५९८६।।
शाल्मली स्त्री सरिद्भेदे नारकीयाऽऽपगान्तरे ।
विष्णुशक्त्यन्तरेऽपीति विद्वांसः केचिदूचिरे ।।५९८७।।

रोहिद्रुमे शाल्मलिकः शाल्मलेश्च कनि स्मृतः ।
शाल्मली गरुडे द्वे स्त्री शाल्मलौ शाल्मलिन्यपि ॥५९८८॥
शाल्मलिस्थस्तु गृध्रेऽपि गरुडेऽपि तथा द्वयोः ।
शाल्वो वृक्षान्तरे शाल्वा नृभूम्नि क्षत्रियान्तरे ॥५९८९॥
तेषां वासेऽपि विषये शाल्वस्तेषां नृपे मतः ।
शाल्वा तु स्त्री सरिद्भेदे शाल्वद्रुप्रसवे तु नप् ॥५९९०॥
शावोऽस्त्री मृतके पुंसि शिशौ त्रिर्मृतयोगिनि ।
नपुंसकं तु मृतकाशौचे शावमुदीरितम् ॥५९९१॥
शाश्वतो ना शिवे व्यासे वाच्यवत्तु सनातने ।
शाश्वतं तु सदात्वेऽपि व्योम्नि स्त्री शाश्वती भुवि ॥५९९२॥
शष्कुलीयोगिनि त्रिः शाष्कुलिकं क्ली तदुच्चये ।
शासस्त्रिः शासकेऽथाज्ञाऋषिसूक्तान्तरेषु ना ॥५९९३॥
शासको दण्डयितरि शिक्षके पालके त्रिषु ।
शासनः शासके त्रि स्याच्छिक्षिकायां तु शासनी ॥५९९४॥
शासनं दण्डने क्लीबमाज्ञायामपि पालने ।
आज्ञापत्रे लेखशास्त्रसन्देशात्मयमादिषु ॥५९९५॥
शास्तिः स्त्री शासुधातौ च शासनार्थेषु कीर्त्तिता ।
शास्ता बुद्धे गुरौ भूपे जिने खड्गे तथा पुमान् ॥५९९६॥
शास्त्रं तु क्लीबमाज्ञायां विद्यायां च नपुंसकम् ।
शास्त्रचक्षुर्व्याकरणं शास्त्रनेत्रे पुनस्त्रिषु ॥५९९७॥
शास्त्रशिल्पी तु कश्मीरदेशे भूम्नि तु तज्जने ।
शास्त्रार्थः शास्त्रवाच्ये स्याद्वादेऽपि विदुषाम्मतः ॥५९९८॥
शास्त्री शास्त्रवति त्रि स्यात्पुँल्लिङ्गो बुद्ध इष्यते ।
[1]शाहाः कश्मीरभागेषु शाहो वैदेशिके नृपे ॥५९९९॥
शिर्ना शान्तौ शिवे भाग्येऽप्यादेशे जश्शसोर्मतः ।
शिक्यं शिक्या तुलारज्जौ रज्जुपाशान्तरेऽपि च ॥६०००॥
शिक्षाऽभ्यासे चिकीर्षायां पाठे विनयदण्डयोः ।
साहाय्येऽध्यापने वेदाङ्गभित्पाटलभूरुहोः ॥६००१॥

---

१. शिंशुमारस्तु पुँल्लिङ्ग उक्तस्तारामयाऽच्युते ।
शिंशुमारो द्वयोर्यादोऽन्तरे जलकपावपि ॥

पुमांस्तु शिक्षो गन्धर्वराजभेदे प्रकीर्त्तितः ।
शिक्षाकरोऽध्यापके त्रिरथ व्यासे पुमान्मतः ॥६००२॥
शिखण्डो बर्हिबर्हेऽपि चूडायां (वृक्षभिद्यपि) ।
शिखण्डी तु शिखायां स्त्री पुमांस्तु शिखिपुच्छके ॥६००३॥
शिखण्डकः काकपक्षे चूडायां बर्हिबर्हके ।
तथा शैवविशेषाणां प्राप्तमोक्षे यतौ पुमान् ॥६००४॥
नितम्बाधोभागयोस्तु क्ली द्वित्वे स्तः शिखण्डके ।
शिखण्डिकः कुक्कुटेऽपि मयूरेऽपि द्वयोर्मतः ॥६००५॥
शिखण्डिका शिखायां स्त्री पद्मरागे शिखण्डिकम् ।
शिखण्डी तु द्वयोर्ज्ञेयो मयूरेऽपि च कुक्कुटे ॥६००६॥
शिखण्डिनी तु यूथ्याञ्च गुञ्जायां चाप्सरोभिदि ।
नारायणे तथा बाणे कस्मिंश्चित्पर्वतान्तरे ॥६००७॥
कलायसंज्ञे धान्ये च शिखण्डवति तु त्रिषु ।
शिखरोऽस्त्री गिरेः शृङ्गे वृक्षाग्रे पुलकेऽपि च ॥६००८॥
पक्वदाडिमबीजाभमाणिक्यशकलेऽप्यथ ।
शिखरं शोभने चापि वर्त्तुले वाच्यवन्मतम् ॥६००९॥
शिखरं शोभने प्रोक्तमित्यसत्तदमूलकम् ।
मल्लिकाकुड्मले पाणिमुद्राभेदास्त्रभेदयोः ॥६०१०॥
शिखरा तु गदाभेदे मूर्वायां शिखरी पुनः ।
स्त्रीत्वे कर्कटशृङ्ग्यां स्याल्लवङ्गे शिखरं मतम् ॥६०११॥
शिखरी पुंस्यपामार्गस्तम्बे चापि तरौ गिरौ ।
स्याद्वाच्यवत्तु तीक्ष्णाग्रे मल्लीकोरकसन्निभे ॥६०१२॥
अत्यष्टिवृत्तभेदे तु स्त्रियां शिखरिणी मता ।
मार्जितासंज्ञके तक्रभेदे चापि सुसंस्कृते ॥६०१३॥
नायिकोत्तमभिद्रोमावलीद्राक्षान्तरेष्वपि ।
शिखा मता शिफाशाखाघृणिज्वालासु मूर्धनि ॥६०१४॥
चूडायां केकिचूडायां चूचुकेऽप्यग्रमात्रके ।
प्रधानेऽपि तथा वृक्षस्याग्रे छन्दोन्तरे स्त्रियाम् ॥६०१५॥

ना तु सर्पान्तरे सर्पसत्रयाजि फणाभृताम् ।
शिखी स्त्रियामिन्द्रजालविद्यान्तरनदीभिदोः ॥६०१६॥
शिखाकन्दं तु लशुने पलाण्डावपि कीर्त्तितम् ।
शिखाधरो ना मञ्जुश्रीबुद्धे बर्हिणि तु द्वयोः ॥६०१७॥
शिखामणिः शिरोरत्ने ना श्रेष्ठे तूत्तरस्थितः ।
शिखामूलं तु लशुने पलाण्डौ गृञ्जनेऽपि च ॥६०१८॥
शिखावान्दीपके केतावग्नौ स्याच्चित्रके पुमान् ।
त्रिः सचूडेऽपि तीक्ष्णाग्रे स्त्रियां तु स्याच्छिखावती ॥६०१९॥
शिखावलो मयूरे द्वे तच्छिखायां शिखावला ।
शिखी नाग्न्यंशुवृक्षेषु शरे केतुग्रहे द्विजे ॥६०२०॥
दीपे गिरौ धूमकेतौ कपिकच्छ्वां सितावरे ।
भिक्षौ नामान्तरे शक्रे तामसान्तरसम्भवे ॥६०२१॥
द्वितीयबुद्धे बौद्धानां ब्रह्मण्यपि तथा मतः ।
परिव्राजिवृषे वृक्षविशेषेऽश्मन्तकाह्वये ॥६०२२॥
शिखावति त्वयं त्रि स्याद्वृद्धे कुक्कुटमयूरयोः ।
यति मुक्तशिखावत्सु त्रिर्द्वे चैव बकाश्वयोः ॥६०२३॥
तथाग्निपर्यायतया त्रिसंख्यायामपीष्यते ।
शिक्कुः शिक्येऽपि जालेऽपि स्त्रीत्व एव प्रकीर्त्तिता ॥६०२४॥
शिग्रुर्भोजनशाके स्त्री ना तु शोभाञ्जनद्रुमे ।
नृभूम्नि शिग्रवो मर्त्ये ज्ञातिभेदेऽपि वैदिके ॥६०२५॥
शिङ्गो वृक्षे किशोरेऽपि पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
शिङ्घाणः कोशवृद्धावप्यब्धिफेने तथा पुमान् ॥६०२६॥
शिङ्घाणा त्रिषु नासाया मले क्लीबं त्वयोमले ।
काचपात्रेऽपि कूर्चेऽपि शिङ्घाणं परिकीर्त्तितम् ॥६०२७॥
शिञ्जा धनुर्गुणे स्त्री स्यान्नूपुरादिध्वनावपि ।
शिञ्जितं क्ली नूपुरादिध्वनौ तद्वति तु त्रिषु ॥६०२८॥
शिञ्जी शिञ्जावति त्रि स्याच्छिञ्जिनी स्त्री चतुर्गुणे ।
वृत्तचापेऽपि गणिते नूपुरेऽपि तथा मता ॥६०२९॥

शितं त्रि तेजिते ना तु विश्वामित्रसुते शरे।
क्लीबं शिता मदोष्णि स्याद्योनौ यकृति मेदसि ॥६०३०॥
शितिस्स्त्री तेजने ना तु वर्णयोः शुक्लकृष्णयोः।
ऋजावप्यथ च त्रि स्यादुक्तवर्णयुते शितिः ॥६०३१॥
भूर्जवृक्षेऽपि सारेऽथ त्रिस्तद्वर्णयुते ऋजौ।
शितिकण्ठः शिवे पुंसि तथा नागान्तरे मतः ॥६०३२॥
नीलकण्ठखगे तु द्वे तथा दात्यूहकेकिनोः।
चन्दने क्ली शितौ कस्तूर्यां च स्याच्छितिचन्दनम् ॥६०३३॥
शितिपृष्ठस्त्रियोगार्थे पुमान्नागपुरोहिते।
शित्पुटो भ्रमरे च द्वे जन्तौ मार्जारसन्निभे ॥६०३४॥
शिथिलं त्वदृढे त्रि स्याच्छिथिली तु स्त्रियामियम्।
वम्रिकासदृशे पिङ्गवर्णे कीटान्तरे भवेत् ॥६०३५॥
शिपिर्नब्ररश्मिशेफेषु द्वे पशुप्राणिनोः शिपि।
शैत्याच्छयनयोगाच्च शिपि वारि प्रचक्षते ॥६०३६॥
शिपिविष्टस्तु खलतौ शिवे विष्णौ पुमान्मतः।
त्रिर्दुश्चर्मणि शेफाग्रचर्महीनेऽपि निर्धने ॥६०३७॥
शिप्रो हनौ स्याच्छिप्रा तु नासायां च नदीभिदि।
शिप्रे कपोलौ शिप्रा तु शिरस्त्राणे प्रकीर्त्तितम् ॥६०३८॥
शिफा मातरि शाखायामवरोहे नदीभिदि।
नद्यां कशायां कुमुदमूले मांसीहरिद्रयोः ॥६०३९॥
शिबिरौशीनरे क्रव्यात्पक्षिभिद्भूर्जवृक्षयोः।
शिबिका तु कुबेरीयगदाशिबिकयोर्मता ॥६०४०॥
शिबिरं तु मतं स्कन्धावारे धान्यान्तरेऽपि च।
शिम्बिः शिमीवत्कार्येऽपि शिम्ब्यां च स्त्रीत्व इष्यते ॥६०४१॥
शिम्बो द्वे मृगजातौ स्त्री शिम्बी निष्पावनामनि।
वल्ल्यां शिम्बा तु मुद्गादिसस्यानां [बीजकोशके] ॥६०४२॥
शिम्बस्तु चक्रमर्देऽपि पुमान्कैश्चित्प्रकीर्त्तितः।
शिम्बलः क्षुद्रशिम्बेऽपि पुमांश्चैव द्रुमान्तरे ॥६०४३॥

शिम्बलं शाल्मलेः पुष्पे ऋग्भाष्ये सायणोऽब्रवीत् ।
शिम्बिः शिम्ब्यां तथा स्त्रीत्वे वल्ल्यां निष्पावनामनि ॥६०४४॥
शिम्बिकः कृष्णमुद्गे ना शिम्ब्यां स्त्री शिम्बिका मता ।
शिम्बी शिम्ब्यां च निष्पावे कपिकच्छ्वां[स्त्रियां मता] ॥६०४५॥
शिम्युः समर्थे त्रिः पुंभू नृजातिभिदि शिम्यवः ।
शिरोऽन्नपिप्पलीमूले भूर्जेऽपि शयनीयके ॥६०४६॥
स्त्रीपुंसयोस्त्वजगरे शिर एव प्रकीर्त्तितः ।
शिरस्तु मस्तके श्रेष्ठे क्लीबं स्यात्पर्वतान्तरे ॥६०४७॥
आरम्भेऽग्रे सामभिद्यापोज्योतिर्मन्त्र इष्यते ।
शिरस्का शिबिकायां स्याच्छिरस्कं तु शिरस्त्रके ॥६०४८॥
शिरस्त्रं तु कपालेऽपि शिरोरक्षणवस्तुनि ।
शिरस्थो व्यवहारस्थेऽभियोक्तर्यपि नायके ॥६०४९॥
शिरस्यो ना शिरःकेशे शिरःसम्बन्धिनि त्रिषु ।
वाच्यवद्धातुकेऽथ स्यान्ना शिरिर्बाणखड्गयोः ॥६०५०॥
शिरिर्व्यालमृगेऽपि द्वे शलभेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
शिलम्बस्तु कुविन्देऽपि मुनावपि पुमान्मतः ॥६०५१॥
शिरिणा तु स्त्रियां रात्रौ गुहायां कस्यचिन्मते ।
शिरिम्बिठः पुमान्मघे [ऋग्वेदे परिकीर्त्तितः] ॥६०५२॥
शिरीषो वृक्षभेदेऽथ नृभूग्रामान्तरे मतः ।
शिरीषकः शिरीषेऽपि तथा नागान्तरे मतः ॥६०५३॥
शिरीषिका त्वयं स्त्रीत्वे वृक्षभेदे प्रकीर्त्तिता ।
शिरोरुजा शिरोव्याधौ सप्तपर्णद्रुमेऽपि च ॥६०५४॥
शिरोरुहः कचे शृङ्गे काकनासा शिरोरुहा ।
शिलजौषधिभेदे स्त्री शैलेये शिलजं मतम् ॥६०५५॥
शिलोऽस्त्री कणिशाऽऽदाने पारियात्रसुते तु ना ।
शिलाऽश्मनि च कर्पूरे द्वाराऽधस्स्थितदारुणि ॥६०५६॥
शिलाकुट्टस्तु टङ्केऽथ पुमान्पाषाणशिल्पिनि ।
शिलाजं त्वयसि क्लीबं शिलाजतुनि च स्मृतम् ॥६०५७॥

स्याच्छिलाकुसुमे पारसीकतैले तथा मतम् ।
शिलाटकः स्यादट्टेऽपि विलेऽपि च तिले वृतौ ॥६०५८॥
शिलाधातुस्तु खटिकाहरितालकगैरिके ।
शिलापेषस्तु पेषण्यां तथा धान्यादिपेषके ॥६०५९॥
शिलावहा नदीभेदे स्त्री नृभूम्नि जनान्तरे ।
शिलासनं तु शैलेये क्ली शिलाकुसुमेऽपि च ॥६०६०॥
शिलिर्ना भूर्जवृक्षे स्त्री द्वाराधस्थितदारुणि ।
शिली गण्डूपदीभेक्योर्द्वाराधस्थितदारुणि ॥६०६१॥
स्तम्भशीर्षे तथा बाणे शल्येऽपि स्त्रीत्व इष्यते ।
शिलीमुखः शरे पुंसि भ्रमरे तु द्वयोर्मतः ॥६०६२॥
शिलोत्थं नपि शैलेये क्ली शिलाकुसुमेऽपि च ।
शिलोद्भवं क्ली शैलेये स्याच्छिलाकुसुमेऽपि च ॥६०६३॥
तथा चन्दनभेदेऽपि सुवर्णेऽपि प्रकीर्त्तितम् ।
शिल्पं नपुंसकं प्रोक्तं कारुकर्मणि कर्मणि ॥६०६४॥
कर्मान्तराणां निर्माणविज्ञानेऽपि तथा मतम् ।
शिल्पाचार्या तु वपनशालायां यौगिकेऽपि च ॥६०६५॥
शिवः शम्भौ पद्मरागे गोरसे शीधुकीलयोः ।
रुद्रभेदेऽपि शैवेऽपि तथा लिङ्गे शिवस्य च ॥६०६६॥
देवे वेदे षष्ठमासे वालके गुग्गुलावपि ।
पारते कृष्णधत्तूरे योगभित्पुण्डरीकयोः ॥६०६७॥
शुक्रे काले वसौ शाके सुनिषण्णाभिधे पुमान् ।
द्वे तु वातमृगे स्त्री तु शम्भोर्नवसु शक्तिषु ॥६०६८॥
एकस्याञ्च गवीध्वाख्यक्षुद्रधान्ये नदीषु च ।
हरीतक्यामामलक्यां तामलक्यां शमीद्रुमे ॥६०६९॥
श्यामाहरिद्रादूर्वासु पीतधात्वन्तरेऽपि च ।
छन्दोभित्पिप्पलीमूलनेमिमातृनदीभिदोः ॥६०७०॥
तुलस्यां क्रोष्टुभेदे च दीप्तजिह्वाह्वये स्मृता ।
क्ली तु वारिणि कल्याणे स्थौणेये मूलकान्तरे ॥६०७१॥

चाणक्यमूलकाभिख्ये सुखे व्योम्नि च सैन्धवे ।
सामुद्रलवणे श्वेतटङ्कणे चन्दनेऽपि च ॥६०७२॥
तारेऽप्यामलके लोहे तगरे वर्षभिद्यपि ।
जम्बूप्लक्षद्वीपगते पुराणे शैवनामनि ॥६०७३॥
मोक्षे तु नस्त्री गौर्यां तु द्वयमेतच्छिवी शिवा ।
त्रि तु स्याच्छुभयुक्तेऽस्य सदा वाऽन्ताद्युदात्तता ॥६०७४॥
शिवङ्करो ना खड्गे स्यादथ त्रिः शिवकारिणि ।
शिवप्रियः पुष्पवृक्षे वसुभद्द इति श्रुते ॥६०७५॥
शिशिम्बष्ठस्तु मेघेऽपि भरद्वाजेऽपि चोच्यते ।
विशेषतौं च शिशिरो शीते ना त्रि तु तद्वति ॥६०७६॥
शिशुः पुंस्यृषिभेदे च स्कन्दे च द्वे तु बालके ।
शिशुकस्तु द्वयोर्बाले शिंशुमारे तथैव च ॥६०७७॥
उलूपीसंज्ञके यादोऽन्तरे ना तु द्रुमान्तरे ।
शिशुप्रियं क्लीं कल्हारे सौगन्धिकमिति श्रुते ॥६०७८॥
शिंशुमारस्तु पुँल्लिङ्ग उक्तस्तारामयाऽच्युते ।
शिंशुमारो द्वयोर्यादोऽन्तरे जलकपावपि ॥६०७९॥
शिश्विदानो द्वे कृकलासे त्रिः स्यात्कृष्णकर्मणि ।
शीकरस्तु पुमान्वाताहृते स्नेहकणे मतः ॥६०८०॥
हस्तिहस्तोद्भूतदानजले च शबले गुणे ।
तथा शीतगुणे त्रिस्तु तद्गुणान्यतरान्विते ॥६०८१॥
शीघ्रं क्लीबमसत्त्वे ना वायौ क्षिप्रे तु तत्त्रिषु ।
शीतं जले च शैत्ये क्ली त्रिषु शैत्यगुणान्विते ॥६०८२॥
शीतस्तु वेतसे पुंसि तथा श्लेष्मातके मतः ।
शीतकस्त्वलसे त्रि स्त्री तु ज्वालाभिदि शीतिका ॥६०८३॥
करवीरे पुमाञ्शीतकुम्भस्तत्प्रसवे तु नप् ।
शीतपङ्कस्तु ना शीधौ योगार्थे तु यथायथम् ॥६०८४॥
शीतलश्चम्पकतरौ तथा शीतगुणे पुमान् ।
त्रि तद्वति स्त्री तु रक्तवर्णायां गवि शीतला ॥६०८५॥

सैन्धवे क्ली शीतशिवं ना तु शालेयभेषजे।
शीधुरस्त्री मद्यमात्रे पक्वेक्षुरसजेऽत्र च॥६०८६॥
शीरा कार्पासिकायां स्त्री शीरस्त्वजगरे द्वयोः।
लताकुशे तु शीरीति स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता॥६०८७॥
शीर्णिस्त्वङ्गे विशरणे तथा रोगे भवेत्स्त्रियाम्।
शीर्वी स्त्री पुंसयोर्न्यङ्कौ कृमौ च परिकीर्त्तितः॥६०८८॥
शीर्षण्यं क्ली शिरस्त्राणे योधानां शीर्षकाह्वये।
केशे ना विशदे तु त्रिर्मुख्ये मूर्धभवेऽपि च॥६०८९॥
शीलमस्त्री स्वभावेऽपि सद्वृत्तेऽपि प्रकीर्त्तितम्।
शीवा द्वयोः शृगाले चाऽजगरे सर्प एव च॥६०९०॥
शुको व्याससुते कीरे रावणस्य च मन्त्रिणि।
ग्रन्थिपर्णे शिरीषे च शुकं स्याच्छोणके क्वचित्॥६०९१॥
शुकनासष्टुण्टुवृक्षे पुमांश्चागस्त्यपादपे।
शुकपत्रो निर्विषा ये सर्पा द्वादशकीर्त्तिताः॥६०९२॥
तेषामेकत्र योगे तु लिङ्गादि स्याद्यथायथम्।
शुक्तस्तु पूतितां प्राप्ते परुषेऽम्लेऽपि वाच्यवत्॥६०९३॥
शुक्तं तु काञ्जिके कल्कजातावपि नपुंसकम्।
यन्मस्त्वादिशुचौ भाण्डे सक्षौद्रगुडकाञ्जिके॥६०९४॥
त्रिरात्रं धान्यराशिस्थं तत्र चापि प्रकीर्त्तितम्।
शुक्तिस्तु मुक्तास्फोटे स्त्री स्यादङ्कोलदलौषधे॥६०९५॥
तिन्तिड्यां तिन्तिडीकायाः फले दुर्नामिकाह्वये।
जलजन्तौ च घोटानां रोमावर्त्तान्तरेऽपि च॥६०९६॥
कर्षोन्माने तथा कर्षे द्विगुणोन्मानकेऽपि च।
अक्षिरोगविशेषे च पुमांस्त्वृष्यन्तरे स्मृतः॥६०९७॥
शुक्रस्तु श्वेतवर्णे च शुक्लपक्षे पुमान्मतः।
श्वेतवर्णान्विते तु त्रिः शुक्रं त्वप्सु नपुंसकम्॥६०९८॥
शुक्लोऽर्के सितवर्णे च चन्द्रेऽग्नौ भार्गवेऽध्वरे।
दक्षिणाग्नौ क्रतावंशौ यज्ञपात्रगृहान्तरे॥६०९९॥

ज्येष्ठमासेऽपि शुक्लं तु हेम्नि पुण्ये धने जने ।
रेतोऽक्षिरुग्भिदोः सामान्तरे द्वे तु शिशौ द्विजे ॥६१००॥
त्रि तु मेध्ये सिते चाथ घर्मसर्जनरश्मिषु ।
शतत्रये रवेः शुक्रा इति स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिताः ॥६१०१॥
शुण्ठोऽल्पे त्रिषु ना तु स्यात्पशौ पेश्यां तृणान्तरे ।
शुण्ठिर्ना शुण्ठतौ धातौ स्त्री तु स्यान्नागरौषधे ॥६१०२॥
शुण्डा सलीलहस्तिन्यां मदिराहस्तिहस्तयोः ।
शुद्धोऽस्त्रियां जलेऽर्के तु ना त्रिः केवलपूतयोः ॥६१०३॥
शुद्धान्तोऽन्तःपुरे कक्ष्यान्तरे गुह्ये तथा पुमान् ।
शुनो वायौ सुखे तु क्ली शुनके तु द्वयोर्मतः ॥६१०४॥
शुनकस्त्वृषिभेदे ना शुनि स्त्रीपुंसयोर्मतः ।
शुन्ध्यवोऽप्सु स्त्रियोः शुन्ध्युर्नाऽहोऽग्न्यर्के द्वयोः खगे ॥६१०५॥
शुभं लग्नाच्च नवमे राशावप्सु च मङ्गले ।
मञ्जुप्रशस्तयोस्तु त्रिर्मङ्गलेन तथान्विते ॥६१०६॥
अर्घ्यायां तु शुभेत्येषा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।
शुभिस्त्रि रम्ये विप्रे द्वे नाऽवनौ च ऋषौ रवौ ॥६१०७॥
शुभ्रः शौक्ल्ये पुमांस्त्रिस्तु शुक्ले स्याद्दीप्तिमत्यपि ।
शुल्कोऽस्त्री स्यात्प्रदेयेऽर्थे मार्गादिषु महीपतेः ॥६१०८॥
विवाहाय वराद्ग्राह्ये धनेऽपि परिकीर्त्तिता ।
शुश्रूषा श्रोतुमिच्छायामुपास्तौ च कथानके ॥६१०९॥
शुषिर्ना शुष्यतौ धातौ स्त्री तु रन्ध्रे च शोषणे ।
शुषिरो विवरे न स्त्री वाद्यभेदे नखौषधे ॥६११०॥
पाशादौ तु छिद्रयुक्ते शुषिरस्त्रिषु कीर्त्तितः ।
एतच्चासाम्प्रतं यस्माद्दन्त्यादिः सुषिरो मतः ॥६१११॥
शुष्णो ग्रीष्मांशुकुक्ष्यर्के ना द्वे शोषे बले तु नप् ।
शुष्मं बलेऽप्सुसंयोगे शुष्मः कालेऽनिले रवौ ॥६११२॥
शूकोऽस्त्री धान्यसूक्ष्माग्रे शुङ्गाऽनुक्रोशयोरपि ।
शूद्रश्चतुर्थवर्णे च तथा संकरजे द्वयोः ॥६११३॥

स्त्र्यर्थे शूद्राऽत्र पुंयोगे तु शूद्री भूम्नि तु स्मृताः ।
शूद्रा घर्मार्थरश्मीनां त्रिशत्याः प्रथमे शते ॥६११४॥
नपुंसकं तु रजते शूद्रमेतत्प्रकीर्त्तितम् ।
शून्यं रिक्ते मोहवतो वचस्यपि च वाच्यवत् ॥६११५॥
शूरो वीरे त्रिषु श्वेतशालौ ना कुक्कुटे द्वयोः ।
शूर्पोऽस्त्री परिमाणेऽपि द्रोणयुग्मात्मके मतः ॥६११६॥
अर्द्धप्रस्थात्मके मानेऽपि च द्रोणचतुर्गुणे ।
प्रस्फोटनक्रियायां च साधनेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥६११७॥
शूर्पकर्णो हस्तिनि द्वे यौगिके तु यथायथम् ।
शूलोऽस्त्री शस्त्रभेदे च तथा रोगान्तरे मतः ॥६११८॥
स्याच्छूलनाशकं सौवर्चलाख्ये लवणे नपि ।
शूलिकस्त्रिः शूलवति द्वे विप्राशूद्रसंभवे ॥६११९॥
शूली तु शूलयुक्ते त्रिः शङ्करे तु पुमान्मतः ।
शृङ्खलः कटिसूत्रे त्रिर्दन्तिनां पादबन्धने ॥६१२०॥
शृङ्गोऽस्त्री शैलशिखरे सानौ क्रीडाऽम्बुयन्त्रके ।
विषाणे च प्रभुत्वे च स्यात्प्राधान्यप्रधानयोः ॥६१२१॥
क्लीबं तु ज्वलिनि स्त्री तु शृङ्गी मत्स्यान्तरे मता ।
मद्गुरस्य स्त्रियां कर्कटशृङ्ग्यां च विषौषधे ॥६१२२॥
अथ शृङ्गस्तु पुँल्लिङ्गो जीवकाह्वयभेषजे ।
शृङ्गारस्तु पुमान्दन्तबीजस्तम्बेऽम्बुसंभवे ॥६१२३॥
शृङ्गाटं तत्फले युद्धयन्त्रभेदे चतुष्पथे ।
शृङ्गारो लम्पटे पुंसि नस्त्री तु रस उज्ज्वले ॥६१२४॥
तथा सिन्दूरचूर्णे च करिणां मण्डनान्तरे ।
शृङ्गारी पूगवृक्षे ना सुवेषे त्वभिधेयवत् ॥६१२५॥
शृङ्गी तु वृषभेऽश्वे च यस्य शृङ्गः पदे भवेत् ।
मांसबुद्बुद उक्तोऽयं पुमांश्च वृषभौषधे ॥६१२६॥
शृङ्गिणी तु गवि स्त्रीत्वे महिषे तु द्वयोर्भवेत् ।
शृङ्गिबेरं तु शुण्ठ्यामप्यार्द्रकेऽपि नपुंसकम् ॥६१२७॥

२९-क

शेवा स्त्री प्रचलासंज्ञनिद्रायां क्ली सुखे धने ।
शेषोऽप्रधानेऽनन्ताख्यसर्पराजे च शार्ङ्गिणः ॥६१२८॥
अवतारान्तरेऽपत्ये त्रिस्त्वन्यत्रोपयुक्ततः ।
माल्याक्षतादिदाने तु स्त्री शेषा परिकीर्त्तिता ॥६१२९॥
शैखस्त्वनन्यपूर्वायां विप्रायां व्रात्यविप्रजे ।
द्वयोरथ शिखा योगिन्येष शैखस्त्रिषु स्मृतः ॥६१३०॥
शैत्यं शीतलतायां च नैशित्ये शौक्ल्यकार्ष्ण्ययोः ।
शैलस्तु भूधरे पुंसि शिलासम्बन्धिनि त्रिषु ॥६१३१॥
वृत्तौ शीलभवायां स्त्री शैलीति परिकीर्त्तिता ।
शैलाटः शुक्लकाचे च देवले च पुमान्मतः ॥६१३२॥
शैलाटस्तु द्वयोः सिंहे किराते च प्रकीर्त्तितः ।
शैलूषो ना बिल्वशण्डजात्योर्द्वे कितवे नटे ॥६१३३॥
शैलेयं सिन्धुलवणे क्लीबं स्यात्तार्क्ष्यशैलके ।
कालानुसार्यधातौ च मधुपे तु द्वयोरयम् ॥६१३४॥
स्त्रियां शैवलिनी नद्यां वाच्यवत्तु सशैवले ।
शैशवं तु द्वयोः साम्नोरुच्चतागीतयोस्तथा ॥६१३५॥
नपुंसकं शिशुत्वेऽथ शिशुसम्बन्धिनि त्रिषु ।
शोकः शुचि पुमान्स्त्री तु शोकी रात्रौ प्रकीर्त्तिता ॥६१३६॥
शोचिर्ज्वलति शुद्धत्वे पैङ्गचेंशौ शुग्विशुद्धयोः ।
शोठो धूर्त्तेऽलसे मूर्खे नीचे पापरते त्रिषु ॥६१३७॥
शोणो हिरण्यबाह्वाख्यनदभेदे प्रकीर्त्तितः ।
टुण्डुवृक्षे रक्तवर्णे त्रि तु तद्वति तत्र च ॥६१३८॥
स्त्र्यर्थे शोणा शोण्यथाश्वे द्वे कोकनदवर्णके ।
शोणितं रुधिरे वृक्षनिर्यासे कुङ्कुमेऽपि नप् ॥६१३९॥
रक्तवर्णयुते त्वेतदभिधेयवदिष्यते ।
शोधना शोधयत्यर्थे न ना शुद्धौ तु नप्स्मृतम् ॥६१४०॥
शोधनोऽङ्कोलवृक्षे ना सम्मार्जन्यां तु शोधनी ।
अथ शोधन एष स्याद्वाच्यवच्छुद्धिसाधने ॥६१४१॥

शोभनं क्ली सुवर्णेऽर्थे शोभिते त्रि तु सुन्दरे ।
शोषकः पश्चिमे कोष्ठश्रेणावारभ्य दक्षिणात् ॥६१४२॥
कोष्ठे यः सप्तमे वास्तुदेवस्तत्र पुमान्मतः ।
अथ त्रिः शोषयितरि शोष्टर्यपि च शोषकः ॥६१४३॥
शौकं शुकसमूहे च स्त्रीणां च करणान्तरे ।
शौण्डो द्वे कुक्कुटे शौण्डी पिप्पल्यां जलदावलौ ॥६१४४॥
शौण्डो तु मत्ते शुण्डासम्बन्धिन्यप्यभिधेयवत् ।
औत्थिताशनिके शौन्यादनिकस्तस्करेऽपि च ॥६१४५॥
शौर्यं शक्त्याह्वयबले लग्नाद्राशौ तृतीयके ।
शूरस्य भावक्रिययोस्तथैव स्यान्नपुंसकम् ॥६१४६॥
श्यामो ना हरिते वर्णे वर्णे कृष्णे तथाऽम्बुदे ।
पीलुद्रुमे च श्यामा तु निशीथिन्यां स्त्रियामियम् ॥६१४७॥
पिप्पलीफलिनीविद्युत्पालिनीशारिवासु च ।
स्त्री व्यञ्जनकृतायां च कन्यायां पोतकीखगे ॥६१४८॥
क्लीबं व्योम्नि मरीचेऽथोक्तवर्णान्वितयोस्त्रिषु ।
श्यामकः श्यामाकधान्ये हेम्नस्तु श्यामिका मले ॥६१४९॥
श्यामलोऽश्वत्थवृक्षे ना कार्ष्ण्ये च त्रिषु तद्वति ।
श्यामला स्त्री मृगीभेदे प्रोक्तं यस्य च लक्षणम् ॥६१५०॥
श्यामवल्ली लतायां च श्यामे च मरिचे स्त्रियाम् ।
श्यावोऽर्काश्वे च कपिशे वर्णे त्रिषु तु तद्वति ॥६१५१॥
श्येनस्तु श्वेतवर्णे ना त्रि तु तद्वति तत्र च ।
स्त्र्यर्थे श्येना तथा श्येनी मृगे द्वे त्वपि पक्षिणि ॥६१५२॥
श्येनः सामान्तरे क्रत्वन्तरे चाप्याभिचारिके ।
श्येनसंज्ञतृणप्राणिजात्योः स्यादेतयोर्यदा ॥६१५३॥
स्त्र्यर्थे वृत्तिस्तदारूपं श्येनीत्येव प्रकीर्त्तितम् ।
द्वे त्वश्वे पत्रिसंज्ञे च श्येनः पक्ष्यन्तरे स्मृतः ॥६१५४॥
श्येना तु प्राचिकासंज्ञपक्षिजातो स्त्रियां मता ।
श्येन्यो द्वयोरजगरे शकुनावपि कीर्त्तितः ॥६१५५॥

श्रद्धास्तिक्ये स्पृहायां च गर्भिण्यास्तु विशेषतः ।
श्रद्धालुर्दोहदिन्यां स्त्री श्रद्धाशीले तु वाच्यवत् ॥६१५६॥
श्रपणा श्रपयत्यर्थे ननाऽथ श्रपणी स्त्रियाम् ।
स्यादग्निहोत्रहवणीनामधेये स्रुगन्तरे ॥६१५७॥
श्रमणं तु मतं शान्तौ श्रमणी मुण्डिकौषधे ।
दध्यालयाख्यलतायां च क्षपणे तु द्वयोर्भवेत् ॥६१५८॥
श्रवणं क्ली शृणोत्यर्थे श्रोत्रे पुंसि तु विष्णुभे ।
तद्युक्ते कालमात्रेऽथ द्वयोः प्राण्यन्तरे भवेत् ॥६१५९॥
श्रवणा तु स्त्रियां रात्रिविशेषे पूर्णिमान्तरे ।
श्रवो यशःश्रोत्रबलधनाऽन्नेषु नपुंसकम् ॥६१६०॥
श्रविष्ठा वसुभेऽपि स्त्री तद्युक्ते कालमात्रके ।
अथ श्रविष्ठो जातेऽत्र वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ॥६१६१॥
श्राणा स्त्रियां यवाग्वां स्यात्क्षीरात्तु हविषस्तथा ।
अन्यत्र पक्वे श्राणस्त्रिष्वथ पाके नपुंसकम् ॥६१६२॥
श्राद्धः श्रद्धावति त्रि स्यात्स्त्रीत्वे श्राद्धेऽति तत्र च ।
श्राद्धं तु भोजनायां स्यात्पितॄणां क्लीबलिङ्गकम् ॥६१६३॥
श्रावकः श्रावयितरि श्रोतरि त्रिर्गुणे तु ना ।
कण्ठजे गायकानां यो दूरतः श्रावयेद्ध्वनिम् ॥६१६४॥
स्त्रीपुंसयोस्तु जैनानां श्रावकः स्यादुपासके ।
श्रावणी पूर्णिमायां स्त्री श्रवणर्क्षयुजि स्मृता ॥६१६५॥
मुण्ड्यौषधे च दध्यालीनाम्नि वल्ल्यन्तरेऽपि च ।
श्रावणो ना श्रावणिके मासि त्रिषु तु यौगिके ॥६१६६॥
श्रीरिन्दिरायां [सम्पत्तौ लवङ्गे च स्त्रियाम्मता] ।
श्रीकण्ठस्तु शिवे पुंसि तथैव कुरुजाङ्गले ॥६१६७॥
श्रीगर्भस्तु श्रियो गर्भे खड्गेऽपि परिकीर्त्तितः ।
श्रीघनं दधनि क्लीबं बुद्धे तु श्रीघनः पुमान् ॥६१६८॥
श्रीपर्णं त्वग्निमन्थेऽपि कमलेऽपि नपुंसकम् ।
श्रीपर्णी तु स्त्रियां वृक्षे काश्मर्ये कट्फलेऽपि च ॥६१६९॥

श्रीपुष्पं तु श्रियःपुष्पे सितपद्मेऽपि कीर्त्तितम् ।
श्रीफल्यामलकीनील्योर्बिल्वे तु श्रीफलः पुमान् ॥६१७०॥
श्रीमांस्तु पुंसि गोविन्दे कुबेरगृहकेतुषु ।
इट्चराख्यबलीवर्दे कदम्बतिलकाख्ययोः ॥६१७१॥
वृक्षयोर्गुग्गुलौ द्वे तु शुके लक्ष्मीवति त्रिषु ।
श्रीवत्सः श्रीपतौ तस्य लाञ्छनेऽपि पुमान्मतः ॥६१७२॥
श्रीवत्साङ्को वासुदेवे वृके त्वेष द्वयोर्मतः ।
श्रीवासः श्रीपिष्टनाम्नि निर्यासे केशवेऽपि च ॥६१७३॥
श्रीहृदस्तु प्रपायां च पुँल्लिङ्गोऽपि श्रियो हृदे ।
श्रुतं नपुंसकं शास्त्रे श्रवणाख्ये च कर्मणि ॥६१७४॥
आकर्णितेऽस्त्यवधृतेऽपि श्रुतं वाच्यवन्मतम् ।
श्रुतकर्मा यौगिकेऽपि पुमांस्तु स्याच्छनैश्चरे ॥६१७५॥
श्रुतिस्तु वेदे श्रवणक्रियायां च श्रोत्र एव च ।
गीतिधर्मविशेषे च शब्दे चाप्यभिधायके ॥६१७६॥
श्रूषं बले सुखे श्रूषा शाकभित्कासमर्दयोः ।
श्रेणिः पङ्क्तौ च धारायामष्टादशगणान्तरे ॥६१७७॥
अक्ली समानजातीयशिल्पिनां संहतावपि ।
श्रेयः सामान्तरे क्लीबं होइये मानुकोद्भवे ॥६१७८॥
मोक्षे धर्मे शुभेऽथ त्रिस्तद्युतेऽतिप्रशस्यके ।
स्त्र्यर्थे नपोः श्रेयसीति स्त्रियां तु श्रेयसी तथा ॥६१७९॥
पाठायां हस्तिपिप्पल्यां हरीतक्यां च कीर्त्तिता ।
श्रेष्ठं ताम्रे मतं क्लीबं स्यात्प्रशस्यतमे त्रिषु ॥६१८०॥
श्रोणिः कट्यामुपस्थे च स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।
श्रोत्रकान्ता वृद्धिसंज्ञभेषजे यौगिकेऽपि च ॥६१८१॥
श्लक्ष्णं तु मसृणेऽल्पेऽपि सुन्दरेऽप्यभिधेयवत् ।
श्लिकुर्नना विषादे ना ज्योतिषेऽपि मृगास्थनि ॥६१८२॥
अथ श्लेष्मघना भल्ल्यां केतक्यां च स्त्रियां मता ।
पिण्यामल्ल्योः स्त्रियां श्लेष्मघ्नी त्रिस्तु श्लेष्महन्तरि ॥६१८३॥

श्लेष्मा कफे चर्मणश्च विकारे दृढकाह्वये ।
रथस्य शीघ्रवहनसाधने चापि वस्तुनि ॥६१८४॥
गोधूमे श्लेष्मलस्त्रिस्तु श्लेष्मे तच्छ्लेष्मकारिणोः ।
श्लोको यशसि पद्ये च तथा वाचि पुमान्मतः ॥६१८५॥
श्वदंष्ट्रा गोक्षुराऽभिख्यस्तम्बे यन्त्रान्तरेऽपि च ।
परिखायां बहिर्भूमौ राज्ञां दन्तान्तरे शुनाम् ॥६१८६॥
श्वपचोऽनन्यपूर्वायां किरात्यां निष्ठ्यतः सुते ।
विप्राचण्डालजे च द्वे त्रि शुनः पक्तरि स्मृतः ॥६१८७॥
श्वपाकोऽम्बष्ठतो विप्रयां क्षत्तुश्चोग्रस्त्रियां सुते ।
उग्रात्क्षत्रस्त्रियां चापि शुनः पाके तु ना मतः ॥६१८८॥
श्वयो बले गदे शोषे पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
श्वयी त्रिः श्वयथौ चन्द्रे चापि पुँल्लिङ्ग इष्यते ॥६१८९॥
श्ववृत्तिस्तु शुनां वृत्तौ सेवायां च प्रकीर्त्तिता ।
श्वशुरो जनके पत्युर्जायायाश्च पुमान्मतः ॥६१९०॥
स्त्रियां तु श्वशुरा ब्राह्मयामियं सम्परिकीर्त्तिता ।
श्वशुर्यो देवरे चन्द्रे ना द्वयोः श्यालके मतः ॥६१९१॥
श्वश्रूः श्वशुरपत्न्यां च पितृष्वसरि च स्त्रियाम् ।
श्वसनं क्ली मतं श्वासे ना वायौ मदनद्रुमे ॥६१९२॥
श्वात्रं नपुंसकं क्षिप्रे धनेऽपि परिकीर्त्तितम् ।
श्वालः स्यादाशुगत्यां ना कुक्कुरे तु द्वयोर्मतः ॥६१९३॥
श्वेतस्तु ऋषिभेदेऽपि शुक्लवर्णे पुमान्मतः ।
कुलशैलान्तरे मेरोरुत्तरान्नीलपर्वतात् ॥६१९४॥
उत्तरे च त्रिषु श्वेतः शुक्लवर्णान्विते मतः ।
क्लीबं तु दध्नि रजतेऽप्यथ श्वेता सुराऽन्तरे ॥६१९५॥
पैष्टिकीसंज्ञके स्त्री स्याल्लतान्तरनदीभिदोः ।
भवेत्सुगन्धौ तुलसीसंज्ञके च कठिञ्जरे ॥६१९६॥
सितशेफालिकायां तु स्याच्छ्वेतसुरसा स्त्रियाम् ॥६१९६३॥

ष

षट्कः षण्णां गणे त्रि स्याद्विशेषात्कामरोषयोः ॥६१९७॥
मदलोभमुदां मानस्य च सङ्घे पुमान्मतः ।
षडस्रा तु स्त्रियामेषा स्याच्छागलकपादपे ॥६१९८॥
प्रसिद्धे चापि शार्ङ्गोष्ठादासाप्रभृतिभिः पदैः ।
वनस्पत्यन्तरे त्रिस्तु षट्कोणे परिकीर्त्तिता ॥६१९९॥
षड्ग्रन्था पिप्पलीमूले वचाशठ्योरपि स्त्रियाम् ।
षण्डः स्यादिट्चरे पण्डे मूर्धन्योष्मादिकः पुमान् ॥६२००॥
एष वेर्षवरे नीलवृषोत्सर्गे च कीर्त्तितः ।
षण्डोऽस्त्री वृक्षपद्मादिवृन्दे पुंसि तु गोपतौ ॥६२०१॥
षण्डाली स्त्री सरागायां तैलमाने सरस्यपि ।
षष्टिहायन-शब्दोऽयं गजे स्याद्वृद्धे स्त्रियां पुनः ॥६२०२॥
समाहारद्विगौ षष्टिहायनी भेद्यवत्पुनः ।
बहुव्रीहौ हि तत्रापि स्त्रियां ङीप् षष्टिहायनी ॥६२०३॥
वयस्येवात्र ङीबुक्तः शालादौ षष्टिहायना ।
षष्ठं तु पूरणे षण्णां त्रिः षष्ठी तु स्त्रियां तिथौ ॥६२०४॥
स्कान्द्यां षष्ठविभक्तौ च पार्वत्याश्च प्रकीर्त्तिता ।
षाडवो गीतिभेदेऽम्लमधुरोन्मिश्रिते रसे ॥६२०५॥
षाडवस्त्वम्लमधुररसयुक्ते त्रिषु स्मृतः ।
षाण्मासी सप्तमे मासि कर्त्तव्ये श्राद्ध इष्यते ॥६२०६॥
षण्मासीयोगिनि त्वेष वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ।
षाष्ठिकं व्रतभेदे षष्ठकालांशे प्रवर्त्तने ॥६२०७॥
भेद्यवत्तु क्रतुमति षष्ठाहभववस्तुनि ।
षिङ्गो वेश्यापतौ पुंसि वेश्याचार्येऽपि कीर्त्तितः ॥६२०८॥
पलमाने षोडशिका न नाथाऽस्त्री पलद्वये ।
ष्ठ्यूमश्चन्द्रे जले रश्मौ तन्तौ स्यान्मङ्गलेऽपि च ॥६२०९॥

स

सो विष्णावीश्वरे सा तु लक्ष्म्यां गौर्यामपीष्यते ।
संयद्युद्धेऽग्निचित्यायां द्वादशस्विष्टकासु च ॥६२१०॥
संयद्वरो नृपे पुंसि क्लीबं संयद्वरं रणे ।
अथ संयद्वरस्त्रि स्यादनूपेऽप्यभयप्रदे ॥६२११॥
संयावः संमिश्रणे च भक्ष्यभेदेऽस्य लक्षणम् ।
समिता त्वम्लदुग्धार्द्रा पक्वा खण्डे घृतोत्तरे ॥६२१२॥
संयावोऽयं युतश्चूर्णैः खण्डैलामरिचार्द्रकैः ।
संरम्भः पुनराटोपे क्रोधेऽपि परिकीर्त्तितः ॥६२१३॥
संरोधस्तु क्षये पुंसि तथा संरोधने मतः ।
संलयस्तु पुमान्स्वापे तथैकीभाव इष्यते ॥६२१४॥
संवत्सरोऽब्दभेदे चाऽब्दमात्रेऽपि कीर्त्तितः ।
क्लीबं संवननं याच्ञासंभक्त्योश्च वशीकृतौ ॥६२१५॥
संवर्त्तस्त्वृषिभेदे स्याद्वत्सरे च जगत्क्षये ।
संवर्त्तनायां संवृत्तावपि सर्वत्र पुंस्ययम् ॥६२१६॥
संवर्त्तको हलिहले तथैव वडवानले ।
संवर्त्तिका नवदले नलिन्यावेष्टितेऽपि च ॥६२१७॥
पुमान् संवसथः प्रोक्तो ग्रामे संवसनेऽपि च ।
संवालश्चन्द्रकिरणे गजपुच्छस्य मूलतः ॥६२१८॥
चतुर्धा च विभक्तस्य द्वितीयांशे प्रकीर्त्तितः ।
संवासः सहवासे च राजधान्यां तथा पुमान् ॥६२१९॥
स्त्रियां तु मुखशालायां न तु ना सहवासने ।
संवासनं कर्मशाला न तु ना सहवासने ॥६२२०॥
संवित्तिस्तु स्त्रियां ज्ञाने संवादेऽपि प्रकीर्त्तिता ।
संविद्युद्धे प्रतिज्ञायां सङ्केताचारनामसु ॥६२२१॥
संभाषणे क्रियाकारे ज्ञानतोषणयोरपि ।
संवृतं क्ली संवरणे वर्णधर्मान्तरेऽपि च ॥६२२२॥

संवृतस्तद्धर्मवति छादितेऽपि च भेद्यवत् ।
संवेशनं तु शयने क्लीबं संवेशना नना ॥६२२३॥
स्वापने मुखशालायां तु स्त्री संवेशनी मता ।
संव्यानं तूत्तरीयेऽपि तथा संवरणे मतम् ॥६२२४॥
संश्चत्पुमान्स्यादध्वर्यौ कुहके तु त्रिषु स्मृतः ।
संसत्सदसि सत्राख्यक्रतूनामपि भूमनि ॥६२२५॥
चतुर्विंशतिरात्रे द्वे तयोः पूर्वत्र संसदः ।
क्लीबं संसरणं जन्मन्यसम्बाधचमूगतौ ॥६२२६॥
घण्टापथेऽपि संसारे संसृतौ वारणेऽपि च ।
संसर्पः सामदशके महासर्पसमाह्वये ॥६२२७॥
अहीनक्रतुभेदे तु संसृतौ च पुमानयम् ।
संसिद्धिः स्त्री तु सिद्धौ च स्वभावफलयोरपि ॥६२२८॥
संसृष्टं मिश्रिते त्रि स्याच्छुद्धे च वमनादिभिः ।
संस्कार उत्कर्षाधाने सतः संकल्प एव च ॥६२२९॥
संस्कृतं त्वाहितोत्कर्षे कृत्रिमे निर्मलीकृते ।
त्रिषु लक्षणयुक्ते च भाषाभेदे तु संस्कृतम् ॥६२३०॥
[1]संस्तरः स्रस्तरे चापि पुमानुक्तस्तथाऽध्वरे ।
संस्तुवानः सोममहर्ष्युद्गातृषु च होतरि ॥६२३१॥
संस्त्यायो विस्तृतौ गेहे संनिवेशसमूहयोः ।
संस्थाव्यवस्थाप्रणिधिसमाप्त्याकृतिमृत्युषु ॥६२३२॥
संस्थानं तु समाप्तौ संनिवेशे च चतुष्पथे ।
सम्यक्स्थितौ च मरणे नपुंसकमुदीरितम् ॥६२३३॥
संस्थितस्तु समाप्ते च मृते सम्यक्स्थिते त्रिषु ।
संस्पर्शनोऽग्नौ पुंसि स्याच्चित्रे संस्पर्शनं मतम् ॥६२३४॥
संहतं दृढसन्धौ च सङ्गतेऽपि त्रिषु स्मृतम् ।
क्लीबं संहननं काये घटनेऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥६२३५॥
संहर्षो मुदि वायौ ना त्रि स्पर्धनसमानयोः ।
संहारो नरकस्यापि भेदे संहरणे तथा ॥६२३६॥

---

१ संस्तारः वा ।

स्यान्महाप्रलये तद्वत्संहारी त्वघशालिका ।
संहितं त्रिषु संश्लिष्टे संहिता तु स्त्रियामियम् ॥६२३७॥
शास्त्रग्रन्थान्तरे वेदभागेऽपि क्वचिदिष्यते ।
अतीव सन्निकर्षे च वर्णानां क्ली तु सामनि ॥६२३८॥
स्वादिष्ठावर्गगीते स्यात्षष्ठे च नवमेऽपि च ।
संहृतिः प्रलयाकर्षसमाप्तिषु भवेत्स्त्रियाम् ॥६२३९॥
सक्थ्यूरौ शकटाङ्गे च कस्मिंश्चित्स्यान्नपुंसकम् ।
सखा सहायसुहृदोस्त्रि स्त्रीत्वेऽत्र सखीति च ॥६२४०॥
भाषाप्रयोगे रूपं स्याद्बन्धौ तु स्यात्सखा पुमान् ।
सगरः सविषे त्रिः क्ली व्योम्नि ना तु नृपान्तरे ॥६२४१॥
सङ्करोऽग्निचटत्कारे संमार्जन्यवपुञ्जिते ।
सङ्कीर्णे च त्रिषु स्त्री तु कन्याभेदे नृदूषिते ॥६२४२॥
विवाहायोग्यकन्यानामेकत्र परिकीर्त्तिता ।
नवदूषितकन्यायां सङ्कारी पुनरुच्यते ॥६२४३॥
पुमान्सङ्कसुकः श्राद्धाऽग्नौ सङ्कीर्णे तु स त्रिषु ।
तथाऽपवादशीले च व्यक्ताव्यक्तेऽपि चारणे ॥६२४४॥
द्वयोः सङ्कुचितो हंसेऽथाल्पीभूते त्रिषु स्मृतः ।
सङ्क्रमस्त्वस्त्रियां दुर्गसञ्चरेऽप्येकमाश्रवम् ॥६२४५॥
उज्झित्वान्याश्रयप्राप्तौ तथैव प्रत्ययेऽपि च ।
सङ्ख्यमस्त्री रणे स्त्री तु सङ्ख्या स्याद्गणने तथा ॥६२४६॥
एकत्वादौ विचारे च तथैव परिकीर्त्तिता ।
सङ्गो युद्धे सङ्गमेऽथ लवणे सैन्धवे नपि ॥६२४७॥
सङ्गतो दिवसस्य स्याच्चतुर्भागे द्वितीयके ।
पञ्चरात्रपयः पानव्रतेऽथ मिलिते त्रिषु ॥६२४८॥
सङ्गमो मेलके नस्त्री सङ्गमस्तु व्रतान्तरे ।
पञ्चरात्रं पयःपानात्मके पुंसि प्रकीर्त्तितः ॥६२४९॥
सङ्गरो ना प्रतिज्ञायां क्रियाकारेऽपि चापदि ।
युद्धे विषे च क्लीबं तु सङ्गरं स्याच्छमीफले ॥६२५०॥

सङ्ग्रहस्तु महोद्योगे स्वीकारे च समुच्छ्रये।
स्त्रीसङ्ग्रहेऽपि सङ्क्षेपे पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥६२५१॥
सङ्ग्रहो मुष्टिमात्रेऽपि मुष्टौ च फलकादिनः।
सङ्घवादी द्वयोर्मर्त्त्ये यौगिके तु यथायथम् ॥६२५२॥
सङ्घातस्तु मतः पुंसि समूहे हननेऽस्थनि।
काव्यजातिविशेषे च तथैव नरकान्तरे ॥६२५३॥
सङ्घातिकारणा वेशा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता।
त्रिस्तु सङ्घातयितरि संहन्तर्यपि चेष्यते ॥६२५४॥
सज्जं स्यात्त्रिषु सन्नद्धे सतो जातेऽपि कीर्त्तितम्।
सज्जनस्तु पुमान्साधौ कुलीने भेद्यवद्भवेत् ॥६२५५॥
स्त्रियां तु सज्जना हस्तिकल्पनायामथ स्मृतम्।
नपुंसकं सज्जनं तु तद्घट्टे चोपरक्षणे ॥६२५६॥
सञ्चारः सङ्क्रमे सङ्गे चारे संस्थाचरेऽपि यः।
गत्वा गत्वा परं जिज्ञासने तत्र प्रकीर्त्तितः ॥६२५७॥
त्रिषु सञ्चारितर्यत्र सञ्चारक इति स्मृतः।
सञ्चारिका तु भूपस्य कथायां द्रविणादिषु ॥६२५८॥
नियुक्तायां महाकार्ये चास्यां दूत्यां तथा स्त्रियाम्।
सञ्जयो धृतराष्ट्रस्य सचिवे पुंसि कीर्त्तितः ॥६२५९॥
क्लीबं तु सामभेदे स्यादिन्द्रं नरक्रचि स्थिते।
विश्वाधनानीत्यारभ्य तथा हीनमखान्तरे ॥६२६०॥
संज्ञाऽभिधाने सङ्केते हस्ताद्यैरर्थसूचने।
सूर्यभार्यान्तरे बुद्धौ चेतनायां च तत्र तु ॥६२६१॥
उपांशु यच्च क्रियते स्वेष्वनीकेषु विग्रहे।
सटा जटायां स्त्रीत्वेऽथ नना सिंहस्य केसरे ॥६२६२॥
सङ्करे तु भटीविप्रसम्भवे स्यात्सटो द्वयोः।
सत्साधौ विद्यमाने च प्रशस्तेऽभ्यर्हिते तथा ॥६२६३॥
सत्ये बुधे शोभने च भेद्यवत्परिकीर्त्तितः।
सती पतिव्रतोमाश्रीतुवरीभेषजेषु च ॥६२६४॥

सत्परब्रह्मनक्षत्रजलेषु स्यान्नपुंसकम् ।
उक्तः शब्देऽपि सच्छब्दस्तस्य लिङ्गं न निश्चितम् ॥६२६५॥
सत्तमः स्यात्पूज्यतमे श्रेष्ठे त्रिष्वतिशोभने ।
सत्त्रं वनाच्छादनयोः सदादाने नपुंसकम् ॥६२६६॥
द्वादशाहादियज्ञेषु तथैव परिकीर्त्तितम् ।
सत्त्वं स्वभावसत्तायां द्रव्येऽन्तःकरणे बले ॥६२६७॥
पराक्रमे सांख्यगुणे व्यवसायाऽऽत्मभावयोः ।
माहात्म्ये च मतं क्लीबं पौरुषे त्वस्त्रियामिदम् ॥६२६८॥
पिशाचादौ तथा प्राणे सत्त्वं जन्तुषु चोच्यते ।
सत्यं क्ली शपथे तथ्ये त्रि तु तद्वति कीर्त्तितम् ॥६२६९॥
सत्या तु सत्यभामाख्यकृष्णपत्न्यां प्रकीर्त्तिता ।
अथ सत्यवती स्त्री स्याद्वेदव्यासस्य मातरि ॥६२७०॥
ब्राह्म्याख्येऽपि तृणस्तम्बे सत्ययुक्ते तु मेघवत् ।
सत्यङ्कारः पुमान्सत्याकृतावपि करार्पणे ॥६२७१॥
सदनन्तु गृहे तोये सीदत्यर्थे च कीर्त्तितम् ।
सदो यज्ञमहावेदे हविर्धानद्वयस्य हि ॥६२७२॥
पश्चाद्देशे मतं क्लीबं गोष्ठ्यां तु स्त्री नपुंसकम् ।
द्यावापृथिव्योस्तु क्लीबे द्विवचः सदसी इति ॥६२७३॥
सदस्यस्त्रिषु सभ्ये च स्याद्यज्ञविधिदर्शिनि ।
सदागतिः पुमान्सूर्ये वायौ चापि प्रकीर्त्तितः ॥६२७४॥
सदाफलो नालिकेरे पुमांश्चोदुम्बरद्रुमे ।
सद्म गेहे जले क्लीबं रोदस्योः सद्मनी इति ॥६२७५॥
सद्यःपाको मतः स्वप्ने निशाऽत्ययसमुद्भवे ।
सध्रि स्यान्नपि संयोगे ना त्वग्नावनडुह्यपि ॥६२७६॥
सनतस्तु सनोतौ च पुमान्म्लेच्छे द्वयोर्मतः ।
सनातनो ना विष्णौ च विरिञ्चे त्रिस्तु शाश्वते ॥६२७७॥
सनाभिस्तु सपिण्डे च सोदर्ये च द्वयोर्मतः ।
सनिर्नदीतटे दाने नृस्त्रियोः पथियाश्च्ययोः ॥६२७८॥

सन्ततिस्त्वन्ववाये स्यात्परिपर्येऽपि पुत्रयोः ।
सन्तानस्तु कुले कल्पवृक्षभेदे तथैव च ॥६२७९॥
परम्परायां चापत्ये पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
सन्दंशो लोहकारोपकरणान्तर इष्यते ॥६२८०॥
सन्दंशनेऽभिचारात्मैक्याहक्रत्वन्तरेऽपि च ।
सन्दष्टो यमकस्य त्रिर्भेदे सन्दंशनस्य च ॥६२८१॥
कर्मभूतेऽथ सन्दष्टः पुंसि संमिश्ररूपके ।
गायकानां कण्ठदोषविशेषे परिकीर्त्तितः ॥६२८२॥
सन्धा वधौ प्रतिज्ञायां सन्ध्यासन्धानकर्मणोः ।
सन्धानमधिचापं स्याद्बाणस्यारोपणे तथा ॥६२८३॥
काञ्जिकादेरभिषवे काञ्जिके श्लेषणेऽप्यथ ।
सन्धानी रूप्यशालायां स्त्री वार्त्ताक्यन्तरेऽपि च ॥६२८४॥
गिरिप्रियाख्ये त्रिषु तु सन्धिसाधन इष्यते ।
सन्धिस्तु रन्ध्रे नाट्याङ्गे श्लेषे भङ्गसुरङ्गयोः ॥६२८५॥
अन्त्यस्तोमेऽतिरात्रस्य वर्णानां योजनेऽपि च ।
सन्धिन्यकालदुग्धा गौर्वृषाक्रान्ताऽपि गौर्मता ॥६२८६॥
द्विकालदोह्या सत्त्वेककालं या गौश्च दुह्यते ।
सन्धिला तु सुरुङ्गायां नदीमदिरयोरपि ॥६२८७॥
सन्नमल्पेऽवसन्ने त्रिष्वनुदात्तविशीर्णयोः ।
गते तथेष्यते क्ली तु सन्नं सत्तौ प्रकीर्त्तितम् ॥६२८८॥
सन्नाह्यो युद्धयोग्येभे सन्नद्धव्ये तु स त्रिषु ।
सप्तकस्तु पुमान्सङ्घे सप्तानां क्ली तु सप्तकम् ॥६२८९॥
मृगयाक्षादिषु स्त्री तु सप्तकीक्वश्चिदामनि ।
सप्तमं त्रिषु सप्तानां पूरणे सप्तमी पुनः ॥६२९०॥
स्यात्सप्तमविभक्तौ स्त्री दुर्गादेव्यास्तिथावपि ।
सप्तर्षिरंशौ ना सप्तर्षयश्चित्रशिखण्डिषु ॥६२९१॥
सप्तला नवमाल्यां च सातलागुञ्जयोः स्त्रियाम् ।
सभ्यः सामाजिके साधौ सभासाधौ तथा त्रिषु ॥६२९२॥

ना त्वग्निभेदे यागस्थे पूर्व आहवनीयतः ।
त्रिः समङ्गो मङ्गयुते प्राणिद्यूते तु पुंस्ययम् ॥६२९३॥
समङ्गा तु नमस्कारीस्तम्बे स्त्री परिकीर्त्तिता ।
समञ्जसं क्ली न्याये त्रि रम्यस्तेऽप्युचितेऽपि च ॥६२९४॥
अथ व्रीह्यादिधानुष्कस्थितिभेदेषु पञ्चसु ।
एकस्मिन्स्यात्समपदं योगार्थे तु यथायथम् ॥६२९५॥
समयोऽस्त्री क्रियाकारे भाषानिर्देशसम्पदि ।
सङ्केताचारसिद्धान्तकालेषु शपथेऽपि च ॥६२९६॥
सङ्गमे त्वेष समयः पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
समर्थस्तु समानार्थे सम्बद्धार्थे हितेऽपि च ॥६२९७॥
न्याय्ये शक्ते तथा भेद्यलिङ्गोऽयं परिकीर्त्तितः ।
समर्थनं स्थापनायामाक्षिप्तस्य पुनर्भवेत् ॥६२९८॥
स्यात्सम्प्रधारणायां च समर्थीकरणेऽपि च ।
समर्यादं समीपेऽपि मर्यादासहिते त्रिषु ॥६२९९॥
समवर्त्ती यमे पुंसि योगार्थे तु यथायथम् ।
समाघातो वधे युद्धे योगार्थे तु यथायथम् ॥६३००॥
समाधिस्तु पुमान्ध्याने नीवाके च समर्थने ।
प्राणिद्यूते प्रतिज्ञायां काव्यालङ्करणान्तरे ॥६३०१॥
तुल्यत्वे भेद्यवत्तु स्यात्समानाधिसमान्विते ।
समानस्तु पुमान्वायुभेदे देहान्तरस्थिते ॥६३०२॥
त्रिस्तु साध्वेकतुल्येषु मानेन सहितेऽपि च ।
समापनं समाप्तौ न तु ना घातेऽवसायने ॥६३०३॥
समारम्भः सम्यगारम्भणे चाचार इष्यते ।
समाहारस्तु संक्षेपेऽप्येकत्र करणे च ना ॥६३०४॥
समानाहारकादौ तु लिङ्गाद्यं स्याद्यथायथम् ।
समाहितं मते सम्यगाहिते वाच्यवत्तथा ॥६३०५॥
समाधिस्थे परिहृते प्रतिज्ञातेऽपि कीर्त्तितम् ।
समाह्वयो रणे प्राणिद्यूते नाम्न्यथ यौगिके ॥६३०६॥

समितिः परिषत्स्थाने सङ्गे संसद्युधि स्त्रियाम् ।
समिधस्तु समूहेऽग्नौ युद्धगोधूमपिष्टयोः ॥६३०७॥
समीकस्तु समुद्रेऽपि मिथुनेऽपि पुमान्मतः ।
समीरणः फणिर्जे च वायावाहरणे च ना ॥६३०८॥
समुच्छ्रयस्तून्नतौ च विरोधेऽपि पुमान्मतः ।
समूहे स्यात्समुदयः समरे च समुद्गमे ॥६३०९॥
समुद्गः सम्पुटे पुंसि स्यान्मुद्गसहिते त्रिषु ।
स्यात्समुद्धरणं क्लीबं वान्ताऽन्तेऽप्युन्नयेऽपि च ॥६३१०॥
समुद्रस्तु पुमानब्धौ छन्दस्युत्कृतिसंज्ञके ।
आकाशे च तथा संख्याविशेषेऽपि त्रयोदशे ॥६३११॥
तेषां ये शतसंख्याताः क्रमाद्दशगुणोत्तराः ।
त्रिस्तु मुद्राऽन्विते़ऽथ क्ली समुद्रं देहलक्षणे ॥६३१२॥
समुद्रनवनीतं तु चन्द्रे स्यादमृतेऽपि च ।
समुद्रान्ता तु दुःस्पर्शे कार्पासीस्पृक्कयोरपि ॥६३१३॥
समुन्नद्धो गर्विते च पण्डितम्मन्यके त्रिषु ।
समुन्नयः समुत्क्षेपे तथा समुदये मतः ॥६३१४॥
समूढः पुञ्जिते भुग्ने सद्योजातेऽनुपप्लुते ।
समूहनं तु क्लीबं स्यात्संहतीकरणे तथा ॥६३१५॥
शपस्य योजने मौर्व्यां स्त्रियां तु स्यात्समूहनी ।
सम्मार्जन्यामवाण्यन्तसमूह्यार्थे समूहना ॥६३१६॥
सम्पत्भूतौ गुणोत्कर्षे तथा स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ।
सम्पुटस्तु समुद्गे च मन्त्राक्षरग्रथनान्तरे ॥६३१७॥
कलिकायां कुरवके पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
सम्प्रयोगस्तु सुरते संस्तवेऽप्यभिधीयते ॥६३१८॥
सम्प्रेषणी द्वादशाहश्राद्धे स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ।
क्ली सम्यक् प्रेषणे तत्प्रयुक्तौ सम्प्रेषणा न ना ॥६३१९॥
सम्बाधस्तु भगे स्त्रीणां मेढ्रे कारागृहेऽपि ना ।
स्यात्सङ्कटे तु सम्बाधो भेद्यवत्परिकीर्त्तितः ॥६३२०॥

सम्भवः कारणोत्पत्त्योः सङ्केते सङ्गमेऽपि च ।
मात्यर्थे मापयत्यर्थे तौ चार्थौ सद्भिरीरितौ ॥६३२१॥
अकर्मको मातिधातुः प्रस्थादीनां घटादिषु ।
प्रवर्त्तनेऽन्तभावेऽसौ सम्भूत इति सूत्रगः ॥६३२२॥
सकर्मको मापयतिः स्थाल्याद्याधारवस्तु ना ।
ग्रहणेऽन्तर्भावनायामाढकादेः प्रवर्त्तने ॥६३२३॥
स चायं सम्भवत्यादिसूत्रे सूत्रकृतोदितः ।
तत्र ह्याकृष्यते कर्म तद्धरत्यादिसूत्रतः ॥६३२४॥
असम्भवो हेममयजन्तोरेषामसम्भवे ।
इत्यादिषु प्रयोगेषु भूयिष्ठेषु कृतात्मभिः ॥६३२५॥
अर्थः सम्भवशब्दस्य चिन्तनीयो विचक्षणैः ।
सम्भावनाऽऽसादने च सम्माने च न ना मता ॥६३२६॥
पात्रस्यान्तर्मापने च तत्र युक्तौ च कीर्त्तिता ।
सम्भेदो मिश्रणे चापि भेदेऽपि च पुमान्मतः ॥६३२७॥
सम्भोगो ना रते भोगे हस्तिहस्ते तथास्य च ।
तृतीयेंऽशेऽङ्गुलेरूर्ध्वं विभक्तस्य च सप्तधा ॥६३२८॥
सम्भ्रमोऽत्यादरे व्यग्रत्वे संवेगे च साध्वसे ।
स्यात्सम्मतिः स्त्री वाञ्छायामनुज्ञापूजयोरपि ॥६३२९॥
सम्मर्दो मर्दने पुंसि तथा युद्धे प्रकीर्त्तितः ।
सम्मर्शस्तु पुमांस्तर्के तथा सम्मर्शने मतः ॥६३३०॥
सम्मार्जनी तु शोधन्यां स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।
सम्मार्जना सम्मृष्टौ संशोधनायामपीष्यते ॥६३३१॥
सम्राट् तु पुंसि विष्ण्वर्कहुताशेन्द्रेषु राज्ञि च ।
येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः ॥६३३२॥
शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञस्तत्र सम्राट् पुनः स्त्रियाम् ।
षड्विंशत्यक्षरेऽन्तस्था छन्दोभेदे प्रकीर्त्तिता ॥६३३३॥
सरो वायौ पुमान्क्लीबे तु सरं क्षीरे प्रकीर्त्तितम् ।
निषादश्शुनकीजे द्वे त्रिस्थिरप्रतियोगिनि ॥६३३४॥

सरकोऽस्त्री मणौ शीधुपाने चषकशीधुनोः ।
भेद्यवत्सरकः साधुसर्त्तर्येष प्रकीर्त्तितः ॥६३३५॥
सरघा तु शुनीभेदे देवानां परिकीर्त्तिता ।
मधुनिर्माणशीले च स्त्रियां स्यान्मक्षिकान्तरे ॥६३३६॥
सरटी नीलिकालोहे द्वयोस्तु कृकलासके ।
सरणिस्तु स्त्रियाम्मार्गे श्रेणौ च परिकीर्त्तिता ॥६३३७॥
सरण्डस्तृणसङ्घाते कृमिभेदे तु स द्वयोः ।
सरण्युर्नाऽनिले मेघे सूर्यपत्न्यां स्त्रियामियम् ॥६३३८॥
सरधिः स्त्री सिरापङ्क्तिसङ्घाताऽम्बसु ना रवौ ।
सरलः पूतिकाष्ठाख्यद्रुमे पुंसि प्रकीर्त्तितः ॥६३३९॥
सरलस्त्रिर्विदग्धे च ऋजौ च प्रियवादिनि ।
सरस्तु सलिले क्लीबं तटाके सरसी नना ॥६३४०॥
महासरःसु सरसी दाक्षिणात्याः प्रयुञ्जते ।
क्लीबं सरस्वदाकाशे सरस्वान्नाऽम्बुधौ नदे ॥६३४१॥
सरस्वती नदीमात्रे वाग्देव्यां च नदीभिदि ।
गङ्गायां गवि मेदिन्यां स्त्रीरत्ने च वचस्यपि ॥६३४२॥
तथा तृणलतास्तम्बे मत्स्याक्षीनाम्नि कीर्त्तिता ।
ब्राह्मीति विश्रुताख्येऽथ सरस्वान् रसिकेऽपि च ॥६३४३॥
सरोयुक्ते तथा भेद्यलिङ्गोऽयं परिकीर्त्तितः ।
सरिन्नद्यां तथा छन्दोभेदे द्वासप्ततिस्वरे ॥६३४४॥
सरीसृपस्तु सर्पे द्वे तथैवोदरसर्पिषु ।
सर्गोऽध्याये स्वभावे च निर्माणे च समुज्झने ॥६३४५॥
उत्साहे निश्चये चापि पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
सर्जकं त्वतिबाले स्यादह्नि [स्रष्टरि भेद्यवत्] ॥६३४६॥
सर्जूर्वनस्पतौ विद्युत्यपि स्त्री वणिजि द्वयोः ।
सर्पदंष्ट्री वृश्चिकाल्योषध्यां योगे यथायथम् ॥६३४७॥
सर्पराजो वासुकौ ना द्वे तु राजिलभोगिनाम् ।
त्रयोदशानामेकत्र सर्पराजः प्रकीर्त्तितः ॥६३४८॥

स्यात्सर्पलोचना रास्नासंज्ञके भेषजे स्त्रियाम् ।
सर्पिर्जले घृते चैव क्लीबलिङ्गं प्रकीर्त्तितम् ॥६३४९॥
सर्वगन्धं तु तक्कोलागरुकर्पूरसंयुताः ।
एलालवङ्गत्वक्पत्रनागकेसरसिल्हकाः ॥६३५०॥
ऋद्धिसंज्ञकभैषज्यभेदे सर्वजनप्रिया ।
सर्वज्ञो ना शिवे बुद्धे त्रि तु स्यात्सर्ववेदिनि ॥६३५१॥
अथ ना सर्वतोभद्रो गृहविच्छन्दकान्तरे ।
निम्बवृक्षे च विषमकाव्यालङ्कारभेदके ॥६३५२॥
स्त्रियां तु सर्वतोभद्रा काश्मर्याभिख्यपादपे ।
यत्तु सर्वप्रकारेण भद्रं तत्र त्रिषु स्मृतम् ॥६३५३॥
सर्वतोमुखमप्सु क्ली ना ब्रह्मक्रतुभेदयोः ।
सर्वभक्षा त्वजायां स्याद्यौगिके तु यथायथम् ॥६३५४॥
स्त्री सर्वमङ्गला शैलतनयायां च यौगिके ।
सर्वसन्नाह इत्युक्तः सन्नद्धौ सर्ववर्मिणाम् ॥६३५५॥
सर्वात्मनाप्ययं शब्दः पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
सर्वौघः सर्वसन्नाहे राज्ञां पुंसि प्रकीर्त्तितः ॥६३५६॥
मधुभेदे तु सर्वौघं यौगिके तु यथायथम् ।
सर्षपस्त्वोषधीभेदे तुन्दभाख्ये पुमान्मतः ॥६३५७॥
सर्षपी फलिनीवृक्षे स्त्रियां व्याध्यन्तरेऽपि च ।
सलो भृङ्गिरिटे पुंसि क्ली तु पत्राङ्गभेषजे ॥६३५८॥
सलज्जं सत्रपे त्रि क्ली स्तम्बे दमनकाह्वये ।
सलम्बस्त्वृषिभेदे ना तन्तुवाये पुनर्द्वयोः ॥६३५९॥
सलिलं तु जले छन्दोऽन्तरे प्रकृतिनामनि ।
यत्र चत्वार्यशीतिश्च वर्णाः स्युर्वाततोऽधिकाः ॥६३६०॥
सल्वा स्त्री क्षत्रियाभेदे देशभेदे नृ भूम्नि ते ।
सवस्तु सूतौ सूत्यायां सुतौ यागे च वर्त्तने ॥६३६१॥
सवनं कालभेदेऽपि स्यात्प्रातःसवनादिषु ।
यज्ञस्य सोमाभिषवे स्नाने काण्डे नपुंसकम् ॥६३६२॥

यागे तु पुंसि सवनो वनेन सहिते त्रिषु ।
सवर्णो ब्राह्मणाज्जाते क्षत्रियायां विवाहतः ॥६३६३॥
त्रिस्तुल्यवर्णमात्रे च मर्त्ये चाप्येकवर्णके ।
सव्यं वामे दक्षिणे त्रिः सोतव्यसवितव्ययोः ॥६३६४॥
तथा प्रेरयितव्ये च मृतके त्वनले पुमान् ।
सस्यं धान्ये गुणे धान्यस्तम्बे वृक्षादिनः फले ॥६३६५॥
सस्यकं सस्यसम्पन्नव्रीहिसस्यादिकेषु च ।
तथैव गुणसम्पन्ने भेद्यलिङ्गमथैष ना ॥६३६६॥
स्यान्नारिकेलसस्याभमणौ खड्गे च सस्यकः ।
स्त्रीपुंसयोः सहचरी पीतझिण्ट्याख्यझाटके ॥६३६७॥
अथो सहचरश्चैष सहचारिणि वाच्यवत् ।
सहजोऽस्त्री स्वभावे त्रिः सहोत्पन्नसगर्भ्ययोः ॥६३६८॥
सहदेवा स्त्रियां सत्त्वे दण्डोत्पल इति श्रुते ।
युधिष्ठिरकनिष्ठे तु नायोगार्थे यथायथम् ॥६३६९॥
सहो जले बले च क्ली हेमन्ते तु पुमानयम् ।
मार्गशीर्षे तु मासि स्यात्पुंनपुंसकयोरयम् ॥६३७०॥
सहसानो मयूरे द्वे यजमाने तु स त्रिषु ।
सहसानुर्मयूरे च सर्पे चापि द्वयोर्मतः ॥६३७१॥
सहस्रमस्त्री बहुनि शतानां दशकेऽपि च ।
सहस्रपत्रं कमले क्लीबं स्याद्यौगिके त्रिषु ॥६३७२॥
सहस्रवीर्या स्त्रीलिङ्गे स्याद्दूर्वाश्वेतदूर्वयोः ।
तथोर्ध्वकण्टकान्याख्यशतावर्यां प्रकीर्त्तिता ॥६३७३॥
सहस्रवेधी पुंस्यम्लवेतसे क्ली तु हिङ्गुनि ।
सहा तु पुष्पस्तम्बेषु त्रिषु स्त्री तरणौ तथा ॥६३७४॥
नीलझिण्ट्यां पीतझिण्ट्यामित्यप्यतिबलाह्वये ।
बलासंज्ञे च भैषज्यस्तम्बयोरोषधावपि ॥६३७५॥
मुद्गपर्ण्यभिधानायां भेद्यलिङ्गं तु सोदरि ।
सहायस्तु द्वयोः सख्यौ सेवके तु त्रिषु स्मृतः ॥६३७६॥

सद्गुरिस्तु पुमान्युद्धेऽन्धकारेऽपि प्रकीर्त्तितः।
चिद्रूपे स्यात्सहृदयो हृदयेन युते त्रिषु ॥६३७७॥
सहोक्तिः स्यात्स्त्र्यलङ्कारभेदेऽपि सहभाषणे।
सहोरस्तु पुमान्विष्णौ पर्वतेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥६३७८॥
सह्यः पर्वतभेदे ना पश्चिमार्णवपार्श्वगे।
सोढव्ये त्रिषु सह्यं स्यादारोग्ये तु नपुंसकम् ॥६३७९॥
सा लक्ष्म्यां सर्वनाम्नश्च प्रथमैकस्त्रियां तदः।
सांयात्रिकं प्रभाते क्ली पुमान्पोतवणिज्ययम् ॥६३८०॥
सांवत्सरो वाच्यवत्तु त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः।
संवत्सरभवादौ च विज्ञेयः फलपर्वणोः ॥६३८१॥
विद्याज्ज्यौतिषिके चैवं कृष्णशालौ पुनः पुमान्।
स्त्री तु सांवत्सरी श्राद्धे कर्त्तव्ये वत्सरात्यये ॥६३८२॥
स्यात्सांवत्सरकं वर्षदेयर्णादिषु वाच्यवत्।
सांवत्सरिकवज्ज्योतिर्विज्ञे तु स्मर्यते नरि ॥६३८३॥
अनिश्चिते सांशयिकस्तथा शङ्कावति त्रिषु।
साज्यं त्र्याज्ययुते नैकादशाहश्राद्धभिद्यपि ॥६३८४॥
सातं सुखे क्ली क्षीणे त्रि साती स्त्र्यर्थेऽत्र कीर्त्तिता।
तीव्रायां वेदनायां स्त्री सातिर्दानावसानयोः ॥६३८५॥
सात्त्वतो बलदेवे ना द्वे त्वपत्ये च सत्त्वतः।
स्यात्क्षत्रपूर्ववैश्याजे व्रात्याच्च हरिपूजके ॥६३८६॥
सात्त्विकं सत्त्वनिर्वृत्ते त्रिष्वथो सात्त्विकी स्त्रियाम्।
नाट्यस्थकैशिकीत्यादिवृत्तीनां क्वचिदिष्यते ॥६३८७॥
सात्मा ना प्रकृतावात्मसहिते तु त्रिषु स्मृतः।
अत्यन्ताभ्यस्तताहेतोः प्रकृतित्वं गतेऽपि च ॥६३८८॥
सादी सूते तथैवायमश्वारोहे पुमान्मतः।
साधनं क्ली धने शेफे सिद्धावनुगतौ गतौ ॥६३८९॥
मारणे मृतसंस्कारेऽप्युपायेऽप्यर्थदापने।
सेनाङ्गे यातनायाश्च न तु ना साधना मता ॥६३९०॥

निवर्त्तनायां मन्त्रादेश्चाऽभीष्टफलादीकृतौ ।
साधारणं तु सामान्ये त्रिषु साधारणीति च ॥६३९१॥
साधारणा च स्त्रीत्वे स्यादथ साधारणी स्त्रियाम् ।
कवाटबन्धमोक्षार्थकुञ्चिकायां प्रकीर्त्तिता ॥६३९२॥
साधिष्ठः स्यात्साधुतमे तथा भृशतरे त्रिषु ।
साधीयान्स्यात्साधुतरे तथा भृशतरे त्रिषु ॥६३९३॥
साधुर्व्याकृतशब्दे त्रिः सज्जनोचित चारुषु ।
धर्मशीले संयते च ना तु वार्धुषिके मतः ॥६३९४॥
पतिव्रतायां तु स्त्रीत्वे साध्वीति परिकीर्त्तिता ।
ना तु वार्धुषिके कैश्चित्पठितस्तदसद्यतः ॥६३९५॥
स्यादौपाधिकशब्दत्वादस्य लिङ्गं विशेषणम् ।
साध्यस्त्रि साधनीये ना गणदेवान्तरेऽशुषु ॥६३९६॥
सानसिस्तु ऋणे पुंसि सुवर्णेऽपि नखेऽपि च ।
सान्त्वं तु सान्त्वने क्लीबं वाक्ये तु मधुरे त्रिषु ॥६३९७॥
सामजो हस्तिनि द्वे स्यात्त्रि तु सामसमुद्भवे ।
साम प्रगीतमन्त्रेषु साधुन्यपि तथा मतम् ॥६३९८॥
नान्तं नपुंसकं प्रोक्तं सान्त्वसामप्रभेदयोः ।
सामिधेनी तु समिदाधानर्चि च समिध्यपि ॥६३९९॥
त्रिः सामुद्रोऽब्धिसम्बन्धिन्यथ क्ली देहलक्षणे ।
साम्परायस्तु संग्रामे विपदुत्तरकालयोः ॥६४००॥
स्यात्साम्परायिकं युद्धे रथे स्यात्साम्परायिकः ।
सायकस्तु शरे खड्गे वज्रे ना त्रिस्तु मातरि ॥६४०१॥
सारः स्थिरांशे सरणे तरोर्मज्ज्ञि धने बले ।
व्योम्नि रेतसि ना त्रिस्तूत्कृष्टे न्याय्ये च सुन्दरे ॥६४०२॥
सारी तु भ्रुकुटावेषा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।
सारङ्गश्चातके भृङ्गे कृष्णसारे गजे द्वयोः ॥६३०३॥
पुमांस्तु शबले वर्णे सारङ्गस्त्रिषु तद्वति ।
स्त्रीत्वे तु सारङ्गीत्येतद्रूपं सर्वत्र कीर्त्तितम् ॥६४०४॥

सारणस्तु शरद्वायौ पुमांश्च वरुणात्मजे ।
सारणं सारणा चेति नना स्यात्सारिकर्मणि ॥६४०५॥
सारणी तु स्त्रियामेषा ग्रन्थे पद्यात्मके मता ।
सारमेयस्तु शुनके मूषिकायां तथा द्वयोः ॥६४०६॥
सारसः पुष्करखगे द्वे नेन्दौ क्ली तु वारिजे ।
मेखलायां सारसनमुरस्त्राणे तथा नपि ॥६४०७॥
सारस्वतो बैल्वदण्डे ना त्रिः सत्रमखान्तरे ।
सरस्वत्याश्च सम्बन्धिन्ययं त्रिषु प्रकीर्त्तितः ॥६४०८॥
सारिका काण्डवीणायां सारकस्त्वभिधेयवत् ।
सत्तर्यपि तथैवायमुक्तः सारयितर्यपि ॥६४०९॥
सार्थस्त्वर्थवति त्रि स्यात्प्राणिसङ्घान्तरे तु ना ।
सार्वभौमश्चक्रवर्त्तिन्यपि चोत्तरदिग्गजे ॥६४१०॥
सार्वभौमस्तु विदिते वाच्यलिङ्गः प्रकीर्त्तितः ।
सालोऽस्त्रियां स्यात्प्राकारे नाऽश्वकर्णतरौ तरौ ॥६४११॥
गतौ च मत्स्यभेदे तु द्वयोः सालः प्रकीर्त्तितः ।
सालावृकः शृगालेऽपि वानरे च वृके द्वयोः ॥६४१२॥
साल्वास्तु मध्यदेशीयकारकुत्सीयनीवृति ।
प्राच्यनीवृद्विशेषे च नृभूम्नि परिकीर्त्तितः ॥६४१३॥
तयो राज्ञोः पुमान्साल्वस्तदपत्येषु सद्वयोः ।
सावनोऽब्दविशेषे स्यात्षष्टित्रिशतवासरे ॥६४१४॥
त्रिषु त्ववनयुक्ते च सवनस्य च योगिनि ।
सावित्र्यनामिकाङ्गुल्यां तथा तत्सवितुर्ऋचि ॥६४१५॥
विश्वामित्रेण दृष्टायां त्रिः स्यात्सवितृयोगिनि ।
साहसं त्वस्त्रियां दण्डशब्दपर्यायके दमे ॥६४१६॥
अतर्कितप्रवृत्तौ तु बलात्कारे नपुंसकम् ।
साहसं स्यात्त्रिषु त्वेतत्कृतकार्ये प्रकीर्त्तितम् ॥६४१७॥
साहस्रं तु सहस्राणां समूहे स्यान्नपुंसकम् ।
सहस्रेण तु निर्वृत्ते सहस्रवति च त्रिषु ॥६४१८॥

साहस्रस्तु चतुर्षु स्यात्पुंस्येकाहक्रतुष्वयम् ।
सिंहो द्वयोर्मृगेन्द्रेऽथ वेङ्कटाद्रौ पुमान्मतः ॥६४१९॥
सिंही तु वाशावार्त्ताकीकण्टकारीष्वियं स्त्रियाम् ।
सिंहो द्वयोः किशोरे स्यात्पुमानेष वनस्पतौ ॥६४२०॥
स्यात्सिंहकेसरः पुंसि बकुलेऽस्त्री सटे हरेः ।
सिंहपुच्छी माषपर्णीपृश्निपर्ण्योः स्त्रियां मता ॥६४२१॥
क्लीबं सिंहमलं लोहे नीलिकाख्येऽथ यौगिके ।
स्यात्सिंहविक्रमोऽश्वे द्वे योगार्थे तु यथायथम् ॥६४२२॥
सिंहास्यस्त्वटरूषे ना योगार्थे तु यथायथम् ।
सिंहिका राक्षसीभेदे राहोर्मातरि च स्त्रियाम् ॥६४२३॥
नतजानौ चाविवाह्यकन्याभेदे प्रकीर्त्तिता ।
सिकता भूम्नि देशे सिकतिले वालुकास्वपि ॥६४२४॥
सिक्थोऽस्त्रियां मधूच्छिष्टे पुलाकेऽन्नस्य पुंस्ययम् ।
सितः शौक्ल्ये जीरके च पुँल्लिङ्ग उशनस्यपि ॥६४२५॥
अथ प्राप्तावसाने सशौक्ल्ये बुद्धेऽपि च त्रिषु ।
शर्करायां पुनः स्त्रीत्वे सितेति परिकीर्त्तिता ॥६४२६॥
सितकुञ्जर इन्द्रे ना योगार्थे तु यथायथम् ।
सितच्छदो द्वयोर्हंसे योगार्थे तु यथायथम् ॥६४२७॥
सितापाङ्गो मयूरे द्वे योगार्थे तु यथायथम् ।
सिताभ्रः पुंसि कर्पूरे क्लीबं त्वभ्रे सिते मतम् ॥६४२८॥
सितायुधस्त्वेत्थालाख्ये मत्स्यभेदे द्वयोर्मतः ।
सितासितस्तु योगार्थे बलभद्रे त्वसौ पुमान् ॥६४२९॥
सिद्धस्तु सनकादौ ना देवजात्यन्तरे द्वयोः ।
निष्पन्ने तु त्रिषु क्ली तु सिद्धौ गत्यादिकेष्वपि ॥६४३०॥
सिद्धो ना वृक्षभेदे स्यादयं साधुजने त्रिषु ।
ना पारदे सिद्धरसो रससिद्धे तु स त्रिषु ॥६४३१॥
सिद्धार्थः सर्षपे बुद्धे नाऽर्थेन तु युते त्रिषु ।
सिद्धिः स्त्री गतिसंराद्ध्योर्ऋद्धिवृद्ध्योषधिद्वये ॥६४३२॥

सिध्मलौषधिभेदे स्त्री स्यान्मत्स्यविकृतावपि ।
अथाऽभिधेयवत्सिध्मवति सिध्मल इष्यते ॥६४३३॥
सिनमन्ने शरीरे च कलौ बिल्वाख्यद्रुमे तु ना ।
सिनीवाली दृष्टचन्द्रामात्रास्यापार्वती तथा ॥६४३४॥
सिन्धुस्तु नद्यां स्त्री ना तु समुद्रेऽपि नदान्तरे ।
अशीत्यक्षरके छन्दोभेदे च कृतसंज्ञके ॥६४३५॥
गजानां दानतोये च कटनेत्रसमुद्भवे ।
नीवृद्भेदे तु पुंभूम्नि सिन्धवः परिकीर्त्तिताः ॥६४३६॥
सैन्धवे लवणे क्लीबं सिन्धु स्याद्द्वे तु हस्तिनि ।
सिमस्तु क्षत्रः सर्वार्थे सर्वनाम त्रिषु स्मृतः ॥६४३७॥
ग्रामगोचरभूमौ तु सिमो ना सर्वनामनः ।
क्षत्रस्य मर्यादायां च द्वयोस्त्वश्वे सिमः स्मृतः ॥६४३८॥
सिमाः स्त्रियो महानाम्नीसंज्ञसामान्तरे स्मृताः ।
सिलिन्ध्रो वृक्षभेदे ना स्याच्छत्राके तु न स्त्रियाम् ॥६४३९॥
मत्स्यभेदे सिलिन्ध्रो द्वे स्त्री तु गण्डपदीमृदि ।
सिलिन्ध्रवृक्षप्रसवकदलीपुष्पयोस्तु नप् ॥६४४०॥
सीता तु रामभार्यायां पृथिव्यां हलपद्धतौ ।
सस्ये हरितसस्ये च सस्यभूमावपि स्त्रियाम् ॥६४४१॥
सुमेरुशिरसः प्राग्दिग्गतगङ्गान्तरेऽपि च ।
सीत्यं तु धान्ये क्लीबं स्यात्कृष्टभूमितले त्वपि ॥६४४२॥
सीतायामपि साधौ च [त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः] ।
सीद्गुण्डो द्वे विप्रपराजकीजे ना स्नुहीतरौ ॥६४४३॥
सीमः स्त्रीपुंसयोरश्वे पुमांस्तु परिकीर्त्तितः ।
क्षेत्रस्य मर्यादायाश्च ग्रामगोचरभुव्यपि ॥६४४४॥
सीमा टापि क्षितौ कूलेऽवधौ क्षेत्रव्यवस्थयोः ।
मन्नन्तापि च सीमेयमेष्वेवार्थेषु कीर्त्तिता ॥६४४५॥
स्यात् सीमिकं तु वल्मीके शाखायां क्ली तरोरपि ।
स्त्रीपुंसयोस्तु सलिलक्रिमौ सीमिक इष्यते ॥६४४६॥

सीरो हलार्कयोः पुंसि सीरी तु स्त्री लताङ्कुरे ।
लाङ्गलिक्यां च नद्यां तु सीरा स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ॥६४४७॥
सीवन्युपस्थाधःसूत्रे सूच्यां स्यूतौ तु सीवनम् ।
सुकन्दस्तु पलाण्डौ ना त्रि तु शोभनकन्दके ॥६४४८॥
सुकृतं सत्कृतौ पुण्ये त्रिस्तु सुष्ठुकृते मतम् ।
स्त्री सुकेश्यप्सरोभेदे त्रि तु शोभनमूर्धजे ॥६४४९॥
सुखं शर्मणि लग्नाच्चतुर्थराशौ च शस्तखे ।
स्याच्छोभनखयुक्ते च त्रिः सुखस्य च साधने ॥६४५०॥
शम्भोस्तु नवशक्तीनां स्यादेकत्र सुखा स्त्रियाम् ।
सुखोदयस्तु ना मद्यभेदे माध्वीकसंज्ञके ॥६४५१॥
अपक्वेक्षुरसैः सिद्धे योगार्थे तु यथायथम् ।
सुगतः पुंसि बुद्धेऽथ त्रिः शोभनगते भवेत् ॥६४५२॥
सुग्रीवो राममित्रे स्यात्कपिभेदे पुमानयम् ।
वास्तुदेवविशेषे च कोष्ठश्रेणौ हि पश्चिमे ॥६४५३॥
आरभ्य दक्षिणात्कोष्ठात्तृतीये तत्र यः स्थितः ।
ग्रीवायां शोभनायां स्त्री बहुव्रीहौ तु भेद्यवत् ॥६४५४॥
सुचरित्रा मता स्त्रीत्वे कुस्तुम्बुर्व्यां च यौगिके ।
सुतः सोमरसे भूपे लग्नाद्राशौ च पञ्चमे ॥६४५५॥
पुत्रयोस्तु द्वयोः स्त्री तु शाकवल्ल्यन्तरे सुता ।
उपोदकाख्ये त्रिषु तु प्रसूतेऽभिषुतेऽपि च ॥६४५६॥
सुदर्शनः शङ्खणस्य पुत्र ऐक्ष्वाकभूभुजि ।
विष्णुचक्रे तु पुंसि स्यात्क्लीबेऽपि च सुदर्शनः ॥६४५७॥
अथाऽमरावत्यामेतत्क्लीबमेव सुदर्शनम् ।
सुदर्शना तु दध्यालीनाम्नि वल्लीभिदि स्मृता ॥६४५८॥
गृध्राख्यपक्षिभेदे तु द्वयोरुक्तः सुदर्शनः ।
सुधाऽमृते तथा स्नुह्यामपि सौहित्यमूर्वयोः ॥६४५९॥
गङ्गेष्टिकायां कुड्यादिलेपद्रव्यान्तरे स्त्रियाम् ।
सुनारस्तु शुनीस्तन्ये सर्पाण्डे च पुमान्मतः ॥६४६०॥

सुनालं रक्तकुमुदे बहुव्रीहौ तु भेद्यवत् ।
सुनिषण्णं शाकभेदे स्वस्तिकादिपदश्रुते ॥६४६१॥
सुन्दो दैत्यान्तरे दारुलेखके च पुमान्मतः ।
सुपर्णो गरुडे पुंसि किरणे च प्रकीर्त्तितः ॥६४६२॥
अश्वे गरुडवच्चापि पक्षिजात्यन्तरे द्वयोः ।
सुपर्णी तु स्त्रियामेषा विनतायां प्रकीर्त्तिता ॥६४६३॥
सुपार्श्वो गर्दभाण्डाख्यपादपेऽपि पुमान्मतः ।
मेरोरुत्तरविष्कम्भपर्वतेऽपि तथा भवेत् ॥६४६४॥
सुप्तं तु त्रिषु निद्राणे प्रशस्तजटकेऽपि च ।
खञ्जरीटे पुनः कृष्णवक्षसि द्वे स्त्रियां पुनः ॥६४६५॥
सुप्ता जटायां शस्तायां क्ली तु स्वापे प्रकीर्त्तितम् ।
सुप्रतीको यौगिके च पुमांस्त्वीशानदिग्गजे ॥६४६६॥
सुब्रह्मण्यस्तु ना स्कन्द ऋत्विग्भेदे तु नृस्त्रियोः ।
सुब्रह्मण्या तु निगदनाम्नि स्याद्यजुरन्तरे ॥६४६७॥
सुभिक्षा धातकीवृक्षे त्रिस्त्वन्नाढ्ये प्रकीर्त्तिता ।
सुमनास्तु स्त्रियां ज्ञेया मालत्यां कुसुमे पुनः ॥६४६८॥
स्त्रीभूम्नि स्युः सुमनसस्त्रि तु स्याच्छुभचेतसि ।
पण्डिते च द्वयोस्तु स्याद्देवे क्ली तु शुभे हृदि ॥६४६९॥
[गृहोर्ध्वभूस्थस्थूणायां सुमेधा स्यात्स्त्रियामियम्] ।
सुयामुनो वत्सराजप्रासादेऽभ्रान्तरेऽच्युते ॥६४७०॥
सुरः सुरी द्वयोर्देवे सुरा मद्ये जलेऽपि च ।
स्त्रियां सुरतताली स्याद्दूत्यां चैव शिरःस्रजि ॥६४७१॥
सुरभिः कलमाले च गन्धे च घ्राणतर्पणे ।
त्रि तु तद्वति चारौ च श्रेष्ठे च स्यात्स्त्रियां पुनः ॥६४७२॥
देवधेनौ ना तु वह्नौ वसन्ते चम्पकेऽपि च ।
कपित्थे राजजम्ब्वां च पुँल्लिङ्गः सुरभिच्छदः ॥६४७३॥
सुरवल्लभ उक्तो ना पुन्नागे यौगिके तु सः ।
सुरसा तु महाजम्बूनाम्नि जम्ब्वन्तरे स्मृता ॥६४७४॥

योगार्थे त्वस्य लिङ्गादि तर्कणीयं यथायथम् ।
सुराष्ट्रः पीतमुद्गे ना सुराष्ट्रास्तु नृभूमनि ॥६४७५॥
पश्चिमाब्ध्यन्तिके देशभिद्यस्त्री तु सुराष्ट्रके ।
सुराष्ट्रजाढकीसंज्ञे स्त्री सौराष्ट्रमृदन्तरे ॥६४७६॥
नपुंसकं सुरूपं च शाल्मलीफल इष्यते ।
सुरूपा मल्लिकाभेदे वैश्यनाम्नि स्त्रियामथ ॥६४७७॥
सुलभः पाकयज्ञाग्नावयत्नाऽऽप्ये तु स त्रिषु ।
स्त्रियां सुलवणाधान्ये गवीधुरिति विश्रुते ॥६४७८॥
सुलोहं त्वारकूटेऽपि शस्तलोहेऽपि कीर्त्तितम् ।
सुवर्चला प्रभाख्यायां सूर्यपत्न्यां प्रकीर्त्तिता ॥६४७९॥
तथा क्षुमाह्वये धान्ये शाकभेदेऽपि च स्त्रियाम् ।
सुवर्णा मखभिद्यस्त्री पुमांस्तु स्वर्णकर्षयोः ॥६४८०॥
सुवहा सल्लकीगोधापदीशेफालिकासु च ।
एलापर्ण्यां च रास्नायां वीणायां च स्त्रियां मता ॥६४८१॥
सुविदत्रं कुटुम्बे क्ली धनलाङ्गलयोरपि ।
सुविदत्रः पुनस्त्रि स्याच्छुद्धज्ञानसुविद्ययोः ॥६४८२॥
सुव्रता सुखसन्दोह्यसुरभौ त्रि तु सद्व्रते ।
सुषमा परमायां स्त्री शोभायां त्रिस्तु सुन्दरे ॥६४८३॥
सुषवी कारवल्ल्यां स्त्री तथा कृष्णे च जीरके ।
क्लीबं तु सुषिरं छिद्रे वंशादौ वाद्यभिद्यपि ॥६४८४॥
स्याद्विद्रुमलतायां तु सुषिरा स्त्री नटे तु ना ।
सुषियुक्ते तु सुषिरो भेद्यवत्परिकीर्त्तितः ॥६४८५॥
सुषेणस्तु पुमान्विष्णौ करमर्दद्रुमेऽपि च ।
सुग्रीववैद्ये क्लीबं तु करमर्दफलादिके ॥६४८६॥
कृष्णत्रिवृल्लतायां तु सुषेणा स्त्री प्रकीर्त्तिता ।
सुस्तरः शयने पुंसि तथा माने प्रकीर्त्तितः ॥६४८७॥
सुहितस्तु मतस्तृप्ते तथा सुष्ठुहिते त्रिषु ।
सुहृन्मन्त्रिणि पुंसि त्रिर्मित्रे क्ली शोभने हृदि[1] ॥६४८८॥

१. पङ्कक्रीडनकः पोत्री किटिराखनिकः किरिः ।

सुह्मा नृभूम्नि स्युर्देशभेदे सर्ववचो नृपे ।
वाच्यवत्सूक्ष्ममत्यल्पे क्लीबं त्वध्यात्म इष्यते ॥६४८९॥
सूक्ष्मा नवानां शक्तीनां विष्णोरेकत्र कीर्त्तिता ।
सूचकः पिशुने हस्तभ्रूभङ्गाद्यैश्च बोधके ॥६४९०॥
द्वे तु श्वक्रोष्टुकाकेषु सूचकः परिकीर्त्तितः ।
सूचना तु न ना वृष्टौ गन्धने व्यर्थनेऽपि च ॥६४९१॥
सूचे सूचौ दर्भणे तु सूचं सूचस्तु सूचने ।
सूचिः स्यूति शलाकायां कवाटाल्पार्गले स्त्रियाम् ॥६४९२॥
सूचीवद्द्वे तु वेश्याजे निषादात्सूचिरुच्यते ।
सूचीमुखं तु क्लीबं स्यादासने यस्य लक्षणम् ॥६४९३॥
ऊर्ध्वज्ञोर्जानुनोर्बाहूप्रसार्य करयोस्तलौ ।
संहत्य च स्थितिर्या स्यात्तत्सूचीमुखमासनम् ॥६४९४॥
सूतः पारदसारथ्योः पुंसि तक्षणि तु द्वयोः ।
तथा वन्दिनि विप्रायां क्षत्रियाज्जात इष्यते ॥६४९५॥
त्रिः प्रेरिते च जनिते क्ली सूतौ प्रेरणेऽपि च ।
सूतकं जन्मनि प्रोक्तं नृनपो राहुपारदे ॥६४९६॥
स्त्रियां तु स्यात्प्रसूतायां सूतका सूतिकापि च ।
सूत्रोऽस्त्री यज्ञसूत्रे च तन्तौ सङ्ग्रहवाच्यपि ॥६४९७॥
सूदो ना सूपकारेऽथ सूपे रूपे च नप्स्त्रियोः ।
सूदा तु क्षरणे स्त्री स्यान्नतु ना क्षारणे मता ॥६४९८॥
सूनं तु पुष्पे क्लीबं स्यात्प्रसूते पुष्पिते त्रिषु ।
सूना वधे वधस्थाने स्याच्च दण्डाऽर्पिताऽङ्कुशे ॥६४९९॥
अधःसिरायां जिह्वायां तथा दुहितरि स्मृता ।
सूनुर्द्वयोरपत्ये स्यादथाऽर्के चाऽनुजे पुमान् ॥६५००॥
सूपो ना सूपकृत्यस्त्री मुद्गाद्यैर्व्यञ्जने कृते ।
सूमः प्रकीर्त्तितश्चन्द्रे पुँल्लिङ्गः श्वयथावपि ॥६५०१॥
क्ली त्वन्तरिक्षे त्रिषु तु सदूमे सदुमेऽपि च ।
सूरः सूर्ये गभस्तौ च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥६५०२॥

सूरिः पुमान्स्यादाचार्ये त्रि तु स्तोतरि पण्डिते ।
सूर्पो वार्त्ताक्रयोः पुंसि मत्स्यजातौ द्वयोर्मतः ॥६५०३॥
सूर्मः सूर्मी शुष्ककाष्ठलोहप्रतिमयोर्द्वयोः ।
सूर्या वाचि श्वेतगिरिकर्ण्यां सूर्यस्तु ना रवौ ॥६५०४॥
सृको वके सृगाले द्वे ना वज्रे नरके शरे ।
सृगालो दैत्यभेदे ना क्रौष्ट्रौ द्वे डमरे स्त्रियाम् ॥६५०५॥
सृणिस्तु वह्नौ वज्रे च पुँल्लिङ्गः स्यात्तथाऽङ्कुशे ।
सृणीकस्तु त्रिषून्मत्ते ना त्वग्नावशनावपि ॥६५०६॥
सृणीका तु स्त्रियामेषा लालायां परिकीर्त्तिता ।
सृतिस्तु मार्गे गमनेऽपि च स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ॥६५०७॥
सृत्वा प्रजापतौ वह्नौ पुंसि द्वे नीचजातिषु ।
सृत्वरी तु स्त्रियां वाचि जननीवैश्ययोरपि ॥६५०८॥
सृदाकुर्द्वे खगेऽप्सु क्ली नाऽग्नौ गोत्रर्षिभिद्यपि ।
सृपा द्वयोः शिशौ सर्पे यतिनि त्वेष भेद्यवत् ॥६५०९॥
सृप्रं सर्पिषि तैले क्ली सृप्रश्चन्द्रे पुमान्मतः ।
सृप्रा तूज्जयिनीपार्श्ववाहिन्यां सरिति स्मृता ॥६५१०॥
सृमरो मृगभेदे द्वे गत्वरे तु स्त्रियां मतः ।
सृष्टं तु सर्जने क्लीबं निश्चिते त्वभिधेयवत् ॥६५११॥
बहुनिर्मितयोर्मुक्तेऽपि सृष्टं परिकीर्त्तितम् ।
सृष्टिः स्त्रियां स्वभावे च त्यागेऽप्युत्पादनेऽपि च ॥६५१२॥
सेशब्दः सेवने स्त्री स्यात्सेवके वाच्यलिङ्गकः ।
सेक्ता पुंसि धवे त्रिस्तु सेचके परिकीर्त्तितः ॥६५१३॥
सेचनं नौसेकपात्रे सिक्तावपि नपुंसकम् ।
सेतुरायतने वारिबन्धे ना वरुणद्रुमे ॥६५१४॥
सेनस्त्रिष्विनयुक्ते स्यात्सेना चम्वां स्त्रियां मता ।
सेनानीस्तु पुमान्स्कन्दे त्रि तु सेनापतौ स्मृतः ॥६५१५॥
सेवः स्यूतौ पुमान्न क्ली भजने परिकीर्त्तितः ।
सेवको ना प्रसेवाख्ये स्यूते सेवितरि त्रिषु ॥६५१६॥

सेवना सुवयत्यर्थे न ना क्ली स्यूतिसेवयोः ।
सेव्यं तु सेवनीये त्रिर्वातव्येऽप्यथ नब्जले ॥६५१७॥
उशीरे निःशरे दध्नि पत्राङ्गाह्वयभेषजे ।
अब्धिजे लवणे ना तु मध्वासव इति श्रुते ॥६५१८॥
मद्यभेदे स्त्रियां तु स्यात्सेव्या नीवारधान्यके ।
स्यात्स्त्री मतल्लिकायां द्वे त्वायोगव्यां हि दस्युजे ॥६५१९॥
वन्दाकेऽप्यज्झटासंज्ञस्तम्बेऽथ चटके द्वयोः ।
त्रि सैकतं सिकतिले सिकतापुलिने त्रिषु ॥६५२०॥
सैनिकः सैन्यरक्षेऽपि स्यात्सेनासमवायिनि ।
सैन्धवोऽश्वेऽश्वभेदे द्वे मनुष्ये सिन्धुदेशजे ॥६५२१॥
क्ली वस्त्रजालराष्ट्रेषु पुमांस्तु स्याज्जयद्रथे ।
सिन्धुसम्बन्धिनि पुनस्त्रिषु सैन्धव इष्यते ॥६५२२॥
सैन्यं क्लीबं च सेनायां त्रिः सेनासमवायिनि ।
सैन्यश्चतुर्णामश्वानां कृष्णस्यैकत्र पुंस्ययम् ॥६५२३॥
सैरास्तु मध्यदेशस्य नीवृद्भेदे नृभूमनि ।
सीरस्य तु सिरायाश्च सम्बन्धिन्यभिधेयवत् ॥६५२४॥
सैरिकस्त्रिः सीरयोगिवोढ्रादौ स्वर्ग एष ना ।
सैरिन्ध्री स्ववशाऽन्यालयस्थशिल्पकृति स्त्रियाम् ॥६५२५॥
सोता नाऽध्यापके त्रिस्तु जनके चाभिषोतरि ।
सोमो ब्रह्मणि पूष्णीन्दौ वह्नौ पुण्ये लतान्तरे ॥६५२६॥
वीर्येऽमृतरसे शैत्ये सोमं तु त्रिषु तद्वति ।
तथोमया च सहिते ऊमेन सहितेऽपि च ॥६५२७॥
नर्मदायां सोमभवा स्त्रीयोगे तु यथायथम् ।
सोमयोनिर्द्वयोर्विप्रे सुरे योगे तु लोकवत् ॥६५२८॥
अथो नपुंसकं क्षीरे ज्ञेयं सोमरसोद्भवम् ।
सोमवल्कस्तु धवलखदिरे कट्फलेऽपि च ॥६५२९॥
सोमवल्ली स्त्रियां ब्राह्मयां गुडूच्यामप्यवल्गुजे ।
सौगन्धिकं तु क्ली पद्मे कल्हारेऽध्यामसंज्ञके ॥६५३०॥

गन्धद्रव्ये गन्धकाख्यधातौ तु स्यादयं पुमान् ।
सौदामनी मता विद्युद्विशेषेऽपि च विद्युति ॥६५३१॥
सौधस्तु न स्त्री सुधया गेहे शुक्लीकृते मतः ।
क्लीबं तु रजते सौधं सुधासम्बन्धिनि त्रिषु ॥६५३२॥
सौप्तिकस्तु प्रपाताख्यशत्रुनिग्रहकर्मणि ।
सौमिको दीक्षणीयेष्टौ त्रि तु सोमक्रतूद्भवे ॥६५३३॥
सौम्यस्त्रिः सुन्दरे सोमदेवते ना तु वत्सरे ।
बुधग्रहे सोमयागेऽरत्नौ पञ्चदशेऽस्य च ॥६५३४॥
यूपः सप्तदशारत्निर्वाजपेयस्य यः श्रुतः ।
सौम्या निशि स्त्रियां सौम्यं क्लीबं कृतयुगेऽपि च ॥६५३५॥
तुरायणाख्यतपसोर्द्वितयेऽपि प्रकीर्त्तितम् ।
सौरतो मृदुवायौ ना त्रि स्यात्सुरतयोगिनि ॥६५३६॥
सौरभेयी तु सुरभौ सौरभेयस्तु ना वृषे ।
सौरभ्यमुक्तं सौगन्ध्ये क्लीबं च गुणगौरवे ॥६५३७॥
मनोज्ञत्वेऽपि सौरभ्यस्तु मनोज्ञे विधेयवत् ।
सौराष्ट्रं कांस्यलोहेऽथ सौराष्ट्री त्वाढकी मृदि ॥६५३८॥
सौवीरो गोपघोण्टायां सौवीरं बदरीफले ।
स्रोतोऽञ्जने काञ्जिकेऽथ नीवृद्भेदे नृभूमनि ॥६५३९॥
सौष्ठवं तु प्रशस्तत्वेऽवष्टम्भेऽपि नपुंसकम् ।
स्कन्दस्तु कार्त्तिकेयेऽपि नदीतीरेऽपि पारते ॥६५४०॥
स्कन्दने ब्रह्मणि शिवे नृपे देहे तथा पुमान् ।
उत्तरस्थः पुनः स्कन्दो भवेत्स्कन्देन कर्त्तरि ॥६५४१॥
स्कन्दनं पातवैफल्यविरेकगतिशोषणे ।
स्कन्दोलस्तु पुमाञ्शीतगुणे शीते पुनस्त्रिषु ॥६५४२॥
स्कन्धोंऽशे भूपतौ वृक्षमहाविटपमूलके ।
चये समुदये रूपवेदनादिकपञ्चके ॥६५४३॥
सैन्यव्यूहे ग्रन्थकाण्डे काये पिण्डे मुनावपि ।
आर्याभेदे स्कन्धकाख्ये सम्पराये मरुत्पथे ॥६५४४॥

राज्याभिषेकसम्भाराङ्गभूतकलशादिके ।
धूर्वहस्कन्धसाम्येऽपि स्यान्नागान्तरसंविदोः ॥६५४५॥
भद्रादौ च बके तु द्वे स्कन्धा स्त्री वल्लिशाखयोः ।
स्कन्धकस्तु भवेत्स्कन्धेऽप्यार्याभेदे क्वचिन्मतः ॥६५४६॥
अथ स्कन्धफलो नारिकेले बिल्वेऽप्युदुम्बरे ।
स्कन्धः सान्तं मतं स्कन्धे शिखरेऽपि तरोर्मतः ॥६५४७॥
स्कन्धोपनेयं स्याद्राज्ञां सन्धिभेदेऽपि यौगिके ।
स्कन्नं शुष्के लम्बमाने पतितेऽप्युन्नते क्वचित् ॥६५४८॥
स्खदनं पाटने स्थैर्ये क्लेशोत्पादनहिंसयोः ।
विद्रावणे विदारेऽपि स्खदनाऽपि क्वचिन्मता ॥६५४९॥
स्खलस्तु स्खलनेऽप्याह तस्यार्थं सायणः स्खलम् ।
स्खलनं गद्गदने स्यादस्थैर्यभ्रंशयोरपि ॥६५५०॥
बाधायामपराधेऽपि विनिपाते पराभवे ।
स्खलितं त्वस्थिरे मत्ते निगृहीते च गद्गदे ॥६५५१॥
अनुल्बणे प्रमत्तेऽपि सम्भ्रान्तभ्रान्तयोस्त्रिषु ।
स्खलितं त्वपराधेऽपि नाशे वक्रगतावपि ॥६५५२॥
स्तनो न स्त्री कुचे चूचुके च पात्राङ्गभिद्यपि ।
स्तननं कासने शब्दमात्रे कुन्थनगर्जयोः ॥६५५३॥
अथ स्तनभवो योगाऽर्थेऽपि स्त्रीकरणान्तरे ।
स्तनयित्नुः पुमान्मेघे तथा मेघस्य गर्जिते ॥६५५४॥
व्याधौ मृतौ विद्युति च मुस्तके मेघवाचिवत् ।
स्तनान्तरं तु स्तनयोर्मध्ये चापि नपुंसकम् ॥६५५५॥
भाविवैधव्यचिह्नेऽपि स्तनस्थे परिकीर्त्तितम् ।
स्तनितं गर्जिते दुःखशब्दे चापकरध्वनौ ॥६५५६॥
स्तब्धः स्थिरे जडेऽहङ्कारिणि मन्दे घने त्रिषु ।
स्तबके नस्त्रियां गुच्छे समूहे ग्रन्थकाण्डके ॥६५५७॥
स्तन्यं क्षीरे भवेत्क्लीबं स्तन्यः स्तनभवे त्रिषु ।
स्तब्धरोमा वराहे द्वे यौगिके तु यथायथम् ॥६५५८॥

स्तम्बस्तृणे च विटपे संहतौ च पुमान्मतः ।
पुमान्स्तम्बकरिर्व्रीहौ वाच्यवत्स्तम्बकारिणि ॥६५५९॥
स्तम्बेरमो गजेऽप्यष्टसंख्यायां हस्तिवाचिवत् ।
स्तम्बजं स्तम्बजाते त्रिरुशीरे तु नपुंसकम् ॥६५६०॥
स्तभस्तुस्तु भवेच्छागे तथा मेषे द्वयोर्मतः ।
स्तम्भ ऊक्तो जडीभावे स्थूणायां प्रतिबन्धने ॥६५६१॥
स्तम्भकस्त्रिः स्तम्भकृति पुमांस्तु प्रमथान्तरे ।
कृतौ पुमान्स्तम्भकरस्स्तम्भकारिणि वाच्यवत् ॥६५६२॥
स्तम्भनं स्तब्धताहेतौ त्रिर्ना कामशरान्तरे ।
विद्यान्तरे स्तम्भनी स्त्री क्ली स्तब्धकरणे मतम् ॥६५६३॥
स्तरस्त्वास्तरणे पाषाणाद्यंशेऽपि पुमान्मतः ।
स्तरणं छादनेऽपि स्याद्वधेऽपि च नपुंसकम् ॥६५६४॥
स्तरिर्धूमे पुमान्स्त्री तु तृणे स्यात्स्तरिवत्स्तरी ।
वन्ध्यायां च स्तरी तद्वत्स्त्रीमात्रेऽपि प्रकीर्त्तिता ॥६५६५॥
स्तिमितं निश्चले क्लिन्नेऽप्यभिधेयवदिष्यते ।
स्तामुस्तु स्तोतरि मतो गर्जितर्यपि वाच्यवत् ॥६५६६॥
अस्त्री स्तवरको वस्त्रभेदे पुंसि वृतौ भवेत् ।
स्तिहितिस्त्री महीजस्य फले स्यादङ्कुरेऽपि च ॥६५६७॥
स्तीभिः पुंसि समुद्रे च हृदये च प्रकीर्त्तितः ।
स्तीर्णाः प्रमथभेदेषु स्तीर्णस्त्रि स्यात्प्रसारिते ॥६५६८॥
संयुगोपायतनयोः[1] पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
स्तीर्विर्नभसि चाध्वर्यौ तृणजातौ पयस्यपि ॥६५६९॥
शत्रौ तथैव रुधिरे पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
स्तूपः समुच्छ्रये वायौ मूर्धमध्यगुडे पशोः ॥६५७०॥
स्तेनश्चोरे तथा चोरनाम्नि स्याद्गन्धवस्तुनि ।
स्तेयी चौरे पुमान्द्वे तु स्वर्णकारेऽपि मूषिके ॥६५७१॥
स्तैन्यं क्लीबे भवेच्चौर्ये स्तैन्यश्चारे पुमान्मतः ।
स्तोमः स्यादध्वमाने च दशधन्वन्तराह्वये ॥६५७२॥

---

१. तटयोः ।

देयभेदे च पुँल्लिङ्गस्तथा स्यात्स्तोतृवृन्दयोः ।
संख्यायां यज्ञगस्तोत्रस्तोत्रियाणां क्रतावपि ॥६५७३॥
स्त्येनस्तु चोरेऽप्यमृते पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
स्त्री प्रियङ्ग्वाह्वये वृक्षे वम्रीवनितयोरपि ॥६५७४॥
लग्नाच्च सप्तमे राशौ लिङ्गच्छन्दोविशेषयोः ।
स्त्रीकृतं करणे स्त्रीणां वाच्यवत्तु स्त्रिया कृते ॥६५७५॥
स्त्रीधर्मो मैथुनेऽपि स्यादार्त्तवे यौगिकेऽपि च ।
स्त्रीस्तिः स्तनौ शोणिते च स्त्रीनभःपयसोर्मता ॥६५७६॥
स्त्रीपुंसयोस्त्वियं स्त्रीस्तिरजे सम्परिकीर्त्तिता ।
स्त्रीप्रियोऽशोकवृक्षे चाम्रवृक्षे च पुमान्मतः ॥६५७७॥
तयोस्तु प्रसवे क्लीबं योगार्थे तु यथायथम् ।
स्त्रीवासः पुंसि वल्मीके स्त्रीणां वासे तथा पुमान् ॥६५७८॥
स्त्रीस्वभावस्तु योगार्थे तथैव स्यान्नपुंसके ।
स्थपतिः सौविदल्लेऽपि बृहस्पतिसवेष्टिनि ॥६५७९॥
तक्षण्यधिपतौ शिल्प्यन्तरे जीवकुबेरयोः ।
स्थलजा यष्टिमधुके वाच्यवत्तु स्थलोद्भवे ॥६५८०॥
स्थली ननोन्नतभुवि स्थला कृत्रिममृण्मये ।
स्त्रियां क्षेत्रादिनिम्नस्थसलिलस्य निवारणे ॥६५८१॥
स्थलेरुहा गृहकुमार्यां दग्धायां च तथेष्यते ।
स्त्रियां स्थविः फले चैव कुष्ठीमांसे प्रकीर्त्तिता ॥६५८२॥
द्वयोः स्थविस्तुन्नवाये कुष्ठिनि त्वभिधेयवत् ।
जङ्गमेऽपि तथैव स्यात्पुमांसस्वर्ग इष्यते ॥६५८३॥
स्थाणुर्ना कुरुदेशे च गन्धद्रव्यान्तरे शिवे ।
नागरक्षोरुद्रभित्सु प्रजापत्यन्तरेऽपि च ॥६५८४॥
श्वेतोपदीकावल्मीके क्ली तु स्यादासनान्तरे ।
अथ कीलोद्भिदोरस्त्री वाच्यवत्तु स्थिरे मतः ॥६५८५॥
स्थानं क्लीबं नरेऽप्यन्ये प्राहुर्गेहावकाशयोः ।
सम्बन्धभेदे जन्तूनां स्यान्निवृत्तिप्रसङ्गयोः ॥६५८६॥

अपकर्षे च सादृश्ये क्लीबं तु स्थितिकर्मणि ।
स्थानः शवेऽपि पुंसि स्यात्तथैव प्रमथान्तरे ॥६५८७॥
स्थानकं त्वालवालेऽपि सिंहादीनां क्रमाह्वये ।
लङ्घनं कर्त्तुकामानां स्यादवस्थान्तरेऽपि च ॥६५८८॥
स्थानीयं तु महाग्रामे स्थातव्येऽपि पुरेऽपि च ।
अथ स्थानेऽव्ययं कारणार्थे युक्तार्थ एव च ॥६५८९॥
स्थापना स्थापयत्यर्थे नना तत्साधने त्रिषु ।
स्थापनी तु स्त्रियां पाठानाम्नि वल्ल्यां प्रकीर्त्तिता ॥६५९०॥
स्थाप्यं त्रिस्स्थापनीये निक्षेपे ना नपि ह्रीबेरे ।
स्थाया भुवि स्त्रियां स्थायः स्थाने स्थातरि तु त्रिषु ॥६५९१॥
स्थायुकस्तु त्रिषु स्थास्नौ स्याद्ग्रामाधिकृतेऽपि च ।
स्थालं भोजनपात्रे क्ली स्थाल्युखायां स्त्रियां मता ॥६५९२॥
स्थालस्तु ना महादेवे स्थितिकर्मणि च स्मृतः ।
स्थालीबिल्वस्तण्डुले ना त्रि तु स्थालीबिलार्हके ॥६५९३॥
स्थासकः पुंसि चर्चिक्ये बुद्बुदेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
तथा नक्षत्रमालाख्ये करिणां भूषणान्तरे ॥६५९४॥
स्थितं स्थितौ मतं क्लीबं सप्रतिज्ञे पुनः स्थितः ।
तथागतेर्निवृत्ते च त्रिषु स्यादूर्ध्वतां गते ॥६५९५॥
अवस्थायां व्यवस्थायां स्थितिः स्त्री तिष्ठतेः कृतौ ।
स्थिरः प्रोक्तः शनौ पुंसि निश्चले तु त्रिषु स्मृतः ॥६५९६॥
शालपर्णीभेषजे तु भूमौ च स्यात्स्थिरा स्त्रियाम् ।
स्थिरजिह्वस्तु मत्स्ये द्वे योगार्थे तु यथायथम् ॥६५९७॥
स्थिरदंष्ट्रो द्वयोः सर्पे ना वराहाकृतौ हरौ ।
मयूरे द्वे स्थिरमदो योगार्थे तु यथायथम् ॥६५९८॥
स्थिरायुः शाल्मलौ पुंसि योगार्थे तु यथायथम् ।
स्थुलं नपुंसकं दूष्ये स्थुल्गे गुल्फे पुमान्मतः ॥६५९९॥
स्थूणा तु गेहस्तम्भेऽपि तथा वातादिषु त्रिषु ।
लोहप्रतिकृतौ तन्त्रधारिण्यामपि च स्त्रियाम् ॥६६००॥

स्थूरं तु पीवरे त्रि स्यात्स्थूरा तु स्यात्स्त्रियामियम् ।
पश्चाद्भागे च जङ्घाया गोधूमादितुषेषु च ॥६६०१॥
स्थूलं क्ली दध्न्यथ त्रि स्याज्जडे बृहति पीवरे ।
स्थूलनासो वराहे द्वे योगार्थे तु यथायथम् ॥६६०२॥
स्थूलाङ्गस्तु द्वयोर्मत्स्ये शालिभेदे पुनः पुमान् ।
स्थूलोच्चयस्त्वसौ कल्ये नागानां मध्यमे गते ॥६६०३॥
स्थेयं क्लीबं च स्थातव्ये सह्ये च परिकीर्त्तितः ।
विवादपदनिर्णेतर्यपि स्थेयोऽभिधेयवत् ॥५६०४॥
स्नातकस्तु गृहस्थेऽपि समावृत्ते तथा पुमान् ।
स्नानं स्यादाप्लवे क्लीबं स्नानीयेऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥६६०५॥
स्नावः कदल्यां घूर्णायां स्नायुन्यप्यस्त्रियां मतः ।
नप् शाकटायन आह स्म हर्षनन्दी च पुंस्यमुम् ॥६६०६॥
स्निग्धो मतस्स्नेहने त्रिः ससौहार्दवयस्ययोः ।
पुमांस्तु गुग्गुलौ मन्त्रिजने च स्नेहने तु नप् ॥६६०७॥
स्नुषा तु पुत्रपत्न्यां च स्नुह्यां चैव स्त्रियां मता ।
स्नेहो ना प्रेम्णि सौहार्दे तैलाज्यादौ जले तु नप् ॥६६०८॥
स्नेहवान्स्नेहयुक्ते त्रि स्त्री तु स्याद्भेषजान्तरे ।
स्नेहपूरः क्षमायां स्यात्स्नेहस्यापि च पूरणे ॥६६०९॥
स्नेहा नान्तः पुमांश्चन्द्रे सख्यौ रोगान्तरेऽपि च ।
स्नेही स्नेहवति त्रि स्यात्तैलकारे द्वयोर्मतः ॥६६१०॥
स्नेहुः पित्ते तथा रोगविशेषे सान्निपातिके ।
स्पन्दनं चलने किञ्चित्तिमिशाख्यद्रुमे तु ना ॥६६११॥
स्पर्शो ना स्पर्शने तद्वदुपतापप्रदानयोः ।
जारे चकादिमान्तेषु वर्णेषु द्वे तु किङ्करे ॥६६१२॥
स्पर्शस्तु स्प्रष्टरि तथोपतप्तर्यभिधेयवत् ।
स्पर्शनं तु नपि स्पृष्टौ दाने च पवने तु ना ॥६६१३॥
स्पशस्तु संयुगे चारे चापि पुँल्लिङ्ग इष्यते ।
योक्त्रेण यजमानस्य पत्न्याः संनहने स्पशा ॥६६१४॥

स्पृहायामं पुनः क्लीबे स्यादहःसु तृणेषु च ।
स्फारं तु मौर्व्या चापस्य सहस्फुरण इष्यते ॥६६१५॥
स्फारं त्रिषु प्रभूते स्याल्लाञ्छने स्यान्नपुंसकम् ।
स्फिग्गुर्गुदे ना स्त्री त्वेषा शरीरावयवान्तरे ॥६६१६॥
स्फीतं वृद्धे प्रभूते च वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ।
स्फुटं विकसिते व्याप्ते शुक्तविस्पष्टयोरपि ॥६६१७॥
स्फुटनं स्याद्विकसने भङ्गेऽपि च नपुंसकम् ।
स्फोटिका पक्षिभेदे स्त्री विस्फोटे तु तद्द्वयोर्भवेत् ॥६६१८॥
स्मरध्वजो वाद्यभेदे मेढ्रे चापि तथा पुमान् ।
स्मरध्वजा तु ज्योत्स्न्यां स्याद्भगे तु क्ली स्मरध्वजम् ॥६६१९॥
वसन्तेऽपि तथा चन्द्रे पुंसि स्मरसखो मतः ।
स्मारस्तु स्मरणे पुंसि स्मरसम्बन्धिनि त्रिषु ॥६६२०॥
स्मारिणी तु स्त्रियां ब्राह्मयां नना स्यात्स्मारकर्मणि ।
स्मितस्तु त्रिषु फुल्ले स्यात्स्मितवत्यप्यथ स्मितम् ॥६६२१॥
अदृष्टदन्तहासे क्ली विकासे कुमुदस्य च ।
स्मृतिः स्त्री धर्मशास्त्रे स्यादुत्कण्ठाचिन्तयोरपि ॥६६२२॥
स्यः स्यात्तदर्थे प्रथमैकत्वे त्रिः पुंसि शूर्पके ।
स्यन्दनं स्रवणे चाप्सु स्यन्दनस्तु पुमान्रथे ॥६६२३॥
स्यन्दनी तु स्त्रियामेषा ग्रहभ्रम उदीरिता ।
स्यात्स्यन्दिनी स्त्री लालायां गोभेदे च क्षरत्स्तने ॥६६२४॥
स्यमीको वृक्षवल्मीकनृपगोत्रान्तरेषु ना ।
काले मेघे स्यमिकवत्स्यमीका नीलिका मता ॥६६२५॥
स्यालः पत्नीभ्रातरि ना स्याली पत्न्याः स्वसर्यसौ ।
वैजयन्त्यां तु निर्मूलं पत्न्या अनुजयोर्द्वयोः ॥६६२६॥
स्यालकस्त्वनुजे पत्न्याः स्यालिकाऽस्या यवीयसी ।
स्यूतस्तु प्रसवे पुंसि स्यूतमूते त्रिषु स्मृतम् ॥६६२७॥
स्यूता तु मेखलायां च तथा रश्मौ स्त्रियां मता ।
स्यूमोऽप्सु द्वे पुमांस्तन्तौ रश्मौ चन्द्रे च मङ्गले ॥६६२८॥

अथाभिधेयवद्दीर्घे स्यूमोऽयं परिकीर्त्तितः ।
स्योनं सुखे क्ली त्रिस्तत्साधनेथाऽर्केऽर्कदीधितौ ॥६६२९॥
समुद्रे तन्तुसन्ताने तन्तुवायस्य चापि ना ।
स्रज्या तु मालाकारेऽपि मत्स्यघाते तथा त्रिषु ॥६६३०॥
स्रज्या तु पदसङ्घाते पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
स्रज्वा रज्जौ तन्तुपटसङ्घाते स्त्री प्रजापतौ ॥६६३१॥
स्रवणं तु स्रुतौ क्लीबं स्रवणः कतकद्रुमे ।
स्रवन्ती तु स्त्रियां नद्यां स्रवत्तु स्रावके त्रिषु ॥६६३२॥
स्रष्टा तु सृष्टिकृन्मात्रे त्रिर्ना हरिविरिञ्चयोः ।
स्रावकः स्रावणाया वा स्रवणस्य च कर्त्तरि ॥६६३३॥
वाच्यवत्स्रावकन्त्वेतन्मरिचे क्लीबमिष्यते ।
स्रुक् स्रुवे शोषणे गत्याम् [स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता] ॥६६३४॥
स्रुतस्त्रिषु च्युते स्त्री तु हिङ्गुपत्र्यां स्रुता मता ।
स्रुव आचरणाख्ये स्याद्यज्ञपात्रान्तरे पुमान् ॥६६३५॥
अथ स्रुवा स्यात्सल्लक्यां मूर्वायामपि च स्त्रियाम् ।
स्रोतः प्रवाहे सरितां जलेऽपि स्यान्नपुंसकम् ॥६६३६॥
स्रोतस्विनी स्त्रियां नद्यां स्रोतस्वति पुनस्त्रिषु ।
स्रोतस्यश्चोरशिवयोः स्रोतोयोगिनि तु त्रिषु ॥६६३७॥
जलस्य निर्गमद्वार इन्द्रियेऽपि तथा मतम् ।
स्वं धने स्वः पुमाञ्ज्ञातौ त्रि त्वात्मात्मीययोरयम् ॥६६३८॥
स्वक्षस्तु त्रिषु यस्याक्षशब्दार्थः शोभनोऽक्षि वा ।
तत्र तत्रापि च स्त्र्यर्थे स्वक्षा पूर्वेऽपरत्र तु ॥६६३९॥
स्वक्षी स्याच्छोभने त्वक्षे परवल्लिङ्गतेष्यते ।
स्वगुप्ता कपिकच्छ्वां च गुल्मे लज्जालुनामनि ॥६६४०॥
स्वगृहः पक्षिभेदे द्वे यौगिके तु यथायथम् ।
स्वजस्तु शोभने छागे द्वयोरौरसपुत्रयोः ॥६६४१॥
प्राणिजात्यन्तरे त्रिस्तु स्वशब्दार्थसमुद्भवे ।
प्रशस्ताऽजार्थयुक्ते च स्यात्प्रशस्ते त्वजे त्रिषु ॥६६४२॥

आस्वादने च स्वदनं शोभनेऽप्यदने मतम् ।
स्वधितिस्तु पुमान्वज्रे कुठारेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥६६४३॥
स्वन्नं पुनर्बहुव्रीहौ सुजग्धे रुचिते त्रिषु ।
शोभनत्वादिसंयुक्ते त्वन्ने तत्स्यान्नपुंसकम् ॥६६४४॥
स्वप्नः सुप्तस्य विज्ञाने स्वापे चापि पुमान्मतः ।
स्वभूर्ब्रह्मणि विष्णौ च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥६६४५॥
स्वयंवरः पुमानुक्तः स्वयंवरणकर्मणि ।
पतिंवरायां तु स्त्रीत्वे कीर्त्तितैषा स्वयंवरा ॥६६४६॥
स्वयम्भूस्तु विरिञ्चे ना क्ली स्वयम्भुविहायसि ।
स्वरः षड्जाद्युदात्ताद्योरज्वर्णे कण्ठजस्वने ॥६६४७॥
अरे च शोभने पुंसि त्रि तु स्याच्छोभनारके ।
अतिशीघ्रेऽप्यथो सामस्वे यज्ञादिषु षट्सु नप् ॥६६४८॥
स्वरसं तु दिने तद्वद्देहे च क्लीबमिष्यते ।
स्वराडैश्वर्यवद्भेदे स्वस्य राज्ञि त्रि ना हरौ ॥६६४९॥
चतुस्त्रिंशत्स्वरेऽन्तस्था छन्दोभेदे स्त्रियां स्वराट् ।
स्वरितः स्वरभेदेऽनुदात्तोदात्तद्वयात्मके ॥६६५०॥
अथ तत्स्वरयुक्ते च स्वर्गतेऽप्यभिधेयवत् ।
स्वरुर्वज्रे तथा यूपशकलेऽपि पुमान्मतः ॥६६५१॥
स्वर्णस्तु स्याद्रक्तनालिकेरे स्वर्णं तु हेमनि ।
स्ववासिनी चिरण्ट्यां च नववध्वामपि स्त्रियाम् ॥६६५२॥
स्वसरो भ्रातरि क्ली तु स्वसरं दिवसे गृहे ।
स्वसृशब्दः स्त्रियामुक्तो भगिन्यामङ्गुलावपि ॥६६५३॥
स्वस्तिरस्ति स्तुतौ स्वस्य विक्षिप्ततृणसञ्चये ।
स्वस्तिकस्तु पुमान् गेहवास्तुविन्यसनान्तरे ॥६६५४॥
त्रिकोणसंज्ञके चापि स्त्रीणां स्याद्भूषणान्तरे ।
सुनिषण्णाह्वये शाकस्तम्बे पङ्कसमुद्भवे ॥६६५५॥
द्वयोस्तु स्वस्तिकश्चाषनाम्नि पक्ष्यन्तरे मतः ।
उलूलौ स्यात्स्वस्त्ययनं क्षेमेण गमनेऽपि च ॥६६५६॥

स्वादुर्मधुरनाम्नि स्याद्रसे त्रिस्तु तदन्विते ।
प्रिये मृष्टे मनोज्ञे च क्ली तु स्वादुजले मतम् ॥६६५७॥
अथ स्याद्वी स्त्रियामेषा द्राक्षायां परिकीर्त्तिता ।
स्वादुकण्टक उक्तो गोक्षुरे कोल्यां विकङ्कते ॥६६५८॥
स्वादुगन्धा मता स्त्रीत्वे मधुशिग्रौ च यौगिके ।
स्त्री तु स्वादुरसा द्राक्षाकाकोलीमदिरासु च ॥६६५९॥
स्वादौ तु स्याद्रसे पुंसि बहुव्रीहौ तु भेद्यवत् ।
स्वाध्यायस्तु भवेद्वेदे वेदस्य च जपे तथा ॥६६६०॥
स्वामी पुमान्स्कन्ददेवे त्रिषु नाथे प्रकीर्त्तितः ।
स्वामिन्यनृपवंश्यायां नाट्योक्तौ च नृपस्त्रियाम् ॥६६६१॥
स्वाहाऽऽग्नेय्यां च वाचि स्त्री हविर्दाने तदव्ययम् ।
स्वेदः स्वेदजले स्वित्तिक्रियास्वेदनयोरपि ॥६६६२॥
स्वेदनी कन्दुभाण्डे स्त्री स्वित्तौ क्ली स्वेदनं मतम् ।
स्वेदना तु नना स्वेदयत्यर्थे परिकीर्त्तिता ॥६६६३॥
स्वैरस्तु मन्दे स्वच्छन्देऽप्यभिधेयवदिष्यते ।
स्वैरी स्वतन्त्रे बन्धक्यां पुनः स्यात्स्वैरिणी स्त्रियाम् ॥६६६४॥

ह

ह पादपूर्त्तिसम्बुद्धिनियोगक्षेपननिग्रहे ।
निन्दायां च प्रसिद्धौ चाव्ययं सक्रोधवारणे ॥६६६५॥
अथ पुंसि शिवे शून्ये व्योम्नि स्वर्गेऽप्सुधारणे ।
चन्द्रेऽपि पापहरणे त्रि तु स्याद्रक्तशुष्कयोः ॥६६६६॥
तथोत्तरपदस्थोऽयं घातके त्याजकेऽपि च ।
हा स्त्री वीणासुरतयोर्हं ब्रह्मण्यायुधे मुदि ॥६६६७॥
रत्नज्योतिषि चाह्वाने भवेद्वीणाध्वनावपि ।
हमव्ययं मतं क्रोधे विनयामन्त्रणेऽपि च ॥६६६८॥
हंसः सितच्छदे द्वे स्यान्महिषेऽप्यश्वभिद्यपि ।
पुमांस्तु विष्णौ परमात्मनि सूर्ये शिवे स्मरे ॥६६६९॥

स्यान्निर्लोभनृपे देहवायुभेदे गिरौ गुरौ ।
यतिभेदे मन्त्रभेदे मत्सरे धूर्वहे वृषे ॥६६७०॥
छन्दोभिदोस्तालभेदे हकारे रजतेऽपि च ।
त्रिस्तु श्रेष्ठेऽग्रगे शुद्धे श्वेते हंसः प्रकीर्त्तितः ॥६६७१॥
हंसकः पादकटके तालभेदे तथा पुमान् ।
लघुर्गुरुर्लघुर्यत्र स तालो हंसकः स्मृतः ॥६६७२॥
कर्षमाने हंसपदं स्वरभक्त्यन्तरे पुनः ।
हंसपदा स्त्रियां हंसपदी छन्दोद्रुभेदयोः ॥६६७३॥
हंसपादी हंसपद्यां क्ली सिन्दूरेऽपि पारदे ।
हंसमालाकृष्णपक्षहंसच्छन्दोभिदोरपि ॥६६७४॥
हंसवान्स्त्रिः सहंसेऽथ स्त्रियां हंसवती मता ।
हंसपद्यां वीरसेनघातिन्यां चक्रगन्तरे ॥६६७५॥
दुष्यन्तभार्याभेदे च स्वर्णभूमिपुरान्तरे ।
हंसाङ्घ्रिः पुंसि सिन्दूरे हंसाङ्घ्री स्त्री द्रुमान्तरे ॥६६७६॥
हक्कः पुंसि गजाह्वाने हक्कोलूकभिदि स्त्रियाम् ।
हञ्जिका तु स्त्रियां चेट्यां तथा कञ्ज्यामपीष्यते ॥६६७७॥
वेश्याहरिद्राञ्जनकेशीषु हट्टविलासिनी ।
हठः पार्ष्ण्यां बलात्कारे वारिपर्णीतृणेऽपि च ॥६६७८॥
हड्डिर्ना काष्ठनिगडे नीचजातिककिङ्करे ।
हतं गते गतवति विषाणे मारिते त्रिषु ॥६६७९॥
हतस्तु पुंसि मार्गे स्यात्क्लीबं तु गतिहिंसयोः ।
स्त्री तु कुत्सितकन्यायां गुणनादौ हतस्त्रिषु ॥६६८०॥
हतको दुर्भगे नीचे कातरे चापि वाच्यवत् ।
हतौजा ज्वरभेदे ना हतसत्त्वे पुनस्त्रिषु ॥६६८१॥
हत्नुर्व्याधावायुधे ना हिंस्रे पुनरयं त्रिषु ।
हथः प्रहारेऽपि वधे स्यान्निराशे तु वाच्यवत् ॥६६८२॥
हनुर्भीमे च मृत्यौ च महारुज्यायुधे पुमान् ।
व्याधिभेषजभिद्वेश्यास्वेषा स्त्रीत्वे हनुः क्वचित् ॥६६८३॥

हनुर्वैदे हशनकीजे गण्डोर्ध्वांशके द्वयोः ।
भल्लांशे गण्डसदृशे क्लीबं शतपथे हनु ॥६६८४॥
हनुषः पुंसि कोपे स्याद्राक्षसे तु द्वयोर्मतः ।
हन्त हर्षत्वराशोकामन्त्रणेष्वव्ययं मतम् ॥६६८५॥
हन्तकारस्तु भिक्षासु षोडशस्वपि योदिता ।
ग्रासमात्रौदनं भिक्षा तत्र हन्तकृतावपि ॥६६८६॥
हयो गतौ धनूराशाविन्द्रे चन्द्राश्वभिद्यपि ।
कामशास्त्रीयपुंभेदे चतुर्लघुगणेऽप्यथ ॥६६८७॥
हयी द्वे चमरेऽप्यश्वेऽश्वगन्धायां स्त्रियां मता ।
स्त्रीत्वे हया क्वचिद्दृष्टा हयः प्राजितरि त्रिषु ॥६६८८॥
हयगन्धा हृद्यगन्धाऽप्यश्वगन्धाजमोदयोः ।
हयगन्धं पुनः क्लीबं कृष्णसौवर्चले मतम् ॥६६८९॥
हयग्रीवोऽवतारेऽपि विष्णोर्दैत्येऽपि तद्वते ।
हयग्रीवा पुनः स्त्रीत्वे दुर्गायां परिकीर्त्तिता ॥६६९०॥
हयनं हायने कर्णीरथेऽपि गमने स्मृतम् ।
हयप्रियाऽश्वगन्धा स्याद्यवे तु च हयप्रियः ॥६६९१॥
हयवाहन इत्येष स्याद्रेवन्तकुबेरयोः ।
हयग्रीवे हयशिराः क्ली तु स्यादायुधान्तरे ॥६६९२॥
हयारिः करवीरे ना महिषे तु द्वयोर्मता ।
हरोऽग्नौ भाजके शम्भौ हारके त्रिर्द्विर्गर्दभे ॥६६९३॥
हरको भाजके दीर्घासौ ना त्रिः शठचौरयोः ।
हरणं करणाख्ये चेष्टान्तरे नाव्यविश्रुते ॥६६९४॥
दृढदुष्करचित्रेषु योधानामपि कर्मसु ।
अश्वानां देयभेदे च क्वचिद्देशे हि दीयते ॥६६९५॥
योग्याशनादिकं तेषां शरीरपरिपुष्टये ।
पश्चाद्बीजनिषेकस्य तथा हरतिकर्मणि ॥६६९६॥
यौतकोष्णाम्बुशुक्रेषु सुवर्णेऽपि नपुंसकम् ।
गणितज्ञश्रुते संख्याताडनेऽपि भुजे तथा ॥६६९७॥

चम्पकप्रसवे चाथ चम्पके हरणः पुमान् ।
हरस्य शेखरे नस्त्री गङ्गायां हरशेखरा ॥६६९८॥
हरः क्रोधे जले लोके ज्योतिषि ज्वलति स्रजि ।
ग्रहणे सान्तमग्नेः क्ली सामभित्सु च पञ्चसु ॥६६९९॥
अग्निसामविशेषेषु सान्तः क्ली पञ्चसु स्मृतः ।
हराहरस्तु निश्वासे मरणाऽवसरोत्थिते ॥६७००॥
योग्याचारेऽपि च तथा दानवौ तु हराहरौ ।
हरिरर्काग्निवातेन्दुयमेन्द्रभगविष्णुषु ॥६७०१॥
सिंहराशौ भर्तृहरौ सुपर्णे ब्रह्मशुक्रयोः ।
गिरिभिद्वर्षभिच्छन्दोभेदेषु हरयो जनाः ॥६७०२॥
बौद्धसंख्याविशेषेऽथ हरी स्त्री कपिमातरि ।
अंशौ शक्रहये मुद्गे रुक्मे रुक्माभवर्णके ॥६७०३॥
श्वेतवर्णे हरिद्वर्णे कपिले त्रि तु तैर्युते ।
शूद्रानिषादजे त्वश्वकपिभेकशुकाहिषु ॥६७०४॥
मयूरे कोकिले हंसे शृगालेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
सिंहेऽश्वभेदे हरितपीतवर्णे हरिर्द्वयोः ॥६७०५॥
हरिकेशः पाण्डुकेशे त्रिर्ना सवितरीश्वरे ।
क्वचिच्छिवस्य प्रमथे यः क्षेत्रोद्याननायकः ॥६७०६॥
हरिचन्दनमस्त्री स्याद्देवानां पादपान्तरे ।
चन्दने ताम्रवर्णे च पीतचन्दनसञ्ज्ञके ॥६७०७॥
क्लीबं तु कुङ्कुमे पद्मकेसरेऽपि प्रियाङ्गके ।
चन्द्रातपेऽपि च प्रोक्तं हरिचन्दनमित्यदः ॥६७०८॥
हरिणो द्वे ताम्रमृगे हंसेऽपि नकुलेऽथ ना ।
शिवे विष्णौ प्रमथभिन्नागभिद्द्वीपभित्स्वपि ॥६७०९॥
मञ्जिष्ठायां पीतयूथीस्वर्णप्रतिमयोरपि ।
चारुनार्यन्तरेऽत्यष्टवृत्तभेदे हरिण्यसौ ॥६७१०॥
हरिणः पाण्डुरे वर्णे पुमांस्तद्वति तु त्रिषु ।
स्वरभक्त्यन्तरे देववनितायक्षिणीभिदोः ॥६७११॥

हरिणाक्षी गन्धवस्तुभिन्नार्योर्ना निशाकरे ।
हरिणिस्तु स्त्रियां मृत्यौ कुल्यायां च प्रकीर्त्तिता ॥६७१२॥
हरिन्मरकते सूर्ये सूर्याश्वे हरितेऽपि च ।
पिङ्गे वर्णे तद्वति तु वाच्यवत्स्यान्नृनप्तृणे ॥६७१३॥
स्त्री तु नद्यङ्गुलीदिक्षु हरिदेषा प्रकीर्त्तिता ।
हरितो मुद्गऋषिभेदयोः पालाशवर्णके ॥६७१४॥
अथर्वमन्त्रभेदेऽथ हरिद्रानीलदूर्वयोः ।
पिङ्गद्राक्षाविशेषेऽपि स्वरभक्त्यन्तरेऽपि च ॥६७१५॥
हरितं क्ली सुवर्णेऽपि शाके स्थौणेयकेऽपि च ।
त्रि तु तद्वर्णयुक्ते स्त्री हरिता हरणीति च ॥६७१६॥
द्वे तु सिंहेऽथ हरिता हरेः स्याद्भावकर्मणोः ।
अस्त्री हरितकः शाके तृणे तु क्लीबमिष्यते ॥६७१७॥
केचित्पेठुर्हरीतक्या अर्थे हरितकीं स्त्रियाम् ।
हरितालं धातुभेदे दूर्वायां हरितालयसौ ॥६७१८॥
भाद्रशुक्लतृतीयायामपि खड्गदले स्त्रियाम् ।
वायौ च व्योमरेखायां हरिताली क्वचिन्मता ॥६७१९॥
हरिताश्मं मरकते तुत्थेऽपि च नपुंसकम् ।
हरिद्रस्तु कलाप्यन्तेवासिनि प्रथमे पुमान् ॥६७२०॥
तथा दारुहरिद्रायां वृक्षमात्रेऽपि कीर्त्तितः ।
हरिद्रवस्तु सोमेऽपि नागकेसरचूर्णके ॥६७२१॥
हरिद्रा काञ्चनी प्रोक्ता हरिद्रो हरिचन्दनः ।
हरिनामा तु मुद्गे ना क्लीबे स्याद्विष्णुनामनि ॥६७२२॥
हरिनेत्र उलूके द्वे क्ली पद्मे त्रि तु यौगिके ।
अथ मूढोन्मत्तयोस्तु वाच्यवत्स्याद्धरिप्रियः ॥६७२३॥
हरिप्रियः कदम्बेऽपि बन्धूककरवीरयोः ।
विष्णुकन्दे तथा शङ्खे शिवे स्त्री तु हरिप्रिया ॥६७२४॥
लक्ष्म्यां सुरायामेकादश्यां तुलस्यां तथा क्षितौ ।
हरिप्रियं क्ली मूले वीरणस्य हरिचन्दने ॥६७२५॥

हरिमन्थः पीतमुद्गेऽग्निमन्थे चणके पुमान् ।
हरिमन्थज इत्येष ना धान्ये चणकाह्वये ॥६७२६॥
पठितोऽमरसिंहेन वैजयन्त्यां त्वपाठि सः ।
कृष्णमुद्गेऽथ स त्रिः स्याद्धरिमन्थसमुद्भवे ॥६७२७॥
हरिरोमा विरिञ्चेऽपि तथा शक्रे पुमान्मतः ।
हरिलोचन इत्येष उलूके कर्कटे द्वयोः ॥६७२८॥
जयायां च तुलस्यां च लक्ष्म्यां च हरिवल्लभा ।
हरिवाहन इन्द्रेऽपि सूर्येऽपि गरुडेऽपि च ॥६७२९॥
त्रिः स्वर्णस्थे हरिशयो यातेऽग्रे यजुषि स्त्रियाम् ।
हरिश्रीः पिङ्गशोभेऽपि सोमाश्वादिमति त्रिषु ॥६७३०॥
इन्द्रे हरिहयः स्कन्दगणेशरत्रिषु क्वचित् ।
गरुडेऽपि वृषे शम्भोर्दक्षे हरिहरात्मकः ॥६७३१॥
क्लीबं हरिहरक्षेत्रे मतं हरिहरात्मकम् ।
हरिहेतिस्तु चक्रेऽपि तथैवेन्द्रायुधे द्वयोः ॥६७३२॥
हरेणुर्भेषजे कौन्तीसंज्ञे स्त्री परिकीर्त्तिता ।
कलायधान्यभेदे तु रङ्कटीसंज्ञके पुमान् ॥६७३३॥
हर्त्ता नेतरि चोरे च ऋदन्तो वाच्यवन्मतः ।
हर्म्यः प्रासादपृष्ठेऽपि गृहभेदे गृहेऽपि च ॥६७३४॥
हर्यक्षो ना कुबेरे द्वे सिंहे त्रिः कपिलाक्षके ।
हर्यश्वस्तु भवेत्पूर्वराजभेदे पुरन्दरे ॥६७३५॥
हर्षयित्नु सुवर्णे क्ली हर्षयित्नुस्त्वयं त्रिषु ।
प्रियंवदे तथा रङ्गोपजीविन्यनुवर्त्तके ॥६७३६॥
हर्षुलः शिल्पिमृगयोर्द्वे पुंसि तु बुधग्रहे ।
भेद्यलिङ्गो हासशीले हर्षशीले च कामिनि ॥६७३७॥
हलिजः शाकवृक्षेऽपि कदम्बे केतकीद्रुमे ।
हलिजं प्रसवे तेषां नपुंसकमुदीरितम् ॥६७३८॥
हली तु बलभद्रे ना हलवत्यभिधेयवत् ।
शक्रपुष्पाह्वयस्तम्बे हलिनीति स्त्रियां मता ॥६७३९॥

हलिप्रिया सुरायां स्त्री कदम्बद्रौ हलिप्रियः ।
हवस्तु यज्ञ आज्ञायामाह्वाने वह्निहोमयोः ॥६७४०॥
हवनी स्रुचि ना त्वग्नौ होमे क्ली हवनं मतम् ।
हविर्घृते जले हव्ये सान्तं क्लीबं प्रकीर्त्तितम् ॥६७४१॥
हविष्यस्त्रिर्हविःसाधौ तिले पुंसि प्रकीर्त्तितः ।
अग्नावाहवनीयाग्नौ देवाग्नौ हव्यवाहनः ॥६७४२॥
हसन्त्यङ्गारशकटौ त्रिस्तु हासिविकासिनोः ।
हसितं दृष्टदन्ते क्ली हासे स्याद्धासमात्रके ॥६७४३॥
अथो हसितवत्येतत्फुल्लेऽवहसिते त्रिषु ।
हस्तोऽस्त्री किष्कुमानेऽपि पाणौ घ्राणे च दन्तिनः ॥६७४४॥
हस्तं त्रि घातके क्ली तु सन्निपाते बलाहितौ ।
केशार्थात्तु परः केशसमूहेऽपि च दृश्यते ॥६७४५॥
हस्तावापः शरादाने व्यधनार्थेऽपि पाणिना ।
आवापे धान्यबीजादेः पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥६७४६॥
हस्तिकर्णो रोचकाख्यकम्बले हस्तिनः श्रुतौ ।
निवारणार्थे शस्त्रस्य भटानां फलकान्तरे ॥६७४७॥
हस्तिचारो गजत्रासहेतौ शरभसन्निभे ।
शस्त्रभेदेऽपि योधानां तथा चारेऽपि हस्तिनाम् ॥६७४८॥
हस्ती द्वयोर्गजे भृङ्गे हस्तिनी तु स्त्रियां मता ।
कामशास्त्रप्रसिद्धे स्त्रीविशेषे हस्तिनापुरे ॥६७४९॥
पुमान्हस्तिनखः पुर्यां द्वारकूटेऽथ यौगिके ।
हस्तिमल्लो गणेशेऽप्यैरावतेऽपि पुमान्मतः ॥६७५०॥
हाटको हेमनि मतः क्लीबपुँल्लिङ्गयोरयम् ।
हाटकं क्ली कुन्तभेदे स्यात्त्रिकण्टकसंस्थितौ ॥६७५१॥
हान्त्रो द्वे राक्षसे क्लीवं हान्त्रं स्यान्मरणे रणे ।
हायनः शालिभिच्छित्त्वोर्ना न स्त्री वत्सरेऽर्चिषि ॥६७५२॥
हारो मुक्तावलौ देवालयकक्ष्यासु तु स्त्रियाम् ।
हारा हारी तु नाम्नैव दुष्टा कन्या प्रकीर्त्तिता ॥६७५३॥

हरस्य तु हरेश्चापि सम्बन्धिन्यभिधेयवत् ।
हारको हर्त्तरि त्रिर्ना यष्टिसंज्ञायुधान्तरे ॥६७५४॥
हारणा हारयत्यर्थे न ना ना चम्पकद्रुमे ।
हारिता त्वविवाह्या या पतितोत्पन्नकन्यका ॥६७५५॥
तस्यां हारयतेस्तु स्यादीक्षिते हारितस्त्रिषु ।
हालो विलेखने पुंसि हलसम्बन्धिनि त्रिषु ॥६७५६॥
हाली पत्न्याः कनीयस्यां हाला मद्ये भवेत्स्त्रियाम् ।
हिंसनस्तु पुमाञ्ज्ञातौ हिंसायां तु नपुंसकम् ॥६७५७॥
हिंसा घाते तथा चौर्यादिकेऽपि स्त्रीत्व इष्यते ।
हिंसीरस्तु द्वयोर्व्याघ्रे तस्करे त्वभिधेयवत् ॥६७५८॥
हिंस्रा गृध्रनखी क्रोष्टुकोल्योस्त्रिषु तु घातके ।
हिक्का स्त्री पिङ्गलाख्ये पक्ष्यन्तरे रोगभिद्यपि ॥६७५९॥
द्वयोस्तु हिक्कने त्रिस्तु हिक्कके परिकीर्त्तिता ।
हिङ्गुनिर्यास इत्युक्तो निम्बे हिङ्गुरसेऽपि च ॥६७६०॥
हिङ्गुलस्तु पुमान्रागद्रव्यधात्वन्तरे स्मृतः ।
दारदाख्येऽथ भण्टाक्यां स्त्री वातिङ्गिननामनि ॥६७६१॥
हिडिम्बस्तु पुमान्भीमसेनेन निहतेऽसुरे ।
हिडिम्बा तु स्त्रियां तस्य भगिन्यां परिकीर्त्तिता ॥६७६२॥
हिता तु स्त्री हरीतक्यां क्ली तु धारणदानयोः ।
हितं तु धारिते पथ्ये दत्ते चापि त्रिषु स्मृतम् ॥६७६३॥
हिमस्तु पुंसि कर्पूरे शीते च त्रि तु तद्वति ।
हिमा निशायां वर्षे च चन्दने तुहिने हिमम् ॥६७६४॥
हिमजा तु शटीसंज्ञगन्धमूलौषधौ स्त्रियाम् ।
पार्वत्यां च हिमोत्थे तु त्रिर्ना मैनाकपर्वते ॥६७६५॥
हिमारातिस्तु विज्ञेयः पावके भास्करेऽपि च ।
हिमारिस्तु रवौ पुंसि तथा वह्नौ प्रकीर्त्तितः ॥६७६६॥
हिरणं तु वराटेऽपि हेम्नि रेतस्यपीष्यते ।
हिरण्मयं क्ली श्वेताख्याद्वर्षे स्यादुत्तरे गिरेः ॥६७६७॥

अथ च त्रिषु सौवर्णे हिमरयमुदीरितम् ।
हिरण्यं मानभेदे च धने स्वर्णे कपर्दके ॥६७६८॥
अक्षये चाप्यकुप्ये च रेतस्यपि नपुंसकम् ।
हिरण्यकशिपुः पुंसि प्रह्लादपितरि स्मृतः ॥६७६९॥
हिरण्यचित्रितकुथे पुनः स्यात्पुंनपुंसकम् ।
हिरण्मयकशिप्वर्थेऽपि तथैव प्रकीर्त्तितम् ॥६७७०॥
हिरण्यबाहुः शोणाख्यनदे विषमलोचने ।
हिरण्यवर्णा नद्यां च श्रियां योगे यथायथम् ॥६७७१॥
हीनस्त्रिरूने गर्ह्ये च ना तु केसरपादपे ।
हीरः शिवे ना द्वे सर्पसिंहयोः क्ली तु हीरके ॥६७७२॥
हुहुको ना हुडुक्के द्वे मत्तदात्यूहपक्षिणि ।
हृच्छयो मन्मथेऽपि स्यात्कुक्ष्यग्नौ च तथा पुमान् ॥६७७३॥
हृणिः स्त्रियां क्रुधि प्रोक्ता हृणिस्तु ज्वलति त्रिषु ।
हृत् क्लीबं चैव चित्ते स्याद्वक्षस्यपि तथा मतम् ॥६७७४॥
हृदयं तूरसि स्वान्ते वृक्केऽपि परिकीर्त्तितम् ।
हृद्यस्तु ना वशीकारमन्त्रे स्याद्वैदिके द्रुमे ॥६७७५॥
कपित्थाख्ये तत्फले तु क्ली दधत्यनुलेपनम् ।
मधुमद्ये च मध्वीकसंज्ञे त्रिषु तु हृद्भवे ॥६७७६॥
हृत्प्रिये हृद्धिते हृज्जे चारौ हृद्या त्वियं स्त्रियाम् ।
मनःशिलायां छाग्यामप्यृद्धिसंज्ञौषधान्तरे ॥६७७७॥
हृद्यगन्धः पुमानेष सूक्ष्मजीरक इष्यते ।
हृल्लेखस्तु पुमाञ्ज्ञेय औत्कण्ठ्य हृद्रुजान्तरे ॥६७७८॥
हृल्लेखा तु स्त्रियां मन्त्रभेदे तान्त्रिकविश्रुते ।
हृषिः स्त्री दीप्तितुष्ट्योर्ना हर्षतौ हृष्यतावपि ॥६७७९॥
द्वयोर्धात्वोरथालीकवादिन्येष हृषिस्त्रिषु ।
हृषितस्तु सरोमाञ्चे विस्मिते च मनोहरे ॥६७८०॥
हृष्टे प्रतिहते स्तब्धे रोमादावपि च त्रिषु ।
हृष्टं हर्षे त्रिस्तु रम्ये विस्मिते हर्षवत्यपि ॥६७८१॥

सरोमाञ्चे प्रतिहते स्तब्धे मेढ्रेऽपि रोम्णि च।
हेठा हेलाऽनादरे द्वे हेठस्तु क्रुधि पुंस्ययम् ॥६७८२॥
हेतिः शस्त्रे द्वयोर्नाग्निज्वाले चार्कार्चिषि स्मृतः।
हेतुः प्रयोजके कर्त्तुः स्वतन्त्रस्य तथा पुमान् ॥६७८३॥
उत्पत्तौ कारणे वादे निमित्ते बीजकर्मणि।
हेमा पुमान्स्याद्धेमन्ते हेम क्ली कनके जले ॥६७८४॥
हेम कुड्ये पुनः क्लीबे द्वीपभेदेऽम्बुधीकृते।
खाते भारतवर्षस्य प्रदेशे सगरैः स्थिते ॥६७८५॥
हेमपुष्पी पीतयूथ्यां ना तु स्याच्चम्पकद्रुमे।
हेमलो ना शिलाभेदे द्वयोस्तु कृकलासके ॥६७८६॥
हेमलस्तु त्रिषु स्वर्णकृत्येष परिकीर्त्तितः।
हेरम्बस्तु द्वयोरेष महिषे कीर्त्तितोऽथ ना ॥६७८७॥
प्रमथानां प्रभेदे च हेरम्बो विघ्ननायके।
हेरुको बुद्धभेदे च महाकालाह्वये गणे ॥६७८८॥
हेला विलासप्रस्तावावज्ञासु स्त्री प्रकीर्त्तिता।
हेलिः पुमान्स्यान्मार्त्तण्डे तथोक्त उपगूहने ॥६७८९॥
अथ हैमवती गङ्गापार्वत्योश्च स्त्रियां मता।
स्वर्णक्षीरीहरीतक्योः शुक्ले चैत्र वचान्तरे ॥६७९०॥
क्ली तु हैमवतं वर्षे भारते भेद्यवत्पुनः।
हिमवद्भिदि सम्बन्धिमात्रे हैमवतं मतम् ॥६७९१॥
होता तु हावके त्रि स्यादृत्विग्भेदे पुमानयम्।
होत्रं क्ली भवने होत्रा वाचि यज्ञेऽथ नार्त्विजि ॥६७९२॥
होत्वं स्याद्यजमानेऽपि समुद्रेऽपि नपुंसकम्।
होमं हव्येऽग्निहोत्रस्य शालायां च नपुंसकम् ॥६७९३॥
होरा लग्ने च लग्नार्धेऽहोरात्रेऽपि स्त्रियां मता।
ह्रदो मेषे द्वयोरुक्तः पुंस्यगाधजलाशये ॥६७९४॥
ह्रस्वोऽल्पे वामने चैकमात्रवर्णे यमे तु ना।
ह्लादिनी तु स्त्रियां वज्रे तथा तडिति कीर्त्तिता ॥६७९५॥

ह्रीकस्त्रिर्ह्रीकवल्लज्जाशीलेऽथ नकुले द्वयोः ।
ह्रीकुर्लज्जावति त्रि स्याद्वनमार्जारके द्वयोः ॥६७९६॥
ह्रीरुर्लज्जावति त्रि स्याद्द्वयोस्तु बक इष्यते ॥६७९६½॥

उपसंहारः

निरमायि महोद्योगैर्मुद्रितश्च बहुव्ययैः ।
वाङ्मयार्णवनामा श्रीविश्वविद्यापराभिधः ॥१॥
शब्दब्रह्मोद्भवः शब्दब्रह्मण्येव समर्पितः ।
निघण्टुसम्राट् शब्दार्थमार्मिकैरवलोक्यताम् ॥२॥
अमरहलायुधपुरुषोत्तमयादवहेमकेशवादिकृतम् ।
श्रीमङ्खविश्वमेदिनीधन्वन्तरिनरहरिग्रथितम् ॥३॥
भगवद्यास्कोपक्रममपि शर्मण्यावसानमिमम् ।
अभिधानमहार्णवाब्धिं विलोड्य दृष्ट्वाऽऽकरान्बहुशः ॥४॥
पद्यैर्दब्धा घूर्णिभिरलङ्कृता छात्रकुलतृप्त्यै ।
आयोजनेन महता घटिता श्रीविश्वविद्येयम् ॥५॥
अभिधानकृतामैदम्पर्यम्प्रायो न बुध्यते ।
हेमचन्द्रो दोषमेतं यथासाध्यमशोधयत् ॥

शब्दानुक्रमणिका

शब्दानुक्रमणिका

आ

इ

ऋ

ऌ

ए

ग

घ

प

ब

म

य

ल

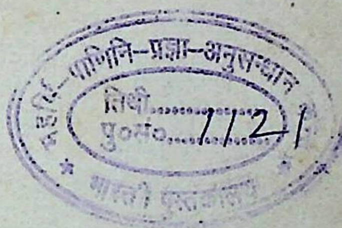
शुद्धि-पत्रम्

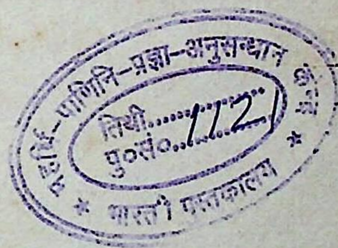
पृष्ठसंख्या	श्लोकसं०	अशुद्धम्	शुद्धम्
१	१	ताया	तापा
१	२	दिप.	दि प.
१	२	योम.	यो म.
३	९	अकूपाराङ्गि.	(अकूपारा आङ्ग)
३	१०	दि स.	दिस.
३	१३	शताङ्गले	शताङ्गुले
५	४०	पुरस्तादुरि पलमानेयु	पुरस्तादुपरिपलमानेषु
६	४२	दिधिषू रूढा	दिधिषूरूढा
६	४३	नात्व.	ना त्व.
७	६१	वच्याङ्ग.	वच्चाङ्ग.
७	६२	वृहस्पतौ	बृहस्पतौ
७	६४	पुंस्यङ्गलं	पुंस्यङ्गुलं
८	७१	त्रिपुर.	त्रिपुरा.
८	७९	ज्येष्ठा.	ज्येष्ठ.
९	८६	क्षेऽप्याणिवदेवना	क्षेऽप्यणिवदेव ना
१०	९९	श्वश्र्व्यां	श्वश्रवां
१०	१०१	मतित्वेष	मति त्वेष
१०	१०६	भेद.	वेद.
१०	१०७	अदः शब्दं	अदःशब्दं
११	१०८	मार्थ स.	मार्थस.
११	१०९	दि दै.	दिदै.
११	१०९	स्यात्त्रित्व.	स्यात् त्रि त्व.
११	११०	म्येक्ष.	म्येऽक्ष.
११	१११	त्रित्वा.	त्रि त्वा.
११	११५	रेप्य. . . .केपि	रेऽप्य. . . .केऽपि
१२	१२२	णेप्या. . . .लेपि	णेऽप्या. . . .लेऽपि
१२	१२३	प्रगल्भेप्य.	प्रगल्भेऽप्य.
१२	१२४	येपि	येऽपि
१२	१२९	नाशि.	ना शि.

पृष्ठसंख्या	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
१२	१२९	साध्य गन्धर्व म.	साध्यगन्धर्वम.
१२	१३१	न्नावृ.	न्ना वृ.
१२	१३४	न्तेनर.	न्तेन र.
१३	१३९	क्षा वि.	क्षावि.
१३	१४०	मेंश.	मेंऽश.
१४	१५३	राम्ले	रम्ले
१४	१६०	पुंसत्वे	पुंस्त्वे
१५	१७२	वेद्द्वी	वेद् द्वी
१५	१७४	अन्तरस्था	अन्तस्था
१५	१७५	न्दो वि.	न्दोवि.
१५	१७६	णोप.	णेनोप.
१५	१७७	पि चा.	पि च चा.
१५	१७७	दी भु.	दीभु.
१६	१८३	अन्ध्रस्रयन.	अन्ध्रस्त्र्यन.
१६	१८४	वैदेहनाथे पुंभू	वैदेहनाथे पुं भू
१६	१८४	भवेद्द्व.	भवेद् द्व.
१६	१८६	दाऽन्ना.	दन्ना.
१६	१८९	ति स्व.	तिस्व.
१७	१९५	ऋचि	ऋचि स्मृतम्
१८	२०५	नना	न ना
१९	२२२	त्रित्व.	त्रि त्व.
१९	२२२	स्त्रियामेषा	स्त्रियां देव्यां
१९	२२७	भवेत्क्लीबं	भवेत् क्लीबं
१९	२३१	अब्धिम.	अब्धि म.
१९	२३१	त्वब्धिद	त्वब्धि द.
२२	२६५	भि. . .व.	भिषव.
२२	२६७	त्रित्व.	त्रि त्व.
२३	२७३	अभीसु:	अभीषु:
२३	२७७	धातो द्वित्रे	धातोर्द्वित्वे
२३	२७७	स्कीका.	स्वीका.
२३	२७८	म्भ: पे.	म्भ:पे.
२३	२७९	मभय.	मभ्रय.
२३	२८०	गमने	गगने

पृष्ठसंख्या	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
२३	२८१	भिघाते	मिधातौ
२४	२८९	मागधी पथ्या गडूच्या.	मागधीपथ्यागुडूच्या.
२४	२८९	मिक्ष.	भिक्ष.
२४	२९५	भ्राष्टमहाभ्राष्टे	भ्राष्ट्रमहाभ्राष्ट्रे
२५	२९९	मध्यमिकानां	माध्यमिकानां
२५	३०२	वेतसेना	वेतसे ना
२५	टिप्पणी	द मन्द.	दमन्द.
२५	,,	क्षुब्धा.	क्षुब्ध.
२५	,,	ध्वान्त लग्न.	ध्वान्तलग्न.
२५	,,	फाण्टवाढानिम.	फाण्टवाढानि म.
२५	,,	स्तमः	स्तमःस.
२५	,,	मृशेषु	भृशेषु
२६	३१३	नमे.	नेमे.
२६	३१६	ङ्गले	ङगुले
२७	३३३	चि तदिना.	चितरि ना.
२८	३४२	त्रिप्व्यग्रे	त्रिष्वग्रे
२८	३४६	क्तैर्वे.	क्तौ वे.




पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी..........
पु०सं०....1121


महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान केन्द्र
तिथी
पु०सं०...1121
भारती पुस्तकालय


महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी.........
पु०सं० 1121
भारती पुस्तकालय